THE

HOLY BIBLE;

TRANSLATED INTO THE

HINDUI LANGUAGE,

BY THE

REV. WILLIAM BOWLEY,

UNDER THE PATRONAGE OF THE

Calcutta Auxiliary Bible Society.

VOL. I.

GENESIS——II. KINGS.

धर्म्म पुस्तक ।

हिंदुई भाषा में उतारी गई ।

—o—

कलकत्ता ।

चर्च मिशन छापे खाने में छापी गई ।

सन १८३४ ।
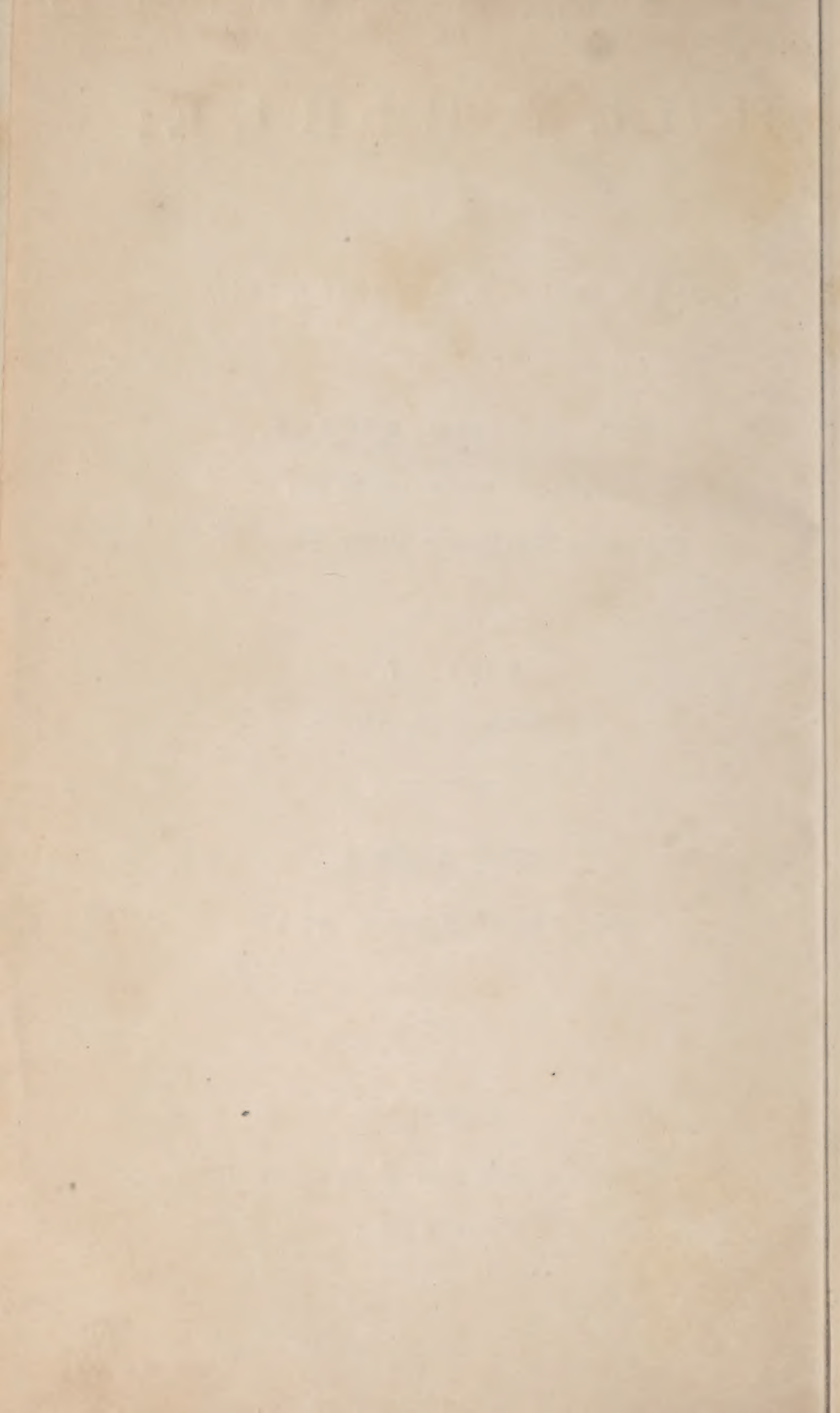
उत्पत्ति की पुस्तक।

१ पहिला पर्ब्ब।

१।२ आरंभ में ईश्वर ने आकाश और पृथिवी को सिरजा। और पृथिवी बेडौल और सूनी थी और गहिराव के ऊपर अंधियारा था और ईश्वर का आत्मा जल के ऊपर डोलता था।
३ और ईश्वर ने कहा कि उंजियाला होवे और उंजियाला
४ होगया। और ईश्वर ने उंजियाले को अच्छा देखा और ईश्वर
५ ने उंजियाले को अंधियारे से भाग किया। और ईश्वर ने उंजियाले को दिन और अंधियारे को रात कहा और सांझ
६ और बिहान पहिला दिन हुआ। फेर ईश्वर ने कहा कि पानियों के मध्य में आकाश होवे और पानियों को पानियों से
७ बिभाग करे। तब ईश्वर ने आकाश को बनाया और आकाश के नीचे के पानियों को आकाश के पानियों से बिभाग किया
८ और ऐसा होगया। और ईश्वर ने आकाश को स्वर्ग कहा और
९ सांझ और बिहान दूसरा दिन हुआ। फेर ईश्वर ने कहा कि स्वर्ग के तले के पानी एकही स्थान में एकट्ठे होवें और
१० सूखी दिखाई देवे और ऐसा होगया। और ईश्वर ने सूखी को भूमि कहा और एकट्ठे कियेगये पानी को समुद्र कहा और
११ ईश्वर ने देखा कि अच्छा है। और ईश्वर ने कहा कि भूमि कोमल घास को और साग पात को जिनमें बीज हों और फलवंत पेड़ को जो अपनी अपनी भांति के समान फल फलें जिनके बीज भूमि पर आप में होवें उगावे और ऐसा

१२ होगया। और भूमि ने घास और साग पात को अपनी अपनी भांति के समान जिनमें बीज हों और फलवंत पेड़ को जिसका बीज उसमें होवे उसकी भांति के समान उगाया और
१३ ईश्वर ने देखा कि अच्छा है। सो सांझ और बिहान तीसरा
१४ दिन हुआ। और ईश्वर ने कहा कि दिन और रात में बिभाग करने को स्वर्ग के आकाश में ज्योति होवें और वे चिह्नों और ऋतुन और दिनों और बरसों के कारण होवें।
१५ और वे पृथिवी को उंजियाली करने को स्वर्ग के आकाश में
१६ ज्योति के लिये होवें और ऐसा होगया। और ईश्वर ने दो बड़ी ज्योति बनाईं एक बड़ी ज्योति दिन पर प्रभुता के लिये और उसे छोटी ज्योति रात पर प्रभुता के लिये और उसने
१७।१८ तारे भी बनाये। और पृथिवी को उंजियाली करने को और दिन पर और रात पर प्रभुता करने को और उंजियाले को अंधियारे से बिभाग करने को ईश्वर ने उन्हें स्वर्ग के आकाश
१९ पर रक्खा और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है। सो सांझ
२० और बिहान चौथा दिन हुआ। और ईश्वर ने कहा कि रेंगवैये जीवधारी और पक्षियों को, जो पृथिवी के ऊपर
२१ स्वर्ग के आकाश पर उड़ें पानी बहुताई से उपजावें। सो ईश्वर ने बड़ी बड़ी मछलियों को और हर एक रेंगवैये जीवधारी को जिन्हें पानियों ने उनकी भांति भांति के समान बहुताई से उपजाया और हर एक पक्षी को उसकी भांति के समान और ईश्वर
२२ ने देखा कि अच्छा है। और ईश्वर ने उनको आशीष देके कहा कि फलमान होओ और बढ़ो और समुद्रों के पानियों में
२३ पूर्ण होओ और पक्षी पृथिवी पर बढ़ें। और सांझ और बिहान
२४ पांचवां दिन हुआ। और ईश्वर ने कहा कि पृथिवी हर एक जीवधारी को उसकी भांति भांति के समान अर्थात् ढोर और रेंगवैये जंतु को और बनैले पशु को उसकी भांति के समान
२५ उपजावे और ऐसा होगया। और ईश्वर ने बनैले पशु को

उसकी भांति के समान और ढोर को उनकी भांति के समान और पृथिवी के हर एक जंतु को रेंगवैये उसकी भांति के समान बनाया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है। २६ तब ईश्वर ने कहा कि हम मनुष्य को अपने स्वरूप में अपने समान बनावें और वुह समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और ढोर और सारी पृथिवी पर और पृथिवी पर की हर एक रेंगवैये जंतु पर प्रधान होवे। २७ तब ईश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप में उत्पन्न किया उसने उसे ईश्वर के स्वरूप में उत्पन्न किया उसने उन्हें नर और नारी बनाया। २८ और ईश्वर ने उन्हें आशीष दिया और ईश्वर ने उन्हें कहा कि फलवान होओ और बढ़ो और पृथिवी में भरजाओ और उसे वश में करो और समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जीवधारी पर प्रभुता करो।

२९ और ईश्वर ने कहा लो मैं ने हर एक बीजधारी साग पात को जो सारी पृथिवी पर है और हर एक पेड़ को जिसमें फल है जो बीज उपजावता है तुम्हें दिया और यह तुम्हारे खाने के लिये होगा। ३० और पृथिवी के हर एक पशु को और आकाश के हर एक पक्षी को और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जीवधारी को हर एक प्रकार की हरियाली भी खाने को दिई और ऐसा हुआ। ३१ फिर परमेश्वर ने हर एक वस्तु पर जिसे उसने बनाया था दृष्टि किई और देखा कि बहुत अच्छी और सांझ और बिहान छठवां दिन हुआ।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१।२ यों स्वर्ग और पृथिवी और उनकी सारी सेना बनगईं। और ईश्वर ने अपने कार्यों को जो उसने किया था सातवें दिन में समाप्त किया और उसने सातवें दिन में अपने सारे कार्यों से जो उसने किया था विश्राम किया। ३ और ईश्वर ने सातवें

दिन पर आशीष दिया और पवित्र ठहराया इस कारण कि उसीमें उसने अपने सारे कार्यों से जो ईश्वर ने उत्पन्न किया
४।५ और बनाया बिश्राम किया। जबकि स्वर्ग और पृथिवी की उत्पत्ति ऊई जिस दिन में परमेश्वर ईश्वर ने स्वर्ग और पृथिवी को और खेत के हर एक घास पात को जो पृथिवी पर न था और भूमि की हर एक हरियाली को जो आगे न थी उत्पन्न किया उनकी उत्पत्ति ये हैं क्योंकि परमेश्वर ईश्वर ने अब लों पृथिवी पर मेंह न बरसाया था और किसनई
६ करने को मनुष्य न था। परन्तु पृथिवी से कुहासा उठता
७ था और समस्त भूमिको सींचता था। तब परमेश्वर ईश्वर ने भूमि की धूल से मनुष्य को बनाया और उसके नथुनों में जीवन का श्वास फूंका और मनुष्य जीवता प्राण ऊआ।
८ और परमेश्वर ईश्वर ने अदन में पूरब की ओर एक बारी लगाई और उस मनुष्य को जिसे उसने बनाया था
९ उसमें रक्खा। और परमेश्वर ईश्वर ने हर एक पेड़ को जो देखने में सुन्दर और खाने में अच्छा है और उस बारी के मध्य में जीवन का पेड़ और भले बुरे के ज्ञान का
१० पेड़ भूमि से उगाया। और उस बारी को सींचने के लिये अदन से एक नदी निकली और वहां से बिभाग होके चार
११ सोहाने ऊए। पहिली का नाम पैसून जो हबीले की सारी
१२ भूमि को घेरती है जहां सोना होता है। और उस भूमि का सोना चोखा है और वहां मोती और बिल्लौर होता है।
१३ और दूसरी नदी का नाम गैहून है यह वही है जो कोश की
१४ सारी भूमि को घेरती है। और तीसरी नदी का नाम हिद्दकल है यह वही है जो असूर की पूरब ओर जाती है और चौथी
१५ नदी फुरात है। और परमेश्वर ईश्वर ने उस मनुष्य को लेके अदन की बारी में उसे सुधारने और उसकी रखवाली करने
१६ को रक्खा। और परमेश्वर ईश्वर ने मनुष्य को आज्ञा देके

कहा कि तू इस बारी के हर एक पेड़ का फल खायाकर।
१७ परन्तु भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ से मत खाना क्योंकि जिस
१८ दिन तू उसे खायगा तू मरते मरेगा। और परमेश्वर
ईश्वर ने कहा कि मनुष्य का अकेला रहना अच्छा नहीं मैं
१९ उसके लिये एक उपकारिणी बनाऊंगा। तब परमेश्वर ईश्वर
जिसने भूमि से हर एक बनैले पशु और आकाश के पक्षी
बनाये थे उनको मनुष्य के पास लाया कि देखे कि उनके का
क्या नाम रखता है और जो कुछ कि मनुष्य ने हर एक जीते
२० जंतु को कहा वही उसका नाम हुआ। और मनुष्य ने हर
एक ढोर और आकाश के पक्षी और हर एक वन्य पशु का नाम
रक्खा पर आदम के लिये उसके उपकार के योग्य उपकारिणी
२१ न निकली। फिर परमेश्वर ईश्वर ने मनुष्य को बड़ी नीन्द में
डाला और वुह सोगया तब उसने उसकी पसलियों में से एक
२२ निकाली और उसकी संती मांस भर दिया। और परमेश्वर
ईश्वर ने मनुष्य की उस पसुली से जो उसने लिई थी एक नारी
२३ बनाई और उसे नर पास लाया। तब नर बोला यह तो
मेरी हड्डियों में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस वुह नारी
२४ कहलावेगी क्योंकि यह नर से निकाली गई। इस लिये मनुष्य
अपने माता पिता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से मिला
२५ रहेगा और वे दोनों एक मांस होंगे। और मनुष्य और
उसकी पत्नी दोनों के दोनों नग्न थे और लज्जित न थे।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ अब सर्प्प भूमि के हर एक पशु से जिसे परमेश्वर ईश्वर ने
बनाया था चतुर था सो उसने स्त्री से कहा क्या ईश्वर ने ठीक
२ कहा है कि तुम इस बारी के हर एक पेड़ से न खाना?। स्त्री ने
सर्प्प से कहा कि हम तो इस बारी के पेड़ों का फल खाते हैं।
३ परन्तु उस पेड़ का फल जो बारी के बीच में है ईश्वर ने कहा

है कि तुम उसे न खाना और न छूना नहीं तो मर जाओगे।
४।५ तब सर्प ने स्त्री को कहा कि तुम सचमुच न मरोगे। क्योंकि ईश्वर जानता है जिस दिन तुम उसे खाओगे तुम्हारी आंखें खुल जायेंगी और तुम भले और बुरे की पहिचान में देवों
६ के समान होजाओगे। और जब स्त्री ने देखा कि वुह पेड़ खाने में योग्य और दृष्टि में सुन्दर और बुद्धि देने में इच्छा के योग्य तो उसके फल में से लिया और खाया और अपने पति
७ को भी जो उसके संग था दिया और उसने खाया। तब उन दोनों की आंखें खुलगईं और वे जानगये कि हम नंगे हैं सो उन्हों ने गूलर के पत्तों को मिला के सीआ और अपने लिये ओढ़ना
८ बनाया। और दिन के ठंढे में उन्हों ने परमेश्वर ईश्वर के चलने का सन्नाटा सुना तब मनुष्य और उसकी पत्नी ने अपने को परमेश्वर
९ ईश्वर के आगे से बारी के पेड़ों में छिपाया। तब परमेश्वर
१० ईश्वर ने मनुष्य को पुकारा और कहा कि तू कहां है?। वुह बोला कि मैं ने तेरा शब्द बारी में सुना और डरा क्योंकि मैं
११ नंगा था इस कारण मैं ने अपने को छिपाया। उसने कहा कि किसने तुझे जताया कि तू नंगा है क्या तू ने उस पेड़ से
१२ खाया जो मैं ने तुझे खाने से बरजा था?। मनुष्य ने कहा कि इस स्त्री ने जो तू ने मेरे संग रक्खी थी मुझे उस पेड़ से दिया
१३ और मैं ने खाया। तब परमेश्वर ईश्वर ने उस स्त्री को कहा कि यह तू ने क्या किया है? स्त्री बोली कि सर्प ने मुझे बहकाया
१४ और मैं ने खाया। तब परमेश्वर ईश्वर ने सर्प से कहा कि जो तू ने यह किया है इस कारण तू सारे ढोर और हर एक बन के पशुन से अधिक स्रापित होगा तू अपने पेट के बल
१५ चलेगा और अपने जीवन भर धूल खायाकरेगा। और मैं तुझ में और स्त्री में और तेरे बंश और उसके बंश में बैर डालोंगा वुह तेरे सिर को कुचिलेगा और तू उसकी एड़ी को
१६ कुचिलेगा। और उसने स्त्री को कहा कि मैं तेरी पीड़ा और

गर्भ धारण को बक्कत बढ़ाओंगा तू पीड़ा से बालक जनेगी और तेरी इच्छा तेरे पति पर होगी और वुह तुझ पर प्रभुता
१७ करेगा। और उसने आदम से कहा कि तू ने जो अपनी पत्नी का शब्द माना है और जिस पेड़ का मैं ने तुझे खाने से बरजा था तू ने खाया है इस कारण भूमि तेरे लिये स्रापित है
१८ अपने जीवन भर तू उस्से पीड़ा के साथ खायगा। वुह कांटे और ऊंटकाटारे तेरे लिये उगायेगी और तू खेत का साग
१९ पात खायगा। अपने मुंह के पसीने से तू रोटी खायगा जबलों तू भूमि में फेर न मिलजाय क्योंकि तू उस्से निकालागया इस
२० लिये कि तू धूल है और धूल में फेर जायगा। और मनुष्य ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रक्खा इस कारण कि
२१ वुह समस्त जीवतों की माता थी। और परमेश्वर ईश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिये चमड़े के ओढ़ने बनाये और
२२ उन्हें पहिनाये। और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि देखो मनुष्य भले बुरे के जान्ने में हम्में से एक की नाईं ज़ुआ अब ऐसा न होवे कि वुह अपना हाथ डाले और जीवन के पेड़
२३ में से भी लेकर खावे और अमर होजाय। इस लिये परमेश्वर ईश्वर ने उसको अदन की बारी से बाहर किया जिसतें वुह
२४ भूमि की किसनई करे जिस्से वुह निकाला गया था। सो उसने मनुष्य को निकाल दिया और अदन की बारी की पूर्ब ओर करोबीम और जगमगाता ज़ुआ खड्ड रक्खा जो जीवन के पेड़ की रखवाली के लिये चारों ओर घूमते थे।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ और आदम अपनी पत्नी हव्वा को ग्रहण किया और वुह गर्भिणी ज़ुई और उस्से कैन उत्पन्न ज़ुआ और बोली कि मैं
२ ने परमेश्वर से एक पुरुष पाया। और फेर वुह उसके भाई हाबील को जनी और हाबील भेड़ों का चरवाहा ज़ुआ परन्तु

३ कौन किसनई करता था। और कितने दिनों के पीछे यों ज्ञआ कि कौन भूमि के फलों में से परमेश्वर के लिये भेंट लाया।
४ और हाबील भी अपनी झुंड में से पहिलौंठी और मोटी मोटी लाया और परमेश्वर ईश्वर ने हाबील को और उसकी भेंट को
५ ग्रहण किया। परन्तु कौन को और उसकी भेंट को ग्रहण न किया इस लिये कौन अति क्रोधित ज्ञआ और उसका स्वरूप
६ उदास ज्ञआ। तब परमेश्वर ने कौन को कहा तू क्यों क्रुद्ध है?
७ और तेरा स्वरूप क्यों उदास है?। यदि तू भला करे तो क्या तू ग्राह्य न होगा? और यदि तू भला न करे तो पाप द्वार पर है और वुह तेरे वश में होगा और तू उस पर प्रभुता
८ करेगा। तब कौन ने अपने भाई हाबील से बातें किईं और यों ज्ञआ कि जब वे दोनों खेत में थे तब कौन अपने भाई हाबील
९ पर झपटा और उसे घात किया। तब परमेश्वर ईश्वर ने कौन को कहा तेरा भाई हाबील कहां है? वुह बोला मैं नहीं
१० जानता क्या मैं अपने भाई का रखवाल हूं?। तब उसने कहा तू ने क्या किया? तेरे भाई के लहू का शब्द भूमि से मुझे
११ पुकारता है। और अब तू पृथिवी से स्रापित है जिसने तेरे भाई का लोहू तेरे हाथ से लेने को अपना मुंह खोला है।
१२ जब तू किसनई करेगा तो वुह तेरे बश में न होगी और तू
१३ पृथिवी पर भगोड़ा और बहेतू रहेगा। तब कौन ने परमेश्वर
१४ से कहा कि मेरा दंड मेरे सहाव से अधिक है देख तू ने आज पृथिवी पर से मुझे खेदेर दिया है और मैं तेरे आगे से गुप्त होऊंगा और मैं पृथिवी पर भगोड़ा और बहेतू होऊंगा और
१५ ऐसा होगा कि जो कोई मुझे पावेगा मुझे मार डालेगा। तब परमेश्वर ने उसे कहा इस लिये जो कोई कौन को मार डालेगा तो उस्से सतगुन पलटा लिया जायगा और परमेश्वर ने कौन पर
१६ एक चिन्ह रक्खा न होकि कोई उसे पाके मार डाले। तब कौन परमेश्वर के आगे से जाता रहा और अदन की पूर्ब ओर

१७ नूद की भूमि में जा रहा। और कीन ने अपनी पत्नी को ग्रहण किया और वुह गर्भिणी ऊई और उस्से ख़नूख़ उत्पन्न ऊआ तब उसने एक नगर बनाया और अपने बेटे ख़नूख़ का
१८ नाम उस पर रक्खा। और ख़नूख़ से ईराद उत्पन्न ऊआ और ईराद से मह्रयाईल और मह्रयाईल से मथूसाईल और
१९ मथूसाईल से लामख़ उत्पन्न ऊआ। और लामख़ ने दो पत्नियां किईं पहिली का नाम आदः और दूसरी का नाम
२० ज़िल्लः था। और आदः से याबाल उत्पन्न ऊआ जो तंबूओं
२१ के निवासियों और ढोर के चरवाहों का पिता था। और उसके भाई का नाम यूबाल था वुह बीन और अरगन के सारे
२२ बजनियों का पिता था। और ज़िल्लः से तोबलक़ाईन उत्पन्न ऊआ जो ठठेरों और लोहारों का शिक्षक था और तोबलक़ाईन
२३ की बहिन नआमः थी। और लामख़ ने अपनी पत्नी आदः और ज़िल्लः से कहा कि हे लामख़ की पत्नियो मेरा शब्द सुनो और मेरे बचन पर कान धरो क्योंकि मैं ने एक पुरुष को
२४ घाव खाके और एक तरुण को दुःख उठाके मारडाला। यदि कीन सातगुन प्रतिफल लेवे तो निश्चय लामख़ सतहत्तर गुन।
२५ और आदम ने अपनी पत्नी को फेर ग्रहण किया और वुह बेटा जनी और उसका नाम सीस रक्खा क्योंकि ईश्वर ने हाबिल की संती, जिसको कीन ने मारडाला मेरे लिये दूसरा बंश
२६ ठहराया। और सीस के भी एक बेटा उत्पन्न ऊआ और उसने उसका नाम अनूश रक्खा उस समय से लोग परमेश्वर का नाम लेने लगे।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ आदम की बंशावली की पुस्तक यह है जिस दिन में ईश्वर ने मनुष्य को उत्पन्न किया उसने उसे ईश्वर के स्वरूप में बनाया।
२ उसने उन्हें नर और नारी बनाया और जिस दिन वे सिरजे

गये उसने उन्हें आशीष दिया और उनका नाम मनुष्य रक्खा।
३ और एक सौ तीस बरस की बय में आदम से उसी के स्वरूप और सूरत में एक बेटा उत्पन्न हुआ और उसका नाम सीस
४ रक्खा। और सीस की उत्पत्ति के पीछे आदम की बय आठ
५ सौ बरस की हुई और उसे बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और आदम की सारी बय नव सौ तीस बरस की हुई और वुह
६ मरगया। और सीस जब एक सौ पांच बरस का हुआ तब
७ उसे अनूस उत्पन्न हुआ। और अनूस की उत्पत्ति के पीछे सीस आठ सौ सात बरस जीआ और उसे बेटे बेटियां उत्पन्न
८ हुईं। और सीस की सारी बय नव सौ बारह बरस की हुई
९ और वुह मरगया। और अनूस जब नब्बे बरस का हुआ तब
१० उसे कीनान उत्पन्न हुआ। और कीनान की उत्पत्ति के पीछे अनूस आठ सौ पंदरह बरस जीआ और उसे बेटे बेटियां
११ उत्पन्न हुईं। और अनूस की सारी बय नव सौ पांच बरस
१२ की हुई और वुह मरगया। और कीनान सत्तर बरस का
१३ हुआ और उसे माहलाईल उत्पन्न हुआ। और माहलाईल की उत्पत्ति के पीछे कीनान आठ सौ चालीस बरस जीआ
१४ और उसे बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और कीनान की सारी
१५ बय नव सौ दस बरस की हुई और वुह मरगया। और माहलाईल जब पैंसठ बरस का हुआ तब उसे यारद उत्पन्न
१६ हुआ। और माहलाईल यारद की उत्पत्ति के पीछे आठ सौ
१७ तीस बरस जीआ और उसे बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और माहलाईल की सारी बय आठ सौ पंचानवे बरस की हुई और
१८ वुह मरगया। जब यारद एक सौ बासठ बरस का हुआ
१९ तब उसे ख़नूख़ उत्पन्न हुआ। और ख़नूख़ की उत्पत्ति के पीछे यारद आठ सौ बरस जीआ और उसे बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
२० और यारद की सारी बय नव सौ बासठ बरस की हुई और
२१ वुह मरगया। जब ख़नूख़ पैंसठ बरस का हुआ तो उसे

२२ मथूसलः उत्पन्न हुआ । और ख़नूख़ मथूसलः की उत्पत्ति के पीछे तीन सौ बरस लों ईश्वर के साथ साथ चला और उसे
२३ बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं । और ख़नूख़ की सारी बय तीन सौ
२४ पैंसठ बरस की हुई । और ख़नूख़ ईश्वर के साथ साथ चलता
२५ था और वुह न मिला क्योंकि ईश्वर ने उसे लेलिया । और जब मथूसलः एक सौ सतासी बरस का हुआ तब उसे लामख़
२६ उत्पन्न हुआ । और लामख़ की उत्पत्ति के पीछे मथूसलः सात
२७ सौ बयासी बरस जीआ और उसे बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं । और मथूसलः की सारी बय नव सौ उनहत्तर बरस की हुई और
२८ वुह मरगया । और लामख़ जब एक सौ बयासी बरस का
२९ हुआ तब उसका एक बेटा उत्पन्न हुआ । और उसने उसका नाम नूह रक्खा और कहा कि यह हमारे हाथों के परिश्रम और कार्य के बिषय में, जो पृथिवी के कारण से हैं जिस
३० पर ईश्वर ने स्राप दिया है हमें, शांत करेगा । और नूह की उत्पत्ति के पीछे लामख़ पांच सौ पंचानवे बरस जीआ और
३१ उसे बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं । और लामख़ की सारी बय
३२ सात सौ सतहत्तर बरस की हुई और वुह मरगया । और नूह जब पांच सौ बरस का हुआ तब नूह से शाम और हाम और याफ़स उत्पन्न हुए ।

६ छठवां पर्व्व ।

१ और यों हुआ कि जब मनुष्य पृथिवी पर बढ़नेलगे और
२ उनसे बेटियां उत्पन्न हुईं । तो ईश्वर के पुत्रों ने मनुष्य की पुत्रियों को सुंदरी देखा और उन सभों में से, जिन्हें उन्हों
३ ने चाहा उन्हें पत्नी किया । तब परमेश्वर ने कहा कि मेरा आत्मा सदा मनुष्य को न छेड़ेगा क्योंकि वुह भी मांस है तथापि
४ उसके दिन एक सौ बीस बरस के होंगे । और उन दिनों में पृथिवी पर दानव थे और उसके पीछे जब ईश्वर के पुत्र मनुष्यों

की पुत्रियों से मिले तो उनसे बालक उत्पन्न ऊए जो महावीर
५ ऊए जो आगे से नामी हैं। और ईश्वर ने देखा कि मनुष्य
की दुष्टता पृथिवी पर बऊत ऊई और उनके मन की चिंता
६ और भावना प्रतिदिन केवल बुरी होती है। तब मनुष्य को
पृथिवी पर उत्पन्न करने से परमेश्वर पछताया और उसे अति
७ शोक ऊआ। तब परमेश्वर ने कहा कि मनुष्य को, जिसे मैं ने
उत्पन्न किया मनुष्य से लेके पशु लों और रेंगवैयों को और
आकाश के पक्षियों को पृथिवी पर से नष्ट करोंगा क्योंकि
८ उन्हें बनाने से मैं पछताता हों। पर नूह ने परमेश्वर की दृष्टि
९ में अनुग्रह पाया। नूह की वंशावली यह है कि नूह अपने
समय में धर्मी और सिद्ध पुरुष था और ईश्वर के साथ साथ
१० चलता था। और नूह से तीन बेटे शाम और हाम और
११ याफस उत्पन्न ऊए। और पृथिवी ईश्वर के आगे बिगड़गई थी
१२ और पृथिवी अंधेर से भरपूर ऊई। और ईश्वर ने पृथिवी
पर दृष्टि किई और क्या देखता है कि वुह बिगड़गई है क्योंकि
सारे शरीर ने पृथिवी पर अपनी चाल को बिगाड़ दिया था।
१३ और ईश्वर ने नूह से कहा कि सारे शरीर का अंत मेरे आगे
आपऊंचा है क्योंकि उनसे पृथिवी अंधेर से भरगई है और
१४ देख मैं उन्हें पृथिवी समेत नष्ट करोंगा। अब तू
गोफर लकड़ी का अपने लिये एक जहाज़ बना और उस
जहाज़ में कोठरियां और उसके बाहर भीतर धूना लगा।
१५ और उसे इस डौलका बना उसकी लंबाई तीन सौ हाथ
और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ की होवे।
१६ और उस जहाज़ में एक खिड़की बना और ऊपर ऊपर उसे
हाथ भर में समाप्त कर और उसके अलंग में द्वार बना और
उसमें नीचे की और दूसरी और तीसरी अटारी बना।
१७ और देखकि सारे शरीर को, जिन में जीवन का श्वास है आकाश
के तले से नाश करने को मैं अर्थात् मैंहीं बाढ़ के पानी पृथिवी

पर आताहों और पृथिवी पर हर एक बस्तु नष्ट होजायगी ।
१८ परन्तु मैं तुझसे अपनी बाचा स्थिर करोंगा तू जहाज़ में जाना
तू और तेरे बेटे और तेरी पत्नी और तेरे बेटों की पत्नियां
१९ तेरे साथ । और सारे शरीरों में से जीवता जंतु दो दो अपने
साथ जहाज़ में लेना जिसतें वे तेरे साथ बच रहें वे नर
२० और नारी होवें । पंक्षियों में से भांति भांति के और ढोरों
में से भांति भांति के और पृथिवी के हर एक रेंगवैयों में से
भांति भांति के हर एक में से दो दो उन्हें जीते रखने को
२१ तुझ पास अवेंगे । और तू अपने लिये सारे भोजन में से, जो
खायेजाते हैं अपने पास एकट्ठा कर वुह तुम्हारे और उनके
लिये भोजन होगा सो ईश्वर की सारी आज्ञा के समान
नूह ने किया ।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ और परमेश्वर ने नूह से कहा कि तू अपने सारे घराने समेत
जहाज़ में आ क्योंकि इस पीढ़ी में मैं ने अपने आगे तुझे धर्मी
२ देखा है । हर एक पवित्र पशु में से सात सात, नर और
उसकी जोड़ी और पशु में से जो पवित्र नहीं दो दो, नर
३ और उसकी जोड़ी अपने साथ लेना । और आकाश के पक्षियों
से भी सात सात, नर और उसकी जोड़ी जिसतें सारी पृथिवी
४ पर बीहन जीता रक्खे । क्योंकि मैं सात दिन के पीछे पृथिवी पर
चालीस रात दिन मेंह बरसाओंगा और हर एक जीवते जंतु
५ को जिसे मैंने बनाया है पृथिवी पर से मिटादेऊंगा । और
६ नूह ने परमेश्वर की सारी आज्ञा के समान किया । और जब
पानियों का बाढ़ पृथिवी पर हुआ नूह छः सौ बरस का था ।
७ तब नूह और उसके बेटे और उसकी पत्नी और उसके
बेटों की पत्नियां पानियों के बाढ़ के कारण से उसके संग जहाज़
८ में गईं । और पवित्र पशुन से और उनमें से जो पवित्र नहीं

हैं और पंछियों से और पृथिवी के हर एक रेंगवैयों में से।
९ दो दो नर और उनकी जोड़ी जैसा ईश्वर ने नूह को आज्ञा
१० किई थी जहाज़ में गईं। और जब सात दिन बीतगये तो यूं
११ ऊआ कि बाढ़ के पानी पृथिवी पर ऊए। और नूह
की वय के छः सौ बरस के दूसरे मास की सत्तरहवीं तिथि में
उसी दिन महा गहिराव के सारे सोते फूट निकले और
१२ स्वर्ग के द्वार खुलगये। और पृथिवी पर चालीस रात दिन
१३ मेह बरसा। उसी दिन नूह और नूह के बेटे शाम और
हाम और याफस और नूह की पत्नी और उसके बेटों की तीनों
१४ पत्नियां उसके साथ जहाज़ में गईं। वे और हर एक पशु
अपनी अपनी भांति के समान और सारे ढोर और भूमि पर के
हर एक रेंगवैये जंतु अपनी अपनी भांति के समान और हर एक
पंछी अपनी अपनी भांति के समान हर एक भांति की हर एक
१५ चिड़ियां। और वे नूह के पास सारे शरीरों में से दो दो जिन
१६ में जीवन का श्वास था जहाज़ में गये। सो जिन्हों ने प्रवेश किया
था सो सारे शरीरों में से जोड़ा जोड़ा थे जैसा कि ईश्वर ने उसे
१७ आज्ञा किई थी और परमेश्वर ने उसे बंद किया। और बाढ़ का
पानी चालीस दिनताईं पृथिवी पर ऊआ और पानी बढ़गया
और जहाज़ को उभार लिया और वुह भूमि पर से ऊपर
१८ उठगई। और जब पानी बढे और पृथिवी पर बऊताई से
१९ बढ़गये तब जहाज़ पानी के ऊपर उतराने लगी। और जब कि
पानी पृथिवी पर अत्यंत बढ़गये तो सारे ऊंचे पहाड़ जो
२० सारे आकाश के नीचे थे ढपगये। और ढंपेऊए पहाड़ों पर
२१ पानी पंदरह हाथ बढ़गये। और सारे शरीर जो पृथिवी
पर चलतेथे पंछी और ढोर और पशु और भूमि पर के हर
२२ एक रेंगवैये जंतु और हर एक मनुष्य मरगया। और सब
जिनके नथुनों में जीवन के श्वास का आत्मा था और सब जो
२३ सूखी पर थे मरगये। और हर एक जीवता जंतु जो पृथिवी

पर थे मनुष्य से लेके ढोर और कीड़े मकोड़े और आकाश
के पंक्षियों लों नष्ट ऊए केवल नूह और जो उसके साथ
२४ जहाज़ में थे बचरहे। और पानी डेढ़ सौ दिन लों पृथिवी
पर बढ़ते गये।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ और ईश्वर ने नूह को और हर एक जीवते जंतु को और सारे
ढोर को जो उसके संग जहाज़ में थे स्मरण किया और ईश्वर
ने पृथिवी पर एक पवन बहाया और जल ठहरगये।
२ और गहिराव के सोते भी और आकाश के झरोखे बंद होगये
३ और आकाश से मेंह थमगया। और जल पृथिवी पर से
घटे चलेजातेथे और डेढ़ सौ दिनों के बीते पर जल घटगये।
४ और सातवीं मास की सत्तरह तिथि में जहाज़ अरारात
५ पहाड़ों पर ठहरगई। और जल दसवें मास तक घटते गये
और दसवें मास के पहिले दिन पहाड़ों की चोटियां दिखाई
६ दिईं। और चालीस दिन के पीछे यूं ऊआ कि
७ नूह ने अपने बनाये ऊए जहाज़ के झरोखे को खोला। और
उसने एक काग को उड़ादिया और जबलों पृथिवी पर के
८ जल सूख न गये वुह आया जाया करता था। फेर देखने को
यदि पानी भूमि पर से घटगये उसने अपने पास से एक पंडुकी
९ को उड़ादिया। परन्तु उस पंडुकी ने अपना चंगुल टेकने
को ठिकाना न पाया और वुह उसके पास जहाज़ पर
फिर आई क्योंकि जल सारी पृथिवी पर थे तब उसने अपना
हाथ बढ़ा के उसे लेलिया और अपने पास जहाज़ में लाया।
१० फेर वुह और सात दिन ठहर गया और फेर उसने उस
११ पंडुकी को जहाज़ से उड़ादिया। और वुह पंडुकी सांझ को
उस पास फिर आई और क्या देखता है कि जलपाई को
एक पत्ती उसके मुंह में है तब नूह ने जाना कि अब जल

१२ पृथिवी पर से घटगये। और वुह और भी सात दिन ठहरा उसके पीछे उसने उस पंडुकी को बाहर किया वुह उसके पास
१३ फिर न आई। और छः सौ एक बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में यूं हुआ कि जल पृथिवी पर से सूखगये और नूह ने जहाज़ की छत उठा दिई और देखा तो क्या देखता
१४ है कि पृथिवी ऊपर से सूखी है। सो दूसरे मास की सताईसवीं
१५ तिथि में पृथिवी सूखी थी। तब ईश्वर नूह को यह
१६ कह के बोला। कि अब तू और तेरी पत्नी और तेरे बेटे और तेरे बेटों की पत्नियां तेरे संग जहाज़ पर से उतरजायें।
१७ और हर एक जीवते जंतु सारे शरीर में से क्या पंछी क्या ढोर और क्या कीड़े मकोड़े जो भूमि पर रेंगते चलते हैं सब को अपने संग ले निकल जिसतें उनके बंश पृथिवी पर बहुत
१८ बढ़ें और फलवंत हों और पृथिवी पर बढ़ें। तब नूह और उसके बेटे और उसकी पत्नी और उसके बेटों की पत्नियां
१९ उसके संग निकलीं। और हर एक पशु और हर एक रेंगवैये जंतु और हर एक पंछी और जो कुछ कि पृथिवी पर रेंगते हैं सब अपने अपने भांति के समान जहाज़ से निकल गये।
२० तब नूह ने परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई और सारे पवित्र पशु और हर एक पवित्र पंछियों में से लिये और होम की
२१ भेंट उस बेदी पर चढ़ाई। और परमेश्वर ने बिश्राम का एक सुगंध सूंघा और परमेश्वर ने अपने मन में कहा कि मनुष्य के लिये मैं पृथिवी को फेर कभी साप न देउंगा इस कारण कि मनुष्य के मन की भावना लड़काई से बुरी है और जिस रीति से मैं ने सारे जीवधारियों को मारा फेर कभी न
२२ मारोंगा। पर जबलों पृथिवी है बोना और काटना और ठंड और तपन और ग्रीष्म और शीत और दिन और रात थम न जायंगे।

१ और ईश्वर ने नूह को और उसके बेटों को आशीष दिया और उन्हें कहा कि फलो और बढ़ो और पृथिवी में भरजाओ।
२ और तुम्हारा डर और भय पृथिवी के हर एक पशु पर और आकाश के हर एक पंक्षियों पर और उन सभों पर जो पृथिवी पर चलते हैं और समुद्र की सारी मछलियों पर पड़ेगा वे तुम्हारे बश
३ में कियेगये। और भूमि पर की हर एक जीतीचलती जंतु तुम्हारे भोजन के लिये होगी मैं ने हरी तरकारी के समान
४ सारी वस्तु तुम्हें दिईं। परन्तु मांस को उसके जीव समेत
५ जो लोहू है मत खाना। और निश्चय तुम्हारे जीवन के लोहू का मैं पलटा लेउंगा हर एक पशु से और मनुष्य के हाथ से मैं पलटा लेउंगा हर एक मनुष्य के भाई से मनुष्य के प्राण
६ का मैं पलटा लेउंगा जो कोई मनुष्य का लोहू बहावेगा मनुष्य से उसका लोहू बहाया जायगा क्योंकि ईश्वर के रूप में मनुष्य
७ बनाया गया है। और तुम फलो और बढ़ो और पृथिवी
८ पर बहुताई से जन्मो और उसमें बढ़ो। और ईश्वर
९।१० ने नूह को और उसके साथ उसके बेटों को कहा। कि देखो मैंहीं तुम से और तुम्हारे पीछे तुम्हारे वंश से और हर एक जीवते जंतु से जो तुम्हारे संग है क्या पंछी और क्या ढोर और पृथिवी के सारे चौपायों से और सभों से जो जहाज़ से बाहर जाते हैं पृथिवी के हर एक पशु लों मैं अपना नियम
११ स्थिर करताहों। और मैं अपना नियम तुम से स्थिर करोंगा फेर सारे शरीर बाढ़ के पानियों से नष्ट न कियेजायंगे और फेर पृथिवी को नष्ट करने के लिये जलमय न होगा।
१२ और ईश्वर ने कहा कि उस नियम का चिह्न यह है जो मैं अपने और तुम्हारे और हर एक जीवते जंतु के मध्य में परंपरा
१३ की पीढ़ी लों बांधताहों। मैं अपने धनुष को मेघ पर रखताहों और वुह मेरे और पृथिवी के मध्य में नियम का चिह्न होगा।
१४ और जब मैं मेघ को आकाश में फैलाओंगा तो मेरा धनुष

१५ मघ में दिखाई देगा। और मैं अपने नियम को, जो मेरे और तुम्हारे और सारे शरीर के हर एक जीवधारी के मध्य में है स्मरण करोंगा और फेर सारे शरीर को नष्ट करने
१६ को जल का जलमय न होगा। और धनुष मेघ में होगा और मैं उसे देखोंगा जिसतें मैं उस सनातन के नियम को जो ईश्वर के और पृथिवी के सारे शरीर के हर एक जीवधारी
१७ के मध्य में है स्मरण करों। और ईश्वर ने नूह से कहा कि जो नियम मैं ने अपने, और पृथिवी पर के सारे शरीरों से
१८ स्थिर किया है उसका यह चिह्न है। और नूह के बेटे जो जहाज़ से उतरे शाम और हाम और याफस थ और हाम किनान
१९ का पिता था। नूह के यही तीन बेटे थे और उन्हीं से सारी
२० पृथिवी बसगई। फेर नूह खेतीबारी करने लगा और उसने
२१ एक दाख की बाटिका लगाई। और उसने उसका रस पीया और उसे अमल हुआ और अपने तंबू में उघारा रहा।
२२ और किनान क पिता हाम ने अपने पिता की नंगापन देखी
२३ और बाहर अपने भाइयों को जनाया। तब शाम और याफस ने एक ओढ़ना लिया और अपने दोनों कंधों पर धरा और पीठ के बल जाके अपने पिता की नंगापन ढांपी सो उनके मुंह पीछे थे और उन्हों ने अपने पिता की नंगापन न देखी।
२४ जब नूह अपने अमल से जागा तो जो उसके छोटे बेटे ने उसे
२५ किया था उसे जानपड़ा। और उसने कहा कि किनान स्रापित होगा वुह अपने भाइयों के दासों का दास होगा।
२६ और उसने कहा कि शाम का परमेश्वर ईश्वर धन्य होवे
२७ और किनान उसका दास होगा। और ईश्वर याफस को फैलावेगा और वुह शाम के तंबुओं में बास करेगा और
२८ किनान उसका दास होगा। और जलमय के पीछे नूह
२९ साढे तीन सौ बरस जीआ। और नूह की सारी बय नव सौ पचास बरस की हुई और वुह मरगया।

१ अब नूह के बेटों की बंशावली यही है शाम और हाम और
२ याफस और जलमय के पीछे उनसे बेटे उत्पन्न हुए। याफस
के बेटे जोमर और माजूज और मादी और यवन और
३ तूबाल और मिशक और तीरास। और जोमर के बेटे
४ अशकिनाज़ और रिफ़ास और तजरमः। और यवन के
बेटे अलीशः और तरशीश और कित्तिम और दुदानीम।
५ इन्हीं से अन्यदेशियों के टापू हर एक अपनी अपनी भाषा के और
अपने अपने परिवार के समान अपनी अपनी जाति में बंटगये।
६ और हाम के बेटे कोश और मिसरीम और फूत और
७ किनान। और कोश के बेटे शीबा और हवीलः और सब्तः
और रामः और सबतिका और रामा के बेटे शीबा और
८ दीदान। और कोश से नमरूद उत्पन्न हुआ वुह पृथिवी
९ पर एक महावीर होने लगा। और वुह ईश्वर के आगे
बलवान व्याधा हुआ। इसीलिये कहाजाता है जैसा कि परमेश्वर
१० के आगे नमरूद बलवंत व्याधा। और उसके राज्य का आरंभ
बाबुल और इरक और अक्काद और कलनिः शीनार देश
११ में हुआ। और उसी देश में से आशूर निकला और
१२ नीनवीः और रहूबूस और कालः क नगर बनाये। और
नीनवीः और कालः के मध्य में रसन बनाया जो बड़ा
१३ नगर है। और मिसरीम से लोदीम और अनामीम और
१४ लिहावीम और नफतूहीम। और पथरूसीम और कसलूहीम
१५ जिनसे फलस्ती और कपतूरीम निकले। और किनान
१६ से उसका पहिलौठा सैदून और हीस। और यबूसी
१७ और अमूरी और गर्गसी। और हवी और अरकी और
१८ सीनी। और अरवदी और ज़मारी और हमासी उसके
१९ पीछे किनानियों के घराने फैलगये। और किनान के सिवाने
सैदून से गिरार के मार्ग में ग़ज़ाः लों सदूम और अमूरा
२० और अदमा और सबूइम और लाशअ लों हुए। हाम के

बेटे अपने घरानों और अपनी भाषाओं के समान अपने देशों
२१ और अपनी जातिगणों में थे हैं। और शाम से भी
बालक उत्पन्न ऊए वुह सारे अबर के वंश का पिता था और
२२ याफस उसका बड़ा भाई था। और शाम के वंश ईलाम और
२३ अशूर और अरफ़क्सद और लूद और अरम थे। और
अरम के वंश ऊज़ और हूल और जसर और माश थे।
२४ और अरफ़क्सद से सालह उत्पन्न ऊआ और सालह से अबर।
२५ और अबर से दो बेटे उत्पन्न ऊए एक का नाम फीलग था
क्योंकि उसके दिनों में पृथिवी बांटी गई और उसके भाई
२६ का नाम यकतान था। और यकतान से अल्मूदाद और
२७ शलफ और हसरमावस और यारह और हदोराम और
२८ ऊज़ाल और दिक्लह। और ओबाल और अबीमायल
२९ और शबा। और ओफीर और हवीला और यूबाब उत्पन्न
३० ऊए ये सब यकतान के बेटे थे। और उनके निवास मीशः के
३१ मार्ग लों जो पूरब के पहाड़ शफ़ार लों था। शाम के बेटे अपने
घरानों और अपनी भाषाओं के समान अपने अपने देशों और
३२ अपने अपने जातिगणों में थे थे। नूह के बेटों के घराने उनकी
पीढ़ी और उनके जातिगणों के समान थे हैं और जलमय के
पीछे पृथिवी में जातिगण इन्हीं से बांटे गये।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ और सारी पृथिवी पर एकही बोली और एकही भाषा थी।
२ और ज्यों उन्हों ने पूरब से यात्रा किई तो ऐसा ऊआ कि उन्हों ने
३ शीनार देश में एक चौगान पाया और वहां ठहरे। तब
उन्हों ने आपुस में कहा कि चलो हम ईंटें बनावें और आग में
पकावें सो उनके लिये ईंट पत्थर की संती और गारा गच की
४ संती ऊई। फेर उन्हों ने कहा कि आओ हम एक नगर और
एक गुम्मट जिसकी चोटी स्वर्ग लों पऊंचे अपने लिये बनावें

और अपना नाम करें नहो कि हम सारी पृथिवी पर छिन्न
५ भिन्न होजावें। तब परमेश्वर उस नगर और उस गुम्मट
६ को, जिसे मनुष्य के संतान बनाते थे देखने को उतरा। तब
परमेश्वर ने कहा कि देखो लोग एकही हैं और उन सब की
एकही बोली है अब वे ऐसा ऐसा कुछ करनेलगे सो वे जिस
७ पर मन लगावेंगे उसे अलग न कियेजावेंगे। आओ हम
उतरें और वहां उनकी भाषा को गड़बड़ावें जिसतें एक दूसरे
८ की बोली न समुझें। तब परमेश्वर ने उन्हें वहां से सारी
पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया और वे उस नगर के बनाने से अलग
९ रहे। इस लिये वुह बाबुल कहावता है क्योंकि परमेश्वर ने
वहां सारे जगत की भाषा को गड़बड़ किया और परमेश्वर
ने वहां से उनको सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया।

१० और शाम की वंशावली यह है कि शाम सौ बरस
का होके जलमय के दो बरस पीछे उसे अरफखसद उत्पन्न
११ हुआ। और अरफखसद की उत्पत्ति के पीछे शाम पांच
१२ सौ बरस जीआ और उसे बेटे बेटियां उत्पन्न हुए। पैंतीस
१३ बरस का होके अरफखसद से सालह उत्पन्न हुआ। और
सालह की उत्पत्ति के पीछे अरफखसद चार सौ तीन
१४ बरस जीआ और उसे बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। सालह
१५ जब तीस बरस का हुआ उसे अबर उत्पन्न हुआ। और
सालह अबर की उत्पत्ति के पीछे चार सौ तीन बरस जीआ
१६ और उसे बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और अबर से चौंतीस
१७ बरस के वय में पिलिग उत्पन्न हुआ। और पिलिग की
उत्पत्ति के पीछे अबर चार सौ तीस बरस जीआ और उसे
१८ बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। तीस बरस की वय में पिलिग से रऊ
१९ उत्पन्न हुआ। और रऊ की उत्पत्ति के पीछे पिलिग दो सौ
२० सात बरस जीआ और उसे बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। बत्तीस
२१ बरस के वय में रऊ से सरोग उत्पन्न हुआ। और सरोग की

उत्पत्ति के पीछे एक दो सौ सात बरस जीआ और उसे बेटे
२२ बेटियां उत्पन्न ऊईं सरोग जब तीस बरस का ऊआ उसे
२३ नाहूर उत्पन्न ऊआ। और नाहूर की उत्पत्ति के पीछे सरोग
दो सौ बरस जीआ और उसे बेटे बेटियां उत्पन्न ऊईं।
२४ नाहूर जब उंतीस बरस का ऊआ उसे तिराह उत्पन्न ऊआ।
२५ और तिराह की उत्पत्ति के पीछे नाहूर एक सौ उंतीस बरस
२६ जीआ और उसे बेटे बेटियां उत्पन्न ऊईं। तिराह जब सत्तर
बरस का ऊआ उसे अबराम और नाहूर और हारान
२७ उत्पन्न ऊए। तिराह की बंशावली यह है कि तिराह
से अबराम और नाहूर और हारान उत्पन्न ऊए और हारान
२८ से लूत उत्पन्न ऊआ। और हारान अपने पिता तिराह के
आगे अपनी जन्म भूमि अर्थात् कलदानियों के ऊर में मरगया।
२९ और अबराम और नाहूर ने पत्नियां किईं अबराम की पत्नी
का नाम साराय था और नाहूर की पत्नी का नाम मल्का जो
हारान की बेटी थी वही मल्का और यस्काः का पिता था।
३०।३१ परन्तु साराय बांझ थी उसके कोई संतान न था। और
तिराह ने अपने बेटे अबराम को और अपने पोते हारान के
बेटे लूत को और अपनी बह्न अबराम की पत्नी साराय को
लिया और उन्हें अपने साथ कलदानियों के ऊर से किनान
३२ देश में लेचला और वे हरान में आये और वहां रहे। और
तिराह दो सौ पांच बरस का होके हरान में मरगया।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

१ अब परमेश्वर ने अबराम से कहा कि तू अपने देश और अपने
कुनबे से और अपने पिता के घर से उस देश को जा जो मैं
२ तुझे दिखाऊंगा। और मैं तुझे एक बड़ी जाति बनाओंगा
और तुझे आशीष देओंगा और तेरा नाम बड़ा करोंगा
३ और तू एक आशीर्बाद होगा। और जो तुझे आशीष देंगे

म उन्हें आशीष देऊंगा और जो तुझे धिक्कारेगा मैं उसे धिक्कारेंगा और पृथिवी के सारे घराने तुझसे आशीष पावेंगे।
४ सो परमेश्वर के कहने के समान अवराम चलागया और लूत भी उसके संग गया और जब अवराम हरान से निकला तब वुह
५ पचहत्तर बरस का था। फेर अवराम ने अपनी पत्नी साराय को और अपने भतीजे लूत को और उनकी सारी संपत्ति को, जो उन्हों ने बटोरी थी और उनके सारे प्राणियों को, जो हराम में थे साथ लिया और किनान के देश को जाने के लिये चलनिकले
६ सो वे किनान देश में आये। और अवराम देश में से होके शिकम के स्थान से ममरी के चैागान को पऊंचा
७ उस समय किनानी उस देश में थे। फेर परमेश्वर ने अवराम को दर्शन देके कहा कि यह देश मैं तेरे वंश को देऊंगा तब उसने परमेश्वर के लिये, जिसने उसे दर्शन दिया
८ था वहां एक बेदी बनाई। फेर वुह वहां से बैतईल की पूरब ओर एक पहाड़ पर गया और अपना तंबू बैतईल की पच्छिम ओर खड़ा किया और अई पूरब ओर था और वहां उसने परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई और परमेश्वर का नाम
९ लिया। और अवराम ने जाते जाते दक्खिन की ओर यात्रा
१० किई। और उस देश में अकाल पड़ा और अवराम बास करने के लिये मिसर को उतर गया क्योंकि उस देश में बड़ा
११ अकाल था और यों ऊआ कि जब वुह मिसर के निकट पऊंचा उसने अपनी पत्नी साराय स कहा कि देख मैं जानता हूं कि तू
१२ देखने में सुन्दर स्त्री है। इस लिये यों होगा कि जब मिसरी तुझे देखेंगे वे कहेंगे कि यह उसकी पत्नी है और मुझे मारडालेंगे
१३ परन्तु तुझे जीती रक्खेंगे। तू कहियो कि मैं उसकी बहिन हूं जिसतें तेरे कारण मेरा भला होय और मेरा प्राण तेरे हेतुसे
१४ जीता रहेगा। और जब अवराम मिसर में जापऊंचा
१५ तब मिसरियों ने उस स्त्री को देखा कि अत्यंत सुन्दरी है। और

फरऊन के अध्यक्षों ने भी उसे देखा और फरऊन के आगे उसका सराहना किया सो उस स्त्री को फरऊन के घर में
१६ लेगये। और उसने उसके कारण अबराम का उपकार किया और भेड़ बकरी और बैल और गदहे और दास और
१७ दासी और गधियां और ऊंट उसने पाये। तब परमेश्वर ने फरऊन पर और उसके घराने पर अबराम की पत्नी साराय
१८ के कारण बड़ी बड़ी मरियां डालीं। तब फरऊन ने अबराम को बुलाके कहा कि तू ने मुझे यह क्या किया? तू ने मुझे क्यों
१९ न जताया कि वुह मेरी पत्नी है?। और क्यों कहा कि वुह मेरी बहिन है? यहां लों कि मैं उसे अपनी पत्नी में लिया होता
२० देख यह तेरी पत्नी है तू उसे ले और चला जा। तब फरऊन ने अपने लोगों को उसके विषय में आज्ञा किई और उन्हों ने उसे और उसकी पत्नी को उस सब समेत जो उसका था जानेदिया।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

१ फेर अबराम मिसर से अपनी पत्नी और सारी सामग्री समेत
२ और लूत को अपने संग लियेहुये दक्खिन को चला। और
३ अबराम ढोर और सोना चांदी में बड़ा धनी था। और वुह यात्रा करते दक्खिन से बैतईल लों उसी स्थान को जहां आरंभ में उसका तंबू था बैतईल और अई के मध्य में उस बदी के स्थान में जिसे उसने पहिले वहां बनाया था आया और वहां
४।५ अबराम ने परमेश्वर का नाम लिया। और अबराम के संगी लूत के भी झुंड और गाय बैल और
६ तंबू थे। और साथ रहने में उस देश में उनकी समाई न हुई क्योंकि उनकी सामग्री बहुत थी इस लिये वे एकट्ठे निवास
७ न कर सके। और अबराम के ढोर के चरवाहों में और लूत के ढोर के चरवाहों में झगड़ा हुआ उस समय में किनानी

८ और फरजी उस भूमि में रहते थे। तब अबराम ने लूत से कहा कि मेरे और तेरे बीच और मेरे चरवाहों में और
९ तेरे चरवाहों में झगड़ा न होने पावे क्योंकि हम भाई हैं। क्या सारा देश तेरे आगे नहीं? मुझसे अलग हो जो तू बाईं ओर जाय तो मैं दहिनी ओर जाऊंगा अथवा जो तू दहिनी ओर
१० जाय तो मैं बाईं ओर जाऊंगा। तब लूत ने आंख उठाके अर्दन के सारे चैागान को देखा कि ईश्वर के सदूम और अमूरा को नष्ट करने से आगे वुह सर्वत्र अच्छी रीति से सींचा हुआ था अर्थात् परमेश्वर की बारी के समान ज़ुआर के मार्ग के
११ मिसर की नाईं था। तब लूत ने अर्दन का सारा चैागान चुना और पूरब की ओर चला और वे एक दूसरे से अलग
१२ हुए। अबराम किनान देश में रहा और लूत ने चैागान के नगरों में बास किया और सदूम की ओर तंबू खड़ा किया।
१३ पर सदूम के लोग परमेश्वर के आगे अत्यंत दुष्ट और पापी
१४ थे। तब लूत के अलग होने से पीछे परमेश्वर ने अबराम से कहा कि अब अपनी आंखें उठा और उस स्थान से जहां तू है उत्तर और दक्खिन और पूरब और पच्छिम की ओर देख।
१५ क्योंकि मैं यह सारा देश जिसे तू देखता है तुझे और तेरे
१६ वंश को सदा के लिये देऊंगा। और मैं तेरे वंश को पृथिवी की धूल के तुल्य करूंगा यहांलों कि यदि कोई पृथिवी की धूल
१७ को गिन सके तो तेरा वंश भी गिना जायगा। उठके देश की लंबाई और चैाड़ाई में होके फिर क्योंकि मैं उसे तुझे देऊंगा।
१८ तब अबराम ने तंबू उठाया और ममरी के चैागानों में, जो हिबरून में है आ रहा और वहां परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

१ और शीनार के राजा अमराफाल के और इल्लसार के राजा अरयूख के और ईलाम के राजा कदरलाऊमर के और
२ जातिगणों के राजा तीदाल के दिनों में यों हुआ। उन्हों ने सदूम के राजा बिरा से और अमूरा के राजा बरशा से और अदमा के राजा शिनाब से और सबूईम के राजा शमिबर से और
३ बला के राजा से जो जुआर है संग्राम किया। ये सब सदूम
४ की नीचाई में जो खारी समुद्र है एकट्ठे हुए। उन्हों ने बारह बरस लों कदरलाऊमर की सेवा किई और तेरहवें बरस उस्से
५ फिरगये। और चौदहवें बरस में कदरलाऊमर और उसके साथी राजा आये और अस्तरतकरनईम में और रफाईमियों को और हाम में ज़ूजीमियों को और किरियासाईम के चौगान
६ में अमीमियों को। और उनके सईर पर्वत में हूरियों को
७ पारान के चौगान लों जो बन के पास है मारा। और फिरे और इनमिशपाट को, जो कादिश है फिरे और अमालकियों के सारे देश को और अमूरियों को भी जो हजीज़ूनतामर
८ में रहते थे मारलिया। और सदूम का राजा और अमूरा का राजा और अदमा का राजा और सबूईम का राजा
९ और बिला का राजा, जो ज़ुआर है निकला। और ईलाम के राजा कदरलाऊमर के संग और जातिगणों के राजा तीदाल के संग और शीनर के राजा अमराफाल और इल्लासार के राजा अरियूख ने चार राजा पांच के संग युद्ध के लिये
१० सदूम की नीचाई में संग्राम में मिले। और सदूम की नीचाई में चहले के गढ़हे थे और सदूम और अमूरा के राजा भागे और वहां गिरे और बचेहुए लोग भाग के पहाड़ पर गये।
११ उन्हों ने सदूम और अमूरा की सारी संपत्ति और उनके
१२ सारे भोजन लूटलिये और अपने मार्ग पकड़े। और अबराम के भतीजे लूत को, जो सदूम में रहता था और उसकी संपत्ति

१३ को लेके चलेगये। तब किसी ने बचके इबरानी अबराम को संदेश दिया क्योंकि वुह इश्कूल और आनीर का भाई अमूरी ममरी के चैागान में रहता था और वे अबराम के सहायक थे।
१४ और अबराम ने अपने भाई के लेजाने की बात सुनके अपने घर के तीन सौ अठारह दासों को लिया और दान लों उनका
१५ पीछा किया। और उसने और उसके सेवकों ने आप को रात को बिभाग किया और उन्हें मारा और हूबाः लों, जो
१६ दमिश्क की बाईं ओर है उन्हें रगेदे चलेगये। और वुह सारी संपत्ति को और अपने भाई लूत को भी और उसकी संपत्ति को और स्त्रियों को भी और लोगों को फेर लाया।
१७ और कदरलाऊमर को और उसके संगी राजाओं को मार के फिर आवने के पीछे सदूम का राजा उसे भेंट करने को शावाः की तराई लों, जो राजा की तराई है निकला।
१८ और सलीम का राजा मलकीसिदक रोटी और दाख रस
१९ लाया और वुह अति महान ईश्वर का याजक था। और उसने उसे आशीष दिया और बोला कि आकाश और पृथिवी के प्रभु
२० अति महान ईश्वर का अबराम धन्य होवे। और अति महान ईश्वर को धन्य जिसने तेरे वैरियों को तेरे हाथ में सौंपदिया
२१ और उसने सब का दसवां भाग उसे दिया। और सदूम के राजा ने अबराम से कहा कि प्राणियों को मुझे दीजिये
२२ और संपत्ति आप रखिये। तब अबराम ने सदूम के राजा से कहा कि मैं ने अपना हाथ अति महान ईश्वर परमेश्वर के
२३ आगे, जो स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु है उठाया है। क्योंकि मैं एक तागे से लेके जूते के बंद लों आप का कुछ न लेउंगा सो
२४ मत कहियो कि मैं ने अबराम को धनमान किया। परन्तु केवल वुह जो तरुणों ने खाया और उन मनुष्यों के भाग जो मेरे संग अर्थात् आनीर और इश्कूल और ममरी के वे अपने भाग लेवें।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

१ इन बातों के पीछे परमेश्वर का बचन यह कहते ऊए दर्शन में अबराम पर पऊंचा कि हे अबराम मत डर मैं तेरी ढाल
२ और तेरा बड़ा प्रतिफल हूं। तब अबराम ने कहा कि हे प्रभु ईश्वर तू मुझे क्या देगा मैं तो निर्बंश जाता हूं और मेरे
३ घर का भंडारी दमिश्की इलीआज़र है?। फिर अबराम ने कहा कि देख तू ने मुझे कोई बंश न दिया और देख जो
४ मेरे घर में उत्पन्न ऊआ वही मेरा अधिकारी है। और देखो परमेश्वर का बचन उसे यूं कहते ऊए पऊंचा कि यह तेरा अधिकारी न होगा परन्तु जो तुझी से उत्पन्न होगा सो तेरा
५ अधिकारी होगा। फिर उसने उसे बाहर लेजाके कहा अब स्वर्ग की ओर देख और जो तारों को तू गिनसके तो उन्हें गिन फिर उसने उसे कहा कि तेरा बंश ऐसाही होगा।
६ तब वुह परमेश्वर पर बिश्वास लाया और यह उसके लिये
७ धर्म गिनागया। फिर उसने उसे कहा कि मैं परमेश्वर हूं जो तुझे यह भूमि अधिकार में देने को कलदानियों के ऊर से
८ निकाललाया। तब उसने कहा कि हे परमेश्वर मेरे ईश्वर
९ मैं क्योंकर जानों कि मैं उसका अधिकारी होऊंगा?। तब उसने उसे कहा कि तू तीन बरसी एक कलोर और तीन बरसी एक बकरी और तीन बरसी एक मेढ़ा और एक पंडुक
१० और कपोत का एक बच्चा मेरे लिये ले। सो उसने ये सब लिये और एक एक के दो दो भाग किये और हर एक भाग को उसके दूसरे भाग के सान्ने धरा परन्तु पंछियों का भाग न
११ किया। और जब पंछी उन लोथों पर उतरे अबराम ने उन्हें
१२ हांक दिया। और सूर्य अस्त होते ऊए अबराम पर भारी नींद पड़ी और क्या देखता है कि बड़ा भयंकर अंधकार उस
१३ पर पड़ा। तब उसने अबराम को कहा निश्चय जान कि तेरे बंश औरों के देश में परदेशी होंगे और उनकी सेवा करेंगे

१४ और वे उन्हें चार सौ बरस लों सतावेंगे। परन्तु जिनकी वे सेवा करेंगे मैं उस जाति का भी बिचार करूंगा और वे पीछे
१५ बड़ी संपत्ति लेके निकलेंगे। और तू अपने पितरों में कुशल से जायगा और बज्जत पुरनिया होके गाड़ा जायगा।
१६ परन्तु चौथी पीढ़ी में वे इधर फेर आवेंगे क्योंकि अमूरियों का
१७ अधर्म अब लों भरपूर नहीं ज़ञा। और जब सूर्य अस्त ज़ञा तो यों ज़ञा कि अंधियारा ज़ञा कि देखो एक धूआं उठता भट्टा और एक आग का दीपक उन टुकड़ों के मध्य में से होके चला
१८ गया। उसी दिन परमेश्वर ने अबराम से नियम करके कहा कि मैं ने मिसर की नदी से फुरात की बड़ी नदी लों यह देश
१९ तेरे बंश को दिया है। अर्थात् कीनी और कनीजी और
२० कदमूनी। और हित्ती और फरजी और रफाईमी।
२१ और अमूरी और किनानी और जर्जसी और यबूसी का देश।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ अब अबराम की पत्नी सारा कोई लड़का उसके लिये न जनी और उसकी एक मिसरी लौंड़ी थी जिस का नाम हाजरः
२ था। तब सारा ने अबराम से कहा कि देख परमेश्वर ने मुझे जन्ने से रोका है मैं तेरी बिनती करती हों कि अब मेरी लौंड़ी पास जाइये क्या जाने मेरा घर उस्से बस जाय और अबराम
३ ने सारा की बात मानी। सो अबराम के किनान देश में दस बरस निवास करने के पीछे उसकी पत्नी सारा ने अपनी लौंड़ी मिसरी हाजरः को लिया और अपने पति अबराम
४ को उसकी पत्नी होने को दिया। और उसने हाजरः को ग्रहण किया और वुह गर्भिणी ज़ई और जब उसने आप को गर्भिणी देखा तो उसकी स्वामिनी उसकी दृष्टि में निंदित
५ ज़ई। तब सारा ने अबराम से कहा कि मेरा दोष आप पर मैं ने अपनी लौंड़ी आप को दिई और जब उसने अपने को

गर्भिणी देखा तो मैं उसकी दृष्टि में निंदित ऊई मेरे और
६ आप के बीच परमेश्वर न्याय करे। तब अबराम ने सारा से
कहा कि देख तेरी लौंड़ी तेरे हाथ में है जो तुझे अच्छा लगे
सो उस्से कर और जब सारा ने उसे सताया वुह उसके आगे
७ से भाग गई। और परमेश्वर के दूत ने एक पानी के
सोते के पास बन में उस सोते के पास जो सूर के मार्ग में है
८ उसे पाया। और उसे कहा कि हे सारा की लौंड़ी हाजरः
तू कहां से आई है और किधर जायगी? वुह बोली कि मैं
९ अपनी स्वामिनी सारा के आगे से भागती हूं। और परमेश्वर
के दूत ने उसे कहा कि अपनी स्वामिनी के पास फिर जा और
१० उसके बश में रह। फिर परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि
मैं तेरा वंश अत्यंत बढ़ाऊंगा ऐसा कि वुह बऊताई के मारे
११ गिना न जायगा। और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि
देख तू गर्भिणी है और एक बेटा जनेगी और उसका नाम
१२ इश्माईल रखना क्योंकि परमेश्वर ने तेरा दुख सुना। और
वुह एक बनमनुष्य होगा उसका हाथ हर एक मनुष्य
के विरुद्ध और हर एक का हाथ उसके विरुद्ध होगा और
१३ वुह अपने सारे भाइयों में निवास करेगा। तब उसने
उस परमेश्वर का नाम जिसने उस्से बातें किईं यूं लिखा
कि हे ईश्वर तू मुझे देखता है क्योंकि उसने कहा कि मैं ने
१४ अपने दर्शी का पीछा यहां भी देखा है। इस लिये उस कूएं
का नाम बीर लहराई रक्खा देखो वुह कादस और बिरद
१५ के मध्य में है। सो हाजरः अबराम के लिये एक बेटा जनी और
अबराम ने अपने बेटे का नाम, जिसे हाजरः जनी इश्माईल
१६ रक्खा। और जब हाजरः से अबराम के लिये इश्माईल
उत्पन्न ऊआ तब अबराम छियासी बरस का था।

१ और जब अबराम निन्नावे बरस का हुआ तब परमेश्वर ने अबराम को दर्शन दिया और कहा कि मैं सर्व सामर्थी ईश्वर तू
२ मेरे आगे चल और सिद्ध हो। और मैं अपने और तेरे मध्य
३ में एक नियम बांधोंगा और मैं तुझे अत्यंत बढ़ाओंगा। तब अबराम औंधा गिरा और ईश्वर ने उस्से बातें करके कहा।
४ कि मैं जो हों मेरा नियम तेरे संग है और तू बहुतसी
५ जातिगणों का पिता होगा। और तेरा नाम फिर अबराम न होगा परन्तु तेरा नाम इबराहीम होगा क्योंकि मैं ने तुझे
६ बहुतसी जातिगणों का पिता बनाया है। और मैं तुझे अत्यंत फलमान करोंगा और तुझ्से जातिगण बनाऊंगा और राजा
७ तुझ्से निकलेंगे। और मैं अपना नियम अपने और तेरे मध्य में और तेरे बंश के उनकी पीढ़ियों में सदा के लिये एक नियम जो उनके साथ सदा लों रहे ठहराऊंगा कि मैं तेरा
८ और तेरे पीछे तेरे बंश का ईश्वर होंगा। और मैं तुझे और तेरे पीछे सर्वदा के अधिकार के लिये तेरे बंश को तेरे टिकाव का देश देओंगा अर्थात् किनान का सारा देश
९ और मैं उनका ईश्वर होंगा। फिर ईश्वर ने इबराहीम से कहा कि तू और तेरे पीछे तेरा बंश उनकी पीढ़ियों
१० में मेरे नियम को मानें। सो मेरा नियम जो मुझ्से और तेरे पीछे तेरे बंश से है उसे मानियो यह है कि
११ तुम्में से हर एक बालक का ख़तनः कियाजाय। और तुम अपने शरीर की खलड़ी काटो और वुह मेरे और तुम्हारे
१२ मध्य में नियम का चिह्न होगा। और तुम्हारी पीढ़ियों में हर एक आठ दिन के बालक का ख़तनः कियाजाय जो घर में उत्पन्न होय अथवा जो किसी परदेशी से जो तेरे बंश का
१३ न हो दाम से मोल लियाजाय। जो तेरे घर में उत्पन्न हुआ हो और जो तेरे दाम से मोल लियागया हो अवश्य उनका ख़तनः कियाजाय और मेरा नियम तुम्हारे मांस में

१४ सर्वदा के नियम के लिये होगा। और जो अख़तनः बालक जिसकी ख़लड़ी का ख़तनः न ज्ञआ है सो प्राणी अपने लोग
१५ से कटजाय कि उसने मेरा नियम तोड़ा है। फिर ईश्वर ने इबराहीम से कहा तेरी पत्नी सारा जो है तू उसे
१६ सारा न कहाकर परन्तु उसका नाम सारः रख। और मैं उसे आशीष देउंगा और तुझे एक बेटा उस्से भी देउंगा निश्चय मैं उसे आशीष देउंगा और वुह जातिगण होगी और राजा
१७ लोग उस्से होंगे। तब इबराहीम औंधे मुंह गिरा और हंसा और अपने मन में कहा क्या सौ बरस के वृद्ध से लड़का उत्पन्न होगा? और क्या सारः जो नब्बे बरस की है जनेगी?।
१८ फिर इबराहीम ने ईश्वर से कहा कि हाय कि इश्माईल तेरे
१९ आगे जीता रहे। तब ईश्वर ने कहा कि तेरी पत्नी सारः तेरे लिये निश्चय एक बेटा जनेगी और तू उसका नाम इसहाक़ रखना और मैं सर्वदा के नियम के लिये अपना नियम उस्से
२० और उसके पीछे उसके वंश से स्थिर करोंगा। और इश्माईल जो है मैं ने उसके विषय में तेरी सुनी है देख अब मैं ने उसे आशीष दिया और उसे फलमान करोंगा और उसे अत्यंत बढ़ाओंगा और उस्से बारह अध्यक्ष उत्पन्न होंगे और उसे
२१ बड़ी मंडली बनाओंगा। परन्तु इसहाक़ के साथ जिसे सारः तेरे लिये दूसरे बरस इसी ठहराये ज्ञए समय में जनेगी मैं
२२ अपना नियम स्थिर करोंगा। तब उस्से बात करने से रह गया
२३ और इबराहीम के पास से ईश्वर ऊपर जातारहा। तब इबराहीम ने अपने बेटे इश्माईल को और सब जो उसके घर में उत्पन्न ज्ञए थे और सब जो उसके दाम से मोल लियेगये थे अर्थात् इबराहीम के घराने के हर एक पुरुष को लेके उसी दिन उनकी ख़लड़ी का ख़तनः किया जैसा कि ईश्वर ने उसे कहा
२४ था। और जब उसकी ख़लड़ी का ख़तनः ज्ञआ तब इबराहीम
२५ निन्नावे बरस का था। और उसके बेटे इश्माईल की ख़लड़ी

२६ का ख़तनः हुआ तब वुह तेरह बरस का था। उसी दिन
इबराहीम और उसके बेटे इस्माईल का, ख़तनः कियागया।
२७ और उसके घराने के सारे पुरुषों का, जो घर में उत्पन्न हुए और
जो परदेशियों से मोल लियेगये उसके साथ ख़तनः कियेगये।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर उसे ममरा के चैागान में दिखाई दिया और वुह
२ दिन के घाम के समय में अपने तंबू के द्वार पर बैठाथा। और
उसने अपनी आंखें उठाईं तो क्या देखता है कि तीन
मनुष्य उसके पास खड़े हैं उन्हें देख के वुह तंबू के द्वार पर से
३ उनकी भेंट को दौड़ा। और भूमि लों दंडवत किई और कहा,
हे मेरे स्वामी यदि मैं ने अब आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है
तो मैं आप की बिनती करताहों कि अपने दास के पास से
४ चले न जाइये। इच्छा होय तो थोड़ा जल लायाजाय अपने
५ चरण धोइये और पेड़तले बिश्राम कीजिये। और मैं एक
कैार रोटी लाऊं और आप तृप्त हूजिये उसके पीछे आगे
बढ़िये क्योंकि आप इसी लिये अपने दास के पास आये हैं
६ तब वे बोले कि जैसा तू ने कहा तैसा कर। सो इबराहीम तंबू
में सारः पास उतावली से गया और उसे कहा कि फुरती कर
और तीन नपुआ चोखा पिसान लेके गूंध और उसके फुलके
७ पका। फिर इबराहीम झुंड की ओर दैाड़ा गया और एक
अच्छा कोमल बछड़ा लेके दास को दिया उसने भी उसे सिद्ध
८ करने में चटक किया। तब उसने मखन और दूध और
वुह बछड़ा जो पकाया था लिया और उनके आगे धरा और
आप उनके पास पेड़तले खड़ा रहा और उन्हों ने खाया।
९ तब उन्हों ने उसे पूछा कि तेरी पत्नी सारः कहां है? वुह
१० बोला कि देखिये तंबू में है। उसने कहा कि जीवन के समय के
समान निश्चय मैं तुझ पास फिर आऊंगा और देख तेरी

पत्नी सारः एक बेटा जनेगी और सारः उसके पीछे तंबू
११ के द्वार पर सुनती थी। और इबराहीम और सारः बूढ़े और
१२ पुरनिये थे और सारः से स्त्री का व्यवहार जातारहा। तब
सारः हंस के अपने मन में बोली कि क्या अब मुझे बुढ़ापे में और
१३ मेरा स्वामी भी पुरनिया है फिर आनंद होगा। तब परमेश्वर
ने इबराहीम से कहा कि सारः क्यों यह कहिके मुसकिराई कि
१४ मैं जो बुढ़िया हों सचमुच बालक जनोंगी?। क्या परमेश्वर
के लिये कोई बात असाध्य है? जीवन के समय के समान मैं
ठहरायेहुए समय में तुझ पास फिर आऊंगा और सारः
१५ का बेटा होगा। तब सारः यह कहके मुकरगई कि मैं तो
नहीं हंसी क्योंकि वुह डरगई थी तब उसने कहा, नहीं परन्तु
१६ तू हंसी है। तब वे मनुष्य वहां से उठके सदूम की ओर
देखनेलगे और इबराहीम उन्हें बिदा करने को उनके साथ
१७ साथ चला। फिर परमेश्वर ने कहा कि जो मैं करताहों सो क्या
१८ इबराहीम से छिपाओं?। इबराहीम तो निश्चय एक बड़ा और
बलवान जाति होगा और पृथिवी के सारे जातिगण उसमें
१९ आशीष पावेंगे। क्योंकि मैं उसे जानताहों कि वुह अपने पीछे
अपने बालकों और अपने घराने को आज्ञा करेगा और वे
न्याय और विचार करने को परमेश्वर का मार्ग पालन करेंगे
जिसतें जो कुछ परमेश्वर ने इबराहीम के विषय में कहा
२० है सो उस पर पहुंचावे। फिर परमेश्वर ने कहा इस कारण
कि सदूम और अमूरा का चिल्लाना बड़ा है और इस कारण
२१ कि उनके पाप अत्यंत गरू हुए। मैं अब उतर के देखोंगा जो
उसके चिल्लाने के समान जो मुझ लों पहुंचीहै उन्हों ने किया
२२ है कि नहीं। तब उन मनुष्यों ने वहां से अपने मुंह फेरे और
सदूम की ओर गये परन्तु इबराहीम तद भी परमेश्वर के आगे
२३ खड़ा रहा। और इबराहीम ने पास जाके कहा कि
२४ क्या तू दुष्टों के संग धर्मियों को भी नष्ट करेगा?। क्या जाने

नगर में पचास धर्मी होयं क्या तदभी नष्ट करेगा और उसके
२५ पचास धर्मियों के लिये उस स्थान को न छोड़ेगा। दुष्टों के
संग धर्मियों को मारना ऐसी बात तुझ से परे होय और कि
धर्मियों को दुष्टों के समान करना तुझ से दूर होय क्या
२६ सारी पृथिवी का न्यायी यथार्थ न करेगा?। तब परमेश्वर ने
कहा, यदि मैं सदूम नगर में पचास धर्मी पाओं तो मैं
२७ उनके लिये सारे स्थान को छोड़ देऊंगा। फिर इबराहीम
ने उत्तर देके कहा कि देख मैं ने परमेश्वर के आगे बोलने में
२८ ढिठाई किई यद्यपि मैं धूल और राख हों। क्या जाने पचास
धर्मियों से पांच घाट होवें तो क्या पांच के लिये सारे
नगर को नाश करेगा? तब उसने कहा, यदि मैं उसमें
२९ पैंतालीस पाओं तो उसे नाश न करोंगा। फिर उसने
उसे कहा क्या जाने चालीस वहां पायेजावें तब उसने कहा, मैं
३० चालीस के कारण ऐसा न करोंगा। फेर उसने कहा, हाय कि
परमेश्वर क्रुद्ध न होवे तो मैं कहों क्या जाने वहां तीस होवें
तब उसने कहा, यदि मैं वहां तीस पाओं तो ऐसा न करोंगा।
३१ फिर उसने कहा कि देख मैं ने परमेश्वर के आगे बोलने में
ढिठाई किई, क्या जाने बीसही वहां पायेजावें तब उसने कहा,
३२ मैं बीस के कारण उसे नाश न करोंगा। फिर उसने कहा, हाय
कि परमेश्वर क्रुद्ध न होवे तो मैं अब की बार फिर कहों क्या
जाने वहां दसही पायेजावें तब उसने कहा, मैं दस के कारण
३३ उसे नाश न करोंगा। तब परमेश्वर इबराहीम से बातचीत
समाप्त करके चलागया और इबराहीम अपने स्थान को फिरा।

१९ उन्नीसवां पर्व्व।

१ फिर सांझ को दो दूत सदूम में आये और लूत सदूम के
फाटक पर बैठा था उन्हें देखकर लूत उनसे भेंट करने को
२ गया और भूमि लों दंडवत किई। और कहा कि हे स्वामियो

अपने दास के घर की ओर चलिये और रात भर ठहरिये और चरण धोइये और तड़के उठके अपने मार्ग लीजिये तब उन्हों ने कहा कि नहीं परन्तु हम रात भर सड़क में रहेंगे।
३ पर जब उसने उन्हें बहुत दबाया तब वे उसके ओर फिरे और उसके घर में आये तब उसने उनके लिये जेवनार किया और अखमीरी रोटी उनके लिये पकाई और उन्हों ने खाई।
४ परन्तु उनके लेटने से आगे सदूम के नगर के मनुष्यों ने क्या तरुण क्या बूढ़े सब लोगों ने चारों ओर से आके उस घर
५ को घेरा। और लूत को पुकार के कहा कि जो पुरुष तेरे यहां आज रात आये हैं सो कहां हैं? हमारे पास उन्हें बाहर ला
६ जिसतें हम उनसे संगम करें। और लूत द्वार से उन पास बाहर
७ गया और अपने पीछे द्वार बंद किया। और कहा कि हे
८ भाइयो ऐसी दुष्टता न करना। देखो मेरी दो बेटियां हैं जो पुरुष से अज्ञान हैं कहो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर लाऊं और जो तुम्हारी दृष्टि में भला लगे सो उनसे करो केवल उन मनुष्यों से कुछ न करो क्योंकि वे इस लिये मेरी छत की छाया
९ तले आये हैं। उन्हों ने कहा कि हट जा और कहा कि यह एक जन हम्में टिकने को आया सो अब न्यायी होने चाहता है अब हम तेरे साथ उनसे अधिक बुराई करेंगे तब वे उस पुरुष पर अर्थात् लूत पर ऊब्बर करके आये और द्वार तोड़ने
१० को झपटे। परन्तु उन पुरुषों ने अपने हाथ बढ़ा के लूत को घर
११ में खींच लिया और द्वार बंद किया। और क्या छोटे क्या बड़े सारे मनुष्यों को, जो घर के द्वार पर थे अंधापन से मारा
१२ यहां लों कि वे द्वार ढूंढ़ते ढूंढ़ते थकगये। तब उन पुरुषों ने लूत से कहा कि तेरा कोई और यहां है? जवांई अथवा बेटे अथवा बेटियां जो कोई इस नगर में तेरा है उन्हें लेकर
१३ इस स्थान से निकल जा। क्योंकि हम इस स्थान को नाश करेंगे इस लिये कि इनका चिल्लाना परमेश्वर के आगे बड़ा है और

१४ परमेश्वर ने हमें इसे नाश करने को भेजा है। तब लूत निकला और अपने जवांइयों से, जिन्हों से उसकी बेटियां ब्याही थीं बोला और कहा कि उठो और इस स्थान से निकलो क्योंकि परमेश्वर इस नगर को नष्ट करेगा परन्तु वुह अपने
१५ जवांइयों के आगे जैसा कोई ठठोलू दिखाई दिया। और जब बिहान हुआ दूतों ने लूत को शीघ्र करवा के कहा कि उठ अपनी पत्नी और अपनी दो बेटियां, जो यहां हैं लेजा नहो
१६ कि तू इस नगर के दंड में भस्म होजाय। और जब लों वुह बिलंब करता था उन पुरुषों ने उसका और उसकी पत्नी का और उसकी दोनों बेटियों का हाथ पकड़ा क्योंकि परमेश्वर की कृपा उसपर थी और उसे निकालकर नगर के बाहर
१७ डालदिया। और उन्हें बाहर निकाल के उसे यों कहा कि अपने प्राण के लिये भाग और पीछे मत देखना और सारे चौगान में न ठहरना परन्तु पहाड़ पर भागजा न होवे कि
१८ तू भस्म होवे। तब लूत ने उन्हें कहा कि हे मेरे प्रभु ऐसा नहीं।
१९ देखिये अब आप के दास ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है और तू ने अपनी दया बढ़ाई है जो तू ने मेरे प्राण बचाने में दिखाई है मैं अब पहाड़ पर नहीं जा सक्ता न होवे
२० कि कोई बिपत मुझ पर पड़े और मैं मरजाऊं। अब देखिये कि यह नगर भागने को समीप है और वुह छोटा है मुझे उधर जाने दीजिये वुह क्या छोटा नहीं, सो मेरा प्राण बच
२१ जायगा। उसने उसे कहा कि देख इस बात के बिषय में भी मैं ने तेरे मुंह को ग्रहण किया है कि मैं इस नगर को, जिसकी
२२ तू ने कही उलट न देऊंगा। शीघ्र कर और उधर भाग क्योंकि जबलों तू वहां न पहुंचे मैं कुछ कर नहीं सक्ता इस
२३ लिये उस नगर का नाम जुआर रक्खा। सूर्य्य पृथिवी
२४ पर उदय हुआ था जब लूत जुआर में पहुंचा। तब परमेश्वर ने परमेश्वर की ओर से सदूम और अमूरा पर

२५ आग और गंधक स्वर्ग से बरसाया। और उन नगरों को
और नगरों के सारे बिवासियों को और सारे चैागान को
२६ और जो कुछ भूमि पर ऊगता था उलट दिया। परन्तु
उसकी पत्नी ने उसके पीछे से फिर के देखा और वुह लान
२७ का खंभा बन गई। और इबराहीम उठ के बिहान को
तड़के उस स्थान में, जहां वुह परमेश्वर के आगे खड़ा था
२८ आ पहुंचा। और उसने सदूम और गमरा और चागान
की सारी भूमि की ओर दृष्टि किई तो क्या देखता है कि उस
२९ भूमि से भट्ठी कासा धूआं उठरहा है। और यों हुआ कि
जब ईश्वर ने चैागान के नगरों को नष्ट किया तब ईश्वर ने
इबराहीम को स्मरण किया और उन नगरों को जहां लूत
रहता था नष्ट करते हुए लूत को उस बिपत्ति से छुड़ाया।
३० फिर लूत अपनी बेटियों समेत जुअार से पहाड़ पर
जा रहा क्योंकि वुह जुअार में रहने को डरा तब वुह और
३१ उसकी दो बेटियां एक कंदला में जा रहे। और पहिलौंठी
ने छोटकी से कहा कि हमारा पिता वृद्ध है और पृथिवी पर
कोई पुरुष नहीं रहा जो जगत की रीति के समान हमें ग्रहण
३२ करे। सो आओ हम अपने पिता को दाखरस पिलावें और
हम उसके साथ शयन करें कि हम अपने पिता से वंश
३३ जोगावें। तब उन्हों ने उस रात अपने पिता को दाख रस
पिलाया और पहिलौंठी भीतर गई और अपने पिता के साथ
शयन किया उसने उसके शयन करते और उठते सुरत न किई।
३४ और जब दूसरा दिन हुआ पहिलौंठी ने छोटकी से कहा कि
देख मैं ने कल रात अपने पिता के साथ शयन किया हम उसे
आजरात भी दाख रस पिलावें और तू जाके उसके साथ शयन
३५ कर जिसतें हम अपने पिता का वंश जोगावें। तब उन्हों ने अपने
पिता को उस रात भी दाख रस पिलाया और छोटकी ने उठके
उसके साथ शयन किया उसने उसके भी न शयन करते न उठते

३६ ऊए सुरत किई। इस रीति से लूत की दोनों बेटियां अपने पिता
३७ से गर्भिणी ऊईं। और पहिलौंठी एक बेटा जनी और उसका
३८ नाम मुआब रक्खा वही आज लों मुआबियों का पिता है। और
छोटकी भी एक बेटा जनी और उसका नाम बिनअम्मी रक्खा
और वही आज लों अमून के बंश का पिता है।

२० बीसवां पर्ब्ब।

१ फिर इबराहीम ने वहां से दक्खिन के देश को यात्रा किई और
कादश और शूर के बीच ठहरा और गिरार में टिका।
२ और इबराहीम अपनी पत्नी सारः के विषय में बोला कि यह
मेरी बहिन है सो गिरार के राजा अबीमलख़ ने भेजके सारः
३ को लेलिया। परन्तु रात को ईश्वर ने अबीमलख़ पास स्वप्न में
आके कहा कि देख तू इस स्त्री के कारण जिसे तू ने लिया है
४ मरचुका क्योंकि वुह पति से ब्याही है। परन्तु अबीमलख़ उस
पास न आया था तब उसने कहा कि हे परमेश्वर क्या तू
५ धर्मी जाति को भी मारडालेगा?। क्या उसने मुझे नहीं कहा
कि वुह मेरी बहिन है? वुह आपही बोली कि वुह मेरा भाई
है मैं ने अपने मन की सचाई और हाथ की निर्दोषता से
६ ऐसा किया है। तब ईश्वर ने उसे स्वप्न में कहा कि मैं भी
जानताहों कि तू ने अपने मन की सचाई से ऐसा किया है
क्योंकि मैं ने भी तुझे मेरे बिरुद्ध पाप करने से रोका इस
७ लिये मैं ने तुझे उसे छूने न दिया। सो अब उस पुरुष को
उसकी पत्नी फेर दे क्योंकि वुह भविष्यदक्ता है और वुह
तेरे लिये प्रार्थना करेगा और तू जीता रहेगा परन्तु यदि तू
उसे फेर न देगा तो यह जान कि तू और तेरे सारे जन
८ निश्चय मरेंगे। तब अबीमलख़ ने बिहान को तड़के उठकर
अपने सारे सेवकों को बुलाया और ये सारी बातें उन्हें
९ सुनाईं तब वे बऊत डरगये। तब अबीमलख़ ने

इबराहीम को बुलाया और उसे कहा कि तू ने हम से क्या किया है? और मैं ने तेरा क्या अपराध किया कि तू मुझ पर और मेरे राज्य पर एक बड़ा पाप लाया है? तू ने मुझ से अनुचित
१० काम किये। फिर अबीमलख़ ने इबराहीम से कहा कि तू ने
११ क्या देखा जो तू ने यह काम किया है?। इबराहीम बोला इस कारण कि मैं ने समझा कि निश्चय ईश्वर का भय इस स्थान
१२ में नहीं है और मेरी पत्नी के लिये वे मुझे मारडालेंगे। और तथापि वुह मेरी बहिन निश्चय है वुह मेरे पिता की पुत्री है
१३ परन्तु मेरी माता की पुत्री नहीं सो मेरी पत्नी ऊई। और जब ईश्वर ने मेरे पिता के घर से मुझे भमाया तो यूं ऊआ कि मैं ने उसे कहा कि मुझ पर तू यही अनुग्रह कर कि जहां कहीं जिधर हम जायें मेरे विषय में कह कि वुह मेरा
१४ भाई है। तब अबीमलख़ ने भेड़ बकरी गाय बैल और दास दासियां लेकर इबराहीम को दिया और उसकी पत्नी सारः
१५ को भी उसे फेरदिया फिर अबीमलख़ ने कहा कि देख
१६ मेरा देश तेरे आगे है जहां तेरा मनभाये तहां रह। और उसने सारः से कहा कि देख मैं ने तेरे भाई को सहस्र टुकड़ा चांदी दिई है देख तेरे सारे संगियों के लिये और सभों के लिये वुह तेरी आंखों की ओट होगी सो वुह यूं दपटीगई।
१७ तब इबराहीम ने ईश्वर की प्रार्थना किई और ईश्वर ने अबीमलख़ और उसकी पत्नी और उसकी दासियों को चंगा
१८ किया और वे जन्ने लगीं। क्योंकि परमेश्वर ने इबराहीम की पत्नी सारः के लिये अबीमलख़ की सारी कोखों को बंद करदिया था।

२१ एकईसवां पर्ब्ब ।

१ और अपने कहने के समान परमेश्वर ने सारः से भेंट किया और अपने वचन के समान परमेश्वर ने सारः के विषय में

२ किया । क्योंकि सारः गर्भिणी हुई और इबराहीम के लिये उसके बुढ़ापे में ठीक उसी समय में, जो ईश्वर ने उसे कहाथा
३ एक बेटा जनी । और इबराहीम ने अपने बेटे का नाम, जिसे
४ सारः उसके लिये जनी थी इसहाक़ रक्खा । और ईश्वर की आज्ञा के समान इबराहीम ने आठवें दिन अपने बेटे इसहाक़
५ का ख़तनः किया । जब उसका बेटा इसहाक़ उस्से उत्पन्न हुआ
६ तब इबराहीम सौ बरस का वृद्ध था । तब सारः बोली कि ईश्वर ने मुझे हंसाया और सारे सुनवैये मेरे संग हंसेंगे ।
७ फिर वुह बोली कि कौन इबराहीम से कहता कि सारः बालक को दूध पिलावेगी? क्योंकि उसके बुढ़ापे में मैं उसके लिये बेटा जनी ।
८ और वुह लड़का बढ़ा और उसका दूध छुड़ायागया और इसहाक़ के दूध छुड़ाने के दिन इबराहीम ने बड़ा जेवनार किया ।
९ और सारः मिसरी हाजरः के बेटे को, जिसे वुह
१० इबराहीम के लिये जनी थी, चिड़ाते देखा है । उसने इबराहीम से कहा कि आप इस लौंडी को और उसके बेटे को निकाल दीजिये क्योंकि यह लौंडी का बेटा मेरे बेटे इसहाक़ के साथ अधिकारी
११ न होगा । और अपने बेटे के लिये यह बात इबराहीम को
१२ बड़ी कड़वी लगी । तब ईश्वर ने इबराहीम से कहा कि लड़के के और तेरी लौंडी के विषय में तुझे कड़वी न लगे सब जो सारः ने तुझे कहा मानले क्योंकि तेरा वंश इसहाक़ से
१३ गिनाजायगा । और मैं उस लौंडी के बेटे से भी एक जाति
१४ उत्पन्न करोंगा क्योंकि वुह तेरा वंश है । तब इबराहीम ने बड़े तड़के उठके रोटी और एक कुप्पे में पानी लिये और हाजरः के कंधे पर धर दिया और लड़के को भी उसे सौंप के उसे बिदा किया वुह चल निकली और बीरशबअ के बन
१५ में भरमती फिरी । और जब कुप्पे का पानी चुकगया तब
१६ उसने उस लड़के को एक झाड़ी के तले डालदिया । और आप उसके सन्मुख एक तीरके टप्पे पर दूर जा बैठी क्योंकि वुह

बोली कि मैं इस बालक के मृत्यु को न देखों और वुह उसके
१७ सन्मुख बैठके चिल्ला चिल्ला रोई। तब ईश्वर ने उस बालक
का शब्द सुना और ईश्वर के दूत ने स्वर्ग में से हाजरः को
पुकारा और उसे कहा कि हे हाजरः तुझे क्या ऊआ! मत
डर क्योंकि जहां वुह बालक है तहां ईश्वर ने उसके शब्द
१८ को सुना है। उठ और उस लड़के को उठा और उसे धर
१९ ले कि मैं उसे एक बड़ा जाति बनाओंगा। फिर ईश्वर ने
उसकी आंखें खोलीं तब उसने पानी का एक कूआं देखा
और उसने जाके उस कुए को पानी से भरा और उस लड़के
२० को पिलाया। सो ईश्वर उस लड़के के साथ था और वुह
२१ बढ़ा और बन में रहा किया और धनुषधारी ऊआ। फिर
उसने फारान के बन में जाके निवास किया और उसकी माता
२२ ने मिसर देश से उसके लिये एक पत्नी लिई। और
उस समय में यों ऊआ कि अबीमलख़ और उसकी सेना के
प्रधान फिख़ूल ने इबराहीम को कहा कि सब कार्यों में जो तू
२३ करता है ईश्वर आप के संग है। अब यहां मुझे ईश्वर की
किरिया खाइये कि मैं तुझे और तेरे बेटों और तेरे पोतों से छल
न करोंगा परन्तु मुझे और उस भूमि से जहां मैं टिका हूं उस
२४ अनुग्रह के समान जो तू ने मुझपर किया है मैं करोंगा। तब
२५ इबराहीम बोला कि मैं किरिया खाओंगा। और इबराहीम
ने पानी के एक कूएं के लिये जिसे अबीमलख़ के सेवकों ने
२६ बरबस्ती से लेलिया था अबीमलख़ को दपटा। तब अबीमलख़
ने कहा कि मैं नहीं जानता किसने यह काम किया है और आप
२७ ने भी तो मुझे न कहा और मैं ने भी तो आजही सुना। फिर
इबराहीम ने भेड़ और गाय बैल लेके अबीमलख़ को दिये
२८ और उन दोनों ने आपुस में नियम बांधा। तब इबराहीम
२९ ने झुंड में से सात पठिया अलग रक्खीं। और अबीमलख़ ने
इबराहीम से कहा कि आप ने भेड़ की सात पठिया को अलग

३० रक्खी है। उसने कहा इस कारण कि तू उन भेड़ के सात पठियों को मेरे हाथ से ले कि वे मेरा साक्षी होवें कि मैं ने
३१ यह कूआं खोदा है। इस कारण उसने उस स्थान का नाम बीरश्बअ रक्खा क्योंकि उन दोनो ने वहां आपुस में किरिया
३२ खाई। सो उन्हों ने एक नियम बीरश्बअ में बांधा तब अबीमलख़ और उसका प्रधान सेनापति फिखोल उठे और फलस्तियों
३३ के देश में फिरगये। तब उसने बीरश्बअ में कुंज लगाया और वहां सनातन के ईश्वर परमेश्वर का नाम लिया।
३४ और इबराहीम फलस्तियों के देश में बहुत दिन लों टिका।

२२ बाईसवां पर्ब्ब ।

१ इन बातों के पीछे यूं हुआ कि ईश्वर ने इबराहीम की परिक्षा किई और उसे कहा, हे इबराहीम वुह बोला कि देख इहां हों।
२ फिर उसने कहा कि तू अपने बेटे को, अपने एकलौते इसहाक़ को, जिसे तू प्यार करता है ले और मूरियाः के देश में जा और वहां पहाड़ों में से एक पहाड़ पर जो मैं तुझे बताओंगा
३ उसे होम की भेंट के लिये चढ़ा। तब इबराहीम ने तड़के उठकर अपने गदहे पर काठी बांधी और अपने तरुणों में से दो को, और अपने बेटे इसहाक को साथ लिया और होम की भेंट के लिये लकड़ियां चीरीं और उठके, जहां
४ ईश्वर ने उसे आज्ञा किई थी तहां चलागया। तीसरे दिन इबराहीम ने अपनी आंखें ऊपर किईं तो उस स्थान को
५ दूरसे देखा। तब इबराहीम ने अपने तरुणों से कहा कि गदहे के साथ यहीं ठहरो और मैं इस लड़के के साथ वहां लों जाताहों और सेवा करके फिर तुम्हारे पास आओंगा।
६ तब इबराहीम ने होम की भेंट की लकड़ियां लेकर अपने बेटे इसहाक़ पर लादीं और आग और छूरी अपने हाथ में
७ लिई और दोनो साथ साथ गये। और इसहाक अपने पिता

इबराहीम से यों कहिके बोला कि हे पिता वुह बोला हे
बेटे मैं यहीं हों उसने कहा कि देखिये आग और लकड़ियां
८ ते हैं पर होम की भेंट के लिये मेम्ना कहां है। इबराहीम
बोला कि हे बेटे ईश्वर होम की भेंट के लिये मेम्ना आपही
९ सिद्ध करेगा सो वे दोनें साथ साथ चलेगये। और उस स्थान
में, जहां ईश्वर ने कहा था आये तब इबराहीम ने वहां एक
बेदी बनाई और उन लकड़ियें को वहां चुना और अपने बेटे
१० इसहाक को बांध के उस बेदी में लकड़ियें पर धरा। और
इबराहीम ने छूरी लेके अपने बेटे को घात करने के लिये अपना
११ हाथ बढ़ाया। तब परमेश्वर के दूत ने स्वर्ग पर
से उसे पुकारा कि इबराहीम इबराहीम वुह बोला यहीं हूं।
१२ तब उसने कहा कि अपना हाथ लड़के पर मत बढ़ा और उसे
कुछ मत कर क्योंकि अब मैं जानताहों कि तू ईश्वर से डरता है
क्योंकि तू ने अपने बेटे, अपने एकलैाते को मुझ से न रख छोड़ा।
१३ तब इबराहीम ने अपनी आंखें ऊपर करके देखा और क्या
देखता है कि अपने पीछे एक मेंढ़ा झाड़ी में सींगें से अंटका
हुआ है तब इबराहीम ने जाके उस मेंढ़े को लिया और होम
१४ की भेंट के लिये अपने बेटे की संती चढ़ाया। और इबराहीम
ने उस स्थान का यह नाम रक्खा कि परमेश्वर सहेजेगा जैसा
कि आज लों कहाजाता है कि पहाड़ पर परमेश्वर देखाजायगा।
१५ फिर परमेश्वर के दूत ने दोहरा के स्वर्ग में से इबराहीम
१६ को पुकारा। और कहा कि परमेश्वर कहता है कि मैं ने अपनीही
किरिया खाई है इस कारण कि तू ने यह कार्य किया और
१७ अपने बेटे, अपने एकलैाते को न रख छोड़ा। मैं तुझे आशीष
पर आशीष देऊंगा और आकाश के तारें और समुद्र के
तीर के बालू के समान तेरे वंश को बढ़ाऊंगा और तेरे वंश
१८ अपने बैरी के फाटक के अधिकारी होंगे। और तेरे वंश में
पृथिवी के सारे जातिगण आशीष पावेंगे इस कारण कि तू ने

१९ मेरा शब्द माना है। उसके पीछे इबराहीम अपने तरुणों के पास फिर आया और वे उठके एकट्ठे बीरशबअ् को गये
२० और इबराहीम ने बीरशबअ् में रहा। और इन बातों के पीछे ऐसा ऊआ कि इबराहीम को संदेश पऊंचा
२१ कि मिलकः भी तेरे भाई नाहूर से बालक जनी। ऊज़ उसका पहिलौठा और उसका भाई बूज़ और क़मुईल अरम का पिता।
२२ और कसद और हाज़ू और पिलदाश और जदलाफ और
२३ बतुईल। और बतुईल से रबक़ः उत्पन्न ऊई मिलकः इबराहीम
२४ के भाई नाहूर से ये आठ उत्पन्न ऊए। और उसकी सुरैतिन से, जिसका नाम रिउमा था उस्से तिबः और गाहम और ताहाश और माअ़का उत्पन्न ऊए।

२३ तेईसवां पर्ब्ब ।

१ और सारः की वय एक सौ सताईस बरस की ऊई सारः के
२ जीवन के बरस इतने थे। और सारः करियातअरबा में, जो किनान देश में हबरून है मरगई तब इबराहीम सारः के
३ लिये विलाप करने और रोने को आया। फिर इबराहीम अपने मृतक से उठखड़ा ऊआ और हैस के बेटों
४ से यह कहिके बोला। कि मैं परदेशी और तुम्में टिकवैया हों तुम अपने यहां मुझे एक समाधि का स्थान अधिकार में देउ जिसतें मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि से अलग गाड़ों।
५।६ हैस के संतान ने इबराहीम को उत्तर देके कहा। कि हे स्वामी हमारी सुनिये आप हम्में ईश्वर का अध्यक्ष हैं सो आप हमारे समाधिन में से चुन के एक में अपने मृतक को गाड़िये हम्में कोई अपना समाधि आपसे न रखछोड़ेगा परन्तु
७ जिसतें आप अपने मृतक को गाड़ें। तब इबराहीम खड़ा ऊआ और उस देश के लोग अर्थात् हैस के संतान को
८ प्रणाम किया। और उनसे बातचीत करके कहा कि यदि

तुम्हारा मन होवे कि मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि से अलग गाड़ों तो मेरी सुनो और मेरे लिये जोहार के बेटे अफरून से
९ बिनती करो । जिसतें वुह मखपीला की कंदला मुझे देवे जो उसके खेत के सिवाने पर है उसका पूरा मोल लेके मेरे बश में करदे जिसतें मैं तुम्हों में एक समाधि का अधिकार रक्खों ।
१० और अफरून हैस के संतानों में बास करता था और अफरून हट्टी ने हैस के संतानों के और सबके सुन्ने में जो नगर के
११ फाटक में गये थे इबराहीम को उत्तर में कहा । नहीं मेरे प्रभु मेरी सुनिये मैं यह खेत आप को देताहों और वुह कंदला जो उसमें है आप को देताहों मैं अपने लोगों के बेटों के
१२ आगे आप को देताहों अपने मृतक गाड़िये । तब इबराहीम
१३ ने उस देश क लोगों को प्रणाम किया । फिर उस देश के लोगों के सुन्ने में वुह अफरून से यों कहिके बोला कि यदि तू देगा तो मेरी सुन ले मैं तुझे उस खेत के लिये रोकड़ देऊंगा मुझसे ले
१४ और मैं अपने मृतक को वहां गाड़ोंगा । अफरून ने इबराहीम
१५ को उत्तर देके कहा । मेरे प्रभु मेरी सुनिये उस भूमि का मोल चार सौ शैकल चांदी है पर यह मेरे और आप के आगे
१६ क्या बस्तु है? सो आप अपने मृतक को गाड़िये । इबराहीम ने अफरून की मान लिई और उस चांदी को अफरून के लिये तौलदिया जो उसने हैस के बेटों के सुन्ने में कही थी अर्थात् चार सौ शैकल चांदी जिनकी चलन बैपारियों में थी ।
१७ सो अफरून का खेत जो मखपीला में ममरी के आगे था वुह खेत और कंदला जो उसमें थी और उस खेत में के
१८ सारे पेड़ जो चारो ओर उसके सिवाने में थे । सो हैस के संतानों के आगे और सभों के आगे, जो नगर के फाटक में से भीतर गये थे इबराहीम के अधिकार के लिये दृढ़ कियेगये ।
१९ इसके पीछे इबराहीम ने अपनी पत्नी सारः को मखपीला के खेत की कंदला में, जो ममरी के आगे है गाड़ा वही हबरून

२० किनान देश में है। और वुह खेत और उसमें की कंदला हैत के संतानों से इबराहीम के हाथ में समाधि स्थान के लिये दृढ़ कियेगये ।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब ।

१ और इबराहीम वृद्ध और दिनी हुआ और परमेश्वर ने सब
२ बातों में इबराहीम को बर दिया था। और इबराहीम ने अपने घर के सब से पुराने सेवक को, जो उसकी सारी संपत्ति का
३ प्रधान था कहा कि अपना हाथ मेरी जांघ तले रख। और मैं तुझे परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर और पृथिवी के ईश्वर की किरिया लेऊंगा कि तू किनानियों की लड़कियों में से, जिनमें मैं रहताहों
४ मेरे बेटे के लिये पत्नी न लेगा। परन्तु तू मेरे देश और मेरे कुटम्ब में जाइओ और मेरे बेटे इसहाक़ के लिये पत्नी लीजियो।
५ परन्तु उस सेवक ने उसे कहा कि क्या जाने वुह स्त्री इस देश में मेरे संग आने को न चाहे तो क्या अवश्य मैं आप के बेटे
६ को उस देश में, जहां से आप आये हैं फिर लेजाओं? । इबराहीम ने उसे कहा, चौकस रह तू मेरे बेटे को उधर फिर मत ले
७ जाना। परमेश्वर स्वर्ग का ईश्वर जो मेरे पिता के घर से और मेरे घराने के देश से मुझे निकाल लाया और जिसने मुझे कहा और मुझसे किरिया खा के बोला कि मैं तेरे बंश को यह देश देऊंगा वही तेरे आगे अपना दूत भेजेगा और
८ वहीं से तू मेरे बेटे के लिये पत्नी लेना। और यदि वुह स्त्री तेरे साथ आने को न चाहे तो तू मेरी इस किरिया से छूट जायगा केवल मेरे बेटे को उधर फेर मत ले जा।
९ उस सेवक ने अपना हाथ अपने स्वामी इबराहीम की जांघ तले रक्खा और उस बात के विषय में उसके आगे किरिया
१० खाई। और उस सेवक ने अपने स्वामी के ऊंटों में से दस ऊंट लिये और चलनिकला क्योंकि उसके स्वामी की सारी

संपत्ति उसके हाथ में थी सो वुह उठा और अरमनहरों में
११ नाहूर के नगर को गया। और उसने अपने ऊंटों को नगर
के बाहर पानी के कूएं के पास सांझ के समय में, जब कि स्त्रियां
१२ पानी भरने को बाहर जाती हैं बैठाया। और कहा कि
हे परमेश्वर मेरे स्वामी इबराहीम के ईश्वर मैं तेरी बिनती
करताहों आज मेरा कार्य सिद्ध कीजिये और मेरे स्वामी
१३ इबराहीम पर दया कीजिये। देख मैं पानी के कूएं पर खड़ा
हों और नगर के पुरुषों की बेटियां पानी भरने आती हैं।
१४ ऐसा कर कि वुह कन्या जिसे मैं कहों कि अपना घड़ा उतार
जिसतें मैं पीयों और वुह कहे कि पी और मैं तेरे ऊंटों को भी
पिलाओंगी वही हो जिसे तू ने अपने दास इसहाक़ के लिये
ठहराया है और इसी से मैं जानोंगा कि तू ने मेरे स्वामी पर
१५ दया किई है। इतनी बात समाप्त न करतेहीं ऐसा ऊआ
कि, देखो रबका, जो इबराहीम के भाई नाहूर की पत्नी मलका
के बेटे बतूईल से उत्पन्न ऊई थी अपना घड़ा अपने कांधे
१६ पर धरेऊए बाहर निकली। और वुह कन्या रूपवती और
कुमारी थी जिसे पुरुष अज्ञान था उस कूएं पर गई और
१७ अपना घड़ा भर के ऊपर आई। वुह सेवक उसकी भेंट को
दौड़ा और बोला, मैं तेरी बिनती करताहों अपने घड़े से
१८ थोड़ा पानी पिलाईए। वुह बोली कि पीजिये मेरे प्रभु और
उसने फुरती करके घड़ा हाथ पर उतार के उसे पिलाया।
१९ जब उसे पिलाचुकी तो बोली, मैं तेरे ऊंटों के लिये भी जबलों
२० वे जल से तृप्त हों खींचती जाऊंगी। और उसने फुरती करके
अपना घड़ा कठरे में उंडेला और फिर कूएं पर भरने को
२१ दौड़ी और उसके सब ऊंटों के लिये खींचा। और वुह
पुरुष आश्चर्य करके देख रहा कि परमेश्वर ने मेरी यात्रा
२२ सफल किई है कि नहीं। और यों ऊआ कि
जब ऊंट पीचुके तो उस पुरुष ने आधे शेकल भर सोने की

एक बाला और दस भर सोने के दो कड़वे उसके हाथों के
२३ लिये निकाले । और कहा कि तू किसकी लड़की? मुझे बताइये
२४ तेरे पिता के घर में हमारे लिये टिकने का स्थान है । उसने उसे
कहा कि मैं मलका के बेटे बसूईल की कन्या हूं जिसे वुह नाहर
२५ के लिये जनी । उसे अधिक उसने उसे कहा कि हमारे यहां
२६ घास चारा बहुत और टिकने का स्थान है । तब उस पुरुष ने
२७ अपना सिर झुकाया और परमेश्वर की दंडवत किई । और
कहा कि परमेश्वर मेरे स्वामी इबराहीम का ईश्वर धन्य है
जिसने मेरे स्वामी को अपनी दया और अपनी सचाई बिना
न छोड़ा मार्ग में परमेश्वर ने मेरे स्वामी के भाइयों के घर की
२८ ओर मेरी अगुआई किई । तब वुह लड़की दौड़ी और
२९ अपनी माता के घर में यह बातें कहीं । और
लाबान नाम रबका का एक भाई था जो बाहर कूएं पर
३० उस मनुष्य कने दौड़ा । और यों हुआ कि जब उसने वुह
बाला और खड़वे अपनी बहिन के हाथों में देखे और जब
उसने अपनी बहिन रबका से ये बातें कहते सुनी कि इस
मनुष्य ने मुझे यों कहा वुह उस पुरुष पास आया और क्या
३१ देखता है कि वुह ऊंटों के पास कूएं पर खड़ा है । और
कहा कि हे ईश्वर के आशीषित तू भीतर आ तू किस लिये बाहर
खड़ा है क्योंकि मैं ने तेरे और तेरे ऊंटों के लिये घर सिद्ध
३२ किया है । और वुह पुरुष घर में आया और उसने अपने
ऊंटों के पलान खोले और ऊंटों के लिये घास चारा और
उसके और लोगों के जो उसके साथ थे चरण धोने को जल
३३ दिया । और भोजन उसके आगे रक्खागया पर वुह बोला
कि जबलों मैं अपना संदेश न पहुंचाओं मैं न खाऊंगा
३४ वुह बोला कि कहिये । तब उसने कहा कि मैं इबराहीम
३५ का सेवक हों । और परमेश्वर ने मेरे स्वामी को बहुतसा
बर दिया है और वुह महान हुआ है और उसने उसे

झुंड और ढोर और सोना चांदी और दास और दासियां
३६ और ऊंट और गधे दिये हैं। और मेरे स्वामी की पत्नी साराः
बुढ़ापे में उसके लिये बेटा जनी और उसने अपना सब कुछ
३७ उसे दिया है। और मेरे स्वामी ने यह कहके मुझे किरिया
लिई कि तू किनानियों की बेटियों में से जिन के देश में मैं
३८ रहता हों मेरे बेटे के लिये पत्नी मत लीजियो। परन्तु
मेरे पिता के घराने और मेरे कुटुंब में जाइयो और मेरे
३९ बेटे के लिये पत्नी लाइयो। और मैं ने अपने स्वामी से कहा
४० क्या जाने वुह स्त्री मेरे साथ न आवे। उसने मुझे कहा कि
परमेश्वर जिसके आगे मैं चलता हों अपना दूत तेरे संग
भेजेगा और तेरी यात्रा सफल करेगा तू मेरे कुटुंब और
४१ मेरे पिता के घराने से मेरे बेटे के लिये पत्नी लीजियो। और
जब तू मेरे कुटुंब में आवे तब तू मेरी किरिया से बाहर होगा
और यदि वे तुझे न देवें तो तू मेरी किरिया से बाहर
४२ होजायगा। सो मैं आज के दिन कूएं पर आया और कहा
कि हे परमेश्वर मेरे स्वामी इबराहीम के ईश्वर यदि तू अब
४३ मेरी यात्रा सफल करे। देख मैं जल के कूएं पर खड़ा हों
और यों होगा कि जब कुमारी जल भरने निकले और मैं
उसे कहों कि मैं तेरी बिनती करता हों कि अपने घड़े से मुझे
४४ थोड़ा पानी पिला। और वुह मुझे कहे कि तू भी पी और
मैं तेरे ऊंटों के लिये भी भरोंगी तो वही वुह स्त्री होवे जिसे
४५ परमेश्वर ने मेरे स्वामी के बेटे के लिये ठहराया है। और
इतनी बात मेरे मन में समाप्त न होतेही देखो रबक़ा अपने
कांधे पर घड़ा लेके बाहर निकली और वुह कूएं पर उतरी
४६ और खींचा और मैं ने उसे कहा कि मुझे पिलाइये। उसने
फुरती करके अपना घड़ा उतारा और बोली कि पी और
मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी सो मैं ने पीया और उसने
४७ ऊंटों को भी पिलाया। फिर मैं ने उसे पूछा और कहा कि

तू किसकी बेटी है? वुह बोली कि नाहूर के बेटे बतूएल की लड़की जिसे मलका उसके लिये जनी और मैं ने बाला उसके
४८ कान में और खड़वे उसके हाथों में डाले। और मैं ने अपना सिर झुकाया और परमेश्वर की स्तुति किई और अपने स्वामी इबराहीम के ईश्वर परमेश्वर का धन्य माना जिस ने मुझे ठीक मार्ग में मेरी अगुआई किई कि अपने स्वामी के भाई की
४९ बेटी उसके बेटे के लिये लेऊं। सो अब यदि तुम कृपा और सचाई से मेरे स्वामी के साथ व्यवहार किया चाहो तो मुझे कहो और यदि नहीं तो मुझे कहो कि मैं दहिने अथवा
५० बायें हाथ फिरों। तब लाबान और बतूएल ने उत्तर दिया और कहा कि यह बात परमेश्वर की ओर से है हम तुझे
५१ बुरा अथवा भला नहीं कहि सक्ते। देख रबका तेरे आगे है इसे ले और जा और जैसा परमेश्वर ने कहा है अपने स्वामी के
५२ बेटे की पत्नी इसे कर दे। और ऐसा हुआ कि जब इबराहीम के सेवक ने ये बातें सुनीं भूमि लों परमेश्वर के आगे दंडवत किई।
५३ और सेवक ने चांदी के बर्त्तन और सोने के बर्त्तन और पहिरावा निकाला और रबका को दिया और उसने उसके भाई
५४ और उसकी माता को भी बहुमूल्य वस्तु दिईं। और उसने और उसके साथी मनुष्यों ने खाया और पीया और रातभर ठहरे और वे बिहान को उठे और उसने कहा कि मुझे मेरे
५५ स्वामी पास भेजिये। उसके भाई और उसकी माता ने कहा कि कन्या को हमारे संग बरस दिन अथवा दस मास
५६ रहने दीजिये उसके पीछे वुह जायगी। उसने उन्हें कहा कि मुझे मत रोको कि परमेश्वर ने मेरी यात्रा सफल किई है मुझे
५७ बिदा करो कि मैं अपने स्वामी पास जाऊं। वे बोले हम उस
५८ कन्या को बुलाके उसी से पूछते हैं। तब उन्हों ने रबका को बुलाया और उसे कहा कि तू इस पुरुष के साथ जायगी?
५९ वुह बोली कि जाऊंगी। सो उन्हों ने अपनी बहिन रबका

और उसकी दाई और इबराहीम के सेवक और उसके लोगों
६० को बिदा किया। और उन्हों ने रबक़ा को आशीष दिया और
उसे कहा कि तू हमारी बहिन है कड़ोरों की माता हो और
तेरा वंश उनके द्वारों का जो उससे बैर रखते हैं अधिकारी होवे।
६१ और रबक़ा और उसकी सहेलियां उठीं और ऊंटों पर चढ़के
उस मनुष्य के पीछे हुईं और उस सेवक ने रबक़ा को लिया
६२ और अपना मार्ग पकड़ा। और इसहाक़ सजीवन
देखनेवाले के कूएं पर मार्ग में आ निकला था क्योंकि वुह
६३ दक्खिन देश में रहता था। और इसहाक़ संध्याकाल को
ध्यान करने के लिये खेत को निकला उसने अपनी आंखें ऊपर
६४ किईं और क्या देखता है कि ऊंट चले आते हैं। रबका ने
अपनी आंखें उठाईं और जब उसने इसहाक़ को देखा तो
६५ ऊंट पर से उतरपड़ी। क्योंकि उसने सेवक से पूछा था कि यह
जन जो खेत से हमारी भेंट को चला आता है कौन है? सेवक
ने कहा कि मेरा स्वामी है इस लिये उसने घूंघट लेके अपने
६६ तईं ढांपा। तब सेवक ने सबकुछ जो उसने किया था इसहाक़
६७ से कहा। उस समय इसहाक़ उसे अपनी माता सारः के
तंबू में लाया और रबक़ा को लिया वुह उसकी पत्नी हुई
उसने उसे प्यार किया और इसहाक़ ने अपनी माता के
मरने के पीछे शांति पाई।

२५ पचीसवां पर्ब्ब ।

१।२ तब इबराहीम ने क़तूरा नाम की एक पत्नी लिई। और उससे
ज़मरान और यक़शान और मीदान और मिदियान और
३ इशबाक़ और शूअः उत्पन्न हुए। और यक़शान से शबा और
ददान उत्पन्न हुए और ददान के बेटे असूरीम और लतूशीम
४ और लिअम्मिम। और मदयान के बेटे ईफा और ईफर
और हनूख और अबीदाअ और अलदाअः उत्पन्न हुए ये सब

५ कतूरा के लड़के थे। और इबराहीम ने अपना सब
६ कुछ इसहाक़ को दिया। परन्तु दासियों के बेटों को इबराहीम
ने दान दिये और अपने जीतेजी उन्हें अपने बेटे इसहाक़
७ पास से पूरब देश में भेजदिया। और इबराहीम के जीवन
के दिन जिनमें वुह जीतारहा एक सौ पचहत्तर बरस थे।
८ तब इबराहीम ने अच्छे वृद्ध वय में परिपूर्ण और वृद्ध मनुष्य
होके प्राण त्यागा और अपने लोगों में बटोरा गया।
९ और उसके बेटे इसहाक़ और इस्माईल ने मखपीला की
कंदला में हत्ती ज़ोहार के बेटे अफरून के खेत में जो ममरी के
१० आगे है उसे गाड़ा। यही खेत इबराहीम ने हैस के बेटों
से मोल लियाथा इबराहीम और उसकी पत्नी सारः वहीं
११ गाड़ेगये। और इबराहीम के मरने के पीछे यों हुआ कि
ईश्वर ने उसके बेटे इसहाक़ को आशीष दिया और इसहाक़
१२ सजीवन देखवैया के कूएं के पास रहताथा। और
इबराहीम के बेटे इस्माईल की बंशावली जिसे सारः की
लौंडी मिसरी हाजरः इबराहीम के लिये जनी थी ये हैं।
१३ उनकी बंशावली की रीति के समान इस्माईल के बेटों के
नाम ये हैं इस्माईल का पहिलौंठा नबायूस और क़िदार
१४ और अदबील और मिबसाम। और मिशमाः और दूमाः
१५ और मस्सा। और हादार और तीमा और जीतूर और
१६ नाफिश और क़िदिमः। ये इस्माईल के बेटें हैं और उनके
नाम उनके नगरों और उनके गढ़ियों में ये हैं और ये अपनी
१७ जातिगणों के बारह अध्यक्ष थे। और इस्माईल के जीवन के
बरस एक सौ सतीस थे कि उसने अपना प्राण त्यागा
१८ और मरगया और अपने लोगों में बटुर गया। और वे
हवीलः से शूर लों जो अशूर के मार्ग में मिसर के आगे है
बसते थे सो वुह अपने सारे भाइयों के आगे मरगया।
१९ और इबराहीम के बेटे इसहाक़ की बंशावली यह है कि

२० इबराहीम से इसहाक़ उत्पन्न हुआ। इसहाक़ ने चालीस बरस की बय में रबक़ा से बिवाह किया वुह पदान अरम के सुरियानी बसूईल की बेटी और सुरियानी लाबान की बहिन
२१ थी। और इसहाक़ ने अपनी पत्नी के लिये परमेश्वर से बिनती किई क्योंकि वुह बांझ थी और परमेश्वर ने उसकी बिनती
२२ मानी और उसकी पत्नी रबक़ा गर्भिणी हुई। और उसके पेट में बालक आपस में छेड़ा छेड़ी करने लगे तब उसने कहा यदि यों तो ऐसा क्यों हों? और वुह परमेश्वर से बूझने को गई।
२३ परमेश्वर ने उसे कहा कि तेरे गर्भ में दो जातिगण हैं और तेरी कोख से दो रीति के लोग अलग होंगे और एक लोग दूसरे लोग से बलवंत होगा और जेष्ठ कनिष्ठ की सेवा करेगा।
२४ और जब उसके जन्ने के दिन पूरे हुए तो क्या देखते हैं कि उसके
२५ गर्भ जमल थे। सो पहिला ऐसा जैसा रोम का पहिरावा होता है बालों में छिपाहुआ लाल रंग का निकला और उन्हों
२६ ने उसका नाम ऐस रक्खा। उसके पीछे उसका भाई निकला और उसका हाथ ऐस की एड़ी से लगा हुआ था और उसका नाम याक़ूब रक्खागया जब वुह उन्हें जनी तो इसहाक़ की
२७ बय साठ बरस की थी। और लड़के बढ़े और ऐस खेत का रहवैया और चतुर अहेरी था और याक़ूब सूधा मनुष्य तंबू
२८ में रहा करता था। और इसहाक़ ऐस को प्यार करता था क्योंकि वुह उसके अहेर से खाताथा परन्तु रबक़ा याक़ूब को
२९ चाहती थी। और याक़ूब ने लपसी पकाई और ऐस
३० खेत से आया और वुह थकगया था। और ऐस ने याक़ूब से कहा मैं तेरी बिनती करताहों कि इस लाल लाल में से मुझे खिला क्योंकि मैं मूर्छित हों इस लिये उसका नाम अदूम
३१ हुआ। तब याक़ूब ने कहा कि आज अपना जन्म पद मेरे
३२ हाथ बेच। तब ऐस ने कहा देख मैं मरने पर हों और इस
३३ जन्म पद से मुझ क्या लाभ होगा?। तब याक़ूब ने कहा कि

आज मुझे किरिया खा उसने उसे किरिया खाई और अपना
३४ जन्म पद याक़ूब के हाथ बेचा। तब याक़ूब ने रोटी और मसूर
की दाल की लपसी दिई उसने खाया और पीया और उठके
चलागया यों ऐसु ने अपने जन्म पद की निंदा किई।

२६ छबीसवां पर्ब्ब।

१ और उस देश में पहिले अकाल को छोड़ जो इबराहीम के
दिनों में पड़ा था फिर अकाल पड़ा तब इसहाक़ अबीमलख़
२ पास, जो फलस्तियों का राजा था गिरार को गया। और
परमेश्वर ने उस पर प्रगट होके कहा मिसर को मत उतरजा
३ परन्तु जहां मैं तुझे कहों उस देश में निवास कर। तू इस
देश में टिक और मैं तेरे साथ होऊंगा और तुझे आशीष
देऊंगा क्योंकि मैं तुझे और तेरे बंश को इन सारे देशों को
देऊंगा और मैं उस किरिया को जो मैं ने तेरे पिता इबराहीम
४ से खाई है पूरी करोंगा। और मैं तेरे बंश को आकाश के
तारों की नाईं बढ़ाओंगा और ये समस्त देश तेरे बंश को
देऊंगा और पृथिवी के सारे जातिगण तेरे बंश से आशीष
५ पावेंगे। इस लिये कि इबराहीम ने मेरे शब्द को माना और
मेरी आज्ञाओं और मेरी बातों और मेरी बिधिन और
६ मेरी ब्यवस्था को पालन किया।　　　सो इसहाक़ गिरार
७ में रहा। और वहां के बासियों ने उसे उसकी पत्नी के बिषय
में पूछा तब वुह बोला कि वुह मेरी बहिन है क्योंकि वुह उसे
अपनी पत्नी कहतेऊए डरा न हो कि वहां के लोग रबक़ा के
८ लिये उसे मारडालें क्योंकि वुह देखने में सुंदरी थी। और
यों ऊआ कि जब वुह वहां बऊत दिन लों रहा तो फलस्तियों
के राजा अबीमलख़ ने झरोके से दृष्टि किई और देखा तो
क्या देखता है कि इसहाक़ अपनी पत्नी रबक़ा से कलोल
९ करता है। तब अबीमलख़ ने इसहाक़ को बुलाके कहा देख

वुह निश्चय तेरी पत्नी है फिर तू ने क्योंकर कहा कि वुह मेरी बहिन है? इसहाक़ ने कहा इस लिये मैं ने कहा न हो कि
१० मैं उसके लिये माराजाओं। और अबीमलख़ बोला यह क्या है जो तू ने हम से किया है? यदि लोगों में से कोई तेरी पत्नी
११ के साथ अकर्म्म करता तब तू यह दोष हम पर लाता। तब अबीमलख़ ने अपने सब लोगों को यह आज्ञा किई कि जो कोई इस पुरुष को अथवा उसकी पत्नी को छूयेगा निश्चय घात
१२ कियाजायगा। तब इसहाक़ ने उस देश में खेती किई और उस बरस सौ गुना प्राप्त किया और परमेश्वर ने उसे
१३ आशीष दिया। और वुह बढ़गया और उसकी बढ़ती होती
१४ चलीजाती थी यहां लों कि वुह अत्यंत बड़ा धनी होगया। क्योंकि वुह झुंड और ढोर और बज़तसे सेवकों का स्वामी ज़आ और
१५ फ़लस्तियों ने उस्से डाह किया। क्योंकि सारे कूएं जो उसके पिता के सेवकों ने उसके पिता इबराहीम के समय में खोदे
१६ थे फ़लस्तियों ने मट्टी से भाठ दिये। सो अबीमलख़ ने इसहाक़ से कहा कि हमारे पास से जा क्योंकि तू हम से भी सामर्थी
१७ है। इसहाक़ वहां से गया और अपना तंबू गिरार
१८ की तराई में खड़ा किया और वहीं रहा। और इसहाक़ ने उन जल के कूओं को जो उन्हों ने उसके पिता इबराहीम के दिनों में खोदे थे फिर खोदा क्योंकि फलस्तियों ने इबराहीम के मरने के पीछे उन्हें भाठ दिया था और उसने उनके वही
१९ नाम रक्खे जो उसके पिता ने रक्खे थे। और इसहाक़ के सेवकों ने तराई में खोदा और वहां एक कूआं जिसमें जल
२० का सोता था पाया। और गिरार के अहीरों ने इसहाक़ के अहीरों से यह कहके झगड़ा किया कि यह जल हमारा है और उनके झगड़ा करने के लिये उसने उस कूएं का
२१ नाम झगड़ रक्खा। और उन्हों ने दूसरा कूआं खोदा और उसके लिये भी झगड़ा और उसने उसका नाम बिरोध

२२ रक्खा। और वुह वहां से आगे चला और दूसरा कूआं खादा उन्हों ने उसके लिये झगड़ा न किया और उसने उसका नाम ठिकाना रक्खा और उसने कहा कि अब परमेश्वर ने हमारे लिये
२३ ठिकाना किया है और हम इस भूमि में फलवंत होंगे। और वुह
२४ वहां से बीरशबा को गया। और परमेश्वर ने उसी रात उसे दर्शन देके कहा कि मैं तेरे पिता इबराहीम का ईश्वर हों मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हों और तुझे आशीष देऊंगा और
२५ अपने दास इबराहीम के लिये तेरा वंश बढ़ाऊंगा। और उसने वहां एक बेदी बनाई और परमेश्वर का नाम लिया और वहां अपना तंबू खड़ा किया और इसहाक़ के सेवकों ने वहां
२६ एक कूआं खादा। तब गिरार से अबीमलख़ और एक उसके मित्रों में से अहज़्ज़ाथ और उसके सेनापति फीख़ूल
२७ उस पास गये। और इसहाक़ ने उन्हें कहा कि तुम किस लिये मुझ पास आये हो यद्यपि तुम मुझसे बैर रखते हो और तुम ने
२८ मुझे अपने पास से निकाल दिया है?। वे बोले कि देखते ऊए हम ने देखा कि परमेश्वर निःसन्देह तेरे संग है सो हम ने कहा कि हम और तू आपुस में किरिया खावें और तेरे साथ
२९ बाचा बांधें। जैसा हम ने तुझे नहीं कूआ और तुझसे भलाई छोड़ कुछ नहीं किया और तुझे कुशल से भेजा तू भी हमें
३० न सता तू अब परमेश्वर का आशीषित है। और उसने
३१ उनके लिये जेवनार बनाया और उन्हों ने खाया पीया। और बिहान को तड़के उठे और आपुस में किरिया खाई और इसहाक़ ने उन्हें बिदा किया और वे उस पास से कुशल से गये।
३२ और उसी दिन यों ऊआ कि इसहाक़ के सेवक आये और अपने खादे ऊए कूएं के विषय में कहा और बोले कि हम ने
३३ जल पाया। सो उसने उसका नाम शबा रक्खा इस लिये वुह
३४ नगर आज लों बीरशबा कहलाता है। और ऐसा जब चालीस बरस का ऊआ तब उसने हट्टी बीरी की बेटी

यूदीस को और हट्टीईलून की बेटी बाशिमास को पत्नी किई ।
३५ जो इसहाक़ और रबक़ा के लिये मन के कड़वाहट का कारण हुईं ।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब ।

१ और यों हुआ कि जब इसहाक़ बूढ़ा हुआ और उसकी आंखें धुन्धला गईं ऐसा कि वह देख न सक्ता था तो उसने अपने जेठे बेटे ऐस को बुलाया और कहा कि हे मेरे बेटे
२ वुह बोला देखो यहीं हों। तब उसने कहा कि देख मैं बूढ़ा
३ हों और मैं अपने मरने का दिन नहीं जानता। सो अब तू अपना हथियार और निषंग और अपना धनुष ले और बन
४ को जा और मेरे लिये मृगमांस अहेर कर। और मेरी रुचि के समान स्वादित भोजन पका के मेरे पास ला जिसतें खाऊं
५ और अपने मरने के आगे मन से तुझे आशीष देऊं। और जब इसहाक़ अपने बेटे ऐस से बातें करता था तब रबक़ा ने
६ सुना और जब ऐस मृगमांस अहेरने को बन को गया। तब रबक़ा ने अपने बेटे याक़ूब से कहा कि देख मैं ने तेरे भाई ऐस
७ स तरे पिता को यह कहते सुना। कि मेरे लिये मृगमांस मार ला और मेरे लिये स्वादित भोजन पका जिसतें खाऊं और अपने मरने से पहिले परमेश्वर के आगे तुझे आशीष देऊं।
८ सो अब हे मेरे बेटे मेरी आज्ञा के समान मेरी बात को
९ मान। अब झुंड में जा और वहां से बकरी के दो मेम्ने मुझ पास ला और मैं तेरे पिता की रुचि के समान उसके लिये
१० स्वादित भोजन बनाओंगी। और तू अपने पिता के पास लाइयो जिसतें वुह खाय और अपने मरने से आगे तुझे
११ आशीष देवे। तब याक़ूब ने अपनी माता रबक़ा से कहा देख
१२ मेरा भाई ऐस रोंआर मनुष्य है और मैं चिकना हूं। क्या जाने मेरा पिता मुझे टटोले और मैं उस पास छली की नाईं

ठहरों और आशीष नहीं परन्तु अपने ऊपर स्राप लाऊं।
१३ उसकी माता ने उसे कहा कि तेरा स्राप मुझ पर होवे हे मेरे बेटे तू केवल मेरी बात मान और मेरे लिये जाके ला।
१४ सो वुह गया और अपनी माता पास लाया और उसकी माता ने उसके पिता की रुचि के समान स्वादित भोजन बनाया।
१५ और रबक़ा ने घर में से अपने जेठे बेटे ऐस का अच्छा पहिरावा
१६ लिया और अपने छोटे बेटे याक़ूब को पहिनाया। और बकरी के मेम्नों का चमड़ा उसके हाथों और उसके गले की
१७ चिकनाई पर लपेटा। और अपना बनाया हुआ स्वादित भोजन और रोटी अपने बेटे याक़ूब के हाथ दिई।
१८ और वुह अपने पिता से यह कहिके बोला कि हे मेरे पिता मैं यहां हों वुह बोला कि बेटे तू कौन है?।
१९ याक़ूब अपने पिता से बोला कि मैं आप का पहिलौंठा ऐस हों आप के कहने के समान मैं ने किया है उठ बैठिये और मेरे मृगमांस में से कुछ खाइये जिसतें आप का प्राण मुझे आशीष
२० देवे। तब इसहाक़ ने अपने बेटे से कहा कि यह क्योंकर है जो तू ने ऐसा बेग पाया हे मेरे बेटे वुह बोला इस लिये कि
२१ परमेश्वर आप का ईश्वर मेरे आगे लाया। तब इसहाक़ ने याक़ूब को कहा कि हे बेटे मेरे पास आ जिसतें मैं तुझे टटोलों
२२ कि निश्चय तू मेरा बेटा ऐस है कि नहीं। याक़ूब अपने पिता इसहाक़ पास गया और उसने उसे टटोल के कहा कि
२३ शब्द तो याक़ूब का शब्द है पर हाथ ऐस के हाथ हैं। और उसने उसे न पहिचाना इस लिये कि उसके हाथ उसके भाई ऐस के हाथों की नाईं रोंआर थे सो उसने उसे आशीष दिया।
२४ और कहा कि तू मेरा वही बेटा ऐसही है वुह बोला कि मैं वही
२५ हों। और उसने कहा कि तू मेरे पास ला कि मैं अपने बेटे के मृगमांस से कुछ खाओं जिसतें जीसे तुझे आशीष देउं सो वुह उस पास लाया और उसने खाया और वुह उसके

२६ लिये दाख रस लाया और उसने पीया। फिर उसके पिता इसहाक़ ने उसे कहा कि बेटे अब पास आ और मुझे
२७ चूम। वुह पास आया और उसे चूमा और उसने उसके पहिरावा की बास पाई और उसे आशीष दिया और कहा कि देख मेरे बेटे का गंध उस खेत के गंध की नाईं है जिस
२८ पर परमेश्वर ने आशीष दिया है। इस लिये ईश्वर तुझे आकाश की ओस और पृथिवी की चिकनाई और बहुत से
२९ अन्न और दाखरस देवे। लोग तेरी सेवा करें और जातिगण तेरे आगे झुकें तू अपने भाइयों का प्रभु हो और तेरी मा के बेटे तेरे आगे झुकें जो तुझे खापे सो खापित और जो
३० तुझे आशीर्बाद देवे सो आशीषित होवे। और यों हुआ कि ज्योंहीं इसहाक़ याक़ूब को आशीष दे चुका और याक़ूब के अपने पिता इसहाक़ के आगे से बाहर जातेही उसका भाई
३१ ऐसौ अपनी अहेर से फिरा। उसने भी स्वादित भोजन बनाया और अपने पिता पास लाया और अपने पिता से कहा मेरे पिता उठिये और अपने बेटे का मृगमांस
३२ खाइये जिसतें आप का प्राण मुझे आशीष देवे। उसके पिता इसहाक़ ने उसे पूछा कि तू कौन है? वुह बोला कि मैं आप का
३३ बेटा आप का पहिलौंठा ऐसौ हों। तब इसहाक़ बड़ी कंपकंपी से कांपा और बोला वुह कौन था और कहां है जो मृगमांस अहेर करके मुझ पास लाया और मैं ने सब में से तेरे आने के आगे खाया है और उसे आशीष दिया है हां वुह आशीषित
३४ होगा। ऐसौ अपने पिता की ये बातें सुन के बहुत चिल्लाया और फूट फूट के रोया और अपने पिता से कहा मुझे भी
३५ मुझे हे मेरे पिता आशीष दीजिये। वुह बोला कि तेरा भाई
३६ छल से आया और तेरा आशीष लेगया। तब उसने कहा क्या वुह याक़ूब ठीक नहीं कहावता क्योंकि उसने दोहरा के मुझे अड़ंगा मारा उसने मेरा जन्मपद लेलिया और देखो अब

उसने मेरा आशीष लिया है उसने कहा क्या तू ने मेरे लिये
३७ कोई आशीष नहीं रख छोड़ा। तब इसहाक़ ने ऐसू को उत्तर
देके कहा कि देख मैं ने उसे तेरा प्रभु किया और उसके
सारे भाइयों को उसकी सेवकाई में दिया और अन्न और
दाखरस से उसका सहारा किया अब हे मेरे बेटे तेरे लिये
३८ मैं क्या करों?। तब ऐसू ने अपने पिता से कहा हे पिता
क्या आप पास एकही आशीष है हे मेरे पिता मुझे भी मुझे
३९ आशीष दीजिये और ऐसू चिल्ला चिल्ला रोया। तब उसके
पिता इसहाक़ ने उत्तर दिया और उसे कहा कि देख भूमि
की चिकनाई और ऊपर से आकाश की ओस में तेरा तंबू
४० होगा। और तू अपने खड्ग से जीयेगा और अपने भाई की सेवा
करेगा और यों होगा कि जब तू राज्य पावेगा तो उसका
४१ जूआ अपने कांधे पर से तोड़ फेंकेगा। सो उस आशीष
के कारण जिसे उसके पिता ने उसे दिया था ऐसू ने याक़ूब
का बैर रक्खा और ऐसू ने अपने मन में कहा कि मेरे पिता
के शोक के दिन आते हैं तब मैं अपने भाई याक़ूब को मार
४२ डालोंगा। और रबक़ा को उसके जेठे बेटे ऐसू की ये बातें
कहीगईं तब उसने अपने छोटके बेटे याक़ूब को बुलाभेजा और
कहा कि देख तेरा भाई ऐसू तुझे घात करने को तेरे विषय
४३ में अपने को शांति देता है। सो इस लिये हे मेरे बेटे तू
अब मेरा कहा मान उठ और मेरे भाई लाबान पास
४४ हरान को भाग जा। और थोड़े दिन उसके साथ रह जबलों
४५ तेरे भाई का कोप उतार है। और अपने भाई का क्रोध तुझ
पर धीमा हो और जो तू ने उसे किया है सो भूलजाय
तब मैं तुझे वहां से बुला भेजोंगी किस लिये एकही दिन में तुम
४६ दोनों को खोओं। तब रबक़ा ने इसहाक़ से कहा कि मैं हैस
की बेटियों के कारण अपने जीवन से सकेत हों सो यदि याक़ूब
हैस की बेटियों में से जैसी उस देश की लड़कियां हैं लेवे तो
मेरे जीवन से क्या फल है।

२८ अठाईसवां पर्ब्ब ।

१ और इसहाक़ ने याक़ूब को बुलाया और उसे आशीष दिया और उसे कहा कि तू किनानी लड़कियों में से पत्नी मत
२ कीजियो । उठ और फदानअराम में अपने नाना बसूईल के घर जा और वहां से अपने मामू लाबान की लड़कीयों में से
३ पत्नी ले । और सर्वसामर्थी ईश्वर तुझे आशीष देवे और तुझे फलमान करे और तुझे बढ़ावे जिसतें तू लोगों की मंडली
४ होवे । और इबराहीम का आशीष तुझे और तेरे संग तेरे बंश को देवे जिसतें तू अपनी टिकाव की भूमि में जो ईश्वर ने
५ इबराहीम को दिई अधिकार में पावे । फिर इसहाक़ ने याक़ूब को बिदा किया और वुह फदानअराम सुरियानी बसूईल के बेटे लाबान पास गया जो याक़ूब और ऐसे की
६ माता रबक़ा का भाई था । और ऐसे ने जब देखा कि इसहाक़ ने याक़ूब को आशीष दिया और उसे फदानअराम से पत्नी लेने को वहां भेजा और कि उसने उसे आशीष देके कहा
७ कि तू किनान की लड़कियों में से पत्नी न लेना । और कि याक़ूब ने अपने माता पिता की बात मानी और फदानअराम
८ को गया । और ऐसे ने यह भी देखा कि किनानी लड़की
९ मेरे पिता की दृष्टि में बुरी हैं । तब ऐसे इस्माईल कने गया और इबराहीम के बेटे इस्माईल की बेटी महिलात को जो
१० नबायूस की बहिन थी अपनी पत्नियों में लिया । और
११ याक़ूब बीरशबा से निकल के हरान की ओर गया । और एक स्थान में टिका और रातभर रहा क्योंकि सूर्य अस्त ऊआ था और उसने उस स्थान के पत्थरों को लिया और अपना
१२ उसीसा किया और वहां सोने को लेटगया । और वुह स्वप्न में क्या देखता है कि एक सीढ़ी पृथिवी पर धरी है और उसकी टोंक स्वर्ग से लगी थी और क्या देखता है कि ईश्वर के
१३ दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं । और क्या देखता है कि

परमेश्वर उसके ऊपर खड़ा है और यों बोला कि मैं परमेश्वर तेरे पिता इबराहीम और इसहाक़ का ईश्वर हों मैं यह भूमि
१४ जिस पर तू लेटा है तुझे और तेरे बंश को देउंगा। और तेरे बंश पृथिवी की धूल की नाईं होंगे और तू पश्चिम पूर्ब्ब उत्तर दक्षिण को फूटनिकलेगा और तुझ में और तेरे बंश में
१५ पृथिवी के सारे घराने आशीष पावेंगे। और देख मैं तेरे साथ हों और सर्ब्बत्र जहां कहीं तू जायगा तेरी रखवाली करोंगा और तुझे इस देश में फिर लाओंगा और जबलों मैं तुझसे अपना कहाहुआ पूरा न करलेउं तुझे न छोड़ोंगा।
१६ तब याक़ूब नींद से जागा और कहा कि निश्चय परमेश्वर
१७ इस स्थान में है और मैं न जानता था। तब वुह डर गया और बोला कि यह क्याही भयानक स्थान है ईश्वर के मंदिर को छोड यह और कुछ नहीं है और स्वर्ग का फाटक है।
१८ और याक़ूब बिहान को तड़के उठा और उस पत्थर को जिसे उसने अपना उसीसा किया था खंभा खड़ा किया
१९ और उस पर तेल ढाला। और उस स्थान का नाम बैतईल
२० रक्खा पर उसे पहिले उस नगर का नाम लूज़ था। और याक़ूब ने मनौती मानी और कहा कि यदि ईश्वर मेरे साथ रहे और मेरे जाने के मार्ग में मेरा रखवाल हो और मुझे
२१ खाने को रोटी और पहिन्ने को कपड़ा देवे। ऐसा कि मैं अपने पिता के घर कुशल से फिरआओं तब परमेश्वर मेरा
२२ ईश्वर होगा। और यह पत्थर जो मैं ने खंभा सा खड़ा किया ईश्वर का मंदिर होगा और सब में से जो तू मुझे देगा दसवां भाग अवश्य तुझे देउंगा।

२९ उन्तीसवां पर्व्व।

१ तब याक़ूब ने मार्ग लिया और पूर्बी पुत्रों के देश में आया।
२ उसने दृष्टि किई और खेत में एक कूआं देखा और लोकि

कूएं के लग भेड़ों के तीन झुंड बैठेऊए हैं क्योंकि वे उसी कूएं से झुंडों को पानी पिलाते थे और कूएं के मुंह पर बड़ा पत्थर
३ धरा था। और वहां सारी झुंड एकट्ठी होती थी और वे उस पत्थर को कूएं के मुंह पर से ढुलका देते थे और भेड़ों को
४ पानी पिला के पत्थर को उसके मुंह पर फिर रखते थे। तब याक़ूब ने उनसे कहा कि भाइयो तुम कहां के हो वे बोले कि
५ हम हरान के हैं। फिर उसने उनसे पूछा कि तुम नाहर के
६ बेटे लाबान को जानते हो? वे बोले जानते हैं। उसने उन्हें पूछा कि वुह कुशल से है? वे बोले कि कुशल से है और देख उसकी
७ बेटी राहील भेड़ों के साथ आती है। तब वुह बोला देखो दिन अब भी बऊत है और ढोरों के एकट्ठे करने का समय नहीं
८ तुम भेड़ों को पानी पिला के चराई पर ले जाओ। वे बोले हम नहीं सक्ते जबलों कि सारे झुंड एकट्ठे न होवें और पत्थर को कूएं के मुंह पर से न ढुलकावें तब हम भेड़ों को
९ पानी न पिलाते हैं। वुह उनसे यह कहिरहा था कि
१० राहील अपने पिता की भेड़ों को लेके आई। क्योंकि वुह उनकी रखवाल थी और यों ऊआ कि याक़ूब अपने मामू लाबान की बेटी राहील को और अपने मामू लाबान की भेड़ों को देखके पास गया और पत्थर को कूएं के मुंह पर से ढुलकाया और
११ अपने मामू लाबान की भेड़ों को पानी पिलाया। याक़ूब ने
१२ राहील को चूमा और चिल्ला के रोया। और याक़ूब ने राहील से कहा कि मैं तेरे पिता का भांजा और रबका का बेटा
१३ हों उसने दौड़ के अपने पिता से कहा। और यों ऊआ कि लाबान अपने भांजे याक़ूब का समाचार सुन के उस्से मिलने को दौड़ा और उसे गले लगया और चूमा और अपने घर
१४ लाया और उसने ये सारी बातें लाबान से कहा। तब लाबान ने उसे कहा कि निश्चय तू मेरी हड्डी और मांस है और वुह
१५ एक मास भर उसके यहां रहा। तब लाबान ने

याक़ूब से कहा कि मेरा भाई होने के कारण क्या तू सेंत से
१६ मेरी सेवा करेगा? सो कह मैं तुझे क्या देउं। और लाबान
की दो बेटियां थीं जेठी का नाम लीया और लहुरी का नाम
१७ राहील था। लीया की आंखें चौंधली थीं परन्तु राहील
१८ सुन्दरी और रूपवती थी। और याक़ूब राहील को प्यार
करता था और उसने कहा कि तेरी लहुरी बेटी राहील के
१९ लिये मैं सात बरस तेरी सेवा करोंगा। लाबान बोला कि
उसे दूसरे के देने से तुझी को देना भला है सो तू मेरे साथ
२० रह। और याक़ूब ने सात बरस लों राहील के लिये सेवा
किई और उस प्रीति के मारे जो वुह उसे रखता था थोड़े
२१ दिन की नाईं समझ पड़े। और याक़ूब ने लाबान से
कहा कि मेरे दिन पूरे हुए मेरी पत्नी मुझे दीजिये जिसतें मैं
२२ उसे ग्रहण करों। तब लाबान ने वहां के सारे मनुष्यों को
२३ एकट्ठा करके जेवनार किया। और सांझ को यों हुआ कि
वुह अपनी बेटी लीया को उस पास लाया और उसने उसे
२४ ग्रहण किया। और दासी के लिये लाबान ने अपनी दासी
२५ ज़लफा को अपनी बेटी लीया को दिया। और ऐसा हुआ
कि बिहान को क्या देखता है कि लीया है तब उसने लाबान
को कहा कि आप ने यह मुझ से क्या किया? क्या मैं ने आप की
सेवा राहील के लिये नहीं किई? फिर आप ने किस लिये मुझे
२६ छला?। तब लाबान ने कहा कि हमारे देश का यह ब्यवहार
२७ नहीं कि लहुरी को जेठी से पहिले ब्याह देवें। उसका अठवारा
पूरा कर और तेरी और भी सात बरस की सेवा के लिये हम
२८ इसे भी तुझे देंगे। याक़ूब ने ऐसाही किया और उसका
अठवारा पूरा किया तब उसने अपनी बेटी राहील को भी
२९ उसे पत्नी में दिया। और लाबान ने अपनी दासी बिलहा
३० को अपनी बेटी राहील की दासी होने के लिये दिया। तब
याक़ूब ने राहील को भी ग्रहण किया और वुह राहील को

लीया से अधिक प्यार करता था और सात बरस अधिक उसने
३१ उसकी सेवा किई। और जब परमेश्वर ने देखा कि लीया
घिनित ऊई उसने उसकी कोख खोली और राहील बांझ रही।
३२ और लीया गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और उसने उसका नाम
रूबीन रक्खा क्योंकि उसने कहा कि निश्चय परमेश्वर
ने मेरे दुःख पर दृष्टि किई है सो अब मेरा पति मुझे प्यार
३३ करेगा। और वुह फिर गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और
बोली इस लिये कि परमेश्वर ने मेरा घिनित होना सुन के
मुझे इसेभी दिया सो उसने उसका नाम समऊन रक्खा।
३४ और फिर वुह गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और बोली कि
इसबार मेरा पति मुझसे मिलजायगा क्योंकि मैं उसके लिये
तीन बेटे जनी इस लिये उसका नाम लीवी रक्खागया।
३५ और वुह फिर गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और बोली कि अब
मैं परमेश्वर की स्तुति करोंगी इस लिये उसने उसका नाम
यहूदा रक्खा और जन्ने से रहगई।

३० तीसवां पर्ब्ब ।

१ और जब राहील ने देखा कि याक़ूब का वंश मुझसे नहीं होता
तो उसने अपनी बहिन से डाह किया और याक़ूब को कहा
२ कि मुझे बालक दे नहीं तो मैं मरजाऊंगी। तब राहील पर
याक़ूब का क्रोध भड़का और उसने कहा क्या मैं ईश्वर की संती
३ हों जिसने तुझे कोख के फल से अलग रक्खा। वुह बोली कि
मेरी दासी बिलहा को देख और उसे ग्रहण कर और वुह मेरे
४ घुटनों पर जनेगी जिसतें मैं भी उससे बनजाओं। और उसने
उसे अपनी दासी बिलहा को पत्नी के लिये दिया और याक़ूब ने
५ उसे ग्रहण किया। और बिलहा गर्भिणी ऊई और याक़ूब के
६ लिये बेटा जनी। तब राहील बोली कि ईश्वर ने मेरा बिचार
किया और मेरा शब्द भी सुना और मुझे एक बेटा दिया

७ इस लिये उसने उसका नाम दान रक्खा। और राहील की दासी बिलहा फिर गर्भिणी ऊई और याक़ूब के लिये दूसरा
८ बेटा जनी। और राहील बोली कि मैं ने ईश्वरीय बजनों से अपनी बहिन से बजनी किई और जीता और उसने उसका
९ नाम नफ़ताली रक्खा। और जब लीया ने देखा कि मैं जने से रहगई तो उसने अपनी दासी जलफा को लेके याक़ूब को
१० पत्नी के लिये दिया। सो लीया की दासी जलफा भी याक़ूब
११ के लिये एक बेटा जनी। तब लीया बोली कि लेउ जथा
१२ आती है और उसने उसका नाम जाद रक्खा। फिर लीया
१३ की दासी जलफा याक़ूब के लिये एक दूसरा बेटा जनी। और लीया बोली कि मैं आनंदित हों पुत्रियां मुझे धन्य कहेंगी
१४ और उसने उसका नाम अशर रक्खा। और गेहूं के लवने के समय में राओबीन घर से निकला और खेत में दूदाफल पाया और उन्हें अपनी माता लीया के पास लाया तब राहील
१५ ने लीया से कहा कि अपने बेटे का दूदाफल मुझे दे। उसने कहा क्या यह छोटी बात है जो तू ने मेरे पति को लेलिया और मेरे पुत्र का दूदाफल को भी लियाचाहती है? राहील बोली कि वुह आज रात तेरे बेटे के दूदाफल की संती तेरे साथ
१६ रहेगा। और जब याक़ूब सांझ को खेत में से आया लीया उसे आगे से मिलने को गई और कहा कि आज आप को मुझ पास आने होगा क्योंकि निश्चय मैं ने अपने बेटे का दूदाफल देके आप
१७ को भाड़े में लिया है सो वुह उस रात उसके साथ रहा। और ईश्वर ने लीया की सुनी और वुह गर्भिणी ऊई और याक़ूब
१८ के लिये पांचवां बेटा जनी। और लीया बोली कि ईश्वर ने मेरी बनी मुझे दिई क्योंकि मैं ने अपने पति को अपनी दासी
१९ दिई है और उसने उसका नाम यस्सखार रक्खा। और लीया फिर गर्भिणी ऊई और याक़ूब के लिये छठवां बेटा
२० जनी। और बोली कि ईश्वर ने मुझे अच्छा देजा दिया है अब

मेरा पति मेरे संग रहेगा क्योंकि मैं उसके लिये छः बेटे
२१ जनी और उसने उसका नाम जबूलून रक्खा। और अंत में
२२ वुह बेटी जनी और उसका नाम दैना रक्खा। और
ईश्वर ने राहील को स्मरण किया और उसकी सुन के उसकी
२३ कोख को खोला। वुह गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और
२४ बोली कि ईश्वर ने मेरी निन्दा दूर किई। और उसने उसका
नाम यूसफ रक्खा और बोली कि परमेश्वर मुझे दूसरा बेटा
२५ भी देगा। और जब राहील से यूसफ उत्पन्न ऊआ तो
यों ऊआ कि याक़ूब ने लाबान से कहा कि मुझे अपनेही स्थान
२६ और अपनेही देश को बिदा कीजिये। मेरी स्त्रियां और
मेरे लड़के जिनके लिये मैं ने आप की सेवा किई है मुझे दीजिये
और बिदा करिये क्योंकि आप जानते हैं कि मैं ने आप की कैसी
२७ सेवा किई है। लाबान ने उसे कहा कि जो मैं ने तेरी दृष्टि
में अनुग्रह पाया है तो रहजा क्योंकि मैं ने देखलिया है कि
२८ परमेश्वर ने तेरे कारण से मुझे आशीष दिया है। और उसने
२९ कहा कि अब तू अपनी बनी मुझसे ठहरा ले मैं तुझे देओंगा। उसने
उसे कहा आप जानते हैं कि मैं ने क्योंकर आप की सेवा किई
३० है और आप के ढोर कैसे मेरे साथ थे। क्योंकि मेरे आने से
आगे वे थोड़े थे और अब झुंड के झुंड होगये और मेरे आने से
परमेश्वर ने आप को आशीष दिया है अब मैं अपने घर के लियेभी
३१ कब ठिकाना करोंगा। वुह बोला कि मैं तुझे क्या देउं? याक़ूब ने
कहा कि आप मुझे कुछ न दीजिये जो आप मेरे लिये ऐसा करेंगे
तो मैं आप के झुंड को फिर चराओंगा और रखवाली करोंगा।
३२ मैं आज आप के सारे झुंड में से चल निकलोंगा और भेड़ों
में से सारी फुटफुटियों और चितकबरियों और भूरियों को
और बकरियों में से फुटफुटियों और चितकबरियों को अलग
३३ करोंगा और मेरी बनी वैसी होगी। और कल को मेरा धर्म
मेरा उत्तर देगा जब कि मेरी बनी आप के आगे आवे तो वुह

जो बकरियों में चितकबरी और फुटफुटिया और भेड़ों में
३४ भूरी नहो तो वुह मेरे पास चोरी की गिनी जाय। लाबान
३५ बोला मैं चाहता हों कि जैसा तू ने कहा तैसाही होवे। उसने
उस दिन पट्टेवाले और फुटफुटिया बकरे और सब चितकबरी
और फुटफुटिया बकरियां अर्थात् हर एक जिस में कुछ
उजलाई थी और भेड़ों में से भूरी अलग किई और उन्हें
३६ अपने बेटों के हाथ सौंप दिया। और उसने अपने और याक़ूब
के मध्य में तीन दिन की यात्रा का बीच ठहराया और याक़ूब
३७ लाबान के उबरे ऊए झुंडों को चरायाकिया। और याक़ूब
ने हरे चिनार और बादाम और बारतंग की हरी छड़ियां
लेके उन्हें गंडेवाल किया ऐसा कि छड़ियों की उजलाई प्रगट
३८ ऊई। और जब झुंड पानी पीने को आतीं थीं तब वुह
उन छड़ियों को जिन पर गंडे बनाये थे झुंडों के आगे कठरों
और नालियों में धरता था कि जब वे सब पीने आवें तो
३९ गर्भिणी होवें। और छड़ियों के आगे झुंड गर्भिणी ऊई और
वे गंडेवाले और फुटफुटियां और चितकबरे बच्चे जनीं।
४० और याक़ूब ने मेम्नों को अलग किया और झुंड के मुंह को
चितकबरों के और भूरों के ओर जो लाबान की झुंड में थे
किया और उसने अपने झुंड को अलग किया और लाबान
४१ के झुंड में न मिलाया। और यों ऊआ कि जब पुष्टढोर गर्भिणी
होती थीं तो याक़ूब छड़ियों को नालियों में उनके आगे
४२ रखता था कि वे उन छड़ियों के आगे गर्भिणी होवें। पर जब
दुर्बल ढोर आते थे वुह उन्हें वहां न रखता था सो दुर्बल
दुर्बल लाबान की और मोटी मोटी याक़ूब की ऊईं और उस
पुरुष की अत्यंत बढ़ती ऊई और वुह बऊत पशु और दास
और दासियों और ऊंटों और गदहों का स्वामी ऊआ।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब ।

१ और उसने लाबान के बेटों को ये बातें कहते सुना कि याक़ूब ने हमारे पिता का सब कुछ लेलिया और हमारे पिता की संपत्ति से यह सब बिभव प्राप्त किया । २ और याक़ूब ने लाबान का रूप देखा और क्या देखता है कि कल परसों की नाईं वुह मेरी ओर नहीं है । ३ और परमेश्वर ने याक़ूब से कहा कि तू अपने पितरों और अपने कुटुम्बों के देश को फिर जा और मैं तेरे संग होओंगा । ४ तब याक़ूब ने राहील और लीया को अपनी झुंड पास खेत में बुलाभेजा । ५ और उन्हें कहा कि मैं देखताहों कि तुम्हारे पिता का रूप आगे की नाईं मेरी ओर नहीं है परन्तु मेरे पिता का ईश्वर मुझ पर प्रगट हुआ । ६ और तुम जानतीहो कि मैं ने अपने सारे बल से तुम्हारे पिता की सेवा किई है । ७ और तुम्हारे पिता ने मुझे छला है और दसबार मेरी बनी बदल दिई पर ईश्वर ने मुझे दुःख देने को उसे न छोड़ा । ८ यदि वुह यों बोला कि फुटफुटियां तेरी बनी होंगी तो सारे ढोर फुटफुटिया जने और यदि उसने यों कहा कि पट्टेवाली तेरी बनी में होंगी तो सारे ढोर पट्टेवाले जने । ९ यों ईश्वर ने तुम्हारे पिता के ढोर लिये और मुझे दिये । १० और यों हुआ कि जब ढोर गर्भिणी हुए तो मैं ने स्वप्न में अपनी आंख उठा के देखा और क्या देखताहों कि मेढ़े जो ढोर पर चढ़ते हैं सो पट्टेवाले और फुटफुटिये और चितकबरे थे । ११ और ईश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझे कहा कि हे याक़ूब मैं बोला कि यहीं हों । १२ तब उसने कहा कि अब अपनी आंखें उठा और देख कि सारे मेंढे जो भेड़ों पर चढ़ते हैं पट्टेवाले और फुटफुटिये और चितकबरे हैं क्योंकि जो कुछ लाबान ने तुझे किया मैं ने देखा है । १३ बैतएल का ईश्वर जहां तू ने खंभे पर तेल डाला और जहां तू ने मेरे लिये मनौती मानी मैं हों अब उठ इस देश से निकल जा और अपने कुटुम्ब के

१४ देश को फिर जा। तब राहील और लीया ने उत्तर देके उसे कहा क्या अब लों हमारे पिता के घर में हमारा कुछ भाग
१५ अथवा अधिकार है?। क्या हम उसके लेखे पराये नहीं गिने जाते हैं? क्योंकि उसने तो हमें बेचडाला है और हमारे
१६ रोकड़ भी खा बैठा है। परन्तु ईश्वर ने जो धन कि हमारे पिता से लिया और हम दिया वही हमारा और हमारे बालकों का है सो अब जो कुछ कि ईश्वर ने आप से कहा है सो करिये।
१७ तब याक़ूब ने उठके अपने बेटों और पत्नियों को ऊंटों पर
१८ बैठाया। और अपने सब चौपाए और सामग्री जो उसने पाईथी अपनी कमाई के चौपाए जो उसने फदानअराम में पाएथे ले निकला जिसतें किनान देश में अपने पिता इसहाक
१९ पास जावे। और लाबान अपने भेड़ों का रोम कतरने को गया और राहील ने अपने पिता की कईएक मूर्त्ति चुरा लिई।
२० और याक़ूब अरमी लाबान से अचानक चोरा के भागा यहां
२१ लों कि वुह उस्से न कहिके भागा। सो वुह अपना सब कुछ लेके भागा और उठके नदी पार उतरगया और अपना रुख
२२ जलियाद पहाड़ की ओर किया। और याक़ूब के भागने
२३ का संदेश लाबान को तीसरे दिन पऊंचा। सो वुह अपने भाइयों को लेके सात दिन के मार्ग लों उसके पीछे गया और गिलियाद
२४ पहाड़ पर उसे जा लिया। परन्तु ईश्वर अरमी लाबान कने स्वप्न में रात को आया और उसे कहा कि चौकस रह तू याक़ूब
२५ को भला बुरा मत कहियो। तब लाबान ने याक़ूब को जालिया और याक़ूब ने अपना डेरा पहाड़ पर कियाथा और लाबान ने अपने भाइयों के साथ गिलियाद पहाड़ पर डेरा खड़ा किया।
२६ तब लाबान ने याक़ूब से कहा कि तू ने क्या किया जो तू एकाएक मुझ से चुरा निकला और मेरी पुत्रियों को खड्ग में की बंधुआई
२७ की नाईं लेचला?। तू किस लिये चुपके से भागा और चोरी मुझ से निकल आया और मुझे नहीं कहा जिसतें मैं तुझे आनंद

२८ मंगल से भेरी और ढोल के साथ बिदा करता। और तू ने मुझे अपने बेटों और अपनी बेटियों को चूमने न दिया तू ने
२९ मूर्खता से यह किया है। तुझे दुःख देने को मेरे बश में हैं परन्तु तेरे पिता के ईश्वर ने कल्ह रात मुझे यों कहा कि चौकस
३० रह तू याकूब को भला बुरा मत कहियो। और अब तुझे तो जाना है क्योंकि तू अपने पिता के घर का निपट अभिलाषी है
३१ पर तू ने किस लिये मेरे देवों को चुराया है। याकूब ने उत्तर दिया और लाबान से कहा कि डर के मैं ने कहा क्या जाने आप
३२ अपनी पुत्रियां बरबस मुझ से छीनलेंगे। जिस किसी के पास आप अपने देवों को पावें उसे जीता मत छोड़िये और हमारे भाइयों के आगे देखलीजिये कि आप का मेरे पास क्या क्या है और अपना लीजिये क्योंकि याकूब न जानता था कि राहील ने
३३ उन्हें चुराया था। और लाबान याकूब के तंबू में गया और लीया के तंबू में और दोनो दासियों के तंबू में परन्तु न पाया तब वुह लीया के तंबू से बाहर जाके राहील के तंबू में
३४ गया। और राहील मूर्त्तिन को लेकर ऊंट की सामग्री में रख के उन पर बैठी थी और लाबान ने सारे तंबू को देख
३५ लिया और न पाया। तब उसने अपने पिता से कहा कि मेरे प्रभु इस से उदास न होवें कि मैं आप के आगे उठ नहीं सक्ती क्योंकि मुझ पर स्त्रियों की रीत है सो उसने ढूंढ़ा पर
३६ मूर्त्तिन को न पाया। और याकूब क्रुद्ध हुआ और लाबान से बिबाद करके उत्तर दिया और लाबान को कहा कि मेरा क्या पाप! और क्या अपराध है? कि आप इस रीति से मेरे
३७ पीछे झपटे। आप ने जो मेरी सारी सामग्री ढूंढ़ी आप ने अपने घर की सामग्री से क्या पाई मेरे भाइयों और अपने भाइयों के
३८ आगे रखिये जिसतें वे हम दोनों के मध्य में बिचार करें। बीस बरस जो मैं आप के साथ था आप की भेड़ों और बकरियों का
३९ गाभ न गिरा और मैं ने आप की झुंड के मेंढ़े नहीं खाये। जुह

जो फाड़ागया मैं आप पास न लाया उसकी घटी म ने उठाई वुह जो दिन को अथवा रात को चोरीगया आप ने मुझ से लिया।
४० मेरी यह दशा थी कि दिन को घाम से भस्म हुआ और रात को पाला से और मेरी आंखों से मेरी नींद जातीरही।
४१ यों मुझे आप के घर में बीस बरस बीते मैं ने चौदह बरस आप की दोनों बेटियों के लिये और छः बरस आप के पशु के लिये आप की सेवा किई और आपने दस बार मेरी बनी
४२ बदलडाली। यदि मेरे पिता का ईश्वर और इबराहीम का ईश्वर और इसहाक़ का भय मेरे साथ न होता तो आप निश्चय मुझे अब छूछे हाथ निकाल देते ईश्वर ने मेरी बिपत्ति और मेरे हाथों के परिश्रम देखा है और कल रात आप को
४३ डांटा। लाबान ने उत्तर दिया और याक़ूब से कहा कि ये बेटियां मेरी बेटियां और ये बालक मेरे बालक और ये चौपाए मेरे चौपाए और सब जो तू देखता है मेरे हैं और आज के दिन अपनी इन बेटियों अथवा इनके लड़कों से जो वे जनी हैं क्या
४४ करसक्ता हों। सो अब आ मैं और तू आपुस में एक बाचा
४५ बांधें और वही मेरे और तेरे मध्य में साक्षी रहे। तब याक़ूब
४६ ने एक पत्थर लेके खंभा सा खड़ा किया। और याक़ूब ने अपने भाइयों से कहा कि पत्थर एकट्ठा करो उन्हों ने पत्थर एकट्ठा करके एक ढेर किया और उन्हों ने उसी ढेर पर खाया।
४७ और लाबान ने उसका नाम साक्षी का ढेर रखा परन्तु याक़ूब
४८ ने उसका नाम जलईद रक्खा। और लाबान बोला कि यह ढेर आज के दिन मुझ में और तुझ में साक्षी है इस लिये
४९ उसका नाम जलईद। और चौकस का गुम्मट हुआ क्योंकि उसने कहा कि जब हम आपुस से अलग होवें तो परमेश्वर
५० मेरे तेरे मध्य में चौकसी करे। जो तू मेरी बेटियों को दुःख देवे अथवा उनसे अधिक स्त्रियां करे देख हमारे साथ कोई दूसरा नहीं ईश्वर मेरे और तेरे मध्य में साक्षी है।

५१ और लाबान ने याक़ूब से कहा देख यह ढेर और खंभा जो
५२ मैं ने अपने और आप के मध्य में रक्खा है। यही ढेर और खंभा
साक्षी है कि मैं इस ढेर से पार तुझे और तू इस ढेर और
५३ इस खंभे से पार मुझे दुःख देने को न आवेगा। इबराहीम
का ईश्वर और नाहूर का ईश्वर और उनके पिता का ईश्वर
हमारे मध्य में विचार करे और याक़ूब ने अपने पिता
५४ इसहाक़ के भय की किरिया खाई। तब याक़ूब ने उस पहाड़
पर बलि चढ़ाया और अपने भाइयों को रोटी खाने को
बुलाया और उन्हों ने रोटी खाई और सारी रात पहाड़
५५ पर रहे। और भोर को तड़के लाबान उठा और अपने बेटों
और बेटियों को चूमा और उन्हें आशीष दिया और लाबान
बिदा हुआ और अपने स्थान को फिरा।

३२ बत्तीसवां पर्व्व।

१ और याक़ूब अपने मार्ग चलागया और ईश्वर के दूत उसे
२ आमिले। और याक़ूब ने उन्हें देख के कहा कि यह ईश्वर की
सेना है और उसने उस स्थान का नाम दो सेना रक्खा।
३ और याक़ूब ने अपने आगे अदूम के देश और सीर की भूमि
४ में अपने भाई ऐसा पास दूतों को भेजा। और उसने यह
कहिके उन्हें आज्ञा किई कि मेरे प्रभु ऐसा को यों कहियो कि
आप का दास याक़ूब यों कहता है कि मैं लाबान कने टिका और
५ अब लों वहीं रहा। और मेरे बैल और गदहे और झुंड
और दास और दासियां हैं और मैं ने अपने प्रभु को कहला
६ भेजा है जिसतें मैं आप की दृष्टि में अनुग्रह पाओं। और
दूतों ने याक़ूब पास फिर आके कहा कि हम आप के भाई
ऐसा पास गये और वुह और उसके साथ चार सौ मनुष्य
७ आप की भेंट को भी आते हैं। तब याक़ूब निपट डरगया और
व्याकुल हुआ और उसने अपने साथ के लोगों और झुंडों

८ और ढोरों और ऊंटों के दो जथा किये । और कहा कि यदि ऐसू एक जथा पर आवे और उसे मारे तो दूसरा जथा जो
९ बच रहा है भागेगा । फिर याक़ूब ने कहा कि हे मेरे पिता इबराहीम के ईश्वर और मेरे पिता इसहाक़ के ईश्वर वुह परमेश्वर जिसने मुझे कहा कि अपने देश और अपने
१० कुनबे में फिर जा और मैं तेरा भला करोंगा । मैं तो उन सब दया और उन सब सत्यता से जो तू ने अपने दास के संग किईं तुच्छ हों क्योंकि मैं अपने दंड से उस अर्दन पार
११ गया और अब मैं दो जथा बना हों । मैं तेरी बिनती करता हों मुझे मेरे भाई के हाथ से अर्थात् ऐसू के हाथ से बचा ले क्योंकि मैं उस्से डरता हों न होवे कि वुह आके मुझे
१२ और लड़कों को माता समेत मार लेवे । और तू ने कहा कि मैं निश्चय तुझ्से भलाई करोंगा और तेरे बंश को समुद्र के बालू की नाईं बनाओंगा जो बहुताई के मारे गिना नहीं
१३ जासक्ता । और वुह उस रात वहीं टिका और जो उसके हाथ लगा अपने भाई ऐसू के भेंट के लिये लिया ।
१४ दो सौ बकरियां और बीस बकरे दो सौ भेड़ें और बीस
१५ मेंढ़े । और तीस दूधवाली ऊंटनियां बच्चे समेत चालीस
१६ गाय और दस बैल बीस गदहियां और दस बच्चे । और उसने उन्हें अपने सेवकों के हाथ हर जथा को अलग अलग सौंपा और अपने सेवकों को कहा कि मेरे आगे पार उतरो
१७ और जथा को जथा से अलग रक्खो । और पहिले को उसने कहा कि जब मेरा भाई ऐसू तुझे मिले और पूछे कि तू किसका है? और किधर जाता है? और ये जो तेरे आगे
१८ हैं किसके हैं? । तो कहियो कि आप के सेवक याक़ूब के हैं यह अपने प्रभु ऐसू के लिये भेंट है और देखिये वुह
१९ आप भी हमारे पीछे है । और वैसा उसने दूसरे और तीसरे को और उन सब को जो जथा के पीछे जाते थे यह

कहिके आज्ञा किई कि जब तुम ऐस को पाओ तो इस रीति
२० से कहियो। और अधिक यह कहियो कि देखिये आप का सेवक
याक़ूब हमारे पीछे आता है क्योंकि उसने कहा है कि मैं उस
भेंट से जो मुझसे आगे जाती है उसे मिलाप करलेउंगा तब
२१ उसका मुंह देखोंगा क्या जाने वुह मुझे ग्रहण करे। सो वुह
भेंट उसके आगे आगे पार गई और वुह आप उस रात
२२ जथा में टिका। और उसी रात उठा और अपनी दो पत्नियों
और दो सहेलियों और ग्यारह बेटों को लेके याह याबुक़
२३ से पार उतरा। और उसने उन्हें लेके नाली पार करवाया
२४ और अपना सब कुछ पार भेजा। और याक़ूब अकेला
रहगया और वहां पौ फटे लों एक जन उसे बजनी करता
२५ रहा। और जब उसने देखा कि वुह उस पर प्रबल न हुआ
तो उसकी जांघ को भीतर से छूआ तब याक़ूब की जांघ की
२६ नस उसके संग बजनी करने में चढ़गई। तब वुह बोला कि
मुझे जाने दे क्योंकि पौ फटती है वुह बोला कि मैं तुझे जाने न
२७ देउंगा जबलों तू मुझे आशीष न देवे। तब उसने उसे कहा
२८ कि तेरा नाम क्या? वुह बोला कि याक़ूब। तब उसने कहा
कि तेरा नाम आगे को याक़ूब न होगा परन्तु इसराईल
क्योंकि तू ने ईश्वर के और मनुष्य के आगे राजा की नाईं
२९ पराक्रम पाया और जीता। तब याक़ूब ने यह कहिके उसे
पूछा कि अपना नाम बताइये वुह बोला कि तू मेरा नाम
३० क्यों पूछता है? और उसने उसे वहां आशीष दिया। और
याक़ूब ने उस स्थान का नाम फ़नीएल रक्खा क्योंकि मैं ने ईश्वर
३१ को प्रत्यक्ष देखा और मेरा प्राण बचा है। और जब वुह फ़नीएल
से पार चला तो सूर्य्य की ज्योति उस पर पड़ी और वुह अपनी
३२ जांघ से लंगड़ाता था। इस लिये इसराईल के बंश उस
जांघ की नस को जो चढ़गई थी आजलों नहीं खाते क्योंकि
उसने याक़ूब की जांघ की नस को जो चढ़गई थी छूआ था।

१ और याक़ूब ने आंखें ऊपर उठाईं और क्या देखता है कि ऐस और उसके साथ चार सा मनुष्य आते हैं तब उसने लीया को और राहील को और दो सहेलियों को लड़के बाले बांट
२ दिये। और उसने सहेलियों और उनके लड़कों को सब से आगे रक्खा और लीया और उसके लड़कों को पीछे और
३ राहील और यूसफ को सब के पीछे। और वुह आप उनके आगे पार उतरा और अपने भाई पास पहुंचते पहुंचते सात
४ बार भूमि लों दंडवत किई। और ऐस उसे मिलने को दौड़ा और उसे गले लगाया और उसके गले से लिपटा और उसे
५ चूमा और वे रोये। फिर उसने आंखें उठाईं और स्त्रियों को और लड़कों को देखा और कहा कि ये तेरे साथ कौन हैं? वुह बोला संतान जो ईश्वर ने अपनी कृपा से आप के सेवक को
६ दिये। तब सहेलियां और उनके लड़के पास आये और दंडवत
७ किई। फेर लीयाने भी अपने लड़के समेत पास आके दंडवत किई अंत को यूसफ और राहील पास आये और दंडवत किई।
८ उसने कहा कि इस जथा से जो मुझ को मिली तुझे क्या वुह
९ बोला कि अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पाओं। तब ऐस
१० बोला कि हे भाई मुझ पास बहुत हैं तेरे तेरेही लिये होवें। याक़ूब बोला कि मैं आप की बिनती करताहों यदि मैं ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मुझसे मेरी भेंट ग्रहण कीजिये क्योंकि मैं ने जो आप का मुंह देखा है जानों मैं ने ईश्वर का मुंह
११ देखा और आप मुझसे प्रसन्न हुए। मेरे आशीष को जो आप के आगे लायागया है ग्रहण कीजिये इस लिये कि ईश्वर ने मुझसे अनुग्रह से व्यवहार किया है और इस लिये कि मुझ पास सब
१२ कुछ है सो वुह यहां लों गिड़गिड़िया कि उसने लेलिया। और कहा कि आओ कूचकरें और चलें और मैं तेरे आगे आगे
१३ चलोंगा। उसने उसे कहा कि मेरे प्रभु जानते हैं कि बालक कोमल हैं और झुंड और ढोर दूध पिलानेवालियां मेरे

साथ हैं और जो वे दिनभर हांके जायें तो सारे झुंड
१४ मरजायेंगे। सो मेरे प्रभु अपने सेवक से पहिले पार जाइये
और मैं धीरे धीरे, जैसा कि ढोर आगे चलेंगे और बालक
सह सकेंगे चलोंगा यहां लों कि सैर को अपने प्रभु पास आ
१५ पहुंचों। तब ऐसा बोला अपने संग के कई एक तेरे साथ
छोड़जाऊं वुह बोला कि किसलिये? मैं अपने प्रभु की दृष्टि
१६ में अनुग्रह पाओं। तब ऐसा उसी दिन सैर के मार्ग लौट
१७ गया। और याक़ूब चलते चलते सकूस को आया
और अपने लिये एक घर बनाया और अपने ढोर के लिये
पतझ्प्पर बनाये इसी लिये उस स्थान का नाम सकूस हुआ।
१८ और याक़ूब पदानअराम से बाहर होके किनान देश के
शकीम के नगर शलीम में आया और नगर के बाहर अपना
१९ तंबू खड़ा किया। और जिस पर उसका तंबू खड़ा था उसने
उस खेत को शकीम के पिता हमूर के सन्तान से सौ टुकड़े
२० रोकड़ पर मोल लिया। और उसने वहां एक बेदी बनाई
और उसका नाम ईश्वर इसराईल का ईश्वर रक्खा।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब।

१ और लीया की बेटी दैना जिसे वुह याक़ूब के लिये जनी थी
२ उस देश की लड़कियों के देखने को बाहर गई। और जब
उस देश के अध्यक्ष हव्वी हमूर के बेटे शकीम ने उसे देखा तो
उसे ले गया और उसे मिलबैठा और उसे तुच्छ किया।
३ और उसका मन याक़ूब की बेटी दैना से अंटका और उसने
४ उस लड़की को प्यार किया और उसके मन की कही। और
शकीम ने अपने पिता हमूर से कहा कि इस लड़की को मुझे
५ पत्नी में दिलाइये। और याक़ूब ने सुना कि उसने मेरी बेटी
दैना को अशुद्ध किया उस समय में उसके बेटे उसके ढोर
के साथ खेत में थे और उनके आने लों याक़ूब चुप रहा।

६ और शकीम का पिता हमूर बातचीत करने को याकूब पास
७ आया। और सुनतेही याकूब के बेटे खेत से आपहुंचे और
वे उदास होके बड़े कोपित हुए क्योंकि उसने इसराईल में
अपमान किया कि याकूब की बेटी के साथ अनुचित रीति से
८ मिल बैठा। और हमूर ने उनके साथ यों बातचीत किई कि
मेरे बेटे शकीम का मन तुम्हारी बेटी से लालसित है सो उसे
९ उसको पत्नी में दीजिये। और हमारे साथ समधियाना कीजिये
अपनी बेटियां हमें दीजिये और हमारी बेटियां आप लीजिये।
१० और तुम हमारे साथ बास करोगे और यह भूमि तुम्हारे
आगे होगी उसमें रहो और ब्यापार करो और इसमें
११ अधिकार प्राप्त करो। शकीम ने उसके पिता और भाइयों
से कहा कि तुम्हारी दृष्टि में मैं अनुग्रह पाओं और जो कुछ
१२ तुम लोग मुझे कहोगे मैं देउंगा। जितना दैजा और भेंट
चाहो मैं तुम्हारे कहने के समान देऊंगा पर लड़की को मुझे
१३ पत्नी में देउ। तब याकूब के बेटों ने शकीम और उसके पिता
हमूर को छल से उत्तर दिया क्योंकि उसने उनकी बहिन दैना
१४ को अशुद्ध किया था। और कहा कि हम यह नहीं करसक्ते कि
एक अख़तनः को अपनी बहिन देवें क्योंकि इसे हमारी निन्दा
१५ होगी। परन्तु जो तुम्में हरपुरुष हमसरीखा ख़तनः करावे
१६ तो हम तुम्हारी बात मानेंगे। तब हम अपनी बेटियां तुम्हें
देंगे और तुम्हारी बेटियां लेंगे और हम तुम्में निवास करेंगे
१७ और हम सब एक लोग होंगे। परन्तु जो ख़तनः कराने
में तुम लोग हमारी न सुनोगे तो हम अपनी लड़की लेलेंगे
१८ और चलेजायंगे। उनकी बातें शकीम और उसके पिता
१९ हमूर को प्रसन्न हुईं। और उस तरुण ने उस बात में अबेर
न किया क्योंकि वुह याकूब की बेटी से प्रसन्न था और वुह
२० अपने पिता के सारे घराने से अधिक कुलीन था। फिर
हमूर और उसका बेटा शकीम अपने नगर के फाटक पर आये

२१ और उन्हों ने अपने नगर के लोगों से यों बातचीत किई । कि इन मनुष्यों से हम से मेल है सो उन्हें इस देश में रहने देउ और इस में व्यापार करें क्योंकि देखो यह देश उनके लिये बड़ा है सो आओ हम उनकी बेटियों का पत्नियों के लिये
२२ लेंवे और अपनी बेटियां उन्हें देवें । परन्तु हमारे साथ रहने को और एक लोग होने को केवल इसी बात से मानेंगे कि ख़तनः जैसा उनका कियागया है हमों हर पुरुष ख़तनः करावे ।
२३ क्या उनके ढोर और उनकी संपत्ति और उनका हर एक चैापाया हमारा न होगा? केवल हम उनसे उस बात
२४ को मान लेवें और वे हम्में निवास करेंगे । और सभों ने जो नगर के फाटक से आते जाते थे हमूर और उसके बेटे शकीम की बात को माना और उसके नगर के फाटक से सब जो बाहर जाते
२५ थे उनमें से हर पुरुष ने ख़तनः करवाया । और तीसरे दिन जबलों वे घाव में पड़े थे यों हुआ कि याक़ूब के बेटों में से दैनाक दो भाई समऊन और लीवी हर एक ने अपनी अपनी तलवार लिई और साहस से नगर पर आपड़े और सारे
२६ पुरुषों को मारडाला । और उन्हों ने हमूर और उसके बेटे शकीम को तलवार की धार से मारडाला और शकीम के घर से
२७ दैना को लेके निकल गये । और याक़ूब के बेटे जूझे हुए पर आये और नगर को लूट लिया क्योंकि उन्हों ने उनकी बहिन
२८ को अशुद्ध किया था । उन्हों ने उनकी भेड़ और उनकी गाय बैल और उनके गदहे और जो कछ कि नगर में और
२९ खेत में था लूट लिया । और उनके सब धन और उनके सारे बालक और उनकी पत्नियां बंधुआई में लिया और घर
३० में का सबकुछ लूट लिया । और याक़ूब ने समऊन और लीवी से कहा कि तुम ने मुझे दुःख दिया कि इस भूमि के बासियों में किनानियों और फ़र्ज़ियों के मध्य में मुझे घिनैाना करदिया और मैं गिनती में थोड़ा होके वे मेरे सन्मुख एकट्ठे

होंगे और मुझे मारडालेंगे और मैं और मेरा घराना
२१ नष्ट होवेगा। तब वे बोले क्या उसे उचित था कि हमारी
बहिन के साथ बेश्या की नाईं व्यवहार करे ?।

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब ।

१ और ईश्वर ने याक़ूब से कहा कि उठ बैतईल को जा और
वहीं रह और ईश्वर के लिये जिसने तुझे दर्शन दिया था जब
२ तू अपने भाई ऐस के आगे से भागाथा एक बेदी बना। तब
याक़ूब ने अपने घराने से और अपने सब संगियों से कहा
कि उपरी देवों को जो तुम्में हैं दूर करो और शुद्ध होओ
३ और अपने कपड़े बदलो। और आओ हम उठें और
बैतईल को जायें और मैं वहां ईश्वर के लिये बेदी बनाओंगा
जिसने मेरी सकेती के दिन मुझे उत्तर दिया और जिस
४ मार्ग में मैं चला वुह मेरे साथ साथ था। और उन्हों ने
सारे उपरी देवों को जो उनके हाथों में थे और कुंडल जो
उनके कानों में थे याक़ूब को दिये और याक़ूब ने उन्हें बलूत पेड़
५ तले शकीम के लग गाड़दिया। और उन्हों ने कूच किया
और उनके आसपास के नगरों पर ईश्वर की डर पड़ी और
६ उन्हों ने याक़ूब के बेटों का पीछा न किया। सो याक़ूब और
जितने लोग उसके साथ थे किनान की भूमि में लूज़ को जो
७ बैतईल है आये। और उसने वहां एक बेदी बनाई और इस
लिये कि जब वुह अपने भाई के पास से भागा तो वहां उसे
ईश्वर दिखाई दिया उसने उसका नाम बैतईल का ईश्वर
८ रक्खा। और रबका की दाई दबूरा मरगई और बैतईल
के लग बलूत पेड़ तले गाड़ीगई और उसका नाम रोने का
९ बलूत रक्खा। और जब कि याक़ूब फदानअराम से निकला
ईश्वर ने उसे फेर दर्शन दिया और उसे आशीष दिया।
१० और ईश्वर ने उसे कहा कि तेरा नाम याक़ूब है तेरा नाम

आगे को याक़ूब न होगा परन्तु तेरा नाम इसराईल होगा
११ सो उसने उसका नाम इसराईल रक्खा। फिर ईश्वर ने उसे
कहा कि मैं ईश्वर सर्व सामर्थी हों तू फलमान हो और बढ़
तुझ्से एक जाति और जातिन की जाति और तेरी कटि से
१२ राजा निकलेंगे। और यह भूमि जो मैं ने इबराहीम और
इसहाक़ को दिई है तुझे और तेरे पीछे तेरे बंश को देउंगा।
१३ और ईश्वर उस स्थान से, जहां उसने उस्से बातें किईं थीं उस
१४ पास से उठगया। और याक़ूब ने उस स्थान में, जहां उसने
उस्से बातें किईं पत्थर का एक खंभा खड़ा किया और उस पर
१५ पीने की भेंट चढ़ाई और उस पर तेल डाला। और याक़ूब
ने उस स्थान का नाम, जहां ईश्वर उस्से बोला था बैतईल
१६ रक्खा। और उन्हों ने बैतईल से कूच किया और वहां से
अफरास बज्जत दूर न था और राहील को पीर लगी और
१७ उस पर बड़ी पीड़ा ऊई। उस पीड़ा की दशा में जनाई
दाई ने उसे कहा कि मत डर अब की भी तेरे बेटा होगा।
१८ और यों ऊआ कि उसका प्राण जाने पर था क्योंकि वुह
मरहीगई तो उसने उसका नाम अपने उदास का पुत्र रक्खा
१९ पर उसके पिता ने उसका नाम बनियामीन रक्खा। सो
राहील मरगई और अफरास के मार्ग में, जो बैतलहम
२० है गाड़ीगई। और याक़ूब ने उसके समाधि पर एक खंभा
खड़ा किया और वही खंभा राहील के समाधि का खंभा
२१ आजलों है। फिर इसराईल ने कूंच किया और अपना
२२ तंबू ईदार के गुम्मट के उस पार खड़ा किया। और जब
इसराईल उस देश में जारहा तो यों ऊआ कि राओबीन गया
और अपने पिता की सुरैतिन के संग अकर्म्म किया और
२३ इसराईल ने सुना अब याक़ूब के बारह बेटे थे। लीया के
बेटे राओबीन याक़ूब का पहिलौंठा और समऊन और लीवी
२४ और यहूदा और यसाख़ार और ज़बूलून। और राहील के

२५ बेटे यूसफ और बनियामीन। और राहील की सहेली बिलहा
२६ के बेटे दान और नफ़ताली। और लीया की सहेली ज़लफा
के बेटे जाद और अशर याक़ूब के बेटे जो फदानआराम में
२७ उत्पन्न हुए थे हैं। और याक़ूब अरबा के नगर में
जो हबरून है ममरी के बीच अपने पिता इसहाक़ पास
जहां इबराहीम और इसहाक़ ने निवास किया था आया।
२८।२९ और इसहाक़ एक सौ अस्सी बरस का हुआ। और
इसहाक़ ने प्राण त्यागा और बूढ़ा और दिनी होके अपने
लोगों में जा मिला और उसके बेटे ऐसौ और याक़ूब ने उसे
गाड़ा।

३६ छत्तीसवां पर्ब्ब।

१।२ ऐसौ का जो अदूम है बंशावली यह है। ऐसौ ने किनान की
लड़कियों में से इलून हट्टी की बेटी आदा को और अहलिबामः
३ को जो अन्ना की बेटी हवी ज़बियून की बेटी थी। और इस्माईल
४ की बेटी नबायूस की बहिन बशिमास को ब्याह लाया। और
ऐसौ के लिये आदा अलीफ़ाज़ को जनी और बाशिमास से रऊईल
५ उत्पन्न हुआ। और अहलिबामः से यऊश और यालाम
और क़ूरह उत्पन्न हुए ये ऐसौ के बेटे हैं जो उसके लिये किनान
६ की भूमि में उत्पन्न हुए। और ऐसौ अपनी पत्नियों और बेटों
और बेटियों और अपने घर के हर एक प्राणी और अपने
ढोर को और अपने सारे पशु को और अपनी सारी संपत्ति
को जो उसने किनान देश में प्राप्त किये थे लेके अपने
७ भाई याक़ूब पास से देश को निकल गया। क्योंकि उनका
धन ऐसा बढ़गया था कि वे एकट्ठे न रहिसक्ते थे और उनके
पशु के कारण से उनके परदेश की भूमि उनका भार न उठा
८ सक्ती थी। और ऐसौ जो अदूम है सीर पहाड़ पर जा रहा।
९ सो ऐसौ की बंशावली जो सीर पहाड़ के मनुष्यों का

१० पिता है ये हैं । ऐस के बेटों के नाम ये हैं ऐस की पत्नी आदाः का बेटा अलीफाज़ ऐस की पत्नी बाशिमास का बेटा रुईल ।
११ अलीफाज़ के बेटे तीमान और ऊमार और ज़ीफू और गाताम
१२ और कनाज़ । और ऐस के बेटे अलीफाज़ की सहेली तिमना थी सो वुह अलीफाज़ के लिये अमालक को जनी सो ऐस की
१३ पत्नी आदाः के बेटे ये थे । और रऊईल के बेटे ये हैं नहास और ज़ोरह और शम्मा और मिज़ः जो ऐस की पत्नी बाशिमास
१४ के बेटे थे । और ऐस की पत्नी सबिऊन की बेटी आनः की बेटी अऊलिबामः के बेटे ये थे और वुह ऐस के लिये यऊश
१५ और यालाम और कूरह जनी । ऐस के बेटों में जो अध्यक्ष ऊए ये हैं ऐस के पहिलौंठे अलीफाज़ के बेटे अध्यक्ष तीमान
१६ अध्यक्ष ओमर अध्यक्ष ज़ीफू अध्यक्ष कनाज़ । अध्यक्ष कूरह अध्यक्ष गाताम अध्यक्ष अमालक ये वे अध्यक्ष हैं जो अलीफाज़ से अदूम की भूमि में उत्पन्न ऊए और आदाः के बेटे थे ।
१७ और ऐस के बेटे रऊईल के बेटे ये हैं अध्यक्ष नहास अध्यक्ष ज़िराह अध्यक्ष शम्मा अध्यक्ष मज़्ज़ा ये वे अध्यक्ष हैं जो रुईल से अदूम देश में उत्पन्न ऊए और ऐस की पत्नी बाशिमास के
१८ बेटे थे । और ऐस की पत्नी अऊलिबामः के ये बेटे हैं अध्यक्ष यऊश अध्यक्ष यालाम अध्यक्ष कूरह ये वे अध्यक्ष हैं जो ऐस
१९ की पत्नी अनाः की बेटी अऊलिबामः से थे । सो ऐस के जो
२० अदूम है ये बेटे हैं ये उनके अध्यक्ष हैं । और सीर के बेटे ह्रूरी जो इस भूमि के बासी थे ये हैं लूतान और शोबाल
२१ और ज़बिऊन और अनाः । और दैशून और ईज़र और दैशान ये सब ह्रूरियों के अध्यक्ष हैं और अदूम की भूमि में
२२ सीर के बेटे हैं । और लूतान के सन्तान ह्रूरी और हीमाम
२३ और लूतान की बहिन का नाम तमन्ना था । और शोबाल के सन्तान ये हैं अलवान और मानाहत और ईबाल और
२४ शीफू और ओनाम । और सबियून के सन्तान ये हैं आजा

और अनाः यह वुह अनाः है जिसने बन में, जब वुह अपने
२४ पिता ज़बियून के गदहों को चराता था खच्चर पाये। और
आनः के सन्तान ये हैं दैशून और अक़्लिबामः आनः की बेटी।
२६ और दैशान के सन्तान हमदान और अश्बान और यथरान
२७ और खिरान। और ईज़र के सन्तान ये हैं बिलहान और
२८ ज़ावान और अकान। और दैशान के सन्तान ऊज़ और
२९ अरान। वे अध्यक्ष जो हूरियों में के थे ये हैं अध्यक्ष लूतान
३० अध्यक्ष शोबाल अध्यक्ष ज़बिऊन अध्यक्ष आनः। अध्यक्ष
दैशून अध्यक्ष ईसर अध्यक्ष दैशान ये उन हूरियों के अध्यक्ष
३१ हैं जो सीर की भूमि में थे। और राजा
जो अदूम पर राज्य करता था उस्से पहिले कि इसराईल
३२ के बंश का कोई राजा हुआ ये हैं। बिऊर का बेटा बाला
जो अदूम में राज्य करता था और उसके नगर का नाम
३३ दनहाबा था। और बाला मरगया और ज़राह का बेटा
३४ यूबाब जो बसराः था उसकी संती राज्य किया। और यूबाब
मरगया और हूशाम जो तमन्नी की भूमि का था उसकी संती
३५ राज्य किया। और हूशाम मरगया और बिदाद का बेटा
हदद जिसने मुअब के चौगान में मदयानियों को मारडाला
उसकी संती राज्य किया और उसके नगर का नाम अवीस
३६ था। और हदाद मरगया और मसरीका का समलाः उसकी
३७ संती राज्य किया। और समलाः मरगया और नदी के लग के
३८ रहूबूस का और शाऊल उसकी संती राज्य किया। और शाऊल
मरगया और अख़बूर का बेटा बलहनान उसकी संती राज्य
३९ किया। और अख़बूर का बेटा बालहनान मरगया और
हदार उसकी संती राज्य किया उसके नगर का नाम पाऊ
था और उसकी पत्नी का नाम महीतबल था जो मतरीद
४० की बेटी मिज़ाहप की बेटी थी। सो उनके
घरानों और उनके स्थानों और उनके नाम के समान ऐस के

अध्यक्षों के ये नाम हैं अध्यक्ष तिमना अध्यक्ष अलवाः अध्यक्ष
४१ यसीस। अध्यक्ष अहलिबामः अध्यक्ष इलाह अध्यक्ष पैनून।
४२। ४३ अध्यक्ष क़नाज अध्यक्ष तीमान अध्यक्ष मिबज़ार। अध्यक्ष
मगदील अध्यक्ष ऐराम ये अपने अपने स्थान में अपने अपने
निवास के समान अदूम के अध्यक्ष थे जो अदूमियों का पिता
ऐस है।

३७ सैंतीसवां पर्ब्ब।

१ और याक़ूब ने किनान देश में अपने पिता के टिकने की भूमि
२ में बास किया। और याक़ूब की बंशावली ये हैं यूसफ सत्रह
बरस का होके अपने भाइयों के साथ झुंड चराता था
और वुह तरूण अपने पिता की पत्नी बिलहा और ज़ल्फा के
बेटों के संग था और यूसफ ने उनके पिता के पास उनके
३ बुरे कामों का संदेश पहुंचाया। अब इसराईल यूसफ को
अपने सारे लड़कों से अधिक प्यार करता था इस लिये कि
वुह उसके बुढ़ापे का बेटा था और उसने उसके लिये रंग
४ रंग का पहिरावा बनाया। और जब उसके भाइयों ने देखा
कि हमारा पिता हमारे सब भाइयों से उसे अधिक प्यार
करता है तो उन्हों ने उस्से बैर किया और उस्से कुशल से न कहि
५ सक्ते थे। और यूसफ ने एक स्वप्न देखा और अपने भाइयों से
६ कहा और उन्हों ने उसे अधिक बैर रक्खा। और उसने
७ उन्हें यूं कहा कि जो स्वप्न मैं ने देखा है सो सुनिये। क्योंकि
देखिये कि हम खेत में गट्ठियां बांधते थे और क्या देखता हों कि
मेरी गट्ठी उठी और सीधी खड़ी हुई और क्या देखता हों
कि तुम्हारी गट्ठियां आसपास खड़ी हुईं और मेरी गट्ठी को
८ दंडवत किई। तब उसके भाइयों ने उसे कहा क्या तू सचमुच
हम पर राज्य करेगा? अथवा तू हम पर प्रभुता करेगा?
और उन्हों ने उसके स्वप्न और उसकी बातों के कारण से उस्से

९ अधिक बैर किया। फिर उसने दूसरा स्वप्न देखा और उसे अपने भाइयों से कहा कि देखो मैं ने एक और स्वप्न देखा और क्या देखताहों कि सूर्य्य और चंद्रमा और ग्यारह तारों
१० ने मुझे दंडवत किई। और उसने यह अपने पिता और भाइयों से कहा पर उसके पिता ने उसे डपटा और कहा कि यह क्या स्वप्न है जो तू ने देखा है क्या मैं और तेरी मा और तेरे भाई सचमुच तेरे आगे भूमि पर झुकके तुझे
११ दंडवत करेंगे?। और उसके भाइयों ने डाह किया परन्तु उसके
१२ पिता ने उस बात को सोच रक्खा। फिर उसके
१३ भाई अपने पिता की झुंड चराने को शकीम को गये। तब इसराईल ने यूसफ से कहा क्या तेरे भाई शकीम में नहीं चराते आ मैं तुझे उनके पास भेजों उसने उसे कहा कि मैं
१४ यहीं हों। फेर उसने उसे कहा कि जा अपने भाइयों और झुंड़ों की कुशलता देख और मुझ पास संदेश ला सो उसने उसे हबरून की तराई से भेजा और वुह शकीम में आया।
१५ तब किसी जन ने उसे पाया और उसे खेत में भरमते देखा
१६ तब उस पुरुष ने उसे पूछा कि तू क्या ढूंढ़ता है?। वुह बोला मैं अपने भाइयों को ढूंढ़ताहों मुझे बतलाइये कि वे कहां
१७ चराते हैं। और वुह पुरुष बोला वे यहां से चलेगये क्योंकि मैं ने उन्हें यह कहते सुना कि आओ दासान को जावें तब यूसफ अपने भाइयों के पीछे चला और उन्हें दासान में पाया।
१८ और ज्योंहीं उन्हों ने उसे दूर से देखा तो अपने पास आने
१९ से पहिले उसके मारडालने को जुगत किई। और वे आपुस
२० में बोले देखो वुह स्वप्नदर्शी आता है। सो आओ अब हम उसे मारडालें और किसी कूएं में डालदेवें और कहें कि कोई वन्यपशु ने उसे भक्ष किया और देखेंगे कि उसके स्वप्नों
२१ का क्या होगा। तब राओबीन ने सुनके उसे उनके हाथों
२२ से छुड़ाया और बोला कि हम उसे मार न डालें। और

राओबीन ने उन्हें कहा कि लोहू मत बहाओ परन्तु उसे
बन के इस कूएं में डाल देउ और उस पर हाथ न डालो
जिसतें वुह उसे उनके हाथों से छुड़ा के उसके पिता पास फिर
२३ पहुंचावे। और यों हुआ कि जब यूसफ अपने भाइयों पास
आया तो उन्हों ने उसका बहुरंगी वस्त्र उसे उतार लिया।
२४ और उन्हों ने उसे लेके कूएं में डालदिया वुह कूआं अंधा था
२५ उसमें कुछ पानी नथा। तब वे रोटी खाने बैठे और आंख
उठाई और क्या देखता है कि इस्माईलियों का एक जथा
गिलियाद से सुगंध द्रव्य और बलसाम और मुर ऊंटो पर
२६ लादेहुए मिसर को उतर जाते हैं। और यहूदा ने अपने
भाइयों से कहा कि अपने भाई को मार के उसका लोहू
२७ छिपाने से क्या लाभ होगा। आओ उसे इस्माईलियों के हाथ
बेचें और उस पर अपने हाथ न डालें क्योंकि वुह हमारा
भाई और हमारा मांस है और उसके भाइयों ने मान
२८ लिया। उस समय मदयानी व्यापारी उधर से जाते थे सो
उन्हों ने यूसफ को कूएं से बाहर निकाल के इस्माईलियों के
हाथ बीस टुकड़े चांदी पर बेचा और वे यूसफ को मिसर में
२९ लाये। तब राओबीन कूएं पर फिर आया
और यूसफ को कूएं में न देख के उसने अपने कपड़े फाड़े।
३० और अपने भाइयों के पास फिर आया और कहा कि लड़का
३१ तो नहीं अब मैं कहां जाऊं?। फिर उन्हों ने यूसफ
का पहिरावा लिया और एक बकरी का मेम्ना मारा और
३२ उसे उसके लोहू में चुभोड़ा। और उन्हों ने उस बहुरंगी
वस्त्र को भेजा और अपने पिता के पास ले आये और कहा
कि हम ने इसे पाया आप इसे पहिचानिये कि यह आप के
३३ बेटे का पहिरावा है कि नहीं?। और उसने उसे पहिचाना
और कहा कि यह तो मेरे बेटे का पहिरावा है किसी बनपशु
३४ ने उसे फाड़ा है यूसफ निःसन्देह फाड़ागया। तब याकूब ने

अपने कपड़े फाड़े और टाट बस्त्र अपनी कटि पर डाला और
३५ बज़त दिन लों अपने बेटे के लिये शोक किया। और उसके
सारे बेटे बेटियां उसे शांति देने उठीं पर उसने शांतिग्रहण न
किई पर बोला कि मैं अपने बेटे के पास रोताज़आ समाधि
३६ में उतरोंगा सो उसका पिता उसके लिये रोया किया। और
मदयानियों ने उसे मिसर में फरऊन के एक प्रधान सेना पति
फूतीफार के हाथ बेंचा।

३८ अठतीसवां पर्ब्ब ।

१ और उस समय में यों ज़आ कि यहूदा अपने भाइयों से
२ अलग होकर हैरः नाम एक अदुल्लमी के पास गया। और
यहूदा ने वहां एक किनानी की लड़की को देखा जिसका नाम
शूअः था उसने उसे लिया और उसके साथ संगम किया।
३ वुह गर्भिणी ज़ई और एक बेटा जनी और उसने उसका
४ नाम ईर रक्खा। और वुह फेर गर्भिणी ज़ई और बेटा जनी
५ और उसने उसका नाम ओनान रक्खा। और वुह फिर
गर्भिणी ज़ई और बेटा जनी और उसका नाम शीलः रक्खा
६ और जब वुह उसे जनी तो वुह कुजैब में था। और यहूदा
अपने पहिलौंठे ईर के लिये एक स्त्री ब्याह लाया जिसका
७ नाम तामर था। और यहूदा का पहिलौंठा ईर परमेश्वर
८ की दृष्टि में दुष्ट था सो परमेश्वर ने उसे मारडाला। तब
यहूदा ने ओनान को कहा कि अपने भाई की पत्नी पास
जा और उसे ब्याह कर और अपने भाई के लिये बंश चला।
९ और ओनान ने जाना कि यह बंश मेरा न होगा और यों
ज़आ कि जब वुह अपने भाई की पत्नी पास गया तो वीर्य
को भूमि पर गिरादिया न होवे कि उसका भाई उससे बंश
१० पावे। और उसका वुह कार्य परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था
११ इस लिये उसने उसेभी मारडाला। तब यहूदा ने अपनी

पतोह तामार को कहा कि अपने पिता के घर में रांड बैठी रह जबलों कि मेरा बेटा शीलः बढ़जाय क्योंकि उसने कहा न होवे कि वुह भी अपने भाइयों की नाईं मरजाय सो तामार
१२ अपने पिता के घर जारही ।　　और बज्जत दिन बीते शूअः की बेटी यहूदा की पत्नी मरगई और यहूदा उसके शोक को भूला तब वुह और उसका मित्र अदुल्लमी हीरः
१३ अपनी भेड़ों के रोम कतरने को तमनास को गये । और तामार से यह कहा गया कि देख तेरा ससुर अपनी भेड़ों के
१४ रोम कतरने को तमनास को जाता है । तब उसने अपने रंडसाले के कपड़ों को उतार फेंका और घूंघट ओढ़ा और अपने को लपेटा और तमनास के मार्ग में एक खुलेज्जए स्थान में बैठगई क्योंकि उसने देखा था कि शीलः सयाना ज्जआ
१५ और मुझे उसकी पत्नी न करदिया । जब यहूदा ने उसे देखा तो समझा कि कोई बेश्या है क्योंकि वुह अपना मुंह
१६ छिपाये ज्जए थी । और मार्ग से उसकी ओर फिरा और उसे कहा कि मुझे अपने पास आने दीजिये और न जाना कि वुह मेरी पतोह है वुह बोली कि मेरे पास आने में तू
१७ मुझे क्या देगा? । वुह बोला मैं झुंड में से एक मेम्ना भेजोंगा
१८ उसने कहा कि तू उसे भेजने लों मुझे कुछ बंधक दे । वुह बोला मैं तुझे क्या बंधक देउं वह बोली अपनी छाप और अपने बिजायठ और लाठी जो तेरे हाथ में है उसने दिया
१९ और उसके पास गया और वुह उसे गर्भिणी ज्जई । फिर वुह उठी और चली गई और घूंघट उतार रक्खा और
२० रंडसाले का बस्त्र पहिन लिया । और यहूदा ने अपने मित्र अदुल्लमी के हाथ मेम्ना भेजा कि उस स्त्री के हाथ से अपना
२१ बंधक फेर लेवे परन्तु उसने उसे न पाया । तब उसने वहां के लोगों से पूछा कि जो बेश्या मार्ग में बैठी थी सो कहां है?
२२ वे बोले कि यहां बेश्या न थी । तब वुह यहूदा के पास फिर

आया और कहा कि मैं उसे नहीं पासक्ता और वहां के
२३ लोगों ने भी कहा कि बेश्या वहां न थी। यहूदा बोला कि
उसे लेने देउ न हो कि हम निन्दित होवें देख मैं ने यह
२४ मेम्ना भेजा और तू ने उसे न पाया। और तीन मास
के पीछे यूं हुआ कि यहूदा से कहागया कि तेरी पतोह तामार
ने बेश्याई किई और देख कि उसे छिनाले का गर्भ भी है
२५ यहूदा बोला कि उसे बाहर लाओ और जलादेउ। जब वुह
निकालीगई तो उसने अपने ससुर को कहलाभेजा कि मुझे उस
जनका पेट है जिसकी ये बस्तें हैं और कहा कि देखिये यह
२६ छाप और बिजायठ और लाठी किसकी है। तब यहूदा ने
मानलिया और कहा कि वुह मुझसे अधिक धर्म्मी है इस लिये
कि मैं ने उसे अपने बेटे शीलः को न दिया पर वुह आगे
२७ को उसे अज्ञान रहा। और उसके जन्ने के समय
२८ में यूं हुआ कि उसकी कोख में जमल थे। और जब वुह पीड़
में हुई तो एक का हाथ निकला और जनाई दाई ने उसके
२९ हाथों में नारा बांध के कहा कि यह पहिले निकला। और
यूं हुआ कि उसने अपना हाथ फिर खींच लिया और क्या
देखता है कि वहीं उसका भाई निकल पड़ा तब वुह बोली कि
तू ने यह दरार क्यों किया? इस लिये उसका नाम फ़ारिज़
३० हुआ। उसके पीछे उसका भाई जिसके हाथ में नारा बंधा था
निकला और उसका नाम ज़राह रक्खा।

३९ उन्तालीसवां पर्ब्ब।

१ और यूसफ को मिसर में लाये और फूतीफार मिसरी ने, जो
फ़रऊन का एक प्रधान और राजा का सेनापति था उसको
इस्माईलियों के हाथ से, जो उसे वहां लाये थे मोल लिया।
२ परन्तु परमेश्वर यूसफ के साथ था और वुह भाग्यमान हुआ
३ और वुह अपने मिसरी स्वामी के घर में रहा किया। और

उसके स्वामी ने यह देखा कि परमेश्वर उसके साथ है और
४ यह कि परमेश्वर ने उसके सारे कार्यों में उसे भाग्यमान
किया। और यूसफ ने उसकी दृष्टि में अनुग्रह पाया
और उसने उसकी सेवा किई और उसने उसे अपने घर पर
करोड़ा किया और सब जो कुछ कि उसका था उसके हाथ में
५ करदिया। और यों हुआ कि जब से उसने उसे अपने घर
पर और अपनी सब वस्तुन पर करोड़ा किया परमेश्वर ने उस
मिसरी के घर पर यूसफ के कारण बढ़ती दिई और उसकी
सारी वस्तुन में जो घर में और खेत में थीं परमेश्वर की ओर
६ से बढ़ती हुई। और उसने अपना सब कुछ यूसफ के हाथ
में करदिया और उसने रोटी से अधिक जिसे खालेता था कुछ
न जानता था और यूसफ रूपमान और देखने में सुंदर था।
७ और उसके पीछे यों हुआ कि उसके स्वामी की पत्नी
की आंख यूसफ पर लगी और वुह बोली कि मुझे ग्रहण
८ कर। परन्तु उसने न माना और अपने स्वामी की पत्नी से
कहा कि देख मेरा स्वामी अपनी रोटी से अधिक जिसे
खालेता है किसी वस्तु को नहीं जानता और उसने अपना
९ सब कुछ मेरे हाथ में सौंप दिया। इस घर में मुझसे बड़ा
कोई नहीं और उसने आप को छोड़ कोई वस्तु मुझसे अलग
नहीं रक्खी क्योंकि तू उसकी पत्नी है भला फिर मैं ऐसी
महादुष्टता क्योंकर करके ईश्वर का अपराधी होओं।
१० और ऐसा हुआ कि ज्यों वुह यूसफ को प्रतिदिन कहतीरही
वुह उसे ग्रहण करने को अथवा उसके पास रहने को
११ उसे न मानता था। और एक समय ऐसा हुआ कि
वुह अपने कार्य के लिये घर में गया और घर के लोगों में से
१२ वहां कोई न था। तब उसने उसका पहिरावा पकड़ के
कहा कि मुझे ग्रहण कर तब वुह अपना पहिरावा उसके
१३ हाथ में छोड़कर भागा और बाहर निकल गया। अब जो

उसने देखा कि वुह अपना पहिरावा मेरे हाथ में छोड़गया
१४ और भाग निकला। तो उसने अपने घर के लोगों को
बुलाया और कहा कि देखो वुह एक इबरानी को हमारे
घर में लाया कि हम से ठठोली करे वुह मुझे अपत करने
१५ को भीतर घुस आया और मैं चिल्ला उठी। और यों हुआ
कि जब उसने देखा कि मैं ने शब्द उठा के चिल्लाई तो अपना
पहिरावा मेरे हाथ में छोड़ भागा और बाहर निकल गया।
१६ सो जबलों उसका पति घर में न आया उसने उसका पहिरावा
१७ अपने पास रख छोड़ा। तब उसने ऐसीही बातें उसे कहीं
कि यह इबरी दास जो तू ने हम पास ला रक्खा घुस आया
१८ कि मुझे ठट्ठा करे। और जब मैं चिल्ला उठी तो वुह अपना
१९ पहिरावा मेरे पास छोड़कर बाहर निकल भागा। जब
उसके स्वामी ने ये बातें सुनी जो उसकी पत्नी ने कहीं कि तेरे
२० दास ने मुझे यों किया तो उसका क्रोध भड़का। और यूसफ
के स्वामी ने उसे लेके बंदीगृह में जहां राजा के बंधुए बंद थे
२१ बंधन में डाला और वुह वहां बंदीगृह में था।　　परन्तु
परमेश्वर यूसफ के साथ था और उस पर कृपा किई और
२२ बंदीगृह के प्रधान को उस पर दयाल किया। और बंदीगृह
के प्रधान ने बंदीगृह के सारे बंधुओं को यूसफ के हाथ में सौंपा
२३ और जो कुछ वे करते थे उनका प्रधान वही था। और
बंदीगृह का प्रधान उसके सारे कार्य्यों से निश्चिंत था इस
लिये कि परमेश्वर उसके साथ था और उसके कार्य्यों को ईश्वर
सिद्ध करता था।

४० चालीसवां पर्ब्ब ।

१ इन बातों के पीछे यूं हुआ कि मिसर के राजा के पियाऊ ने
और रसोइया ने अपने प्रभु मिसर के राजा का अपराध
२ किया। और फरऊन अपने दो प्रधानों पर अर्थात् प्रधान

३ पियाऊ पर और प्रधान रसोइया पर क्रुद्ध ऊआ। और उसने उन्हें पहरू के प्रधान के घर में जहां यूसफ बंद था बंदीगृह
४ में डाला। पहरू के प्रधान ने उन्हें यूसफ को सौंप दिया और उसने उनकी सेवा किई और वे कितने दिन लों बंद रहे।
५ और हर एक ने उन दोनों में से बंदीगृह में अर्थात् मिसर के राजा के पियाऊ और रसोइया ने एकही रात एक एक
६ स्वप्न अपने अपने अर्थ के समान देखा। और बिहान को यूसफ उन पास आया और उन पर दृष्टि करके क्या देखता है कि
७ वे उदास हैं। उसने फरऊन के प्रधानों से जो उसके साथ उसके प्रभु के घर में बंद थे पूछा कि आज तुम क्यों कुढ़ते हो।
८ वे बोले कि हम ने स्वप्न देखा है जिसका अर्थ करवैया नहीं तब यूसफ ने उन्हें कहा क्या अर्थ करना ईश्वर का कार्य्य नहीं
९ मुझे कहो। तब पियाऊ के प्रधान ने अपना स्वप्न यूसफ से कहा और उसे बोला कि अपने स्वप्न में क्या देखता हों कि
१० एक लता मेरे आगे है। और उस लता में तीन डालियां थीं उनमें कलियां निकलीं और उसमें फूल लगा और उसके
११ गुच्छों में पक्के दाख निकले। और फरऊन का कटोरा मेरे हाथ में था और मैं ने दाखों को लेके फरऊन के कटोरे में निचोड़ा और मैं ने उस कटोरे को फरऊन के हाथ में दिया।
१२ तब यूसफ ने उसे कहा कि इसका यह अर्थ है कि ये तीन डालियां
१३ तीन दिन हैं। और फरऊन अब से तीन दिन में तुझे उभाड़ेगा और तुझे अपना पद फिर देगा और तू आगे की नाईं जब तू फरऊन का पियाऊ था उसके हाथ में फिर कटोरा देगा।
१४ परन्तु जब तेरा भला होये तो मुझे स्मरण कीजियो और मुझ पर दयाल ऊजियो और फरऊन से मेरी चर्चा करियो
१५ और मुझे इस घर से छुड़वाइयो। क्योंकि निश्चय मैं इबरानियों के देश से चुराया गया था और यहां भी मैं ने ऐसा काम नहीं
१६ किया कि वे मुझे इस बंदीगृह में रक्खें। जब रसोइयां के

प्रधान ने देखा कि अर्थ अच्छा ऊआ तो यूसफ से कहा कि मैं भी स्वप्न में था और क्या देखताहों कि मेरे सिर पर तीन
१७ श्वेत टोकरियां हैं। और ऊपर की टोकरी में फरऊन के लिये समस्त रीति का भोजन था और पंछी मेरे सिर पर
१८ उस टोकरी में से खाते थे। यूसफ ने उत्तर दिया और कहा उसका अर्थ यह है कि ये तीन टोकरियां तीन दिन हैं।
१९ फरऊन अब से तीन दिन में तेरा सिर तेरे देह से अलग करेगा और एक पेड़ पर तुझे टांग देगा और पंछी तेरा
२० मांस नोच नोच खायेंगे। और यों ऊआ कि तीसरे दिन फरऊन की जन्मगांठ का दिन था और उसने अपने सारे सेवकों का नेउंता किया और उसने अपने सेवकों में पियाऊ
२१ के प्रधान और रसोइयां के प्रधान को उभाड़ा। और उसने पियाऊ के प्रधान को पियाऊ का पद फेर दिया और उसने
२२ फरऊन के हाथ में कटोरा दिया। परन्तु उसने यूसफ के अर्थ करने के समान रसोइयां के प्रधान को फांसी दिई। तथापि
२३ पियाऊ के प्रधान ने यूसफ को स्मरण न किया परन्तु उसे भूलगया।

४१ एकतालीसवां पर्ब्ब।

१ फिर दो बरस बीते यों ऊआ कि फ़रऊन ने स्वप्न देखा और
२ क्या देखता है कि आप नदी के तीर पर खड़ा है। और क्या देखता है कि नदी से सात सुंदर और मोटी मोटी गायें निकलीं
३ और चराव पर चरने लगीं। और क्या देखता है कि उनके पीछे और सात गायें कुरूप और डांगर नदी से निकलीं और
४ नदी के तीर पर उन सात गायों के पास खड़ी ऊईं। और उन कुरूप और डांगर गायों ने उन सुंदर और मोटी सात गायों
५ को खालिया तब फ़रऊन जागा। और फेर सो गया और दुहरा के स्वप्न देखा कि अन्न से भरी ऊई और अच्छी सात

६ बालें एक डांठी में निकलीं। और क्या देखता है कि और सातबालें छितरी और पूरबी पवन से मुरझाईं ऊईं उनके
७ पीछे निकलीं। और वे छितरी सात बालें उन अच्छी भरी ऊई सात बालों को निंगलगईं और फ़रऊन जागा और क्या
८ देखता है कि स्वप्न है। और बिहान को यूं ऊआ कि उसका जीव व्याकुल ऊआ तब उसने मिसर के सारे टोनहों और बुद्धिमानों को बुला भेजा और अपना स्वप्न उनसे कहा परन्तु
९ उनमें से कोई फ़रऊन के स्वप्न का अर्थ न करसका। तब प्रधान पियाऊ ने फ़रऊन से कहा कि मेरा अपराध आज
१० मुझे चेत आता है। कि फ़रऊन अपने दास पर क्रुद्ध था और मुझे और रसोइयों के प्रधान को बंदीगृह के पहरू के
११ घर में बंद किया था। और एकी रात हम ने अर्थात् मैं ने और उसने एक एक स्वप्न देखा हम्में से हर एक ने उसके स्वप्न के
१२ अर्थ के समान स्वप्न देखा। और एक इबरानी तरुण पहरू के प्रधान का सेवक हमारे साथ था और हम ने उसे कहा और उसने हमारे स्वप्न का अर्थ किया और उसने हर एक के स्वप्न
१३ के समान अर्थ किया। और जैसा उसने हमारे लिये अर्थ किया तैसा ऊआ उसने मुझे अपना पद फेर दिया और उसे
१४ फांसी दिई। तब फ़रऊन ने यूसफ़ को बुलवा भेजा और उन्हों ने उसे बंदीगृह से दौड़ाया और उसने बाल बनवाया और
१५ कपड़े बदल के फ़रऊन के आगे आया। फ़रऊन ने यूसफ़ से कहा कि मैं ने एक स्वप्न देखा जिसका अर्थ कोई नहीं कर सक्ता और मैं ने तेरे विषय में सुना है कि तू स्वप्न को समुझ के अर्थ
१६ कर सक्ता है। यूसफ़ ने उत्तर में फ़रऊन से कहा कि मुझ में
१७ नहीं ईश्वरही फ़रऊन को कुशल का उत्तर देगा। तब फ़रऊन ने यूसफ़ से कहा कि मैं ने स्वप्न देखा कि मैं नदी के
१८ तीर पर खड़ाहों। और क्या देखताहों कि मोटी और सुंदर सात गायें नदी से नोकलीं और चराई पर चरने लगीं।

१९ और क्या देखता हों कि उनके पीछे अत्यंत कुरूप और बुरी और डांगर और सात गायें निकलीं ऐसी बुरी जो मैं ने
२० मिसर के सारे देश में कभी न देखा। और वे डांगर और
२१ कुरूप गायें अगिली मोटी सात गायों को खागईं। और जब वे उनके ओझ में पड़ीं तब समुझ न पड़ा कि वे उन्हें खागईं और वे वैसीही कुरूप थीं जैसी पहिले थीं तब मैं जागा।
२२ और फिर स्वप्न में देखा कि अच्छी घनी सात बालें एक डांठी
२३ पर निकलीं। और क्या देखता हों कि और सात बालें मुरझाईं ऊईं और पतली पूरबी पवन से कुम्हलाईं ऊईं उनके
२४ पीछे उगीं। और उन पतली बालों ने उन अच्छी सात बालों को निंगल लिया और मैं ने यह टोनहों से कहा परन्तु कोई
२५ अर्थ न करसका। तब यूसफ़ ने फ़रऊन से कहा कि फ़रऊन का स्वप्न एकही है जो कुछ ईश्वर को करना है सो उसने
२६ फ़रऊन को दिखाया है। वे सात अच्छी गायें सात बरस हैं और वे अच्छी सात बालें सात बरस हैं स्वप्न एकही है।
२७ और वे डांगर और कुरूप सात गायें जो उनके पीछे निकलीं सात बरस हैं और वे सात छूछी बालें जो पुरबी पवन से
२८ कुम्हलाईं ऊईं हैं सो अकाल के सात बरस हैं। यही बात है जो मैं ने फ़रऊन से कही ईश्वर जो कुछ कियाचाहता है
२९ फ़रऊन को दिखाया। देखिये कि सात बरस लों मिसर के सारे
३० देश में बड़ी बढ़ती होगी। और उनके पीछे सात बरस का अकाल होगा और मिसर देश की सारी बढ़ती भुलाई जायगी
३१ और अकाल देश को नष्ट करेगा। और उस अकाल के मारे वुह बढ़ती देश में जानी न जायगी क्योंकि वुह बड़ा भारी
३२ अकाल होगा। और फ़रऊन पर जो स्वप्न दोहराया गया सो इस लिये है कि वुह ईश्वर से ठहराया गया है और ईश्वर
३३ थोड़े दिन में उसे करेगा। सो अब फ़रऊन एक चतुर बुद्धिमान मनुष्य ढूंढ़ें और उसे मिसर देश पर ठहरावें।

३४ और फ़रऊन यही करे और देश पर करोड़ा ठहरावें और सात बढ़ती के बरसों में मिसर देश का पांचवां भाग
३५ लिया करें। और वे अवैये अच्छे बरसों के सारा भोजन एकट्ठा करें और फ़रऊन के वश में अन्न धर रक्खें और वे
३६ अन्न नगरों में धर रक्खें। और वही भोजन मिसर के देश में अकाल के अवैये सात बरसों के लिये देश के भंडार के लिये
३७ होगा जिसतें अकाल के मारे देश नष्ट न हो। यह बात फ़रऊन की दृष्टि में और उसके सारे सेवकों की दृष्टि में
३८ अच्छी लगी। तब फ़रऊन ने अपने सेवकों से कहा क्या हम
३९ इस जन के समान पासक्ते हैं? जिसमें ईश्वर का आत्मा है। और फ़रऊन ने यूसफ़ से कहा जैसा कि ईश्वर ने ये सारी बातें तुझे दिखाईं हैं सो तेरे तुल्य बुद्धिमान और चतुर
४० कोई नहीं है। तू मेरे घर का करोड़ा हो और मेरी सारी प्रजा तेरी आज्ञा में होगी केवल सिंहासन पर मैं तुझसे
४१ बड़ा होंगा। फिर फ़रऊन ने यूसफ़ से कहा कि देख मैं ने
४२ तुझे मिसर के सारे देश पर करोड़ा किया। और फ़रऊन ने अपनी अंगूठी को अपने हाथ से निकाल के यूसफ़ के हाथ में पहिना दिई और उसे झीना वस्त्र से विभूषित किया और
४३ सोने की सिकरी उसके गले में डाली। और उसने उसे अपने दूसरे रथ में चढ़ाया और उसके आगे प्रचारा गया कि सन्मान करो और उसने उसे मिसर के सारे देश पर
४४ अध्यक्ष किया। और फ़रऊन ने यूसफ़ से कहा कि मैं फ़रऊन हों और तुझ बिना मिसर के सारे देश में कोई मनुष्य अपना
४५ हाथ पांव न उठावेगा। और फ़रऊन ने यूसफ़ का नाम भेद प्रकाशक रक्खा और उसने ऊनके नगर के याजक फूतीफारह की बेटी असनास को उस्से ब्याह दिया और यूसफ़ मिसर
४६ देश में सर्वत्र फिरा। और जब यूसफ़ मिसर के राजा फ़रऊन के आगे खड़ा हुआ तब वुह तीस बरस का था

और यूसफ़ फ़रऊन के आगे से निकल के मिसर के सारे
४७ देश में सर्वत्र फिरा। बढ़ती के सात बरसों में भूमि से मुट्ठी
४८ भर भर उत्पन्न हुआ। तब उसने उन सात बरसों का सारा
भोजन जो मिसर देश में हुआ एकट्ठे किया और भोजन को
नगरों में धर रक्खा और हर नगर के आसपास के खेतों का
४९ अन्न उसी बस्ती में रक्खा। और यूसफ़ ने समुद्र की बालू की नाईं
बहुत अन्न बटोरा यहां लों कि गिन्ना छोड़ दिया क्योंकि अगणित
५० था। और अकाल के बरसों से आगे यूसफ़ के दो बेटे उत्पन्न हुए
जो ऊन के याजक फूतीफ़ारह की बेटी असनास उसके लिये
५१ जनी। सो यूसफ़ ने पहिले का नाम मनस्सा रक्खा इस लिये
कि उसने कहा कि ईश्वर ने मेरी और मेरे पिता के घर का
५२ सब परिश्रम भुलाया। और दूसरे का नाम अफ़राईम
रक्खा इस लिये कि ईश्वर ने मुझे मेरे दुःख के देश में
५३ फलमान किया। और मिसर देश के बढ़ती के
५४ सात बरस बीतगये। और यूसफ़ के कहने के समान अकाल
के सात बरस आने लगे और सारे देशों में अकाल पड़ा परन्तु
५५ मिसर के सारे देश में अन्न था। पर जब कि मिसर के सारे
देश भूख से मरने लगे तो लोग रोटी के लिये फ़रऊन के
आगे चिल्लाये तब फ़रऊन ने सारे मिसरियों से कहा कि यूसफ़
५६ पास जाओ और उसका कहा मानो। और सारी भूमि पर
अकाल था और यूसफ़ ने खत्ते खोल खोल मिसरियों के हाथ
५७ बेचा और मिसर के देश में कठिन अकाल पड़ा था। और
सारे देशगण मिसर में यूसफ़ से मोल लेने आये क्योंकि सारे
देशों में बड़ा अकाल था।

४२ बयालीसवां पर्ब्ब।

१ सो जब याक़ूब ने देखा कि मिसर में अन्न है तब उसने अपने बेटों
२ से कहा कि क्यों एक एक को ताकते हो। देखो मैं सुनता हों

कि मिसर में अन्न है उधर जाओ और वहां से हमारे लिये
३ मोल लेउ जिसतें हम जीवें और न मरें। सो यूसफ़
४ के दस भाई अन्न मोल लेने को मिसर में आये। पर याक़ूब ने
यूसफ़ के भाई बनियामीन को उसके भाइयों के साथ न भेजा
क्योंकि उसने कहा कहीं ऐसा न हो कि उस पर कुछ बिपत
५ आपड़े। और इसराईल के बेटे औरों के साथ मोल लेने
६ आये क्योंकि किनान देश में अकाल था। और यूसफ़ तो
देश का अध्यक्ष था और वुह देश के सारे लोगों के हाथ बेचा
करता था सो यूसफ़ के भाई आये और उन्हों ने उसके आगे
७ भूमिलों प्रणाम किया। और यूसफ़ ने अपने भाइयों को देख के
उन्हें पहिचाना पर उसने आप को उपरी किया और उनसे
कठोरता से बोला और उसने उन्हें पूछा कि तुम लोग कहां से
८ आते हो? वे बोले अन्न लेने को किनान देश से। यूसफ़ ने तो
अपने भाइयों को पहिचाना पर उन्हों ने उसे न पहिचाना।
९ और यूसफ़ ने उनके विषय के स्वप्नों को जो उसने देखे थे स्मरण
किया और उन्हें कहा कि देश की कुदशा देखने को भेदिये
१० होकर आये हो। तब उन्हों ने उसे कहा नहीं मेरे प्रभु परन्तु
११ आप के सेवक अन्न लेने आये हैं। हम सब एकही जनके बेटे
१२ हैं हम सच्चे हैं आप के सेवक भेदिये नहीं हैं। वुह बोला
१३ कि नहीं परन्तु देश की कुदशा देखने आये हो। तब उन्हों ने
कहा कि आप के सेवक बारह भाई किनान देश में एकही
जनके बेटे हैं और देखिये छोटका आज के दिन हमारे पिता
१४ पास है और एक नहीं है। तब यूसफ़ ने उन्हें कहा सोई
१५ जो मैं ने तुम्हें कहा कि तुम लोग भेदिये हो। इसी से तुम
जांचे जाओगे फ़रऊन के जीवनसों जबलों तुम्हारा छोटा भाई
१६ न आवे तुम जाने न पाओगे। अपना भाई लाने को अपने
में से एक को भेजो और तुम लोग बंदीगृह में रहोगे जिसतें
तुम्हारी बातें जांचीजावें कि तुम सच्चे हो कि नहीं नहीं

१७ तो फ़रऊन के जीवन सों तुम लोग निश्चय भेदिये हो। फिर
१८ उसने उन सभों को तीन दिन लों बंधन में रक्खा। और
तीसरे दिन यूसफ़ ने उन्हें कहा यों करके जीते रहो क्योंकि मैं
१९ ईश्वर से डरता हों। जो सच्चे हो तो एक को अपने भाइयों में
से बंदीगृह में बंद रहने देउ और तुम अकाल के लिये अपने
२० घर में अन्न लेजाओ। परन्तु अपने छोटे भाई को मुझ पास
लाओ सो तुम्हारी बातें यों ठहरजायंगी और तुम न मरोगे
२१ सो उन्हों ने ऐसाही किया। तब उन्हों ने आपुस में कहा
कि हम निश्चय उस बात के बिषय में दोषी हैं कि जब हमारे
भाई ने बिनती किई और हमने उसके प्राण के कष्ट को देखा
तो उसकी न सुनी इस लिये यह बिपत्ति हम पर पड़ी है।
२२ तब राओबीन ने उत्तर में उन्हें कहा क्या मैं ने तुम्हें नहीं कहा
कि इस लड़के के बिरुद्ध पाप न करो और तुम ने न सुना
२३ इस लिये देखो उसके लोहू का यही पलटा है। और वे
न जानते थे कि यूसफ़ समुझता है क्योंकि उनके मध्य में एक
२४ दो भाषिया था। तब वुह उनमें से अलग गया और रोया
और फिर उन पास आया और उनसे बात चीत किई और
उनमें से सिमऊन को लेके उनकी आंखों के आगे बांधा।
२५ तब यूसफ़ ने उनके बोरों को अन्न से भरने की और हर
जन का रोकड़ उसके बोरे में फेरने की और मार्ग के लिये
२६ उन्हें भोजन देने की आज्ञा किई। और वे अपने गदहों
२७ पर अन्न लाद के चल निकले। और जब उनमें से एक ने
टिकान में अपने गदहे को खिहना देने को अपना बोरा
खोला तो उसने अपना रोकड़ देखा क्योंकि वुह बोरे के
२८ मुंह पर था। तब उसने अपने भाइयों से कहा कि मेरा रोकड़
फेरा गया है और देखो कि वुह मेरे बोरे में है सो उनके जी
में जी न रहा और वे डरके एक दूसरे को कहनेलगा कि ईश्वर
२९ ने हम से यह क्या किया। और वे किनान देश में अपने

पिता याकूब पास पहुंचे और सब जो उन पर बीता था
३० उसके आगे दोहराया। जो जन उस देश का स्वामी है सो
हम से कठोरता से बोला और हमें देश का भेदिया ठहराया।
३१ और हमने उसे कहा कि हम तो सच्चे मनुष्य हैं हम भेदिये
३२ नहीं हैं। हम बारह भाई एक पिता के बेटे हैं एक नहीं है
और सब से छोटा आज अपने पिता के पास किनान देश में
३३ है। तब उस जन ने अर्थात् उस देश के स्वामी ने हम से कहा
इस्से मैं तुम्हारी सच्चाई को जांचोंगा अपना एक भाई मुझ
पास छोड़ो और अपने घराने के लिये अकाल का भोजन ले
३४ जाउ। और अपने छोटके भाई को मेरे पास लेआओ तब मैं
जानोंगा कि तुम भेदिये नहीं परन्तु सच्चे हो फिर मैं तुम्हारे
भाई को तुम्हें सौंपोंगा और तुम देश में व्यापार कीजियो।
३५ और यों हुआ कि जब उन्हों ने अपना अपना बोरा छूछा
किया तो देखता है कि हर जन का रोकड़ उसके बोरे में है
और जब उन्हों ने और उनके पिता ने रोकड़ की थैलियां देखीं
३६ तो डरगये। और उनके पिता याकूब ने उन्हें कहा कि तुम ने
मुझे निःसंतान किया यूसफ़ तो नहीं है और सिमऊन भी नहीं
और तुम लोग बनियामीन को लेजाने चाहते हो ये सब बातें
३७ मुझे विरुद्ध हैं। तब राओबोन अपने पिता से कहि के बोला
जो मैं उसे आप पास न लाओं तो मेरे दोनों बेटों को
मारडालियो उसे मेरे हाथ में सौंपिये और मैं उसे फिर
३८ आप पास पहुंचाओंगा। उसने कहा मेरा बेटा तुम्हारे संग
न जायगा क्योंकि उसका भाई मरगया है और यह अकेला
रहिगया जो जाते जाते मार्ग में उस पर कुछ विपत्ति पड़े
तो तुम मेरे पक्के बालों को शोक के साथ समाधि में उतारोगे।

१। २ और देश में बड़ा अकाल था। और यों हुआ कि जब वे मिसर से लाये हुए अन्न को खाचुके तो उनके पिता ने उन्हें कहा कि फिर जाओ और हमारे लिये थोड़ा अन्न मोल
३ लेउ। तब यहूदा ने उसे कहा कि उस पुरुष ने हमें चिता चिता कहा कि जबलों तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ नहो मेरा
४ मुंह न देखोगे। सो जो आप हमारे भाई को हमारे साथ भेजियेगा तो हम जायेंगे और आप के लिये अन्न मोल लेंगे।
५ परन्तु जो आप न भेजेंगे तो हम न जासकेंगे क्योंकि उस पुरुष ने हम से कहा कि जबलों तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न
६ हो तुम मेरा मूंह न देखोगे। तब इसराईल ने कहा कि तुम ने मुझे क्यों ऐसा बुरा व्यवहार किया कि उस पुरुष से कहा कि
७ हमारा और एक भाई है। वे बोले कि उस पुरुष ने हमें संकेतो से हमारा और हमारे कुटुम्ब का समाचार पूछा कि क्या तुम्हारा पिता अब लों जीता है? क्या तुम्हारा और कोई भाई है? सो हम ने बातों के व्यावहार के समान उसे कहा क्या हम निश्चय जानते थे कि वुह हमें कहेगा कि अपने भाई को
८ लेआओ?। तब यहूदा ने अपने पिता इसराईल से कहा कि इस तरुण को मेरे साथ करदीजिये और हम उठचलेंगे जिसतें हम और आप और हमारे बालक जीवें और न
९ मरें। और मैं उसका बिचवई होंगा आप मेरे हाथ से उसे लीजियो जो मैं उसे आप पास न लाऊं और आप के आगे न धरों तो आप यह दोष मुझ पर सदा धरिये।
१० क्योंकि जो हम बिलंब न करते तो निश्चय अब लों दोहरा के
११ फिर आये होते। तब उनके पिता इसराईल ने उन्हें कहा कि जो अब योंहीं है तो यों करो कि इस देश के अच्छे से अच्छे फल अपने पात्रों में रखलेउ और उस पुरुष के लिये भेंट लेजाओ थोड़ा निर्यास थोड़ा मधु कुछ सुगंधद्रव्य और बोल
१२ और बतम और बदाम। और दूना रोकड़ हाथ में लेउ

और वुह रोकड़ जो तुम्हारे बोरों में फेर लायागया है अपने
१२ हाथ में फेर ले जाउ क्या जाने वुह भूल से ऊआ हो। अपने
१४ भाई को भी लेउ उठो और उस पुरुष पास जाउ। और सामर्थी
ईश्वर उस पुरुष को तुम पर दयाल करे जिसतें वुह तुम्हारे
दूसरे भाई और बनियामीन को छोड़देवे और जो मैं निर्वंश
१५ ऊआ तो ऊआ। तब उन्हों ने वुह भेंट लिया और दूने
रोकड़ को अपने हाथ में बनियामीन समेत लिया और उठे
और मिसर को उतर चले और यूसफ़ के आगे आ खड़े ऊए।
१६ जब यूसफ़ ने बनियामीन को उनके संग देखा तो उसने अपने
घर के प्रधान को कहा कि इन पुरुषों को घर में लेजा और कुछ
मारके सिद्ध कर क्योंकि ये मनुष्य दो पहर को मेरे संग खायंगे।
१७ सो जैसा कि यूसफ़ ने कहाथा उस पुरुष ने वैसाही किया और
१८ उसने उन्हें यूसफ़ के घर में लाया। तब वे यूसफ़ के घर में पऊंचाये
जाने से डरगये और उन्हों ने कहा कि उस रोकड़ के कारण जो
पहिले बार हमारे बोरों में फिर गया हम यहां पऊंचायेगये हैं
जिसतें वुह हमारे बिरुद्ध एक कारण ढूंढ़े और हम पर लपके
और हमें पकड़ के दास बनावे और हमारे गदहों को छीन
१९ लेवे। तब उन्हों ने यूसफ के घर के प्रधान पास
२० आके घर के द्वार पर उसे बातचीत किई। और कहा कि
२१ महाशय हम निश्चय पहिले बेर अन्न मोल लेने आये थे। तो
यों ऊआ कि जब हम ने टिकाश्रय पर उतर के अपने बोरों
को खोला तो क्या देखते हैं कि हरजन का रोकड़ उसके बोरों
के मुंह पर है हमारा रोकड़ सब पूरा था सो हम उसे अपने
२२ हाथ में फेर लाये हैं। और अन्न लेने को और हम रोकड़
अपने हाथों में लाये हैं और हम नहीं जानते कि हमारा
२३ रोकड़ किसने हमारे बोरों में रखदिया। उसने कहा कि
तुम्हारा कुशल होवे मत डरो तुम्हारे ईश्वर और तुम्हारे
पिता के ईश्वर ने तुम्हारे बोरों में तुम्हें धन दिया है तुम्हारा

रोकड़ मुझे मिल चुका फिर वुह समियून को उन पास निकाल
२४ लाया। और उस जन ने उन्हें यूसफ़ के घर में लाके पानी
दिया और उन्हों ने अपने चरण धोये और उसने उनके गदहों
२५ को खेहना दिया। फिर उन्हों ने दोपहर को यूसफ़ के आने
पर भेंट सिद्ध किया क्योंकि उन्हों ने सुना था कि हमें भोजन
२६ यहीं खाना है। और जब यूसफ़ घर आया तो वे
अपने हाथ की उस भेंट को भीतर लाये और उसके आगे
२७ भूमिलों दंडवत किई। और उसने उनसे कुशल क्षेम पूछा और
कहा कि तुम्हारा पिता कुशलसे है वुह वृद्ध जिसकी चर्चा
२८ तुम ने किईथी अबलों जीता है?। उन्हों ने उत्तर दिया कि
आप का सेवक हमारा पिता कुशल से है वुह अबलों जीता है
२९ फिर उन्हों ने सिर झुका के दंडवत किई। फिर उसने अपनी
आंखें उठाईं और अपनी माता के बेटे अपने भाई बनियामीन
को देखा और कहा कि तुम्हारा छोटका भाई, जिस की चर्चा
तुम ने मुझे किईथी यही है? फिर कहा कि हे मेरे बेटे ईश्वर
३० तुझ पर दयाल रहे। तब यूसफ़ ने उतावली किई क्योंकि
उसका जी अपने भाई के लिये भर आया और रोने चाहा
३१ और वुह कोठरी में गया और वहां रोया। फिर उसने
अपना मुंह धोया और बाहर निकला और आप को रोका
३२ और आज्ञा किई कि भोजन परोसो। तब उन्हों ने उसके
लिये अलग और उनके लिये अलग और मिसरियों के लिये,
जो उसके संग खाते थे अलग परोसा इस लिये कि मिसरी
इबरानियों के संग भोजन नहीं खासक्ते क्योंकि वुह मिसरियों
३३ के लिये घिन है। और पहिलौंठा अपनी पहिलौंठाई के और
छोटका अपनी छोटाई के समान वे उसके आगे बैठगये तब वे
३४ आश्चर्य से एक दूसरे को देखनेलगे। और उसने अपने आगे से
भोजन उन पास भेजा परन्तु बनियामीन का भोजन हर एक के
भोजन से पंचगुन था और उन्हों ने उसके साथ जी भर के पीया।

O

४४ चौतालीसवां पर्ब्ब ।

१ और उसने अपने घर के प्रधान को यह कहके आज्ञा किई कि उन मनुष्यों के बोरों को, जितना वे ले जासकें अन्न से भरदे
२ और हर एक जन का रोकड़ उसके बोरे में डालदे। और मेरा रुपे का कटोरा छोटके के बोरे के मुंह पर उसके अन्न के दाम समेत रखदे सो उसने यूसफ़ की आज्ञा के समान किया।
३ और जोहीं दिन निकला वे अपने गदहे समेत बिदा
४ कियेगये। जब वे नगर से थोड़ी दूर बाहर गये यूसफ़ ने अपने घर के प्रधान को कहा कि उठ और उन लोगों का पीछा कर और जब तू उन्हें जालेवे तो उन्हें कह कि किस लिये तुम लोगों ने भलाई
५ की संती बुराई किई है?। क्या यह वुह नहीं जिसमें मेरा प्रभु पीता है? उसकी नाईं कोई आगम का सच्चा संदेश देता
६ है? तुम ने इस में बुरा किया है। और उसने उन्हें जा लिया
७ और ये बातें उन्हें कहीं। तब उन्हों ने उसे कहा कि हमारा प्रभु ऐसी बातें क्यों कहते हैं ईश्वर न करे कि आप के सेवक ऐसा
८ काम करें। देखिये यह रोकड़, जो हमने अपने थैलों में ऊपर पाया सो हम किनान देश से आप पास फेर लाये थे सो क्योंकर होगा कि हम ने आप के प्रभु के घर से रुपा अथवा
९ सोना चुरायाहो। आप के सेवकों में से वुह जिसके पास निकले वुह मारडालाजाय और हम भी अपने प्रभु के दास होंगे।
१० उसने कहा कि तुम्हारी बातों के समान होगा जिसके पास वुह
११ निकले सो मेरा दास होगा और तुम निर्दोष ठहरोगे। तब हर एक पुरुष ने तुरंत अपना अपना बोरा भूमि पर उतारा
१२ और हर एक ने अपना बोरा खोला। और वुह बड़के से आरंभ करके छोटके लों ढुंढ़ने लगा और कटोरा बनियामीन के थैले
१३ में पाया गया। तब उन्हों ने अपने कपड़े फाड़े और हर एक
१४ पुरुष ने अपना गदहा लादा और नगर को फिरा। और यहूदा और उसके भाई यूसफ़ के घर आये क्योंकि वुह अबलों

१५ वहीं था और वे उसके आगे भूमि पर गिरे। तब यूसफ़ ने उन्हें कहा कि तुम ने यह कैसा काम किया? क्या तुम न जानते थे
१६ कि मेरे ऐसा जन निश्चय गणना करसक्ता है?। तब यहूदा बोला कि हम अपने प्रभु से क्या कहें? और क्या बोलें? अथवा क्योंकर अपने को निर्दोष ठहरावें? कि ईश्वर ने आप के सेवकों की बुराई प्रगट किई देखिये कि हम और वुह भी जिस पास
१७ कटोरा निकला अपने प्रभु के दास हैं। तब वुह बोला कि ईश्वर न करे कि मैं ऐसा करों जिस जन के पास कटोरा निकला वही मेरा दास होगा और तुम अपने पिता पास
१८ कुशल से जाउ। तब यहूदा उस पास आके बोला कि हे मेरे प्रभु आप का सेवक अपने प्रभु के कान में एक बात कहने की आज्ञा पावे और अपने सेवक पर आप का कोप
१९ भड़कने न पावे क्योंकि आप फरऊन के समान हैं। मेरे प्रभु ने अपने सेवकों से यों कहिके प्रश्न किया कि तुम्हारा पिता
२० अथवा भाई है?। और हम ने अपने प्रभु से कहा कि हमारा एक वृद्ध पिता है और उसका बुढ़ापे का एक छोटा पुत्र है और उसका भाई मरगया और वुह अपनी माता का एकहा
२१ रहगया और वुह अपने पिता का अति प्रिय है। तब आप ने अपने सेवकों से कहा कि उसे मेरे पास लाओ जिसमें मेरी
२२ दृष्टि उस पर पड़े। तब हम ने अपने प्रभु से कहा कि वुह तरुण अपने पिता को छोड़ नहीं सक्ता क्योंकि जो वुह अपने पिता
२३ को छोड़ेगा तो उसका पिता मर जायगा। फिर आप ने अपने सेवकों से कहा कि जबलों तुम्हारा छोटका भाई तुम्हारे साथ
२४ न आवे तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे। और यों ऊआ कि जब हम आप के सेवक अपने पिता पास गये तो हम ने अपने
२५ प्रभु की बातें उसे कहीं। तब हमारा पिता बोला फिर जाओ
२६ और हमारे लिये थोड़ा अन्न मोल लेउ। तब हम बोले कि हम नहीं जासक्ते जो हमारा छोटका भाई हमारे साथ होवे

लग के रोया और बनियामीन भी उसके गले लग के रोया।
१५ और उसने अपने सब भाइयों को चूमा और उनसे मिल के
१६ रोया उसके पीछे उसके भाइयों ने उसे बातें किईं। और
इस बात की कीर्त्ति फ़रऊन के घर में सुनीगई कि यूसफ़ के
भाई आये हैं और उसे फ़रऊन और उसके सेवक बज्जत
१७ आनन्दित ज्जए। और फ़रऊन ने यूसफ़ से कहा कि अपने
भाइयों से कह कि यह करो अपने पशुन को लादो और किनान
१८ देश में जा पज्जंचो। और अपने पिता और अपने घरानों को
लेउ और मुझ पास आओ और मैं तुम्हें मिसर देश की
अच्छी वस्तें देउंगा और तुम इस देश का पदारथ खाओगे।
१९ सो अब तुझे यह आज्ञा है यह करो कि मिसर देश से अपने
लड़के बालों और अपनी पत्नियों के लिये गाड़ियां लेजाउ और
२० अपने पिता को ले आओ। और अपनी सामग्री की कुछ चिंता
२१ न करो क्योंकि मिसर देश के सारे पादरथ तुम्हारे हैं। और
इसराईल के संतानों ने वैसाही किया और यूसफ़ ने फ़रऊन
क कहे के समान उन्हें गाड़ियां दिईं और मार्ग के लिये
२२ भोजन दिया। और उसने उन सब में से हर एक को वस्त्र
दिये परन्तु उसने बनियामीन को तीन सौ टुकड़े चांदी और
२३ पांच जोड़े वस्त्र दिये। और अपने पिता के लिये इस रीति से
भेजा दस गदहे मिसर की अच्छी वस्तुन से लदेज्जए और
दस गदहियां अनाज और रोटी और भोजन से लदीज्जईं
२४ अपने पिता की यात्रा के लिये। सो उसने अपने भाइयों
को बिदा किया और वे चल निकले तब उसने उन्हें कहा कि
२५ देखो मार्ग में कहीं आपुस में बिगड़ो मत। और
वे मिसर से सिधारे और अपने पिता याक़ूब पास
२६ किनान देश में पज्जंचे। और यह कहि के उसे बोले कि
यूसफ़ तो अब लों जीता है और वुह सारे मिसर देश का
अध्यक्ष है और याक़ूब का मन सनसनागया क्योंकि उसने

२७ उनकी प्रतीति न किई। और उन्हों ने यूसफ़ की कहीऊई सारी बातें उस्से दुहराईं और जब उसने गाड़ियां जो यूसफ़ ने उसे लेजाने के लिये भेजी थीं देखीं तो उनके पिता याक़ूब
२८ का नया जीवन ऊआ। और इसराईल बोला यह बस है कि मेरा बेटा यूसफ़ अब लों जीता है मैं जाऊंगा और अपने मरने से आगे उसे देखोंगा।

४६ छयालीसवां पर्ब्ब ।

१ और इसराईल ने अपना सब कुछ लेके यात्रा किई और बीरशबा में आके अपने पिता इसहाक़ के ईश्वर के लिये बलिदान
२ चढ़ाया। और ईश्वर ने रात को स्वप्न में इसराईल से बातें
३ करके कहा कि हे याक़ूब याक़ूब वुह बोला मैं यहां हों। उसने कहा कि मैं ईश्वर तेरे पिता का ईश्वर हों मिसर में जातेऊए
४ मत डर क्योंकि मैं तुझे वहां बड़ी जाति बनाओंगा। मैं तेरे साथ मिसर को जाऊंगा मैं तुझे अवश्य फिर ले आओंगा
५ और यूसफ़ तेरी आंखें मूंदेगा। तब याक़ूब बीरशबा से उठा और इसराईल के बेटे अपने पिता याक़ूब को और अपने लड़कों और अपनी स्त्रियों को गाड़ियों पर, जो फ़रऊन ने
६ उसके पऊंचाने को भेजी थी ले चले। और उन्हों ने अपना ढोर और अपनी सामग्री जो उन्हों ने किनान देश में पाईथी लेलीई और याक़ूब अपने सारे बंश समेत मिसर में आया।
७ वुह अपने बेटों और बेटों के बेटों और बेटियों और अपने बेटों की बेटियों और अपने सारे बंश को मिसर में लाया।
८ 　　और इसराईल के बेटों के नाम जो मिसर में आये अर्थात् याक़ूब के बेटे ये हैं याक़ूब का पहिलौंठा राओबीन।
९ राओबीन के बेटे हनूख और फल्लू और हजरून और करमी।
१० समियून के बेटे यमूईल और यामीन और ओहाद और याखीन और ज़ोहर और किनानी स्त्री का बेटा शाउल।

११ और लूई के बेटे गरशून और कोहास और मरारी।
१२ और यहूदा के बेटे ईर और ओनान और शीला और फारस और ज़राह परन्तु ईर और ओनान किनान देश में मरगये
१३ और फारस के बेटे हसरून और हामूल हुए। और यसाखार
१४ के बेटे तूलाअ और फूआ और यूब और शमरून। और
१५ ज़बूलून के बेटे सारद और ईलून और जहलील। ये लीया के बेटे हैं जिन्हें वुह फदानअराम में याकूब के लिये जनी उसके सारे बेटे बेटियां तैंतीस प्राणी उसकी बेटी दैना के संग
१६ हैं। और जाद के बेटे सफीऊन और हज्जई और शूनी और
१७ अज़बून और ईरी और अरूदी और अरीली। और अशीर के बेटे जिमना और इशुआ और ईवी और बिरीया और उनकी बहिन सीरह और बिरीया के बेटे हिबर और मलकील।
१८ ये उस ज़िल्फा के पेट से हैं जिसे लाबान ने अपनी बेटी लीया को दिया था और इन्हें वुह याकूब के लिये जनी अर्थात् सोलह
१९ प्राणी। और याकूब की पत्नी राहील से यूसफ़ और बनियामीन।
२० और मिसर देश में यूसफ़ से मनस्सा और अफराईम उत्पन्न हुए जिन्हें ऊनके अध्यक्ष फूतीफारअ की बेटी असनास जनी।
२१ और बनियामीन के बेटे बाला और बाखर और अशबील और जीरा और नामान और ईही और रूश और मफिम
२२ और हफ्फिम और अरद। इन्हें राहील याकूब के लिये जनी
२३।२४ सब चौदह प्राणी। और दान का बेटा हशीम। और नफताली के बेटे जजील और गूनी और जीज़र और शिल्लम।
२५ ये बिलहा के बेटे हैं जिसे लाबान ने अपनी बेटी राहील को दिया सो ये सब सात प्राणी हैं जिन्हें वुह याकूब के लिये
२६ जनी। सो सारे प्राणी जो याकूब के साथ मिसर में आये और उसकी कटि से उत्पन्न हुए उनसे अधिक जो याकूब के बेटों
२७ की स्त्रियां थीं छियासठ प्राणी थे। और यूसफ़ के बेटे, जो मिसर में उत्पन्न हुए दो थे सो सारे प्राणी जो याकूब के घराने के थे

२८ और मिसर में आये सत्तर थे। और उसने यहूदा को अपने आगे आगे गोशन लों अपनी अगुआई करने को यूसफ़ कने
२९ भेजा और वे गोशन की भूमि में आये। और यूसफ़ ने अपना रथ सिद्ध किया और अपने पिता इसराईल से भेंट करने के लिये गोशन को गया और उस पास पहुंचा और उसके
३० गले पर गिर के अबेर लों रोया किया। और इसराईल ने यूसफ़ से कहा कि अब मैं मरने को सिद्ध हों कि मैं ने तेरा
३१ मुंह देखा क्योंकि तू अब भी जीता है। और यूसफ़ ने अपने भाइयों और अपने पिता के घराने से कहा कि मैं संदेश देने को फ़रऊन पास जाता हों और उसे कहता हों कि मेरे भाई और मेरे पिता का घराना, जो किनान देश में थे, मेरे पास
३२ आये हैं। और वे गड़रिये हैं क्योंकि ढोर चराना उनका उद्यम है और वे अपनी झुंड और ढोर और सब कुछ जो उनका
३३ है ले आये हैं। और यों होगा कि जब फ़रऊन तुम्हें बुला के
३४ तुम्हारा उद्यम पूछे। तो कहियो कि आप के दास लड़काई से अब लों चरवाही करते रहे हैं क्या हम और क्या हमारे बाप दादे जिसतें तुम लोग गोशन की भूमि में रहो क्योंकि मिसरियों को हर एक गड़ेरिये से घिन है।

४७ सैंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ तब यूसफ़ आया और फ़रऊन से कहके बोला कि मेरा पिता और मेरे भाई और उनकी झुंड और ढोर और सब जो उनके हैं किनान देश से निकल आये और देखिये कि गोशन
२ की भूमि में हैं। और उसने अपने भाइयों में से पांच जन
३ लेके उन्हें फ़रऊन के आगे किया। और फ़रऊन ने उसके भाइयों से कहा कि तुम्हारा उद्यम क्या? उन्हों ने फ़रऊन को कहा कि आप के सेवक, क्या हम और क्या हमारे बाप दादे
४ गड़रिये हैं। फिर उन्हों ने फ़रऊन से कहा कि हम इस देश में

रहने को आये हैं क्योंकि किनान देश के अकाल के मारे आप
के सेवकों की झुंड के लिये चराई नहीं है अब इस लिये
५ अपने सेवकों को गोशन की भूमि में रहने दीजिये। तब फ़रऊन
ने यूसफ़ से कहा कि तेरा पिता और तेरे भाई तुझ पास
६ आये हैं। मिसर देश तेरे आगे है अपने पिता और अपने
भाइयों को सब से अच्छी भूमि में बसाउ गोशन की भूमि में
रहें और जो तू उनमें चालाक मनुष्य जानता हो तो उन्हें मेरे
७ ढोर पर प्रधान कर। तब यूसफ़ अपने पिता याक़ूब को
भीतर लाया और उसे फ़रऊन के आगे खड़ा किया और
८ याक़ूब ने फ़रऊन को आशीष दिया। और फ़रऊन ने याक़ूब
से पूछा कि तेरे जीवन के वय के बरसों के दिन कितने हैं?।
९ याक़ूब ने फ़रऊन से कहा कि मेरी यात्रा के दिनों के बरस
एक सौ तीस हैं और मेरे जीवन के बरसों के दिन थोड़े और
बुरे ऊए हैं और मेरे पितरों के जीवन के बरसों के दिनों को,
१० जब वे यात्रा करते थे नहीं पऊंचे। और याक़ूब ने फ़रऊन
को आशीष दिया और फ़रऊन के आगे से बाहर गया।
११ और यूसफ़ ने अपने पिता और भाइयों को मिसर देश में
सब से अच्छी भूमि में रमसस की भूमि में जैसा फ़रऊन ने
१२ कहा था रक्खा और अधिकारी किया। और यूसफ़ ने
अपने पिता और अपने भाइयों और अपने पिता के सारे
घराने का, उनके लड़केबालों के समान प्रतिपाल किया।
१३ और सारे देश में रोटी न थी क्योंकि ऐसा कठिन
अकाल था कि मिसर देश और किनान देश अकाल के मारे
१४ झौंसगया था। और यूसफ़ ने सारे रोकड़ को जो मिसर देश
और किनान देश में था उस अन्न की संती, जो लोगों ने मोल
लिया बटोरा और यूसफ़ उस रोकड़ को फ़रऊन के घर में
१५ लाया। और जब मिसर देश और किनान देश में रोकड़
होचुका तो सारे मिसरियों ने आके यूसफ़ से कहा कि हमें

रोटी दीजिये कि आप के होते हुए हम क्यों मरें क्योंकि रोकड़
१६ होचुका है। तब यूसफ़ ने कहा कि जो रोकड़ न होय तो
१७ अपने ढोर देउ मैं तुम्हारे ढोर की संती देऊंगा। वे अपने
ढोर यूसफ़ के पास लाये और यूसफ़ ने उन्हें घोड़ों और
भुंड़ों और ढोरों के चौपाये और गदहों की संती रोटियां
दिईं और उसने उनके ढोर की संती उन्हें उस बरस पाला।
१८ जब वुह बरस बीत गया वे दूसरे बरस उस पास आये और
उसे कहा कि हम अपने प्रभु से नहीं छिपावेंगे कि हमारा
रोकड़ उठगया हमारे प्रभु ने हमारे ढोरों की भुंड भी लिईं
सो हमारे प्रभु की दृष्टि में हमारे देह और भूमि से अधिक
१९ कुछ न बचा। सो हम अपनी भूमि समेत आप की आंखों के
आगे क्यों नष्ट होवें? हमें और हमारी भूमि को रोटी पर
मोल लीजिये और हम अपनी भूमि समेत फ़रऊन के दास
होंगे और अन्न दीजिये जिसतें हम जीवें और न मरें जिसतें
२० देश उजड़ न जाय। और यूसफ़ ने मिसर की सारी भूमि
फ़रऊन के लिये मोल लिई क्योंकि मिसरियों में से हर एक ने
अपना अपना खेत बेचा इस कारण कि अकाल ने उन्हें निपट
२१ सकेत किया था सो वुह भूमि फ़रऊन की हुई। रहे लोग
सो उसने उन्हें नगरों में मिसर के एक सिवाने से दूसरे
२२ सिवाने लों भेजा। उसने केवल याजकों की भूमि मोल न
लिई क्योंकि याजक ने फ़रऊन से एक भाग पाया था और
फ़रऊन के दिये हुए भाग से खाते थे इस लिये उन्हों ने
२३ अपनी भूमि को न बेचा। तब यूसफ़ ने लोगों से कहा कि
देखो मैं ने आज के दिन तुम्हें और तुम्हारी भूमि को फ़रऊन
के लिये मोल लिया है सो यह बीज तुम्हारे लिये है खेत में
२४ बोओ। और उसकी बढ़ती में ऐसा होगा कि तुम पांचवां
भाग फ़रऊन को देना और चार भाग खेत के बीज के लिये
और तुम्हारे और तुम्हारे घराने के और तुम्हारे बालकों के

२५ भोजन के लिये होंगे। वे बोले कि आप ने हमारे प्राण बचाये हैं हम अपने प्रभु की दृष्टि में अनुग्रह पावें और हम
२६ फ़रऊन के दास होंगे। और यूसफ़ ने मिसर देश के लिये आज लों यह व्यवस्था बांधी कि फ़रऊन पांचवां भाग पावे
२७ परन्तु केवल याजकों की भूमि फ़रऊन की न ऊई। और इसराईल ने मिसर की भूमि में गोशन के देश में निवास किया और वे वहां अधिकार रखते थे और वे बढे और बऊत अधिक
२८ ऊए। और याक़ूब मिसर देश में सत्रह बरस जीया सो याक़ूब के जीवन के बरसों के दिन एक सो सैंतालीस के
२९ ऊए और इसराईल के मरने का समय आ पऊंचा तब उसने अपने बेटे यूसफ़ को बुलाके कहा कि अब जो मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है अपना हाथ मेरी जांघ तले रख और दया और सच्चाई से मेरे संग व्यवहार कर मुझे मिसर में मत
३० गाड़ियो। परन्तु मैं अपने पितरों में पड़रहोंगा और तू मुझे मिसर से बाहर लेजाइयो और उनके समाधि स्थान में गाड़ियो तब वुह बोला कि आप के कहने के समान मैं करोंगा।
३१ और उसने कहा कि मेरे आगे किरिया खा और उसने उसके आगे किरिया खाई और इसराईल खाट के सिरहाने पर झुक गया।

४८ अठतालीसवां पर्ब्ब।

१ और इन बातों के पीछे यों ऊआ कि किसीने यूसफ़ से कहा कि देखिये आप का पिता रोगी है तब उसने अपने दो बेटे
२ मनस्सा और इफ़राईम को अपने साथ लिया। और याक़ूब को संदेश दियागया कि देख तेरा बेटा यूसफ़ तुझ पास आता
३ है और इसराईल खाट पर संभल बैठा। और याक़ूब ने यूसफ़ से कहा कि सर्ब्ब सामर्थी ईश्वर ने किनान देश के लूज़
४ में मुझे दर्शन दिया और मुझे आशीष दिया। और मुझे

कहा कि देख मैं तुझे फलमान करोंगा और बढ़ाओंगा और तुझे बक्तसी मंडली उत्पन्न करोंगा और तेरे पीछे इस देश को
५ तेरे वंश के लिये सर्वदा का अधिकार करोंगा। और अब तेरे दो बेटे इफ़राईम और मनस्सा, जो मिसर में मेरे आने से आगे तुझे मिसर देश में उत्पन्न ऊए हैं मेरे हैं राओबीन
६ और सिमिऊन की नाईं वे मेरे होंगे। और तेरा वंश जो उनके पीछे उत्पन्न होगा तेरा होगा और अपने अधिकार में
७ वे अपने भाइयों के नाम पावेंगे। और मैं जो हों सो जब पदान से आया और अफ़रास थोड़ी दूर रहगया था तब किनान देश के मार्ग में राहील मेरे पास मरगई और मैं ने अफ़रास के मार्ग में उसे वहीं गाड़ा वही बैतुल्लहम है।
८ तब इसराईल ने यूसफ़ के बेटों को देख के कहा
९ ये कौन हैं?। यूसफ़ ने अपने पिता से कहा कि ये मेरे बेटे हैं जिन्हें ईश्वर ने मुझे यहां दिया है वुह बोला उन्हें मुझ
१० पास ला मैं उन्हें आशीष देऊंगा। (अब इसराईल की आंखें बुढ़ापे के मारे देख न सक्ती थीं) और वुह उन्हें उसके पास लाया और उसने उन्हें चूमा और उन्हें गले लगाया।
११ और इसराईल ने यूसफ़ से कहा कि मुझे तो तेरा मुंह देखने की आशा न थी और देख ईश्वर ने तेरा वंश भी मुझे
१२ दिखाया। यूसफ़ ने उन्हें अपने घुठनों में से निकाला और
१३ अपने को भूमि पर झुकाया। और यूसफ़ ने उन दोनों को लिया अफ़राईम को अपने दहिने हाथ में इसराईल के बाएं हाथ की ओर और मनस्सा को अपने बाएं हाथ में इसराईल
१४ के दहिने हाथ की ओर और उसके पास लाया। तब इसराईल ने अपना दहिना हाथ लंबा किया और अफ़राईम के सिर पर, जो छोटका था रक्खा और अपना बायां हाथ मनस्सा के सिर पर जान बूझ के अपने हाथ को यों रक्खा क्योंकि
१५ मनस्सा पहिलौंठा था। और उसने यूसफ़ को बर दिया

और कहा कि वुह ईश्वर जिसके आगे मेरे पिता इबराहीम
और इसहाक़ चलते थे और वुह ईश्वर जिसने जीवनभर
१६ आज लों मेरी रखवाली किई। और वुह दूत जिसने मुझे
सारी बुराइयों से बचाया इन लड़कों को आशीष देवे और
मेरा नाम और मेरे पितर इबराहीम और इसहाक़ का नाम
उन पर होवे और उन्हें पृथिवी पर मछलियों की नाईं
१७ बढ़ावे। और जब यूसफ़ ने अपने पिता को अपना दहिना
हाथ अफ़राईम के सिर पर रखते देखा तो उसे बुरा लगा
और उसने अपने पिता का हाथ उठा लिया जिसतें
उसे अफ़राईम के सिर पर से मनस्सा के सिर पर रखे।
१८ और यूसफ़ ने अपने पिता से कहा कि हे मेरे पिता ऐसा
नहीं क्योंकि यह पहिलौंठा है अपना दहिना हाथ उसके
१९ सिर पर रखिये। उसके पिता ने न माना और कहा कि मैं
जानता हों हे बेटे मैं जानता हों वुह भी एक मंडली बन जायगा
और वुह भी बड़ा होगा परन्तु निश्चय उसका छोटका भाई
उस्से भी बड़ा होगा और उसके वंश भरपूर जातिगण बन
२० जायेंगे। और उसने उन्हें उस दिन यह कहि के आशीष
दिया कि इसराईल तेरा नाम लेके यह आशीष देंगे कि ईश्वर
तुझे अफ़राईम और मनस्सा की नाईं बनावे सो उसने
२१ अफ़राईम को मनस्सा से आगे किया। और इसराईल ने
यूसफ़ को कहा कि देख मैं मरता हों परन्तु ईश्वर तुम्हारे
साथ होगा और तुम्हें तुम्हारे पितरों के देश में फेर ले
२२ जायगा। इस्से अधिक मैं ने तुझे तेरे भाइयों से एक भाग, जो
मैं ने अमूरियों के हाथ से अपने तलवार और धनुष से
निकाला अधिक दिया है।

१ और याकूब ने अपने बेटों को बुलाया और कहा कि एकट्ठे होओ जिसतें जो तुम पर पिछले दिनों में बीतेगा मैं तुम्हों से कहों ।
२ हे याकूब के बेटो बटुर जाओ और सुनो और अपने पिता
३ इसराईल को ओर कान धरो । हे राओबीन तू मेरा पहिलोंठा और मेरा बूता और मेरे सामर्थ्य का आरंभ
४ और महिमा की उत्तमता और पराक्रम की उत्तमता । जल की नाईं अस्थिर तू श्रेष्ठ न होगा इस कारण कि तू अपने पिता की खाट पर चढ़ा और मेरे बिछौने पर चढ़के उसे अशुद्ध
५ किया । सिमिऊन और लीवी भाई हैं और अंधेर
६ के हथियार उनके निवासों में हैं । हे मेरे प्राण तू उनके भेद में मत जा मेरी प्रतिष्ठा तू उनकी सभा में मत मिल क्योंकि उन्हों ने अपने क्रोध से एक मनुष्य को घात किया
७ है और अपनीही इच्छा से नगर की भीत ढा दिई । उनकी प्रचंडरिस के लिये और उनके क्रूरकोप के लिये धिक्कार मैं उन्हें याकूब में अलग करोंगा और इसराईल में छिन्नभिन्न
८ करोंगा । यहूदा तेरे भाई तेरी स्तुति करेंगे तेरा हाथ तेरे बैरियों के गले पर होगा तेरे पिता के
९ बंश तेरे आगे दंडवत करेंगे । यहूदा सिंह का बच्चा मेरे बेटे तू अहेर पर से उठचला वुह सिंह की, हां बड़े सिंह
१० की नाईं झुका और बैठा उसे कौन छेड़ेगा? । यहूदा से राजदंड अलग न होगा और न व्यवस्थादायक उसके बंश से जायगा जबलों शीलुह न आवे और लोग उसके पास
११ एकट्ठे होवें । उसने अपना गदहा दाख से और अपनी गदही का बच्चा चुनेऊए दाख से बांधके अपने कपड़े दाखरस में
१२ और अपना पहिरावा दाख के लोहू में धोया । उसकी आंखें दाखरस से लाल और उसके दांत दूध से श्वेत होंगे ।
१३ ज़बलून समुद्र के घाट पर निवास करेगा और जहाज़ों के लिये घाट होगा और उसका सिवाना ज़ैदूनतक ।

१४ इसाखार बली गदहा है जो दो बोझ तले झुका है ।
१५ और उसने देखा कि बिश्राम अच्छा है और भूमि सुदृश्य है उसने अपना कांधा बोझ उठाने को झुकाया और कर देने
१६ का दास ज्ञआ । दान इसराईल की गोष्ठियों में के
१७ एक की नाईं अपने लोगों का न्याय करेगा । दान मार्ग का सर्प और पथ का नाग होगा जो घोड़े की नलियों को ऐसा
१८ डंसेगा कि उसका चढ़वैया पछाड़ा जायगा । हे परमेश्वर
१९ मैं तेरी मुक्ति की बाट जोहता हों । एक सेना जाद को
२० जीतेगी परन्तु वुह अंत को आप जीतेगा । अशर की रोटी चिकनी होगी और वुह राजीय पदारथ प्राप्त करेगा ।
२१ नफ़ताली एक छोड़ा ज्ञआ हरिन है वुह सुबचन कहता है ।
२२ यूसफ़ एक फलमय डाल है वुह फलदायक डाल जो सोते
२३ के लग है जिसकी डालियां भीत पर फैलती हैं । धनुष्धारियों ने उसे निपट सताया और मारा और उस्से डाह रक्खा ।
२४ पर उसका धनुष दृढ़ रहा और याकूब के शक्तिमान अर्थात् उस गड़रिये के नाम से जो इसराईल का पत्थर है उसके
२५ हाथों की भुजाओं ने बल पाया । तेरे पिता का ईश्वर तेरी सहाय करेगा और सर्वसामर्थी जो तुझे उपर से स्वर्गीय आशीष और नीचे गहिराव के आशीष और स्तनों का और
२६ कोख का आशीष देगा । तेरे पिता के आशीष मेरे माता पिता के आशीषों से इतने अधिक हैं कि सनातन पर्वतों के अंतलों बढ़गये और ये यूसफ़ के सिर पर और उसके सिर के मुकुट पर होंगे जो अपने भाइयों से अलग था ।
२७ बिनयामीन फड़वैये ऊंडार की नाईं होगा बिहान को
२८ अहेर भक्षेगा और सांझ को लूट बांटेगा । ये सब इसराईल की बारह गोष्ठी हैं और उनके पिता ने उन्हें यह कहके आशीष दिया और अपने आशीष के समान हर एक
२९ को बर दिया । फिर उसने उन्हें आज्ञा किई और कहा कि

मैं अपने लोगों में एकट्ठे होने पर हों मुझे अपने पितरों में,
३० उस कंदला में, जो हट्टी अफरून के खेत में है गाड़ियो। उस
कंदला में जो मखपीला के खेत में ममरा के आगे किनान
देश में है, जिसे इबराहीम ने समाधि स्थान के अधिकार के
३१ लिये खेत समेत अफरून हट्टी से मोल लिया था। वहां उन्हों
ने इबराहीम को और उसकी पत्नी सारा को गाड़ा वहां
उन्हों ने इसहाक़ को और उसकी पत्नी रबक़ा को गाड़ा और
३२ वहां मैं ने लिया को गाड़ा। उन्हों ने वुह खेत उस कंदला
३३ समेत, जो उसमें था हेस के बेटों से मोल लिया। और जब
याक़ूब अपने बेटों को आज्ञा करचूका तो उसने बिछौने पर
अपने पांव को समेट लिया और प्राण त्यागा और अपने
लोगों से जा मिला।

५० पचासवां पर्ब्ब ।

१ तब यूसफ़ अपने पिता के मुंह पर गिरपड़ा और उस पर रोया
२ और उसे चूमा। तब यूसफ़ ने अपने पिता में सुगंध भरने के
लिये अपने बैद्य सेवकों को आज्ञा किई और बैद्यों ने इसराईल
३ में सुगंध भरा। और उस के लिये चालीस दिन बीतगये क्योंकि
जिस पर सुगंध भराजाता है उतने दिन बीतते हैं और
४ मिसरियों ने उसके लिये सत्तर दिन लों बिलाप किया। और
जब रोने के दिन उसके लिये बीतगये तो यूसफ़ ने फ़रऊन के
घराने से कहा कि जो मैं ने तुम्हारी दृष्टि में अनुग्रह पाया है
५ तो फ़रऊन के कानों में कह देउ। कि मेरे पिता ने मुझसे
किरिया लिई कि देख मैं मरता हों तू मुझे मेरी समाधि
में, जो मैं ने किनान देश में, अपने लिये खोदी है गाड़ियो सो
मेरे पिता के गाड़ने को मुझे छुट्टी दीजिये और मैं फिर
६ आओंगा। फ़रऊन ने कहा कि जा और तुझसे किरिया लेने
७ के समान अपने पिता को गाड़। सो यूसफ़ अपने पिता

को गाड़ने गया और फ़रऊन के सारे सेवक और उसके घर के प्राचीन और मिसर देश के सारे प्राचीन उसके संग
८ गये। और यूसफ़ का सारा घराना और उसके भाई और उसके पिता का घराना सब उसके संग गये उन्हों ने केवल अपने बालक और झुंढ़ और ढोर गोशन की भूमि में छोड़
९ दिये। और रथ और घोड़ चढ़े उसके साथ गये और वुह
१० एक अति बड़ी मंडली थी। और वे अटाद के खलिहान पर, जो अर्दन पार है आये और वहां उन्हों ने अति बड़े बिलाप से बिलाप किया और उसने अपने पिता के लिये सात दिन
११ लों शोक किया। और जब देश के बासी किनानियों ने अटाद के खलिहान का बिलाप देखा तो बोले कि यह मिसरियों के लिये बड़ा बिलाप है सो इस लिये उसका नाम मिसरियों का
१२ बिलाप कहलाया और वुह अर्दन के पार है। और उसकी
१३ आज्ञा के समान उसके बेटों ने उसे किया। क्योंकि उसके बेटे उसे किनान देश में ले गये और उसे उस मकफ़ीला के खेत की कंदला में जिसे इबराहीम ने समाधिस्थान के अधिकार के लिये अफरून हट्टी से ममरा के साम्ने मोल लिया था गाड़ा।
१४ और यूसफ़ आप और उसके भाई और सब जो उसके साथ उसके पिता को गाड़ने गये थ उसके पिता को
१५ गाड़ के मिसर को फिरे। और जब यूसफ़ क भाइयों ने देखा कि हमारा पिता मरगया तो उन्हों ने कहा कि क्या जाने यूसफ़ हम से बैर करेगा और सारी बुराई का, जो हम
१६ न उसे किई है निश्चय पलटा लेगा। तब उन्हों ने यूसफ़ को यों कहलाभेजा कि आप के पिता ने अपने मरने से पहिले आज्ञा
१७ किई। कि यूसफ़ से कहियो कि अपने भाइयों के पाप और उनके अपराध क्षमा कर क्योंकि उन्हों ने तुझे बुराई किई सो अब अपने पिता के ईश्वर के दासों के पाप क्षमा कीजिये और
१८ जब उन्हों ने यह कहा तो यूसफ़ रोया। और उसके भाई

भी गये और उसके आगे गिरपड़े और उन्हों ने कहा कि
१९ देखिये हम आपके सेवक हैं। यूसफ़ ने उन्हें कहा कि मत
२० डरो क्योंकि मैं ईश्वर की संती हों। पर तुम जो हो तुम ने
मुझे बुराई करने की इच्छा किई परन्तु ईश्वर ने उसे भलाई
कर दिई कि बहुतसे लोगों का प्राण बचावे जैसा कि आज
२१ है। इस लिये तुम मत डरो मैं तुम्हारा और तुम्हारे बालकों
का प्रतिपाल करोंगा और उसने उन्हें धीरज दिया और
२२ उनसे शांति की बातें कहीं। और यूसफ़ और उसके पिता के
घराने ने मिसर में निवास किया और यूसफ़ एक सौ दस
२३ बरस जीया। और यूसफ़ ने अफ़राईम की तीसरी पीढ़ी
देखी और मनस्सा के बेटे माख़ीर के भी लड़के यूसफ़ के
२४ घुठनों पर जनायेगये। और यूसफ़ ने अपने भाइयों से कहा
कि मैं मरता हों और ईश्वर तुम से निश्चय भेंट करेगा और
तुम्हें इस देश से बाहर उस देश में जिसके बिषय में उसने
इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब से किरिया खाई थी
२५ ले आवेगा। और यूसफ़ ने इसराईल के संतानों से यह
किरिया लेके कहा कि ईश्वर निश्चय तुम से भेंट करेगा और
२६ तुम मेरी हड्डियों को यहां से ले जाइयो। सो यूसफ़ एक सौ
दस बरस का होके मरगया और उन्हों ने उसमें सुगंध भरा
और उसे मिसर में मंजूषा में रक्खा।

यात्रापुस्तक मूसा रचित।

पहिला पर्ब्ब।

१ अब इसराईल के संतानों के नाम ये हैं हरएक जो अपने घराने
२ को लेके याक़ूब के साथ मिसर में आया। राऊबीन शमऊन
३। ४ लिवी यहूदा। यसाखार जबलून बनियामीन। दान नफ़ताली
५ जाद और अशर। और समस्त प्राणी जो याक़ूब की जांघ से
६ उत्पन्नऊए सत्तर थे क्योंकि यूसफ़ तो मिसर में था। और
यूसफ़ और उसके सारे भाई और वुह समस्त पीढ़ी मरगई।
७ परंतु इसराईल के संतान फलमानऊए और बऊताई से
अधिकऊए और बढ़गये और अत्यंत सामर्थीऊए और देश
८ उनसे भरगया। तब मिसर में एक नया राजा उठा
९ जो यूसफ़ को न जानताथा। और उसने अपने लोगों से कहा
कि देखो इसराईल के संतानों के लोग हमसे अधिक और
१० बलवंत हैं। आओ हम उनसे चतुराई से ब्यवहार करें नहो
कि वे बढ़जायें और ऐसा होय कि जब युद्ध पड़े तो वे भी हमारे
बैरियों से मिलजावें और हमसे लड़ें और देश से निकल
११ जायें। इस लिये उन्होंने उन पर करोड़कों को बैठलाये कि
उन्हें अपने बोझों से सतावें और उन्होंनें फ़िरऊन के लिये भंडार
१२ नगरों को अर्थात पतम और रामसस को बनाया। परंतु ज्यों
ज्यों वे उन्हें दुख देतेथे त्यों त्यों वे बढ़तेगये और बऊतऊए
१३ और वे इसराईल के संतान के कारण से दुःखी थे। और
इसराईल के संतानों से मिसरियों ने क्रोध से सेवा करवाई।

१४ और उन्होंने कठिन सेवा से गारा और ईंट का कार्य और खेत की भांति भांति की सेवा करवाके उनके जीवन को कड़ुआ करडाला उनकी सारी सेवा जो वे करवातेथे क्लेश के साथ थी।

१५ तब मिसर के राजा ने इबरानी जनाई दाइयों को जिनमें एकका नाम सफ़ीरा और दूसरी का नाम फूहा था यों

१६ कहा। कि जब इबरानी स्त्री तुम से जनाई दाई का कार्य करावें और तुम उन्हें आसनों पर देखो यदि पुत्र होय तो उसे मार

१७ डालो और यदि पुत्री होय तो जीने देओ। परंतु जनाई दाई ईश्वर से डरतीथीं और जैसा कि मिसर के राजा ने उन्हें आज्ञा

१८ किईथी वैसा न किया परंतु पुत्रों को जीता छोड़ा। फिर मिसर के राजा ने जनाई दाइयों को बुलवाया और उन्हें कहा कि

१९ तुम ने ऐसा क्यों किया और पुत्रों को क्यों जीता छोड़ा जनाई दाइयों ने फ़रऊन को कहा इस कारण कि इबरानी स्त्री मिसर की स्त्रियों के समान नहीं क्योंकि वे फुरतीली हैं और उससे पहिले कि जनाई दाई उन पास पऊंचें वे जन बैठतीहैं।

२० इस लिये ईश्वर ने जनाई दाइयों से सुव्यवहार किया और लोग

२१ बढ़गये और अत्यंत बलवंत ऊए। और इस कारण कि जनाई दाई ईश्वर से डरतीथीं यों ऊआ कि उसने उनको बसाया।

२२ और फ़रऊन ने अपने समस्त लोगों को आज्ञा किई कि हरएक पुत्र जो उत्पन्न होय तुम उसे नदी में डालदेओ और हरएक पुत्री को जीती छोड़ो।

२ दूसरा पर्व्व।

१ फिर लिवी के घराने के एक मनुष्य ने जाकर लिवी की एक

२ पुत्री ग्रहण किई। वुह स्त्री गर्भिणी ऊई और बेटा जनी और

३ उसने उसे सुन्दर देख के तीन मास लों छिपा रक्खा। और जब आगे को छिपा नसकी तो उसने सरकंडों का एक टोकरा बनाया और उस पर लासा और राल लगाया और उस

बालक को उसमें रक्खा और उसने उसे नदी के तीर पर
४ भाऊ में रखदिया। और उसकी बहिन दूर से खड़ी देखतीथी
५ कि उसका क्या होताहै। तब फ़रऊन की पुत्री स्नान करने को
नदी पर उतरी और उसकी सहेलियां नदी के तीर पर
फिरनेलगीं उसने भाऊ में टोकरा देखकर अपनी सहेली
६ को भेजा कि उसे लावे। जब उसने उसे खोला तो बालक को
देखा और देखो कि बालक रोताहै वुह उस पर दया करके
७ बोली कि यह किसी इबरानियों के बालकों में से है। तब उसकी
बहिन ने फ़रऊन की पुत्री को कहा कि मैं जाके इबरानी
स्त्रियों में से एक दाई तुझ पास लेआओं जिसतें वुह तेरे लिये
८ इस बालक को पाले। फ़रऊन की पुत्री ने उसे कहा कि जा
९ वुह कन्या गई और बालक की माता को बुलाया। फ़रऊन की
पुत्री ने उसे कहा कि इस बालक को ले और मेरे लिये उसे
दूध पिला और मैं तुझे महिनवारी देओंगी और उस
१० स्त्री ने उसे दूध पिलाया। जब बालक बढ़ा और वुह उसे
फ़रऊन की पुत्री पास लाई और वुह उसका पुत्र हुआ उसने
उसका नाम मूसा रक्खा इस कारण कि उसने उसे पानी से
११ निकाला। और उन दिनों में यों हुआ कि
जब मूसा सयाना हुआ वुह अपने भाइयों पास बाहर गया
और उनके बोझों को देखा और अपने भाइयों में से एक
१२ इबरानी को देखा कि मिसरी उसे मार रहाहै। फिर उसने
इधर उधर दृष्टि किई और देखा कि कोई नहीं तब उसने
१३ उस मिसरी को मारडाला और बालू में उसे छिपादिया। जब
वुह दूसरे दिन बाहर गया तो क्या देखताहै कि दो इबरानी
आपुस में झगड़रहेहैं तब उसने उस अंधेरी को कहा कि तू
१४ अपने संगी को क्यों मारताहै। उसने कहा कि किसने तुझे
हम पर अध्यक्ष अथवा न्यायी किया क्या तू चाहताहै कि जिस
रीति से तू ने मिसरी को मारडाला मुझेभी मारडाले तब मूसा

१५ डरा और समझा कि यह बात खुलगई। जब फ़रऊन ने यह बात सुनी तो चाहा कि मूसा को मारडाले परंतु मूसा फ़रऊन के आगे से भाग निकला और मदियान के देश में जारहा १६ और एक कूएके निकट बैठगया। और मदियान के याजक की सात पुत्री थीं वे आईं और खींचनेलगीं और कठरों को १७ भरा कि अपने बाप के झुंड को पानी पिलावें। तब गड़रियों ने उन्हें हांक दिया परंतु मूसा ने खड़े होके उनकी सहाय १८ किई और उनकी झुंड को पिलाया। और जब वे अपने पिता रिऊईल पास आईं उसने पूछा कि आज तुम क्योंकर सवेरे १९ फिरीं। वे बोलीं कि एक मिसरी ने हमें गड़रियों के हाथ से बचाया और हमारे लिये जितना प्रयोजन था पानी भरा २० और झुंड को पिलाया। उसने अपनी पुत्रियों से कहा कि वुह कहां है और उस मनुष्य को क्यों छोड़ा उसे बुलाओ कि रोटी २१ खावे। तब मूसा उस जन के घर में रहने पर प्रसन्न ऊआ २२ और उसने अपनी बेटी सफूरा को मूसा को दिई। वुह पुत्र जनी उसने उसका नाम जीरशूम रक्खा क्योंकि उसने कहा २३ कि मैं परदेश में परदेशी हों। और कितने दिन के पीछे मिसर का राजा मरगया और इसराईल के बंश सेवा के कारण आह भरनेलगे और रोये और उनका रोना जो २४ उनकी सेवा के कारण से था ईश्वर लों पऊंचा। ईश्वर ने उनका कहरना सुना और ईश्वर ने अपनी बाचा को जो इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब के साथ किई थी स्मरण २५ किया। और ईश्वर ने इसराईल के संतान पर दृष्टि किई और उनकी दशा को बूझा।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ और मूसा अपने ससुर यसरू के जो मदीयून का याजक था झुंड को चराता था तब उसने झुंड को बन की पछे और लेगया

२ और ईश्वर के पहाड़ होरेब के पास आया। तब परमेश्वर का दूत एक झाड़ी के मध्य आग की लबर में उस पर प्रगट हुआ उसने दृष्टि किई तो क्या देखता है कि झाड़ी आग से जलती है
३ और झाड़ी भस्म नहीं होती। तब मूसा ने कहा कि मैं अब एक अलंग फिरोंगा और यह महादर्शन देखोंगा कि यह
४ झाड़ी क्यों नहीं जलजाती। जब परमेश्वर ने देखा कि वुह देखने को एक अलंग फिरा तो ईश्वर ने झाड़ी के मध्य में से उसे पुकार के कहा कि हे मूसा हे मूसा वुह बोला कि मैं
५ यहां हों। तब उसने कहा कि इधर पास मत आ अपने पाओं से जूता उतार क्योंकि यह स्थान जिस पर तू खड़ा है पवित्र
६ भूमि है। और उसने कहा कि मैं तेरे पिता का ईश्वर और इबराहीम का ईश्वर हों मूसा ने अपना मुंह छिपाया क्योंकि
७ वुह ईश्वर पर दृष्टि करने से डरा। और परमेश्वर ने कहा कि मैं ने अपने लोगों के कष्ट को जो मिसर में हैं निश्चय देखा और उनका रोना जो करोड़कों के कारण से है सुना क्योंकि
८ मैं उनके दुःखों को जानताहूं। और मैं उतराहों कि उन्हें मिसरियों के हाथ से छुड़ाओं और उस भूमि से निकाल के अच्छी बड़ी भूमि में जहां दूध और मधु बहताहै किनानीयों और हटियों और अमूरीयों और फरज़ीयों और हवीयों
९ और यबूसियों के स्थान में लाओं। अब देख इसराईल के संतान का रोना मुझ लों आया और मैं ने वुह अंधेर जो
१० मिसरी उन पर अंधेर करतेहैं। सो अब तू आ और मैं तुझे फ़रऊन पास भेजोंगा कि मेरे लोग इसराईल के संतान को
११ मिसर से निकाल लावें। मूसा ने ईश्वर को कहा कि मैं कौन हों जो फरऊन पास जाओं और इसराईल के संतानों को
१२ मिसर से निकालों। वुह बोला निश्चय मैं तेरे संग होंगा और तुझे भेजने का यह चिह्न होगा कि जब तू उन लोगों को मिसर
१३ से निकाले तो तुम इस पहाड़ पर ईश्वर की सेवा करोगे। तब

मूसा ने ईश्वर से कहा कि देख जब मैं इसराईल के संतान पास पहुंचों और उन्हें कहों कि तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजाहै और वे मुझे कहें कि उसका क्या
१४ नाम है तो मैं उन्हें क्या बताओं। ईश्वर ने मूसा को कहा कि मैं हों जो हों और उसने कहा कि तू इसराईल के संतान से
१५ यों कहियो कि मैंहों ने मुझे तुम्हारे पास भेजाहै। फिर ईश्वर ने मूसा से कहा कि तू इसराईल के संतान से यों कहियो कि परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर इबराहीम के ईश्वर इसहाक़ के ईश्वर और याक़ूब के ईश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजाहै सनातन से मेरा यही नाम है और समस्त पीढ़ियों में यही
१६ मेरा स्मरण है। जा और इसराईलियों के प्राचीनों को एकट्ठा कर और उन्हें कह कि परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब का ईश्वर यों कहता हुआ मुझे दिखाई दिया कि मैं ने निश्चय तुम्हारी सुधि लिई
१७ और जो कुछ तुम पर मिसर में हुआ सो देखा। और मैं ने कहाहै कि मैं तुम्हें मिसरियों के दुःखों से और किनानीयों और हित्तियों और अमूरियों और फ़रज़ियों और हवियों और यबूसियों के देश में जहां दूध और मधु बहताहै निकाल
१८ लाओंगा। और वे तेरा शब्द मानेंगे और तू और इसराईलियों के प्राचीन मिसर के राजा पास आओगे और उसे कहोगे कि परमेश्वर इबरानियों के ईश्वर ने हम से भेंट किई और अब हम तेरी बिनती करतेहैं कि हमें बन में तीन दिन के मार्ग जानेदे जिसतें हम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान करें।
१९ और मैं निश्चय जानताहों कि मिसर का राजा तुम्हें जाने
२० न देगा न बड़े बल से। और मैं अपना हाथ बढ़ाओंगा और अपने समस्त आश्चर्यों से जो मैं उनके बीच दिखाओंगा
२१ मिसरियों को मारोंगा उसके पीछे वुह तुम्हें जाने देगा। और मैं उन लोगों को मिसरियों की दृष्टि में अनुग्रह देओंगा और

२२ यों होगा कि जब तुम जाओगे तो छूछे न जाओगे। परंतु हरएक स्त्री अपनी परोसिन से और उस्से जो उसके घर में रहती है रूपे के गहने और सोने के गहने और वस्त्र मांगलेगी और तुम अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों को पहिनाओगे और मिसरियों को लूटोगे।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ तब मूसा ने उत्तर दिया और कहा कि देख वे मेरी प्रतीति न करेंगे और मेरा शब्द न मानेंगे क्योंकि वे कहेंगे कि २ परमेश्वर तुझ पर प्रगट न हुआ। तब परमेश्वर ने उसे कहा ३ कि तेरे हाथ में क्या है वुह बोला कि छड़ी। फिर उसने कहा कि उसे भूमि पर डालदे उसने भूमि पर डालदिया और वुह ४ सर्प बनगई और मूसा उसके आगेसे भागा। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ बढ़ा और उसकी पूंछ पकड़ ले उसने हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया वुह उसके हाथ में ५ छड़ी होगई। जिसतें वे बिश्वास करें कि परमेश्वर उनके पितरों का ईश्वर इबराहीम का ईश्वर इसहाक़ का ईश्वर और ६ याक़ूब का ईश्वर तुझ पर प्रगट हुआ। फिर परमेश्वर ने उसे कहा कि तू अपना हाथ अपनी गोद में कर और उसने अपना हाथ अपनी गोद में किया और जब उसने उसे निकाला तो ७ देखो कि उसका हाथ पाला के समान कोढ़ी। और उसने कहा कि अपना हाथ फिर अपनी गोद में कर उसने फिर अपने हाथ को अपनी गोद में किया और अपनी गोद से निकाला तो देखा कि जैसा उसका सारा देह था वुह वैसा फिर ८ होगया। और ऐसा होगा कि यदि वे तेरी प्रतीति न करें और पहिले आश्चर्य को न मानें तो वे दूसरे आश्चर्य के बिश्वासी ९ होंगे। और ऐसा होगा कि यदि वे दोनों आश्चर्यों पर बिश्वास न लावें और तेरे शब्द के श्रोता नहों तो तू नदी के

जल लेके सूखी पर ढालियो और वुह जल जो तू नदी में
१० निकालेगा सूखी पर लोहू होजायगा। तब मूसा ने परमेश्वर से
कहा कि हे मेरे प्रभु मैं सुवक्ता नहीं न तो आगे से और न
जब से तू ने अपने दास से बातचीत किई परंतु मेरी जीभ
११ और बातों में तोतलानाहै। तब ईश्वर ने उसे कहा कि मनुष्य
के मुंह को किसने बनाया और कौन गूंगा अथवा बहिरा
अथवा दर्शी अथवा अंधा बनाताहै क्या मुझ परमेश्वर ने नहीं।
१२ अब तू जा और मैं तेरे मुंह के साथ होंगा और जो कुछ तू
१३ कहेगा तुझे सिखाओंगा। फेर उसने कहा कि हे परमेश्वर
१४ मैं तेरी बिनती करताहों कि जिसे चाहे तू उसे भेज। तब
परमेश्वर का क्रोध मूसा पर भड़का और उसने कहा कि क्या
तेरा भाई हारून लीवी नहीं है मैं जानताहों कि वुह सुवक्ता
है देख कि वुह भी तेरी भेंट को आताहै और तुझे देख के
१५ अपने मन में हर्षित होगा। और तू उसे कहेगा और उसके
मुंह में बात डालेगा और मैं तेरे और उसके मुंह के संग
१६ होंगा और जो कुछ तुम्हें करनाहै सो तुम्हें सिखाओंगा। और
लोगों पर वुह तेरा बक्ता होगा और वुह तेरे मुंह की संती
१७ होगा और तू उसके लिये ईश्वर के स्थान होगा। और यह
छड़ी जिस्से तू आश्चर्य दिखावेगा अपने हाथ में रखियो।
१८ तब मूसा अपने ससुर यसरू के पास फिर आया और उसे
कहा कि मैं तेरी बिनती करताहों कि मुझे छुट्टी दे कि मिसर
में अपने भाइयों पास फिर जाओं और देखों कि वे अबलों
जीते हैं कि नहीं यसरू ने मूसा को कहा कि कुशल से जा।
१९ तब परमेश्वर ने मदियान में मूसा को कहा कि मिसर में फिर
२० जा क्योंकि वे सब जो तेरे प्राण के गाहक थे सो मरगये। तब मूसा
ने अपनी पत्नी को और अपने पुत्रों को लिया और उन्हें रथ
पर बैठलाया और मिसर के देश में फिर आया और मूसा ने
२१ ईश्वर की छड़ी हाथ में लिई। और परमेश्वर ने मूसा को कहा

कि अब तू मिसर में फिर जाय तो देख कि सब आश्चर्य जो
मैं ने तेरे हाथ में रक्खेहैं फ़रऊन के आगे दिखाइयो परंतु मैं
उसके मन को कठोर करोंगा कि वुह उन लोगों को जाने न
२२ देगा। तब फ़रऊन को यों कहियो कि परमेश्वर ने यों कहाहै
२३ कि इसराईल मेरा पुत्र मेरा पहिलौंठा है। सो मैं तुझे
कहताहों कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वुह मेरी सेवा करे और
यदि तू उसे रोकेगा तो देख मैं तेरे पहिलौंठे को मारडालोंगा।
२४ और मार्ग के सरां में यों हुआ कि परमेश्वर उसे
२५ मिला और चाहा कि उसे मारडाले। तब सफ़ूरा ने एक
चोखा पत्थर उठाया और अपने बेटे की खलड़ी काटडाली
और उसे उसके पाओं पर फेंका और कहा कि तू निश्चय मेरे
२६ लिये रक्तपातीपति है। तब उसने उसे छोड़दिया और वुह
बोली कि ख़तने के कारण तू रक्तपातीपति है।
२७ और परमेश्वर ने हारून को कहा कि बन में जाके मूसा से मिल
वुह गया और उसे ईश्वर के पहाड़ पर मिला और उसे चूमा।
२८ और ईश्वर ने जो उसे भेजाथा मूसा ने उसकी सारी बातें
और आश्चर्य जो उसने उसे आज्ञा किईथी हारून से कह
२९ सुनाये। तब मूसा और हारून गये और इसराईल
३० के संतानों के प्राचीनों को एकट्ठा किया। और जो सारी बातें
परमेश्वर ने मूसा को कहीं थीं हारून ने कहीं और लोगों के
३१ प्रत्यक्ष आश्चर्य किये। तब लोग बिश्वासलाये और सुन के कि
परमेश्वर ने इसराईल के संतान की सुधिलिई और उनके
दुःख पर दृष्टि किई झुके और दंडवत किई।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ उसके पीछे मूसा और हारून ने भीतर जाके फ़रऊन से कहा
कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहताहै कि मेरे लोगों
२ को जाने दे कि वे अरण्य में मेरे लिये पर्ब्ब करें। फ़रऊन ने कहा

कि परमेश्वर कौन है कि मैं उसके शब्द को मान के इसराईल को जाने देऊं मैं परमेश्वर को नहीं जानता और मैं इसराईल
३ को जाने न देऊंगा। तब उन्हों ने कहा कि इबरानियों के ईश्वर ने हम से भेंट किई है हमें छुट्टी दीजिये कि हम तीन दिन के पथ अरण्य में जायें और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान करें ऐसा न हो कि वुह हमें मरी अथवा खड्ग
४ से मारे। तब मिसर के राजा ने उन्हें कहा कि हे मूसा और हारून तुम लोगों को उनके कार्य से क्यों रोकतेहो तुम अपने
५ बोझों को जाओ। और फ़रऊन ने कहा कि देखो देश के लोग
६ बजत हैं और तुम उन्हें उनके बोझों से रोकतेहो। और उसी दिन फ़रऊन ने लोगों के करोडकों को और अपने
७ अध्यक्षों को आज्ञा किई। कि अब आगे की नाईं उन लोगों को ईंटें बनाने के लिये पुआल मत देओ वे जाके अपने लिये
८ पुआल बटोरें। और आगे की नाईं ईंटें उनसे लियाकरो उसमें से कुछ मत घटाओ वे आलसी हैं इसी लिये वे रोरोके कहतेहैं हमें जानेदेओ कि हम अपने ईश्वर के लिये बलिदान
९ चढ़ावें। उनका काम बढ़ायाजाय कि वे उसमें परिश्रम करें
१० और वृथा बातों की ओर मन न लगावें। तब लोगों के करोडक और उनके अध्यक्ष निकले और लोगों से यों
११ कहा कि फ़रऊन कहता है कि मैं तुम्हें पुआल न देऊंगा। तुम जाओ और जहां मिले तहां से पुआल लाओ तथापि तुम्हारा
१२ कार्य न घटे सो लोग मिसर के सारे देश में छिन्नभिन्न जए कि
१३ पुआल की संती खूंटी एकट्ठी करें। और करोडकों ने शीघ्रता करके कहा कि जैसा पुआल पातेजए करतेथे वैसा
१४ अपने प्रतिदिन के कार्य उसी दिन देउ। और इसराईल के संतानों के प्रधान जिन्हें फ़रऊन के करोडकों ने उन पर करोड़े कियेथे मारेगये और पूछेगये कि अपनी ठहराई जई सेवा जो ईंट बनाने की है कल और आज आगे की नाईं क्यों

१५ नहीं पूरा किया। तब इसराईल के संतानों के प्रधान फ़रऊन के आगे आके चिल्लाये और कहा कि अपने दासों से
१६ ऐसा व्यवहार क्यों करता है। तेरे दासों को पुआल नहीं मिला है और वे हमें कहते हैं कि ईंटें बनाओ और देख कि तेरे सेवकों ने मार खाई है परंतु अपराध तेरे लोगों का है।
१७ उसने कहा कि तुम आलसी हो आलसी हो इस लिये तुम कहते हो कि हमें जाने दे कि परमेश्वर के लिये बलिदान
१८ करें। अब तुम जाओ काम करो पुआल तुम को न दिया
१९ जायगा तथापि तुम गिनती की ईंटें देओगे। इस कहने से कि तुम अपनी प्रतिदिन की ईंटों में से न घटाओगे इसराईल
२० के संतान के प्रधानों ने देखा कि उनकी दुर्दशा है। और वे फ़रऊन पास से निकल के मूसा और हारून को जो मार्ग में
२१ खड़े थे मिले। और उन्हें कहा कि परमेश्वर तुम्हें देखे और न्याय करे इस लिये कि तुमने हमें फ़रऊन की और उसके सेवकों की दृष्टि में ऐसा घिनौना किया है कि हमारे मारने
२२ के कारण उनके हाथ में खड्ग दिया है। तब मूसा परमेश्वर पास फिर गया और कहा कि हे परमेश्वर तू ने उन लोगों
२३ को क्यों क्लेश में डाला और मुझे क्यों भेजा। इस लिये कि जब से तेरे नाम से मैं फ़रऊन को कहने आया उसने उन लोगों पर बुराई किई और तू ने बचाते हुए अपने लोगों को न बचाया।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अब देख मैं फ़रऊन से क्या करोंगा क्योंकि वुह बलवंत भुजा से उन्हें जाने देगा।
२ और ईश्वर ने मूसा को आज्ञा किई और कहा कि मैं परमेश्वर
३ हों। और मैं ने इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब पर सर्वशक्तिमान ईश्वर करके प्रगट हुआ परमेश्वर के नाम से मैं

४ उन पर न जानागयाथा। और मैं ने उनके साथ अपनी बाचा भी बांधीहै कि मैं उनको किनान का देश जो उनके
५ प्रवास का देश है जिसमें वे पर देशी थे देओंगा। और मैं ने इसराईल के संतानों का कहना भी सुनाहै जिन्हें मिसरी
६ बंधुआई में रखते हैं और अपने बाचा को स्मरण कियाहै। सो तू इसराईल के संतानों से कह कि मैं परमेश्वर हों और मैं तुम्हें मिसरियों के बोझों के तले से निकालोंगा और मैं तुम्हें उनकी दासता से छुड़ाओंगा और मैं अपना हाथ बढ़ा के बड़े बड़े
७ न्याय से तुम्हें मोक्ष देओंगा। और तुम्हें अपने लोग बनाउंगा और मैं तुम्हारा ईश्वर होंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों जो तुम्हें मिसरियों के बोझों के
८ तले से निकालताहों। और मैं तुम्हें उस देश में लाओंगा जिसके विषय में मैं ने हाथ उठायाहै कि उसे इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब को देओं और मैं उसे तुम्हारा अधिकार
९ करोंगा परमेश्वर मैं हों। मूसा ने इसराईल के संतानों को योंहीं कहा परंतु वे मन के क्लेशकेमारे और परिश्रम के कष्ट
१० से मूसा का न सुना। फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा।
११ कि जा और मिसर के राजा फ़रऊन से कह कि इसराईल के
१२ संतानों को अपने देश से जाने दे। तब मूसा ने परमेश्वर के आगे कहा कि देख इसराईल के संतानों ने तो मेरी बात न मानीहै तो मैं जो होंठ का अख़तनः हों फ़रऊन मेरी
१३ क्योंकर सुनेगा। तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को कहा और उन्हें इसराईल के संतान और मिसर के राजा फ़रऊन के विषय में आज्ञा किई कि इसराईल के संतान को मिसर के
१४ देश से बाहर लेजावें। उनके पितरों के घराने के प्रधान ये थे इसराईल के पहिलौठे राओबीन के पुत्र हनूख़ और पल्लू और हज़रून और करमी थे ये राओबीन के
१५ घराने। शमऊन के पुत्र जमुईल और यामत और ओहाद

और जाख़ीन और ज़ोहर और शावल किनानी स्त्री का पुत्र
१६ ये शमऊन के घराने। और लीवी के पुत्रों के
नाम उनके पीढ़ियों के समान ये जीरशून और कुहास और
मरारी और लीवी के जीवन के बरस एक सौ सैंतीस थे।
१७ जीरशून के पुत्र उनके घराने के समान लबनी और शमई
१८ थे। क़ुहास के पुत्र अमराम और इज़हार और हिबरून
और अज़ीयल और क़ुहास के जीवन के बरस एक सौ तैंतीस
१९ थे। और मरारी के पुत्र महाली और मुशी उनकी पीढ़ियों
२० के समान लीवी के घराने ये थे। अमराम ने अपने पिता की
बहिन यकीबद से बिवाह किया वुह उसके लिये हारून और
मूसा को जनी अमराम के जीवन के बरस एक सौ सैंतीस थे।
२१ इजहार के पुत्र क़ूरह और नाफग़ और जख़री
२२ थे अज़्ज़ीएल के पुत्र। मीसाईल और इलजाफ़ान और सथरी।
२३ और हारून ने नख़शून की बहिन अमीनादाब की पुत्री
अलीशबा को पत्नी किया उस्से नादाब और अबीहू और
२४ इलियाज़र और ऐतामार उत्पन्न हुए। क़ूरह के पुत्र असीर
और इलक़ाना और अबियासाफ़ ये करीह के घराने थे।
२५ हारून के पुत्र इलियाज़ार ने पुतिईल की पुत्रियों में से पत्नी
किई उस्से फ़ीनोहाज़ उत्पन्न हुआ लावियों के बाप दादों के
२६ घरानों में ये प्रधान थे। ये वे हारून और मूसा हैं जिन्हें
परमेश्वर ने कहा कि इसराईल के संतानों को उनकी सेना
२७ की रीति मिसर के देश से निकाल लाओ। ये वे हैं जिन्होंने
मिसर के राजा फ़रऊन से इसराईल के संतानों को मिसर
से निकाल लेजाने को कहा ये वेही मूसा और हारून हैं।
२८ और जिस दिन परमेश्वर ने मूसा को कहा।
२९ कि मैं परमेश्वर हों सब जो मैं तुझे कहता हों मिसर के राजा
३० फ़रऊन से कह। मूसा ने परमेश्वर से कहा कि देख मैं होंठ
का अख़तनः हों फ़रऊन मेरी क्योंकर सुनेगा।

७ सातवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं ने तुझे फ़रऊन के लिये ईश्वर बनाया और तेरा भाई हारून तेरा आगमज्ञानी
२ होगा। सब कुछ जो मैं तुझे आज्ञा करोंगा अपने भाई हारून से कहियो और वुह फ़रऊन से कहेगा कि इसराएल
३ के संतानों को मिसर के देश से जानेदे। और मैं फ़रऊन के मन को कठोर करोंगा और अपने लक्षण और आश्चर्य को
४ मिसर के देश में अधिक करोंगा। परंतु फ़रऊन तुम्हारी न सुनेगा जिसतें मैं अपना हाथ मिसर पर धरों और अपनी सेनाओं को जो मेरे लोग इसराईल के संतान हैं बड़े न्याय
५ दिखाके मिसर के देश से निकाल लाओं। और जब मैं मिसर पर हाथ चलाओंगा और इसराईल के संतानों को उनमें से
६ निकालोंगा तब मिसरी जानेंगे कि मैं परमेश्वर हों। जैसा परमेश्वर ने उन्हें कहा मूसा और हारून ने वैसाही किया।
७ और जिस समय में उन दोनों ने फ़रऊन से बात चीत किई मूसा अस्सी बरस का और हारून तिरासी बरस का था।
८।९ और परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा। कि जब फ़रऊन तुम्हें कहे कि अपने लिये आश्चर्य दिखाओ तो हारून को कहियो कि अपनी छड़ी ले और फ़रऊन के आगे डालदे
१० वुह एक सर्प्प बनजायेगी। तब मूसा और हारून फ़रऊन कने भीतर गये और जैसा परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसाही किया हारून ने अपनी छड़ी फ़रऊन के और
११ उसके सेवकों के आगे डालदिई और वुह सर्प्प होगई। तब फ़रऊन ने भी पंडितों और टोनहों को बुलवाया सो मिसर के
१२ टोनहों ने भी टोना से ऐसाही किया। क्योंकि उनमें से हरएक ने अपनी अपनी छड़ी डालदिईं और वे सर्प्प होगईं परंतु
१३ हारून की छड़ी उनकी छड़ियों को निंगलगई। और उसने फ़रऊन के मन को कठोर करदिया कि जैसा परमेश्वर ने

१४ कहाथा उसने उनकी न सुनी। तब परमेश्वर ने मूसा
से कहा कि फ़रऊन का अंतःकरण कठोर है वुह उन लोगों
१५ को जाने नहीं देता। अब तू बिहान फ़रऊन के पास जा देख
कि वुह नदी के तीर जाताहै तू नदी के तट पर जिधर से वुह
आवे उसके सन्मुख खड़ा हूजियो और वुह छड़ी जो सांप
१६ हुईथी अपने हाथ में लीजियो। और उसे कहियो कि परमेश्वर
इबरानियों के ईश्वर ने मुझे तेरे पास भेजाहै और कहा है कि
मेरे लोगों को जानेदे जिसतें वे अरण्य में मेरी सेवा करें और
१७ देख कि तू ने अब लों न सुना। परमेश्वर ने यों आज्ञा किई कि
इसे तू जानेगा कि मैं परमेश्वर हों देख कि मैं यह छड़ी जो
मेरे हाथ में है नदी के पानीयों पर मारोंगा और वे लोहू
१८ होजायेंगे। और मछलियां जो नदी में हैं मरजायेंगी और
नदी बसाने लगेगी और मिसर के लोग नदी का पानी पीने
१९ को घिन करेंगे। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून
से कह कि अपनी छड़ी ले और अपना हाथ मिसर के पानीयों
पर और उनकी धारों और उनकी नदियों और उनके कुण्डों
और उनके सब पानीयों पर चला कि वे लोहू बनजायें और
मिसर के सारे देश में हरएक पत्थल और काठ के पात्र में
२० लोहू होजाय। जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा किईथी मूसा
और हारून ने वैसाही किया मूसा ने छड़ी उठाई और नदी
के पानी पर फ़रऊन के और उसके सेवकों के साम्ने मारी
२१ और नदी के सब पानी लोहू होगये। और नदी की मछलियां
मरगईं और नदी बसानेलगी और मिसर के लोग नदी का
२२ पानी पी न सके और मिसर के सारे देश में लोहू हुआ। तब
मिसर के टोनहों ने भी अपने टोना से ऐसाही किया और
फ़रऊन का मन कठोर होगया और जैसा कि परमेश्वर ने
२३ कहाथा वैसा उसने उनकी न सुनी। फ़रऊन फिरा और
अपने घर को गया और उसने अपना मन इस बात पर भी

२४ न लगाया। और सारे मिसरियों ने नदी के आसपास खोदे कि उनसे पानी पीवें क्योंकि वे नदी का पानी पी न सके।
२५ और परमेश्वर के नदी को मारने से पीछे सात दिन बीतगये।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़रऊन पास जा और उसे यह कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को
२ जाने दे जिसतें वे मेरी सेवा करें। और यदि तू उन्हें जाने न देगा तो देख मैं तेरे समस्त सिवानों को मेंडुकों से मारोंगा।
३ और नदी बऊताई से मेंडुकों को उत्पन्न करेगी और वे निकल के तेरे घर में और तेरे शयनस्थान में और तेरे बिछौनों पर और तेरे सेवकों के घरों में और तेरी प्रजा पर और तेरी
४ भट्ठियों में और तेरे आटेगूंधने के कठरों में जायेंगे। और मेंडुक तुझ पर और तेरी प्रजा पर और तेरे समस्त सेवकों पर
५ चढ़ेंगे। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि छड़ी से अपना हाथ धारों पर और नदियों पर और कुंडों पर
६ बढ़ा और मेंडुकों को मिसर के देश पर चढ़ा। तब हारून ने मिसर के पानीयों पर हाथ बढ़ाया और मेंडुकों ने निकल के
७ मिसर के देश को ढांपलिया। और टोनहों ने भी अपने टोनाओं से ऐसाही किया और मिसर के देश पर मेंडुक
८ चढ़ाये। तब फ़रऊन ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा कि परमेश्वर से बिनती करो कि मेंडुकों को मुझ से और मेरी प्रजा से दूर करे और मैं उन लोगों को जानेदेओंगा कि वे
९ परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ावें। और मूसा ने फ़रऊन को कहा कि मुझ पर प्रतिष्ठा कर कब मैं तेरे और तेरे सेवकों के और तेरी प्रजा के लिये प्रार्थना करों कि मेंडुक तुझ से और तेरे घरों से दूर कियेजावें और नदीही में रहें।
१० वुह बोला कि कल तब उसने कहा कि तेरे बचन के समान

जिसतें तू जाने कि परमेश्वर हमारे ईश्वर के तुल्य कोई नहीं।
११ और मेंडुक तुझसे और तेरे घरों से और तेरे दासों और
१२ तेरी प्रजा से जातेरहेंगे वे केवल नदी में रहेंगे। फिर मूसा
और हारून फ़रऊन पास से निकल गये और मूसा ने परमेश्वर के
आगे मेंड़कों के लिये जो उसने फ़रऊन के कारण भेजेथे प्रार्थना
१३ किई। और परमेश्वर ने मूसा की प्रार्थना के समान किया
१४ और मेंडुक घरों और गांओं और खेतों में से मरगये। और
उन्होंने उन्हें जहां तहां एकट्ठे कर कर ढेर करदिये और देश
१५ बसानेलगा। परंतु जब फ़रऊन ने देखा कि सावकाश मिला
तो उसने अपना मन कठोर किया और जैसा परमेश्वर ने
१६ कहाया वैसा उनकी न सुनी। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा
कि हारून से कह कि अपनी छड़ी बढ़ा और देश की धूल पर
मार जिसतें वुह मिसर के समस्त देश में जूईं बनजाये।
१७ उन्होंने वैसाही किया क्योंकि हारून ने अपना हाथ छड़ी के
साथ बढ़ाया और पृथिवी की धूल को मारा और वहीं मनुष्य
पर और पशु पर जूईं बनगईं समस्त धूल मिसर की सारे देश
१८ में जूईं बनगईं। और टोनहों ने भी चाहा कि अपने टोनों से
जूईं निकालें पर निकाल न सके सो मनुष्य पर और पशु पर
१९ जूईं थीं। तब टोनहों ने फ़रऊन से कहा कि यह ईश्वर का कार्य्य
है और फ़रऊन का मन कठोर होगया और जैसा परमेश्वर
२० ने कहाथा उसने उनका न सुना। तब परमेश्वर ने मूसा से
कहा कि बिहान को उठ और फ़रऊन के आगे खड़ा हो देख
वुह जल पर आता है तू उसे कह कि परमेश्वर यों कहता है
२१ कि मेरे लोगों को जानेदे कि वे मेरी सेवा करें। नहीं तो
यदि तू उन्हें जाने न देगा तो देख मैं तुझ पर और तेरे
सेवकों पर और तेरी प्रजा पर और तेरे घरों में झुंड के झुंड
मच्छड़ भेजोंगा और मिसरियों के घर में और समस्त भूमि में
२२ जहां जहां वे हैं उन झुंडों से भरजायेंगे। और मैं उस दिन

गोश्नन की भूमि को जिसमें मेरे लोग बास करते हैं अलग करोंगा कि मच्छड़ों के झुंड वहां न होंगे जिसतें तू जाने कि
२३ पृथिवी के मध्य में परमेश्वर मैं हों। और मैं तेरे लोगों में और अपने लोगों में बिभाग करोंगा और यह आश्चर्य कल
२४ होगा। तब परमेश्वर ने यों हीं किया और फ़रऊन के घर में और उस के सेवकों के घरों में और मिसर के समस्त देश में मच्छड़ों के झुंड आये और मच्छड़ों के मारे देश नाश हुआ।
२५ तब फ़रऊन ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा कि जाओ और अपने ईश्वर के लिये देश में बलि
२६ चढ़ाओ मूसा ने कहा कि यों करना उचित नहीं क्योंकि हम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये वुह बलि चढ़ावेंगे जिस्से मिसरी घिन रखते हैं क्या हम मिसरियों के घिन का बलि उनकी
२७ दृष्टि के आगे चढ़ावें क्या वे हमें पत्थरवाह न करेंगे। सो हम बन में तीन दिन के पथ में जायेंगे और अपने ईश्वर के लिये
२८ जैसा वुह हमें आज्ञा करेगा बलिदान करेंगे। फ़रऊन बोला कि मैं तुम्हें जाने देोंगा जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बन में बलि चढ़ाओ केवल बहुत दूर मत जाओ मेरे
२९ लिये बिनती करो। मूसा बोला देख मैं तेरे पास से बाहर जाता हों और मैं परमेश्वर के आगे बिनती करोंगा कि मच्छड़ों के झुण्ड फ़रऊन से और उसके सेवकों से और उसकी प्रजा से कल जाते रहें परंतु ऐसा न हो कि फ़रऊन फिर छल करके लोगों को परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाने को
३० जाने न देवे। तब मूसा फ़रऊन पास से बाहर गया और
३१ परमेश्वर से बिनती किई। परमेश्वर ने मूसा की बिनती के समान किया और उसने मच्छड़ों के झुण्डों को फ़रऊन से और उसके सेवकों से और उसकी प्रजा पर से दूर किया और
३२ एक भी न रहा। फ़रऊन ने उस बार भी अपना मन कठोर किया और उन लोगों को जाने न दिया।

९ नवां पर्ब्ब।

१ तब परमेश्वर ने मूसा को कहा कि फ़रऊन पास जा और उसे कह कि परमेश्वर इब्रानियों का ईश्वर यों कहता है कि
२ मेरे लोगों को जाने दे जिसतें वे मेरी सेवा करें। क्योंकि यदि
३ तू जाने न देगा और अबकी भी उन्हें रोकेगा। तो देख परमेश्वर का हाथ तेरे खेत के पशुन पर और घोड़ों पर गधों पर ऊंटों पर और बैलों पर और भेड़ों पर अत्यंत मरी पड़ेगी।
४ और परमेश्वर इसराईल के और मिसरियों के पशुन में बिभाग करेगा और उनमें से जो इसराईल के संतानों के हैं कोई न
५ मरेगा। और परमेश्वर ने एक समय ठहराया और कहा कि
६ परमेश्वर यह कार्य देश में कल करेगा। और दूसरे दिन परमेश्वर ने वैसाही किया और मिसर के समस्त पशु मरगये
७ परंतु इसराईल के संतानों के पशु में से एक भी न मरा। तब फ़रऊन ने भेजा तो क्या देखता है कि इसराईलियों के पशुन में से एक न मरा और फ़रऊन का मन कठोर ऊआ और
८ उसने लोगों को जाने न दिया। और परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा कि भट्ठी में से मुट्ठी भर भर के राख लेओ और मूसा उसे फ़रऊन के साम्ने आकाश की ओर
९ उड़ादे। और वुह मिसर की समस्त भूमि में सूक्ष्म धूल होजायगी और मिसर के समस्त देश में मनुष्य पर और
१० पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकलेंगे। और उन्हों ने भट्ठी की राख लिई और फ़रऊन के आगे खड़े ऊए और मूसा ने उसे स्वर्ग की ओर उड़ाया और तुरंत मनुष्य पर और
११ पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकले। और फोड़ों के मारे टोनहे मूसा के आगे खड़े न रह सके क्योंकि टोनहों पर
१२ और सारे मिसरियों पर फोड़े थे। और परमेश्वर ने फ़रऊन के मन को कठोर करदिया और जैसा कि परमेश्वर मूसा से
१३ कहाथा वैसा उसने उनकी बात न मानी। फिर परमेश्वर ने

मूसा से कहा कि कल तड़के उठ और फ़रऊन के आगे खड़ा हो और उसे कह कि परमेश्वर इब्रानियों का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जानेदे कि वे मेरी सेवा करें।
१४ इस लिये कि मैं अबकी अपनी सारी बिपत्ति तेरे मन पर और तेरे सेवकों पर और तेरी प्रजा पर डालोंगा कि तू
१५ जाने कि समस्त पृथिवी पर मेरे तुल्य कोई नहीं। क्योंकि अब मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा जिसतें मैं तुझे और तेरी प्रजा को मरी से मारों और तू पृथिवी पर से नष्ट होजायगा।
१६ और निश्चय मैं ने तुझे इस लिये उठाया है कि अपना पराक्रम तुझ पर दिखाओं और अपना नाम सारे संसार में प्रगट
१७ करों। अब लों तू मेरे लोगों पर अहंकार करताजाता है और
१८ उन्हें जाने नहीं देता। देख मैं कल इसी समय में ऐसे बड़े बड़े ओले बरसाओंगा जो मिसर में उसके आरंभ से अब लों न
१९ पड़ेथे। सो अभी भेज और अपने पशु और जो कुछ कि खेत में तेरा है सभों को एकट्ठे कर क्योंकि हरएक मनुष्य पर और पशु पर जो खेत में होगा और घर में लाया न जायगा
२० ओले पड़ेंगे और वे मरजायेंगे। जो परमेश्वर के बचन से डरताथा फ़रऊन के सेवकों में से हरएक ने अपने सेवकों को
२१ और अपने पशुन को घर में भगाया। और जिसने परमेश्वर के बचन को न माना अपने सेवकों और अपने पशुन को खेत
२२ में रहनेदिया। 　　　और परमेश्वर ने मूसा को कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ा जिसतें मिसर के सारे देश में मनुष्य पर और पशु पर और खेत के हरएक सागपात पर
२३ जो मिसर की भूमि में है ओले पड़ें। और मूसा ने अपनी छड़ी स्वर्ग की ओर बढ़ाई और परमेश्वर ने गर्ज्जन और ओले भेजे और आग भूमि पर चलतीथी और ईश्वर ने मिसर की
२४ भूमि पर ओले बरसाये। सो मिसर की भूमि पर ओले थे और ओलेसे आग अति कष्टित मिलीहुई थी यहां लों कि मिसर के

समस्त देश में जब से कि वुह देशी ऊआथा ऐसा न पड़ाथा।
२५ और ओलों ने मिसर के समस्त देश में क्या मनुष्य को और क्या पशु सब को जो खेत में थे मारा और ओलों से खेत के सब साग पात मारेगये और खेत के हरएक वृक्ष टूटगये।
२६ केवल गोशन की भूमि में जहां इसराईल के संतान थे ओले
२७ न पड़े। तब फ़रऊन ने मूसा और हारून को बुलवाया और उन्हें कहा कि मैं ने इसबार अपराध किया
२८ परमेश्वर न्यायी है मैं और मेरी प्रजा दुष्ट हैं। परमेश्वर से बिनती करो कि अब आगे को परमेश्वर का शब्द और ओला
२९ नहो और मैं तुम्हें जाने देउंगा फेर आगे न रहोगे। तब मूसा ने उसे कहा कि मैं नगर से बाहर निकलतेऊए परमेश्वर के आगे अपने हाथ उठाओंगा और गर्ज्जना थमजायेगा और ओले भी न बरसेंगे जिसतें तू जानें कि पृथिवी परमेश्वर ही
३० की है। परंतु मैं जानताहूं कि तू और तेरे सेवक अब भी
३१ परमेश्वर ईश्वर से न डरेंगे। सो ओलों से सन और जव मारेपड़े क्योंकि जव की बालें आचुकीथीं और सन बढ़चुकाथा।
३२ पर गोहूं और जोंधरी मारे नपढ़े क्योंकि वे गुप्त थे।
३३ और मूसा ने फ़रऊन पास से नगर के बाहर जाके परमेश्वर के आगे हाथ फैलाये और गर्ज्जना और ओले थमगये और
३४ भूमि पर वृष्टि थमगई। जब फ़रऊन ने देखा कि मेंह और ओले और गर्ज्जना थमगया तो फेर दुष्टता किई और उसने
३५ और उसके सेवकों ने अपना मन कठोर किया। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से कहाथा वैसा फ़रऊन का अंतःकरण कठोर होगया और उसने इसराईल के संतानों को जाने नदिया।

१० दसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़रऊन पास जा क्योंकि मैं ने उसके अंतःकरण को और उसके सेवकों के अंतःकरण को कठोर कर दियाहै जिसतें मैं अपने ये लक्षण उसके आगे
२ प्रगट करों। और जिसतें तू अपने पुत्र और पोतों को मेरे लक्षण और जो जो मैं ने मिसर में किया उन्हें सुनावे जिसतें
३ तुम जानो कि परमेश्वर मैंही हों। सो मूसा और हारून ने फ़रऊन पास आके उसे कहा कि परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहताहै कि तू मेरे आगे कबलों नम्र न होगा
४ मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी सेवा करें। यदि तू मेरे लोगों के जाने से नाह करेगा तो देख कल मैं तेरे सिवानों
५ में टिड्डी भेजोंगा। और वे पृथिवी को ढांप लेंगी कि कोई पृथिवी को देख न सकेगा और वे उस बचेहुए को जो ओलों से तेरे लिये बचरहेहैं खाजायेंगी और हरएक वृक्ष को जो
६ तुम्हारे लिये खेत में उगताहै चट करेंगी। और वे तेरे घर में और तेरे सेवकों के घर में और सारे मिसरियों के घर में भरजायेंगी जिन्हें तेरे पितरों ने और तेरे पितरों के पितरों ने जिस दिन से कि वे पृथिवी पर आये आज लों नहीं देखा तब वुह फिरा और फ़रऊन पास से निकल गया।
७ फ़रऊनके सेवकों ने उसे कहा कि यह पुरुष कबलों हमारे लिये फंदा होगा उन लोगों को जाने दे जिसतें वे परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करें अबलों तू नहीं जानता कि
८ मिसर नष्ट हुआ। तब मूसा और हारून फ़रऊन पास फिर पहुंचायेगये और उसने उन्हें कहा कि जाओ परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करो परंतु वे कौन से लोग हैं जो जायेंगे।
९ मूसा बोला कि हम अपने तरुणों और अपने वृद्धों और अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों और अपने झुंडों और अपने लेहड़ों समेत जायेंगे क्योंकि हमे आवश्यक है कि अपने ईश्वर का

१० पर्ब्ब मानें। तब उसने उन्हें कहा कि परमेश्वर योंहीं तुम्हारे संग रहे जो मैं तुम्हें और तुम्हारे बालकों को जाने देउं तुम
११ जानो क्योंकि बुराई तुम्हारे आगे है। ऐसा नहीं अब पुरुषगण जाओ और परमेश्वर की सेवा करो क्योंकि तुम ने यही चाहा सो वे फ़रऊन के आगे से हांके गये।

१२ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ टिड्डी के लिये मिसर की भूमि पर बढ़ा जिसतें वे मिसर के देश पर आवें और देश के हरएक साग पात जो ओलों से बच रहा है
१३ खालेवें। सो मूसा ने मिसर के देश पर अपनी छड़ी बढ़ाई और परमेश्वर ने उस सारे दिन और सारी रात पुरवी पवन चलाया और जब बिहान हुआ तो वुह पुरवी पवन टिड्डी
१४ लाया। और टिड्डी मिसर के सारे देश पर आई और मिसर के समस्त सिवाने पर उतरीं वे अति थीं कि उनके आगे ऐसी
१५ टिड्डी न आईथीं न उनके पीछे फिर आवेंगी। क्योंकि उन्होंने समस्त पृथिवी को छा लिया यहां लों कि देश अंधियारा हो आया और उन्होंने देश की हरएक हरीयाली को और वृक्षों के फलों को जो ओलों से बचगयेथे चाटलियां और मिसर के समस्त देश में किसी वृक्ष पर अथवा खेत के साग पात में
१६ हरीयाली न बची। तब फ़रऊन ने मूसा और हारून को बेग बुलाया कि मैं तुम्हारे परमेश्वर ईश्वर का और
१७ तुम्हारा अपराधी हों। सो अब मैं तुम्हारी बिनती करताहों केवल इसबार मेरा अपराध क्षमा करो और परमेश्वर अपने ईश्वर से बिनती करो कि केवल इसी मरी को मुझ से दूर
१८ करे। सो वुह फ़रऊन के पास से निकल गया और परमेश्वर
१९ से बिनती किई। और परमेश्वर ने बड़ा पछवां भेजा जो टिड्डी को लेगया और उन्हें लाल समुद्र में डालदिया और
२० मिसर के समस्त सिवानों में एक टिड्डी न रही। परंतु परमेश्वर ने फ़रऊन के मन को कठोर करदिया कि उसनें

२१ इसराईल के संतान को जाने न दिया। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ा जिसतें मिसर के देश पर अंधकार छाजाय ऐसा अंधकार जो
२२ टटोला जावे। तब मूसा ने अपना हाथ स्वर्ग की ओर बढ़ाया और तीन दिन लों सारे मिसर के देश में गाढ़ा अंधियारा
२३ रहा। उन्होंने एक दूसरे को न देखा कोई तीन दिन भर के अपने स्थान से न उठा परंतु सारे इसराईल के संतान के
२४ निवासों में उंजियाला था। तब फ़रऊन ने मूसा को बुलाया और कहा कि जाओ परमेश्वर की सेवा करो केवल तुम्हारे झुंड और तुम्हारे लेहड़ें यहीं रहें तुम्हारे बालक
२५ भी तुम्हारे संग जायें। मूसा ने कहा कि तुझे अवश्यक है कि हमें बलिदान और होम का भेंट देवे जिसतें हम परमेश्वर
२६ अपने ईश्वर के आगे बलि चढ़ावें। हमारे पशु भी हमारे संग जायेंगे और एक खुर छोड़ा न जायगा क्योंकि हमें अवश्यक है कि उनमें से परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करें और जब लों उधर न जावें हम नहीं जानते कि कौनसी
२७ वस्तुन से परमेश्वर की सेवा करें। परंतु परमेश्वर ने फ़रऊन के अंतःकरण को कठोर कर दिया उसने उन्हें जाने
२८ न दिया। और फ़रऊन ने उसे कहा कि मेरे आगे से दूर हो आप को चौकस रख और फिर मेरा मुंह मत देख क्योंकि जिस
२९ दिन मेरा मुंह देखेगा तू मरजायगा। तब मूसा ने कहा कि तू ने अच्छा कहा मैं फिर तेरा मुंह न देखेंगा।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं फ़रऊन पर और मिसरियों पर एक मरी और लाओंगा उसके पीछे वुह तुम्हें यहां से जाने देगा और जब वुह तुम्हें जाने दे तो निश्चय तुम्हें
२ सर्ब्बथा धकिआवेगा। सो अब लोगों के कानोंकान कह

कि हरएक पुरुष अपने परोसी से और हरएक स्त्री अपनी
३ परोसिन से रुपे के गहने और सोने के गहने मांगलेवे। और
परमेश्वर ने उन लोगों को मिसरियों की दृष्टि में प्रतिष्ठा दिई
और मूसा भी मिसर की भूमि में फ़रऊन के सेवकों की और
४ लोगों की दृष्टि में महान था। और मूसा ने कहा
कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं आधी रात को निकल के
५ मिसर के बीचोंबीच जाओंगा। और मिसर के देश में सारे
पहिलौंठे फ़रऊन के पहिलौंठे से लेके जो सिंहासन पर बैठा है
उस सहेली के पहिलौंठे लों जो चक्की की ओट में है और
६ सारे पशु के पहिलौंठे मरजायेंगे। और मिसर के समस्त देश
में ऐसा बड़ा रोना पीटना होगा जैसा कि कभी न ऊआथा
७ न कभी फिर होगा। परंतु सारे इसराईल के संतान पर
एक कूकर भी अपनी जीभ न हिलावेगा न तो मनुष्य पर और
न पशु पर जिसतें तुम जानो कि परमेश्वर क्योंकर मिसरियों
८ में और इसराईलियों में बिभाग करता है। और यह तेरे
समस्त सेवक मुझ पास आवेंगे और मुझे प्रणाम करके
कहेंगे कि तू निकलजा और सब लोग जो तेरे पश्चाद्गामी हैं
जावें और उसके पीछे मैं निकल जाओंगा फिर वुह फ़रऊन
के पास से निपट रिसिया के निकलगया।
९ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जिसतें मेरे आश्चर्य मिसर
१० के देश में बढ़जायें फ़रऊन तुम्हारी न सुनेगा। और मूसा
और हारून ने ये सब आश्चर्य फ़रऊन के आगे दिखाये और
परमेश्वर ने फ़रऊन के मन को कठोर करदिया और उसने
अपने देश से इसराईल के संतान को जाने न दिया।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ तब परमेश्वर ने मिसर के देश में मूसा और हारून को कहा।
२ कि यह मास तुम्हारेलिये मासों का आरंभ होगा और यह

२ तुम्हारे बरस का पहिला मास होगा। इसराईलियों की
सारी मंडली से कहो कि इस मास के दसवें में हरएक पुरुष
से अपने पितरों के घर के समान एक मेम्ना घर पीछे मेम्ना
४ अपने लिये लेवे। और यदि वुह घर मेम्ना के लिये छोटा होय
तो वुह और उसका परोसी जो उसके घर से लगाहुआ हो
५ प्राणी की गीनती के समान लेखे में मेम्ना को ठहराओ। तुम्हारा
मेम्ना निष्खोट होवे पहिले बरस का नरख भेड़ों से अथवा
६ बकरियों से लीजियो। और तुम उसे उसी मास के चौदहवें
दिन लों रख छोड़ियो और इसराईलियों की समस्त मंडली
७ सांझ को उसे मारें। और वे लोहू को लेवें और उन घरों
के जहां वे खावेंगे द्वार के उतरंग और देहली पर छोपा देवें।
८ और वे उसी रातको आग में भुनाहुआ उसका मांस
९ अखमीरी रोटी कड़वी तरकारी के साथ खावें। उसे कच्चा
और पानी में उसन के न खावें परंतु उसके सिर पांव और
१० उदर समेत आग पर भन के खावें। और उसमें से बिहान
लों कुछ न रहने दीजियो यदि कुछ उसमें से बिहान लों
११ रहजाय आग से जला दीजियो। और उसे यों
खाइयो कटि बंधेहुए अपनी जूतियां पाओं में पहिनेहुए अपना
लठ अपने हाथों में लियेहुए और उसे बेग खालीजियो
१२ कि परमेश्वर का बीतजानाहै। इसलिये कि मैं आज रात
मिसर के देश में होके निकलोंगा और सब पहिलौंठे मनुष्य के
और पशुन के जो उसमें हैं मारोंगा और मिसर की समस्त
देवताओं पर न्याय करोंगा क्योंकि मैं परमेश्वर हों।
१३ और वुह लोहू तुम्हारे घरों पर जहां जहां तुम हो तुम्हारे
लिये एक चिह्न होगा और मैं वुह लोहू देख के तुम पर से
बीतजाऊंगा और जब मिसर के देश को मारोंगा तब मरी
१४ तुम पर नाश करने को न आवेगी। और यह दिन तुम्हारे
लिये एक स्मरण के लिये होगा और तुम अपनी समस्त

पीढ़ियों के लिये उसे परमेश्वर के लिये पर्ब्ब रखियो तुम नित्य
१५ उस विधि से पर्ब्ब रखियो। सात दिन लों अख़मीरी
रोटी खाइयो पहिलेही दिन ख़मीर अपने घरों से उठा
डालियो इस लिये कि जो कोई पहिले दिन से लेके सातवें
दिन लों ख़मीरी रोटी खायगा सो प्राणी इसराईल से
१६ काटाजायगा। और पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा और
सातवें दिन भी पवित्र बुलावा होगा उसमें कोई कार्य न होगा
केवल भोजनही का कार्य हरएक मनुष्य से कियाजाय।
१७ और इस अख़मीरी रोटी के पर्ब को मानो क्योंकि उसी दिन
मैं तुम्हारी सेनाओं को मिसर के देश से निकाल लायाहों
इस लियें इस दिन को अपनी पीढ़ियों में विधि से नित्य
१८ मानो। पहिले मास की चौदहवीं तिथि से सांझ को
१९ एक्कीसवीं तिथि लों अख़मीरी रोटी खाइयो। सात दिन
लों तुम्हारे घरों में ख़मीर न पायाजावे क्योंकि जो कोई
ख़मीरी खायेगा वही प्राणी इसराईल की मंडली से काटा
२० जायगा चाहे परदेशी हो चाहे देशी। तुम कोई वस्तु
ख़मीरी मत खाइयो तुम अपने समस्त बस्तियों में अख़मीरी
२१ रोटी खाइयो। तब मूसा ने इसराईल के समस्त
प्राचीनों को बुलाया और उन्हें कहा कि अपने अपने घर के
समान एक एक मेम्ना लेओ और बीतजाना बलि करो।
२२ और ज़ूफ़े की एक आंटी लेओ और उसे उस लोहू में जो
बासन में है बोर के पटाव पर और दोनों उतरंग पर उसे
छापो और तुम्में से कोई बिहान लों अपने घर के द्वार से
२३ बाहर न जावे। क्योंकि परमेश्वर मिसरियों को मारने के
लिये आरपार जायगा और जब वुह पटाव पर और दोनों
उतरंग पर लोहू को देखे तब परमेश्वर द्वार पर से बीत
जायगा और नाशक तुम्हारे घरों में जाने न देगा कि मारे।
२४ और अपने और अपने संतानों के लिये बिधि के लिये

२५ नित्य उसे माना। और ऐसा होगा कि जब तुम उस देश में
जो परमेश्वर तुम्हें अपनी बाचाके समान देगा प्रवेश करोगे
२६ तब इस सेवा का पालन करियो। और ऐसा होगा कि जब
तुम्हारे संतान तुम से कहें कि इस सेवा का क्या अर्थ है।
२७ तब कहियो कि यह परमेश्वर के लिये है जो मिसर में
इसराईल के संतानों के घरों पर से बीतगया बीतजाने का
बलिदान है जब उसने मिसरियों को मारा और हमारे
घरों को बचाया तब लोगों ने सिर झुकाये और प्रणाम किये।
२८ और इसराईल के संतान चलेगये और जैसा कि परमेश्वर ने
मूसा और हारून को आज्ञा किई थी उन्होंने वैसाही किया।
२९ और यों ऊआ कि परमेश्वर ने आधी रात को
मिसर के देश में सारे पहिलौंठे को फ़रऊन के पहिलौंठे से
लेके जो अपने सिंहासन पर बैठताथा उस बंधुआ के पहिलौंठे
लों जो भकस में था पशुन के पहिलौंठों समेत नाश किये।
३० और रात को फ़रऊन उठा वुह और उसके सब सेवक और
सारे मिसरी उठे और मिसर में बड़ा बिलाप था क्योंकि
३१ कोई घर न रहा जिसमें एक न मरा। तब उसने
मूसा और हारून को रातही को बुलाया और कहा कि उठो
और मेरे लोगों में से निकल जाओ तुम और इसराईल के
संतान जाओ और अपने कहेके समान परमेश्वर की सेवा
३२ करो। जैसा तुम ने कहा है अपनी झुण्ड और लेहड़े भी लेओ
३३ और बिदा होओ और मेरे लिये भी आशीष चाहो। और
मिसरी उन लोगों पर शीघ्रता करतेथे कि वे मिसर के देश
से बेग निकाल जायें क्योंकि उन्होंने कहा कि हम सब मरे।
३४ और उन लोगों ने आटा गूंधा ऊआ उसे आगे कि वुह
ख़मीरी हो गूंधने के कठरे समेत कपड़ों में बांध के अपने कांधों
३५ पर उठालिया। और इसराईल के संतानों ने मूसा के कहने
के समान किया और उन्होंने मिसरियों से रूपे के गहने और

३६ सोनेके गहने और वस्त्र मांग लिये। और परमेश्वर ने उन लोगों को मिसरियों की दृष्टि में ऐसा अनुग्रह दिया कि उन्हों ने उन्हें दिया और उन्हों ने मिसरियों को लूट लिया।

३७ और इसराईल के संतानो ने रमशीस से सकूस को पांव पांव चलनिकले जो बालकों को छोड़ छः लाख पुरुष थे।

३८ और एक मिलोजुली मंडली भी और झुण्ड और लेहंडे

३९ और बज़त पशु उनके साथ गये। और उन्हों ने उस गूंधेज़ए आटे के जो वे मिसर से लेनिकले थे फुलके पकाये क्योंकि वुह ख़मीर न ज़आ था इस कारण कि वे मिसर से खदेड़ेगयेथे और ठहर न सके और अपने लिये कुछ भोजन सिद्ध न किया।

४० अब इसराईल के संतानों के निवास जो मिसर में

४१ रहतेथे चार सौ तीस बरस था। और चार सौ तीस बरस के अंत में यों ज़आ कि ठीक उसी दिन परमेश्वर की समस्त

४२ सेना मिसर के देश से निकलगई। उन्हें मिसर के देश से निकाल लाने के कारण यह रात परमेश्वर के लिये पालन करने के योग्य है कि वुह उन्हें मिसर के देश से बाहर लाया यह परमेश्वर की वुह रात है जिसे चाहिये कि इसराईल के

४३ संतान अपनी पीढ़ी पीढ़ी पालन करें। फिर परमेश्वर ने मूसा और हारून को कहा कि बीतजाने का विधि यह है

४४ कि उस्से कोई परदेशी न खावे। परंतु हरएक का मोल लियाज़आ दास जब तू ने उसका ख़तनः किया तब वुह

४५ उस्से खावे। बिदेशी और बनिहार सेवक उस्से न खावे।

४६ यह एकही घर में खायाजावे उसका मांस कुछ घर से बाहर

४७ न निकालाजावे और न उसकी हड्डी तोड़ीजावे। इसराईल के

४८ संतान की समस्त मंडली उसे पालन करें। और जब कोई परदेशी तुम्म बास करे और परमेश्वर के लिये पारजाना पाला चाहे तो उसके सब पुरुष ख़तनः करावें और तब वुह समीप आवे और उसे पालन करे और वुह ऐसा होगा

जैसा कि देश में जन्म पायाहो क्योंकि कोई अख़तनः जन उस्से
४९ न खावे। देश के उत्पन्न ऊओं के और देशी और बिदेशी के
५० लिये एकही व्यवस्था होगी। सारे इसराईल के संतानों ने
जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को आज्ञा किई
५१ बैसाही किया। और यों ऊआ ठीक उसी दिन परमेश्वर ने
इसराईल के संतानों को सेना सेना मिसर के देश से बाहर
निकाला।

१३ तेरहवां पर्ब्ब।

१।२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा। कि सब पहिलौंठे मेरे लिये
पवित्र कर जो कुछ कि इसराईल के संतानों में गर्भ को खोलें
३ क्या मनुष्य और क्या पशु सो मेरा है। और मूसा
ने लोगों से कहा कि इस दिन को जिसमें तुम मिसर से
बाहर आये और बंधुआई के घर से निकले स्मरण रखियो
क्योंकि परमेश्वर तुम्हें बाऊ बल से निकाल लाया ख़मीरी
४ रोटी खाई न जावे। तुम अबिब के मास में आज के दिन बाहर
५ निकले। और यों होगा कि जब परमेश्वर तुझे किनानियों
और हटियों और अमूरियों और हवियों और यबूसियों के
देश में लावे जिसे उसने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई कि
तुम्हें देगा जहां दूध और मधु बहताहै तब तू इस मास में
६ इस सेवा को पालन करियो। सात दिनताईं तू अख़मीरी
रोटी खाइयो और सातवें दिन परमेश्वर के लिये पर्ब्ब होगा।
७ अख़मीरी रोटी सात दिन खाईजावे और कोई ख़मीरी रोटी
तुझ पास दिखाई न देवे और न ख़मीरी तेरे समस्त देश में
८ तेरे आगे दिखाई देवे। और तू उसी दिन अपने पुत्र को
समझाइयो कि यह इस कारण है कि जब हम मिसर से बाहर
९ निकले तब परमेश्वर ने हम से यह किया। और यह एक
लक्षण तुझ पास तेरे हाथ में और तेरी दोनों आंखों के बीच

स्मरण के लिये होगा जिसतें परमेश्वर की व्यवस्था तेरे मुंह में
हो क्योंकि परमेश्वर ने तुझे भुजा के बल से मिसर से निकाल
१० लाया। इस लिये तू यह बिधि इस रितु में बरस बरस
११ पालन करियो। और ऐसा होगा कि जब परमेश्वर
तुझे किनानियों के देश में लावे जैसे उसने तुझ से और तेरे
१२ पितरों से किरिया खाई है और उसे तुझे देवे। तू सभों को
जो कि गर्भ को खोलता है और हरएक पशु के पहिलौंठे नरख
१३ परमेश्वर का। और गधे के हरएक पहिलौंठे को एक मेम्ना से
छुड़ाइयो और यदि तू उसे न छुड़ावे तो उसका गला
तोड़दीजियो और अपने संतानों में से मनुष्य के सारे पहिलौंठों
१४ को छुड़ा लीजियो। और यों होगा कि जब तेरा पुत्र कल को
तुझे पूछे कि यह क्या है तब उसे कहियो कि परमेश्वर ने
हमें अपनी भुजा के बल से मिसर से और बंधुआई के घर से
१५ निकाल लाया। और यों हुआ कि जब फ़रऊन ने हमें कठिनता
से छोड़ा कि परमेश्वर ने मिसर के देश में सब पहिलौंठे मनुष्य
के पहिलौंठों से लेके पशुन के पहिलौंठों लों मारडाला इस
कारण मैं उन सब नरों को जो गर्भ खोलते हैं परमेश्वर के लिये
बलि करता हों परंतु अपने संतानों के सब पहिलौंठों को
१६ छुड़ाता हों। और यह तेरे हाथ में और तेरी आंखों के बीच
में एक चिह्नानी होगी क्योंकि परमेश्वर अपने बाहुबल से हमें
१७ मिसर से निकाल लाया। और यों हुआ कि जब
फ़रऊन ने उन लोगों को जानेदिया तब ईश्वर उन्हें फिलस्तानियों
के देश के मार्ग से ले न गया यद्यपि वुह समीप था क्योंकि
ईश्वर ने कहा कि न हो कि लोग लड़ाई देख के पछतावें और
१८ मिसर को फिर जावें। परंतु ईश्वर ने उन लोगों को लाल
समुद्र के बन की ओर लेगया और इसराएल के संतान पांती
१९ पांती मिसर के देश से निकले चलेगये। और मूसा ने यूसफ़
की हड्डियां साथ ले लिईं क्योंकि उसने इसराएल के संतान को

किरिया देके कहाथा कि निश्चय ईश्वर तुम से भेंट करेगा तुम
२० यहां से मेरी हड्डियां अपने साथ लेजाइयो। फिर वे
सकूस से चलनिकले और बन के कोर पर छावनी किई।
२१ और परमेश्वर उनके आगे आगे दिन को मेघ के खंभे में होके
उन्हें मार्ग बताताथा और रात को आग के खंभे में होके कि
२२ उन्हें प्रकाश करे जिसतें रात दिन चलेजावें। उसने दिन को
मेघ के खंभे को और रात को आग के खंभे को उन लोगों के
आगे से न उठाताथा।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

१।२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा। कि इसराईल के संतान से
कह कि फिरें और पीहाहीरूत के आगे मगडल और समुद्र
के मध्य में छावनी करें बालज़फन के सन्मुख जो समुद्र के तीर
३ पर है डेरा करें। क्योंकि फ़रऊन इसराईल के संतानों के
विषय में कहेगा कि वे इस देश में बझे हैं और बन ने उन्हें
४ छेकलियाहै। और मैं फ़रऊन के मन को कठोर करोंगा
कि वुह उनका पीछा करेगा और मैं फ़रऊन और उसकी
समस्त सेना पर प्रतिष्ठित होऊंगा जिसतें मिसरी जानें कि
५ परमेश्वर मैं हों और उन्होंने ऐसाही किया। और मिसर
के राजा को कहागया कि लोग भागगये तब फ़रऊन का
और उसके सेवकों का मन लोगों के बिरोध में फिरगया
और वे बोले कि हम ने यह क्या किया कि इसराईल को
६ अपनी सेवा से जाने दिया। तब उसने अपना रथ जोता
७ और अपने लोग साथ लिये। और उसने छः सौ चुनेहुए
रथ और मिसर के समस्त रथ साथ लिये और उन सभों
८ पर प्रधान बैठलाये। और परमेश्वर ने मिसर के राजा
फ़रऊन के मन को कठोर करदिया और उसने इसराईल
के संतानों का पीछा किया परंतु इसराईल का संतान हाथ

९ बढ़ायेहुए निकले। परंतु मिसरी उनका पीछा कियेचलेगये और फ़रऊन के सारे घोड़ों और रथों और उसके घोड़चढ़ों और उसकी सेना ने समुद्र के तीर पीहाहीरूत के समीप बालज़फ़न के सन्मुख उन्हें छावनी खड़ी करते जाही लिया।
१० और जब फ़रऊन पास आया इसराईल के संतानों ने आंखें ऊपर किईं और मिसरियों को अपने पीछे आतेहुए देखा और अत्यंत डरगये तब उन्हों ने परमेश्वर से दोहाई
११ दिई। और मूसा से कहा कि क्या मिसर में समाधि न थें कि तू हमें मरने के लिये वहां से बन में लाया तू ने हमसे यह क्या व्यवहार किया कि हमें मिसर से निकाल लाया।
१२ क्या यह वही बात नहीं जो हम ने मिसर में तुझ से कहीथी कि हमसे हाथ उठा जिसतें हम मिसरियों की सेवा करें कि हमारे लिये मिसरियों की सेवा करना बन में मरने से अच्छा
१३ था। तब मूसा ने लोगों को कहा कि मत डरो खड़े रहो और परमेश्वर का मोक्ष देखो जो आज के दिन वुह तुम्हें दिखावेगा क्योंकि उन मिसरियों को जिन्हें तुम आज देखतेहो उन्हें
१४ फिर कधी न देखोगे। परमेश्वर तुम्हारे लिये युद्ध करेगा और
१५ तुम चुपचाप रहोगे। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू क्यों मेरे आगे रोताहै इसराईल के संतान से कह कि वे आगे
१६ बढ़ें। परंतु तू अपनी छड़ी उठा और समुद्र पर अपना हाथ बढ़ा और उसे दो भाग कर और इसराईल के संतान समुद्र
१७ के बीचोंबीचमें से सूखी भूमि पर होके चलेजायेंगे। और देख कि मैं मिसरियों के अंतःकरण को कठोर करदोंगा और वे उनका पीछा करेंगे और मैं फ़रऊन और उसकी सेना और उसके रथ
१८ और उसके घोड़चढ़ों पर अपना महिमा प्रगट करोंगा। और जब मैं फ़रऊन और उसके रथों और उसके घोड़चढ़ों पर अपना महिमा प्रगट करोंगा तब मिसरी जानेंगे कि मैं
१९ परमेश्वर हों। और ईश्वर का दूत जो इसराईल की

छावनी के आगे चलाजाताथा सो फिरा और उनके पीछे आरहा और मेघ का खंभा उनके सन्मुख से गया और उनके
२० पीछे जाठहरा। और मिसरियों की छावनी और इसराईल की छावनी के मध्य में आया और वुह एक अंधियारा मेघ मिसरियों के लिये होगया परंतु रात को इसराईल को उंजियाला देताथा
२१ सो रातभर एक दूसरे के पास न आया। फिर मूसा ने समुद्र पर हाथ बढ़ाया और परमेश्वर ने बड़ी प्रचंड पूरबी आंधी से रात भर समुद्र को चलाया और समुद्र को सुखा दिया और
२२ पानी को दो भाग किया। और इसराईल के संतान समुद्र के बीच में से सूखे पर होके चलेगये और पानी की भीत उनके
२३ दहिने और बायें ओर थी। और मिसरियों ने पीछा किया और फ़रऊन के सब घोड़े और उसके रथ और उसके घोड़चढ़े
२४ उसका पीछा कियेहुए समुद्र के मध्य लों आये। और यों हुआ कि परमेश्वर ने पिछले पहर उस आग और मेघ के खंभे में से मिसरियों की सेना पर दृष्टि किई और मिसरियों की
२५ सेना को घबराया। और उनके रथों की पहियों को निकाल डाला कि वे भारी से हांकाकरतेथे सो मिसरियों ने कहा कि आओ इसराईलियों के सन्मुख से भागें क्योंकि परमेश्वर उनके
२६ लिये मिसरियों से लड़ताहै। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ समुद्र पर बढ़ा जिसतें पानी मिसरियों पर और उनके रथों और उनके घोड़चढ़ों पर फिर आवे।
२७ तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र पर बढ़ाया और समुद्र बिहान होते अपने सामर्थ्य पर फिरा और मिसरी उसके आगे भागे
२८ और परमेश्वर ने मिसरियों को समुद्र में नाश किया। और पानी फिरा और रथों और घोड़चढ़ों और फ़रऊन की सब सेना को जो उनके पीछे समुद्र के बीच में आईथी छिपा लिया
२९ और एकभी उनमें से न बचा। परंतु इसराईल के संतान सूखी से समुद्र के बीचमें से चलेगये और पानी की भीत उनके

३० बांये ओर दहिने थी। सो परमेश्वर ने उस दिन इसराईलियों को मिसरियों के हाथ से यों बचाया और इसराईलियों ने
३१ मिसरियों की लोथें समुद्र के तीर पर देखीं। और जो बड़ा कार्य कि परमेश्वर ने मिसरियों पर प्रगट किया इसराईलियों ने देखा और लोग परमेश्वर से डरे तब परमेश्वर पर और उसके दास मूसा पर बिश्वास लाये।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

१ तब मूसा और इसराईल के संतान ने परमेश्वर का धन्यबाद और स्तुति इस रीति से गाये और कहके बोला कि मैं परमेश्वर का भजन करोंगा क्योंकि उसने बिभव से जय पाया उसने घोड़े
२ को उसके चढ़वैया समेत समुद्र में नष्ट किया। परमेश्वर मेरी सामर्थ्य और मेरा गान है और वुह मेरी मुक्ति ऊआ वुह मेरा ईश्वर है मैं उसके लिये निवास सिद्ध करोंगा मेरे पिता का
३ ईश्वर है मैं उसका महिमा करोंगा। परमेश्वर योद्धा है
४ परमेश्वर उसका नाम है। उसने फ़रऊन के रथ और उसकी सेना को समुद्र में डालदिया उसके चुनेऊए प्रधान भी लाल
५ समुद्र में डूबेहैं। गहिरायों ने उन्हें ढांप लिया वे पत्थर के
६ समान नीचे लों डूबगये। हे परमेश्वर तेरा दहिना हाथ सामर्थ्य में महान ऊआ हे परमेश्वर तेरे दहिने हाथ ने बैरियों
७ को टुकड़ा टुकड़ा किया। तू ने अपने महिमा के महल से अपने बिरोधियों को उलटडाला तू ने अपने कोप को भेज के उन्हें
८ खूंटी की नाईं भस्म किया। और तेरे नथुनों के झकोर से जल एकट्ठेऊए और बाढ़ ढेर होके खड़े होगये और समुद्र के
९ अंतःकरण में गहराये जमगये। बैरी बोला कि मैं पीछा करोंगा मैं जाही लेऊंगा मैं लूट को बांट लोंगा उनसे मैं अपनी लालसा को संतुष्ट करोंगा मैं अपना ख़ड्ग खींचोंगा मेरा हाथ
१० उनको फेर बश में करेगा। तू ने अपने पवन से फूकमारा

समुद्र ने उन्हें छिपालिया वे सीसे की नाईं महा जलों में
११ डूबगये। हे परमेश्वर देवों में तेरे तुल्य कौन है पवित्रता में
तेरे तुल्य तेजोमय कौन है तेरी नाईं आश्चर्य करते स्तुतिमें
१२ भयंकर। तू ने अपना दहिना हाथ बढ़ाया पृथिवी उन्हें निगल
१३ गई। तू ने अपनी दयासे अपने छोड़ायेऊए लोगों की अगुआई
किई तू ने अपने सामर्थ्य से उन्हें अपने पवित्र निवास लों
१४ पऊंचाया। लोग सुन के डरेंगे और फलस्तियों के निवासियों
१५ को उदासी ग्रसेगी। तब अदूम के प्रधान बिस्मित होंगे मवाब
के बलवंतों को थर्थराहट ग्रसेगी किनान के समस्त बासी गल
१६ जायेंगे। उन पर भय और डर पड़ेगा तेरी भुजा के महत्व से
वे पत्थर की नाईं रहिजायेंगे जब लों तेरे लोग पार न जावें
हे परमेश्वर जब लों तेरे लोग जिन्हें तू ने मोल लिया पार न
१७ जावें। तू उन्हें भीतर लावेगा और अपने अधिकार के पहाड़
पर जो हे परमेश्वर तू ने अपने निवास के लिये बनाया है
और पवित्र स्थान हे परमेश्वर जिसे तेरे हाथों ने स्थापा है
१८ उस स्थान में तू उन्हें बोयेगा। परमेश्वर सनातन सनातन
१९ राज्य करेगा। क्योंकि फ़रऊन का घोड़ा उसके रथों और उसके
घोड़चढ़े समेत समुद्र में पैठा परंतु इसराईल के संतान समुद्र
२० के मध्य से सूखे सूखे चलेगये। तब हारून की बहिन
मरियम आगमज्ञानिनी ने खंजरी अपने हाथ में लिया और सब
२१ स्त्री ढोलों के साथ नाचतीऊईं उसके पीछे चलीं। और
मरियम ने उन्हें उत्तर दिया कि परमेश्वर का गान करो क्योंकि
उसने बिभव से जय पाया उसने घोड़े को उसके चढ़वैया समेत
२२ समुद्र में नष्ट किया। और मूसा इसराईल को लाल
समुद्र से लेगया और वे सूर के बन में गये और वे तीन दिन
२३ लों बन में चलेगये और पानी न पाया। और जब
वे मारः में आये तब मारः का पानी पी न सके क्योंकि वुह
२४ कड़ुआ था इस कारण वुह मारः कहाया। तब लोग यह

कहिके मूसा के बिरोध में कुड़कुड़ाने लगे कि हम क्या पीयें।
२५ उसने परमेश्वर से दोहाई दिई और परमेश्वर ने उसे एक पेड़ दिखाया जब उसने उसे पानियों में डाला तब पानी मीठे होगये वहां उसने उनके लिये एक बिधि और व्यवस्था बनाई
२६ और वहां उसने उन्हें परखा। और कहा कि यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द ध्यान से सुने और जो उसकी दृष्टि में अच्छा है उसे करे और उसकी आज्ञा पर कान धरे और उसकी बिधि को चेत में रक्खे तो मैं उन रोगों को जो मिसरियों पर लाया तुझ पर न देओंगा क्योंकि मैं वुह परमेश्वर हों जो
२७ तुझे चंगा करता है। वे फेर एलीम को जहां जल के बारह कूएं और खजूर के सत्तर वृक्ष थे आये और उन्होंने जल के तीर डेरा किया।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ फेर उन्होंने एलीम से यात्रा किई और इसराईल के संतानों की समस्त मंडली मिसर के देश से निकलने के पीछे दूसरे मास की पंदरहवीं तिथि सीना के बन में जो एलीम और
२ सीना के मध्य में है पहुंची। और इसराईल के संतानों की सारी मंडली मूसा और हारून पर बन में कुड़कुड़ाई।
३ और इसराईल के संतानों ने उन्हें कहा कि हाय कि हम परमेश्वर के हाथ से मिसर के देश में मारेजाते जब हम मांस की हांड़ियों के लग बैठतेथे और रोटी मनमन्ता खातेथे क्योंकि तुम हमें इस बन में निकाल लायेहो जिसतें सारी
४ मंडली को भूख से मारडालो। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं स्वर्ग से तुम्हारे लिये भोजन बरसाओंगा और लोग प्रतिदिन बंधेज से जाके बटोरें जिसतें मैं उन्हें जाचों
५ कि वे मेरी व्यवस्था पर चलेंगे अथवा नहीं। और यों होगा कि वे छठवें दिन औरदिन से दूना बटोरें और भीतर लाके

६ पकावें। सो मूसा और हारून ने इसराईल के समस्त संतानों से कहा कि सांझ को तुम जानोगे कि परमेश्वर तुम्हें मिसर
७ के देश से बाहर लाया। और बिहान को परमेश्वर का ऐश्वर्य देखोगे क्योंकि परमेश्वर के बिरोध में वुह तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुनताहै हम कौन कि तुम हम पर कुड़कुड़ाते
८ हो। और मूसा ने कहा कि यों होगा कि संध्याकाल को परमेश्वर तुम्हें खाने को मांस और बिहान को रोटी मनमंता देगा क्योंकि तुम्हारा झुंझलाना जो तुम उस पर झुंझलातेहो परमेश्वर सुनताहै और हम क्या हैं तुम्हारी
९ झुंझलाहट हम पर नहीं परंतु परमेश्वर पर है। फिर मूसा ने हारून से कहा कि इसराईल के संतान की सारी मंडली से कह कि परमेश्वर के समीप आओ क्योंकि उसने
१० तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुना। और यों ऊआ कि जब हारून इसराईल के संतान की सारी मंडली को कहिरहाथा तब उन्होंने बन की ओर दृष्टि किई और क्या देखतेहैं कि परमेश्वर का
११ महिमा मेघ में प्रगट ऊआ। और परमेश्वर ने
१२ मूसा से कहा। कि मैं ने इसराईल के संतानों का कुड़कुड़ाना सुना उन्हें कह कि तुम सांझ को मांस खाओगे और बिहान को रोटी से तृप्त होओगे और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर
१३ तुमारा ईश्वर हों। और योंऊआ कि सांझ को बटेरें ऊपर आईं और तंबूओं को ढांपलिया और बिहान को सेना
१४ के आसपास ओस पड़ी। और जब ओस पड़के ऊपर गई तब क्या देखतेहैं कि बन में छोटी छोटी गोल बस्तु ऐसी सेत
१५ जैसे पालाका टुकड़ा पृथिवी पर पड़ाहो। और इसराईल के संतानों ने देखके आपुस में कहा कि यह क्या है क्योंकि उन्होंने न जाना कि वुह क्या है तब मूसा ने उन्हें कहा कि यह रोटी
१६ जिसे परमेश्वर ने तुम्हें खाने को दियाहै। यह वुह बात है जो परमेश्वर ने तुम्हें कहीथी कि हरएक उसमें से

अपने खानेके समान मनुष्य पीछे एक ओमर एकट्ठे करे अपने प्राणियोंकी गिनतीके समान उनके लिये जो उसके
१७ तंबू में हैं लेवे। तब इसराईल के संतानों ने योंहीं किया और
१८ किसी ने थोड़ा और किसी ने बहुत एकट्ठा किया। और जब हरएक ने अपने को दूसरे से तौला तो जिसने बहुत एकट्ठा कियाथा कुछ अधिक न पाया और उसका जिसने थोड़ा एकट्ठा कियाथा कुछ न घटा हरएक ने उनमें से अपने खाने भर
१९ बटोरा। और मूसा ने कहा कि कोई उसमें से बिहान लों
२० रख न छोड़े। तथापि उन्होंने मूसा की बात को न माना परंतु कितनों ने बिहान लों कुछ रख छोड़ा और उसमें कीड़े पड़गये
२१ और बसानेलगा मूसा उन पर क्रुद्ध हुआ। और उनमें से हरएक ने हर बिहान को अपने खाने के समान बटोरा और जब सूर्य का घाम पड़ा तब वुह पिघलगया।
२२ और यों हुआ कि छठवें दिन उन्होंने दूना भोजन बटोरा जन पीछे दो ओमर और मंडली के समस्त अध्यक्षों ने आके मूसा
२३ को जनाया। उसने उन्हें कहा कि यह वही है जो परमेश्वर ने कहा है कि कल बिश्राम परमेश्वर का पवित्र बिश्राम है तुम्हें भूंजना हो सो भूंज लेओ और जो पकाना हो सो पकालेओ और जो बच रहे सो अपने लिये बिहान लों यत्न से रक्खो।
२४ सो जैसा मूसा ने कहाथा वैसा उन्होंने बिहान लों रहने दिया वुह
२५ न सड़ा न उसमें कीड़े पड़े। और मूसा ने कहा कि उसे आज खाओ क्योंकि आज परमेश्वर का बिश्राम है आज तुम खेत में
२६ न पाओगे। छः दिन लों उसे बटोरो परंतु सातवां दिन
२७ बिश्राम है उसमें कुछ न पाओगे। और ऐसा हुआ कि बहुतेरे उन लोगोंमें से सातवें दिन बटोरने को गये और
२८ कुछ न पाया। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि कब लों तुम मेरी आज्ञाओं को और मेरी व्यवस्था को पालन न करोगे।
२९ देखो कि परमेश्वर ने तुम्हें बिश्राम दिया इसलिये वुह तुम्हें

छटवें दिन में दो दिन का भोजन देता है हरएक तुम्में से अपने
३० स्थान से बाहर न जावे। तब लोगों ने सातवें दिन बिश्राम
३१ किया। और इसराईल के घराने ने उसका नाम मन्न रक्खा
और वुह धनिआं की नाईं स्वेत और उसका स्वाद मधु सहित
३२ टिकिया की नाईं था। और मूसा ने कहा कि यह वुह
बात है जो परमेश्वर आज्ञा करता है कि उस्से एक ऊमर भर
अपनी पीढ़ियों के लिये धर रक्खो जिसतें वे उस रोटी को देखें
जो मैं ने तुम्हें बन में खिलाई जब मैं तुम्हें मिसर के देश से बाहर
३३ लाया। और मूसा ने हारून को कहा कि एक हांड़ी ले और
एक ऊमर मन्न उसमें भर और परमेश्वर के आगे रख छोड़
३४ जिसतें वुह तुम्हारी पीढ़ियों के लिये धराजाय। सो जैसा कि
परमेश्वर ने मूसा को कहाथा वैसा हारून ने साक्षी के आगे उसे
३५ धर रक्खा। और इसराईल के संतान चालीस बरस जब लों
कि वे बस्ती में न आये मन्न खाते रहे जब लों कि वे किनान की
३६ भूमि के सिवाने में न आवे मन्न खाते रहे। अब एक ऊमर
ईफा का दसवां भाग है।

१७ सत्तरहवां पर्ब्ब।

१ तब इसराईल के संतान की समस्त मंडली ने अपने यात्र में
परमेश्वर की आज्ञाओं के समान सीन के बन से यात्रा किई
और रफीदिम में डेरा किया वहां लोगों के पीने को पानी
२ न था। सो लोग मूसा से झगड़नेलगे और कहा कि हमें पानी
दे कि पीयें मूसा ने उन्हें कहा कि मुझ से क्यों झगड़ते हो और
३ परमेश्वर की क्यों परिक्षा करते हो। और लोग पानी के
पियासे थे और मूसा पर कुड़कुड़ाये और कहा कि तू हमें
मिसर से क्यों निकाल लाया कि हमें और हमारे लड़कों को
४ और हमारे पशुन को पियास से मारे। मूसा ने पुकार के
परमेश्वर से कहा कि मैं इन लोगों से क्या करों वे मुझ पर

५ पत्थरवाह करने को सिद्ध हैं परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों के आगे जा और इसराईल के संतान के प्राचीनों को अपने साथ ले और अपनी छड़ी जिस्से तू ने समुद्र को माराथा
६ अपने हाथ में ले और जा। देख मैं वहां हौरेब के पहाड़ पर तेरे आगे खड़ा होंगा तू उस पहाड़ को मारेगा और उस्से जल निकलेगा कि लोग पीयें सो मूसा ने इसराईल के प्राचीनों
७ की दृष्टि में यही किया। और इसराईल के संतानों के विवाद के कारण और इस कारण कि उन्होंने परमेश्वर की परिछा करके कहाथा कि परमेश्वर हमारे मध्य में है कि नहीं उसने उस
८ स्थान का नाम मासा और मरीबा रक्खा। तब
९ अमालक चढ़आये और रफीदिम में इसराईल से लड़े। तब मूसा ने यूशुअ से कहा कि हममें से लोग चुन और निकल कर अमालक से लड़ कल मैं ईश्वर की छड़ी अपने हाथ में लेके
१० पहाड़ की चोटी पर खड़ा होंगा। सो जैसा मूसा ने उसे कहाथा यूशुअ ने वैसा किया और अमालक से लड़ा मूसा और
११ हारून और हूर पहाड़ की चोटी पर चढ़े। और यों हुआ कि जब मूसा अपना हाथ उठाताथा तब इसराईल के संतान जय पातेथे और जब हाथ लटका देताथा तब अमालक जय
१२ पातेथे। परंतु मूसा के हाथ भारी होरहेथे तब उन्होंने एक पत्थर लेके उसके नीचे रक्खा वुह उस पर बैठा और हारून और हूर एक एक ओर और दूसरा दूसरी ओर उसके हाथों को संभाले रहे और उसके हाथ सूर्य्य के अस्त लों स्थिर
१३ रहे। और यूशुअ ने अमालक और उसकी सेना को खड्ग की
१४ धार से जीत लिया। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि स्मरण के लिये पुस्तक में इसे लिख रख और यूशुअ के कान में कह दे कि मैं अमालक का नाम और चिह्न स्वर्ग के नीचे से
१५ मिटा देओंगा। और मूसा ने यज्ञबेदी बनाई और उसका
१६ नाम यह रक्खा कि परमेश्वर मेरी ध्वजा। क्योंकि उसने कहा

कि परमेश्वर ने किरियाखा के कहा है कि मैं अमालक के साथ पीढ़ी से पीढ़ी लों लड़ता रहोंगा।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

१ जब मदीन के याजक मूसा के ससुर यसरू ने यह सब सुना कि ईश्वर ने मूसा और उसके लोग इसराईल के लिये क्या किया और परमेश्वर इसराईल को मिसर से बाहर
२ लाया। कि मूसा ने अपनी पत्नी सफूरा को फेर भेजाथा उसके ससुर यसरू ने उसके पीछे उसे और उसके दोनों पुत्रों को
३ लिया। जिनमें से एक का नाम जरशम इस लिये कि उसने
४ कहा कि मैं परदेशी हों। और दूसरे का इलीआज़र क्योंकि मेरे पिता का ईश्वर मेरा सहायक है और उसने मुझे फ़रऊन
५ के खड्ग से बचाया है। और मूसा का ससुर यसरू उसके पुत्र और उसी पत्नी को लेके मूसा पास बन में आया जहां उसने
६ ईश्वर के पहाड़ पर डेरा कियाथा। और मूसा से कहलाभेजा कि मैं तेरा ससुर यसरू तेरी पत्नी और उसके पुत्र तुझ पास
७ आये हैं। तब मूसा अपने ससुर की भेंट को निकला और उसे प्रणाम किया और उसे चूमा और आपुस में
८ एक ने दूसरे का क्षेम कुशल पूछा और तंबू में आये। और जो कुछ परमेश्वर ने इसराईल के लिये फ़रऊन और मिसरियों स कियाथा और समस्त कष्ट जो मार्ग में उन पर पड़ेथे और कि परमेश्वर ने उन्हें क्योंकर बचाया मूसा ने अपने ससुर यसरू से
९ सब कुछ वर्णन किया। और यसरू ने उन सब उपकारों के कारण से जिसे परमेश्वर ने इसराईल पर किया जिन्हें उसने
१० मिसरियों के हाथ से बचाया आनंदित ऊआ। और यसरू बोला कि परमेश्वर धन्य है जिसने तुझे मिसरियों के हाथ और फ़रऊन के हाथ से बचाया और जिसने लोगों को मिसरियों
११ के बश से छुड़ाया। अब मैं जानता हों कि परमेश्वर सब

देवों से बड़ा है क्योंकि वुह उन कामों में जो उन्होंने अहंकार
१२ से किये उन पर प्रबल हुआ। और मूसा का ससुर यसरू
जलाने की भेंट और बलिदान ईश्वर के लिये लाया और
हारून और इसराईल के समस्त प्राचीन मूसा के ससुर के
साथ रोटी खाने के लिये ईश्वर के आगे आये।
१३ और दूसरे दिन यों हुआ कि मूसा लोगों का न्याय करने
को बैठा और लोग मूसा के आगे बिहान से सांझ लों खड़े
१४ रहे। तब मूसा के ससुर ने सब कुछ जो उसने लोगों से
किया देख के कहा कि यह तू लोगों से क्या करताहै तू क्यों
आप अकेला बैठाहै और सब लोग बिहान से सांझ लों तेरे
१५ आगे खड़े हैं। मूसा ने अपने ससुर से कहा कि यह इस
लिये है कि लोग ईश्वर को ढूंढ़ने के लिये मुझ पास आतेहैं।
१६ जब उनमें कुछ बिवाद होताहै तब वे मेरे पास आतेहैं और
मैं मनुष्य में और उसके संगी के मध्यमें न्याय करताहों और
मैं उन्हें ईश्वर की बिधि और उसकी व्यवस्था से चिता देताहों।
१७ तब मूसा के ससुर ने मूसा से कहा कि तू अच्छा काम नहीं
१८ करता। तू निश्चय क्षीण होजायगा और यह मंडली भी जो
तेरे साथ है क्योंकि यह काम तुझ पर निपट भारी है यह
१९ तुझ से अकेले न बन पड़ेगा। अब मेरा कहा मान मैं तुझे
मंत्र देताहों और ईश्वर तेरे साथ रहे तू उन लोगों के
पास ईश्वर के आगे हो और ईश्वर के पास उनका बचन
२० लायाकर। और तू व्यवहार और व्यवस्था की बातें उन्हें
सिखला और वुह मार्ग जिस पर चलना और वुह काम जिसे
२१ करना उन्हें उचित है उन्हें बता। सो तू समस्त लोगों में से
योग्य मनुष्य चुन ले जो ईश्वर से डरतेहैं और सत्यबादी हों
और लोभी न होवें और उन्हें सहस्रों और सैकड़ों और पचास
२२ पचास और दस दस पर आज्ञाकारी कर। कि हरसमय में
उन लोगों का न्याय करें और ऐसा होगा कि वे हरएक बड़ा

कार्य्य तुझ पास लावें पर हरएक छोटा कार्य्य का बिचार आप करें
यों तेरे लिये सहज होजायगा और वे तेरे साथ रहेंगे।
२३ यदि तू यह काम करे और ईश्वर तुझे आज्ञा करे तो तू सहि
सकेगा और ये लोग भी अपने अपने स्थान पर कुशल से
२४ जायेंगे। सो मूसा ने अपने ससुर का कहा सुना और जो उसने
कहाथा उसने सब किया और मूसा ने समस्त इसराईलियों में से
योग्य मनुष्य चुने और उन्हें लोगों का प्रधान किया सहस्रों का
प्रधान सैकड़ों का प्रधान पचास का प्रधान और दस दस का
२५ प्रधान। वे हर समय में लोगों का न्याय करतेथे कठिन कार्य
मूसा पास लातेथे परंतु हरएक छोटी बात आपही चुका लेतेथे।
२६ फिर मूसा ने अपने ससुर को बिदा किया और वुह
अपने देश को चलागया।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ और इसराईल के संतानों ने मिसर की भूमि से बाहर होके
२ तीसरे मास के उसी दिन सीना के बन में आये। क्योंकि वे
रफ़ीदिम से चलके सीना में आये और बन में डेरा किया
और इसराईल ने पहाड़ के आगे तंबू खड़ा किया।
३ तब मूसा ईश्वर पास चढ़गया और परमेश्वर ने उसे पहाड़ पर
से बुलाया और कहा कि तू याक़ूब के घराने को यों कहियो
४ और इसराईल के संतानों को यों बोलियो। कि तुमने देखा
कि मैं ने मिसरियों से क्या किया और तुम्हें गिद्ध के डैनों पर
५ बैठला के अपने पास ले आया। और यदि मेरे शब्द को निश्चय
मानोगे और मेरी बाचा का पालन करोगे तो तुम समस्त
लोगों से बिशेष धनिक होओगे क्योंकि सारी पृथिवी मेरी है।
६ और तुम मेरे लिये याजकमय राज्य और एक पवित्र देशी
होओगे ये बातें तू इसराईल के संतान को कहियो।
७ तब मूसा आया और लोगों के प्राचीनों को बुलाया और उनके

सन्मुख सारी बातें जो परमेश्वर ने उसे कहींथीं कहि सुनाईं।
८ और सब लोगों ने एकसाथ उत्तर देके कहा कि जो कुछ
परमेश्वर ने कहाहै सो हम करेंगे और मूसा ने लोगों का उत्तर
९ परमेश्वर कने ले पहुंचाया। और परमेश्वर ने मूसा से कहा
कि देख मैं अंधियारे मेघ में तुझ पास आताहों कि जब मैं तुझ
से बातें करों लोग सुनें और सदालों प्रतीति करें और मूसा ने
१० लोगों की बातें परमेश्वर से कहीं। और परमेश्वर ने मूसा
से कहा कि लोगों पास जा और आज कल में उन्हें पवित्र कर
११ और उनके कपड़े धुलवा। और तीसरे दिन सिद्ध रहें कि
परमेश्वर तीसरे दिन सारे लोगों की दृष्टि में सीनाके पहाड़
१२ पर उतरेगा। और तू लोगों के लिये चारों ओर बाड़ा बांधियो
और कहियो कि आपसे चौकस रहो पहाड़ पर न चढ़ो और
उसके खूंट को न छूओ जो कोई पहाड़ को छूयेगा सो निश्चय
१३ प्राण से माराजायगा। कोई हाथ उसे न छूये नहीं तो वुह
निश्चय पत्थरवाह कियाजायगा अथवा बाण से माराजायगा
चाहे मनुष्य हो चाहे पशु जीता न बचेगा और जब तुरही
१४ शब्द अबेर करे तो पहाड़ पर चढ़े। तब मूसा ने पहाड़
पर से उतर के लोगों को पवित्र किया उन्हों ने अपने कपड़े
१५ धोये। और उसने लोगों से कहा कि तीसरे दिन सिद्ध रहो
१६ स्त्रियों से अलग रहियो। और यों हुआ कि तीसरे
दिन बिहान को मेघ गर्ज्जने लगे और बिजुलियां चमकीं और
पहाड़ पर काली घटा उमड़ी और तुरही का अतिबड़ा शब्द
१७ हुआ यहांलों कि सब लोग छावनी में थर्थराउठे। और
मूसा लोगों को तंबू के भीतर से बाहर लाया कि ईश्वर से भेंट
१८ करावे और वे पहाड की निचाई में जा खड़ेहुए। और सीना
का पहाड़ धूआं से भरगया क्योंकि परमेश्वर लवर में होके उस
पर उतरा और भट्ठी कासा धूआं उस पर से उठा और सारा
१९ पहाड़ अति कांपगया। और जब तुरही का शब्द बढ़ताजाताथा

तब मूसा ने कहा और ईश्वर ने उसे शब्द से उत्तर दिया।
२० और परमेश्वर सीना पहाड़ पर उतरा पहाड़ की चोटी पर
और परमेश्वर ने पहाड़ की चोटी पर मूसा को बुलाया और
२१ मूसा चढ़गया। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उतर जा और
लोगों को चिता ऐसा न होवे कि वे मेड़ को तोड़ के परमेश्वर
२२ को देखने को आवें और बहुतेरे उनमें नाश होजावें। और
याजकों को भी जो परमेश्वर के पास आयेहैं कह कि अपने
को पवित्र करें कहीं ऐसा न हो कि परमेश्वर उन पर चपेट
२३ करे। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि लोग सीना पहाड़
पर आ नहीं सक्ते क्योंकि तू ने तो हमें चितादियाहै कि पहाड़
२४ के आसपास बाड़ा बांधें और उसे पवित्र करें। परमेश्वर ने
उसे कहा कि चल नीचे जा और तू हारून समेत फिर ऊपर
आ परंतु याजकों को और लोगों को कह कि मेड़ तोड़ के
परमेश्वर पास ऊपर न आवें न होवे कि वुह उन पर चपेट
२५ करे। सो मूसा लोगों के पास नीचे उतरा और उनसे कहा।

२० बीसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर ईश्वर ने ये सब बातें कहीं। कि तेरा परमेश्वर ईश्वर जो
तुझे मिसर की भूमि से और बंधुआई के घर से निकाल लाया
३ मैं हों। मेरे सन्मुख तेरे लिये दूसरा देव न होगा।
४ अपने लिये खोद के किसी की मूर्ति और किसी वस्तु की प्रतिमा
जो ऊपर स्वर्ग में अथवा नीचे पृथिवी में अथवा जल में जो
५ पृथिवी के नीचे है मत बनाईयो। तू उनको प्रणाम मत कीजियो
न उनकी सेवा कीजियो इस लिये कि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर
ज्वलित ईश्वर हों पितरों के अपराध का दंड उनके पुत्रों को
जो मेरा बैर रखतेहैं उनकी तीसरी और चौथी पीढ़ी लों
६ देवैया हों। और उनमें से सहस्रों पर जो मुझे प्रेम करतेहैं
और मेरी आज्ञाओं को पालन करतेहैं दया करताहों।

७ परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारथ मत लीजियो क्योंकि परमेश्वर उसे जो उसका नाम अकारथ लेता है निष्पाप ८ न ठहरावेगा। बिश्राम दिन को पवित्र रखने के लिये स्मरण ९।१० कीजियो। छः दिन लों अपने समस्त कार्य्य कीजियो। परंतु सातवां दिन तेरे परमेश्वर ईश्वर का है उसमें कोई कुछ कार्य्य न करे न तू न तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा दास न तेरी दासी ११ न तेरे पशु न तेरे पाहुन जो तेरे फाटक के भीतर है। इस लिये कि परमेश्वर ने छः दिन में स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और सब कुछ जो उनमें हैं बनाये और सातवें दिन बिश्राम किया इस कारण परमेश्वर ने बिश्राम दिन को पवित्र और १२ पावन ठहराया। अपने माता पिता को प्रतिष्ठा दे जिसतें तेरी बय जिसे तेरा परमेश्वर ईश्वर तुझे पृथिवी पर १३।१४ देता है अधिक होवे। हत्या मत कर। परस्त्री गमन मत १५।१६ कर। चोरी मत कर। अपने परोसी पर झूठी साक्षी १७ मत दे। अपने परोसी के घर की लालच मत कर अपने परोसी की स्त्री और उसके दास और उसकी दासी और उसके बैल और उसके गदहे और किसी बस्तु की जो तेरे परोसी की है १८ लालच मत कर। और सब लोगों ने गर्ज्जना और बिजुली का चमकना और तुरही का शब्द और पर्बत से धूआं उठना देखा सब लोगों ने जब यह देखा तो हटे १९ और दूर जा खड़े रहे। तब उन्होंने मूसा से कहा कि तूही हम से बोल और हम सुनें परंतु ईश्वर हमसे न २० बोले न होवे कि हम मरजायें। मूसा ने लोगों को कहा कि भय मत करो इस लिये कि ईश्वर आया है कि तुम्हें परखे और जिसतें उसका भय तुम्हारे सन्मुख प्रगट होय जिसतें तुम २१ पाप न करो। तब लोग दूर खड़े रहे और मूसा उस गाढ़े २२ अंधकार के समीप गया जहां ईश्वर था। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू इसराईल के संतान से यों कह कि तुम ने देखा

२३ मैंने स्वर्ग से बातें किईं। तुम मेरे सन्मुख चांदी का देव और
२४ सोनें का देव मत बनाइयो। तू मेरे लिये मट्टी की यज्ञबेदी बना और उस पर अपने होम की भेंट चढ़ा और कुशल की भेंट और बलिदान अपनी भेड़ों और अपने बैलों से और जिस स्थान में अपना नाम प्रगट करोंगा वहां मैं
२५ तुझ पास आओंगा और तुझे आशीष देोंगा। और यदि तू मेरे लिये पत्थर की यज्ञबेदी बनावे तो गढ़ेऊए पत्थर से मत बना क्योंकि यदि तू उस पर हथियार उठावे तो उसे अपवित्र
२६ करेगा। और तू मेरी यज्ञबेदी पर सीढ़ी से मत चढ़ जिसतें तेरा नंगापन उस पर प्रगट न होवे।

२१ एकीसवां पर्ब्ब।

१।२ अब बिचार जिन्हें तू उनके आगे धरे ये हैं। कि यदि तू इबरानी दास को मोल लेवे तो वुह छः बरस तेरी सेवा करे
३ और सातवें में सेंत से छोड़ दियाजायगा। यदि वुह एकेला आया तो एकेला जायगा यदि वुह बिवाहित था तो उसकी
४ पत्नी उसके साथ निकलजायगी। यदि उसके स्वामी ने उसे पत्नी दियाहै और उसकी पत्नी उस्से बेटे और बेटियां जनी तो उसकी पत्नी और उसके बालक उसके स्वामी के होंगे और
५ वुह एकेला चलाजायेगा। और यदि वुह दास खोल के कहे कि मैं अपने स्वामी और अपनी पत्नी को और अपने बालक
६ को प्यार करताहों मैं निर्बंध न होंगा। तो उसका स्वामी उसे न्यायियों के पास लेजाय फिर उसे द्वार पर अथवा द्वार की चौकठ पर लावे और सुतारी से उसका कान छेदे और
७ वुह सदा उसकी सेवा करे। और यदि कोई मनुष्य अपनी कन्या को बेंचे जिसतें वुह दासी होय तो वुह दासों की
८ नाईं बाहर न जासकेगी। यदि वुह अपने स्वामी की दृष्टि में जिसने उस्से बिवाह किया बुरी होय तब वुह उसे छोड़वावे

परंतु उसे सामर्थ्य नहीं कि किसी अन्यदेशी के हाथ बेचडाले
९ क्योंकि उसने उस्से छल किया। और यदि वुह उसे अपने बेटे
१० से ब्याह देवे तो वुह उस्से बेटियों का ब्यवहार करे। यदि
वुह दूसरी को लेवे तो उसका अन्न और वस्त्र और बिवाह का
११ ब्यवहार न घटावे। और यदि वुह ये तीन उस्से न करे तो
१२ वुह सेंत से बिनदाम दिये चली जाय। जो कोई
किसी मनुष्य को मारे और वुह मरजाय वुह निश्चय घात
१३ कियाजाय। और यदि उस मनुष्य ने घात में न लगाहो परंतु
ईश्वर ने उसके हाथ में सौंपदियाहो तब मैं तुझे उसके भागने
१४ का स्थान बतादेंगा। परंतु यदि कोई मनुष्य अपने परोसी
पर साहस से चढ़ आवे जिसतें उसे छल से मारे तो उसे तू
१५ मेरी यज्ञवेदी से ले जिसतें वुह माराजाय। और वुह
जो अपने पिता अथवा अपनी माता को मारे निश्चय घात
१६ कियाजायगा। और जो मनुष्य को चुरावे और उसे बेंचडालें
अथवा वुह उसके हाथ में पायाजाय तो वुह निश्चय घात
१७ कियाजायगा। और वुह जो अपने पिता अथवा अपनी माता पर
१८ धिक्कार करे निश्चय घात कियाजायगा। और यदि दो मनुष्य
झगड़े और एक दूसरे को पत्थर से अथवा मुक्का मारे और
१९ वुह न मरे परंतु बिछौने पर पड़ारहे। तो यदि वुह उठखड़ा
होय और लाठी लेके चले तो जिसने मारा सो निर्दोष
ठहरेगा और केवल उसके समय की घटी के लिये भरदेवे
२० और चंगा करावे। और यदि कोई अपने दास अथवा
दासी को छड़ी मारे और वुह मारखाती ऊई मरजाय तो
२१ निश्चय उसका पलटा लियाजाय। तथापि यदि वुह एक दिन
अथवा दो दिन जीवे तो उसे दंड न दियाजावे इसि लिये कि
२२ वुह उसका धन है। यदि लोग झगड़ें और गर्भिणी को
दुःख पऊंचावे ऐसा कि उसका गर्भपात होजाय परंतु वुह
आप न मरे तो जिस रीति का दंड उसका पति कहे दियाजावे

२३ और न्यायियों के बिचार के समान उसे डांड़ देवे। और
२४ यदि वुह मरजाय तो तू प्राण की संती प्राण दे। आंख की
संती आंख दांत की संती दांत और हाथ की संती हाथ पांव
२५ की संती पांव। जलाने की संती जलाना और घाव की संती
२६ घाव और चोट की संती चोट। और यदि कोई
अपने दास अथवा अपनी दासी की आंख में मारे कि उसकी
२७ आंख फूटजाय तो उसकी संती में उसे छोड़ देवे। और यदि
वुह अपने दास का अथवा अपनी दासी का दांत तोड़े तो दांत
२८ की संती उसे छोड़ देवे। यदि मनुष्य को अथवा स्त्री को बैल
सींग मारे ऐसा कि वुह मरजाय तो वुह बैल पत्थरवाह किया
जाय और उसका मांस खाया नजावे परंतु बैल का स्वामी
२९ निर्दोष है। परंतु यदि वुह बैल आगे से सींग मारने की बान
रखताथा और उसके स्वामी को संदेश दियागया और उसने
उसे बांध न रक्खा परंतु उसने पुरुष अथवा स्त्री को मारडाला
तो बैल पत्थरवाह कियाजाय और उसका स्वामी भी घात
३० कियाजाय। और यदि उस पर डांड़ ठहरायाजाय तो अपने
प्राण के प्रायश्चित्त के लिये जो उसके लिये ठहरायागयाहो
३१ वुह देवे। चाहे उसने सींग से पुत्र को मारा हो अथवा पुत्री
को इसी आज्ञा के समान उसके लिये बिचार कियाजावे।
३२ यदि किसी के दास अथवा दासी को बैल सींग मारबैठे
तो वुह उसके स्वामी को तीस शीकल रूपा देवे और बैल
३३ पत्थरवाह कियाजाय। और यदि कोई गड़हा खोले अथवा
खोदे और उसका मुंह न ढांपे और बैल अथवा गदहा उसमें
३४ गिरे। तो उस गड़हे का स्वामी उसे भरदेवे और उनके
३५ स्वामी को दाम दे और लोथ उसीकी होगी। और यदि
किसीका बैल दूसरे के बैल को सतावे ऐसा कि वुह मरजाये
तो वुह जीते बैल को बेंचे और उसके दाम को आधो आध
आपुस में बांटलेवें और वुह मरा हुआ भी उनमें आधो आध

३६ बांटाजाय। और यदि जानाजाय कि उस बैल को सींग मारबैठने की बान थी और उसके स्वामी ने उसे बांध न रक्खा तो वुह निश्चय बैल की संती बैल देवे और मराहुआ उसका होगा।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

१ यदि कोई बैल अथवा भेड़ चोरावे और उसे मारे अथवा बेंचे तो वुह एक बैल के पांच बैल और एक भेड़ की चार भेड़े
२ देगा। यदि चोर सेंध मारतेहुए पायाजाय और कोई उसे
३ मारडाले तो उसकी संती लोहू न बहायाजायगा। यदि सूर्य उदय होवे तो उसकी संती लोहू बहायाजायगा उचित था कि वुह उसे भरदेता यदि वुह कंगाल हो तो चोरी के लिये
४ बेंचाजायगा। यदि चोरी की वस्तु निश्चय उसके हाथ में जीवत पाईजाय चाहे बैल हो चाहे गदहा चाहे भेड़ बकरी तो
५ वुह दूना देगा। यदि कोई खेत अथवा दाख की बारी खिलावे और अपने पशु उसमें छोड़े और दूसरे के खेत में चरावे तो अपना अच्छे से अच्छा खेत और सुंदर से
६ सुंदर दाख की बारी उसकी संती देगा। यदि आग फूट निकले और कांटों में जा लगे ऐसा कि अनाज की ढेर अथवा खड़ा हुआ अन्न अथवा खेत जलजाय तो जिसने आग बारी
७ निश्चय वुह भरदेगा। यदि कोई अपने परोसी को रूपा अथवा पात्र रखने को सौंपे और उसके घर से चोरीजाय तो जब वुह
८ चोर हाथ लगे तो वुह दूना भरदेगा। यदि चोर पकड़ा न जाय तो उस घर का स्वामी न्यायियों के आगे लायाजाय उसने अपने परोसी की संपत्ति पर अपना हाथ बढ़ाया कि
९ नहीं। इस कारण कि समस्त प्रकार का अपराध चाहे बैल चाहे गदहे चाहे भेड़ चाहे कपड़े चाहे किसी खोईहुई वस्तु को जिसे दूसरा अपना कहता है दोनों की बात न्यायियों के पास लाईजावें और जिसको न्यायी दोषी ठहरावे वुह अपने परोसी

१० को दूना देगा। यदि कोई अपने परोसी पास गदहा अथवा बैल अथवा भेड़ अथवा कोई पशु थाती रक्खे और वुह मरजाय अथवा अंगभंग होजाय अथवा हांकाजाय और कोई न देखे।
११ तो उन दोनों के मध्य में परमेश्वर की किरिया लिईजाय कि उसने अपने परोसी की संपत्ति में हाथ नहीं बढ़ाया और
१२ उसका स्वामी मानले तब वुह उसे भर न देगा। और यदि वुह उसके पास से चुरायाजाय तो वुह उसके स्वामी को भर दे।
१३ और यदि वुह फाड़ाजाय तो वुह उसे साक्षी के लिये लावे
१४ और भर न देगा। यदि कोई मनुष्य अपने परोसी से कुछ भाड़ा लेवे और वुह अंगभंग होजाय अथवा मरजाय यदि
१५ स्वामी उसके साथ न था तो वुह निश्चय उसे भरदेगा। पर यदि उसका स्वामी उसके साथ था तो वुह भर न देगा यदि
१६ भाड़े का होय तो उसके भाड़े के लिये जायगा। यदि कोई किसी कन्या को फुसलावे जिसकी वचनदत्त न ऊई और उसके संग
१७ शयन करे वुह अवश्य उसे दैजा देके पत्नी करे। यदि उसका पिता उसके देने में सर्वथा नाहकरे तो वुह कुआंरियों के
१८ दान के समान उसे दैजा देगा। तू टोनहिन को जीने
१९ मत दे। जो कोई पशु से रति करे निश्चय घात कियाजायगा।
२० जो कोई परमेश्वर को छोड़ किसी देवता को बलिदान देगा
२१ वुह निश्चय नाश कियाजायगा। परदेशी को मत खिजा और उसे मत सता इस लिये कि तुम मिसर के देश में परदेशी थे।
२२ किसी विधवा को अथवा अनाथ लड़के को दुःख मत देओ।
२३ यदि तू उन्हें किसी रीति से दुःख देवे और वे मेरी दोहाई
२४ देवें तो मैं निश्चय उनका रोना सुनोंगा। और तेरी पत्नियां
२५ विधवा और तेरे संतान अनाथ होजायेंगे। यदि तू मेरे लोगों में के कंगालों को कुछ ऋण देवे तो उस पर ब्याज ग्राहक के
२६ समान मत हो और उस्से ब्याज मत ले। यदि तू अपने परोसी के वस्त्र बंधक रक्खे तो चाहिये कि तू सूर्य अस्त होतेऊए उसे

२७ पऊंचा देवे। क्योंकि उसका केवल यही ओढ़ना है यह उसके देह का वस्त्र है जिसमें वुह सोररहताहै और यों होगा कि जब वुह मेरे आगे दोहाई देगा तब मैं उसकी सुनोंगा क्योंकि मैं
२८ दयाल हों। तू अध्यक्षों को दुर्बचन मत कह और अपनी मंडली
२९ के प्राचीनों को स्राप मत दे। अपने पक्के फलों की बढ़ती में से और अपने दाखरस में से देने में विलंब मत कर अपने पुत्रोंमें
३० से पहिलैांठा मुझे दे। ऐसाही तू अपने बैलों से और भेड़ों से कीजियो सात दिन लों वुह मा के साथ रहे आठवें दिन उसे
३१ मुझे दीजियो। और तुम मेरे लिये पवित्र मनुष्य होओगे और जो पशु खेत में फाड़ाजाय उसका मांस मत खाइयो तुम उसे कुत्तों को दीजियो।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

१ तू मिथ्या संदेश मत फैलाइयो अधर्म की साक्षी में दुष्टों का
२ साथी मत हो। बुराई में मंडली का पीछा मत कर और तू किसी झगड़े में बऊतों की ओर होके अन्याय का उत्तर मत
३ दीजियो। और न कंगाल पर उसके व्यवहार पद में दृष्टि
४ कीजियो। यदि तू अपने बैरी के बैल अथवा गदहे को बहकते
५ देखे तो उसे आवश्यक उस पास पऊंचाइयो। यदि तू अपने बैरी के गदहे को देखे कि बोझ के नीचे बैठगया क्या उसकी
६ सहाय न करेगा तू निश्चय उसकी सहाय कीजियो। तू अपने
७ कंगाल के व्यवहार पद में न्याय से अलग मत रहियो। झूठी बात से दूर रहियो और निर्दोषियों और धर्म्मियों को घात
८ मत कीजियो क्योंकि मैं दुष्टों को निर्दोष न ठहराओंगा। तू दान मत लेना क्योंकि दान दृष्टिमानों को अंधा करताहै और
९ धर्म्मियों के वचन को फेर देताहै। बिदेशियों पर भी अंधेर मत कीजियो क्योंकि तुम परदेशी के मन को जानतेहो इस लिये कि
१० तुम आपभी मिसर के देश में परदेशी थे। अपनी भूमि में छः

११ बरस बो और उसके फल एकट्ठे कर। पर सातवें में उसे चैन में पड़ी रहने दे जिसतें तेरे लोग के कंगाल उसे खावें और जो उनसे बचे खेत के पशु चरें इसी रीति अपनी द्राक्षा और
१२ जलपाई की बारी से व्यवहार कीजियो। छः दिन अपना काम काज करना और सातवें दिन बिश्राम कीजियो जिसतें तेरे बैल और तेरे गदहे चैन करें और तेरी दासियों के बेटे और
१३ परदेशी सुस्तावें। और सब बात में जो मैं ने तुझे आज्ञा दिई है चैाकस रह उपरी देवता का नाम लों मत लेओ और तेरे
१४ मुंह से सुना न जाय। तू बरस दिन में तीन बार मेरे
१५ लिये पर्ब्ब मान तू अख़मीरी रोटी का पर्ब्ब मान। सात दिन लों जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है अख़मीरी रोटी खा आबब
१६ के मास में कोई मेरे आगे छूंछा न आवे। लवने का पर्ब तेरे परिश्रम के प्रथमही फल जो तू ने अपने खेत में बोये और एकट्ठा करने का पर्ब बरस के अंत जब तू खेत से अपने परिश्रम
१७ के फल एकट्ठा करले। तेरे समस्त पुरुष बरस बरस तीन बार
१८ परमेश्वर ईश्वर के सन्मुख होवें। तू मेरे बलिदान का लोहू जो मेरे लिये है ख़मीरी रोटी के साथ मत चढ़ा और मेरे
१९ बलि की चिकनाई बिहान लों रहने न पावे। अपनी भूमि के पहिले फलों के पहिले को परमेश्वर अपने ईश्वर के मंदिर में ला तू बकरी का मेम्ना उसकी माता के दूध में मत सिझा।
२० देख मैं एक दूत तेरे आगे भेजता हों कि मार्ग में तेरी रक्षा करे और तुझे उस स्थान में जो मैं ने सिद्ध किया है
२१ लेजाय। उसे चैाकस रह और उसका कहा मान उसे मत खिजा क्योंकि वुह तुम्हारे अपराध को क्षमा न करेगा इसलिये
२२ कि मेरा नाम उसमें है। पर यदि तू सचमुच उसका कहा माने और सब जो मैं कहता हों माने तो मैं तेरे शत्रुन का
२३ शत्रु और तेरे बैरियों का बैरी होंगा। क्योंकि मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा और तुझे अमूरियों और हित्तियों और

फ़रज़्ज़िरों और किनानियों और हव्वियों और यबूसियों के
२४ देश में लावेगा और मैं उन्हें नाश करोंगा। तू उनके देवतों
के आगे मत झुकियो न उनकी सेवा करना न उनके ऐसा
कार्य करना परंतु उन्हें ढादे और उनकी मूर्त्तिन को तोड़डाल।
२५ और परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करो और वुह तुम्हारे
अन्न जल में आशीष देगा और मैं तुम्हारे बीच मेंसे रोग
२६ उठालेंगा। तेरे देश में कोई गर्भपात और बांझ न
२७ रहेगा मैं तेरे दिनों के गिनती को पूरा करोंगा। मैं अपने
भय को तेरे आगे भेजोंगा मैं उन लोगों को जिन पास तू
आवेगा नाश करोंगा और मैं ऐसा करोंगा कि तेरे बैरी तेरे
२८ आगे पीठ फेर देंगे। मैं तेरे आगे बर्रय को भेजोंगा जो हव्वी
२९ और किनानी और हत्ती को तेरे साम्ने से भगावेंगी। मैं उन्हें
एकही बरस में तेरे आगे से दूर न करोंगा ऐसा नहो कि देश
३० उजाड़ होवे और बन के पशु तेरे बिरोध में बढ़जायें। मैं
उन्हें थोड़े थोड़े करके तेरे आगे से दूर करोंगा यहां लों कि
३१ तू बढ़जाय और देश का अधिकारी होजाय। लालसमुद्र से
लेके फ़लस्तियों के समुद्र लों और बन से नदी लों तेरा सिवाना
बांधेंगा क्योंकि मैं देश के बासियों को तेरे बश में करोंगा
३२ और तू उन्हें अपने आगे से निकाल देगा। तू न उनसे न उनके
३३ देवतों से बाचा बांधना। वे तेरे देश में रहेंगे ऐसा न
होवे कि वे मेरे बिरोध में तुझ से पाप करावें क्योंकि यदि तू
उनके देवों की सेवा करे तो यह तेरे लिये निश्चय फंदा होगा।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

१ और उसने मूसा से कहा कि परमेश्वर पास चढ़आ तू और
हारून और नादाब और अबीहू और इसराईल के संतान
के प्राचीनों में से सत्तर मनुष्य सहित तुम दूर से प्रार्थना
२ करो। और मूसा एकेला परमेश्वर के पास जायगा पर वे

पास न आवें और लोग उसके साथ न चढ़जायें।
३ और मूसा ने आके परमेश्वर की सारी बातें और न्याय लोगों से कहीं और सारे लोगों ने एक शब्द से उत्तर देके कहा कि
४ सारी बातें जो परमेश्वर ने कहीं हैं हम मानेंगे। और मूसा ने परमेश्वर की सारी बातें लिखीं और बिहान को तड़के उठा और पहाड़ के नीचे एक बेदी बनाई और इसराईल की बारह
५ गोष्ठी के समान बारह खंभे खड़े किये। और उसने इसराईल के संतानों के तरुण मनुष्यों को भेजा और उन्होंने होम का और
६ कुशल का बलिदान बैलों से परमेश्वर के लिये चढ़ाया। और मूसा ने आधा लोहू लेके पात्रों में रक्खा और आधा रुधिर
७ बेदी पर छिड़का। फिर उसने नियम की पत्री लिई और लोगों को पढ़ सुनाई वे बोले कि सब कुछ जो परमेश्वर ने कहा है
८ हम मानेंगे और अधीन रहेंगे। मूसा ने उस लोहू को लेके लोगों पर छिड़का और कहा कि यह लोहू उस नियम का है जिसे परमेश्वर ने उन बातों के कारण तुम्हारे साथ
९ किया है। तब मूसा और हारून और नादाब और
१० आबीहू और इसराईल के सत्तर प्राचीन ऊपर गये। और उन्होंने इसराईलियों के ईश्वर को देखा और उसके चरण के नीचे जैसे नीलमणि की गच के कार्य स्वर्ग की आकृति की नाईं थे।
११ और इसराईल के संतानों के अाध्यक्षों पर उसने अपना हाथ न रक्खा उन्होंने ईश्वर को देखा और खाया पिया भी।
१२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि पहाड़ पर मुझ पास आ और वहां रह और मैं तुझे पत्थर की पटियों में व्यवस्था और आज्ञा जिसे मैं ने लिखी है देंगा जिसतें तू उन्हें
१३ सिखलावे। और मूसा और उसका सेवक यशूअ उठे और
१४ ईश्वर के पहाड़ के ऊपर गये। और उसने प्राचीनों से कहा कि हमारे लिये यहां ठहरो जब लों तुम पास हम फिर न आवें और देखो कि हारून और हूर तुम्हारे साथ हैं यदि

१५ किसी को कुछ काम होवे तो उन पास जाय। तब मूसा पहाड़
१६ के ऊपर गया और एक मेघ ने पहाड़ को ढांप लिया। और
परमेश्वर का बिभव सीना के पहाड़ पर ठहरा और मेघ उसे
छः दिन लों ढांपे रहा और सातवें दिन उसने मेघ के मध्य में से
१७ मूसा को बुलाया। परमेश्वर का बिभव दृष्टि में पहाड़ के ऊपर
१८ धधकतीहुई आग की नाईं देखपड़ताथा। और मूसा मेघ के
मध्य में चलागया और पहाड़ पर चढ़गया और मूसा पहाड़
पर चालीस दिन रात रहा।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

१।२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा। कि इसराईल के संतान से
कह कि वे मेरे लिये भेंट लेवें हरएक से जो अपनी इच्छा और
३ अपने मन से मुझे देवे तुम मेरी भेंट लेलीजियो। और भेंट
जो तुम उनसे लेओगे सो ये हैं सोना रूपा और पीतल।
४ नीला और बैंजनी और लाल और झीनाकपड़ा और बकरी के
५ रोम। और मेढ़ों का रंगाहुआ लाल चमड़ा और नील बर्ण और
६ शमशाद की लकड़ी। और दीपक के लिये तेल और लगाने
७ के तेल के लिये और धूप के लिये सुगंध द्रव्य। और सूर्यकांतमणि
८ और पटूका और चपरास पर जड़ने के लिये मणि। और वे मेरे
लिये एक पवित्र स्थान बनावें कि मैं उनके मध्य में बास करों।
९ तंबू और उसके समस्त पात्रों को जैसा मैं तुम्हें दिखाओं
१० वैसाही बनाइयो। और शमशाद की लकड़ी की
एक मंजूषा बनावें जिसकी लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई
११ डेढ़ हाथ और उंचाई डेढ़ हाथ होवे। और तू उसके भीतर
और बाहर निर्मल सोना मढ़ियो और उसके ऊपर आसपास
१२ सोने के कलस बनाइयो। और उसके लिये सोने के चार
कड़े ढाल के उसके चारों कोनों पर दो कड़े एक अलंग दो कड़े
१३ दूसरी अलंग लगाइयो। और शमशाद की लकड़ी के बहंगर

१४ बनाइयो और उन पर सोना मढ़ियो। और उस मंजूषा के अलंग अलंग के कड़े में उन बहंगरों को डाल दीजियो जिसतें
१५ उनसे मंजूषा उठाईजाय। मंजूषा के कड़ों में बहंगर डालेजावें
१६ वे उस्से अलग नहों। तू उस साक्षी को जो मैं तुझे देउंगा
१७ उस मंजूषा में रखियो। और तू निर्मल सोने का दया का एक आसन बनाइयो जिसकी लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई
१८ डेढ़ हाथ होवे। और पीटेऊए सोने के दो करोबी उस दया
१९ के आसन के दोनों खूंटों में बनाइयो। एक करोबी एक में और दूसरा दूसरे खूंट में दया के आसन में से दो करोबी
२० उसके दोनों खूंट में बनाइयो। और वे करोबी परफैलाये ऊए हों ऐसे कि दया का आसन उनके पंखों के नीचे ढंपजाये और उनके मुंह आम्नेसाम्ने दया के आसन की ओर होवें।
२१ और तू उस दया के आसन को उस मंजूषा के ऊपर रखियो और वुह साक्षी जो मैं तुझे देओं उस मंजूषा में रखियो।
२२ वहां मैं तुझ से भेंट करोंगा और मैं दया के आसन पर से दोनों करोबियों के मध्य से जो साक्षी की मंजूषा के ऊपर होंगे उन सब वस्तुन के कारण जो मैं इसराईल के संतानों के लिये तुझे आज्ञा करोंगा तुझ से बातचीत करोंगा।
२३ और तू शमशाद की लकड़ी का दो हाथ लंबा और एक
२४ हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ ऊंचा मंच बनाइयो। और उसे निर्मल सोने से मढ़ियो और उस पर चारों ओर सोने का
२५ एक कलस बनाइयो। और उसके लिये चार अंगुल झालर चारों ओर बनाइयो और उस झालर को चारों ओर सोने
२६ के मुकुट बनाइयो। और उसके लिये सोने के चार कड़े बनाइयो और उसकी चार पहिये के चार कोनों में लगाइयो।
२७ झालर के आगे कड़े बहंगर के कारण हों कि मंच उठाया
२८ जाय। और तू बहंगर शमशाद की लकड़ी का बनाना और
२९ उन्हें सोने से मढ़ना कि मंच उनसे उठायाजाय। और

उसके पात्रों और करछुल और ढकने और उंडेलने के कटोरे
३० निर्मल सोने से बनाइयो। और मंच पर भेंट की रोटियां मेरे
३१ सम्मुख सदा रखियो। और तू दीपक का एक झाड़
निर्मल सोने का बना पीटेऊए कार्य का झाड़ बने और उसकी
डंडी और उसकी डालियां और उसकी कली और उसके
३२ फल और उसके फूल एकही के होवें। और छः डालियां
उसकी अलंगों से निकलें एक अलंग से तीन दूसरी अलंग से
३३ तीन हों। और चाहिये कि तीन कली हर्रे की नाईं एक
डाली में और फूल फल के साथ हों और उसी रीति से तीन
कली हर्रे की नाईं दूसरी डाली में अपने फूल फल के साथ
हों इसी रीति से छः डालियों में जो दीअट से निकली ऊईं हों।
३४ और दीअट में चाहिये कि चार कली हर्रे की नाईं फूल फल
३५ के साथ हों। और एक एक कली उसकी दो दो डालियों के
नीचे होवें छः डालियां जो दीअट से निकली हैं उनके नीचे
३६ ऐसीही हों। उनकी कली और उनकी डालियां उसीसे हों
३७ और सब के सब गढ़ेऊए निर्मल सोने के हों। और तू उसके
लिये सात दीपक बना और उन्हें जला जिसतें उसके सम्मुख
३८ उंजियाला होवे। और तू उसकी कतरनी और उसका पात्र
३९ निर्मल सोने के बना। वुह उसे इन समस्त पात्र समेत
४० मनसवाएक निर्मल सोने के बनें। चौकस हो कि जैसा मैं ने
तुझे पहाड़ पर दिखाया तू उसी डौल का बना।

२६ छबीसवां पर्ब्ब।

१ और तू बटेऊए झीने सूती कपड़े के दस ओझलों का तंबू बना नीला
और बैंजनी और लाल और तू उन्हें चित्रकारी से करोबीम
२।३ बना। और हरएक ओझल एकही नाप का हो। और
पांचों ओझल एक दूसरे से जोड़ा ऊआ हो और पांच एक
४ दूसरे से जोड़ा ऊआ हो। और एक ओझल के अंचल में

मिलाने के खूंट में नीले तुकमे बना और ऐसेही दूसरे
५ ओभल के अंत्य खूंट में बना। एक ओभल में पचास तुकमे
बना और पचास तुकमे दूसरे ओभल के मिलने के खूंट में
६ बना जिसतें तुकमे एक दूसरे में जुटजावें। और सोने की
पचास घुंडी बना और उन्हीं घुंडीयों से ओभल को जोड़
७ जिसतें एक तंबू होजाय। और बकरी के बालों के
८ ग्यारह ओभल बना जिसतें तंबू के लिये ओहार हो। एक
ओभल की लंबाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ होय
९ ग्यारहो ओभल एकही नाप का हो। और पांच ओभल
को अलग जोड़ और छः ओभल को अलग जोड़ और छठवें
१० ओभल को तंबू के साम्ने दोहरा। और पचास तुकमे एक
ओभल के खूंट में जो अंत के जोड़ में है और पचास तुकमे
११ दूसरे ओभल के जोड़ में बना। और पीतल की पचास
घुण्डीयां बना और घुण्डियों को तुकमों में डाल और ओहार
१२ को मिला जिसतें एक होवे। और तंबू के ओभलों के बचेऊए
को आधा ओभल जो बचाऊआ है तंबू के पिछली ओर लटका
१३ रहे। और तंबू के ओभलों की लंबाई से जो बचाऊआ हाथ
भर इधर और हाथभर उधर है तंबू के घटाटोप के लिये
१४ बना। और एक घटाटोप के लिये मेढ़ों के लाल रंगेऊए
चमड़ों से और एक घटाटोप सब के ऊपर नीले चमड़ों का बना।
१५ और तंबू के लिये शमशाद की लकड़ी से खड़े पाट
१६ बना। हरएक पाट की लंबाई दस हाथ चौड़ाई डेढ़ हाथ
१७ होवे। कि हरएक पाट में दो दो चूल हों एक दूसरे में
१८ कियाजाय और यों तंबू के समस्त पाटों में कर। और
१९ तंबू के लिये दक्षिण की ओर बीस पाट बना। और बीस
पाटों के नीचे चांदी के चालीस चूरगहने बना दो दो चूर
गहने हरएक पाट के नीचे उसकी दोनों चूलों के लिये बना।
२० और तंबू की दूसरी ओर के लिये जो उत्तर की है बीस

२१ पाट। और उनके लिये चांदी के चालीस चूरगहने एक पाट के नीचे दो चूरगहने और दूसरे पाट के लिये दो चूरगहने
२२ बना। और तंबू की पश्चिम की ओर छः पाट बना।
२३ और दो पाट तंबू के कोनों के लिये दोनों ओर बना।
२४ और वे नीचे में लपेटेजावें और ऊपर से एक कड़ी में जोड़ेजावें
२५ वे दोनों कोनों के लिये होंगे। सो आठ पाट और उनके सोलह चांदी के चूरगहने होंगे दो चूरगहने एक पाट के नीचे और
२६ दो चूरगहने दूसरे पाट के नीचे। और तू शमशाद की लकड़ी के अड़ंगे बना तंबू के एक अलंग के पाट के लिये पांच।
२७ और पांच अड़ंगे तंबू की दूसरी ओर के पाट के लिये और पांच अड़ंगे तंबू के अलंग के पाटों के लिये पश्चिम के दोनों
२८ अलंग के लिये। और पाटों के मध्य के बीच का अड़ंगा एक
२९ ओर से दूसरी ओर लों पहुंचे। और पाट को सोने से मढ़ और अड़ंगों के लिये सोने के कड़े बना और अड़ंगों को सोने
३० से मढ़। और तंबू को जैसा कि मैं ने तुझे पहाड़ पर दिखाया है
३१ वैसाही खड़ा कर। और बटेहुए झीने बूटा काढ़ा हुआ सूती कपड़े से नीला और बैंजनी और लाल घूंघट और
३२ करोबीं समेत बना। और उसे सोने से मढ़ेहुए शमशाद की लकड़ी के चार खंभे पर लटका उनके सोने के अंकुरे चांदी की
३३ चार चूलों पर होवें। और घूंघट को घुंडी के नीचे लटका जिसतें तू घूंघट के भीतर साक्षी की मंजूषा लावे और वुह घूंघट पवित्र और महा पवित्र स्थान में विभाग करेगा।
३४ और दया का आसन साक्षी की मंजूषा पर महा पवित्र
३५ स्थान में रख। और मंच को घूंघट के बाहर रख और दीअट को मंच के सन्मुख तंबू की एक ओर दक्षिण अलंग और मंच
३६ को उत्तर अलंग रख। और तंबू के द्वार के लिये नीला और बैंजनी और लाल और बटेहुए झीने वस्त्र से बूटा काढ़ाहुआ
३७ एक ओझल बना। और ओझल के लिये शमशाद के पांच खंभे

बना और उन्हें सोने से मढ़ उनके अंकुरे सोने के हों और तू उनके लिये पीतल की पांच चूल ढाल के बना।

२७ सताईसवां पर्ब्ब।

१ और तू शमशाद की लकड़ी की एक यज्ञबेदी पांच हाथ लंबी और पांच हाथ चौड़ी बना यज्ञबेदी चौकोर होवे और
२ उसकी उंचाई तीन हाथ हो। और उसके चारों कोनों के लिये सींग बाना और उसकी सींगें एकही के हों और उन्हें
३ पीतल से मढ़। और उसकी राख के लिये पात्र बना उसकी फावड़ियां और उसके कटोरे और उसका त्रिशूल और
४ अंगेठियां बना उसके समस्त पात्र पीतल के बना। और उसके लिये पीतल के जाल की एक झंझरी बना और उस जाल में
५ पीतल के चार कड़े उसके चारों कोनों में बना। और उसे बेदी के घेरा के नीचे रख जिसतें बेदी के मध्य लों पहुंचे।
६ और यज्ञबेदी के लिये शमशाद की लकड़ी का बहंगर बना
७ और उन्हें पीतल से मढ़। और उन बहंगरों को कड़ों में डाल और बहंगर यज्ञबेदी के उठाने के लिये दोनों अलंग में
८ होवे। उसके पाट यों पोलखा बनाइयो जैसा कि मैं ने तुझे
९ पहाड़ में दिखाया वैसाही बना। और तंबू के कारण एक आंगन बना दक्षिण दिशा के आंगन के कारण बटेहुए झीने सूतीकपड़े से सौहाथ लंबा एक अलंग के लिये ओझल
१० बना। और उसके बीस खंभे और उनके बीस चूर पीतल के
११ हों और खंभों के अंकुरे और उनके कोंढ़े रूपे के बना। और ऐसेही उत्तर की ओर की लंबाई के लिये सौ हाथ के लंबे ओझल और उसके बीस खंभे और उनके पीतल के बीस चूर और
१२ खंभों के अंकुरे और उनके कोंढे रूपे के हों। और पच्छिम अलंग के आंगन की चौड़ाई में पचास हाथ के ओझल
१३ हों और उनके दस खंभे और उनके दस चूर हों। और पूर्ब

१४ अलंग के आंगन की चौड़ाई पचास हाथ हो। एक ओर का ओझल पंदरह हाथ होय उनके तीन खंभे और उनके तीन
१५ चूर हों। और दूसरी ओर का ओझल पंदरह हाथ उनके
१६ तीन खंभे और उनके तीन चूर। और आंगन के फाटक के लिये नीला और बैंजनी और लालरंग का बटेऊए झीने सूती कपड़े से बूटे काढ़ेऊए का बीस हाथ का एक ओझल बना उनके
१७ खंभे चार और उनके चूर चार। और आंगन के चारों ओर के समस्त खंभे रूपे के कांढ़ों से हों उनके अंकुरे रूपे के और
१८ उनके चूर पीतल के। आंगन की लंबाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई पांच हाथ झीने बटेऊए सूती
१९ कपड़े से और उनके चूर पीतल के। तंबू की समस्त सेवा के लिये समस्त पात्र और उसके सब खूंटे उसके और आंगन के
२० समस्त खूंटे पीतल के हों। और इसराईल के संतान को आज्ञा कर कि तेरे पास कूटेऊए जलपाई का निर्मल तेल लावें
२१ जिसतें दीपक सदा बराकरे। घूंघट के बाहर जो साक्षी के आगे है मंडली के तंबू में हारून और उसके बेटे सांझ से लेके बिहान तांईं परमेश्वर के आगे नित्य उनकी पीढ़ी से पीढ़ी लों इसराईल के संतानों के लिये यह विधि है।

२८ आठाईसवां पर्ब्ब।

१ और इसराईल के संतानों में से अपने भाई हारून को अपने पास ले जिसतें वुह और उसके बेटे नादाब और अबीहू और इलियाज़र और यथामार याजक के पद में मेरी सेवा करें।
२ और अपने भाई हारून के लिये और बिभव के लिये पवित्र
३ वस्त्र बना। और उन समस्त बुद्धिमानों से जिन्हें मैं ने बुद्धि का आत्मा दिया है कह कि वे हारून को स्थापित करने के लिये वस्त्र
४ बनावें जिसतें वुह याजक के पद में मेरी सेवा करे। और वे ये वस्त्र बनावें चपरास और पटुका और बागा और बूटा काढ़ी

ऊई कुरती और मुकुट और कटिबंध और वे पवित्र वस्त्र तेरे भाई हारून और उसके बेटों के लिये बनावें कि वुह याजक के
५ पद में मेरी सेवा करे। और वुह सोना और नीला और
६ बैंजनी और लाल झीना कपड़ा। और वे पटुका को सोने और नीले और बैंजनी और लाल और बटेऊए झीने
७ कपड़े से बूटा काढ़ाऊआ बनावें। और दो कंधे का जोड़ा उसकी
८ दोनों ओरों से मिलेऊए हों जिसतें यों मिलायाजाय। और बूटा काढ़ाऊआ कटिबंध जो उस पर है उसी के कार्य के समान एकही से हो सोने और नीले और बैंजनी और लाल और
९ झीने बटेऊए सूतीकपड़े से हो। और दो बैदूर्यमणि ले और
१० उन पर इसराईल के संतानों के नाम खोद। उनमें से छः के नाम एक मणि पर और बचेऊए छः के नाम दूसरे मणि पर उनकी
११ उत्पत्ति के समान होवें। मणि के खोदवैये के कार्य से छापा के खोदने के समान दोनों मणि पर इसराईल के संतानों के नाम
१२ खोद उन्हें सोने के ठिकानों में जड़। और दोनों मणि को पटुका के दोनों मोंढों पर रख कि इसराईल के संतानों के स्मरण के लिये होवें और हारून उनके नाम परमेश्वर के आगे अपने
१३ दोनों मोंढों पर स्मरण के लिये उठावेगा। और सोने
१४ के ठिकाने बना। और दोनों सीकरें निर्मल सोने से खूंटों में गूथने के कार्य से उन्हें बना और गुथी ऊई सीकरों को
१५ उन ठिकानों में जड़। और चित्रकारी से न्याय के लिये एक चपरास बना पटुके के कार्य के समान सोने और
१६ बैंजनी और लाल और झीने बटेऊए सूतीकपड़े से बना। यह चौकोर दोहरा होवे उसकी लंबाई एक बित्ता और उसकी
१७ चौड़ाई एक बित्ता। और मणि की चार पांती उसमें भर दे
१८ पहिली पांती में मणि का और पद्मराग और लालड़ी। दूसरी
१९ पांती में मर्कत और नीलमणि और हीरे। तीसरी पांती में
२० लग्नम और सूर्यकांत और नीलिमा। चौथी पांती में बैदूर्य

और फिरोज़ा और चंद्रकांत वे सोने के ठिकाने में जड़े जावें।
२१ और मणि इसराईल के बंश के नाम के संग हैं छापे के
खोदेऊए उनके नाम के संतान बाहर बारह गोष्ठी के समान
२२ हरएक अपने नाम के संग होवे। और चपरास के
२३ ऊपर निर्मल सोने की गुथी ऊई सीकरें खूंट में बना। और
चपरास पर सोने की दो कड़ियां बना और उन्हें चपरास
२४ के दोनों खूटों में लगा। और सोने की गुथीऊई सीकरें उन
२५ दोनों कांथों में जो चपरास के दोनों खूंटों में हैं लगा। और
गुथेऊए दोनों के दोनों खूंट उनके दो ठिकाने में जड़ और
२६ उन्हें पटुके के मोढ़ों पर आगे रख। और सोने की
दो कड़ियां बना और उन्हें चपरास के किनारे के खूंट पर
जो पटुकों के भीतर है और उसके जोड़ने के साम्ने में
२७ चित्रकारी के कटिबंध के पटुके के ऊपर रख। और सोने की
दो कड़ियां पटुके के नीचे दोनों अलंग में रख उसके आगे की
ओर जोड़ के साम्ने चित्रकारी के कटिबंध के पटुके के
२८ ऊपर रख। और वे चपरास को उसकी कड़ियों से पटुके
की कड़ियों में नीले गोंटे से बांध कि पटुके की चित्रकारी के
कटिबंध के ऊपर हों जिसतें चपरास पटुके से खुल न जाय।
२९ और हारून नित्य परमेश्वर के आगे स्मरण के लिये जब वुह
पवित्र स्थान में जावे इसराईल के संतानों के नाम न्याय के
३० चपरास पर अपने अंतःकरण पर उठावे। और तू
यूरिम और तमिम को न्याय के चपरास में रख यह हारून के
अंतःकरण पर परमेश्वर के आगे जाने पर होगा और हारून
इसराईल के संतानों के न्याय को अपने अंतःकरण पर परमेश्वर
३१ के आगे सदा लिये रहे। और पटुके का वागा सर्वत्र
३२ नीला बना। और उसके ऊपर मध्य में एक छेद होवे और
उस छेद की चारों ओर बुनेऊए कार्य के गोंटे हों जैसा झिलम
३३ का मुंह होता है जिसतें फटने न पावे। और उसके

खूंट के घेरे में नीले और बैंजनी और लाल रंग का अनार
३४ बना और घेरे में सोने की घुंडी उनके मध्य में बना। सो एक
सोने की घुंडी और एक अनार और एक सोने की घुंडी और
३५ एक अनार उसके खूंट के घेरे में लगा। और सेवा के समय
हारून उसे पहिने और जब वुह पवित्र स्थान में परमेश्वर
के आगे जावे और जब निकले तब उसका शब्द सुना जायगा
३६ जिसतें वुह मर न जाय। और निर्मल सोने की एक
पटरी बना और उसपर खोदेहुए छाप की नाईं खोद कि
३७ परमेश्वर के लिये पवित्रमय। और उस पर नीले गोंटे लगा
जिसतें वुह मुकुट पर होवे सो मुकुट आगे की ओर होवे।
३८ और वुह हारून के ललाट पर होय कि हारून पवित्र वस्तु के
पापों को जिसे इस्राईल के संतान अपनी समस्त पवित्र भेटों
में पवित्र करेंगे और वही उसके ललाट पर सदा हो जिसतें
३९ वे परमेश्वर के आगे ग्राह्य होवें। और बागे पर झीने
सूती कपड़े से बूटा काढ़ और मुकुट को झीने वस्त्र से बना और
४० कटि का पटुका सूई के कार्य से बना। और हारून के
बेटों के लिये बागे बना और उनके लिये कटिबंध और पगड़ी
४१ उनकी शोभा और बिभव के लिये बना। और उन्हें अपने
भाई हारून पर और उसके संग उसके बेटों पर पहिना
और उन्हें अभिषेक कर और उन्हें स्थापित और पवित्र कर
४२ जिसतें वे याजक के कार्य में सेवा करें। और उनके लिये सूती
जांघिया बना कि उनकी नग्नता ढांपीजाय और चाहिये कि
४३ यह कटि से जांघ लों हो। और वे हारून और उसके बेटों पर
होवें जब वे मंडली के मंदिर में प्रवेश करें अथवा जब वे
पवित्र स्थान में यज्ञबेदी के पास सेवा को आवें कि वे पाप न
उठावें और मरजायें यह बिधि उसके और उसके पीछे उसके
बंश के लिये सदा को है।

२९ उंतीसवां पर्ब्ब।

१ और वुह जो तू उनके लिये करेगा जिसतें वे पवित्र हों कि याजक के पद में मेरी सेवा करें यह है तू एक बछड़ा और दो
२ निष्कलंक मेंढे ले। और अख़मीरी रोटी और फुलके और अख़मीरी फुलके तेल से चुपड़ेहुए और अख़मीरी टिकरी
३ तेल में चुपड़ीहुई गेहूं के पिसान की बना। और उन्हें एक टोकरी में रख और उन्हें उसमें बछड़े और दोनों मेंढों
४ समेत आगे ला। और हारून और उसके बेटों को मंडली के
५ तंबू के द्वार पर ला और उन्हें जल से नहला। और बस्त्र ले और हारून को कुरती और पटुके का बागा पहिना और पटुका और चपरास पटुका की चित्रकारी का कटिबंध उस
६ पर बांध। और मुकुट को उसके सिर पर रख और पवित्र
७ किरीट मुकुट पर धर। तब अभिषेक करने का तेल ले और
८ उसके सिर पर ढाल और उसे अभिषेक कर। फिर उसके
९ बेटों को आगे ला और उन्हें कुरती पहिना। और हारून और उसके बेटों पर कटिबंध लपेट और उन पर पगड़ी बांध जिसतें याजक का पद सनातन की बिधि के लिये उन्हीं का होवे
१० और हारून और उसके बेटों को स्थापित कर। फिर एक बैल को मंडली के तंबू के आगे ला और हारून और उसके
११ बेटे अपने हाथ उसके सिर पर रक्खें। और उस बैल को मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे बलिदान कर।
१२ और उसके लोहू में से कुछ ले और अपनी अंगुली से यज्ञबेदी के सींगों पर लगा और बचाहुआ लोहू यज्ञबेदी के नीचे ढाल।
१३ और उसकी समस्त चिकनाई जो उसके अंतर का ढांपती है और जो कलेजे के ऊपर है और दोनों गुर्दे और जो चिकनाई
१४ उन पर है ले और उन्हें यज्ञबेदी पर जला। परंतु उस बैल का मांस और खाल और गोबर छावनी के बाहर आग
१५ से जला यह पापों का बलिदान है। एक मेंढे को भी

ले और हारून और उसके बेटे अपने हाथ उसके सिर पर
१६ रक्खें। और उसे बलिदान कर और तू उसके लोहू को
१७ यज्ञबेदी पर और उसके चारों ओर पर छिड़क। और मेंढे
को टुकड़ा टुकड़ा कर और उसके अंतर और उसके पांव धो
१८ और उसके टुकड़े सिर के साथ एकट्ठे कर। और उस समस्त
मेंढे को यज्ञबेदी पर जला यह होम की भेंट परमेश्वर के
लिये सुगंध बास आग से परमेश्वर के लिये है।
१९ फिर दूसरा मेंढ़ा ले और हारून और उसके बेटे अपने हाथ
२० उसके सिर पर रक्खें। तब तू उस मेंढे को बलिदान कर और
उसके लोहू में से ले और हारून के और उसके बेटों के
दहिने कान की लहर पर और उनके दहिने हाथ के अंगूठे
पर और दहिने पांव के अंगूठे पर लगा और यज्ञबेदी पर
२१ चारों ओर छिड़क। और उस लोहू में से जो यज्ञबेदी पर
है और अभिषेक का तेल ले और हारून पर और उसके
बस्त्र पर और उसके बेटों पर और उनके बस्त्र पर उसके साथ
छिड़क तब वुह और उसके बस्त्र और उसके बेटे और उनके
२२ बस्त्र उसके संग पवित्र होंगे। और मेंढे की चिकनाई और
पूंछ और वुह चिकनाई जो ओझ को ढांपती है और जो कलेजे
को ढांपती है और दोनों गुर्दे को और वुह चिकनाई जो
उन्हों पर है और दहिना मोंढा ले इस लिये कि यह मेंढ़ा
२३ स्थापने का है। और एक रोटी और तेल में चुपड़ी हुई रोटी
का फुलका और अख़मीरी रोटी के टोकरे में से एक टिकरी
२४ जो परमेश्वर के सन्मुख है। और यह सब हारून के और
उसके बेटों के हाथ पर रख और उन्हें परमेश्वर के आगे
२५ हिलाने के बलिदान के लिये हिला। और उन्हें उनके हाथ
से ले और यज्ञबेदी पर जलाने के बलिदान के लिये जला कि
परमेश्वर के आगे सुगंध के लिये हो यह आग का बलिदान
२६ परमेश्वर के लिये है। और तू हारून के स्थापित मेंढे की छाती

ले और उसे परमेश्वर के आगे हिलाने के बलिदान के लिये
२७ हिला और वुह तेरा भाग होगा। और तू हिलाने के
बलिदान की छाती को और उठाने के बलिदान के पुट्ठे को जो
हारून और उसके बेटों को स्थापित करने का मेंढ़ा हिलाया
२८ और उठायागयाहै पवित्र कर। और हारून और उसके
बेटों के लिये और सब इसराईल के संतानों में यह बिधि
सदा होगी इस लिये कि ये उठायेहुए बलिदान हैं और
चाहिये कि सदा इसराईल के संतानों से उसके कुशल के
बलिदानों में से उठायेहुए बलिदान हों और यह उठायाहुआ
२९ बलिदान परमेश्वर के लिये है। और हारून के
पवित्र बस्त्र उसके पीछे उसके बेटों के कारण उनके अभिषेक
३० के लिये हों कि वे उनमें स्थापित होवें। जो बेटा उसकी संती
याजक होवे जब वुह मंडली के तंबू में पवित्र सेवा करने को
३१ आवे तब वुह उन्हें सात दिन पहिने। और स्थापने का
३२ मेंढ़ा ले और उसका मांस पवित्र स्थान में उसिन। और
हारून और उसके बेटे मेंढे का मांस और वुह रोटी जो
३३ टोकरी में मंडली के तंबू के द्वार पर है खावें। और जिन
बस्तुन से प्रायश्चित्त हुआ कि उन्हें स्थापित और पवित्र करें वे
३४ खावें परंतु परदेशी न खावें क्योंकि पवित्र हैं। और यदि
स्थापित के मांस में से अथवा रोटी में से बिहान लों रहजाय
तो वुह खाया न जाय परंतु जला देवें इस लिये कि पवित्र है।
३५ और तू हारून और उसके बेटों को मेरी समस्त आज्ञा के समान
३६ यों कीजियो सात दिन उन्हें स्थापित कीजियो। और तू प्रतिदिन
पाप के प्रायश्चित्त के कारण एक बैल को चढ़ाइयो और यज्ञबेदी
को पवित्र करने को जब तू उसके लिये प्रायश्चित्त करे यज्ञबेदी
३७ को पावन और उसे अभिषेक कर। तू बेदी के लिये सात दिन
प्रायश्चित्त करके उसे पवित्र कर और वुह अत्यंत पवित्र होजायगी
३८ जो कुछ उसे छूये सो पवित्र होजायगा। इन्हें तू यज्ञबेदी

पर चढ़ाइयो पहिले बरस का दो मेम्ना प्रतिदिन नित्य
३९ चढ़ाइयो। एक मेम्ना बिहान को और दूसरा मेम्ना सांझ को
४० बलिदान कर। गेंहू के पिसान का दसवां भाग जो जलपाई के
कूटेऊए तीन पाव तेल से मिलाऊआहो और तीन पाव दाख
४१ रस एक मेम्ना के साथ पीने की भेंट के लिये होय। और दूसरा
मेम्ना सांझ की भेंट का और उसे बिहान के मांस की भेंट के
समान और पीने की भेंट के समान परमेश्वर के सुगंध की
४२ बासना के लिये होम कर। होम की भेंट तुम्हारी पीढ़ीों से
पीढ़ीलों मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे नित्य
४३ होगी जहां मैं तुम से बार्त्ता करने के लिये भेंट करोंगा। और
मैं इसराईल के संतान से वहां भेंट करोंगा और वुह मेरी
४४ महिमा के लिये पवित्र होगा। और मैं मंडली के तंबू को
और यज्ञबेदी को पविच करोंगा और हारून और उसके
बेटों को पवित्र करोंगा कि वे याजक के पद में मेरी सेवा करें।
४५ 　　　और मैं इसराईल के संतानों में बास करोंगा और
४६ मैं उनका ईश्वर होंगा। और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर उनका
ईश्वर हों जो उन्हें मिसर की भूमि से निकाल लाया जिस्तें
मैं उनमें बास करों और मैं परमेश्वर उनका ईश्वर हों।

३० तीसवां पर्ब्ब।

१ और तू शमशाद की लकड़ी से धूप जलाने के लिये एक यज्ञबेदी
२ बना। उसकी लंबाई एक हाथ और उसकी चौड़ाई एक हाथ
चौकोर होवे और उसकी ऊंचाई दो हाथ और उसके सींग
३ उसीसे हों। और उसे निर्मल सोने से मढ़ उसकी छत और
उसकी चारों ओर की अलंग और उसके सींगों को और
४ उसके चारों ओर सोने का मुकुट बना। और सोने के दो कड़े
उसके मुकुट के नीचे उसके दोनों कोनों के पास उसकी दोनों
५ अलंग पर बना और वे उठाने के बहंगर के स्थान होंगे। और

बहंगर को शमशाद की लकड़ी से बना और उन्हें सोने से मढ़।
६ और उसे घूंघट के आगे जो साक्षी की मंजूषा के पास है
और जो दया के आसन की साक्षी के ऊपर है रख वहां मैं
७ तुझ से भेंट करोंगा। और हर बिहान को हारून उस पर
सुगंध द्रव्य का धूप जलावे जब वुह दीपकों को सुधारे वुह उस
८ पर धूप जलावे। और जब हारून संध्या के समय में दीपक
को बारे वुह उस पर तुम्हारी समस्त पीढ़ियों में परमेश्वर के
९ आगे धूप जलावे। तुम उस पर उपरी धूप और होमका
बलिदान और मांस की भेंट न चढ़ाइयो और उस पर
१० पीने की भेंट चढ़ाइयो। और हारून बरसभर में एक
बार उसके सींगों पर पाप की भेंट के प्रायश्चित्त के लोहू से
प्रायश्चित्त करे तुम्हारे समस्त पीढ़ियों में बरस में एक बार
उस पर प्रायश्चित्त करे यह परमेश्वर के लिये अति पवित्र है।
११ और परमेश्वर मूसा से यह कहतेहुए बोला।
१२ कि जब तू इसराईल के संतानों को गिने तब उनमें से हर
मनुष्य अपने प्राण के छुड़ाने के लिये परमेश्वर को देवे जब
तू उनकी गिनती करे जिसतें गिनती करने में उन पर मरी
१३ न उतरे। और जो कोई गिनती कियेगये होवें सो पवित्र
स्थान के शेकलों के समान आधा शेकल देय एक शेकल बीस
१४ गिरह सो आधा शेकल परमेश्वर की भेंट है। जो कोई गिनती
कियेगये में होवे बीस बरस का और जो ऊपर होवें सो
१५ परमेश्वर के लिये भेंट देवे। अपने प्राण का प्रायश्चित्त करने की
परमेश्वर के लिये भेंट देने में धनी कंगाल से अधिक न देवे
१६ और कंगाल आधे शेकल से न घटावे। और तू इसराईल के
संतानों के प्रायश्चित्त का दाम ले और उसे मंडली के तंबू की
सेवा के लिये ठहरा और यह इसराईल के संतानों के लिये
परमेश्वर के आगे स्मरण और उनके प्राणों का प्रायश्चित्त होगा।
१७।१८ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि पीतल

का एक स्नानपात्र बना और उसकी पट्टिया स्नान करने के लिये पीतल की बना और उसको मंडली के तंबू और यज्ञबेदी के
१९ मध्य में रख और उसमें जल डालना। हारून और उसके बेटे
२० अपने हाथ पांव उस्से धोवें। जब वे मंडली के तंबू में जावें वे जल से धोवें जिसतें नाश न होवें अथवा जब वे सेवा के लिये यज्ञबेदी के पास जावें और परमेश्वर के लिये होम की भेंट
२१ जलावें। वे अपने हाथ पांव धोवें जिसतें वे न मरें यह ब्यवहार उनके लिये अर्थात उसके और उसके वंशकी समस्त पीढ़ीलों
२२ सदा के लिये होवे। और फेर परमेश्वर मूसा से
२३ कहके बोला। कि तू अपने लिये पांच सौ शेकल के चोखे गंधरस का प्रधान सुगंध द्रव्य और उसकी आधी अर्थात आढ़ाई सौ की मीठी दारचीनी और आढ़ाई सौ का मीठा बच अपने
२४ लिये ले। और पवित्र स्थान के शेकल के तौल पांच सौ शेकल
२५ भर का तजखे और जलपाई के तेल तीन सेर। और इन्हें पवित्र लेपन का तेल बना गंधी की रीति के समान मिलाके
२६ लेपन बना यही पवित्र के अभिषेक का तेल होवे। और उस्से मंडली के तंबू को और साक्षी की मंजूषा को अभिषेक
२७ कर। और मंच और उसके समस्त पात्र और दीअट और
२८ उसके पात्र और धूप की बेदी। और भेंट के होम करने की बेदी उसके समस्त पात्र सहित और स्नानपात्र और उसकी
२९ पट्टिया। और उन्हें पवित्र कर कि वे अति पवित्र होजावें
३० जो कुछ उन्हें छूवे सो पवित्र होगा। और हारून और उसके बेटों को अभिषेक करके उन्हें स्थापित कर कि मेरे लिये
३१ याजक के पद में सेवा करें। और इसराईल के संतान को यह कहके बोल कि यह पवित्र अभिषेक का तेल मेरे लिये
३२ तुम्हारी समस्त पीढ़ियों में होय। किसी मनुष्य के शरीर पर न डालाजाय और तुम वैसा और उसी के मेल में न बनाइयो
३३ कि यह पवित्र है तुम्हारे लिये पवित्र होगा। जो कोई उसके

समान बनावे अथवा जो कोई उसे किसी परदेशी पर लगावे
३४ सो अपने लोगों से कटजायेगा। और परमेश्वर
ने मूसा से कहा कि तू अपने लिये सुगंध द्रव्य और बोल और
नखी और शुद्ध कुंदुरू और सुगंध द्रव्य और चोखा लोबान
३५ लीजियो और हरएक को समान लीजियो। और उनका
सुगंध बनाइयो गंधी के कार्य के समान मिलायाज्ञआ पवित्र
३६ और शुद्ध होवे। और उसमें से कुछ बुकनी कर और
उसमें से कुछ मंडली के तंबू की साक्षी के आगे रख जहां मैं
तुझ से भेंट करोंगा वुह तुम्हारे लिये अति पवित्र होगा।
३७ और सुगंधतेल को जिसे तू बनावे तो तुम उसकी मिलावट
के समान अपने लिये मत बनाओ यही तुम्हारे पास परमेश्वर
३८ के लिये पवित्र होगा। जो कोई सूंघने के लिये उसके समान
बनावेगा सो लोगों में से कटजायगा।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला। कि देख मैंने ऊरी
के पुत्र बज़ालील को जो हूर का पोता यहूदा के कुल में का है
३ नाम लेके बुलाया। और मैं ने उसे बुद्धि में और समझ में
और ज्ञान में और समस्त प्रकार की हथौटी में परमेश्वर के
४ आत्मा से भर दिया। कि सोने और रुपे और पीतल का
५ कार्य करने में अपनी बुद्धि से हथौटी का कार्य निकाले। मणि
के खोदने और जड़ने में और काठ के खोदने में जिसतें समस्त
६ प्रकार की हथौटी के कार्य करे। और देख मैं ने उसके संग
अहालियाब को जो आहीसामाख़ का पुत्र और दान के कुल
में का है दिया और मैं ने समस्त बुद्धिमानों के अंतःकरणों में
७ बुद्धि दिई कि सब जो मैं ने तुझे आज्ञा किई है बनावें। मंडली
का तंबू और साक्षी की मंजूषा और दया का आसन जो
८ उस पर है और तंबू के समस्त पात्र। और मंच और उसके

पात्र और पवित्र दीअट उसके पात्र सहित और धूप की बेदी।
९ और भेंट के होम की बेदी उसके समस्त पात्र समेत और
१० स्नान पात्र और उसकी पड़िया। और सेवा के वस्त्र और
हारून याजक के लिये पवित्र वस्त्र और उसके बेटों के वस्त्र
११ जिसतें याजक की सेवा में सेवा करें। और अभिषेक का तेल
और पवित्र स्थान के लिये सुगंध धूप उन समस्त आज्ञा के समान
१२ जो मैं ने तुझ से किई है वे बनावें। फिर परमेश्वर
१३ मूसा से यह कहके बोला। कि तू इसराईल के संतानों को
यह कहके बोल कि निश्चय तुम बिश्राम का पालन करो इस
लिये कि वुह मेरे और तुम्हारे मध्य में और तुम्हारी समस्त
पीढ़ियों में एक चिह्न है जिसतें तुम जानो कि मैं परमेश्वर
१४ तुम्हें पवित्र करता हों। इस कारण बिश्राम का पालन करो
क्योंकि वुह तुम्हारे लिये पवित्र है हरएक जो उसे अशुद्ध करेगा
निश्चय बध किया जायगा क्योंकि जो कोई उसमें कार्य करे
१५ सो अपने लोगों में से काटडाला जायगा। छः दिन कार्य होवे
परंतु सातवां चैन का बिश्राम परमेश्वर के लिये पवित्र है सो
जो कोई बिश्राम के दिन में कार्य करे वुह निश्चय मारडाला
१६ जायगा। इस कारण इसराईल के संतान बिश्राम का पालन
करें कि सनातन के नियम के लिये उनकी समस्त पीढ़ियों में
१७ बिश्राम का पालन होवे। मेरे और इसराईल के संतानों के
मध्य में यह सर्व्वदा के लिये चिह्न है क्योंकि परमेश्वर ने छः
दिन में स्वर्ग और पृथिवी उत्पन्न किये और सातवें दिन
१८ अवकाश पाया और तृप्त हुआ। और जब वुह मूसा
से सीना के पहाड़ पर वार्त्ता समाप्त करचुका साक्षी की
पत्थर की दो पटियां ईश्वर की अंगुलियों से लिखीहुईं उसने
उसे दिईं।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ और जब लोगों ने देखा कि मूसा ने पहाड़ से उतरने में बिलंब किया तो वे हारून के पास एकट्ठे ऊए और उसे कहा कि उठ और हमारे लिये देवते बना कि हमारे आगे चलें क्योंकि यह मूसा जो हमें मिसर के देश से निकाल लाया
२ हम नहीं जानते कि क्या ऊआ। हारून ने उन्हें कहा कि अपनी पत्नियों और पुत्रों और पुत्रियों के कानों से सोने की
३ बालियां तोड़ तोड़ के मुझ पास लाओ। सो समस्त लोग सोने की बालियां तोड़ तोड़ के जो उनके कानों में थीं हारून
४ के पास लाये। और उसने उनके हाथों से लिया और ढालाऊआ एक बछड़ा बना के टांकी से उसका डौल किया और उन्हों ने कहा कि हे इसराईल ये तेरे देवते हैं जो तुम्हें
५ मिसर के देश से निकाल लाये। और जब हारून ने देखा तो उसके आगे बेदी बनाई और यह कहके प्रचार कराया कि
६ कल परमेश्वर के लिये पर्ब्ब है। फिर वे बिहान को तड़के उठे और होम की भेंट चढ़ाई और कुशल का बलिदान लाये और लोग खाने पीने को बैठे और लीला करने को उठे।

७ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उतरजा क्योंकि तेरे लोगों ने जिन्हें तू मिसर के देश से निकाल लाया आप को
८ अशुद्ध किया है। और वे उस मार्ग से जो मैं ने उन्हें बतायाथा शीघ्र फिरगये और अपने लिये ढालाऊआ बछड़ा बनाया और उसे पूजा और उसके लिये बलिदान चढ़ा के कहा कि हे इसराईल ये तेरे देवते हैं जो तुम्हें मिसर देश से
९ निकाल लाये। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं ने इन लोगों को देखा और देखो कि ये लोग एक कठोर गले
१० लोग हैं। सो अब तू मुझे छोड़ कि मेरा क्रोध उन पर अत्यंत भड़के और मैं उन्हें भस्म करों और मैं तुझ से एक बड़ी
११ जाति बनाऊंगा। फिर मूसा ने परमेश्वर अपने ईश्वर की

बिनती किई और कहा कि हे परमेश्वर किस लिये तेरा क्रोध अपने लोगों पर भड़का जिन्हें तू मिसर के देश से महा
१२ पराक्रम और सामर्थी हाथ से निकाल लाया। किस लिये मिसरी कहके बोले कि वुह बुराई के लिये उन्हें यहां से निकाल लेगया जिसतें उन्हें पहाड़ों में नाश करे और पृथिवी पर से भस्म करे अपने अत्यंत क्रोध से फिरजा और अपने लोगों
१३ पर बुराई पहुंचाने से फिरजा। अपने दास इबराहीम और इसहाक़ और इसराईल को स्मरण कर जिनसे तूने अपनीही किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हारे बंश को स्वर्ग के तारों के समान बढ़ाओंगा और यह समस्त देश जिसके विषय में मैंने कहाहै कि मैं तुम्हारे बंश को देऊंगा और वे उसके सनातन के
१४ अधिकारी होंगे। तब परमेश्वर उस बुराई से जो चाहा था
१५ कि अपने लोगों पर करे फिरा। और मूसा फिरा और पहाड़ से उतरा और साक्षी की दोनों पटियां उसके
१६ हाथ में थीं और पटियां दोनों ओर लिखीहुईथीं। और वे पटियां ईश्वर के कार्य थीं और लिखा हुआ ईश्वर का लिखा
१७ हुआ। और जब यूशअ ने लोगों के कोलाहल का शब्द सुना तो
१८ मूसा से कहा कि छावनी में लड़ाई का शब्द है। फिर कहा कि यह आपुस में जो शब्द होताहै सो हार जीत का नहीं है न
१९ यह दुर्बलता का शब्द है परंतु गीत का शब्द है। और यों हुआ कि जब वुह छावनी के पास आया तब उसने उस बछड़े को और नाचना देखा तब मूसा का क्रोध भड़का तब उसने पटियां अपने हाथों से फेंकदिईं और उन्हें पहाड़ के नीचे
२० तोड़डाला। फिर उसने उस बछड़े को जिसे उन्होंने बनायाथा लिया और उसे आग में जलाया और उसे बुकनी किया और पानी पर बिथराया और इसराईल के संतानों को
२१ पिलाया। फिर मूसा ने हारून को कहा कि इन लोगों ने तुझ से क्या किया कि तू उन पर ऐसा महा पाप लाया।

२२ हारून ने कहा कि मेरे प्रभु का क्रोध न भड़के तू लोगों को
२३ जानता है कि वे बुराई पर हैं। क्योंकि उन्हों ने मुझे कहा कि हमारे लिये देवते बना कि हमारे आगे चलें इस लिये कि यह मूसा जो हमें मिसर के देश से निकाल लाया हम
२४ नहीं जानते कि क्या हुआ। तब मैं ने उन्हें कहा कि जिस किसी के पास सोना हो सो तोड़ लावे सो उन्हों ने मुझे दिया तब मैं ने उसे आग में डाला उस्से यह बछड़ा निकला।

२५ सो जब मूसा ने लोगों को नग्न देखा (क्योंकि हारून ने उनकी नग्नता उनकी लाज के लिये उनके शत्रुन के सन्मुख
२६ खोल दिई)। तो मूसा छावनी के निकास पर खड़ा हुआ और कहा कि जो परमेश्वर की ओर है सो मेरे पास आवे तब
२७ लावी के समस्त संतान उस पास एकट्ठे हुए। और उसने उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराईल के ईश्वर ने यह कहा है कि हर मनुष्य अपना खड्ग बांधे और एक फाटक से दूसरे फाटक लों छावनी के एक निकास से दूसरे निकास लों और हरएक मनुष्य अपने भाई को और अपने संगी को और अपने परोसी
२८ को घात करे। और मूसा ने जैसा लावी के संतानों को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसाही किया सो उस दिन लोगों में से तीन
२९ सहस्र मनुष्य मारे पड़े। क्योंकि मूसा ने कहा कि आज के दिन तुम्में से हरएक मनुष्य अपने पुत्रों पर और अपने भाई पर परमेश्वर के लिये आप को स्थापित करे कि वुह आज तुम्हें
३० आशीष देय। और दूसरे दिन को यों हुआ कि मूसा ने लोगों से कहा कि तुम ने महा पाप किया और अब मैं परमेश्वर के पास ऊपर जाता हों क्या जाने मैं तुम्हारे पाप के
३१ लिये प्रायश्चित्त करों। फिर मूसा परमेश्वर की ओर फिर गया और कहा कि हाय इन लोगों ने महा पाप किया और
३२ अपने लिये सोने के देवते बनाये। और अब यदि तू उनके पाप क्षमा करे तो अच्छा और नहीं तो मैं तेरी बिनती करता हों

३३ कि मुझे अपनी उस पुस्तक से जो लिखी है मेट दे। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जिसने मेरा अपराध किया है
३४ मैं उसी को अपनी पुस्तक से मेट देऊंगा। और अब तू लोगों के साथ उस स्थान को जो मैं ने तुझे बताया है जा और देख कि मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा तथापि मैं अपने विचार
३५ के दिन में उनसे उनके अपराध का विचार करोंगा। तब परमेश्वर ने बछड़े बनाने के कारण जिसे हारून ने बनाया लोगों पर मरी भेजी।

३३ तेंतीसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा कि यहां से जा तू और लोग जिन्हें तू मिसर के देश से निकाल लाया उस देश को जा जिसके विषय में इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब से यह कह के
२ मैं ने किरिया खाई है कि मैं उसे तेरे वंश को देऊंगा। और हट्टियों और फरज़ियों और हवियों और यबूसियों को हांक
३ देऊंगा। एक देश में जहां दूध और मधु बहता है क्योंकि मैं तेरे मध्य में न जाऊंगा इस लिये कि तू कठोर लोग है न
४ हो कि मैं तुम्हें मार्ग में भस्म करडालों। और जब लोगों ने इस बुराई का समाचार सुना तो बिलाप किये और किसीने
५ अपना आभूषण न पहिना। क्योंकि परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराईल के संतान से कह कि तुम एक कठोर लोग हो मैं तेरे मध्य में एक पलमात्र में आके तुझे भस्म करोंगा इस कारण अपना आभूषण उतारो जो तुम से कियाजाय सो
६ जानों। तब इसराईल के संतानों ने होरेब के पहाड़ पर अपना
७ आभूषण उतारडाला। और मूसा ने तंबू ले के छावनी के बाहर दूर खड़ा किया और उसका नाम मंडली का तंबू रक्खा और यों हुआ कि हरएक जो परमेश्वर का खोजी था सो वहां
८ छावनी के बाहर जाताथा। और यों हुआ कि जब मूसा

बाहर तंबू के पास गया तो सब लोग खड़ेहुए और हरएक पुरुष अपने तंबू के द्वार पर खड़ाहुआ मूसा को देखताथा यहां
९ लों कि वुह तंबू में गया। और जब मूसा तंबू में प्रवेश किया तो मेघ का खंभा उतरा और तंबू के द्वार पर ठहरा और
१० परमेश्वर ने मूसा से बार्त्ता किई। और समस्त लोगों ने मेघ का खंभा तंबू के द्वार पर ठहराहुआ देखा और सब के सब
११ अपने अपने तंबू के द्वार पर उठे और दंडवत किई। और परश्वमेर ने मूसा से आमने सामने बार्त्ता किई जैसे कोई अपने मित्र से बार्त्ता करताहै और जब मूसा छावनी को फिरा तो उसका सेवक नून का बेटा यूशुअ एक तरुण मनुष्य तंबू के बाहर
१२ न निकला। फिर मूसा ने परमेश्वर से कहा कि देख तू मुझ से कहताहै कि उन लोगों को लेजा और मुझे नहीं बताया कि किसे मेरे साथ भेजेगा तथापि तू ने कहाहै कि मैं नाम सहित तुझे जानता हों और तू ने मेरी दृष्टि में
१३ अनुग्रह पायाहै। सो यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पायाहै तो मैं तेरी बिनती करताहों कि अपना मार्ग मुझे बता जिसतें मुझें निश्चय होवे कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पायाहै
१४ और सोच कि ये तेरे लोग हैं। तब उसने कहा कि मैंही
१५ जाओंगा और मैं तुझे बिश्राम देऊंगा। मूसा ने कहा कि यदि
१६ आप न जाय तो हमें यहां से मत ले जाइये। क्योंकि किस रीति से जानाजायगा कि मैं ने और तेरे लोगों ने तुझ से अनुग्रह पायाहै क्या इस में नहीं कि तू हमारे साथ जाताहै सो मैं और तेरे लोग समस्त लोगों से जो पृथिवी पर हैं अलग किये
१७ जायेंगे। परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जो बात तू ने कहीहै मैं ने उसे भी मान लिया क्योंकि तू ने मेरी दृष्टि में अनुग्रह
१८ पायाहै और मैं तुझे नाम सहित जानताहों। तब मूसा ने कहा कि मैं तेरी बिनती करताहों कि मुझे अपनी महिमा
१९ दिखा। उसने कहा कि मैं अपनी सब भलाई को तेरे आगे

चलाओंगा और मैं परमेश्वर के नाम का प्रचार तेरे आगे करोंगा और जिसे चाहोंगा उस पर क्रिपाल होंगा और
२० जिसे चाहोंगा उस पर दया करोंगा। और बोला कि तू मेरा
२१ रूप नहीं देखसक्ता क्योंकि मुझे देख के कोई न जीयेगा। और परमेश्वर ने कहा कि देख यह स्थान मेरे पास है और
२२ तू उस टीले पर खड़ा रह। और यों होगा कि जब मेरी महिमा चल निकलेगी तो मैं तुझे पहाड़ के दरार में रक्खोंगा
२३ और जब लों जा निकलों तुझे अपने हाथ से ढांपोंगा। और अपना हाथ उठा लोंगा और तू मेरा पीछा देखेगा परंतु मेरा मुंह दिखाई न देगा।

३४ चौतीसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने लिये पहिली पटियों के समान पत्थर की दो पटियां चीर और मैं उन पटियों पर वे बातें लिखोंगा जो पहिली पटियों पर थीं जिन्हें तू ने
२ तोड़डाला। और तड़के सिद्ध हो और बिहान को सीना के पहाड़ पर चढ़आ और वहां पहाड़ की चोटी पर मेरे आगे
३ होजा। और कोई मनुष्य तेरे साथ न आवे और समस्त पहाड़ पर कोई देखा न जावे झुंड और लेहंड़ा पहाड़ के आगे
४ चराई न करें। तब अगिली पटियों के समान पत्थर की दो पटियां चीरीं और जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा किईथी बिहान को मूसा पत्थर की दोनों पटियां अपने हाथ
५ में लियेऊए सीना के पहाड़ पर चढ़गया। और परमेश्वर मेघ में उतरा और उसके साथ वहां खड़ा रहा और परमेश्वर
६ के नाम का प्रचार किया। और परमेश्वर उसके आगे से चला और प्रचार किया कि परमेश्वर परमेश्वर ईश्वर दयाल और क्रिपाल और धीर और भलाई में और सच्चाई में अधिक है।
७ सहस्रों के लिये दया रखताहै पाप और अपराध और चूक का

क्षमाकर्त्ता और जो किसी भांति से अपराधी को निर्दोषी न ठहरावेगा और जो पितरों के पाप का उनके पुत्रों और पैात्रों पर
८ तीसरी और चैाथी पीढ़ी लों प्रतिफलदायक है। तब मूसा ने
९ शीघ्रता से भूमि की ओर सिर झुका के दंडवत किई। और बाला कि हे परमेश्वर यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो हे मेरे प्रभु मैं तेरी बिनती करता हों कि हम्में होके चल क्योंकि ये कठोर लोग हैं और हमारे पाप और अपराध क्षमा
१० कर और हमें अपना अधिकार ठहरा। तब वुह बोला कि देख मैं तेरे समस्त लोगों के आगे एक बाचा बांधता हों कि मैं ऐसा आश्चर्य करोंगा जैसा कि समस्त पृथिवी पर और किसी देश में न हुआ है और सब लोग जिनमें तू है परमेश्वर
११ के कार्य देखेंगे क्योंकि मैं तुझ से भयंकर कार्य करोंगा। जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हों उसे मानियो देख मैं अमूरियों और किनानियों और हित्तियों और फ़रज़ियों और
१२ हव्वियो और यबूसियों को तेरे आगे से हांकता हों। सो आप से चैाकस रह ऐसा न होवे कि तू उस भूमि के बासियों के साथ जिसमें तू जाता है कुछ बाचा बांधे और तेरे मध्य में फंदा
१३ होवे। परंतु तुम उनकी यज्ञबेदियों को नाश करो और उनकी मूर्त्तिन को तोड़डालो और उनकी बाटिका को काटडालो।
१४ इसलिये किसी देव की पूजा न करो क्योंकि वुह परमेश्वर
१५ जिसका नाम ज्वलन है ज्वलित ईश्वर है। ऐसा न होवे कि तू उस देश के बासियों से कुछ बाचा बांधे और वे अपने देवों के पीछे व्यभिचार करें और अपने देव के लिये बलिदान करें
१६ और तुझे बुलावें और तू उसके बलिदान से खा लेवे। और तू उनकी बेटियां अपने बेटों के लिये लावे और उनकी बेटियां अपने देवों के पीछे व्यभिचार करें और तेरे बेटों को
१७ भी अपने देवों के पीछे व्यभिचार करावें। तू अपने लिये ढाले
१८ हुए देव मत बनाइयो। अख़मीरी रोटी के पर्ब्ब का

पालन कीजियो सात दिन लों जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है आबिब के मास के समय में ठहरा के अख़मीरी रोटी खाइयो इस लिये कि तू आबिब के मास में मिसर से बाहर आया।
१९ सब जो गर्भ को खोलते हैं और तेरे पशुन के समस्त पहिलौंठे
२० बैल अथवा भेड़ के मेरे हैं। परंतु गदहे के पहिलौंठे को छुड़ाके मेम्ना दीजियो और यदि न छुड़ावे तो उसका गला तोड़डालियो अपने पुत्रों के समस्त पहिलौंठों को छुड़ाइयो और
२१ मेरे आगे कोई छूछे हाथ न आवे। छः दिन लों कार्य करना परंतु सातवें दिन बिश्राम करना हल जोतने और
२२ लवने का समय हो बिश्राम करना। और अठवारों का पर्ब्ब गोहूं के पहिले फल लवने के समय और संवत के अंत
२३ में एकट्ठा करने का पर्ब्ब करना। और तुम्हारे समस्त पुत्र बरस में तीनबार परमेश्वर ईश्वर के आगे जो इसराईल
२४ का ईश्वर है आवें। इस लिये कि मैं देशियों को तेरे आगे से बाहर निकालोंगा और तेरे सिवानों को बढ़ाओंगा जब कि तू बरस में तीनबार अपने परमेश्वर ईश्वर के आगे जायगा
२५ तब कोई तेरे देश की बांछा न करेगा। तू मेरी यज्ञबेदी पर लोहू ख़मीर के साथ बलिदान मत चढ़ाना और पर्ब्ब का
२६ बलिदान कधी बिहान लों धरारहने न पावे। तू अपने देश के पहिले फलों का पहिला अपने परमेश्वर ईश्वर के मंदिर में
२७ लाना मेम्ना को उसकी माता के दूध में मत सिझाना। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू ये बातें लिख क्योंकि इन बातों के समान मैं ने तुझ से और इसराईल से बाचा बांधी है।
२८ और वुह चालिस दिन रात परमेश्वर के पास था उसने न रोटी खाई न पानी पीया और उसने उस नियम की बातें वे
२९ दस आज्ञा पटियों पर लिखीं। और जब मूसा नियम की पटिया अपने दोनों हाथ में लिये ज़ए सीना के पहाड़ से नीचे उतरा तो ऐसा ज़आ कि उसने पहाड़ से

उतरते न जाना कि जब वुह उसके साथ बात करताथा
३० उसका रूप चमकताथा। और जब हारून और इसराईल
के समस्त संतानों ने मूसा को देखा तो क्या देखतेहैं कि
उसका रूप चमकताथा और वे उसके पास आने में
३१ डरतेथे। मूसा ने उन्हें बुलाया और हारून और लोगों के
समस्त प्रधान उस पास उलटे फिरे और मूसा ने उनसे बातें
३२ किईं। और अंत को इसराईल के समस्त संतान पास आये
और उसने उन सब बातों की जो परमेश्वर ने उसे सीना के
३३ पहाड़ पर कही थीं उन्हें आज्ञा किईं। और जब मूसा उनसे
३४ बातें करचुका तो उसने अपने मुंह पर घूंघट डाला। पर जब
मूसा परमेश्वर के आगे उसे बार्त्ता करने जाताथा तो जबलों
बाहर न आताथा घूंघट को उतारदेताथा और जो आज्ञा
होतीथी वुह बाहर आके इसराईल के संतानों को कहताथा।
३५ और इसराईल के संतानों ने मूसा का मुंह देखा कि उसका
मुंह चमकताथा और मूसा ने मुंह पर घूंघट डाला जबलों कि
ईश्वर से बातें करने गया।

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब।

१ और मूसा ने इसराईल के संतानों की समस्त मंडली को
एकट्ठा करके कहा कि परमेश्वर ने इन बातों को आज्ञा किईहै
२ तुम उन्हें पालन करो। छः दिन लों कार्य कियाजावे परंतु
सातवां दिन तुम्हारे लिये पवित्र दिन होवे परमेश्वर के चैन का
बिश्राम दिन होगा जो कोई उसमें कार्य करेगा मारडाला
३ जायगा। बिश्राम के दिन अपने समस्त निवासों में आग मत
४ बारियो। और मूसा ने इसराईल के संतानों की
समस्त मंडली को कहा वुह आज्ञा जो परमेश्वर ने किई यह
५ है। तुम अपने में से परमेश्वर के लिये भेंट लाओ और
जो कोई मन से चाहे सो परमेश्वर के लिये भेंट लावे सोना

६ और रूपा और पीतल। और नीला और बैंजनी और
७ लाल झीने सूती वस्त्र और बकरियों के बाल। और लाल
रंगेहुए मेंढ़ों के चमड़े और नीले चमड़े और शमशाद की
८ लकड़ी। और जलाने का तेल और अभिषेक के तेल के लिये
९ और धूप के लिये सुगंध द्रव्य। और सूर्यकांतमणि और कटिबंध
१० और चपरास पर जड़ने के लिये मणि। और तुममें से जो
बुद्धिमान है आवे और जो कुछ परमेश्वर ने आज्ञा किई है
११ बनावे। निवास और तंबू और उसके घटाटोप और उसकी
१२ घुंडियां और उसके चूरगहने। और मंजूषा और उसके
१३ बहंगर और दया का आसन और ढांपने का घूंघट। और
मंच और उसके बहंगर और उसके समस्त पात्र और भेंट की
१४ रोटी। और ज्योति के लिये दीअट और उसकी सामग्री
१५ और प्रकाश के लिये तेल के संग उसके दीपक। और धूप की
यज्ञबेदी और उसके बहंगर और अभिषेक का तेल और धूप
और सुगंध द्रव्य और तंबू में प्रवेश करने के द्वार के ओझल।
१६ और यज्ञबेदी पीतल की झरनी और उसके बहंगर और
उसके समस्त पात्र और स्नानपात्र और उसकी पहिया
१७ समेत। आंगन के ओझल और उसके खंभे और उनके
१८ चूरगहने और आंगन के द्वार के ओझल। और तंबू के खूंटे
१९ और आंगन के खूंटे और उनकी डोरियां। सेवा के वस्त्र जिसतें
पवित्र स्थान में सेवा करें हारून याजक के लिये पवित्र वस्त्र और
उसके बेटों के पवित्र वस्त्र जिसतें याजक के पद में सेवा करें।
२० तब इसराईल के संतानों की समस्त मंडली मूसा के
२१ आगे से चली गई। और हरएक जिसके मन ने उसे उभाड़ा
और हरएक अपने मन के अभिलाष से जिसने जो चाहा
मंडली के तंबू के कार्य्य के कारण और उसके नैवेद्य और उसकी
समस्त सेवा और पवित्र वस्त्र के लिये परमेश्वर की भेंट लाया।
२२ और वे आये क्या स्त्री क्या पुरुष जितनों को वांछा हुई और खड़वे

और बालियां और कुंडल और अंगूठियां ये सब सोने के
गहने थे और हरएक मनुष्य जिसने परमेश्वर के लिये सोने
२३ की भेंट दिई। और हरएक मनुष्य जिसके पास नीला
और बैंजनी और लाल सूत के झीने बस्त्र और बकरियों के
रोम और मेंढ़ों के लाल चमड़े और नीले चमड़े लाया।
२४ हरएक जिसने कि परमेश्वर को रुपे की अथवा पीतल की भेंट
दिई अपनी भेंट परमेश्वर के लिये लाया और जिस किसी के
पास शमशाद की लकड़ी थी सो उसे सेवा के कार्य के लिये
२५ लाया। और समस्त स्त्रियों ने जो बुद्धिमान थीं अपने अपने
हाथों से काता और अपना काता हुआ नीला और बैंजनी
२६ और लाल और झीने सूत का बस्त्र लाईं। और समस्त स्त्रियों
ने जिन के मनों ने उन्हें बुद्धि में उभाड़ा बकरियों के रोम काते।
२७ और सर्दारों और कटिबंध और चपरास पर जड़ने का मणि।
२८ और सुगंध द्रव्य और जलाने का तेल और अभिषेक का तेल
२९ और सुगंध धूप के लिये तेल प्रधान लोग लाये। क्या पुरुष
और क्या स्त्री जिसका मन चाहा सो समस्त कार्य के लिये जो
परमेश्वर ने बनाने को मूसा की ओर से कहा था इसराईल
के संतान परमेश्वर के लिये वांछित भेंट लाये।
३० तब मूसा ने इसराईल के संतानों से कहा कि देखो परमेश्वर
ने ऊरी के पुत्र बज़लीएल को जो हूर का पोता और यहूदा के
३१ कुल का है नाम लेके बुलाया। और उसने उसे बुद्धि और
समझ में ज्ञान में और समस्त प्रकार की हथौटी में परमेश्वर
३२ के आत्मा से भरदिया। और अपनी बुद्धि से हथौटी का कार्य
३३ निकाले जिसतें सोने और रुपे और पीतल के कार्य करे। और
मणिन के खोदने और जड़ने में और काष्ठ के खोदने में जिसतें
३४ समस्त प्रकार की हथौटी के कार्य करे। और उसने उसके और
अहीसामाख के बेटे अहोलियाब के जो दान के कुल से है मन
३५ में डाला। और उनके अंतःकरणों में ऐसा ज्ञान दिया कि

खोदक के और हथैाटक के और बूटाकारक के समस्त कार्य में और नीला और बैंजनी और लाल और भीने बस्त्र में और जोलाहे के कार्य में और हथैाटी के कार्य में जो बुद्धि से निकालते हैं।

३६ छतीसवां पर्ब्ब।

१ तब बज़ालील और अहालियाब और सब बुद्धिमानों ने जिनमें परमेश्वर ने बुद्धि और समुझ रक्खीथी कि मंदिर के शरण स्थान की सेवा के समस्त प्रकार के कार्य जैसा कि परमेश्वर ने
२ समस्त आज्ञा उन्हें दिई वैसा उन्हों ने किया। से मूसा ने बज़ालील और अहालियाब और हरएक बुद्धिमान को जिसके हृदय में परमेश्वर ने बुद्धि और समुझ डालीथी और हरएक जिसके मन ने उसे उभाड़ाथा कि कार्य करने के लिये पास
३ आवे। और वे मूसा के हाथ से समस्त भेंट जिसे इसराईल के संतान शरण स्थान की सेवा के कार्य के लिये लायेथे पाये
४ और वे हरबिहान उसके पास मनमनता भेंट लातेथे। यहां लों कि सब बिद्यामानों ने शरण स्थान के कार्य किये हरएक मनुष्य अपने अपने काम से जो उन्हों ने बनायाथा आये।
५ और मूसा को कहके बोले कि कार्य की सेवा से जो
६ परमेश्वर ने आज्ञा किई है लोग अधिक लातेहैं। तब मूसा ने आज्ञा किई और समस्त छावनी में प्रचार करवाया कि क्या पुरुष और क्या स्त्री अब कोई शरण स्थान की भेंट के कार्य के
७ लिये और न बनावे से लोग लाने से रोकेगये। क्योंकि जो सामग्री उनके पास थी समस्त कार्य बनाने के लिये बहुत
८ और अधिक थी। और तंबू के कार्यकारियों में से हरएक ने जो बुद्धिमान था बटेहुए सूती बस्त्र के नीले और बैंजनी और लाल हथैाटी के कार्य से करोबीम के साथ दस ओहार बनाये।
९ हर ओहार की लंबाई अठाइस हाथ और उसकी चौड़ाई

१० चार हाथ सब ओभल एकनाप के। और पांच ओभल को एक दूसरे में मिलाया और पांच ओभल एक दूसरे में
११ मिलाया। और उसने एक ओभल के कोर पर अनवंट से लेके जोड़ पर नीले तुकने बनाये इसी रीति से दूसरे ओभल
१२ के अत्यंत अलंग में दूसरे के जोड़ पर बनाये। और उसने एक ओभल के अंचल में पचास तुकमें बनाये और पचास तुकमें दूसरे ओभल के मिलाने के खूंट में बनाये जिसतें
१३ तुकमें एक दूसरे में जुटजायें। और उसने सोने की पचास घुंडी बनाई और उन घुंडियों से ओभल को जोड़ा जिसतें
१४ एक तंबू होगया। और उसने बकरी के रोम के ग्यारह ओभल बनाये जिसतें तंबू के लिये ओहार हो।
१५ एक ओभल की लंबाई तीस हाथ और चौड़ाई चार हाथ
१६ ग्यारहो ओभल एकही परिमाण के बनाये। और उसने पांच
१७ ओभल को अलग जोड़ा और पांच ओभल को अलग। और उसने पचास तुकमें एक ओभल के खूंट में जो अंत के खूंट के जोड़ में है और पचास तुकमें दूसरे ओभल के खूंट में बनाया।
१८ और उसने तंबू को जोड़ने के लिये जिसतें एक होजावे पीतल
१९ की पचास घुंडियां बनाईं। और उसने मेंढ़ों के रंगेऊए लाल चमड़ों से और नीले चमड़ों से तंबू के लिये ओहार बनाया।
२० और उसने तंबू के लिये शमशाद की लकड़ी से
२१ खड़े पाट बनाये। हर पाट की लंबाई दस हाथ और उसकी
२२ चौड़ाई डेढ़ हाथ। हर पाट में दो दो चूलें थीं जो एक दूसरे से समान अंतर थीं उसने तंबू के समस्त पाटों के लिये योंही
२३ बनाया। और उसने तंबू के लिये पाट बनाया बीस उनमें से
२४ दक्षिण की ओर के लिये। और उसने उन बीस पाटों के नीचे के लिये रूपे की चालीस चोंगियां बनाईं हर पाट के नीचे
२५ के लिये दो दो चोंगियां। और दूसरे पाट की चूलों के लिये दो तंबू की दूसरी अलंग जो उत्तर के द्वार की ओर है बीस
२६ पाट बना। और रूपे की उनकी बीस दीवलियां एक पाट के

लिये दो दीवलियां और दूसरे पाट के लिये दो दीवलियां।
२७ और उसने तंबू की पश्चिम अलंग के लिये छः पाट बनाये।
२८ और तंबू की दोनों अलंग में कोने के लिये दो पाट बनाये।
२९ और वे नीचे जोड़े गये और एक कड़ी में ऊपर से जोड़े गये
३० इसी रीति से उसने दोनों के दोनों कोनों में जोड़ा। और
आठ पाट और उनकी चांदी की सोलह दीवलियां थीं एक
३१ पाट के नीचे दो दो दीवलियां। और शमशाद काष्ठ से अड़ंगे
३२ बनाये तंबू की एक अलंग के पाटों के लिये पांच। और तंबू की
दूसरी अलंग के पाट के लिये पांच अड़ंगे और तंबू की पश्चिम
३३ अलंगों के लिये पांच। और उसने मध्य का अड़ंगा ऐसा बनाया
३४ कि एक सिरे से दूसरे सिरों के पाटों में प्रवेश होवे। और
पाटों को सोने से मढ़ा और उनके अड़ंगे के कड़े सोने के बनाये
३५ और अड़ंगों को सोने से मढ़ा। और नीला और बैंजनी और
लाल रंग और बटा हुआ झीना सूतीवस्त्र था एक घूंघट हथौटी
के कार्य से बनाया और उस पर करोबियों की सूरतें बनाईं।
३६ और उसके लिये शमशाद के चार खंभे बनाये और उन्हें
सोने से मढ़ा और उनके आंकड़े सोने के और उनके लिये
३७ चार दीवलियां चांदी की ढालकर बनाईं। और वुह नीला
और बैंजनी नील रंग और लाल और बटा हुआ झीने सूत से
३८ बूटा काढ़ा हुआ तंबू के द्वार के लिये एक ओझल बनाया। और
उसके पांच खंभे आंकड़े सहित बनाये और उनके सिरे और
कंगनी सोने से मढ़े परंतु उनकी पांच दीवलियां पीतल की।

३७ सैंतीसवां पर्ब्ब।

१ और बज़ालील ने शमशाद काष्ठ से मंजूषा को बनाया जिसकी
लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊंचाई डेढ़
२ हाथ की। और उसे चोखे सोने से भीतर बाहर मढ़ा और
३ उसकी चारों ओर के लिये एक सोने की कंगनी बनाई। और
उसने उसके चार कोनों के लिये सोने के चार कड़े ढाले दो कड़े

उसकी एक अलंग और दो कड़े उसकी दूसरी अलंग ढाले।
४ और शमशाद की लकड़ी के बहंगर बनाये और उन्हें सोने से
५ मढ़ा। और उसने बहंगरों को मंजूषा की अलंग के कड़ों में
६ डाला कि मंजूषा को उठावें। और उसने दया के
आसन को चोखे सोने से बनाया उसकी लंबाई अढ़ाई हाथ
७ और चौड़ाई डेढ़ हाथ। और सोने के दो करोबी बनाये एक
टुकड़े से पीट के दया के आसन के दोनों खूंट में उन्हें बनाया।
८ एक करोबी इस खूंट में और एक करोबी उस खूंट में दया के
९ आसन में से उसने करोबियों को दोनों खूंट में बनाया। और
करोबियों ने अपने पंख ऊपर फैलाये और अपने पंख से दया के
आसन को ढांप लिया उनके मुंह एक दूसरे की ओर था
१० दया के आसन की ओर उनके मुंह थे। और उसने
मंच को शमशाद की लकड़ी से बनाया उसकी लंबाई दो हाथ
११ और चौड़ाई एक हाथ और उसकी ऊंचाई डेढ़ हाथ। और
उसे चोखे सोने से मढ़ा और उसके लिये चारों ओर सोने का
१२ एक कलस बनाया। और उसने उसके लिये चार अंगुल की
एक कंगनी बनाई और उस कंगनी के लिये चारों ओर सोने
१३ के कलस बनाये। और उसने उसके लिये सोने के चार
कड़े ढाले और उन्हें उसके चारों पायों के चारों कोनों में
१४ लगाया। कंगनी के सन्मुख मंच के उठाने के स्थानों में कड़े थे।
१५ और उसने मंच शमशाद की लकड़ी का बनाया और उन्हें
१६ सोने से मढ़ा। और मंच पर की थालियां और उसके
१७ कटोरे के ढपने निर्म्मल सोने के बनाये। और उसने
दीअट को निर्म्मल सोने से गढ़ के बनाया और उसकी डंडी
और डाली और कटोरियां और कलियां और उसके फूल
१८ एकहीसे थे। और उसके अलंगों से छः डालियां निकलतीं
थीं दीअट की एक अलंग से तीन डालियां और दीअट की
१९ दूसरी अलंग से तीन डालियां। तीन कटोरियां बदाम की नाईं

हरएक डालियों में थीं और कली और फूल उसी छओ
२० डालियों में जो दीअट से निकलतीथीं। और दीअट में चार
कटोरियां बदाम की नाईं बनी हुईथीं उसकी कलियां और
२१ फूल। और उसकी दो दो डालियों के नीचे एक एक कलियां
२२ थीं छः डालियों के समान जो उस्से निकलतीथीं। कलियां और
डालियां उसकी उसीसे थीं ये सब के सब निर्म्मल सोने से
२३ गढ़ेहुए थे। और उसके लिये सात दीपक और उसके फूल
२४ की कतरनियां और उसके पात्र निर्म्मल सोने से बनाये। और
उसने उसके समस्त पात्रों को एक तोड़ा निर्म्मल सोने का
२५ बनाया। और धूप बेदी को शमशाद की लड़की से
बनाया जिसकी लंबाई एक हाथ और चौड़ाई एक हाथ
चौकोर बनाया और उसकी ऊंचाई दो हाथ और उसके
२६ सींग उसीसे थे। और उसका ढपना और उसकी चारों
ओर की अलंग और उसके सींग निर्म्मल सोने से मढ़े और
२७ उसके लिये सोनेके चारों ओर कलस बनाये। और उसने
उसके कलस के नीचे के लिये उसके दोनों कोनों के पास उसकी
दोनों अलंगों पर जिसतें उसके उठाने के बहंगर के स्थान होवें
२८ सोने के दो कड़े बनाये। और उसने बहंगर को शमशाद की
२९ लकड़ी से बनाया और उसे सोने से मढ़ा।
और अभिषेक का पवित्र तेल और गंधी के कार्य के समान
सुगंध द्रव्य से चोखा धूप बनाया।

३८ अठतीसवां पर्ब्ब।

१ और उसने यज्ञबेदी को शमशाद की लकड़ी से बनाया उसकी
लंबाई पांच हाथ और चौड़ाई पांच हाथ चौखूंटी और उसकी
२ ऊंचाई तीन हाथ। और उसके चारों कोनों पर सींग बनाये
उसके सींग उसीमें से थे और उसने उन्हें पीतल से मढ़ा।
३ और उसने यज्ञबेदी के समस्त पात्र बटलोही और फावड़ियां

और कटोरे और मांस के कांटे और अंगेठियां उसके समस्त
४ पात्र पीतल से बनाये। और उसने बेदी के नीचे केलिये
५ पीतल की एक झंझरी बनाई। और उसने पीतल की झंझरी
के चारों कोनों के लिये बहंगर के स्थान पर चार कड़े बनाये।
६ और उसने बहंगरों को शमशाद की लकड़ी से बनाया और
७ उन्हें पीतल से मढ़ा। और उसके बहंगरों को बेदी के
उठाने के लिये अलंगों के कड़ों में डाला उसने बेदी को
८ पटियों से पोला बनाया। और उसने स्नान पात्र और
उसकी चैाकी उन स्त्रियों के दर्पणों से जो मंडली के तंबू के द्वार
९ पर एकट्ठी होतीथीं बनाया। और उसने आंगन बनाया उसके
दक्षिण दिशा के दक्षिण ओर झीने बटेऊए सूती बस्त्र से ओझल
१० सा हाथ के बनाये। उनके बीस खंभे और उनके पीतल के
बीस चूल और खंभों के आंकड़े और उनकी सामी चांदी की।
११ और उत्तर दिशा के लिये सा हाथ उनके बीस खंभे उनकी
पीतल के बीस चूल खंभों को आंकड़े और सामी चांदी की।
१२ और पश्चिम की ओर पचास हाथ के ओझल और उनके दस
खंभे और उनकी दस चूल और आंकड़े और सामी उनकी
१३ चांदी के। और पूर्ब दिशा की पूर्ब ओर के लिये पचास हाथ।
१४ एक ओर के ओझल पंदरह हाथ आंगन और उनके तीन
१५ खंभे और उनकी तीन चूल। और आंगन के द्वार की दूसरी
अलंग के लिये इधर उधर पंदरह हाथ का ओझल उनके तीन
१६ खंभे और उनकी तीन चूल। आंगन की चारों ओर के समस्त
१७ ओझल बटे ऊए झीने सूती बस्त्र के थे। और खंभों की चूल
पीतल के और खंभों के आंकड़े और उनकी सामी चांदी की
और उनके माथे चांदी से मढ़ेऊए और आंगन के सब खंभे
१८ चांदी के शलाके के थे। और आंगन के द्वार के ओझल बूटा
काढ़ेऊए नीले और बैंजनी और लाल और बटे ऊए झीने सूती
बस्त्र का था उसकी लंबाई बीस हाथ और चैाड़ाई पांच हाथ

१९ आंगन के ओभल से मिलतीथी। और उनके चार खंभे और उनकी चार चूल पीतल की उनके आंकड़े चांदी के और उनके
२० माथे और सामी चांदी से मढ़ेहुएथे। और तंबू की और
२१ आगन की चारों ओर के सब खूंटे पीतल के। हारून याजक के पुत्र इथामार के हाथ से लावियों की सेवा के लिये मूसा की आज्ञा के समान साक्षी के तंबू का लेखा यह है।
२२ यहूदा के कुल से हूर के नाती ऊरी के बेटे बज़ालील ने सब कुछ जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किईथी बनाया।
२३ और उसके साथ दान के कुल का अहीसामाख का बेटा अहालियाब था जो खोदने के और हथौटी के कार्य में और नीला और बैंजनी और लाल बूटा काढ़ने में और भीने
२४ वस्त्र में। समस्त सोना जो जो पवित्र कार्यों में उठाथा अर्थात भेंट का सोना सो उंतीस तोड़े और सात
२५ सौ तीस शेकल शरण स्थान के शेकल से था। और मंडली की गिनती में का चांदी एक सौ तोड़े और एक सहस्र सात सौ पक्षहत्तर शेकल शरण स्थान के शेकल के समान
२६ था। हर मनुष्य के लिये एक बीका अर्थात आधा शेकल शरण स्थान के शेकल के समान हरएक के लिये बीस बरस से और ऊपर जिसकी गिनती हुई छः लाख तीन सहस्र
२७ साढ़े पांच सौ थे। और चांदी के सौ तोड़े से शरण स्थान की चूल और घुंघट की चूल ढालीगईं सौ तोड़े की
२८ सौ चूल एक तोड़े की एक चूल। और एक सहस्र सात सौ पचहत्तर शेकल से उसने खंभों के आंकड़े बनाये और
२९ उनके माथे मढ़े और उनमें सामी लगाईं। और भेंट का पीतल जो सत्तर तोड़े और दो सहस्र चार सौ शेकल थे।
३० और उसने उस्से मंडली के तंबू के द्वार केलिये चूल और पीतल की यज्ञवेदी और उसकी पीतल की झंझरी और
३१ बेदी के समस्त पात्र बनाये। और आंगन की चारों ओर की

चूल और आंगन के द्वार की चूल और तंबू के सब खूंटे और आंगन की चारों ओर के सब खूंटे।

३९ उंतालीसवां पर्ब्ब।

१ और नीले और बैंजनी और लाल से उन्हों ने पवित्र सेवा के लिये सेवा के कपड़े बनाये और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा
२ को आज्ञा किई थी हारून के लिये पवित्र वस्त्र बनाये। और उसने कटिबंध को सोने और नीले और बैंजनी और लाल
३ और भीने बटे ज्ञए सूत से बनाया। और उन्हों ने सोने के पतील पतील पत्तर गढ़े और तार खींचे जिसतें उन्हें नीले में और बैंजनी में और लाल में और भीने सूती वस्त्र के साथ
४ चित्रकारी की क्रिया से बनावें। और उसके लिये मोंढे के
५ टुकड़े बनाये कि जोड़े वुह दोनों खूंट से जोड़ा ज्ञआ था। और अनोखा कटिबंध का पटुका जो उसके कार्य के समान सोने का और नीले और बैंजनी और लाल और बटे ज्ञए भीने सूत से जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उसीमें से था।
६ और वे वैदूर्य्यमणि को और उन्हें सोने के ठिकानों में जड़ा और उनमें इसराईल के संतानों के नाम खोदे जैसा कि
७ अंगूठी खोदी जाती है। कि मणि इसराईल के संतानों के स्मरण के लिये उन्हें कटिबंध में रक्खा जैसा कि परमेश्वर ने मूसा
८ को आज्ञा किई थी। और चपरास को हथौटी के कार्य से कटिबंध की नाईं सोने और नीले और बैंजनी और
९ लाल और बटे ज्ञए भीने सूती वस्त्र से बनाया। वुह चौकोर था उन्हों ने चपरास को दोहरा बनाया उसकी लंबाई और
१० चौड़ाई बित्ता भर की दोहरी थी। और उन्हों ने उसमें मणि की चार पांती जड़ी पहिली पांती में माणिक्य और पद्मराग
११ और लालड़ी। दूसरी पांती में एक पन्ना एक नीलम एक हीरा।
१२ तीसरी पांती में एक लशम एक सूर्य्यकांत और एक नीलमणि।

१३ चौथी पांती में एक बैदूर्य और एक फीरोजा चंद्रकांत सोने के
१४ घरों में जड़ेऊए थे। इन मणिन में इसराईल के संतानों के नाम के समान बारहों के नाम के समान बारह गोष्ठी के समान हरएक का नाम खोदाऊआ था जैसा अंगूठी खोदी
१५ जाती है। और चपरास के कोरों में निर्मल सोने की गुथी
१६ ऊई सीकरें बनाईं। और उन्हों ने सोने के दो घर और सोने के दो कड़े बनाये और दोनों कड़ों को चपरास के दोनों कड़ों में
१७ लगाये। और उन्हों ने गुथीऊई सोने की दो सीकरें चपरास के
१८ कोरों के दोनों कड़ों में लटकाईं। और गुथी ऊई दो सीकरों के दोनों खूंट को उन्हों ने दोनों घरों में दृढ़ किया और उन्हें
१९ कटिबंध के दोनों पुट्ठों के टुकड़ों के आगे लगाया। और उन्हों ने सोने के दो कड़े बनाये और उन्हें चपरास के दो कोरों में लगाया उस खूंट पर जो कटिबंध के भीतर की ओर था।
२० और उन्हों ने सोने के दो कड़े बनाये और उन्हें कटिबंध के नीचे की दो अलंग में उसके आगे की ओर उसके जोड़ के
२१ सन्मुख कटिबंध के अनोखे पटुके के ऊपर लगाये। जिसतें वुह कटिबंध के अनोखे पटुके के ऊपर होवे और जिसत कटिबंध से चपरास खुल न जाय जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किईथी उन्हों ने चपरास को उसके कड़ों से कटिबंध के कड़ों में
२२ नीले गोटों से बांधा। और उसने कटिबंध के वस्त्र को बिना
२३ बटे नीले कार्य से बनाया। और उसी वस्त्र के मध्य में एक छेद हो और उस छेद की चारों ओर और उसके घेरे के घर में बुनेऊए कार्य के गोंटे हों जैसा कि झिलम का मुंह होता है
२४ जिसतें फटने नपावे। और उन्हों ने उस वस्त्र के खूंट के घेरे में नीले और बैंजनी और लाल रंग और बटेऊए सूत के
२५ अनार बनाये। और उन्हों ने चोखे सोने की घंटियां बनाईं और घंटियों को उस वस्त्र के अनार के मध्य में लगाया
२६ अनार के मध्य में चारों ओर लगाया। एक घंटी और एक

अनार और एक घंटी और एक अनार सेवा के बस्त्र के अंचल की चारों ओर जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
२७ किई थी। और झीने सूत की कुरतियां हारून और उसके
२८ बेटों के लिये बुनेऊए कार्य से बनीं। झीने सूती पगड़ी और
२९ मुकुट और बटेऊए झीने सूती सुत्थार। और बटेऊए झीने सूती बस्त्र का पटुका और नीला और बैंजनी और लाल बूटा कढ़ाऊआ जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी
३० बनाया। और पवित्र मुकुट के पत्र को निर्मल सोने से बनाया और उसमें खोदीऊई अंगूठी की नाईं खोदा कि परमेश्वर के
३१ लिये पवित्रता। और उसमें एक नीला गोंटा बांधा जिसतें मुकुट के ऊपर हो जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
३२ किई थी। इस रीति से मंडली के तंबू का कार्य बनगया और इसराईल के संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को
३३ आज्ञा किई थी वैसाही किया। और उन्हों ने तंबू को और उसकी समस्त सामग्री को और उसकी घुंडियों को उसकी पटिया और उसके अड़ंगे और उसके खंभे और उसके चोंगे
३४ मूसा के पास लाये। रंगेऊए लाल चमड़े के ओहार और
३५ नीले चमड़े के ओहार और ओहार का घूंघट। और साक्षी
३६ की मंजूषा और उसके बहंगर और दया का आसन। और
३७ मंच और उसके समस्त पात्र और भेंट की रोटी। और पवित्र दीअट उसके दीपक समेत और दीपक जो बिधि से रक्खेजायें
३८ और उसके समस्त पात्र और जलाने का तेल। और सोने की बेदी और अभिषेक का तेल और सुगंधधूप और तंबू के द्वार
३९ का ओझल। और पीतल की बेदी और उसकी पीतल की झंझरी और उसके बहंगर और उसके समस्त पात्र स्नान
४० पात्र और उसकी चौकी। और आंगन के ओझल उसके खंभे उसकी चूल और आंगन के द्वार का ओझल उसकी रस्सियां और खूंटे और मंडली के तंबू के लिये तंबू की सेवा के समस्त

४१ पात्र। पवित्र स्थान में सेवा के लिये सेवा के वस्त्र और हारून याजक के लिये पवित्र वस्त्र और उसके बेटों के वस्त्र कि याजक
४२ के पद में सेवा करें। जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
४३ किई थी वैसेही इसराईल के संतानों ने सब काम किये। और मूसा ने सब कामों को देखा और देखो कि जैसा परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा किई थी वैसाही उन्होंने किया तब उसने उन्हें आशीष दिया।

४० चालीसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि पहिले मास के
३ पहिले दिन तंबू को जो मंडली का तंबू है खड़ा कर। और उसमें साक्षी की मंजूषा रख और मंजूषा पर ओहार डाल।
४ और मंच के भीतर लेजा और उस पर की वस्तु उस पर विधि से रख फिर दीअट भीतर लेजा और उसके दीपक
५ बार। और धूप के लिये सोने की बेदी को साक्षी की मंजूषा
६ के आगे रख और तंबू के द्वार पर ओझल रख। और यज्ञबेदी को तंबू के द्वार के आगे रख मंडली के तंबू के आगे।
७ फिर स्नान पात्र मंडली के तंबू और बेदी के बीच में रख
८ और उसमें पानी डाल। फिर आंगन की चारों ओर खड़ा
९ कर और ओझल को आंगन के द्वार पर टांग। फिर अभिषेक का तेल ले और तंबू को और सब जो उसमें है अभिषेक कर और उसे पवित्र कर और उसे और उसके समस्त पात्र
१० को और वुह पवित्र कियाजायगा। और बेदी को और उसके समस्त पात्र को अभिषेक कर और बेदी को पवित्र कर तब
११ बेदी अति पवित्र होगी। और स्नान पात्र और उसकी
१२ चौकी को भी अभिषेक कर और उन्हें पवित्र कर। और हारून और उसके बेटों को मंडली के तंबू के द्वार के समीप
१३ ला और उनको पानी से नहला। और हारून को पवित्र

बस्त्र पहिना और उसे अभिषेक कर जिसतें वुह मेरे लिये
१४ याजक के पद में सेवा करे। और उसके बेटे को और उन्हें
१५ कुरतियां पहिना। और उन्हें अभिषेक कर जैसे उनके
पिता को अभिषेक किया जिसतें वे याजक के पद में मेरी सेवा
करें क्योंकि उनके अभिषेक का होना निश्चय सनातन की
१६ याजकता उनकी समस्त पीढ़ियों में होगी। जैसा कि परमेश्वर
ने मूसा को आज्ञा किईथी उसने वैसाही किया।
१७ और दूसरे बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में तंबू खड़ा
१८ होगया। और मूसा ने तंबू को खड़ा किया और उसकी चोंगियां
दृढ़ किईं और उसके पाट खड़े किये और उसके अड़ंगे प्रवेश
१९ किये और उसके खंभे खड़े किये। और उसने तंबू को तंबू
पर फैलाया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
किईथी उसने तंबू के ओहार को उसके ऊपर रक्खा।
२० उसने साक्षी को मंजूषा में रक्खा और बहंगर को मंजूषा के
ऊपर रक्खा और दया के आसन को मंजूषा के ऊपर रक्खा।
२१ और वुह मंजूषा को तंबू के भीतर लाया और ओहार के घूंघट
टांगदिये और साक्षी की मंजूषा को ढांपदिया जैसा कि परमेश्वर
२२ ने मूसा को आज्ञा किईथी। और घूंघट के बाहर
तंबू की उत्तर अलंग उसने मंडली के तंबू में मंच को रक्खा।
२३ और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किईथी वैसाही
उसने रोटी को विधि से उस पर परमेश्वर के आगे रक्खा।
२४ फिर उसने दीअट को मंडली के तंबू में मंच के सन्मुख तंबू की
२५ दक्षिण अलंग रक्खा। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को
आज्ञा किईथी उसने परमेश्वर के आगे दीपक को बारा।
२६ और उसने सोने की बेदी को मंडली के तंबू में घूंघट के
२७ आगे रक्खा। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
२८ किईथी उसने उस पर सुगंध धूप जलाया। फिर तंबू के द्वार
२९ पर ओझल टांगा। और यज्ञबेदी को तंबू के द्वार पर मंडली

के तंबू के पास खड़ा किया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा
को आज्ञा किई थी उसने उस पर होम की भेंट और मांस की
३० भेंट चढ़ाई। और उसने स्नान पात्र को मंडली के तंबू के और
यज्ञवेदी के मध्य में रक्खा और नहाने के लिये उसमें पानी
३१ डाला। तब उसे मूसा और हारून और उसके बेटों ने अपने
३२ हाथ पांव धोये। जब वे मंडली के तंबू में प्रवेश किये और यज्ञवेदी
के पास आये तब जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
३३ किई थी वे नहाये। फिर उसने तंबू की और वेदी की चारों
ओर आंगन पर और आंगन के द्वार पर ओझल टांगा सो
३४ मूसा ने सब कार्य पूरा किया। तब एक मेघ ने मंडली के तंबू
३५ को ढांपा और तंबू में परमेश्वर का तेज भरगया। और मूसा
मंडली के तंबू में प्रवेश न करसका इस लिये कि मेघ उस पर
३६ ठहराथा और तंबू परमेश्वर के तेज से भरा था। और जब मेघ
तंबू पर से ऊपर उठायाजाताथा तब इसराईल के संतान
३७ अपनी समस्त यात्रा में बढ़जातेथे। परंतु जब मेघ ऊपर
३८ उठाया न जाताथा तब वे यात्रा न करतेथे। क्योंकि दिन को
परमेश्वर का मेघ और रात को आग तंबू पर इसराईल के
सारे घरानों की दृष्टि में उनकी समस्त यात्रों में ठहरताथा।

मूसा की तीसरी पुस्तक जो लैव्यव्यवस्था कहावतीहै।

१ पहिला पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और मंडली के तंबू में से
२ यह कथा उसे कही। कि इसराईल के संतानों से बोल और उन्हें कह कि यदि कोई तुम्में से परमेश्वर के लिये भेंट लावे तो तुम अपनी भेंट ढोर अर्थात लेहड़े और भुंड में से लाओ।
३ यदि उसकी भेंट लेहड़े में से होम का बलिदान होवे तो निष्खोट नरख होवे वुह मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर
४ के आगे अपनीही इच्छा से लावे। और वुह होम की भेंट के सिर पर अपना हाथ रक्खे और वुह प्रायश्चित्त के लिये ग्रहण
५ कियाजायगा। और वुह उस बैल को परमेश्वर के आगे बलि करे और हारून के बेटे याजक लोहू को लेलें और बेदी की चारों ओर पर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है छिड़कें।
६ तब वुह उस होम के बलिदान की खाल निकाले और उसे
७ टुकड़ा टुकड़ा करे। फिर हारून के बेटे याजक बेदी पर आग
८ रक्खें और उस पर लकड़ी चुनें। और हारून के बेटे याजक उसके टुकड़ों को और सिर और चिकनाई को उन लकड़ियों पर
९ जो बेदी की आग पर हैं बिधि से धरें। परंतु उसकी ओझ और पाओं को पानी से धोवे और याजक सभों को बेदी पर जलावे जिसतें होम का बलिदान होवे जो आग से परमेश्वर के
१० सुगंध के लिये भेंट कियागया। और यदि उसकी भेंट भुंड में से

अर्थात भेड़ बकरी में से होम के बलिदान के लिये होवे तो
११ वुह निष्खोट नरख लावे। और उसे परमेश्वर के आगे बेदी
की उत्तर दिशा में बलि करे और हारून के बेटे याजक उसके
१२ लोहू को बेदी पर चारों ओर छिड़कें। फिर वुह उसकी
चिकनाई सिर सहित टुकड़ा टुकड़ा करे और याजक उन्हें
१३ उन लकड़ियों पर जो बेदी की आग पर है चुने। परंतु ओझ
और पाओं को पानी में धोवे और याजक सभों को लेके बेदी
पर जलावे यह होम का बलिदान जो परमेश्वर के सुगंध के
१४ लिये भेंट कियागया। और यदि उसका होम का बलिदान
परमेश्वर की भेंट के लिये पक्षियों में से होवे तो वुह घुघुओं
१५ अथवा कपोत के छौनों में से भेंट लावे। और याजक उसे
बेदी पर लाके उसका सिर मरोड़डाले और उसे बेदी पर
जलादे और उसके लोहू को बेदी की अलंग पर निचोड़े।
१६ और उसकी झोझ को पर सहित निकाल के बेदी की पूर्ब्ब
अलंग राख के स्थान में फेकदे और वुह उसे उसके डैनों
सहित काटे परंतु अलग न करडाले तब याजक बेदी की
आग पर की लकड़ियों पर उसे जलावे यह होम का बलिदान
जो परमेश्वर के सुगंध के लिये आग से भेंट कियागया।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ और जब कोई भोजन की भेंट परमेश्वर के लिये लावे तो
उसकी भेंट चोखा पिसान हो और वुह उस पर तेल डालके
२ उसके ऊपर गंधरस रक्खे। और वुह उसे हारून के बेटों के
पास जो याजक हैं लावे और वुह उस पिसान में से और
तेल में से और समस्त गंधरस सहित मुट्ठी भर लेवे और
याजक उसके स्मरण को बेदी पर जलावे यह आनंद का सुगंध
३ परमेश्वर की भेंट के लिये है। और भोजन की भेंट का उबरा
हुआ हारून और उसके बेटों का होगा यह होम की भेंट

४ में से परमेश्वर के लिये अत्यंत पवित्र है। यदि तुम्हारी भेंट भोजन की भेंट भट्ठी में की पकाईहुई होवे तो चोखे पिसान के अख़मीरी फुलका तेल से मिलाहुआ हो अथवा अख़मीरी ५ लिट्टी होवे। और यदि तेरी भेंट भोजन की भेंट तवे की होवे अख़मीरी तेल से मिलाहुआ चोखे पिसान की होवे। ६ उसे टुकड़ा टुकड़ा करना और उस पर तेल डालना यह ७ भोजन की भेंट है। और यदि तेरी भेंट भोजन की भेंट ८ कराही में की होवे तो चोखा पिसान तेल सहित बने। और तू भोजन की भेंट को जो परमेश्वर के लिये इन बस्तुन से बनीहै ला और याजक के आगे धरदे और वुह उसे यज्ञबेदी के ९ आगे लावे। और याजक उस भोजन की भेंट में से उसके स्मरण के लिये कुछ लेवे और बेदी पर जलावे यह परमेश्वर १० के लिये सुगंध की भेंट आग से बनीहै। और जो कुछ भोजन की भेंट में से बचरहाहै सो हारून और हारून के बेटों का है यह भेंट अत्यंत पवित्र परमेश्वर के लिये आग से ११ बनाहै। कोई भोजन की भेंट जो तुम परमेश्वर के लिये लाओ ख़मीर से न बने क्योंकि ख़मीर और नई मधु परमेश्वर के १२ लिये किसी भेंट में न जलायाजावे। पहिले फलों की भेंट जो है तुम उन्हें परमेश्वर के आगे लाओ परंतु सुगंध के लिये १३ बेदी पर जलाई नजावे। और तू अपने भोजन की हरएक भेंट को नोन से लोना कीजियो और तेरे भोजन की भेंट अपने ईश्वर के नियम के नोन से रहित न होने पावे अपनी १४ समस्त भेंटों में नोन की भेंट लाइयो। और यदि तू पहिले फलों से परमेश्वर के लिये भोजन की भेंट लावे तो अपने पहिले फलों के भोजन की भेंट अन्न की हरी बालें भुनीहुई १५ अर्थात भरी बालों में से अन्न पीटाहुआ। उस पर तेल डालियो और गंधरस ऊपर रखियो यह भोजन की भेंट है। १६ और पीटेहुए अन्न में से और उस के तेल में से और उसके

समस्त गंधरस सहित याजक उसके स्मरण को जलावे यह आग से परमेश्वर के लिये भेंट है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ और यदि उसकी भेंट कुशल का बलिदान होवे और वुह ढोर मेंसे लावे चाहे नरख अथवा स्त्री वर्ग होवे परमेश्वर के आगे
२ निष्खोट लावे। और वुह अपना हाथ अपनी भेंट के सिर पर रक्खे और मंडली के तंबू के द्वार पर उसे बलि करे और हारून के बेटे जो याजक हैं उसके लोहू को बेदी पर चारों
३ ओर छिड़कें। और वुह कुशल की भेंट के बलिदान में से परमेश्वर के लिये आग की भेंट लावे चिकनाई जो ओझ को
४ ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझ पर है। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है
५ और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे। और हारून के बेटे उन्हें बेदी के ऊपर होम के बलिदान पर आग की लकड़ियों पर जलावें यह परमेश्वर के लिये सुगंध जो आग
६ से भेंट कियागया। और यदि उसकी भेंट कुशल की भेंट का बलिदान परमेश्वर के लिये झुंड से नरख अथवा स्त्री वर्ग से
७ होवे तो वुह उसे निष्खोट चढ़ावे। और यदि वुह अपनी भेंट के
८ लिये मेम्ना लावे वुह उसे परमेश्वर के आगे भेंट देवे। और वुह अपना हाथ अपनी भेंट के सिर पर रक्खे और उसे मंडली के तंबू के आगे बलि करे और हारून के बेटे उसके
९ लोहू को बेदी पर चारों ओर छिड़कें। और वुह कुशल के बलिदान में से कुछ होम का बलिदान परमेश्वर के लिये लावे उसकी चिकनाई और समस्त पुट्ठा रीढ़ से अलग करके
१० और चिकनाई जो ओझों को ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझों पर है। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों के पास है और कलेजे पर की

११ झिल्ली गुर्दें समेत अलग करे। याजक उसे बेदी पर जलावे यह भेंट का भोजन आग से बनाऊआ परमेश्वर के लिये है।
१२ और यदि उसका बलिदान बकरी होय तो परमेश्वर के आगे
१३ लावे। वुह अपना हाथ उसके सिर पर रक्खे और उसे मंडली के तंबू के आगे बलि करे और हारून के बेटे उसके
१४ लोहू को बेदी पर चारों ओर छिड़कें। तब वुह उसमें से अपनी भेंट लावे जो भेंट परमेश्वर के लिये होम से बने चिकनाई जो ओझ को ढांपती है और सारी चिकनाई जो
१५ ओझ पर है। और दोनों गुर्दे और उस पर की जो पांजरों पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे।
१६ और याजक उन्हें बेदी पर जलावे वुह भेंट का भोजन आग से परमेश्वर के सुगंध के लिये बना है सारी चिकनाई परमेश्वर
१७ की। यह तुम्हारी बस्तियों में तुम्हारी पीढ़ियों के लिये सनातन की बिधि है जिसतें तुम चिकनाई और लोहू न खाओ।

४ चौथा पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला। कि इसराईल के संतानों से कह कि यदि कोई प्राणी परमेश्वर की आज्ञाओं के बिरोध में अज्ञानता से पाप करे जिसका होना अनुचित था।
३ यदि वुह अभिषेक कियाऊआ याजक लोगों के पाप के समान पाप करे तो वुह अपने पाप के कारण जो उसने किया है अपने पाप की भेंट के लिये निष्खोट एक बछिया परमेश्वर के
४ लिये लावे। और वुह उस बछिया को मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे लावे और बछिया के सिर पर अपना हाथ रक्खे और बछिया को परमेश्वर के आगे बलि करे।
५ और वुह याजक जो अभिषेक कियाऊआ है उस बछिया के
६ लोहू से कुछ लेवे और मंडली के तंबू में लावे। और याजक अपनी अंगुली लोहू में डुबो के परमेश्वर के आगे पवित्र स्थान

७ के घूंघट के साम्ने उस लोहू से सात बार छिड़के। और याजक लोहू से सुगंध बेदी के सींगों पर जो मंडली के तंबू में है परमेश्वर के आगे लगावे और उस बछिया के उबरेऊए लोहू को होम की भेंट की बेदी की जड़ पर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है

८ ढाले। और सारी चिकनाई को पाप की भेंट के बछड़े से अलग करे और जो चिकनाई ओझ को ढांपती है और सब

९ चिकनाई जो ओझ पर है। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे पर की झिल्ली

१० गुर्दे समेत अलग करे। जिस रीति से कुशल के बलिदान की भेंट के बछड़े से अलग कियाजाता है और याजक उन्हें होम

११ की भेंट की बेदी पर जलावे। और उस बछड़े की खाल और उसका समस्त मांस और उसके सिर समेत और उसकी

१२ ओझ और उसका गोबर। अर्थात समस्त बछड़ा तंबू के बाहर निर्मल स्थान में जहां राख ढालीजाती है लेजावे और उसे लकड़ियों पर आग से जलावे राख डालने के स्थान पर जलाया

१३ जावे। और यदि इसराईल के संतानों की सारी मंडली अज्ञानता से ऐसा पाप करे जो मंडली की दृष्टि से छिपजावे और वे परमेश्वर की आज्ञाओं में से ऐसा कुछ करें जो

१४ बिपरीत है और अपराधी होजायें। तो जब वुह पाप जो उन्हों ने किया जानाजावे तब मंडली एक बछड़ा पाप के बलिदान

१५ के लिये लेवे और मंडली के तंबू के साम्ने लावे। और मंडली के प्राचीन अपने हाथ परमेश्वर के आगे उस बछड़े के सिर पर रक्खें और बछड़ा परमेश्वर के आगे बलि कियाजावे।

१६ और याजक जो अभिषेक कियाऊआ है उस बछड़े के लोहू में

१७ से मंडली के तंबू में लावे। और अपनी अंगुली लोहू में डुबो

१८ के परमेश्वर के आगे घूंघट के साम्ने सात बार छिड़के। और लोहू से बेदी के सींगों पर जो परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू में है लगावे और उबराऊआ लोहू होम की भेंट की बेदी

१९ की जड़ पर जो मंडली के तंबू के द्वार पर है ढाल दे। और
२० उसकी सारी चिकनाई निकाल के बेदी पर जलावे। और
जैसे अपराध के बलिदान के बछड़े से कियाथा वैसही इस
बछड़े से करे और याजक उनके लिये प्रायश्चित्त करे और
२१ वुह उनके लिये क्षमा कियाजायगा। और उस बछड़े को
छावनी से बाहर लेजाय और जैसा उसने पहिली बछिया
को जलाया था वैसा इसेभी जलावे यह मंडली के लिये पाप
२२ की भेंट है। जब कोई अध्यक्ष पाप करे और अज्ञानता से
अपने परमेश्वर की किसी आज्ञा में से कोई ऐसा कार्य
२३ करे जो उचित नथा और अपराधी होवे। अथवा यदि
उसका पाप जिसे उसने किया जानाजावे तब वुह बकरी का
२४ निखोट नरख मेम्ना अपनी भेंट के लिये लावे। और अपना
हाथ उसके सिर पर रक्खे और उसे उस स्थान में जहां होम
की भेंट बलि होतीहै परमेश्वर के आगे बलि करे यह पाप
२५ की भेंट है। और याजक पाप की भेंट के लोहू में से अपनी
अंगुली पर लेके भेंट के बलिदान के सींगों पर लगावे और
२६ उसका लोहू होम की भेंट की बेदी की जड़ पर ढाले। और
उसकी सब चिकनाई कुशल की भेंट के बलिदान की बेदी पर
जलावे और याजक उसके पाप के कारण प्रायश्चित्त करे और
२७ उसके लिये क्षमा कियाजायगा। और यदि सामान्य लोगों
में से अज्ञानता से कोई पाप करे और परमेश्वर की आज्ञा के
२८ बिरुद्ध अनुचित करे और दोषी होवे। अथवा यदि उसका
पाप जो उसने कियाहै उसे जानपड़े तब वुह अपने पाप के
लिये जो उसने कियाहै अपनी भेंट के लिये एक स्त्रीवर्ग
२९ निखोट बकरी का एक मेम्ना लावे। और अपना हाथ पाप
की भेंट के सिर पर रक्खे और पाप की भेंट को भेंट के
३० बलिदान के स्थान में बलि करे। और याजक उसके लोहू में
से अपनी अंगुली पर लेवे और जलाने की भेंट की बेदी के

सींगों पर लगावे और उसका समस्त लोहू बेदी की जड़ पर
३१ ढाले। और उसकी सब चिकनाई जिस रीति से कुशल
की भेंट के बलिदान की चिकनाई अलग किईजाती है अलग
करे और याजक उसे परमेश्वर के सुगंध के लिये बेदी पर
जलावे और याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे और वुह उसके
३२ लिये क्षमा कियाजायगा। और यदि वुह अपने पाप की भेंट
३३ के लिये मेम्ना लावे तो वुह एक स्त्री वर्ग निस्खोट लावे। और
वुह अपना हाथ अपने पाप की भेंट के सिर पर रक्खे और
उसे जहां जलाने की भेंट बलि किईजाती है वहां पाप के लिये
३४ बलिदान करे। और याजक पाप की भेंट के लोहू से अपनी
अंगुली पर लेके होम की भेंट की बेदी के सींगों पर लगावे
३५ और उसका समस्त लोहू बेदी की जड़ पर ढाले। और उसकी
समस्त चिकनाई जिस रीति से कि कुशल की भेंट के बलिदान
की चिकनाई उस मेम्ना से अलग किईजाती है अलग करे और
याजक उन्हें परमेश्वर की आग के भेंट के समान बेदी पर
जलावे और याजक उसके पाप के लिये जो उसने किया है
यह प्रायश्चित्त करे और वुह उसके लिये क्षमा कियाजागा।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ यदि कोई प्राणी पाप करे और किरिया का शब्द सुने और
साक्षी होवे चाहे देखा अथवा सुना हो। यदि वुह न बतावे
२ तो वुह दोषी होगा। अथवा यदि कोई प्राणी कोई अपवित्र
बस्तु छूवे चाहे पशु की अथवा ढोर की अथवा रेंगवैया जंतु
३ की लोथ छूये तो वुह अपवित्र और दोषी होगा। अथवा
यदि वुह मनुष्य की अपवित्रता को छूये हो जिस्से मनुष्य अशुद्ध
४ होता है जब उसे जानपड़े तब वुह दोषी होगा। अथवा
यदि कोई प्राणी मुंह से बुरा अथवा भला करने को उच्चारे
अथवा किरिया खाय और जो कुछ वुह किरिया खाके उच्चारण

करे और वुह उस्से गुप्त हो जब उसे जानपड़े तब एक इनमें
५ से दोषी होगा। और यों होगा कि जब वुह उनमें से एक
बात का दोषी होवे तो वुह मानलेवे कि मैं ने यह पाप कियाहै।
६ तब वुह अपने अपराध की भेंट अपने पाप के लिये जो उसने
कियाहै झुंड में से एक स्त्री बर्ग अथवा भेड़ बकरी में से एक
मेम्ना अपने अपराध की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे लावे
७ और याजक उसके पाप के लिये प्रायश्चित्त करे। और यदि
उसे मेम्ना लाने की पूंजी नहो तो वुह अपने कियेहुए अपराध
के लिये दो पेंडुकियां अथवा कपोत के दो छौने परमेश्वर के
लिये लावे एक पाप की भेंट के लिये और दूसरा होम की
८ भेंट के लिये। फिर वुह उन्हें याजक पास लावे और वुह
पहिले पाप की भेंट चढ़ावे और उसका सिर गले के पास से
९ मरोड़डाले परंतु अलग न करे। और पाप की भेंट के लोहू
को बेदी के अलंग पर छिड़के और उबराहुआ लोहू बेदी की
१० जड़ पर निचोड़े यह पाप की भेंट है। और दूसरे को ब्यवहार
के समान होम की भेंट के लिये चढ़ावे और याजक उसके
कियेहुए अपराध का प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमाकियाजायगा।
११ पर यदि उसे दो पेंडुकियां अथवा कपोत के दो
छौने लाने की पूंजी न हो तो वुह अपने पाप की भेंट के लिये
सेर भर चोखा पिसान पाप की भेंट के लिये लावे उस पर तेल
१२ न डाले न गंधरस रक्खे यह पाप की भेंट है। तब वुह
उसे याजक पास लावे और याजक उसमें से स्मरण के लिये
अपनी मुट्ठी भर के उस भेंट के समान जो परमेश्वर के लिये
१३ आग से होतीहै बेदी पर जलावे यह पाप की भेंट है। और
याजक उस पाप के कारण जो उसने किया इन बातों में से
प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा कियाजायगा और भोजन की
१४ भेंट के समान याजक का होगा। फिर परमेश्वर मूसा
१५ से बोला। कि यदि कोई प्राणी अपराध करे और परमेश्वर

की पवित्र वस्तुन में से अज्ञानता से पाप करे तो वुह अपने अपराध के लिये झुंड में से एक निखोट मेढ़ा पवित्र स्थान के शेकल के समान चांदी के शेकल तेरे मोल के ठहराने के समान

१६ अपराध की भेंट के लिये ईश्वर के आगे लावे। और वुह उस अपराध के कारण जो उसने पवित्र वस्तु में कियाहै पलटा देवे और उसमें से पांचवां भाग मिला के याजक को देवे और याजक उस अपराध की भेंट में से उसका प्रायश्चित्त

१७ करे और वुह क्षमा कियाजायगा। और यदि कोई प्राणी पाप करे और वही करे जो परमेश्वर की आज्ञाओं से जो वर्जित है और यद्यपि वुह नहीं चाहताथा तथापि वुह

१८ अपराधी है वुह अपने पाप को भोगेगा। और तेरे ठहरायेऊए मोल के समान अपराध की भेंट के लिये एक निखोट मेढ़ा झुंड में से याजक पास लावे और याजक उसकी अज्ञानता के कारण जिसमें उसने अंजान की चूक किया और न चाहा उसके लिये

१९ प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा कियाजायगा। यह अपराध की भेंट है उसने निश्चय परमेश्वर के विरुद्ध अपराध कियाहै।

६ छठवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि यदि कोई प्राणी पाप करे और परमेश्वर के विरुद्ध में अपराध करे और अपने परोसी की थाती में जो उस पास रक्खीगईथी अथवा साझे में अथवा किसी वस्तु में जो बरबस लिईजाय अथवा अपने

३ परोसी को छल दियाहै। अथवा कोई वस्तु जो खोई गईथी पावे और उसके विषय में झूठ बोले और झूठी किरिया

४ खाय इन सारी बातों से जो मनुष्य करके पापी होताहै। सो इस कारण कि उसने पाप कियाहै और दोषी है वुह उसे जिसे उसने बरबस लियाहै अथवा जो उसने छल से पायाहै अथवा वुह जो उस पास थातीथी अथवा खोईऊई जो उसने

५ पाईहै फेरदेवे। अथवा सब जिसके कारण उसने भूठी किरिया खाईहै वुह मूल को भर देवे और पांचवां भाग उसमें मिलावे और जिसका आताहो वुह अपने अपराध को
६ भेंट के दिन में उसको फेर देवे। और परमेश्वर के लिये वुह अपने पाप की भेंट भुंड में से एक निष्खोट मेंढ़ा तेरे ठहरायेऊए मोल के समान अपराध की भेंट के लिये याजक पास लावे।
७ और याजक उसके लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे और उस बात में उसने जो कोई अपराध कियाहै उसके लिये क्षमा
८ कियाजायगा। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला।
९ कि हारून और उसके बेटों को आज्ञा कर कि यह होम की भेंट की व्यवस्था है होम की भेंट इस लिये है कि बेदी पर
१० रात भर बिहान लों जलाने के कारण है। और याजक अपने सूती वस्त्र पहिने और सूती जंघिया से अपना शरीर ढांपे और राख को उठालेवे जिसे आग ने होम की बेदी पर भस्म
११ कियाहै और उसे बेदी के पास रक्खे। फिर वुह अपने वस्त्र उतार के दूसरे वस्त्र पहिने और उस राख को छावनी के
१२ बाहर एक पावन स्थान पर लेजावे। और बेदी की आग उसमें जलती रहे वुह कभी बुझने न पावे और याजक उस पर लकड़ी हर बिहान जलायाकरे और उस पर होमकी भेंट चुने और उस पर कुशल की भेंट की चिकनाई जलावे।
१३ अवश्य है कि आग बेदी पर सदा जलती रहे और बुझने न
१४ पावे। भोजन की भेंट की व्यवस्था यह है कि उसे
१५ हारून के बेटे बेदी के आगे परमेश्वर के लिये चढ़ावें। और भोजन की भेंट में से एक मुट्ठी भर पिसान और कुछ तेल में से और सब गंधरस जो उस भोजन की भेंट पर है उठालेवे और उन्हें स्मरण के कारण परमेश्वर के आनंद के सुगंध के लिये
१६ बेदी पर जलावे। और उसका उबराऊआ हारून और उसके बेटे खावें वुह अख़मीरी रोटी के साथ पवित्र स्थान में खाया

१७ जावे मंडली के तंबू के आंगन में उसे खावे। वुह ख़मीर के साथ न पकायाजावे मैं ने अपनी भेंट से जो आग से बनी है उनके भाग में दियाहै जैसी पाप की और अपराध की भेंट
१८ अत्यंत पवित्र है वैसी यह भी है। हारून के संतान में से पुरुष उसे खावे यह परमेश्वर की भेंट के विषय में जो आग से बनीहै तुम्हारी सदा की पीढ़ियों में यह विधि है।
१९ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून और उसके
२० बेटे की भेंट जिसे वे अपने अभिषेक होने के दिन परमेश्वर के आगे भेंट लावें सो यह है ईफा का दसवां भाग चोखा पिसान भोजन की भेंट उसका आधा बिहान को और उसका
२१ आधा सांझ को नित्य हुआ करे। और यह तेल से बनके तवे पर पकायाजावे पकीहुई भीतर लाओ भोजन की भेंट पकीहुए टुकड़े टुकड़े परमेश्वर के सुगंध के लिये चढ़ाओ।
२२ उसके बेटों में का याजक जो उसके स्थान पर अभिषेक हो वुह उसे चढ़ावे यह विधि परमेश्वर के कारण सदा होवे वुह
२३ संपूर्ण जलाया जावे। याजक के हरएक भोजन की भेंट सब
२४ को सब जलाईजावे सो कभी खाई नजावे। और
२५ परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून और उसके बेटों से कह पाप की भेंट की व्यवस्था यह है कि जिस स्थान में जलाने की भेंट बलि किईजाती है वहीं पाप की भेंट भी परमेश्वर
२६ के आगे बलि किईजाय यह अत्यंत पवित्र है। जो याजक पाप के लिये उसे चढ़ावे सो उसे खाय वुह पवित्र स्थान में मंडली
२७ के तंबू के आंगन में खायाजावे। जो कोई उसके मांस को छूयेगा सो पवित्र होगा और जब उसका लोहू किसी वस्त्र
२८ पर छिड़काजाय उसे पवित्र स्थान में धो। परंतु जिस मिट्टी के पात्र में वुह सिझायाजावे सो तोड़ाजाय और यदि वुह पीतल के पात्र में सिझायाजावे तब वुह मांजाजाके पानी में
२९ खंघाराजाय। याजकों में से समस्त पुरुष उसे खावें वुह अत्यंत

३० पवित्र है। और पाप की कोई भेंट जिसका कुछ भी लोहू मंडली के तंबू में मिलाप के कारण लायाजाय सो खायाजायगा आग से जलायाजावे।

७ सातवां पर्ब्ब।

१ और अपराध की भेंट की व्यवस्था भी यह है वुह अत्यंत पवित्र
२ है। जिस स्थान में वे होम की भेंट को बलि करें उसी स्थान में अपराध की भेंट को बलि करें और उसके लोहू को बेदी के
३ चारों ओर पर छिड़के। और वुह उसकी सारी चिकनाई को चढ़ावे उसका पुट्ठा और वुह चिकनाई जो ओझ को
४ ढांपती है। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों के पास है और कलेजी पर की झिल्ली गुर्दों समेत
५ अलग करे और याजक उन्हें परमेश्वर की आग की भेंट के लिये होम की बेदी पर जलावे यह अपराध की भेंट है।
६ याजकों में से हरएक पुरुष उसे खावे वुह पवित्र स्थान में
७ खायाजावे वुह अत्यंत पवित्र है। जैसे पाप की भेंट वैसेही अपराध की भेंट की एकही व्यवस्था है जो याजक उसे
८ प्रायश्चित्त करताहै उसी की होगी। और जो याजक किसी मनुष्य के होम की भेंट चढ़ाताहै सो उसी होम की
९ खाल उसी याजक की होगी जिसे उसने चढ़ाया। और समस्त मांस की भेंट जो भट्ठे में पकायेजावें और सब जो कड़ाही में अथवा तवे पर सो उसी याजक की होगी जो उसे
१० चढ़ाताहै। और हरएक मांस की भेंट जो तेल से मिलीहुई हो अथवा सूखी हो सो सब हारून के बेटों के लिये समान
११ होगी। और कुशल की भेंट के बलिदान जो वुह
१२ परमेश्वर के लिये चढ़ावे उसकी यह रीति है। यदि वुह धन्यवाद के लिये चढ़ावे तो उसके साथ तेल से मिलेहुए अख़मीरी फुलके और अख़मीरी लिट्टी तेल से चुपड़ीहुई और

तेल में पकाईहुई चोखे पिसान की पूरी धन्यवाद के लिये
१३ चढ़ावे। और फुलके से अधिक वुह ख़मीरी रोटी की अपनी
भेंट धन्यवाद के बलिदान के और अपनी कुशल की भेंट के साथ
१४ लावे। और वुह समस्त नैवेद्य में से एक को परमेश्वर के आगे
हिलाने की भेंट चढ़ावे और यह उस याजक का होगा जो
१५ कुशल की भेंट के लोहू को छिड़कताहै। और कुशल की भेंट
और बलिदान का मांस जो धन्यवाद के लिये है उसे चढ़ाये
जाने के दिन में खायाजावे और वुह उसमें से बिहान लों कुछ
१६ न छोड़े। परंतु यदि भेंट का बलिदान मनौती का अथवा
उसके बांछित का हो तो वुह चढ़ाने के दिन खायाजाय और
१७ उबराहुआ से दूसरे दिन भी खायाजाय। परंतु बलिदान
का उबराहुआ मांस तीसरे दिन आग से जलादियाजाय।
१८ और यदि कुशल के बलिदान के मांस में से कुछ तीसरे दिन
खायाजाय तो वुह ग्रहण न कियाजायगा न भेंट दायक के
लिये लेखा कियाजायगा वुह घिनित होगा जो प्राणी उसमें
१९ से खावे सो अपने पाप को भोगेगा। और वुह मांस जो
किसी अशुद्ध वस्तु को छूये सो खाया नजायगा परंतु जलाया
जावे और मांस जो है सो हरएक जो पवित्र हो सो उसमें
२० से खावे। परंतु जो अशुद्ध प्राणी परमेश्वर के कुशल की भेंट
के बलिदान का मांस खावे सोई प्राणी अपने लोगों में से काट
२१ डालाजायगा। और अधिक जो प्राणी किसी अशुद्ध वस्तु को
छूये चाहे मनुष्य का अथवा पशु का अथवा किसी घिनित
वस्तु को छूवे और परमेश्वर के कुशल की भेंट के बलिदान से
मांस खावे वही प्राणी अपने लोगों में से काटाजायगा।
२२।२३ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराईल
के संतानों को कह कि बैल और भेड़ और बकरी की कोई
२४ चिकनाई न खावे। और उस लोथ की चिकनाई जो आप
से आप मरगयाहो अथवा उसकी चिकनाई जो पशु से

फाड़ागयाहो और किसी कार्य में उठायाजाय परंतु उसमें से
२५ किसी भांतिसे मत खाइयो। क्योंकि जो मनुष्य ऐसे पशुकी चिकनाई
खावे जिस्से आग के बलिदान परमेश्वर के आगे चढ़ायेजाते हैं
२६ सोई प्राणी अपने लोगों में से काटाजायगा। और तुम किसी
पच्छी का अथवा पशुका किसी भांति का लोहू अपने सब स्थानों में
२७ मत खाइयो। और जो प्राणी किसी भांति का लोहू खावे सोई
२८ प्राणी अपने लोगों में से काटाजायगा। फिर परमेश्वर
२९ मूसा से कहके बोला। कि इसराईल के संतानों से कह कि
जो कोई अपने कुशल के बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ावे सो
अपने कुशल के बलिदान में से परमेश्वर के आगे नैवेद्य लावे।
३० वुह उस बलिदान को जो परमेश्वर के लिये जलायाजाताहै
और छाती की चिकनाई को अपने हाथों में लावे जिसतें छाती
के हिलाने के बलिदान के लिये परमेश्वर के आगे हिलायाजावे।
३१ और याजक चिकनाई को बेदी पर जलावे परंतु छाती हारून
३२ की और उसके बेटों की होगी। और तुम कुशल की भेंट के
बलिदानों से दहिना कांधा याजक को हिलाने की भेंट के लिये
३३ दीजियो। हारून के बेटों में से जो कुशल के बलिदान का
लोहू और चिकनाई चढ़ाताहै सो दहिना कांधा अपने भाग
३४ के लिये लेवे क्योंकि कुशल की भेटों के बलिदानों में से हिलाने
की छाती और उठाने का कांधा मैं ने इसराईल के संतानों से
लिया और हारून याजक और उसके बेटों को सनातन की
३५ बिधि के लिये दिया। हारून और उसके बेटों के
अभिषेक का जिस दिन में वुह उन्हें आगे धरे कि याजक के
पद में परमेश्वर की सेवा करे परमेश्वर के लिये आग की
३६ भेंटों में का भाग होगा। उसे परमेश्वर ने इसराईल के
संतान को जिस दिन में उसने उन्हें अभिषेक किया उन्हें देने
को आज्ञा किई कि उनकी पीढ़ियों में सनातन के लिये बिधि
३७ होवे। होम की भेंट और भोजन की भेंट और पाप की भेंट

और अपराध की भेंट और स्थापित करने की भेंट और कुशल
३८ की भेंट के बलिदान की यह व्यवस्था है। जिस दिन उसने
इसराईल के संतानों को आज्ञा किई थी कि परमेश्वर के आगे
सीना के वन में अपना नैवेद्य चढ़ावें जिसे परमेश्वर ने सीना
पर्व्वत पर मूसा को आज्ञा किई थी।

८ आठवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून और उसके
साथ उसके बेटों को और वस्त्र को और अभिषेक का तेल और
पाप की भेंट का एक बैल और दो मेंढ़े और एक टोकरी अख़मीरी
३ रोटी ले। और तू सारी मंडली को मंडली के तंबू के द्वार पर
४ एकट्ठा कर। सो जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने
वैसाही किया और सारी मंडली मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठे
५ ऊई। तब मूसा ने मंडली से कहा कि यह वुह बात है जो
६ परमेश्वर ने पालन करने को आज्ञा किई है। फिर मूसा ने
हारून को और उसके बेटों को आगे लाया और उन्हें पानी से
७ नहलाया। और उस पर कुरती पहिनाई और उसकी कटि
में पटुका लपेटा और उसे बागा पहिनाया और उस पर
कटिबंध रक्खा और कटिबंध के अनोखे पटुके से उसकी कटि
८ बांधी और उसे उस पर लपेटा। और उस पर चपरास
९ रक्खा और उसी चपरास पर यूरीम और तमीम जड़े। और
उसके सिर पर मुकुट रक्खा और मुकुट पर और ललाट के
ओर सोने का पत्तर पवित्र मुकुट लगाया जैसा कि परमेश्वर
१० ने मूसा को आज्ञा किई थी। और मूसा ने अभिषेक का तेल
लिया और तंबू को और उसके समस्त पात्रों को अभिषेक
११ करके पवित्र किया और उसमें से कुछ वेदी पर सातबार
छिड़का और वेदी और उसके सारे पात्र और स्नानपात्र
१२ और उसकी चौकी को अभिषेक करके शुद्ध किया। और

अभिषेक के तेल में से हारून के सिर पर ढाला और उसको
१२ अभिषेक करके पवित्र किया। और मूसा हारून के बेटों को
आगे लाया और उन्हें कुरती पहिनाई और उनकी कटि
पर पटुके बांधे और उनके सिर पर पगड़ी रक्खी जैसा कि
१४ परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई। फिर पाप की भेंट
के लिये बैल लाया और हारून और उसके बेटों ने अपने हाथ
१५ पाप की भेंट के बैल के सिर पर रक्खे। और उसे बलि किया
और मूसा ने उसके लोहू को लिया और अपनी अंगुली से
बेदी के सींगों पर चारों ओर लगाया और बेदी को पवित्र
किया और लोहू को बेदी की जड़ पर ढाला और उसे
१६ पवित्र किया जिसतें उसके लिये प्रायश्चित करे। और उसने
सब चिकनाई जो ओझ पर और कलेजे पर की झिल्ली और
दोनों गुर्दे और उनकी चिकनाई लिई और मूसा ने बेदी पर
१७ जलाया। परंतु बैल को और उसकी खाल को और मांस को
और गोबर को छावनी के बाहर आग से जलाया जैसा कि
१८ परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई। फिर उसने होम
की भेंट के लिये मेंढ़ा लिया और हारून और उसके बेटों ने
१९ अपने हाथ उस मेंढ़े के सिर पर रक्खे। फिर उसे बलि किया
२० और मूसा ने बेदी के चारों ओर लोहू छिड़का। और उसने
मेंढ़े को टुकड़ा टुकड़ा किया और मूसा ने सिर को और
२१ टुकड़ों को और चिकनाई को जलाया। और उसने ओझ
और पांव पानी से धोया और मूसा ने सारे मेंढ़े को बेदी पर
जलाया यह आग की भेंट परमेश्वर के सुगंध के लिये होम का
बलिदान है जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई।
२२ फिर वुह दूसरा मेंढ़ा अर्थात स्थापित का मेंढ़ा लाया और
हारून और उसके बेटों ने अपने हाथ उस मेंढ़े के सिर पर रक्खे।
२३ और उसे बलि किया और मूसा ने उसके लोहू में से लिया और
हारून के दहिने कान की लहर पर और दहिने हाथ के अंगूठे

२४ और दहिने पांव के अंगूठे पर लगाया। फिर वुह हारून के बेटों को लाया और लोहू में से उनके दहिने कानों की लहर पर और दहिने हाथों के अंगूठों पर और दहिने पांव के अंगूठों पर मूसा ने लगाया और मूसा ने लोहू को बेदी के
२५ चारों ओर पर छिड़का। और चिकनाई और पूंछ और सब चिकनाई जो ओझ पर और कलेजे पर की झिल्ली और दोनों गुर्दे उनकी चिकनाई और दहिना कांधा लिया।
२६ और उस अख़मीरी रोटी की टोकरी में से जो परमेश्वर के सन्मुख थी एक अख़मीरी फुलका और एक फुलका तेल में चुपड़ाऊआ और एक लिट्टी निकाली और उन्हें चिकनाई पर
२७ और दहिने कांधे पर रक्खा। और उसने सबको हारून और उसके बेटों के हाथों पर रक्खा और उनको परमेश्वर के सन्मुख
२८ हिलाने की भेंट के लिये हिलाया। फिर मूसा ने उन्हें उनके हाथों से लिया और होम की भेंट की बेदी पर जलाया यह स्थापना सुगंध के लिये था यह परमेश्वर के लिये होम की भेंट
२९ है। फिर मूसा ने छाती लिई और उसे हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे हिलाया स्थापित करने के मेंढ़े से मूसा का भाग था जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई।
३० फिर मूसा ने अभिषेक का तेल और बेदी पर के लोहू में से लिया और हारून पर और उसके वस्त्रों पर और उसके साथ उसके बेटों पर और उनके वस्त्रों पर छिड़का और हारून को और उसके वस्त्रों को और उसके बेटों को और
३१ उनके वस्त्रों को पवित्र किया। और मूसा ने हारून को और उसके बेटों को कहा कि मांस को मंडली के तंबू के द्वार पर उसिन और उसे उस स्थान में उस रोटी के साथ जो स्थापित करने की टोकरी में है खाओ जैसे मैं ने यह कहके
३२ आज्ञा किई कि हारून और उसके बेटे उसे खावें। और मांस और रोटी में से जो उबरे उसे आग से जलाओ।

३३ और तुम मंडली के तंबू के द्वार से सात दिन लों बाहर न जाओ जब लों स्थापित करने के दिन पूरे न होवें क्योंकि वुह
३४ तुम्हें सात दिन में स्थापित करेगा। जैसा उसने आज के दिन कियाहै परमेश्वर ने आज्ञा किईहै कि तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त
३५ होवे। इस कारण मंडली के तंबू के द्वार पर सात रात दिन ठहरो और परमेश्वर की आज्ञाओं को पालन करो जिसतें न
३६ मरो क्योंकि मुझे योंही आज्ञा है। सो सब कुछ जो परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा किईथी हारून और उसके बेटों ने किया।

९ नवां पर्व्व।

१ और जब आठवां दिन हुआ तब मूसा ने हारून को और
२ उसके बेटों को और इसराईल के प्राचीनों को बुलाया। और हारून को कहा कि तू एक बछड़ा पाप की भेंट के लिये और एक निष्खोट मेंढ़ा होम की भेंट के लिये ले और परमेश्वर के
३ आगे चढ़ा। और इसराईल के संतान को यह कहके बोल कि एक बकरी पाप की भेंट के लिये और एक बछड़ा और
४ पहिले बरस का एक मेम्ना होम की भेंट के लिये लेओ। और एक बैल और एक मेंढा कुशल की भेंट के लिये लाओ जिसतें परमेश्वर के आगे बलि कियेजावें और तेल से मिलीहुई भोजन की भेंट क्योंकि आज के दिन परमेश्वर तुम्हों पर प्रगट होगा।
५ जैसा कि मूसा ने आज्ञा किईथी वे मंडली के तंबू के आगे लाये और सारी मंडली आगे बढ़के परमेश्वर के आगे खड़ीहुई।
६ यह वुह बात जिसे परमेश्वर ने तुम्हें पालन करने को आज्ञा
७ किई और परमेश्वर की महिमा तुम्हों पर प्रगट होगी। और मूसा ने हारून से कहा कि बेदी पास जा और अपने पाप की भेंट और होम की भेंट चढ़ा और अपने और लोगों के लिये प्रायश्चित्त कर और लोगों की भेंट चढ़ा और उनके लिये

८ प्रायश्चित्त कर जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा किई। इस लिये हारून बेदी पर गया और पाप की भेंट का बछड़ा जो अपने
९ लिये था बलि किया। और हारून के बेटे उस पास लोहू लाये और उसने अपनी अंगुली उसमें डुबोई और बेदी के सींगों पर लगाया और लोहू को बेदी की जड़ पर ढाला।
१० परंतु चिकनाई और गुर्दे और कलेजे पर की झिल्ली अपराध की भेंट से लेके बेदी पर जलाये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को
११ आज्ञा किई। और मांस और खाल को छावनी के बाहर
१२ आग से जलाया। और उसने होम की भेंट को बलि किया और हारून के बेटों ने उसे लोहू दिया जिसे उसने बेदी के
१३ चारों ओर पर छिड़का। फिर उन्होंने होम की भेंट को उसके टुकड़े और सिर समेत उसे दिये और उसने बेदी पर
१४ जलाये। और उसने ओझ को और पांव को धोया और होम की भेंट पर बेदी के ऊपर बेदी पर जलाया।
१५ फिर वुह लोगों की भेंट को लाया और लोगों के पाप की भेंट के लिये बकरी को लिया और उसे बलि किया और उसे
१६ पहिली के समान पाप के लिये चढ़ाया। और उसने होम की
१७ भेंट को लाया और उसी रीति के समान चढ़ाया। और बिहान के होम के बलिदान से उसने मांस की भेंट की ओझ लाया और उसे एक मुट्ठी भर लिई और बेदी पर जलाया।
१८ और उसने बैल और मेंढ़ा लोगों के कुशल की भेंट के बलिदान को बलि किया और हारून के बेटे उसके पास लोहू
१९ लेआये जिसे उसने बेदी की चारों ओर छिड़का। और बैल की और मेंढ़े की चिकनाई और पूंछ और जो ओझ को ढांपती है
२० और गुर्दे को और कलेजे पर की चिकनाई। और उन्होंने चिकनाई को छातियों पर रक्खा और उसने चिकनाई को बेदी
२१ पर जलाया। छातियों को और दहिने कांधे को जैसे परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई हारून ने परमेश्वर के आगे हिलाने

२२ की भेंट के लिये हिलाया। फिर हारून ने मंडली की ओर अपना हाथ उठाया और उन्हें आशीष दिया और पाप की भेंट और होम की भेंट और कुशल की भेंट चढ़ाके नीचे २३ उतरा। फिर मूसा और हारून मंडली के तंबू में प्रवेश किये और बाहर निकल के लोगों को आशीष दिया और सारी २४ मंडली पर परमेश्वर की महिमा प्रगट ऊई। और परमेश्वर के आगे से आग निकली और बेदी पर जलाने की भेंट और चिकनाई को भस्म किया जब सारे लोगों ने देखा वे चिल्ला के औंधे मुंह गिरे।

१० दसवां पर्ब्ब।

१ फिर नादाब और अबिहू हारून के बेटों ने अपना अपना धूपपात्र लिया और उसमें आग भर के उस पर धूप रक्खा और परमेश्वर के आगे उपरी आग चढ़ाई जिसे परमेश्वर ने २ उन्हें बरजाथा। तब परमेश्वर की ओर से आग निकली और ३ उन्हें भस्म किया और वे परमेश्वर के आगे मरगये। तब मूसा ने हारून से कहा कि यह वुह है जो परमेश्वर ने कहाथा कि जो जो मेरे पास आवे मैं उनसे पवित्र कियाजाओंगा और तब मैं सारे लोगों के आगे महिमा पाओंगा तब हारून ४ चुप होरहा। फिर मूसा ने हारून के चचा अज़ीएल के बेटे मीशाईल और इलज़ाफ़ान को बुलाया और कहा कि पास आओ और अपने भाइयों को पवित्र स्थान के साम्ने से तंबू के ५ बाहर उठा लेजाओ। सो वे पास आये और उन्हें अपने सूती कपड़ों में उठा के जैसा मूसा ने कहाथा वैसा छावनी से बाहर ६ लेगये। फिर मूसा ने हारून और उसके बेटे इलिआज़र और ऐतामार को कहा कि अपने सिर को मत उघारो और अपने कपड़े मत फाड़ो नहो कि मरजाओ और सारे लोगों पर परमेश्वर का कोप पड़े परंतु तुम्हारे भाई इसराईल के

घराने उस ज्वलन के लिये विलाप करें जिसे परमेश्वर ने
७ बारा है। और चाहिये कि तुम मंडली के तंबू के द्वार से
बाहर न जाओ जिसमें न हो कि मरजाओ क्योंकि परमेश्वर
के अभिषेक का तेल तुम पर है सो उन्हों ने मूसा के कहने के
८ समान किया। फिर परमेश्वर हारून से कहके
९ बोला। कि जब तुम मंडली के तंबू में प्रवेश करो तो न तू न
तेरे संग तेरे बेटे दाखरस अथवा तीक्ष्ण मदिरा पीजियो
जिसमें नाश न हो यह सनातन के लिये तुम्हारी पीढ़ियों में
१० विधि है। और जिसतें तुम पावन और अपावन और शुद्ध
११ और अशुद्ध में ब्यवरा करो। और जिसतें तुम सारी विधि
जो परमेश्वर ने मूसा की ओर से उन्हें आज्ञा किई है इसराईल
१२ के संतानों को सिखलाओ। फिर मूसा ने हारून
और उसके बेटे इलिआज़र और ऐसामार को जो बचे थे
कहा कि परमेश्वर की भेंटों में से आग से बनीऊई जो मांस की
भेंट बच रही है लेओ और उसे बेदी के पास बिना ख़मीर
१३ से खाओ क्योंकि अत्यंत पवित्र है। और उसे पवित्र स्थान में
खाओ इस लिये कि परमेश्वर की आग के बलिदानों में से तेरा
और तेरे बेटों का यह भाग है क्योंकि मुझे यों ही आज्ञा
१४ ऊई है। और हिलाने की छाती और उठाने के कांधे को किसी
पवित्र स्थान में तू और तेरे पुत्र और तेरी पुत्रियां तेरे साथ
खावें क्योंकि यह तेरा और तेरे पुत्रों का भाग है जो इसराईल
के संतानों के कुशल की भेंटों के बलिदानों में से दियाजाता है।
१५ और उठाने का कांधा और हिलाने की छाती भेंटों के साथ
जो चिकनाई आग से चढ़ाईजाती है जिसतें परमेश्वर के आगे
हिलाने की भेंट के लिये हिलायाजावे तेरे और तेरे बेटों के
कारण सनातन के लिये विधि होगी जैसा कि परमेश्वर ने
१६ कहा है। फिर मूसा ने पाप की भेंट की बकरी को
बऊत ढूंढ़ा तो क्या देखता है कि वुह जलगई तब उसने हारून

के बचेहुए बेटे इलियाज़र और ऐसामार पर रिसिया के
१७ कहा। कि तुम ने पाप की भेंट को क्यों नहीं पवित्र स्थान में
खायाहै वुह अत्यंत पवित्र है तुम्हें दियागयाहै जिसतें तुम
मंडली का पाप उठालेओ और उनके लिये परमेश्वर के आगे
१८ प्रायश्चित्त करो। देखो उसका लोहू पवित्र स्थान में न
पहुंचायागया अवश्यथा तुम उसे पवित्र स्थान में खाते जैसा मैं ने
१९ आज्ञा किईहै। तब हारून ने मूसा से कहा कि देख आजही
उन्होंने अपने पाप की भेंट और अपने होम की भेंट परमेश्वर
के आगे चढ़ाईहै और मुझ पर ऐसी बातें बीतीं यदि मैं पाप
की भेंट आज खाता तो क्या परमेश्वर की दृष्टि में ग्राह्य होता।
२० और मूसा ने यह सुन के मान लिया।

११ ग्यारहवां पर्व्व ।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला। कि तुम
इसराईल के संतानों से कहो कि समस्त पशुन में से जो
३ पृथिवी पर हैं इन पशुन को खाइयो। पशुन में से जिनका
खुर बिभाग हो और जिनका पांव चीराहुआहो और जो
४ पागुर करतेहों उन्हें खाइयो। तथापि उनमें से इन्हें न खाइयो
जो पागुर करतेहैं अथवा जिनका खुर बिभाग हो ऊंट को इस
कारण कि वुह पागुर करताहै परंतु उसका खुर बिभाग नहीं
५ है वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध है। और सफन इस कारण कि वुह
पागुर करताहै परंतु उसका खुर बिभाग नहीं वुह तुम्हारे
६ लिये अशुद्ध। और खरहा इस कारण कि वुह पागुर करताहै
परंतु उसका खुर बिभाग नहीं है वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध।
७ और सूअर यद्यपि उसका खुर बिभाग है और उसका पांव
चीरा तथापि वुह पागुर नहीं करता वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध।
८ तुम उनके मांस में से कुछ न खाइयो और उनकी लोथों को
न छूइयो क्योंकि वे तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं।

९ और समस्त पानियों में का खाइयो नदियों में और समुद्रों में और पानियों में जिस किसीके पंख अथवा छिलके हों उन्हें
१० खाइयो। और सब जो समुद्रों में और नदियों में और सब जो पानियों में चलते हैं और कोई जीवधारी जो पानियों में हैं
११ जिनके पंख और छिलके नहीं हैं घिनित होंगे। और हां वे तुम्हारे लिये घिनित होंगे तुम उनके मांस में से न खाओ
१२ परंतु उनकी लोथ को घिनित समझो। पानियों में जिनके पंख और छिलके नहीं हैं वे तुम्हारे लिये घिनित होंगे।
१३ और पक्षियों में से तुम उन्हें घिनित समझो और उन्हें न खाइयो इस लिये कि वे घिनित हैं गिद्ध और हड़फोड़ और
१४।१५ कुरल। और शकुन और भांति भांति की चील्ह। और
१६ भांति भांति के हरएक काग। और उल्लू और तख़मस और
१७ कोकिल और भांति भांति की तुरमती। और छोटा उल्लू और
१८ हाड़गील और बड़ा उल्लू। और राजहंस और पानबुड़ी
१९ और रखम। और सारस और भांति भांति के बगुला और
२० टिटिहिरी और चमगुदड़ी। और सारे कीट जो उड़ते और
२१ चार पांव से रेंगते हैं तुम्हारे लिये वे घिनित हैं। तथापि तुम सब पक्षियों में से जो चारों पांव से रेंगते हैं जिनकी पिछली टांगें अगले पांव से लपटी ऊई हैं जिस्से वे फांदकर पृथिवी
२२ पर चलें तुम उन्हें खाइयो। तुम उन्हों में से इन्हें खाइयो जैसे भांति भांति की टिड्डी और भांति भांति के फनगे और भांति
२३ भांति के गोबरैरे और भांति भांति के किल्लिका। परंतु सब रेंगवैये पक्षियों में से जिनके चार पांव हैं वे तुम्हारे लिये
२४ घिनित हैं। और उनके लिये तुम अशुद्ध होगे जो कोई उनकी
२५ लोथ को छूयेगा सो सांझ लों अपवित्र रहेगा। और जो कोई उनमें से किसी की लोथ को उठावे सो अपने कपड़े धोवे
२६ और सांझ लों अपवित्र रहेगा। हरएक पशु जिनके खुर बिभाग हों और पांव चीरा न हो और पागुर करता न हो

सो तुम्हारे लिये अशुद्ध है जो कोई उन्हें छूयेगा सो अशुद्ध
२७ होगा। और समस्त प्रकार के पशु जो चार पांओं और थाप
पर चलते हैं तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं जो कोई उनकी लोथ को
२८ छूयेगा सो सांझ लों अशुद्ध रहेगा। और जो कोई उनकी
लोथ को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और वुह सांझ लों
२९ अशुद्ध रहेगा ये तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। और पृथिवी
पर के रेंगवैये में से ये तुम्हारे लिये अपवित्र हैं नेउर और
३० चूहा और भांति भांति का कछुआ। और टिकटिकी और
३१ गिरगिटान और बम्हनी और छछूंदर और घोंघा। और सब
रेंगवैये में से ये तुम्हारे लिये अपवित्र हैं जो कोई उनकी लोथ
३२ को छूये सो सांझ लों अशुद्ध होगा। और जिस किसी पर
इन्हों में से मर के गिरपड़े सो अशुद्ध होगा चाहे लकड़ी का
पात्र अथवा वस्त्र अथवा खाल अथवा टाट जो पात्र होवे
जिस्से काम होता हो सो अवश्य जल में डालाजावे और सांझ लों
३३ अपवित्र रहेगा और इसी रीति से पवित्र होगा। और सब
मिट्टी के पात्र जिनमें उनमें से गिरे जो उसमें होवे सो अशुद्ध
३४ होगा तुम उसे तोड़डालियो। समस्त भोजन जो खायाजाताहै
जो उसमें उनसे पानी पड़े सो अशुद्ध होगा और जो कुछ
३५ ऐसे पात्रों में पीयाजाताहै सो अशुद्ध होगा। और जिस
पर उनकी लोथ पड़े सो अपवित्र होगा चाहे भट्ठी चाहे
चूल्हा होय तोड़ाजायगा वे अपवित्र हैं और तुम्हारे लिये अशुद्ध
३६ होंगे। तथापि सोता और कूआ जिसमें बहुत जल होवे वुह
शुद्ध होगा परंतु जो कोई उनकी लोथ को छूवेगा सो अशुद्ध
३७ होगा। और यदि उसकी लोथ किसी बोने के बीज पर गिरे
३८ सो पवित्र रहेगा। परंतु यदि उस बीज पर पानी पड़ाहो
और उनकी लोथ से कुछ उस पर गिरे सो तुम्हारे लिये
३९ अशुद्ध होगा। और यदि तुम्हारे खाने के पशुन मेंसे कोई मरे
जो कोई उसकी लोथ को छूये सो सांझ लों अशुद्ध होगा।

४० और जो कोई उसकी लोथ में से खावे सो अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अशुद्ध होगा और जो उसकी लोथ को उठाताहै सोभी अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अशुद्ध
४१ होगा। और हरएक जो पृथिवी पर रेंगताहै सो घिनित है
४२ सेखाया नजायगा। जो पेट के बल चलताहै और जो चार पाओं पर चलतेहैं और रेंगवैये मेंसे जो अधिक पांव रखतेहैं और पृथिवी पर रेंगतेहैं तुम उन्हें नखाइयो क्योंकि वे घिनित हैं।
४३ तुम किसी रेंगवैये से जो पृथिवी पर रेंगताहै अपने को घिनित मत करो और न आपको अपवित्र करो यहां लों कि
४४ तुम उस्से अशुद्ध होजाओ। क्योंकि मैं तुम्हारा ईश्वर परमेश्वर हों इस लिये तुम आप को शुद्ध करो और तुम पवित्र होगे क्योंकि मैं पवित्र हों और अपने को किसी रेंगवैये जंतु से जो
४५ पृथिवी पर रेंगताहै अशुद्ध न करो। क्योंकि मैं परमेश्वर हों जो मिसर के देश से तुम्हें लेजाता हों जिसतें तुम्हारा ईश्वर हों
४६ सो तुम शुद्ध होओ क्योंकि मैं पवित्र हों। चारपाये और पच्छी और सब जीवधारी जो पानी में चलतेहैं और हरएक
४७ जंतु जो पृथिवी पर रेंगतेहैं उनकी यही व्यवस्था है। कि शुद्ध और अशुद्ध में और उन पशुन में जो खायेजावें और उनमें जो न खायेजावें तुम बिभेद करो।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराईल के संतानों से कह कि जब स्त्री गर्भिणी होवे और बेटा जने तब वुह सात दिन अशुद्ध होगी जैसे दुर्बलता के कारण अलग
३ होने के दिनों में होतीहै। और आठवें दिन लड़के का ख़तनः
४ कियाजावे। और वुह रुधिर से पवित्र होनेके लिये तेंतीस दिन पड़ी रहे वुह किसी पवित्र बस्तु को न छूवे और जब लों उसके पवित्र होनेके दिन पूर्ण न होवें तब लों वुह पवित्र

५ स्थान में न जावे। और यदि लड़की जने तो वुह दो अठवारे अशुद्ध होगी जैसे अपने अलग किये जाने के दिनों में थी और वुह अपने रुधिर की पवित्रता के लिये छियासठ दिन पड़ी रहेगी।
६ और जब उसके पवित्र होने के दिन पुत्र के अथवा पुत्री के पूर्ण होवें तब वुह पहिले बरस का एक मेम्ना होम की भेंट के लिये लेवे और एक कपोत का छौना अथवा पंडुकी पाप की भेंट के लिये मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावे।
७ वुह उसे परमेश्वर के आगे चढ़ावे और उसके लिये प्रायश्चित्त करे और वुह अपने रुधिर बहने से पवित्र होगी यह पुत्र
८ और पुत्री जन्ने के लिये व्यवस्था है। और यदि उसे मेम्ना लाने की पूंजी न हो तो दो पंडुकियां अथवा कपोत के दो छौने लावे एक होम की भेंट के लिये और दूसरा अपराध की भेंट के लिये और याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे तब वुह पवित्र होजायगी।

१३ तेरहवां पर्व्व।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला। जब किसीके शरीर में सूज अथवा खजुली अथवा चकचकिया बिंदु हों और उसके शरीर के चमड़े में कोढ़ की मरीसी हो तब उसे हारून याजक के पास अथवा उसके किसी पुत्र याजक
३ पास लावें। और वुह याजक उसके शरीर के चमड़े की मरी को देखे यदि मरी के स्थान का बाल उजला होगया हो और वुह मरी देखने में चमड़े से गहिरी हो तो वुह कोढ़ की
४ मरी है याजक उसे देखके उसको अशुद्ध ठहरावे। यदि उसके शरीर के चमड़े पर चकचकिया बिंदु देखने में चमड़े से गहिरा न हो और उस पर के बाल उजले न हुए हों तो याजक
५ उसे सात दिन लों बंद करे। और सातवें दिन उसे देखे यदि मरी उसके देखने में वैसाही हो और मरी चमड़े पर

फैली न हो तो याजक उसे और सात दिन लों बंद करे।
६ फिर सातवें दिन दूसरे बार उसे देखे यदि मरी कुछ काली
ऊईहो और चमड़े पर फैली नहो तो याजक उसे पवित्र
ठहरावे वुह खाज है वुह अपने कपड़े धोवे और पवित्र
७ होवे। परंतु यदि वुह खाज याजक के देखने और पवित्र
करने के पीछे चमड़े पर बऊत फैलजावे तो वुह मनुष्य याजक
८ को फिर दिखायाजावे। और याजक देखे कि वुह खाज चमड़े
पर बढ़गईहो तो वुह उसे अपवित्र ठहरावे वुह कोढ़ है।
९ जब किसी मनुष्य को कोढ़ की मरी होय तब उसे याजक पास
१० लावें। याजक उसे देखे यदि वुह सूज चमड़े पर उजला हो
और उसने बालों को उजला करदियाहो और उभरेऊए में
११ मूआ मांस हो। तो यह उसके शरीर के चमड़े में पुराना
कोढ़ है याजक उसे शुद्ध ठहरावे और उसे बंद न करे क्योंकि
१२ वुह शुद्ध है। और यदि कोढ़ चमड़े पर फैलजावे और जहां
कहीं याजक देखे तहां उसके चमड़े पर कोढ़ सिर से पांव लों
१३ छाखे। तब याजक सोचे और यदि कोढ़ उसके समस्त शरीर
को छिपालियाहो तो वुह उस मरी को पवित्र ठहरावे क्योंकि
१४ वुह सब उजला होगयाहै और वुह पवित्र है। परंतु जब मूआ
१५ मांस उसमें दिखाई देवे तब वुह अपवित्र होगा। और याजक
मूए मांस को देखे और उसे अपवित्र ठहरावे क्योंकि सड़ा
१६ मांस अपवित्र है यह कोढ़ है। और यदि मूआऊआ
लाल मांस फिरकर उजला होजाये वुह याजक पास आवे।
१७ याजक उसे देखे और यदि वुह उजला होगयाहो तो याजक
१८ उसे पवित्र ठहरावे क्योंकि वुह पवित्र है। और जिसके
१९ शरीर के चमड़े पर फुड़िया होय और चंगी होजाये। और
फुड़िया के स्थान पर उजला उभराहो अथवा चकचकिया बिंदु
अथवा उजला और तनिक लाल होय और वुह याजक को
२० दिखायाजावे। और यदि याजक की दृष्टि में वुह चमड़े से

कुछ दबाऊआ हो और उस पर के बाल भी उजला होगये हों तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे क्योंकि यह कोढ़ की मरी है

२१ जो फुड़िया से फूट निकली है। परंतु यदि याजक उसे देखे कि उस पर श्वेत बाल नहीं है और वुह चमड़े से दबा नहीं है परंतु कुछ कुछ काला है तो याजक उसे सात दिन बंद करे।

२२ यदि वुह चमड़े पर बऊत फैलगया हो तो याजक उसे अपवित्र

२३ ठहरावे क्योंकि मरी है। परंतु यदि चकचकिया बिंदु अपने स्थानहीं पर रहे और फैल न जाय तो वुह ज्वलित फुड़िया

२४ है याजक उसे पवित्र ठहरावे। और यदि मांस के चमड़े में बड़ी जलन होवे और उस फूलेऊए में मांस निकला

२५ हो कुछ लाल अथवा केवल उजला ऊआ हो। तो याजक उसे देखे और यदि उस चकचकिया बिंदु पर के बाल उजला होगये हों और वुह देखने में चमड़े से दबा हो तब ज्वलन से वुह फूटाऊआ कोढ़ है इस कारण याजक उसे अशुद्ध ठहरावे कि

२६ कोढ़ की मरी है। परंतु यदि याजक उसे देखे और उस पर और उस चकचकिया बिंदु पर उजला बाल न सूझ पड़े और यदि चमड़े से गहिरा दिखाई न देवे परंतु कुछ काला

२७ होवे तो उसे सात दिन लों बंद करे। और सातवें दिन याजक उसे देखे यदि वुह चमड़े पर बऊत फैलगया हो तब

२८ याजक उसे अपवित्र कहे वुह कोढ़ की मरी है। और यदि वुह चकचकिया बिंदु अपने स्थान पर हो और चमड़े पर न फैले परंतु कुछ काला होय तो वुह केवल जलने का उभरना है याजक उसे शुद्ध ठहरावे क्योंकि जलने की जलन है।

२९ यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री के सिर अथवा डाढ़ी में मरी

३० होय। तब याजक उस मरी को देखे यदि वुह देखने में चमड़े से गहिरी देखपड़े और उस पर पीला बाल हो तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे यह सेऊआं सिर अथवा डाढ़ी का

३१ कोढ़ है। और यदि याजक उस सेऊआं की मरी को देखे

और चमड़े से गहिरा न सूझपड़े और उस पर काला बाल भी नहीं तो याजक उस सेऊआं मरी जन को सात दिन लों बंद
३२ करे। और सातवें दिन याजक उस मरी को देखे और यदि सेऊआं को फैला न देखे और उस पर पीला बाल नहो और
३३ सेऊआं देखने में चमड़े से गहिरा नहो। वुह मुंड़ायेजावें परंतु सेऊआं को न मुंड़ावे और जिस पर सेऊआं है याजक
३४ उसको और सात दिन बंद करे। फिर सातवें दिन याजक उसे देखे यदि सेऊआं को चमड़े पर फैलते देखे चमड़े से गहिरा होय तो याजक उसे पवित्र ठहरावे वुह
३५ अपने कपड़े धोवे और पवित्र होवे। और यदि उसके पवित्र
३६ होने के पीछे वुह सेऊआं चमड़े पर बहुत फैलजावे। तो याजक उसे देखे और यदि सेऊआं चमड़े पर फैला देखे तो
३७ याजक पीले बाल को न ढूंढ़े वुह अपवित्र है। परंतु यदि उसके देखने में सेऊआं वैसही है और उसमें काला बाल निकलाहै। तो वुह सेऊआं चंगा ऊआ वुह पवित्र है याजक उसे
३८ पवित्र ठहरावे। यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री के शरीर
३९ के चमड़े पर उजला अथवा चकचकिया बिंदु होय। तब याजक देखे उसके शरीर के चमड़े पर के चकचकिया बिंदु तनिक काले उजला सूझपड़ें और यदि वुह कीप है जो चमड़े से निकलताहै
४० वुह पवित्र है। और जिस मनुष्य के सिर के बाल गिरगयेहों
४१ वुह चंदुला है वुह पवित्र है। और जिस मनुष्य के सिर के बाल मुंह की ओर से गिरगयेहों वुह चंदुला है पवित्र है।
४२ यदि उस चंदुलेसिर अथवा माथे में उजला लालसा घाव होवे वुह कोढ़ है जो उसके चंदुलेसिर अथवा माथे में फैला
४३ ऊआहै। सो याजक उसे देखे और यदि घाव के ऊपर उजला लालसा उसके चंदुलेसिर अथवा चंदले माथे में दिखाई देवे
४४ जैसा कि शरीर के चमड़े में कोढ़ दिखाई देताहै। तो वुह मनुष्य कोढ़ी अपवित्र है याजक उसे सर्वथा अपवित्र ठहरावे

४५ उसकी मरी उसके सिर पर है। और जिस कोढ़ी पर मरी है उसके कपड़े फाड़ेजायें और सिर नंगा कियाजाय तब वुह अपनी उपरी होंठ पर आड़ करे और चिल्ला चिल्लाके कहे
४६ कि अपवित्र अपवित्र। जितने दिन लों मरी उस पर रहे वुह अशुद्ध रहेगा वुह अपावन है वुह एकेला रहाकरे उसका
४७ निवास छावनी के बाहर होवे। वुह बस्त्र भी जिसमें
४८ कोढ़ की मरी हो ऊन का अथवा सूत का बस्त्र हो। उस बस्त्र के ताने में अथवा बाने में सूत का हो अथवा ऊन का और चाहे चमड़े पर हो चाहे किसी बस्तु पर जो चमड़े की हो।
४९ और यदि वुह मरी बस्त्र में अथवा हरीसी अथवा लालसी हो अथवा चमड़े में अथवा ताने में अथवा बाने में हो अथवा किसी चमड़े की बस्तु में हो वुह मरी का कोढ़ है याजक को
५० दिखायाजाय। और याजक उस मरी को देखे और उसे
५१ सात दिन बंद करे। और सातवें दिन उस मरी को देखे यदि वुह मरी कपड़े पर अथवा ताने बाने में अथवा चमड़े पर अथवा किसी बस्तु पर जो चमड़े से बनीऊई है फैलजाये वुह
५२ मरी कटाव का कोढ़ है वुह अपवित्र है। सो वुह उस बस्त्र को जो ऊन का अथवा सूत का हो जिसके ताने में है अथवा बाने में और चमड़े की कोई बस्तु जिस में मरी है उसे जला देवे क्योंकि
५३ वुह कटाव का कोढ़ है वुह आग से जलायाजाय। और यदि याजक देखे कि वुह मरी जो बस्त्र में ताने में अथवा बाने में
५४ अथवा चमड़े की किसी बस्तु में है फैली नहीं। तो याजक आज्ञा करे कि उस बस्तु को जिसमें मरी होवे और फिर उसे
५५ और सात दिन लों रख छोड़े। फिर उसे धोने के पीछे उस मरी को देखे यदि उस मरी का रंग बदला न देखे और मरी न फैली हो तो वुह अपवित्र है उसे आग में जलावे
५६ कि वुह कटाव चाहे भीतर चाहे बाहर हो। और यदि याजक दृष्टि करे और देखे कि मरी धोने के पीछे कुछ काली हो तो वुह उस बस्त्र से और चमड़े से ताने से अथवा बाने से

५७ फाड़ फेंके। और यदि वुह मरी वस्त्र में ताने में अथवा बाने में अथवा किसी चमड़े की वस्तु में प्रगट बनीरहे तो वुह
५८ फैलतीहै तू उसे जिसमें मरीहै आग से जलादेना। और यदि मरी उस वस्त्र से ताने से अथवा बाने से अथवा चमड़े की वस्तु से जिसे तू धोयेगा यदि मरी उनसे जातीरहे तो वुह दो
५९ बार धोयाजाये और पवित्र होजायगा। यह कोढ़ की मरी की व्यावस्था है जो ऊन अथवा सूत के वस्त्र में ताने अथवा बाने में अथवा किसी चमड़े की वस्तु में पवित्र अथवा अपवित्र ठहरावे।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि उसके लिये जिस दिन कोढ़ी पवित्र कियाजावे यह व्यवस्था है उसे याजक
३ पास लावें। और याजक छावनी से बाहर जाके देखे यदि
४ वुह कोढ़ी कोढ़ की मरी से चंगा होगयाहो। तो याजक आज्ञा करे कि जो पवित्र कियाजाता है सो अपने लिये दो पवित्र जीते पक्षी और ममशाद की लकड़ी और लाल और ज़ूफ़ा लेवे।
५ फिर याजक आज्ञा करे कि उन पक्षियों में से एक मिट्टी के
६ पात्र में बहते पानी पर माराजाय। और वुह जीते पक्षी को और ममशाद की लकड़ी और लाल और ज़ूफ़ा समेत लेके उस पक्षी के लोहू में जो बहते पानी पर मारा गयाहै
७ चभोरे। और जो कोढ़ से पवित्र किया जाताहै उस पर सातबार छिड़के और उसे पवित्र ठहरावे और उस जीते
८ पक्षी को खुले चौगान की ओर उड़ादेवे। और जो पवित्र किया जाता है सो अपने कपड़े धोवे और अपने सारे बाल मुंड़ावे और पानी में स्नान करे जिसतें पवित्र होवे उसके पीछे वुह छावनी
९ में आवे और सात दिन लों अपने तंबू के बाहर ठहरे। और सातवें दिन अपने सिर के सब बाल और अपनी दाढ़ी और

अपनी भौंहें हां अपने सारे बाल मुंड़ावे और अपने कपड़े धोवे और अपना शरीर भी पानी से धोवे तब वुह पवित्र
१० होगा। और आठवें दिन दो निष्खोट मेम्ना और पहिले बरस की एक निष्खोट मेढ़ी और चोखा पिसान तीन दसवें भाग तेल से मिलाऊआ और एक नपुआ तेल भोजन की भेंट
११ के लिये लेवे। तव याजक जो पवित्र करताहै उस मनुष्य को जो पवित्र किया जाताहै उन बस्तुन सहित परमेश्वर के
१२ आगे मंडली के तंबू के द्वार पर ले आवे। और याजक एक मेम्ना पाप के बलिदान के कारण उस नपुआ तेल समेत पास लावे और उन्हें हिलाने के बलिदान के लिये परमेश्वर के आगे
१३ हिलावे। और उस मेम्ना को उस स्थान पर जहां पाप की भेंट और होम की भेंट बलि किईजातीहै पवित्र स्थान में बलि करे क्योंकि जैसी पाप को भेंट याजक की है वैसी अपराध की
१४ भेंट है वुह अत्यंत पवित्र है। और याजक पाप की भेंट का कुछ लोहू लेके उसके जो पवित्र किया जाताहै दहिने कान की लहर पर और दहिने हाथ के अंगूठे पर और दहिने पांव के
१५ अंगूठे पर लगावे। और याजक उस नपुआ का कुछ तेल
१६ लेके अपने बांए हाथ की हथेली पर डाले। और याजक अपनी दहिनी अंगुली उस तेल में जो उसकी बांई हथेली पर है डुबोवे और परमेश्वर के आगे सात बार अपनी अंगुली
१७ से कुछ तेल छिड़के। और उस तेल में से जो उसकी हथेली पर उबरा है उस मनुष्य के दहिने कान की लहर पर जो पवित्र किया जाताहै और उसके दहिने हाथ के अंगूठे पर और उसके दहिने पांव के अंगूठे पर अपराध की भेंट के लोहू
१८ को लगावे। और याजक उस उबरे ऊए तेल को जो उसकी हथेली पर है उस मनुष्य के सिर पर जो पवित्र कियाजाताहै डालदेय और याजक उसके लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त
१९ करे। और याजक पाप की भेंट चढ़ावे और उसके लिये जो

अपविचता से पवित्र कियाजाताहै प्रायश्चित्त करे उसके पीके
२० होम की भेंट को बलि करे। और होम की भेंट और भोजन
की भेंट याजक बेदी पर चढ़ावे और उसके लिये प्रायश्चित्त करे
२१ और वुह पवित्र होगा। और यदि वुह कंगाल होय और
इतना ला न सके तो वुह अपराध की भेंट के कारण हिलाने के
लिये एक मेम्ना लेवे जिसतें उसके लिये प्रायश्चित्त दियाजाय
और एक दसवां भाग चोखा पिसान तेल से मिला ऊआ भेंट के
२२ बलिदान के कारण और एक चोंगी तेल। और पंडुकियां
अथवा कपोत के दो छौना जैसा वुह पासके लेवे उनमें से एक
२३ पाप की भेंट और दूसरा होम की भेंट का होगा। और वुह
उन्हें आठवें दिन अपने पवित्र होने के कारण मंडली के तंबू के
२४ द्वार पर परमेश्वर के आगे याजक पास लावे। और याजक
अपराध की भेंट का मेम्ना और एक चोंगी तेल लेवे और वुह
२५ उन्हें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये हिलावे। फिर
वुह पाप की भेंट के मेम्ने को बलि करे और याजक पाप
की भेंट के लोहू में से कुछ लेके उसके जो पवित्र कियाजाताहै
दहिने कान की लहर पर और दहिने हाथ के अंगूठे और
२६ दहिने पांव के अंगूठे पर लगावे। और उस तेल में से कुछ
२७ अपनी बांई हथेली पर डाले। और याजक उस तेल में
से जो उसकी बांई हथेली पर है थोड़ासा अपनी दहिनी
२८ अंगुली से परमेश्वर के आगे सात बार छिड़के। और याजक
उस तेल में से जो उसकी हथेली पर है उसके जो पवित्र
किया जाताहै दहिने कान की लहर पर और उसके दहिने
हाथ के अंगूठे और उसके दहिने पांव के अंगूठे पर पाप
२९ की भेंठ के लोहू के स्थान पर लगावे। और याजक उबरेऊए
तेल को जो उसकी हथेली पर है उसके सिर पर जो
पवित्र कियाजाताहै डाले कि उसके लिये परमेश्वर के आगे
३० प्रायश्चित्त करे। फिर वुह दो पंडुकियों में से अथवा कपोत के

३१ छोनों में से जो उसके हाथलगे। एक तो पाप की भेंट के लिये और दूसरा होम की भेंट के लिये भोजन की भेंट के साथ चढ़ावे और याजक उसके लिये जो पवित्र कियाजाताहै
३२ परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे। यह उस कोढ़ी की मरी की व्यवस्थाहै जो अपने पवित्र करने की पूंजी नरखताहो।
३३।३४ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला। कि जब तुम किनानके देशमें पहुंचो जो में तुम्हें अधिकार के लिये देताहों और मैं तुम्हारे अधिकार के देश के किसी घर में कोढ़की
३५ मरी लाओं। तब उस घर का स्वामी याजक पास आके कहे कि
३६ मुझे ऐसा दिखाईदेताहै कि घर में कुछ मरीसीहै। तब याजक आज्ञा करे किवे उस घरको उसे आगे कि याजक मरी को देखने जाये छूछाकरें जिसतें घर की समस्त सामग्री अपवित्र
३७ न होजाय उसके पीछे याजक घर के भीतर देखने जाय। और वुह उस मरी पर दृष्टि करे यदि मरी उस घर की भीतों पर
३८ हरीसी अथवा लालसी और गहिरी लकीर दिखाई देवे। तो याजक घरके द्वार से बाहर निकल के घर को सात दिन
३९ लों बंद करे। और याजक सातवें दिन फिर आके देखे यदि
४० वुह मरी घर की भीतों पर फैली दिखाई देवे। तो याजक आज्ञा करे कि उन पत्थरों को जिनमें मरीहै निकाल डालें
४१ और नगर के बाहर अपवित्र स्थान पर फेंक देवें। फिर वुह घर के भीतर चारों ओर खुरचवावे और वे उस खुरची
४२ धूल को नगर के बाहर अपवित्र स्थान में फेंकदेवें। और वे और पत्थर लेके उन पत्थरों के स्थान पर जोड़ें और वुह
४३ दूसरा खोआ लेकर घर की गचकरे। और यदि पत्थर निकालने के और घर खुरचाने के पीछे और गच करने के पीछे
४४ मरी आवे और उस घर में फूट निकले। तब याजक आके देखे यदि वुह मरी घरमें फैली देखे तो वुह घर कोढ़ी और
४५ अशुद्ध है। वुह उस घर को और उसके पत्थरों को और

उसकी लकड़ियों को और उसके सब खोये को गिरादेवे और
४६ वुह उन्हें नगर के बाहर अपवित्र स्थान में लेजाय। इस्से अधिक
जबलों वुह घर बंद होय जो कोई उस घरमें जाय सो सांझलों
४३ अशुद्ध होगा। और जो कोई उस घरमें सोये सो अपने कपड़े
धोवे और जो कोई उस घर में कुछ खाय सो अपने कपडे धोवे।
४७ और यदि घरके गच होने के पीछे याजक आते आते उस घरमें
आवे और देखे कि वुह मरी घर पर नहीं फैली तो वुह उस
४९ घर को पवित्र ठहरावे क्योंकि वुह मरी से चंगा होगया। तब
उस घर को पवित्र करने के लिये दो चिड़ियां और शमशाद
५० की लकड़ी और लाल और जूफा लेवे। और उन चिड़ियों में
५१ से एक को मिट्टी के पात्र में बहते पानी पर बलि करे। फिर
वुह शमशाद की लकड़ी और जूफा और लाल और उस
जीती चिड़िया को लेके उसे बलि किई ऊई चिड़िया के लहू
में और उस बहते पानी में चभोरे और सात बार उस घर
५२ पर छिड़के। और चिड़िया के लहू और बहते पानी और
जीती चिड़िया और शमशाद की लकड़ी और जूफा और लाल
५३ से उस घर को पवित्र करे। परंतु वुह उस जीती चिड़िया को
नगर के बाहर चौगान की ओर छोड़े और उस घर के लिये
प्रायश्चित्त करे और वुह पवित्र होजायगा।
५४।५५ हर भांति के कोढ़ की मरी और सेहुआं के। और
५६ वस्त्र और घरके कोढ़ के लिये। और उभरना और घाव और
५७ चकचकिया बिंदु के लिये यह व्यवस्था है। अपवित्र और पवित्र
होने के दिन सिखलावे क्योंकि कोढ़ के लिये यही व्यवस्था है।

॥ १५ पंदरहवां पर्ब्ब ॥

१ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला। कि इसराईल
२ के संतानों से कह के बोल कि यदि किसी मनुष्य के प्रमेह का
३ रोग होवे तो वुह प्रमेह के कारणसे अशुद्ध है। और यदि

४ उसका प्रमेह थमजाय अथवा बनारहे वुह अशुद्ध है। हर एक बिछौना जिस पर प्रमेही लेटताहै सो अशुद्ध होगा और
५ हर एक बस्तु जिस पर वुह बैठताहै अशुद्ध होगी। और जो कोई उसके बिछौने को छूवे सो अपने कपड़े धोवे और
६ पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। और जो कोई उस बस्तु पर जिस पर प्रमेही बैठता है सो अपने कपड़े
७ धोवे और पानी में नहावे और सांझ लों अशुद्ध रहेगा। और जो कोई उसके शरीर को जिसे प्रमेह है छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अशुद्ध
८ रहेगा। और यदि प्रमेही किसी पवित्र मनुष्य पर थूके तो वुह मनुष्य अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे
९ और सांझ लों अपवित्र रहेगा। और जिस आसन पर वुह
१० बैठे सो अपबित्र होगा। और जो कोई उस बस्तु को जो उस प्रमेही के नीचे है छूये सो सांझ लों अपवित्र रहेगा और जो कोई उन बस्तुन को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और
११ पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। और बिन हाथ धोये जिस किसीको प्रमेही छूये सो अपने कपड़े धोवे
१२ और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। और जिस मिट्टी के पात्र को प्रमेही छूवे सो तोड़ाजाय और
१३ यदि काष्ठ का पात्र होय तो पानी से धोयाजाय। और जब प्रमेही चंगा होजाये तब वुह अपने पवित्र होने के लिये सात दिन गिने तब वुह अपने कपड़े धोवे और अपना
१४ शरीर बहते पानी से धोवे तब वुह पवित्र होगा। और आठवें दिन दो पंडुकी अथवा कपोत के दो छौने लेके परमेश्वर के आगे मंडली के तंबूके द्वार पर आवे और उन्हें याजक
१५ को सौंपे। याजक उन्हें चढ़ावे एक पाप की भेंट के लिये और दूसरी होम की भेंट के लिये और याजक उस प्रमेही के
१६ कारण परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे। और यदि किसी

मनुष्य से रात को बीर्य जाय तब वुह अपना समस्त शरीर
१७ पानी से धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। और जिस
कपड़े अथवा चमड़े पर रतिका बीर्य्य पड़े सो पानी से धोया
१८ जाये और सांझ लों अपवित्र रहेगा। और स्त्री भी जिस्से पुरुष
रति करे दोनो पानीसे स्नान करें और सांझ लों अपवित्र
१९ रहेंगे। और यदि स्त्री रजस्वला हो तो वुह सात दिन अलग
२० किईजाय जो कोई उसे छूयेगा सो सांझलों अपवित्र रहेगा।
और सब वस्तें जिस पर वुह अपने अलग होने के दिन में
लेटे अपवित्र होगी और हर एक वस्तु जिस पर वुह बैठे सो
२१ अपवित्र होगी। और जो कोई उसके बिछौने को छूवे सो अपने
कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझलों अपवित्र
२२ रहेगा। और जो कोई किसी वस्तु को छूवे जिस पर वुह बैठी
थी सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ
२३ लों अपवित्र रहेगा। और यदि कोई वस्तु उसके बिछौनों पर
अथवा किसी पर हो जिस पर वुह बैठतीहै और उस
समय कोई उस वस्तु को छूवे तो वुह सांझ लों अपवित्र रहेगा।
२४ और यदि पुरुष उसके साथ लेटे और वुह रजस्वला में होय
तो वुह सात दिन लों अपवित्र रहेगा और हर एक बिछौना
२५ जिस पर वुह पुरुष लेटताहै सो अपवित्र होगा। और यदि
स्त्री का रजोधर्म्म उसके ठहरायेहुए दिनों से अधिक होवे
अथवा यदि उसके अलग होने के समय से अधिक बहे तो
उसके अपवित्रता के बहनेसे सब दिन उसके अलग होने के दिनों
२६ के समान होवें क्योंकि वुह अपवित्र है। और उसके बहने के सब
दिनोंमें हर एक बिछौना जिसपर वुह लेटतीहै और जिसपर
वुह बैठतीहै सो उसके अलग होनेके अपवित्रताके समान
२७ अपवित्र होगा। और जो कोई उन वस्तुन को छूवे सो अपवित्र
होगा और अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ
२८ लों अपवित्र रहेगा और जब वुह अपने प्रदर से पवित्र होवे तो

२८ अपवित्र रहेगा। परंतु जब वुह अपने प्रदर से पवित्र होवे
२९ तब सात दिन गिने उसके पीछे वुह पवित्र होगी। और
आठवें दिन वुह दो पंडुकियां अथवा कपोत के दो छौने लेवे
३० और तंबू के द्वार पर याजक पास आवे। और याजक एक
को पाप की भेंट और दूसरे को होम की भेंट के लिये चढ़ावे
और याजक उसके प्रदर की अपवित्रता के लिये परमेश्वर के आगे
३१ उसके लिये प्रायश्चित्त करे। तुम इसराईल के संतानों को
उनकी अपवित्रता से यों अलग करो जिस में वे अपनी
अपवित्रता से मर न जावें जब वे मेरे तंबू को जो उनके मध्य में
३२ है अपवित्र करें। उसके लिये जिसे प्रमेह का रोग होय और
उसके लिये जो रति करने से अपवित्र होय और उसके लिये
जो रजस्वला होय और उस पुरुष और स्त्री के लिये जिसे
प्रमेह का रोग होय और उस पुरुष के लिये जो रजस्वला के
साथ लेटता हो यही व्यवस्था है।

१६ सोलहवां पर्व्व।

१ और जब हारून के दो बेटे परमेश्वर के आगे नैवेद्य लाये और
२ मर गये उसके पीछे परमेश्वर ने मूसा से कहा। परमेश्वर ने
मूसा से कहा कि अपने भाई हारून को कह कि वुह हर
समय पवित्र स्थान के घूंघट के भीतर दया के आसन के
आगे जो मंजूषा पर है न आया करे न हो कि मर जाये
३ क्योंकि मैं मेघ में दया के आसन पर दिखाई दोंगा। पवित्र
स्थान में हारून यों आवे पाप की भेंट के लिये एक बछड़ा और
४ होम की भेंट के लिये एक मेंढ़ा लावे। पवित्र सूती कुरती
पहिने और उसके शरीर पर सूती सूरवार हो और सूती
पटुके से उसकी कटि बंधी हो और अपने सिर पर सूती
पगड़ी रक्खे ये पवित्र बस्त्र हैं और वुह अपना शरीर पानी से
५ धोवे और उन्हें पहिने। और इसराईल के संतानों की

मंडली से बकरी के दो मेम्ना पाप की भेंट के लिये और एक
६ मेंढ़ा होम की भेंट के लिये लेवे। और हारून पाप की भेंट के
उस बछड़े को जो उसके लिये है लावे और अपने लिये और
७ अपने घर के लिये प्रायश्चित्त करे। फिर उन दोनों बकरियों
को लेके मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे ले आवे।
८ और हारून उन दोनो बकरियों पर चिट्ठी डाले एक चिट्ठी
९ परमेश्वर के लिये और दूसरी बकरी छुड़ाने के लिये। और
हारून उस बकरी को लावे जिस पर परमेश्वर के नाम की
चिट्ठी पड़े और उसे पाप की भेंट के लिये बलि चढ़ावे।
१० परंतु छुड़ाने के लिये जिस बकरी पर चिट्ठी पड़े उसे
परमेश्वर के आगे जीती लावे कि उस्से प्रायश्चित्त कियाजाय
और उसको छड़वी की बकरी के लिये बन में छोड़दे।
११ तब हारून अपने लिये पाप की भेंट के बछड़े को लावे
और अपने और अपने घर के लिये प्रायश्चित्त करे और पाप
१२ की भेंट के बछड़े को जो अपने लिये है बलिकरे। और वुह
परमेश्वर के आगे बेदी पर से एक धूपावरी अंगारों से भरी
ऊई और अपनी मुट्ठी भरी ऊई सुगंध लेवे और घूंघट के
१३ भीतर लावे। और उस धूप को परमेश्वर के आगे आग में
डालदेवे जिस में धूप का मेघ दया के आसन को जो साक्षी पर
१४ है छिपावे और आप नमरे। फिर वुह बछड़े का लोह्र लेके
अपनी अंगुली से दया के आसन की पूर्व ओर छिड़के और
दया के आसन के आगे अपनी अंगुली से सात बार लोह्र
१५ छिड़के। फिर वुह लोगों के लिये पाप की भेंट की
बकरी को बलिकरे और उसके लोह्र को घूंघट के भीतर लाके
जैसा उसने बछड़े के लोह्र से कियाथा वैसाही करे और
१६ दया के आसन के ऊपर और उसके आगे छिड़के। और
पवित्र स्थान के कारण इसराईल के संतानों की अपवित्रता के
लिये और उनके पापों और उनके समस्त अपराधों के लिये

प्रायश्चित्त करे और वुह मंडली के तंबू के लिये भी जो उनके
१७ साथ उनके अपवित्रता के मध्य में है ऐसाही करे। और
जब वुह प्रायश्चित्त करने के लिये मंडली के तंबू में जाय
तो जबलों वुह बाहर नआवे और अपने लिये और अपने
घराने के लिये और इसराईल की मंडली के लिये प्रायश्चित्त
१८ नदेवे तबलों तंबू में कोई नजाय। फिर वुह निकल के उस बेदी
पर आवे जो परमेश्वर के आगे है और उसके लिये प्रायश्चित्त
करे और उस बछड़े और उस बकरी के लोहू में से लेके बेदी
१९ के सींगों की चारों ओर लगावे। और अपनी अंगुली से
उसपर सात बार लोहू छिड़के और उसे इसराईल के संतानों
२० की अपवित्रता से पावन और शुद्ध करे। और जब वुह
पवित्र स्थान के और मंडली के तंबू के और बेदी के लिये मिलाप
२१ करचुका तब उस जीती बकरी को लावे। और हारून अपने
दोनों हाथ उस जीती बकरी के सिर पर रक्खे और इसराईल
के संतानों की बुराइयों और उनके सारे पाप और अपराधों
को मान लेके उन्हें इस बकरी के सिर पर धरे और उसे
किसी मनुष्य के हाथ जो उसके लिये ठहराहो बन को
२२ भेजवादे। और वुह बकरी उनकी सारी बुराइयां अपने
ऊपर उठाके अबसे देश में लेजायगी और वुह उस बकरी
२३ को बन में छोड़देवे। फिर हारून मंडली के तंबू में आवे और
सूती बस्त्रों को जो उसने पवित्र स्थान में जाने के समय पहिनेथे
२४ उतारे और उन्हें वहां रखदेवे। फिर वुह पवित्र स्थान
में अपना शरीर पानी से धोवे और अपने वस्त्र पहिनके
बाहर आवे और अपने होम की भेंट और लोगों के होम की
भेंट चढ़ावे और अपने लिये और लोगों के लिये प्रायश्चित्त
२५ करे। और पाप की भेंट की चिकनाई बेदी पर जलावे।
२६ और जिसने छुड़ाईहुई बकरी छोड़दिया सो अपने कपड़े
धोवे और पानी से नहावे और उसके पीछे छावनी में

२७ प्रवेशकरे। और पाप की भेंट को और बकरी को जिसका लोहू पवित्र स्थान में प्रायश्चित्त के लिये पहुंचायागया छावनी से बाहर ले जावें और उनकी खालें और उनका मांस और
२८ गोबर आग में जलादेवें। और जिसने उन्हें जलाया सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे उसके पीछे छावनी
२९ में आवे। यह तुम्हारे लिये सनातन की विधि होगी सातवें मास की दसवीं तिथि को तुम अपने प्राण को कष्ट देओ और कुछ कार्य न करो चाहे देशी चाहे परदेशी जो तुम्होंमें
३० बास करताहै। क्योंकि उस दिन तुम्हारे कारण तुम्हें पवित्र करने के लिये प्रायश्चित्त कियाजायगा जिसतें तुम अपने समस्त
३१ पापों से परमेश्वर के आगे पवित्र होजाओ। यह तुम्हारे लिये स्मरण का विश्राम होगा तुम उस दिन अपने प्राण को
३२ कष्ट दीजियो यह तुम्हारे लिये सदा की विधि है। और वुह जिस याजक को अभिषेक करे और जिसे वुह याजक के पदमें सेवा करने के लिये अपने पिता की संती सेवा के लिये स्थापित करे सोई प्रायश्चित्त करे और पवित्र सूती वस्त्र को पहिने।
३३ और पवित्रस्थान के लिये और मंडली के तंबू के लिये और बेदी के लिये और याजकों के लिये और मंडली के सबलोगों
३४ के लिये प्रायश्चित्त करे। और यह तुम्हारे लिये सनातन की विधि है जिसतें तुम इसराईल के संतानोंके लिये उनके सब पापों के कारण बरस में एक बार प्रायश्चित्त करो सो जैसा परमेश्वर ने मूसा से कहा था उसने वैसाही किया।

१७ सतरहवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून और उसके बेटों और इसराईल के समस्त संतानों से कहके बोल
३ कि यह वुह बात है जिसे परमेश्वर ने आज्ञा किईहै। जो मनुष्य इसराईल के घरानों मेंसे बैल अथवा मेम्रा अथवा

४ बकरी छावनी में अथवा छावनी के बाहर बलि करे। और मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के तंबू के आगे भेंट चढ़ावने के लिये नलावे तो उस मनुष्य पर लोहू का दोष होगा क्योंकि उसने लोहू बहाया और वुह मनुष्य अपने लोगों में से
५ कटजायगा। यह इसलिये है कि इसराईल के संतान अपने बलिदानों को जिन्हें वे चौगान में चढ़ाते हैं परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावें और उन्हें
६ परमेश्वर के आगे कुशल की भेंट के लिये चढ़ावें। और याजक वुह लोहू मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर की बेदीपर छिड़के
७ और परमेश्वर के सुगंध के लिये चिकनाई को जलावे। और आगेको पिशाचों के लिये जिनके पीछे वे बेश्यागामी थे नचढ़ावें उन की पीढ़ियों में यह सनातन की बिधि होगी।
८ और तू उन्हें कह कि इसराईल के घराने में अथवा परदेशी में जो तुम्हों में बास करता है जोकोई होम की भेंट
९ अथवा बलि की भेंट चढ़ावे। और उसे मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के लिये नचढ़ावे वही मनुष्य अपने लोगों मेंसे
१० काटडालाजायगा। और इसराईल के घरानों में से अथवा परदेशियों में से जो तुम्हों में बासकरता है जो कोई किसी रीति का लोहू खाय निश्चय मैं उसी लोहू के भक्षक का बिरोधी होंगा और उसे उसके लोगों में से काट
११ डालोंगा। क्योंकि शरीर का जीवन लोहू में है सो मैं ने उसे बेदी पर तुम्हें दिया है कि तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त होवे
१२ क्योंकि लोहू से प्राण के लिये प्रायश्चित्त होता है। इसलिये मैंने इसराईल के संतानों से कहा कि तुम्में से कोई प्राणी लोहू नखाय और कोई परदेशी जिसका बास तुम्में है लोहू
१३ नखाय। और इसराईल के संतानों मेंसे अथवा परदेशियों मेंसे जिसका बास तुम्में है जो कोई खाने के योग्य पशु अथवा पक्षी अहेर करके पकड़े सो लोहूको बहादेवे और उसे धूल

१४ से ढांपदेवे। क्योंकि यह हरएक शरीर का जीव है उसका लोहू उसका जीव है इसलिये मैंने इसराईल के संतानों को आज्ञा किई कि किसी रीति के मांसका लोहू मतखाओ क्योंकि लोहू हरएक मांस का जीव है जो कोई उसे खायेगा सो
१५ अपने लोगों में से कटजायगा। जो कुछ मरजाय अथवा फाड़ाजाय चाहे देशी होवे चाहे परदेशी जो प्राणी उसे खाय सो अपने पकड़े धोवे और पानी से स्नान करे और
१६ सांझ लों अपवित्र रहे तब वुह पवित्र होगा। पर यदि वुह नधोवे और स्नान नकरे तो वुह दोषी होगा।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराईल के संतानों से कहके बोल कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों।
३ तुम मिसर के देश की चालों पर जिसमें तुम रहते थे नचलियो और किनान के देश के से काम न करो जहां मैं
४ तुम्हें लेजाताहों और उन के व्यवहारों पर नचलियो। मेरे बिचारों पर चलो और मेरी बिधिको पालन करो और
५ उनपर चलो क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों। सो मेरी बिधि और मेरे बिचारों को पालन करो यदि मनुष्य उन्हें
६ पालन करे तो वुह उनसे जीवेगा मैं परमेश्वर हों। उनकी नंगापन उघारने के लिये तुम्में से कोई अपने कुटुम्ब के पास
७ नजाय क्योंकि मैं परमेश्वर हों। अपने पिता की नंगापन अथवा अपनी माता की नंगापन मत उघार क्योंकि वुह तेरी
८ माता है तू उसकी नंगापन मत उघार। अपने पिता की पत्नी की नंगापन मत उघार क्योंकि वुह तेरे पिता की नंगापन
९ है। अपनी बहिन की नंगापन अपने पिता की बेटी की अथवा अपनी माता की बेटी की जो घरमें अथवा बाहर उत्पन्न
१० ऊईहो नंगापन मत उघार। अपने पुत्र की बेटी की अथवा

अपनी बेटी की बेटी की नंगापन मत उघार क्योंकि उनकी
११ नंगापन तेरीही है। तेरे पिता की पत्नी की बेटी जो तेरे
पिता की जन्मी है तेरी बहिन है तू उसकी नंगापन मत
१२ उघार। अपने पिता की बहिन की नंगापन मत उघार क्योंकि
१३ वुह तेरे पिता की समीपी कुटुम्ब है। अपनी माता की बहिन
की नंगापन मत उघार क्योंकि वुह तेरी माता की समीपी
१४ कुटुम्ब है। अपने पिता के भाई की नंगापन मत उघार और
१५ उसकी पत्नी पास मत जा क्योंकि वुह तेरी चाची है। अपनी
बहू की नंगापन मत उघार क्योंकि वुह तेरे बेटे की पत्नी है
१६ उसकी नंगापन मत उघार। अपने भाई की पत्नी की नंगापन
१७ मत उघार क्योंकि वुह तेरे भाई की नंगापन है। किसी स्त्री की
और उसकी बेटी की नंगापन मत उघार और उसके बेटे
की बेटी की और उसकी बेटी की नंगापन मत उघार क्योंकि वुह
१८ उसकी समीपी कुटुम्ब है यह बड़ी दुष्टता है। और तू किसी
स्त्री को खिजानेके लिये उसके जीतेजी उसकी बहिन समेत
१९ मतले जिसतें उसकी नंगापन उघारे। और जबलों स्त्री
अपवित्रता के लिये अलग किईगईहो उसकी नंगापन उघारने
२० के लिये उसके पास मतजा। और अपने परोसी की
पत्नी के संग कुकर्म्म मतकर जिसतें आपको उस्से अपवित्र
२१ करे। अपने पुत्रों में से मोलक को मत चढ़ा और अपने
परमेश्वर के नाम को अनरीति से मतले मैं परमेश्वर हों।
२२।२३ तू पुरुषगमन मत कर वुह घिनित है। पशुगामी होके
आप को अशुद्ध मतकर और कोई स्त्री पशुगामिनी नहो
२४ यह गड़बड़ है। इन बातों में आप को अशुद्ध मत कर क्योंकि
जिन जातिगणों को मैं तुम्हारे आगे निकालताहों वे इनबातों में
२५ अशुद्ध हैं। और देश अशुद्ध है इसकारण मैं उसके अपराध का
पलटा लेताहों और देश भी अपने वासियों को उगलताहै।
२६ सो तुम मेरी बिधि और मेरे बिचारों को पालन करो

और इन घिनितों को नकरो नदेशी न तुम्हारा परदेशी जो
२७ तुम्में बास करताहै। क्योंकि देशी जो तुम से आगे थे येसमस्त
२८ घिनित कार्य किये और देश अशुद्ध हुआहै। जिसतें जब
तुम देशको अशुद्ध करो वुह तुम्हें भी उगल नदेवे जिसरीति से
२९ उन जातिगणों को जो तुम से आगे थे उगला। जो कोई उन
घिनौनी क्रियों में से कुछ करेगा ऐसा कुकर्म्मी प्राणी अपने
३० लोगों में से कट जायेगा। सो तुम मेरी व्यवस्थों को पालन करो
और उन घिनौनी क्रियों में से जो तुम से आगे किईगईं कोई
क्रिया नकरो और अपने को उन से अशुद्ध नकरो क्योंकि मैं
तुम्हारा परमेश्वर ईश्वर हों।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कह के बोला। इसराईल के संतानों
की सारी मंडली से कहके बोल कि पवित्र होओ क्योंकि
३ मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर पवित्र हों। तुम अपने अपने
माता पिता से डरते रहो और मेरे बिश्राम को पालन करो
४ क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों। तुम मूर्तिन की ओर
मतफिरो और न ढालके अपने लिये देवता बनाओ मैं
५ परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों। और यदि तुम कुशल
की भेंटों का बलिदान परमेश्वर के लिये चढ़ाओ तो अपनी
६ बांछा से चढाओ। चाहिये कि जब उसे चढ़ाओ वुह उसीदिन
और दूसरेदिन खायाजाय और यदि तीसरे दिन लों कुछ
७ बचरहे तो आग में जलादियजाय। और यदि वुह तनिक
भी तीसरे दिन खायाजाय तो घिनित है वुह ग्राह्य नहोगा।
८ सो जो कोई उसे खायगा सो अपराधी होगा क्योंकि उसने
परमेश्वर की पवित्र बस्तु को अशुद्ध किया वुह मनुष्य अपने
९ लोगों में से काटाजायगा। और जब तू अपना खेत
काटे तब खेत के कोने को सर्बंच मत काट ले और न अपने

१० खेत की बिनिया कर। और तू अपने दाख को मत बीन और न अपने हर एक अंगूर को बटोर उन्हें कंगालों और
११ परदेशी के लिये छोड़ मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों। तुम चोरी मत करो और झुठाई से ब्यवहार न करो एक दूसरे से
१२ झूठ मत बोलो। और मेरा नाम लेके झूठी किरिया मत खाओ तू अपने ईश्वर के नाम को अपवित्र मत कर मैं
१३ परमेश्वर हों। अपने परोसी से छल मत कर और उससे कुछ मत चुरा बनिहारों की बनी रात भर बिहान लों तेरे पास
१४ न रहजाय। बहिरे को दुर्बचन मत कह तू अंधे के आगे ठोकर खाने की बस्तु मत रख परंतु अपने ईश्वर से डरतारह
१५ मैं परमेश्वर हों। तुम न्याय में अधर्म्म मत करो तू कंगाल का पक्ष मत कर और बड़े को बड़ाई के लिये प्रतिष्ठा मत दे परंतु
१६ धर्म्म से अपने परोसी का न्याय कर। अपने लोगों में लुतड़ा बनके मत आया जाया कर और अपने परोसी के
१७ लोहू के बिरोध में मत खड़ा हो। मन में अपने भाई से बैर मत रख तू अपने भाई को किसी भांतिसे दपटदे और उसपर
१८ पाप मत छोड़। तू अपने लोगों के संतानों से बैर मत रख और अपना पलटा मत ले परंतु अपने परोसी को अपने
१९ समान प्यार कर मैं परमेश्वर हों। तुम मेरी बिधि का पालन करो तू अपने ढोरों को और जातियों से मत मिलने दे तू अपने खेत में मिलेऊए बीज मत बो और सूत का
२० मिलाऊआ बस्त्र मत पहिन। जो कोई किसी स्त्री से जो बचन दत्त दासी हो और छुड़ाई नगई हो और निर्बंध न ऊई हो ब्यभिचार करता है सो ताड़ना पावेगा वे मारडाले नजावेंगे
२१ इसलिये कि वुह निर्बंध नथी। सो वुह परमेश्वर के लिये मंडली के तंबू के द्वार पर अपने अपराध की भेंट लावे
२२ अपराध की भेंट एक मेढ़ा होवे। और याजक उसके लिये अपराध की भेंट के मेढ़े को परमेश्वर के आगे उस के पाप के

लिये प्रायश्चित्त करे तब वुह अपराध जो उसने कियाहै
२३ क्षमा कियाजायगा। और जब तुम उस देश में
पहुंचो और खाने के लिये भांति भांति के पेड़ लगाओ तो
तुम उसके फल को अखतनः समझो तीन बरस लों तुम्हारे
२४ लिये अखतनः के तुल्यरहे वुह खाया नजायगा। परंतु चौथे
बरस उसके सारे फल परमेश्वर की स्तुतिके लिये पवित्र
२५ होंगे। और पांचवें बरस तुम उसका फल खाओ जिसतें
तुम्हारे लिये अपनी बढ़ती देवे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर
२६ हों। तुम लोहू सहित मत खाओ और टोना मत
२७ करो और समयों को नमानो। तुम अपने सिरों के बालों को
गोलाई से मत मुड़ाओ और अपनी दाढ़ी के कोनों को मत
२८ बिगाड़। मृतकों के लिये अपने मांस को मत काट और
अपने ऊपर गोदने से चिन्ह मत करो मैं परमेश्वर हों।
२९ बेश्या बनावे के लिये अपनी कन्यासे व्यभिचार मत करा
ऐसा नहोवे कि देश बेश्यागामी में पड़े और दुष्टता से
३० परिपूर्ण होवे। मेरे विश्रामों का पालन करो और मेरे
३१ पवित्रस्थान की प्रतिष्ठा करो मैं परमेश्वर हों। ओझा
को मत मान और टोनहों का पोक्षा करके आपको अशुद्ध
३२ मतकर मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों। पके बालों के
आगे उठखड़ाहो और पुरनिया के रुप को प्रतिष्ठादे और
३३ ईश्वर से डर मैं परमेश्वर हों। यदि तेरे देशमें परदेशी
३४ टिके तो उसको मत खिजा। परंतु परदेशी को जो तुम्में
बास करताहै ऐसा जानो जैसा कि वुह तुम्में जन्मा और
उसे अपने तुल्य प्यार कर इसलिये कि तुम मिसर की
३५ भूमि में परदेशी थे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों। विचार
३६ में परिमाण में तौल में मापने में अधर्म्म मत करो। धर्म्म का
तुला धर्म्म का नपुआ धर्म्म की दससेरिया और धर्म्म की
पसेरी तुम्में होवे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों जो तुम्हें

१७ मिसर की भूमिसे निकाल लाया। सो तुम मेरी समस्त बिधि और मेरे बिचारों को पालन करो और उन्हें मानो मैं परमेश्वर हों।

२० बीसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि अब तू इसराईल के संतानों को फेर कह कि जो कोई इसराईल के संतानों में से अथवा परदेशी जो उनमें टिकाहै अपने बंश में से मोलक को भेंट चढ़ावेगा वुह निश्चय घातकियाजायगा देश
३ के लोग उस पर पत्थरवाह करें। और मैं उस मनुष्य पर बैर की रख करोंगा और उसके लोगों में से उसे काटदोंगा इसलिये कि उसने अपने बंश में से मोलक को चढ़ाया जिसतें मेरे पवित्र स्थान को अपवित्र और मेरे
४ पवित्र नाम का अपमान करे। और यदि देश के लोग किसी भांति से उस मनुष्य से आंखछिपावें जिसने अपने बंश में से मोलक
५ को भेंट चढ़ायाहै और उसे घात नकरें। तो मैं उस मनुष्य पर और उसके घराने पर बैर की रख करोंगा और उसे उनसब समेत जो मोलक से ब्यभिचार करतेहैं उन्हें अपने लोगों
६ में से काट डालोंगा। और उस मनुष्य पर जो ओझाओं और टोनहों की ओर जाताहै जिसतें उनके समान ब्यभिचार करे मैं उस मनुष्य पर अपना क्रोध भड़काओंगा और उसे
७ उसके लोगों में से काट डालोंगा। सो अब आप को पवित्र करो और पावन होओ क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर
८ हों। और मेरी ब्यवस्थों को स्मरण करो और उन पर ध्यान
९ करो मैं वुह परमेश्वर हों जो तुम्हें पवित्र करताहै। जो कोई अपनी माता अथवा पिता को धिक्कारे सो निश्चय मारडाला जायगा क्योंकि उसने अपने माता पिता को धिक्काराहै
१० उसका लोहू उसी पर है। और जो मनुष्य किसी की पत्नी

से अथवा अपने परोसी की पत्नी से कुकर्म्म करे कुकर्म्मी
११ और कुकर्म्मिणी दोनो निश्चय मारडालेजायेंगे। और जो
मनुष्य अपने पिता की पत्नी से व्यभिचार करे सो दोनों
निश्चय मारडालेजायेंगे क्योंकि उसने अपने पिता की नंगापन
१२ खोली उनका अपराध उन्हीं पर है। और जो मनुष्य अपनी
बह्न से कुकर्म्म करे वे दोनो निश्चय मारडालेजायेंगे उन्हों
१३ ने गड़बड़ कियाहै उनका लोह्न उन्हीं पर है। और यदि
कोई मनुष्य पुरुषगामी होवे तो उन दोनों ने घिनित कार्य
कियाहै वे अवश्य मारडालेजायेंगे उनका लोह्न उन्हीं पर
१४ है। और यदि कोई स्त्री को और उसकी माता को भी रक्खे यह
दुष्टता है वे तीनों के तीनों जलायेजायेंगे जिसतें तुम्हों में दुष्टता
१५ न रहे। और यदि कोई मनुष्य पशु से कुकर्म्म करे वुह निश्चय
१६ मारडालाजायगा और उस पशु को घात करो। और यदि
स्त्री पशु से कुकर्म्म करे और उसके तलेहोय तो उस स्त्री को
और उस पशु को मारडालो वे निश्चय प्राण से मारे जावें
१७ उनका लोह्न उन्हीं परहै। और यदि कोई मनुष्य अपनी
बहिन को अथवा अपने पिता की बेटी को अथवा अपनी
माता की बेटी को लेके आपुस में एक दूसरे की नग्नता देखे
यह दुष्ट कर्म्म है वे दोनों अपने लोगों के आगे मारडालेजायेंगे
उसने अपनी बहिन की नंगापन प्रगट किई वुह दोषी
१८ होगा। और यदि मनुष्य रजस्वला स्त्री के साथ सोवे और
उसकी नग्नता उघारे तो उसने उसका सोता उघाराहै
और उसने अपने लोह्न का सोता खुलवाया वे दोनों अपने
१९ लोगों से कटजायेंगे। और तू अपनी मैासी और अपनी
फूफू की नग्नता मत उघार क्योंकि उसने अपने समीपी
२० कुटुम्ब को उघारा है वे दोषी होंगे। और यदि कोई अपनी
चाची के साथ कुकर्म्म करे उसने अपने चचा की नग्नता को
उघाराहै वे अपने पाप को भोगेंगे वे निर्वंश मरेंगे।

२१ और यदि मनुष्य अपने भाई की पत्नी को लेवे यह अशुद्ध कर्म्म है उसने अपने भाई की नग्नता उघारी है वे निर्बंश
२२ होंगे। सो तुम मेरी समस्त बिधि को और मेरे न्यायों को पालन करो और उन पर चलो जिसतें जिस देश में मैं तुम्हें
२३ बसाने को लेजाताहों सो तुम्हें उगल देवे। तुम उन लोगों के ब्यवहारों पर जिन्हें मैं तुम्हारे आगे हांकताहों मत चलो क्योंकि उन्होंने ऐसेही सब काम किये इसी लिये मैंने उनसे
२४ घिन किई। परंतु मैंने तुम्हें कहा कि तुम उनके देश के अधिकारी होओगे और मैं उस देश को तुम्हें देोंगा जहां दूध और मधु बहिरहाहै मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों जो
२५ तुम्हें लोगों में से चुन लियाहै। सो तुम पवित्र और अपवित्र पशुन में और अपवित्र और पवित्र पक्षियों में भेद करो और तुम पशुन और पक्षियों और जीव धारी के कारण से जो भूमि पर रेंगताहै जिन्हें मैंने तुम्हारे लिये अपवित्र
२६ ठहरायाहै आपको अपवित्र नकरो। और मेरे लिये पवित्र होजाओ क्योंकि मैं परमेश्वर पवित्र हों और मैंने तुम्हें लोगों में से चुनलियाहै जिसतें तुम मेरे होओ।
२७ और जो मनुष्य अथवा स्त्री ओझा अथवा टोनहा हो सो निश्चय मारडालाजाय वे पत्थरवाह कियेजायेंगे उनका लोहू उन्हीं पर होवे।

२१ एक्कीसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला कि हारून के बेटे याजकों से कह और उन्हें बोल कि अपने लोगों के मृत्यु के
२ कारण कोई अशुद्ध नहोवे। परंतु अपने समीपी कुटुम्ब के लिये अपनी माता अपने पिता अपने पुत्र अपनी पुत्री और
३ अपने भाई के लिये। और अपनी कुंआरी बहिन के लिये
४ जो अनब्याही है उसके कारण वुह अशुद्ध होवे। जो अपने

लोगों में प्रधान है सो आप को अशुद्ध नकरे जिसतें आप को
५ हलुक करे। वे अपने सिरों के बाल नमुड़ावें और अपनी
दाढ़ी के कोनों को नमुड़ावें और अपने मांस को नकाटें।
६ वे अपने ईश्वर के लिये पवित्र बनें और अपने ईश्वर के
नाम को हलुक नकरें क्योंकि वे परमेश्वर के लिये आग की
७ भेंट ईश्वर को भोग लागाते हैं सो वे पवित्र होंगे। वे वेश्या
को अथवा तुच्छ को पत्नी नकरें और न उस स्त्री को जो
पति से त्यागीगई है क्योंकि वुह अपने ईश्वर के लिये पवित्र
८ है। इसलिये तू उसे पवित्र कर क्योंकि वुह तेरे ईश्वर का
भोजन चढ़ाता है वुह तेरे लिये पवित्र होवे क्योंकि मैं
९ परमेश्वर तुम्हारा शुद्धकर्त्ता पवित्र हों। और यदि
किसी याजक की पुत्री वेश्या का कर्म्म करके आप को तुच्छ करे
वुह अपने पिता को तुच्छ करती है वुह आग से जलाई
१० जायगी। और वुह जो अपने भाइयों में प्रधानयाजक है
जिसके सिर पर अभिषेक का तेल डालागया और जो
स्थापित कियागया कि वस्त्र पहिने सो अपना सिर नंगा
११ नकरे और अपने कपड़े नफाड़े। वुह किसी लोथ के पास
नजाय और न अपने पिता और न अपनी माता के लिये
१२ आप को अशुद्ध करे। और कधी पवित्र स्थान से बाहर
नजाय और अपने ईश्वर के पवित्र स्थान को तुच्छ न करे क्योंकि
उसके ईश्वर के अभिषेक के तेल का मुकुट उसपर है मैं
१३।१४ परमेश्वर हों। और वुह कुंआरी को पत्नी करे। विधवा
अथवा त्यागीगई अथवा तुच्छ अथवा वेश्या को नलेवे परंतु
वुह अपनेही लोगों के बीच में की कुंआरी से बियाह करे।
१५ अपने बंश को अपने लोगों में तुच्छ नकरे क्योंकि मैं परमेश्वर
१६ उसे पवित्र करता हों। फिर परमेश्वर मूसा से
१७ कहके बोला। कि हारून से कह कि जो कोई तेरे बंशमें
से अपनी अपनी पीढ़ियों में खोटहोय सो अपने ईश्वर को

१८ नैवेद्य चढ़ाने को समीप न आवे। क्योंकि वुह पुरुष जिस में कुछ खोट होवे सो समीप न आवे जैसे अंधा अथवा लंगड़ा अथवा वुह जिसकी नाक चिपटी हो अथवा जिस पर कुछ
१९ उभड़ा है। अथवा वुह जिसका पांव अथवा हाथ टूटा हो।
२० अथवा कुबड़ा अथवा बावना अथवा उसकी आंख में कुछ खोट हो अथवा दाद अथवा खजुली अथवा अंडवृद्ध हो।
२१ हारून याजक के बंश में से कोई मनुष्य जिस में खोट है निकट न आवे कि परमेश्वर के होम की भेंट चढ़ावे उसमें खोट है वुह अपने ईश्वर को नैवेद्य चढ़ाने को पास न आवे।
२२ वुह अपने ईश्वर का नैवेद्य अतिपावन और पवित्र खावे।
२३ केवल वुह घूंघट के भीतर न जाय और बेदी के पास न आवे इसलिये कि उसमें खोट है मेरे पवित्र स्थान को तुच्छ न करे
२४ क्योंकि मैं परमेश्वर उन्हें शुद्ध करता हों। तब मूसा ने हारून और उसके बेटे और समस्त इसराईल के संतानों को यह सब कहा।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कह के बोला। कि हारून और उस के बेटे से कह कि वे इसराईल के संतान की पवित्र बस्तुन से आप को अलग रक्खें और मेरे नाम को उन बस्तुन के कारण जिन्हें वे मेरे लिये पवित्र करते हैं निंदा न करें
३ मैं परमेश्वर हों। उन्हें कह कि तुम्हारी पीढ़ियों में और तुम्हारे बंशों में जो कोई उन पवित्र बस्तुन के पास जो इसराईल के संतान परमेश्वर के लिये पवित्र करते हैं अपनी अपवित्रता रखके जाय वुह मनुष्य मेरे पास से काटा जायगा मैं
४ परमेश्वर हों। जो कोई हारून के बंश में से कोढ़ी अथवा प्रमेही हो और जो मृतक के कारण से अपवित्र है और उसे जिसको प्रमेह है जबलों वुह पवित्र न होले तबलों पवित्र

५ वस्तुन में से कुछ नखावे। और जो कोई किसी रेंगवैया जंतु को छूवे जिस्से वुह अपवित्र होवे अथवा किसी मनुष्य को जिस्से वुह अपवित्र होसके जो अपवित्रता उसमें होवे।
६ वुह प्राणी जिसने ऐसा कुछ छूआ सांझलों अपवित्र रहेगा और जबलों अपना शरीर पानी से धो नले पवित्र वस्तु में
७ से कुछ नखाय। और जब सूर्य अस्तहोवे तब वुह पवित्र होगा और उसके पीछे वुह पवित्र वस्तें खाय क्योंकि यह उसका
८ आहार है। जो कुछ आपसे मरे अथवा फाड़ाजाय वुह
९ उसे खाके आपको अशुद्ध नकरे मैं परमेश्वर हों। इसलिये वे मेरी व्यवस्थों का पालन करें ऐसा नहोवे कि उस के लिये पापी होवें और मरें यदि वे उसे तुच्छ करें मैं परमेश्वर
१० पवित्र हों। कोई परदेशी पवित्र वस्तु नखाय और न याजक का पाहुन और न बनिहार पवित्र वस्तुन को खाय।
११ परंतु जिसे याजक ने अपने दाम से मोल लियाहो सो उसे खावे और वुह जो उसके घरमें उत्पन्न हुआहै सो
१२ उसके भोजन में से खावे। यदि याजक की कन्या किसी परदेशी से बियाही जाय तो वुह भी चढ़ाईहुई पवित्र वस्तुन
१३ में से नखाय। पर यदि याजक की कन्या विधवा होजाय अथवा त्यक्त होवे और निर्वंश हो और युवा वस्थाके समान अपने पिताके घरमें फिर आवे तो वुह अपने पिताके भोजन में से खाय परंतु परदेशी उसे नखाय।
१४ और यदि पवित्र वस्तुन में से कोई अनजान खाजावे तो वुह उसके पांचवें भाग को मिलावे और उसे उस पवित्र वस्तु
१५ सहित याजक को देवे। और इसराईल के संतान की पवित्र वस्तुन को जो उन्होंने परमेश्वर केलिये चढ़ायाहै वे निंदा
१६ नकरें। और अपनी पवित्र वस्तुन के खाने से पाप का बोझ उनसे नउठवावें क्योंकि मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र
१७ करताहों। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला।

१८ कि हारून को और उसके बेटों को और इसराईल के समस्त संतान को कहके बोल कि इसराईल के घराने में से अथवा इसराईल के परदेशियों में से जोकोई अपनी समस्त मनौती के लिये भेंट और अपनी समस्त मनमंता की भेंट
१९ जो वे परमेश्वर के लिये होम की भेंट के लिये चढ़ावें। सो अपनी इच्छा से ढोरों में से अथवा भेड़ बकरी में से निष्खोट नरख होवे।
२० और जिस पर दोष है उसे मत चढ़ाइयो क्योंकि तुम्हारे लिये ग्राह्य
२१ नहोगा। और जो कोई अपनी मनौती पूरा करने को अथवा वांछित भेंट ढोरों में से अथवा भेड़ में से कुशल की भेंट परमेश्वर के लिये चढ़ावे सो ग्राह्य होने के लिये निर्दोष होवे उसमें
२२ कुछ खोट नहोवे। अंधा अथवा टूटा अथवा लंगड़ा लूला अथवा जिस पर मसा अथवा दाद अथवा खुजली होवे परमेश्वर के लिये भेंट मत चढ़ाइयो उनमें से होम की भेंटों
२३ को परमेश्वर की बेदी पर मत चढ़ाइयो। बैल अथवा मेम्ना जिसका कोई अंग अधिक अथवा घटा होवे उसे वांछित भेंट के लिये चढ़ावे परंतु मनौती के कारण ग्राह्य नहोगा।
२४ कुचलाऊआ अथवा दबाऊआ अथवा टुंडा अथवा काटाऊआ परमेश्वर के लिये मत चढ़ाइयो अपने देश में ऐसों को
२५ मत चढ़ाइयो। और इन्हों में से अपने ईश्वर को नैवेद्य किसी परदेशी की ओर से मत चढ़ाइयो इसलिये कि उनकी सड़ाहट उनमें है वे खोटे हैं वे तुम्हारे लिये ग्राह्य
२६ नहोंगे। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला।
२७ कि जब बैल अथवा भेड़ बकरी उत्पन्न होवे तब सात दिन लों अपनी माता के साथ रहे और आठवें दिन से और उसे आगे परमेश्वर के होम की भेंट के लिये ग्राह्य होगा।
२८ और गाय अथवा भेड़ को गदेले समेत एकी दिन मत
२९ मारियो। और जब तुम परमेश्वर के लिये धन्यबाद के बलिदान भेंट चढ़ाओ तब अपनी इच्छा से उसे चढ़ाओ।

३० हां उसी दिन खायाजाय तुम उसमें से दूसरे दिन
३१ लों तनिक भी नछोड़ियो मैं परमेश्वर हों। इसलिये मेरी आज्ञाओं को धारण करो और उन्हें पालन करो मैं
३२ परमेश्वर हों। मेरे पवित्र नाम को हलुक नकरो परंतु मैं इसराईल के संतानों में पवित्र होंगा मैं परमेश्वर तुम्हें
३३ पवित्र करताहों। तुम्हें मिसर की भूमि से निकाल लाया कि तुम्हारा ईश्वर हों मैं परमेश्वर हों।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराईल के संतानों से कहके बोल कि परमेश्वर के पर्ब्ब जिन्हें तुम पवित्र
३ बुलावा सभाके लिये प्रचारोगे ये मेरे पर्ब्ब हैं। छःदिन काम काज कियाजाय परंतु सातवां दिन जो बिश्राम का है उसमें पवित्र सभा होगी कोई कार्य्य नकरो यह तुम्हारे समस्त
४ निवासों में परमेश्वर का बिश्राम है। ये परमेश्वर के पर्ब्ब और पवित्र सभा जिन्हें तुम उनके समय में
५ प्रचारोगे। पहिले मास की चौदहवीं तिथि की सांझ को
६ परमेश्वर के पार जाने का पर्ब्ब है। और उसी मास की पंदरहवीं तिथि को परमेश्वर के अख़मीरी रोटी का पर्ब्ब
७ है सात दिन लों अवश्य अख़मीरी रोटी खाइयो। पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा उस दिन कोई संसारिक कार्य्य
८ मत करियो। परंतु सात दिन लों परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाइयो और सातवें दिन पवित्र सभा है उस दिन
९ कोई संसारिक कार्य्य मत कीजियो। फिर परमेश्वर
१० मूसा से कहके बोला। कि इसराईल के संतानों से कहके बोल कि जब तुम उस देश में पहुंचो जो मैं तुम्हें देताहों और उसका अन्न लेओ तब तुम अपनी बालों में से एक गट्ठा
११ पहिले फल याजक पास लाओ। वुह उसे परमेश्वर के

आगे हिलावे कि तुम्हारे लिये ग्राह्य होवे और बिश्राम के
१२ दूसरे दिन बिहान को याजक उसे हिलावे। और उस दिन
जिस समय वुह गट्ठा हिलायाजाय पहिले बरस का एक
निखोट मेम्ना होम की भेंट परमेश्वर के लिये चढ़ाओ।
१३ और उसकी भेंट और भोजन की भेंट दो दसवां भाग
चोखा पिसान तेल मिलाके होम की भेंट परमेश्वर के सुगंध
के लिये होवे और उसके पीने की भेंट सेरभर दाखरस
१४ होवे। और जिस दिन लों अपने ईश्वर के लिये भेंट चढ़ाओ
रोटी और भूना ऊचा अन्न अथवा हरी बालें मत खाइयो
१५ तुम्हारी पीढ़ियों में यह सनातन की बिधि है। और
बिश्राम दिन के बिहान से जब से हिलाने की भेंट के लिये
तुमने गट्ठा चढ़ायाहै सात अठवारे गिनके पूरा करियो।
१६ सातवें बिश्राम के पीछे बिहान से पचास दिन गिनलो और
१७ परमेश्वर के लिये नये भोजन की भेंट चढ़ाओ। अपने
निवासों में से दो दसवें भाग की दो रोटी लाइयो ये चोखे
पिसान की होवें और वुह ख़मीरके साथ पकायाजाय और
१८ परमेश्वर के लिये पहिले फल लाइयो। और पहिले बरस
के निखोट सात मेम्ने और एक बछड़ा और दो मेढ़े उनके
साथ चढ़ाइयो यह परमेश्वर के होम की भेंट उनके भोजन की
और पीने की भेंट सहित परमेश्वर के सुगंध के लिये होम
१९ की भेंट है। फिर पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना
और कुशल की भेंट के लिये पहिले बरस के दो मेम्ने बलि
२० कीजियो। और याजक उन्हें पहिले फल की रोटी के संग
परमेश्वर के आगे हिलावने की भेंट के लिये दो मेम्ना समेत
हिलावे याजकों के लिये वे परमेश्वर के आगे पवित्र होंगे।
२१ और उसी दिन प्रचारियो वुह तुम्हारे पवित्र बुलावा
के लिये होवे कोई संसारिक कार्य्य मत करियो यह
तुम्हारे समस्त निवासों में तुम्हारी पीढ़ियों के अंत लों

२२ विधि होगी। और जब अपने खेत लवो तब अपने खेत के कोनों को भारके मत काटियो और लवने के पीछे मत बीनियो तू उसे कंगालों और परदेशियों के लिये
२३ छोड़ियो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों। फिर परमेश्वर
२४ मूसा से कहके बोला। कि इसराईल के संतान से कह कि सातवें मास की पहिली तिथि तुम्हारे लिये बिश्राम और
२५ नरसिंगे के शब्द से स्मारक पवित्र बुलावा है। कोई संसारिक कार्य्य मत कीजियो परंतु परमेश्वर के लिये होम
२६ की भेंट चढ़ाइयो। फिर परमेश्वर मूसा से कहके
२७ बोला। सातवें मास की दसवीं तिथि प्रायश्चित्त देने का दिन है तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा होगा उस दिन अपने प्राण में शोकित होओ और परमेश्वर के लिये होम की
२८ भेंट चढ़ाओ। उसी दिन कोई काम मत करियो क्योंकि वुह प्रायश्चित्त का दिन है तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे
२९ अपने लिये प्रायश्चित्त करो। क्योंकि जो प्राणी उस दिन में शोकित न होगा वुह अपने लोगों में से काटाजायगा।
३० और जो प्राणी उस दिन में कोई काम करेगा सोई प्राणी
३१ अपने लोगों में से काटाजायगा। किसी रीति का काम मत करना यह तुम्हारे समस्त निवासों में तुम्हारी पीढ़ियों
३२ के अंत्य लों सनातन के लिये बिधि होगी। यह तुम्हारे लिये विश्राम का चैन होगा अपने प्राण को शोकित करियो तुम उस मास की नवीं तिथि को सांझ से सांझ लों अपने विश्राम
३३ के लिये पालियो। फिर परमेश्वर मूसा से कहके
३४ बोला। इसराईल के संतानों से कह कि सातवें मास की पंदरहवीं तिथि से सात दिन लों परमेश्वर के तंबू का पर्ब्ब
३५ है। पहिले दिन पवित्र बुलावा होवे उस दिन कोई संसारिक
३६ कार्य्य न करना। सात दिन लों परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाओ आठवें दिन तुम्हारा पवित्र बुलावा है सो

तुम परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाइयो यह बंधेज
३७ है उसमें संसारिक कार्य्य मत कीजियो। परमेश्वर के ये पर्ब्ब
हैं जिनमें तुम पवित्र बुलावा प्रचारियो जिसतें परमेश्वर के
लिये होम की भेंट आगसे बनाईऊई और भोजन की भेंट
एक बलिदान और पीने की भेंट हरएक वस्तु अपने दिन में
३८ चढ़ाइयो। सो परमेश्वर के बिश्रामों के और अपनी भेंटों से
अधिक और तुम्हारी समस्त मनौती से अधिक और तुम्हारे
समस्त मनमंता भेंटों से अधिक जिन्हें तुम परमेश्वर के लिये
३९ चढ़ातेहो। सातवें मास की पंदरहवीं तिथि जब खेतों का
अनाज एकट्ठा करलो तब तुम सात दिन लों परमेश्वर के
लिये पर्ब्ब मानियो पहिला दिन बिश्राम का होगा और
४० आठवां दिन बिश्राम का होगा। सो तुम पहिले दिन सुंदर
वृक्षों का फल और खजूर की डाली और घने वृक्षों की
डालियां और नालियों का बेंत लीजियो और परमेश्वर अपने
४१ ईश्वर के आगे सात दिन लों आनंद कीजियो। और बरस में
परमेश्वर के लिये सात दिन भर पर्ब्ब के लिये पालन करियो
यह तुम्हारी पीढ़ियों में सनातन की बिधि होगी सातवें
४२ मास योंही स्मरण कीजियो। सात दिन लों छप्पर में रहियो
४३ जितने इसराईली हैं सबके सब छप्पर में रहें। जिसतें
तुम्हारी पीढ़ी जानें कि जब मैं इसराईल के संतानों को
मिसर के देश से निकाल लाया मैंने उन्हें छप्परों में बसाया मैं
४४ परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों। सो मूसाने इसराईल के
संतानों से परमेश्वर के पर्ब्बों को कह सुनाया।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराईल के
संतानों को आज्ञा कर कि दीपक को नित जलाने के कारण
३ कूटे ऊए जलपाई का निर्म्मल तेल तुझ पास लावें। हारून

उसे मंडली के तंबू में साक्षी के ओट के बाहर सांझ से बिहान लों परमेश्वर के आगे रीति से रक्खे तुम्हारी पीढ़ियों
४ के लिये यह विधि सनातन की होगी। वही दीपकों को पवित्र दीअट पर परमेश्वर के आगे रीति से सदा रक्खाकरे।
५ और चोखे पिसान लेके उस्से बारह फुलके पका एक
६ एक फुलका दो दसवें अंश का होवे। और तू उन्हें परमेश्वर के आगे पवित्र मंच पर छः छः करके दो पांती
७ में रख। और हरएक पांती पर निराला गंधरस रखना जिसतें वुह रोटी स्मरण के लिये होवे अर्थात होम
८ की भेंट परमेश्वर के लिये है। यह सनातन की बाचा के लिये इसराईल के संतान से लेके हर बिस्राम दिन को
९ परमेश्वर के आगे रीति से नित्य रक्खाकरे। और वुह हारून की और उसके बेटों की होंगी वे उन्हें पवित्र स्थान में खावें यह उसके लिये परमेश्वर के होम की भेंटों में से
१० अत्यंत पवित्र विधि नित्य के लिये है। तब एक इसराईली स्त्री का बेटा जिसका पिता मिसरी था निकलके इसराईलियों में गया और उस इसराईली स्त्री का बेटा और
११ इसराईल का एक जन छावनी में झगड़रहेथे। और इसराईली स्त्री के बेटे ने परमेश्वर के नाम की अपनिंदा किई और धिक्कारा और उसकी माता का नाम सलूमीत था जो दिबरी के पुत्र दान के कुल से थी तब वे उसे मूसा पास
१२ लाये। और वुह बंधन में रक्खागया जिसतें उन पर प्रगट
१३ करे कि परमेश्वर क्या आज्ञाकरताहै। फिर परमेश्वर
१४ मूसा से कहके बोला। जिसने अपनिंदा किई है उसे छावनी के बाहर निकाल लेजा और जितनों ने सुना वे अपने हाथ उसके सिर पर रक्खें और सारी मंडली उसे पत्थरवाह
१५ करे। और इसराईल के संतानों से कह कि जो कोई अपने ईश्वर की निंदा करेगा सो अपना पाप भोगेगा।

१६ और जो परमेश्वर के नाम की अपनिंदा करे सो निश्चय प्राण से माराजायगा समस्त मंडली उसे निश्चय पत्थरवाह करे चाहे वुह परदेशी होय चाहे देशी जब उसने परमेश्वर के नाम की अपनिंदा किई वुह प्राण से माराजायगा ।
१७ और जो दूसरे को मारडालेगा सो निश्चय घात
१८ कियाजायगा। और जो कोई पशु को मारडाले सो उसकी
१९ संती पशु देवे। और यदि कोई अपने परोसी को खोटा करे
२० जैसा करेगा वैसाही उस पर कियाजायगा। तोड़ने की संती तोड़ना आंख की संती आंख दांत की संती दांत जैसा उसने
२१ मनुष्य को खोटा कियाहै उस्से वैसाही कियाजावे। और वुह जो पशु को मारडाले वुह उसका पलटा देवे और वुह जो
२२ मनुष्य को मारडाले प्राण से माराजाय। तुम्हारी एकही रीति की व्यवस्था होवे जैसी परदेशी की वैसीही देशी के विषय में होवे क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों ।
२३ तब मूसाने इसराईल के संतान को कहा कि उस जन को तंबू के बाहर निकाल लेजावें और उसपर पत्थरवाह करें सो इसराईल के संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किईथी वैसाही किया।

२५ पचीसवां पर्ब्ब ।

१ फिर परमेश्वर सीना के पहाड़ पर मूसा से कहके बोला।
२ कि इसराईल के संतानों को कहके बोल कि जब तुम उस देश में जो मैं तुम्हें देताहों पऊंचो तब वुह भूमि परमेश्वर के
३ लिये बिश्राम दिन को बिश्राम करे। छः बरस अपने खेतों को बोओ और छः बरस अपने दाखों को सवांरु और उसका
४ फल बटोर। परंतु सातवां बरस देश के लिये चैन का बिश्राम होगा परमेश्वर के लिये बिश्राम नतो खेत को बोना
५ और न अपने दाखों को सवांरना। जो कुछ आपसे आप

उगे तू उसे मत लव और बिनसवांरीहुई लता के दाखों को मत
६ बटोर कि देश के लिये चैन का बरस है। सो भूमि का बिश्राम
तुम्हारे लिये और तुम्हारे सेवकों और तुम्हारे दास और
दासी और तुम्हारे बनिहार और तुम्हारे परदेशियों के लिये जो
७ तुम्में टिके हैं। और तुम्हारे ढ़ोर और जो पशु तुम्हारे
देश में है उसका सब प्राप्त उनके खाने के लिये होगा।
८ और तू सात बिश्राम के बरसों को अपने लिये गिन
सात गुने सात बरस और सात बरसों के बिश्राम के समय
९ तुम्हारे लिये उंचास बरस होंगे। तब तू सातवें मास की
दसवीं तिथि में आनंद का नरसिंगा फुंकवा और
प्रायश्चित्त के दिन अपने सारे देश में नरसिंगा फुंकवा।
१० सो तुम पचासवें बरस को पवित्र जानो और देश में उसके
सारे बासियों में मुक्ति प्रचारो यह तुम्हारे लिये आनंद है
और तुम्में से हरएक मनुष्य अपने अपने अधिकार को
११ और अपने घराने को फिरजाय। पचासवां बरस
तुम्हारे लिये आनंद है तुम कुछ मत बोइयो न उसे जो उसमें
आपसे उगे काटियो बिनसवांरीहुई दाख की लता के दाखों
१२ को मत बटोरो। क्योंकि यह आनंद है यह तुम्हारे लिये
१३ पवित्र होगा खेतों में जो बढ़े तुम उसे खाओ। उस आनंद
के बरस तुम्में से हरएक अपने अपने अधिकार को फिर
१४ जाय। और यदि तू अपने परोसी के हाथ बेंचे अथवा
अपने परोसी से मोललेे तो एक दूसरे पर अंधेर मत
१५ कीजियो। आनंद के बरसों के पीछे के समान गिनके अपने
परोसी से मोल लेना और बरसों के प्राप्त की गिनती के
१६ समान तेरे हाथ बेंचे। बरसों की बढ़ताई के समान उसका
मोल बढ़ाइयो और बरसों की घटी के समान उसका मोल
घटाइयो क्योंकि प्राप्त की गिनती के समान वुह तेरे हाथ बेंचता
१७ है। इसलिये एक दूसरे पर अंधेर मत करो परंतु अपने

ईश्वर से डरियो क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों।
१८ सो तुम मेरी बिधि को मानो और मेरे न्याय को धारण
और पालन करियो और देश में कुशल से बासकरोगे।
१९ और भूमि तुम्हे अपने फल देगी और तुम खाके तृप्त होओगे
२० और उस पर कुशल से रहाकरोगे। और यदि तुम कहो
कि हम सातवें बरस क्या खायेंगे क्योंकि नबोवेंगे नबटोरेंगे।
२१ तब मैं छठवें बरस अपना आशीष तुम्हें देउंगा और उसमें
२२ तीन बरस का प्राप्त होगा। आठवें बरस बोओ और नौवें
बरस लों पुराना अनाज खाओ जबलों उसमें अन्न फेर नहोवे
२३ तबलों पुराना अन्न खाओ। भूमि सदा के लिये बेची
नजावे क्योंकि भूमि मेरी है और तुम मेरे संग परदेशी
२४ और निवासी हो। तुम अपने अधिकार की समस्त भूमि
२५ के लिये छुटकारा देना। यदि तेरा भाई कंगाल होय और
कुछ अपने अधिकार में से बेंचे और कोई उसे छुड़ाने आवे
२६ तब वुह अपने भाई की बेंचीऊई छुड़ाले। यदि उस मनुष्य के
२७ छुड़ाने को कोई नहोवे और आप से छुड़ासके। तब उसके
बेचने के बरस गिनेजावें और जिस पास बेंचा है उसको
बढ़ती फेरदेवे जिसतें वुह अपने अधिकार पर फिरजाय।
२८ परंतु यदि वुह फेरदेने पर खड़ा नहो तब जो बेंचाऊआ है
सो आनंद के बरस लों उसी के हाथमें रहे जिसने उसे
मोललिया और आनंद में वुह छूट जायगी तब वुह अपने
२९ अधिकार पर फिरजावे। और यदि कोई घरको जो भीत
नगर में है बेंचने के पीछे बरस भरमें उसे छुड़ावे पूरे बरस में
३० वुह उसे छुड़ावे। और यदि बरस भर में छुड़ाया नजाय
तो वुह घर जो भीतनगर में है सो उसके लिये जिसने
मोल लियाहै उसके समस्त पीढ़ियों में दृढ़ रहेगा और वुह
३१ आनंद के बरस में बाहर नजायगा। परंतु गांव के घर जिनके
आस पास भीत नहोवे देशके खेतों के समान गिनेजावें वे

३२ छुड़ा सकें और आनंद में छूटजावेंगे। लावियों के नगर
और उनके अधिकार के नगरों के घर जब चाहें तब
३३ लावी छुड़ावें। और यदि कोई मनुष्य लावियों से मोल लेवे
तब जो घर बेंचागया और उसके अधिकार का नगर फिर
आनंद के वरस में छूटजायगा क्योंकि लावियों के नगर के
३४ घर इसराईल के संतानों में उनके अधिकार हैं। परंतु वे
खेत जो उनके नगरों के सिवाने में हैं बेंचेनजावें क्योंकि यह
३५ उनके सनातन का अधिकार है। और यदि
तुम्हारा भाई दुःखी और कंगाल होजावे तो तुम उसकी
सहाय करो चाहे वुह परदेशी होय चाहे पाऊन जिसतें
३६ वुह तुम्हारे साथ जीवन काटे। तू उसे ब्याज और बढ़ती
मत ले परंतु अपने ईश्वर से डर जिसतें तेरा भाई तेरे साथ
३७ जीवन काटे। तू उसे ब्याज पर ऋण मत दे और बढ़ती के
३८ लिये भोजन का ऋण मत दे। मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों
जो तुम्हें मिसर के देश से निकाल लाया जिसतें तुम्हें किनान
३९ का देश देओं और तुम्हारा ईश्वर हों। और यदि
तेरा भाई तुझपास कंगाल होजाय और तुझपास बेंचाजाय
४० तो तू उसे दास की नाईं सेवा मत करवा। परंतु वुह बनिहार
और पाऊन की नाईं तेरे साथ रहे और आनंद के बरस लों
४१ तेरी सेवा करे। और उसके पीछे वुह अपने लड़कों समेत
तुझसे अलग होजायगा और अपने घराने और अपने
४२ पिता के अधिकार को फिरजाय। इसलिये कि वे मेरे सेवक हैं
जिन्हें मैं मिसर की भूमि से बाहर लेआया वे दासों की नाईं
४३ बेंचे नजावें। तू कठोरता से उनसे सेवा मत ले परंतु अपने
४४ ईश्वर से डर। तुम्हारे दास और तुम्हारी दासियां जिन्हें
तुम अन्यदेशियों में से जो तुम्हारे आसपास हैं रक्खोगे उन्हीं
४५ में से दास और दासियां मोल लेओ। और उन परदेशियों
के लडकों में से भी जो तुम्में बास करते हैं और उनके घराने

में से जो तुम्हारी भूमि में उत्पन्न ऊए हैं मोल लीजियो वे तुम्हारे
४६ अधिकार होंगे। और तुम उन्हें अपने पीछे अपने लड़कों
के लिये अधिकार में लेओ वे सदा लों तुम्हारे दास हैं परंतु
तुम अपने भाइयों पर जो इसराईल के संतान हैं एक दूसरे
४७ पर कठोरता से सेवा मत लेओ। और यदि कोई
पाऊन अथवा परदेशी तेरे पास धनी होवे और तेरा भाई जो
उसके साथ है कंगाल होजावे और उस परदेशी अथवा पाऊन
के हाथ जो तेरे साथ है अथवा उसके हाथ जो परदेशी के
४८ घरानों में से होय किसी के हाथ आप को बेंचडाले। उसके
बेंचे जानेके पीछे वुह फेर छुड़ायाजासके उसके भाइयों में से
४९ उसे छुड़ासके। चाहे उसका चचा चाहे उसके चचा का पुच
अथवा जो कोई उसके घराने में उसका गोती हो उसको
छुड़ासके और यदि उसे होसके तो वुह आप को छुड़ावे।
५० और वुह अपने बेंचेजाने के बरस से लेके आनंद के बरस लों
गिने और उसके बेंचे जाने का मोल बरसों की गिनती के
समान होवे वुह बनिहार के समय के समान उसके साथ
५१ रहेगा। यदि बऊत बरस रहे तो वुह अपने छुड़ाने को
उस मोल से जिसे वुह बेंचागया उन बरसों के समान
५२ फेरदे। और यदि आनंद के थोड़े बरस रहजावें तो वुह
लेखा करे और अपने छुटकारे का मोल अपने बरसों के
५३ समान उसे फेरदे। और वुह बरस बरस के बनिहार के
समान उसके साथ रहे और उस पर कठोरता से सेवा
५४ नकरवावे। और यदि वुह इन बरसों में छुड़ाया नजावे तो
आनंद के बरस में वुह अपने लड़कों समेत छूटजायगा।
५५ क्योंकि इसराईल के संतान मेरे सेवक हैं वे मेरे सेवक जिन्हें
मैं मिसर के देश से निकाललाया मैं परमेश्वर तुम्हारा
ईश्वर हों।

२६ छबीसवां पर्ब्ब।

१ अपने लिये मूर्त्ति अथवा खोदीऊई प्रतिमा मत बनाइयो और स्थापित मूर्त्ति मत सुनियो और दंडवत करने के लिये पत्थर की मूर्त्ति स्थापित मत करियो क्योंकि मैं परमेश्वर
२ तुम्हारा ईश्वर हों। तुम मेरे विश्रामों का पालन करो और मेरे पवित्र स्थान को प्रतिष्ठा देओ मैं परमेश्वर हों।
३ यदि तुम मेरी विधि पर चलोगे और मेरी आज्ञाओं को
४ धारण करके उन पर चलोगे। तो मैं तुम सब पर मेह बरसाओंगा और देश अपनी बढ़ती उगावेगा और खेत
५ के वृक्ष अपने फल देंगे। यहां लों कि अन्न झाड़ने के समय दाख तोड़ने के समय लों पऊंचेगा और दाख तोड़ने के समय लों बोने का समय पऊंचेगा और तुम खाके संतुष्ट होओगे
६ और अपने देशमें चैन से रहोगे। और मैं देश में कुशल देउंगा और तुम लेट जाओगे और कोई तुम्हें नडरावेगा और मैं बुरे पशुओं को देश से दूर करोंगा और तुम्हारे
७ देश में तलवार नचलेगी। और तुम अपने वैरियों को खदेड़ोगे और वे तुम्हारे आगे तलवार से गिरजायेंगे।
८ और पांच तुम्मसे सौ को खदेड़ेंगे और सौ तुम्मेंसे दससहस्र को भगावेंगे और तुम्हारे वैरी तुम्हारे आगे तलवार से
९ गिरजायेंगे। मैं तुम्हारा पक्ष करोंगा और तुम्हें फलवंत करोंगा और मैं तुम्हें बढ़ाऊंगा और अपनी वाचा को तुमसे
१० पूरा करोंगा। और तुम पुराना अन्न खाओगे और नयेके
११ कारण पुराना लाओगे। और मैं अपना तंबू तुम्में खड़ा
१२ करोंगा और मैं तुम से घिन नकरोंगा। और मैं तुम्होंमें फिराकरोंगा और तुम्हारा ईश्वर होंगा और तुम मेरे
१३ लोग होओगे। मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों जो तुम्हें मिसर के देश से निकाल लाया जिसतें तुम उनके दास नबनो और मैं ने तुम्हारे कांधों के जूओं को तोड़ा और तुम्हें खड़ा चलाया

१४ परंतु यदि तुम मेरा नसुनोगे और उन सब आज्ञाओं
१५ को पालन नकरोगे। और मेरी बिधि की निंदा करोगे
अथवा तुम्हारे मन मेरे न्यायों को घिन करें ऐसा कि तुम
मेरी आज्ञाओं को पालन नकरो पर मेरी बाचा तोड़दो।
१६ तो मैं भी तुम से वैसाही करोंगा और भय और छयी और
तप्त ज्वर जो तेरी आंखों को भस्म करेगा और मन को उदास
और तुम अपने बीज अकारथ बोओगे क्योंकि तुम्हारे बैरी
१७ उसे खायेंगे। और मैं तेरा साम्ना करोंगा और तुम अपने
बैरियों के साम्ने जूभजाओगे जो तुम्हारे बैरी हैं सो तुम पर
राज्य करेंगे और कोई तुम्हारा पीछा नकरतेही तुम भागे
१८ जाओगे। इन सभों पर भी यदि तुम मेरी नसुनोगे तो मैं
१९ तुम्हारे पापों के कारण सतगुण तुम्हें दंड देओंगा। और तुम्हारे
घमंड के बल को तोड़ोंगा और तुम्हारा आकाश लोहा के
समान और तुम्हारी पृथिवी पीतल की नाईं करदेउंगा।
२० और तुम्हारा बल सेंत से जातारहेगा क्योंकि तुम्हारी भूमि
अपनी बढ़ती नदेगी और देश के पेड़ फल नपहुंचावेंगे।
२१ और यदि तुम मेरे बिपरीत चलोगे और मेरी
नसुनोगे तो मैं तुम्हारे पापों के समान तुम पर सतगुण
२२ और मरी लाओंगा। और मैं बनैले पशु भी तुम्में भेजोंगा
और वे तुम्हारे बंश को भक्षण करेंगे और तुम्हारे पशुन को
नाश करेंगे और तुम्हें गिनती में घटादेंगे और तुम्हारे मार्ग
२३ सूने पड़ेरहेंगे। और यदि मेरी इन बातों से नसुधरोगे
२४ परंतु मुझसे बिपरीत चलोगे। तो मैं भी तुम्हारे बिपरीत
चलोंगा और तुम्हारे पापों के लिये तुम्हें सतगुण दंड देओंगा।
२५ और मैं तुम पर तलवार लाओंगा जो मेरी बाचा के झगड़े
का पलटालेगी और जब तुम अपने नगरों में एकट्ठे होओगे
मैं तुम्हों में मरी भेजोंगा और तुम बैरियों के हाथ में
२६ सौंपेजाओगे। और जब मैं तुम्हारी रोटी की लाठी

तोड़डालोंगा तब दस स्त्री तुम्हारी रोटियां एक भट्ठी में पकावेंगी और तुम्हारी रोटियां तौलके तुम्हें देंगी और तुम खाओगे
२७ परंतु तृप्त नहोओगे। और यदि तुम उस पर भी नसुनोगे
२८ परंतु मुझसे बिपरीत चलोगे। तो मैं भी कोप से तुम्हारे बिपरीत चलोंगा मैं हां मैंहीं तुम्हारे पापें के कारण तुम्हें
२९ सतगुण ताड़ना करोंगा। और तुम अपने बेटों का और
३० अपनी बेटियों का मांस खाओगे। और मैं तुम्हारे ऊंचे स्थानों को ढादूंगा और तुम्हारी मूर्तों को काटदेउंगा और तुम्हारी लोथ तुम्हारे मूर्तों की लोथों पर फेंकोंगा और आप
३१ मैं तुम से घिन करोंगा। और तुम्हारे नगरों को उजाड़ करोंगा और तुम्हारे पवित्र स्थानों को सूना करोंगा और
३२ मैं तुम्हारे सुगंध को नसूंघोंगा। और मैं तुम्हारी भूमि को उजाड़ोंगा और तुम्हारे शत्रु उसके कारण आश्चर्य मानेंगे।
३३ और मैं तुम्हें अन्यदेशियों में छिन्न भिन्न करोंगा और तुम्हारे पीछे से तलवार निकालोंगा और तुम्हारी भूमि उजाड़
३४ होगी और तुम्हारे नगर उजड़ जायेंगे। देश अपने समस्त उजाड़ के दिनों में जब तुम अपने शत्रुन के देशमें रहोगे बिश्राम का भोग करेंगे तब देश चैन करेगा और अपने
३५ बिश्रामों को भोग करेगा। जबलों वुह उजाड़ रहेगा तबलों चैन करेगा इसकारण कि जब तुम उसमें बास करतेथे
३६ तुम्हारे बिश्रामों में चैन नकिया। और तुम्में जो बचरहे हैं मैं उन के बैरियों के देश में उन के मनमें दुर्बलता डालोंगा और पात खड़कने का शब्द उन्हें खदेड़ेगा और वे ऐसे भागेंगे जैसे तलवार से भागतेहैं और बिना किसीके पीछा
३७ करने से वे गिरपड़ेंगे। और वे ऐसे एक पर एक गिरेंगे जैसे तलवार के आगे और कोई उनका पीछा नकरेगा और
३८ तुम अपने बैरी के आगे ठहर नसकोगे। और तुम अन्यदेशियों में नष्ट होओगे और तुम्हारे बैरियों का देश तुम्हें

३९ खाजायगा। और वे जो तुम्में से बच जायेंगे सो तुम्हारे बैरियों के देश में और अपने पाप में और अपने पितरों के
४० पाप में क्षीण होजायेंगे। यदि वुह अपने पापों को और अपने पितरों के पापों को अपने अपराधों के संग जो उन्हों ने मेरा अपराध किया और यह कि वे मेरे बिपरीत चले हैं
४१ मानलेंगे। और मैं भी उनके बिपरीत चला और उन के बैरियों के देश में उन्हें लाया यदि उनके अखतनः मन दीन होजायेंगे और अपने दंड को अपने अपराध के योग्य
४२ समझेंगे। तब मैं यअ़कूब के संग अपनी बाचा को स्मरण करोंगा और अपनी बाचा इसहाक़ के साथ और अपनी बाचा इबराहीम के साथ स्मरण करोंगा और उस देश को
४३ स्मरण करोंगा। वही देश उनसे छोड़ाजायगा जबलों वुह उन दिनों में उजाड़ पड़ारहा अपने बिश्रामों को भोग करेगा और वे अपने पाप के दंड को मान लेंगे इसी कारण कि उन्हों ने मेरी आज्ञाओं को तुच्छ जाना और इसी कारण कि उनके अंतःकरणों ने मेरी बिधिन से घिन किया।
४४ और इनसभों से अधिक जब वे अपने बैरी के देश में होंगे मैं उन्हें दूर नकरोंगा और मैं उनसे घिन नकरोंगा कि उन्हें सर्बथा नाश करदेउं और उनसे बाचा तोड़ डालों
४५ क्योंकि मैं परमेश्वर उनका ईश्वर हों। परंतु उनके कारण मैं उनके पितरों की बाचा को जिन्हें मैंने मिसर के देश से अन्यदेशियों के आगे निकाललाया स्मरण करोंगा कि मैं
४६ उनका ईश्वर परमेश्वर हों। ये बिधि और न्याय और व्यवस्था जो परमेश्वर ने सीना पहाड़ पर आप में और इसराईल के संतानों में मूसा की ओर से ठहराये।

२७ सताईसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराईल के संतानों को कहके बोल जब मनुष्य विशेष मनौती माने
३ तेरे ठहराने के समान जन परमेश्वर के होंगे। और तेरा मोल बीस बरस से साठ बरस लों पुरुष के लिये तेरा मोल पवित्रस्थान के शेकल के समान पचास शेकल रूपा होंगे।
४ और यदि स्त्री होवे तो तेरा मोल तीस शेकल होंगे।
५ और यदि पांच से बीस बरस की बय होय तो तेरा मोल पुरुष के लिये बीस शेकल और स्त्री के लिये दस शेकल।
६ और यदि एक मास से पांच बरस की बय होय तो तेरा मोल पुरुष के लिये चांदी के पांच शेकल और स्त्री के लिये
७ तेरा मोल चांदी के तीन शेकल। और यदि वुह साठबरस से ऊपर का होय तो पुरुष के लिये तेरा मोल पंदरह शेकल
८ और स्त्री के लिये दस शेकल। परंतु यदि तेरे मोल से वुह कंगाल ठहरे तो वुह याजक के आगे आवे और याजक उसका मोल उसकी सामर्थ्य के समान ठहरावे जिसने मनौती
९ किई है याजक उसका मोल टाहरावे। और यदि पशु होवे जिसे मनुष्य परमेश्वर के लिये भेंटलाते हैं तो वुह सब जो परमेश्वर के लिये चढ़ायागया सो पवित्र होगा।
१० वुह उसे नफेरे भले के लिये बुरा और बुरे के लिये भला नपलटे और यदि वुह किसी भांति से पशु की संती पशु
११ देय तो वुह और उसका पलटा पवित्र होंगे। और यदि वुह अपवित्र पशुहोय जो परमेश्वर का बलिदान
१२ नहीं चढ़ाते तो वुह पशु को याजक के आगे लावे। और याजक उसका मोल करे चाहे भला होवे चाहे बुरा जैसा
१३ याजक उसका मोल ठहरावे वैसाही होवे। परंतु यदि वुह किसी भांतिसे उसे छुड़ावे तो वुह उस मोलमें पांचवां भाग
१४ मिलावे। और जब मनुष्य अपने घर को परमेश्वर के

लिये पवित्र करे तो याजक उसका मोल ठहरावे चाहे भला होवे चाहे बुरा याजक के ठहराने के समान उसका मोल
१५ होगा। और जिसने उस घर को पवित्र कियाहै यदि वुह उसे छुड़ाया चाहे तो तेरे मोल का पांचवां भाग उसमें
१६ मिलाके देवे और घर उसका होगा। यदि कोई अपने अधिकार से कुछ खेत परमेश्वर के लिये पवित्र करे तो तेरा मोल उसके अन्न के समान हो साढ़े छः मन जव का मोल
१७ पचास श्रेकल चांदी होगा। यदि वुह आनंद के बरस से अपना खेत पवित्र करे तो तेरे मोल के समान ठहरेगा।
१८ परंतु यदि वुह आनंद के पीछे अपने खेत को पवित्र करे तो याजक उन बरसों के समान जो आनंद के बरस लों बचे हैं मोल
१९ का लेखा करे और तेरे मोल से उतना घटायाजाय। और जिसने खेत को पवित्र कियाहै यदि वुह उसे किसी भांति से छुड़ाया चाहे तो वुह तेरे मोल का पांचवां भाग उसमें
२० मिलावे तब वुह उसका होजायगा। और यदि वुह उस खेत को न छुड़ावे अथवा यदि वुह उस खेत को दूसरे के पास
२१ बेचा हो तो वुह फिर कभी छुड़ाया नजायगा। परंतु जब वुह खेत आनंद के बरस में छूटे तब जैसा समर्पण कियागया खेत वैसा परमेश्वर के लिये पावन होगा और वुह याजक का
२२ अधिकार होगा। और कोई खेत जो उसने मोल लियाहै और उसके अधिकार के खेतोंमें का नहीं है परमेश्वर के लिये
२३ पवित्र करे। तो याजक आनंद के बरसों के समान गिनके मोल ठहरावे और वुह तेरे ठहराने के समान उस दिन उसका मोल परमेश्वर के लिये पवित्र वस्तु के समान देवे।
२४ और खेत आनंद के बरस में उसके पास फिर जायगा जिस्से
२५ मोल लियागया जो उस भूमि का अधिकार था। और तेरा मोल पवित्र स्थान के श्रेकल के समान होगा बीस गिरह का
२६ एक श्रेकल होगा। और केवल पशुनमें का पहिलौंठा जो

परमेश्वर का पहिलौंठा ऊआ चाहे उसे कोई पवित्र न करे चाहे वुह गाय बैलसे होवे चाहे भेड़ से वुह तो
२७ परमेश्वर का है। और यदि वुह अपावन पशु का होवे तो वुह तेरे मोल के समान उसे छुड़ावे और उसमें पांचवां भाग मिलावे अथवा यदि वुह छुड़ाया नजावे तो वुह तेरे मोल
२८ के समान बेचाजाय। तिसपरभी कोई समर्पण किईऊई वस्तु जिसे मनुष्य समस्त वस्तुन में से परमेश्वर के लिये समर्पण करताहै मनुष्य का पशु का और अपने अधिकार के खेत का बेचा अथवा छुड़ाया नजायगा हर एक समर्पण किईऊई
२९ वस्तु परमेश्वर के लिये अत्यंत पवित्र है। जो वस्तु मनुष्य समर्पण करताहै सो छुड़ाई नजायगी निश्चय मारडाली जायगी।
३० और देश का समस्त कर चाहे खेत का बीज चाहे पेड़ का फल
३१ परमेश्वर का वुह परमेश्वर के लिये पवित्र है। और यदि मनुष्य किसी भांतिसे अपने कर को छुड़ाया चाहे तो पांचवां
३२ भाग उसमें मिलावे। लेहंड़े का अथवा झुंड का कर के विषय में जो कुछ लट्ठा के नीचे जाताहै सो परमेश्वर के लिये दसवां
३३ भाग पवित्र होगा। वुह उसकी खोज नकरे चाहे भला अथवा बुरा वुह उसे नपलटे और यदि वुह किसी भांति से उसे पलटे तो वुह और उसका पलटा दोनों के दोनों
३४ पवित्र होजायेंगे और वुह छुड़ाया नजायगा। वे आज्ञा जो परमेश्वर ने इसराईल के संतानों के लिये सीना के पहाड़ पर मूसा को किईं थे हैं।

मूसा की चौथी पुस्तक जो गिनती की कहावती है।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

१ मिसर की भूमि से उनके निकलने के पीछे दूसरे बरस दूसरे मास की पहिली तिथि को सीना के पहाड़ के बन में मंडली के
२ तंबू में परमेश्वर मूसा से कहके बोला। उनके पितरों के घराने के समान इसराईल के संतानों की समस्त मंडली के घराने के
३ समान हरएक पुरुष के नामों का लेखा करे। बीस बरस से ऊपर सब जो इसराईल में लड़ाई के योग्य होवें तू और
४ हारून उनकी सेना सेना गिन। और हरएक गोष्ठी में से एक एक मनुष्य जो अपने अपने पितरों के घराने का प्रधान
५ है तुम्हारे साथ होवे। और जो जन तुम्हारे साथ खड़े होंगे उनके ये नाम हैं राओबीन में से शदूर के बेटे अलीज़र।
६।७ शमऊन में से सूरीशदाई का बेटा शलूमियाईल। यहूदा में से
८।९ नखशून। यसाखार में से सूआर के बेटे नासानाईल। ज़बुलून
१० में से हैलून के बेटे अलियाब। यूसफ़ के संतान अफ़राईम में से अमीहूदा के बेटे अलीशामा और मनस्सा में से फ़दासूर के
११।१२ बेटे ईल। बनियामीन में से जदूनी के बेटे अबीदान। दान
१३ में से अमीशज़ासी के बेटे अहीआज़र। अशीर से में अखरान
१४ के बेटे फ़गआईल। जाज़ में से कईल के बेटे अलियासाफ़।
१५।१६ नफ़ताली में से ऐनान के बेटे अहीरा। अपने अपने पितरों की गोष्ठियों के अध्यक्ष मंडली में ये नामी थे इसराईल
१७ में सहस्रों के प्रधान ये थे। सो मूसा और हारून ने उन
१८ मनुष्यों को लिया जिनके नाम लिखे हैं। और उन्होंने दूसरे

मास की पहिली तिथि में सारी मंडली को एकट्ठी किई और उन्हों ने अपने अपने पितरों के घराने के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों अपनी अपनी पीढ़ी उनके नामों की गिनती

१९ के समान लिखाया। जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा

२० किई थी उसने उनको सीना के बन में गिना। सो राऊबीन के संतान में वुह जो इसराईल का पहिलौंठा बेटा था अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उनकी पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान हर एक पुरुष

२१ सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो राऊबीन की गोष्ठी में से

२२ गिने गये छयालीस सहस्र पांच सौ थे। और शमऊन के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उनकी पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान हर एक पुरुष बीस बरस से ऊपर लों जो सब लड़ाई के

२३ योग्य थे। जो शमऊन की गोष्ठी में से गिने गये सो उनहत्तर

२४ सहस्र तीन सौ थे। और जाज़ के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उनकी पीढ़ियों में और नामों के समान बीस बरस से ऊपर लों जो लड़ाई के योग्य

२५ थे। जो जाज़ की गोष्ठी में से गिने गये सो पैंतालीस सहस्र छः

२६ सौ पचास थे। और यहूदा के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उनकी पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से ऊपर लों सब जो

२७ लड़ाई के योग्य थे। जो यहूदा के घराने में से गिने गये

२८ सो चौहत्तर सहस्र छः सौ थे। और यसाख़ार के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान उनकी पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से

२९ ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो यसाख़ार की गोष्ठी

३० में से गिने गये सो चौवन सहस्र चार सौ थे। और ज़बुलून के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने

के समान उनकी पीढ़ियों में की गिनती के समान बीस बरस से
३१ ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो ज़बुलून की गोष्ठी
३२ में से गिने गये सत्तावन सहस्र चार सो थे। यूसुफ़ के
संतान में से अफ़राईम के संतान में से अपने घराने और अपने
पितरों के घराने के समान उनकी पीढ़ियों में और नामों की
गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई
३३ के योग्य थे। जो अफ़राईम की गोष्ठी में से गिने गये सो चालीस
३४ सहस्र पांच सो थे। और मनस्सा के संतान अपने घराने और
अपने पितरों के घराने के समान उनकी पीढ़ियों में और नामों
की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो
३५ लड़ाई के योग्य थे। जो मनस्सा की गोष्ठी में से गिने गये बत्तीस
३६ सहस्र दो सो थे। और बनियामीन के संतान अपने
घराने और अपने पितरों के घराने के समान उनकी पीढ़ियों में
और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों
३७ सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो बनियामीन की गोष्ठी में से
३८ गिने गये पैंतीस सहस्र चार सो थे। और दान के संतान
अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान
उनकी पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान बीस
३९ बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो दान
४० की गोष्ठी में से गिने गये बासठ सहस्र सात सो थे। और
अशीर के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने
के समान उनकी पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान
बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे।
४१ जो अशीर की गोष्ठी में से गिने गये एकतालीस सहस्र
४२ पांच सो थे। नफ़ताली के संतान अपने घराने और
अपने पितरों के घराने के समान उनकी पीढ़ियों में और
नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब
४३ जो लड़ाई के योग्य थे। जो नफ़ताली की गोष्ठी में से गिने गये

४४ तिरपन सहस्र चार सौ थे। सो सब जो गिने गये थे जिन्हें मूसा और हारून ने गिना ये हैं और इसराईल के संतानों के प्रधान हर एक अपने अपने पितरों के घरानों में प्रधान
४५ था बारह थे। सो वे सब जो इसराईल के संतानों में से अपने पितरों के घरानों में से बीस बरस से लेके ऊपर लों गिने गये
४६ सब जो इसराईल में लड़ाई के योग्य थे। अर्थात सब जो
४७ गिने गये थे सो छः लाख तीन सहस्र पांच सौ थे। परंतु लावी अपने पितरों की गोष्ठी के समान उन्हों में गिने नहीं
४८।४९ गये। क्योंकि परमेश्वर मूसा से कहके बोला। केवल लावी की गोष्ठी को मत गिन और उन्हें इसराईल के संतानों की गिनती
५० में मत मिला। परंतु लावियों को साक्षी के तंबू और उसकी समस्त वस्तु पर ठहरा वे तंबू को और उसके पात्रों को उठाया करें और उनकी सेवा करें और तंबू के आस पास छावनी करें।
५१ और जब तंबू आगे बढ़े तब लावी उसे गिरावें और जब तंबू को खड़ा करना हो तब लावी उसे खड़ा करें और जो परदेशी
५२ उसके पास आवे सो प्राण से मारा जाय। और इसराईल के संतानों में हर एक अपनी अपनी छावनी में हर एक मनुष्य अपनी समस्त सेना में अपनेही झंडे के पास अपना अपना तंबू
५३ खड़ा करे। परंतु लावी साक्षी के तंबू के आस पास डेरा करें जिसतें इसराईल के संतानों की मंडली पर कोप नपड़े और
५४ लावी साक्षी के तंबू की रखवाली करें। सो जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी इसराईल के संतानों ने उन सभों के समान किया।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला।
२ कि इसराईल के संतानों में से हर एक जन अपना झंडा और अपने पितरों के घराने की ध्वजा के संग मंडली के तंबू

३ के आस पास दूर डेरा करे। पूर्ब दिशा में सूर्य्य के उदय की ओर यहूदा की छावनी अपनी समस्त सेना में झंडा गाड़े और अमीनादाब का बेटा नख़शून यहूदा के संतान
४ का प्रधान होवे। और उसकी सेना और जो उनमें गिने गये सो
५ चौहत्तर सहस्र छः सै। थे। और उनके पास यसाख़ार की गोष्ठी डेरा करे और सुआर का बेटा नासानाईल यसाख़ार
६ के संतान का प्रधान होवे। और उसकी सेना और वे जो
७ उनमें गिने गये सो चौवन सहस्र चार सै। थे। फिर ज़बुलून की गोष्ठी और हैलून का पुत्र अलीयाब ज़बुलून के संतान का
८ प्रधान होवे। और उसकी सेना और सब जो उनमें गिनेगये
९ सो सत्तावन सहस्र चार सै। थे। सो सब जो यहूदा की छावनी में गिने गये उनकी समस्त सेनों में एक लाख छियासी सहस्र
१० चार सै। थे ये पहिले बढ़े। और दक्खिन दिशा की ओर राऊबीन की छावनी के झंडे उनकी सेना के समान होवे और शदियूर का पुत्र अलीसूर राऊबीन के संतान का प्राधान होवे।
११ और उसकी सेना और जो उनमें गिने गये सो छियालीस
१२ सहस्र पांच सै। थे। और उसके पास शमऊन के संतान की गोष्ठी डेरा करे और शूरीसदाई का बेटा शलूमील शमऊन
१३ के संतान का प्रधान होवे। और उसकी सेना और जो उनमें
१४ गिने गये सो उनसठ सहस्र तीन सै। थे। फिर जाद़ की गोष्ठी और रोईल का बेटा अलियासाफ़ जाद़ के संतान का प्रधान होवे।
१५ और उसकी सेना और सब जो उनमें गिनेगयेसो पैंतालीस
१६ सहस्र छः सै। पचास थे। सो सब जो राऊबीन की छावनी में गिने गये उनकी समस्त सेनाओं में एक लाख एकावन सहस्र
१७ चार सै। पचास थे वे दूसरी पांती में बढ़े। तब मंडली के तंबू लावी की छावनी के मध्य में आगे बढ़े जैसा वे डेरा करें वैसा आगे बढ़ें हर एक मनुष्य अपने स्थान में अपने अपने
१८ झंडे के पास। पश्चिम दिशा में अफ़राईम की छावनी उनकी

सेनों के समान झंडा खड़ा होवे और अमीहूद का बेटा इलीशामा
१९ अफ़राईम के बेटों का प्रधान होवे। और उसकी सेना और
२० जो उनमें गिने गये सो चालीस सहस्र पांच सौ थे। और उसके
पास मनस्सा की गोष्ठी और फ़दासूर का बेटा जमलिईल
२१ मनस्सा के संतान का प्रधान होवे। और उसकी सेना और जो
२२ उनमें गिने गये सो बत्तीस सहस्र दो सौ थे। फिर बिनियामीन
की गोष्ठी और गदयोनी का बेटा अबीदान बिनियामीन के
२३ संतान का प्रधान होवे। और उसकी सेना और जो उनमें
२४ गिने गये सो पैंतीस सहस्र चार सौ थे। सो सब जो अफ़राईम
की छावनी में गिने गये उनकी समस्त सेनाओं में एक
लाख आठ सहस्र एक सौ थे और वे तीसरी पांती में
२५ बढ़े। और दान की छावनी का झंडा उनकी सेना की उत्तर
दिशा में होवे और अमीशद्दई का बेटा अहीयाज़र दान के
२६ संतान का प्रधान होवे। और उसकी सेना और जो उनमें
२७ गिने गये सो बासठ सहस्र सात सौ थे। और उसके पास अशीर
की गोष्ठी डेरा करे और अक़रान का बेटा फ़गयाईल
२८ अशीर के संतान का प्रधान होवे। और उसकी सेना और
२९ जो उनमें गिने गये सो एकतालीस सहस्र पांच सौ थे। फिर
नफ़ताली की गोष्ठी और ऐनान का बेटा अहीराअ नफ़ताली
३० के संतान का प्रधान होवे। और उसकी सेना और जो उनमें
३१ गिने गये सो तिरपन सहस्र चार सौ थे। सो सब जो दान की
छावनी में गिने गये सो एक लाख सत्तावन सहस्र छः सौ थे वे
३२ अपने झंडों को लेके पीछे पीछे बढ़े। इसराईल के संतानों
में जो उनके पितरों के घरानों में गिने गये थे ये हैं वे सब जो
तंबू में उनकी छावनियों की समस्त सेनों में जो गिने गये थे
३३ छः लाख तीन सहस्र पांच सौ पचास थे। परंतु जैसा परमेश्वर
ने मूसा को आज्ञा किई थी लावी इसराईल के संतानों
३४ में न गिने गये। और इसराईल के संतानों ने उन सब

आज्ञाओं को जो परमेश्वर ने मूसा को कही थी वैसाही किया हर एक अपने कुल के समान और अपने पितरों के घरानों के समान उन्होंने अपने अपने झंडों के पास डेरा किया और वैसाही आगे बढ़े।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ जिस दिन परमेश्वर ने सीना पहाड़ पर मूसा से बातें
२ किईं हारून और मूसा की पीढ़ी ये हैं। और हारून के बेटों के ये नाम हैं नादाब पहिलौंठा और अबीहू और
३ इलीआज़र और ऐसामार। हारून याजक के बेटों के ये नाम हैं जिन्हें उसने याजक के पद की सेवा के लिये स्थापा
४ और अभिषेक किया। और नादाब और अबीहू जब उन्हों ने सीना के अरण्य में परमेश्वर के आगे उपरी आग चढ़ाये तब परमेश्वर के आगे निर्बंश मरगये और इलीआज़र और येसामार अपने पिता हारून के समीप
५ याजक के पद में सेवा करतेथे। फिर परमेश्वर
६ मूसा से कहके बोला। कि लावी की गोष्ठी को समीप ला और उन्हें हारून याजक के आगे कर जिसतें वे उसकी
७ सेवा करें। और वे उसकी आज्ञा की और मंडली के तंबू के आगे समस्त मंडली की रक्षा करें जिसतें तंबू की
८ सेवा करें। और वे मंडली के तंबू के सब पात्र और इसराईल के संतानों का पालन करें जिसतें तंबू की सेवा
९ करें। और तू लावियों को हारून और हारून के बेटों को सौंप दे इसराईल के संतानों में से ये उसे सर्बथा दियेजायें।
१० और हारून को और उसके बेटों को ठहरा कि याजक के पद में सिद्ध रहें और जो अन्यदेशी पास आवे सो
११ मारडालाजाय। फिर परमेश्वर मूसा से कहके
१२ बोला। देख मैंने इसराईल के संतानों में से उन सब

पहिलौंठों की संती जो इसराईल के संतानों में उत्पन्न होतेहैं लावियों को लेलिया सो इसलिये लावी मेरे लिये
१३ होंगे। इसलिये सारे लावी मेरे हैं कि जिस दिन मैंने मिसर की भूमि में सारे पहिलौंठे मारे मैंने इसराईल के संतानों के सब पहिलौंठे क्या मनुष्य के क्या पशु के अपने लिये पवित्र किये वे मेरे होंगे क्योंकि मैं परमेश्वर
१४ हों। फिर परमेश्वर सीना के अरण्य में मूसा से
१५ कहके बोला। कि लावी के संतानों को उनके पितरों के घराने और उनके कुल में गिन हर एक पुरुष एक मास से
१६ लेके ऊपर लों गिन। सो परमेश्वर के बचन के समान
१७ जैसा उसने आज्ञा किई थी मूसा ने उन्हें गिना। सो लावी के पुत्रों के नाम ये हैं जीरशून और क़ुहास और मरारी।
१८ जीरशून के बेटों के नाम उनके कुल में ये हैं लबनी और
१९ शमई। और क़ुहास के बेटे अपने घराने में अमराम और
२० यसहार और हबरून और अज़ाईल हैं। और मरारी अपने घराने में महली और मूसी हैं सो लावी के कुल
२१ उनके पितरों के घरानों के समान ये हैं। जीरशून से लबनी का घराना और शमई का घराना ये जीरशूनियों
२२ के घराने हैं। जैसा सारे पुरुषों के गिनने के समान जो उनसे गिनेगये एक मास से लेके ऊपर लों सात सहस्र
२३ पांच सौ थे। जीरशूनियों के घराने तंबू के पीछे पश्चिम
२४ दिशा में अपना डेरा खड़ा करें। और लायल का बेटा अलियासाफ जीरशूनियों के पितरों के घराने का प्रधान होवे।
२५ और मंडली के तंबू में जीरशून के बेटों की रखवाली में तंबू और उसके ओझल और मंडली के तंबू के द्वार के
२६ ओझल। और आंगन के ओझल और उसके द्वार के ओझल जो तंबू की और यज्ञबेदी की चारोंओर है और
२७ उसकी रस्सी और उसकी सब सेवा उनकी होगी। और

क़ुहास से अमरामियों का घराना और इज़हारियों का घराना और हीबरूनियों का घराना और अज़ईलियों का
२८ घराना ये सब क़ुहासियों के घराने हैं। उनके सारे पुरुष अपनी गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर लों सब आठ सहस्र छः सौ थे पवित्र स्थान की रखवाली करतेथे।
२९ क़ुहास के बेटों के घराने तंबू के दक्खिन दिशा में डेरा
३० खड़ा करें। और अज़ईल का बेटा अलीसाफान क़ुहास के
३१ घरानों का प्रधान हो। और उनकी रखवाली मंजूषा और मंच और दीअट और बेदी और पवित्र स्थान के पात्र जिन से सेवा करतेहैं ओभल और उनकी समस्त सेवा
३२ उनके बश में हो। और हारून याजक का बेटा अलआज़ार लावी के प्रधानों का प्रधान जो पवित्र स्थान की रखवाली
३३ करे। मरारी से महलियों का घराना और मोशियों
३४ का घराना ये मरारी के घराने हैं। उनके पुरुषों की जो गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर लों सब जो
३५ गिनेगयेथे छः सहस्र दो सौ थे। और अबीहाईल का पुत्र सूरीईल मरारियों के घराने का प्रधान हो और ये तंबू की
३६ उत्तर दिशा में डेरा खड़ा करें। और तंबू का पाट और उसके अड़ंगे और उसके खंभे और उसकी चुरगहनी और सब जो उसकी सेवा में लगते हैं मरारी के बेटों की रखवाली
३७ में होवे। और आंगन की चारों ओर के खंभे और उनकी
३८ चुरगहनी और उनके खूंटे और उनकी डोरियां। परंतु वे जो तंबू की पूर्ब ओर मंडली के तंबू के आगे पूर्ब दिशा को मूसा और हारून और उसके बेटे जो पवित्र स्थान की और इसराईल के संतानों की रखवाली करें और जो
३९ परदेशी पास आवे सो मारडालाजाय। सो लावियों में से सब जो गिनेगये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा से उनके घराने में गिना सब पुरुष एक मास

४० से लेके ऊपर लों बाईस सहस्र थे। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराईल के संतानों के सारे पहिलौंठे पुत्रों को एक मास से लेके ऊपर लों गिने और उनके
४१ नामों की गिनती ले। और मेरे लिये जो परमेश्वर हों लावियों को इसराईल के संतानों के सब पहिलौंठे बेटों की संती और लावियों के पशुओं को इसराईल के संतानों के सब
४२ पशुओं की संती जो पहिले उत्पन्न हुए हों ले। और जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने इसराईल के संतानों
४३ के समस्त पहिलौंठों को गिना। सो सारे पहिलौंठे पुरुष वर्ग उनके नामों की गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर जो जो गिनेगयेहैं बाईस सहस्र दो सौ तिहत्तर थे।
४४।४५ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराईल के संतानों के सारे पहिलौंठों की संती लावियों को और उनके पशुओं की संती लावियों के पशुओं को ले और लावी मेरे
४६ होंगे मैं परमेश्वर हों। और दो सौ बहत्तर इसराईल के संतानों के पहिलौंठे जो छुड़ायाजाना है लावियों से अधिक
४७ हैं। पवित्र स्थान के शैकल के समान मनुष्य पीछे पांच शैकल ले
४८ एक शैकल बीस गिरह हैं। और तू उसका मोल जो गिनती से ऊपर छुड़ायाजाना है हारून और उसके बेटों
४९ को दे। सो मूसा ने उनके छुड़ावने का रोकड़ लिया जो
५० लावियों से छुड़ायेजाने से ऊरा था। इसराईल के संतानों के पहिलौंठे में से एक सहस्र तीन सौ पैंसठ पवित्र स्थान के
५१ शैकल से रोकड़ लिया। और मूसा ने उनके रोकड़ को जो छुड़ायेगयेथे परमेश्वर की आज्ञा से हारून को और उसके बेटों को दिया।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला।
२ क़ुहास के बेटों को लावी के बेटों में उनके पितरों के घराने की
३ और उनकी कुल को गिनती ले। तीस बरस से लेके पचास
बरस लों सब जो सेना में पैठतेहैं कि मंडली के तंबू में
४ सेवा करें। मंडली के तंबू में और उन बस्तुन में जो अति
५ पवित्र हैं क़ुहास के बेटों की सेवा यह है। और जब छावनी
आगे बढ़े तब हारून और उसके बेटे आवें और ढांपने के
६ घटाटोप उतारें और उससे साक्षी की मंजूषा को ढांपें। और
उसपर नीली खालों का घटा टोप डालें और उसके ऊपर
नीला कपड़ा बिछावें और उसका बहंगर उसमें डालें।
७ भेंट की रोटी के मंच पर नीला कपड़ा बिछा और उस पर
पात्र और करछुल और कटोरा और ढांपने के लिये
८ ढपने उस पर रक्खें और नित्य की रोटी उसपर होवे। और
उनपर लाल कपड़ा बिछावें और उसे नीली खालों से ढांपें
९ और उसमें बहंगर डालें। फिर नीला कपड़ा लेके प्रकाश के
दीअट और उसके दीपकों को और उसके फूल कतरनियों
और उसके पात्र और उसके सब तेल के पात्रों पर जिस्से
१० सेवा करतेहैं ढांपें। और उसे और उसके सब पात्रों को
नीली खालों के आड़ में रक्खें और उसे अड़ंगा पर रक्खें।
११ और सोनैाली यज्ञबेदी पर नीला बस्त्र बिछावें और उसे
नीली खालों के ढपने से ढांपें और उसमें बहंगर डालें।
१२ और समस्त पात्रों को जो पवित्र स्थान की सेवामें आतेहैं
लेके नीले कपड़ों में लपेटें और उन्हें नीली खालों से ढांपें
१३ और बहंगर पर रक्खें। और बेदी में से राख निकालफेंकें
१४ और लाल कपड़ा उस पर बिछावें। और उसके सारे पात्र
जिस्से वे उसकी सेवा करतेहैं अर्थात् धूपावरी और मांस के
कांटे और फावड़ियां और कटोरे और बेदी के समस्त पात्र

उसपर रक्खें और उन्हें नीली खालों से ढांपें और उसमें
१५ बहंगर डालें। और जब हारून और उसके बेटे पवित्र
स्थान को और उसकी सामग्री को ढ़ापचुकें तब छावनी के
आगे बढ़ने के समय में कुहास के संतान उसके उठाने
के लिये आवें परंतु वे पवित्र वस्तु को नछूवें नहो कि
मरजावें मंडली के तंबू की वस्तें कुहास के संतानों को उठाने
१६ पड़ेगी। और दीपकों के लिये तेल और सुगंध धूप
और समस्त तंबू और सब जो उसमें है और उसके पात्र
१७ हारून याजक का बेटा इलिआज़ार देखाकरे। फिर
१८ परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला। कि लावियों
में से कुहास के घराने की गोष्ठी को काट नडालियो।
१९ परंतु उनसे ऐसा करो कि वे जीवें और अति पवित्र वस्तुन के
समीप आने से नमरें हारून और उसके बेटे भीतर
जायें और उनमें से हर एक को उसकी सेवा पर और बोझ
२० उठाने पर ठहरावें। परंतु जब कि पवित्र वस्तें ढांपीजावें
२१ तो वे उन्हें देखने नआवें जिसतें मर नजावें। फिर
२२ परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि जीरसून के बेटों को
भी उनके पितरों के समस्त घराने उनके कुल कुलके समान
२३ गिनतो करो। तीस बरस से लेके पचास बरस लों सब
जो सेवा के लिये भीतर जाते हैं कि मंडली के तंबू की सेवा
२४ करें उनकी गिनती करो। जीरसूनियों के कुल की सेवा
२५ और बोझ उठाने के लिये यही कार्य है। और वे तंबू के
ओझल और उसका घटाटोप और नीली खालों का घटाटोप
जो उसपर है और मंडली के तंबू के द्वार का ओट उठावें।
२६ और आंगन के ओट और आंगन के द्वार का ओट जो
तंबू और बेदी के चारों ओर हैं और उनकी रस्सियां और
सब पात्र जो उनकी सेवा के कारण हैं और सब काम जो
२७ उनके कारण अवश्य हैं वे करें। जीरसून के बेटों को सारी

सेवा बोझ उठाने में और सब काम करने में हारून और उसके बेटों की आज्ञा के समान होवें और तुम उनमें से
२८ हर एक का बोझ ठहरा दीजियो। जीरशून के संतान के कुल की सेवा मंडली के तंबू में यह है और वे हारून
२९ याजक के बेटे ऐसामार की आज्ञा में हैं। मरारी के बेटे उनके पितरों के घरानों और उनके कुल के समान
३० उनकी गिनती करो। तीस बरस से लेके पचास बरस लों उन सब को जो सेवा में पऊंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू
३१ की सेवा करें गिन। और उस सेना के समान जो मंडली के तंबू में उनके लिये है उनके बोझ ये ठहरें तंबू के पाट और उसके अड़ंगे और उसके खंभे और उसकी
३२ चुरगहनी। और आंगन के खंभे जो चारों ओर हैं और उनकी चुरगहनी और उनके खूंटे और उनकी रस्सियां और उनकी समस्त सामग्री सेवा समेत और उनकी
३३ सामग्री के बोझे का नाम लेले के गिन। सो मरारी के बेटे के कुल की सेवा जो मंडली के तंबू की समस्त सेवा के समान यह है वे हारून याजक के बेटे ऐसामार के अधीन
३४ रहें। सो मूसा और हारून और मंडली के प्रधानों ने क़ुहासियों के बेटों को उनके पितरों के घरानों के
३५ और उनके कुल के समान गिना। तीस बरस से लेके पचास बरस लों उन सब को जो सेवा के लिये पऊंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें एक एक करके गिना।
३६ सो वे जो अपने घराने के समान गिनेगये दो सहस्र सात
३७ सौ पचास थे। वे सब ये हैं जो क़ुहास के घरानों में से मंडली के तंबू की सेवा के लिये गिनेगये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा के समान जो मूसा की
३८ ओर से कही थी गिना। और जीरशून के बेटे जो अपने पितरों के घरानों के समस्त कुल के समान गिनेगये

३९ तीस बरस से लेके पचास बरस लों सब जो सेवा के लिये
४० पऊंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें। वे सब जो
उनके पितरों के घरानों और उनके समस्त कुल के समान
४१ गिनेगये दो सहस्र छः सौ तीस ऊए। वे सब ये हैं जो
जीरशून के बेटों के घरानों में से मंडली के तंबू की सेवा के
लिये गिनेगये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की
४२ आज्ञा से गिना। और मरारी के बेटे के पितरों के घराने
४३ और उनके समस्त कुल जो गिनेगयेथे। तीस बरस से
लेके पचास बरस लों हर एक जो सेवा के लिये पऊंचते हैं
४४ जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें। अर्थात् वे जो उनके
४५ कुल में गिनेगयेथे तीन सहस्र दो सौ थे। वे सब ये हैं जो
मरारी के बेटे के कुल में से जो गिनेगये जिन्हें मूसा और
हारून ने परमेश्वर की आज्ञा के समान जो मूसा की ओर से
४६ कही थी गिना। सब जो लावियों में से गिनेगयेथे जिन्हें
मूसा और हारून और इसराईल के प्रधानों ने उनके
पितरों के घराने और उनके कुल के समान गिना।
४७ तीस बरस से लेके पचास बरस लों गिना जो सेवा के लिये
पऊंचते हैं जिसमें मंडली के तंबू की सेवा करें और बोझ
४८ उठावें। अर्थात् वे जो उनमें गिनेगयेथे आठ सहस्र पांच
४९ सौ अस्सी थे। मूसा की ओर से परमेश्वर की आज्ञा के
समान वे गिनेगये हर एक अपनी सेवा और बोझ उठाने
के समान जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी
वैसाही वे मूसा से गिनेगये।

५ पांचवां पर्व्व।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराईल के
संतान को आज्ञा कर कि हर एक कोढ़ी और प्रमेही को
और जो मृतक से अशुद्ध है उनको छावनी से बाहर करदेवें।

३ क्या स्त्री और क्या पुरुष तुम उन्हें छावनी से बाहर करो जिसतें अपनी छावनियों को जिनके मध्य में मैं रहताहों वे
४ अशुद्ध नकरें। सो इसराईल के संतानों ने ऐसाही किया और उन्हें छावनी से बाहर करदिया जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसाही इसराईल के संतानों ने
५ किया। फिर परमेश्वर मूसा से कहिके बोला।
६ कि इसराईल के संतानों को कह कि जब कोई पुरुष अथवा स्त्री परमेश्वर से विरुद्ध होके ऐसा कोई पाप करे जो मनुष्य
७ करते हैं और दोषी होजाय। तब अपने पाप को जो उन्हों ने कियाहै मान लेवें और वुह मूल के संग पांचवां अंश मिलावे और अपने अपराध के पलटा के लिये उसे देवे जिसका
८ उसने अपराध कियाहै। परंतु यदि अपराध के पलटा देने को उस मनुष्य का कोई कुटुम्ब नहोवे तो वुह प्रायश्चित्त के
९ मेढ़े से अधिक जिस्से उसके लिये प्रायश्चित्त होवे। उस अपराध की संती परमेश्वर के लिये याजक को देवे और इसराईल के संतानों की सारी पवित्र बस्तुन की सब भेंटें जो
१० वे चढ़ातेहैं याजक की होंगी। और हर एक मनुष्य की पवित्र वस्तें उसकी होंगी जो कुछ याजक को देगा उसको
११ होगी। फिर परमेश्वर मूसा से कहिके बोला।
१२ कि इसराईल के संतानों को कहिके बोल कि यदि किसी की
१३ पत्नी अलग होके उसके विरुद्ध कोई अपराध करे। और कोई उस्से व्यभिचार करे और यह उसके पति से छिपा हो और ढंपा हो और वुह अशुद्ध होजाय और उस पर साक्षी न
१४ होवे और वुह पकड़ी नजाय। और उसके पति के मन में झल आवे और वुह अपनी पत्नी से झल रक्खे और वुह अशुद्ध हो अथवा यदि उसके पति के मन में झल आवे और वुह अपनी पत्नी से झल रक्खे और वुह स्त्री अशुद्ध नहोय।
१५ तब वुह मनुष्य अपनी पत्नी को याजक पास लावे और

वुह उसके लिये एक ईफ़ा का दसवां भाग जव का पिसान उसकी भेंट के लिये लावे और वुह उसपर तेल और लुबान नडाले क्योंकि वुह झल की भेंट पाप को चेत में लाने के
१६ लिये स्मरण की भेंट है। तब याजक उस स्त्री को पास बुलावे
१७ और परमेश्वर के आगे उसे खड़ा करे। और याजक मट्टी के एक पात्र में शुद्ध जल लेवे और तंबू के आंगन की धूल लेके
१८ उस पानी में मिलावे। फिर याजक उस स्त्री को परमेश्वर के आगे खड़ा करे और उसका सिर उघारे और स्मरण की भेंट जो झल की भेंट है उसके हाथों पर रक्खे और याजक उस कड़ुवे पानी को जो धिक्कार के लिये है अपने हाथ में
१९ लेवे। और उस स्त्री को किरिया देके कहे कि यदि किसी ने तुझसे कुकर्म्म नहीं किया और तू केवल अपने पति को छोड़ अशुद्ध मार्ग में नहीं गई तो तू इस कड़ुवे पानी के गुण से
२० जो धिक्कार के लिये है बची रहे। परंतु यदि तू अपने पति को छोड़ के भटक गई हो और अशुद्ध हुई हो और अपने
२१ पति को छोड़ किसी दूसरे से कुकर्म्म किया हो। और याजक उस स्त्री को स्राप की किरिया देवे और उसे कहे कि परमेश्वर तेरे लोगों के मध्य में तुझे स्राप देवे कि परमेश्वर तेरी जांघ
२२ को सड़ावे और तेरे पेट को फुलावे। और यह पानी जो स्राप के कारण होता है तेरी अंतड़ियों में जाके तेरा पेट फुलावे और तेरे जांघ को सड़ावे और वुह स्त्री कहे कि आमीन
२३ आमीन। फिर याजक उन धिक्कारों को एक पुस्तक में लिखे
२४ और कड़वे पानी से उसे मिटादे। और याजक वुह कड़ुवा पानी जो स्राप के कारण होताहै उस स्त्री को पिलावे तब वुह पानी जो स्राप के कारण होताहै उसमें कड़ुवा पैठेगा।
२५ फिर याजक उस स्त्री के हाथ से झल की भेंट लेके परमेश्वर
२६ के आगे उसे हिलावे और यज्ञ बेदी पर चढ़ावे। और उस भेंट के स्मरण के लिये एक मुट्ठी लेके याजक बेदी पर जलावे

२७ उसके पीछे वुह पानी उस स्त्री को पिलावे। और जब वुह पानी उसे पिलावेगा तब ऐसा होगा कि यदि वुह अशुद्ध होवे और वुह अपने पति के बिरुद्ध कुछ अपराध किया हो तो वुह पानी जो स्नापके कारण होताहै उसके शरीर में पडंचके कड़वा होजायगा और उसका पेट फूलेगा और उसकी जांघ सड़जायगी और वुह स्त्री अपने लोगों में धिक्कारित
२८ होगी। परंतु यदि वुह अशुद्ध नहो परंतु शुद्ध होवे तो वुह
२९ निर्दोष होगी और गर्भिणी होगी। उस स्त्री के कारण जो अपने पति को छोड़के भटकतीहै और अशुद्ध है झल के लिये
३० यह व्यवस्था है। अथवा जब पुरुष के मन में झल आवे और वुह अपनी पत्नी से संदेह रक्खे और स्त्री को परमेश्वर के आगे खड़ा करे और याजक उस पर ये सब व्यवस्था पूरी करे।
३१ तो पुरुष पाप से पवित्र होगा और वुह स्त्री अपना पाप भोगेगी।

६ छठवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहिके बोला। कि इसराईल के संतानों को कहिके बोल कि जब कोई पुरुष अथवा स्त्री आप को अलग करने के लिये नसरानी की मनौती ईश्वर के लिये
३ माने। तो वुह दाखरस से और तीक्ष्ण मदिरा से अलग रहे दाखरस का सिरका अथवा तीक्ष्ण मदिरा का सिरका नपीये और अंगूर का कोई रस नपीये और नभींगा अथवा सूखा
४ अंगूर खावे। और अपने अलग होने के सब दिनों में कोई वस्तु जो दाखों से उत्पन्न होतीहै बीज से लेके उसके छिलके
५ लों नखावे। और अपने अलग होने की मनौती के सब दिनों में सिर पर छुरा नफेराजाय जबलों उसके अलग कियेगये दिन बीत नजावें वुह ईश्वर के लिये पवित्र है अपने
६ सिर के बालों को बढ़ने देवे। वुह परमेश्वर के लिये अपने

७ सारे अलग होने के दिनों में लोथ के पास नजावे। वुह अपने माता पिता अथवा अपने भाई बहिन के लिये जब वे मरजावें आप को अशुद्ध नकरे क्योंकि उसके ईश्वर की
८ स्थापना उसके सिर परहै। वुह अपने अलग होने के सब
९ दिनों में परमेश्वर के लिये पवित्र है। और यदि कोई मनुष्य आकस्मात उसके पास मरजाय और उसके सिरके स्थापित के अपवित्र करे तो वुह अपने पवित्र होने के दिन
१० अपना सिर मुंड़ावे सातवें दिन सिर मुंड़ावे। और आठवें दिन दो पंडुकी अथवा कपोत के दो छैांने मंडली के तंबू के
११ द्वार पर याजक पास लावे। और याजक एक को पाप की भेंट के कारण और दूसरे के होम की भेंट के लिये चढ़ावे और उस अपराध का जो मृतक के कारण से ऊआ प्रायश्चित्त देवे और अपने सिर के उसी दिन पवित्र
१२ करे। फिर अपने अलग होने के दिनों के परमेश्वर के लिये स्थापित करे और पहिले बरस का एक मेम्ना पाप की भेंट के लिये लावे परंतु उसके आगे के दिन गिने नजायेंगे
१३ क्योंकि उसकी भेंट अपवित्र होगई। नसरानी होने के लिये यह व्यवस्था है जब उसके अलग होने के दिन पूरे हों तब वुह मंडली के तंबू के द्वार पर लायाजावे।
१४ और वुह परमेश्वर के लिये अपनी भेंट पहिले बरस का एक निर्दोष मेम्ना होम की भेंट के लिये और पाप की भेंट के लिये पहिले बरस की एक भेड़ी और कुशल की भेंट
१५ के लिये एक निर्दोष मेढ़ा। और एक टोकरी अख़मीरी रोटियां और चोखे पिसान की पूरी और अख़मीरी लिट्टी तेल में चुपड़ींऊईं उनके खाने की और उनके पीने की भेंट।
१६ और याजक उन्हें परमेश्वर के आगे लावे उसके पाप की
१७ भेंट को और उसके होम की भेंट को चढ़ावे। और परमेश्वर के कारण एक टोकरा अख़मीरी रोटी के साथ उस मेढ़े को

चढ़ावे और याजक उसके खाने की और पीने की भेंट भी
१८ चढ़ावे। फिर वुह नसरानी मंडली के तंबू के द्वार पर अपने अलग होने के लिये सिर मुंड़ावे और उसके अलग होने के सिर के बालों को लेवे और उस आग में जो कुशल
१९ की भेंट के बलिदान के तले है डालदेवे। जब अलग होने लिये मुड़ाया जावे तब याजक उस मेंढ़े का सिझायाहुआ कांधा और टोकरी में से एक अख़मीरी फुलका और एक अख़मीरी लिट्टी लेके उस नसरानी
२० के हाथों पर रक्खे। फिर याजक उन्हें हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे हिलावे यह हिलाने की छाती और उठाने का कांधा याजक के लिये पवित्र है उसके पीछे
२१ नसरानी दाखरस पी सके। नसरानी की मनौती की व्यवस्था परमेश्वर के लिये उसके अलग होने की भेंट जो उसके हाथ पहुंचने से अधिक उसकी मनौती के समान अपने अलग
२२ होने की व्यवस्था के पीछे अवश्य यों करे। फिर परमेश्वर
२३ मूसा से कहिके बोला। कि हारून को और उसके बेटों को कह कि इसराईल के संतानों को यों आशीष देके उन्हें
२४ कहियो। कि परमेश्वर तुझे आशीष देवे और तेरी रक्षा
२५ करे। परमेश्वर अपना रूप तुझ पर प्रकाश करे और तुझ
२६ पर अनुग्रह करे। परमेश्वर अपना रूप तुझ पर प्रकाश
२७ करे और तुझे कुशल देवे। और वे मेरा नाम इसराईल के संतानों पर रक्खें और मैं उन्हें आशीष देऊंगा।

७ सातवां पर्ब्ब।

१ और ऐसा हुआ कि जिस दिन मूसा तंबू खड़ा करचुका और उसे और उसकी समस्त सामग्री को अभिषेक करके पवित्र किया बेदी को उसके समस्त पात्र सहित अभिषेक करके
२ पवित्र किया। तब इसराईल के अध्यक्ष जो अपने पितरों

के घरानों में प्रधान और गोष्ठियों के अध्यक्ष और उनमें
३ जो गिनेगये उनके ऊपर थे भेंट लाये। और ढ़ांपीऊई छः
गाड़ियां और बारह बधिया बैल अपनी भेंट परमेश्वर के
आगे लाये दो दो अध्यक्षों के लिये एक एक गाड़ी और हर
एक की ओर से एक एक बैल सो वे उन्हें तंबू के आगे लाये।
४।५ तब परमेश्वर ने मूसा से बचन कहा। कि यह उनसे ले
जिसतें वे मंडली के तंबू की सेवा में आवें और उन्हें लावियों को
६ दे हर एक को उसकी सेवाके समान। सो मूसा ने गाड़ियां
७ और बैल लेके लावियों को दिये। दो गाड़ियां और चार
बैल उसने जोरशून के बेटों को उनकी सेवा के समान दिये।
८ और चार गाड़ियां और आठ बैल मरारी के संतान को
जो हारून याजक के पुत्र ऐसामार के अधीन थे उनकी सेवा के
९ समान दिये। परंतु उसने कहास के बेटों को कुछ नदिया
इसलिये कि पवित्र स्थान की सेवा जो उनके लिये ठहराईगई
१० यह थी कि वे अपने कांधों पर उठाके लेचलें। और
जिस दिन कि बेदी अभिषेक किई गई अध्यक्षों ने उसके
स्थापित के लिये चढ़ाई अर्थात् अध्यक्षों ने बेदी के आगे भेंट
११ चढ़ाई। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हर एक अध्यक्ष
बेदी को स्थापित करने के लिये एक एक दिन अपनी अपनी
१२ भेंट चढ़ावे। सो पहिले दिन यहूदा की गोष्ठी में से
१३ अमीनादाब के पुत्र नहशून ने अपनी भेंट चढ़ाई। और उसकी
भेंटें ये थीं एक चांदी की थाल जिसकी तौल पौने तीन
सेर थी और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का
पवित्र स्थान के तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के
१४ लिये तेल से मिलाऊआ चोखे पिसान से भरेऊए। एक
१५ करछुल एक सौ सदा पछत्तर भर धूप से भरी ऊई। होम
की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक
१६।१७ मेम्ना। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना। और

कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने ये अमीनादाब के बेटे
१८ नहशून की भेंट। दूसरे दिन सूआर के बेटे नासानाईल ने
१९ जो इसाख़ार का अध्यक्ष था अपनी भेंट चढ़ाई। और उसकी भेंट यह थी पौने तीन सेर भर चांदी की एक थाल और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिलेहुए चोखे
२० पिसान से भरेहुए। सोने की एक करछुल एक सौ सवा
२१ पचत्तर भर धूप से भरी हुई। एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले
२२ बरस का एक मेम्ना होम की भेंट के लिये। पाप की भेंट के
२३ लिये बकरी का एक मेम्ना। और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच
२४ मेम्ने सूआर के बेटे नासानाईल की भेंट थी।　　तीसरे दिन हैलून के पुत्र अलियाब ने चढ़ाई जो ज़बुलून के बंश का
२५ अध्यक्ष था। उसकी भेंट यह थी पौने तीन सेर चांदी का एक थाल और एक सेर डेढ़ पाव का चांदी का कटोरा पवित्र स्थान की तौल से दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल
२६ से मिलेहुए चोखे पिसान से भरेहुए। सोने की एक
२७ करछुल एक सौ सवा पचत्तर भर धूप से भरीहुई। एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना होम की भेंट के
२८।२९ लिये। बकरी का एक मेम्ना पाप की भेंट के लिये। और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने हैलून के पुत्र इलियाब की
३० भेंट थी।　　चौथे दिन शदियूर के बेटे अलीसूर ने चढ़ाई
३१ जो राऊबीन के बंश का अध्यक्ष था। उसकी भेंट यह थी चांदी की एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिलेहुए चोखे पिसान

३२ से भरेऊए। सोने की एक करकुल एक सौ सवा पक्तर
३३ भर धूप से भरीऊई। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक
३४ मेढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना। पाप की भेंट के लिये बकरी
३५ का एक मेम्ना। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने
३६ शदियूर के बेटे अलीसूर की भेंट थी। और पांचवें दिन सूरीशदाई के बेटे सलूमियाईल ने जो शमऊन के वंश
३७ का अध्यक्ष था अपनी भेंट चढ़ाई। उसकी भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिलेऊए चोखे
३८ पिसान से भरेऊए। सोने की एक करकुल एक सौ सवा पक्तर
३९ भर की धूप से भरीऊई। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा
४० एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना। पाप की भेंट के लिये
४१ बकरी का एक मेम्ना। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच
४२ मेम्ने सूरीशदाई के बेटे सलूमियाईल की भेंट थी। छठवें दिन दवाईल के बेटे अलियासाफ़ ने चढ़ाई जो जाद़ के वंश
४३ का अध्यक्ष था। और उसकी भेंट चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिलेऊए चोखे पिसान से भरेऊए।
४४ सोने की एक करकुल एक सौ सवा पक्तर भर की धूप से
४५ भरीऊई। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा
४६ पहिले बरस का एक मेम्ना। पाप की भेंट के लिये बकरी का
४७ एक मेम्ना। और कुशल की भेंट के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने दवाईल के बेटे अलियासाफ़
४८ की भेंट थी। और सातवें दिन अमीहूद के बेटे

४९ अलीसामा ने जो अफ़राईम के बंश का अध्यक्ष था। उसकी भेंट यह थी कि चांदी का एक थाल पैाने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तैाल से ये दोनें के दोनें भोजन की भेंट के लिये तेल से
५० मिलेहुए चोखे पिसान से भरेहुए। सोने की एक करछुल
५१ एक सैा सवा पछत्तर भर की धूप से भरीहुई। होम की भेंट के
५२ लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्रा। पाप
५३ की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्रा। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अमीहूद के बेटे अलीसामा की भेंट थी।

५४ और आठवें दिन फ़दासूर के बेटे जमलियाईल ने जो मनस्सा
५५ के बंश का अध्यक्ष था। उसकी भेंट यह थी चांदी का एक थाल पैाने तीनसेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तैाल से ये दोनें के दोनें भोजन की भेंट के लिये तेल से मिलेहुए चोखे पिसान से भरेहुए।
५६ सोने की एक करछुल एक सैा सवा पछत्तर भर की धूप से भरी
५७ हुई। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले
५८ बरस का एक मेम्रा। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक
५९ मेम्रा। और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने फ़दासूर के बेटे
६० जमलियाईल की भेंट थी। और नैावें दिन गदयूनी के बेटे अबीज़ान ने जो बनियामीन के बंश का अध्यक्ष था।
६१ उसकी भेंट यह थी चांदी का एक थाल पैाने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा पवित्र स्थान की तैाल से ये दोनें के दोनें भोजन की भेंट के लिये तेल से मिलेहुए चोखे पिसान से
६२ भरेहुए। सोने की एक करछुल एक सैा सवा पछत्तर भर
६३ की धूप से भरीहुई। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक
६४ मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्रा। पाप की भेंट के लिये एक

६५ बकरी का मेम्ना। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने
६६ गदयूनी के बेटे अबीज़ान की भेंट थी। और दसवें दिन अमीशद्दाई के बेटे अहीअ़ाज़र ने जो दान के वंश का
६७ अध्यक्ष था। उसकी भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट
६८ के लिये तेल से मिलेहुए चोखे पिसान से भरेहुए। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पक्तर भर की धूप से भरीहुई।
६९ होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का
७० एक मेम्ना। पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना।
७१ और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अमीशद्दाई के बेटे
७२ अहीअ़ाज़र की भेंट थी। और ग्यारहवें दिन अख़रान
७३ के बेटे फ़गयाईल ने जो अशेर के वंश का अध्यक्ष था। उसकी भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिलेहुए
७४ चोखे पिसान से भरेहुए। सोने की एक करछुल एक सौ सवा
७५ पक्तर भर की धूप से भरीहुई। होम की भेंट के लिये एक
७६ बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना। पाप की भेंट
७७ के लिये एक बकरी का मेम्ना। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेंढ़ पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अख़रान के बेटे फ़ग़याईल की भेंट थी।

७८ और बारहवें दिन ऐनान के बेटे अहीरा ने जो नफ़ताली
७९ के संतान के वंश का अध्यक्ष था। उसकी भेंट यह थी चांदी का एक थाल पौने तीन सेर का और चांदी का एक कटोरा एक सेर डेढ़ पाव का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों

भोजन की भेंट के लिये तेल से मिलेहुए चोखे पिसान से
८० भरेहुए। सोने की एक करछुल एक सौ सवा पक्तर भर
८१ की धूप से भरीहुई। होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक
८२ मेंढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना। पाप की भेंट के लिये एक
८३ बकरी का मेम्ना। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये
दो बैल पांच मेंढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने
८४ ऐनान के बेटे अहीरा की भेंट थी। जिस दिन बेदी इसराईल के
अध्यक्षों से अभिषेक किईगई उसकी स्थापित यह चांदी के
बारह थाल और चांदी के बारह कटोरे और सोने की
८५ बारह करछुल थीं। चांदी का हर एक थाल तैाल में पैाने
तीन सेर का और हर एक कटोरा डेढ़ पाव सेरभर का सब
चांदी के पात्र पवित्र स्थान की तैाल से पैंतीस सेर के थे।
८६ सोने की बारह करछुल धूप से भरी हुई एक करछुल एक सौ
सवा पक्तर भर की पवित्र स्थान की तैाल से करछुलों का
८७ सब सोना एक सौ बीस शेकल था। होम की भेंट के लिये
बारह बैल बारह मेंढ़े पहिले बरस के बारह मेम्ने उनकी
भोजन की भेंट सहित और पाप की भेंट के लिये बकरी के
८८ बारह मेम्ने। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये
चैाबीस बैल साठ मेंढे साठ बकरियां पहिले बरस के साठ
मेम्ने बेदी के अभिषेक करने के पीछे उसके स्थापित के लिये
८९ यह था। और जब मूसा ने उस्से बात करने के लिये मंडली
के तंबू में प्रवेश किया तब उसने दया के आसन पर से जो
साक्षी की मंजूषा पर था दोनों करोबियों के मध्यसे किसी का
शब्द सुना जो उस्से कहता था।

८ आठवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर ने मूसा से बचन कहा। हारून से कह और
उसे बोल जब तू दीपकों को बारे तो सातो दीपक का

३ उंजियाला दीअट के भाड़ के सन्मुख होवे। सो हारून ने ऐसाही किया उसने दीअट के भाड़ के सन्मुख दीपकों को
४ बारा जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी। और दीअट को भाड़ की बनावट पीटेज़ए सोने से थी उसके खंभे से उसके फूल लों पीटेज़ए सोनेका था उसके समान जो परमेश्वर ने मूसा को दिखायाथा उसने वैसाही भाड़
५ बनाया। फिर परमेश्वर ने मूसा से बचन कहा।
६ कि लावियों को इसराईल के संतानों में से अलग कर और
७ उन्हें पवित्र कर। और उन्हें पवित्र करने के लिये तू उनसे मोल कीजियो की शुद्ध करने का जल उनपर छिड़क और वे अपने समस्त देह को मुड़ावें और अपने कपड़े धोवें और
८ आप को पावन करें। तब वे एक बछड़ा उसके मांस की भेंट के साथ तेल से मिलाऊआ चोखा पिसान लेवें और तू पाप
९ की भेंट के लिये एक बछड़ा लीजियो। और लावियों को मंडली के तंबू के आगे लाइयो और इसराईल के संतानों की
१० समस्त मंडली को एकट्ठा करियो। और लावियों को परमेश्वर के आगे लाना और इसराईल के संतान अपने हाथ लावियों
११ पर रक्खें। और हारून लावियों को इसराईल के संतानों की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे चढ़ावे जिसमें वे परमेश्वर की
१२ सेवा करें। और लावी अपने हाथ बैलों के सिरों पर रक्खें और तू एक को पाप की भेंट और दूसरे को होम की भेंट के लिये जिसतें लावियों के लिये प्रायश्चित्त होवे परमेश्वर के लिये
१३ चढ़ाइयो। फिर तू लावियों को हारून और उसके बेटों के आगे खड़ा करदीजियो और उन्हें परमेश्वर की भेंट के लिये
१४ चढ़ाइयो। और तू लावियों को इसराईल के संतानों में से
१५ अलग करियो और लावी मेरे होंगे। उसके पीछे लावी मंडली के तंबू में सेवा के निमित्त पऊंचें तू उन्हें पवित्र करियो और
१६ उन्हें भेंट के लिये चढ़ाइयो। क्योंकि वे सब के सब इसराईल के

संतानों में से मुझे दियेगये हर एक जो उत्पन्न होताहै इसराईल के संतानों के सब पहिलौंठों की संती उन्हें लेलियाहै। १७ क्योंकि इसराईल के संतानों के सारे पहिलौंठे क्या मनुष्य के क्या पशु के मेरे हैं जिस दिन मिसर के देश के हर एक पहिलौंठे को मारा मैंने उनको अपने लिये पवित्र किया। १८ और इसराईल के संतानों के सारे पहिलौंठों की संती मैंने १९ लावियों को लेलियाहै। और मैंने इसराईल के संतानों में से सब लावियों को हारून और उसके बेटों को दिया जिसतें मंडली के तंबू में इसराईल के संतानों की संती सेवा करें और इसराईल के संतानों के लिये प्रायश्चित्त देवें जिसतें इसराईल के संतानों पर जब वे पवित्र स्थान के पास आवें २० मरी नपड़े। सो जैसा कि परमेश्वर ने लावियों के बिषय में मूसा को आज्ञा किई थी मूसा और हारून और इसराईल के संतानों की सारी मंडली ने लावियों से वैसाही किया सो २१ इसराईल के संतानों ने उन से वैसाही किया। और लावी पवित्र कियेगये और उन्हों ने अपने कपड़े धोये और हारून ने उन्हें भेंट के लिये परमेश्वर के आगे चढ़ाया और हारून २२ ने उनके लिये प्रायश्चित्त दिया जिसतें उन्हें पवित्र करे। उसके पीछे लावी अपनी सेवा करने को हारून और उस के संतानों के आगे मंडली के तंबू में गये जैसा कि परमेश्वर ने लावियों के बिषय में मूसा को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसाही २३ उनसे किया। फिर परमेश्वर मूसा से कहिके बोला। २४ लावियों का ब्यवहार यह रहे कि वे पचीस बरस से लेकर २५ ऊपर लों मंडली के तंबू में जाके सेवा में रहें। और जब पचास बरस के हों तो सेवकाई से रहिजायें और फिर सेवा २६ न करें। परंतु मंडली के तंबू में अपने भाइयों के साथ रखवाली किया करें और सेवा न करें तू लावियों से रक्षा के बिषय में योंहीं कीजियो।

९ नौवां पर्ब्ब।

१ मिस्र के देश से निकलने के दूसरे बरस के पहिले मास में
२ परमेश्वर ने सीना के अरण्य में मूसा से कहा। कि इसराईल के
संतान उसके ठहरायेहुए समय में पार जाने का पर्ब्ब रक्खें।
३ इस मास के चौदहवीं तिथि की सांझ के ठहरायेहुए समय
में उसे करियो उसकी विधि और आचार के समान पर्ब्ब
४ रखियो। सो मूसा ने इसराईल के संतानों को कहा कि वे पार
५ जाने का पर्ब्ब रक्खें। और उन्हों ने पहिले मास की चौदहवीं
तिथि की सांझ को सीना के अरण्य में पार जाने का पर्ब्ब
रक्खा जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी इसराईल
६ के संतानों ने वैसाही किया। वहां कितने जन थे जो
किसी मनुष्य के लोथ के कारण से अपवित्र हुए थे वे उस दिन
पार जाने का पर्ब्ब न रख सके और वे मूसा और हारून के
७ समीप आये। और उन्हों ने उसे कहा कि हम मनुष्य के
लोथ के कारण से अपवित्र हैं किस लिये हम रोके गये कि
इसराईल के संतानों में ठहरायेहुए समय में परमेश्वर के
८ लिये भेंट लावें। मूसा ने उन्हें कहा कि ठहर जाओ और
मैं सुनोंगा कि परमेश्वर तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा करता है।
९।१० तब परमेश्वर मूसा से कहिके बोला। कि इसराईल के
संतानों से कहिके बोल कि यदि कोई तुम्में से अथवा तुम्हारे
वंश में से किसी लोथ के कारण से अशुद्ध होवे अथवा यात्रा में
दूर होवे तथापि वुह परमेश्वर के लिये पार जाने का पर्ब्ब
११ रक्खे। दूसरे मास की चौदहवीं तिथि की सांझ को वे
पर्ब्ब रक्खें और अख़मीरी रोटी कड़्वी तरकारी के साथ
१२ खावें। वे विहान लों उस में से कुछ न छोड़ें और न उसकी
कोई हड्डी तोड़ाजाय पारजाने की समस्त विधि के समान
१३ उसे करें। परंतु जो मनुष्य शुद्ध है और यात्रा में नहीं है
और यदि पार जाने का पर्ब्ब नहीं रक्खे वही प्राणी अपने

लोगों में से काटडाला जायगा क्योंकि वुह ठहराये ज़ए समय में परमेश्वर की भेंट न लाया वुह अपना पाप भोगेगा।
१४ और यदि कोई परदेशी तुम्में टिके और पार जाने का पर्ब्ब परमेश्वर के लिये रक्खा चाहे ते। वुह पार जाने के पर्ब्ब को उसकी रीति और बिधि के समान रक्खे तुम्हारे लिये को
१५ परदेशी और का देशी की एकही बिधि होगी। और जिस दिन तंबू खड़ा कियागया मेघने साक्षी के तंबू को ढांपलिया और सांझ से लेके बिहान लों तंबू पर आगसी दिखाई देतीथी।
१६ सो सदा ऐसाही था कि मेघ उसे ढांपताथा और रात को
१७ आगसी दिखाई देतीथी। और जब तंबू पर से मेघ उठाया जाताथा तब इसराईल के संतान कूच करतेथे और जहां मेघ आके ठहरताथा तहां इसराईल के संतान डेरा करतेथे।
१८ इसराईल के संतान परमेश्वर की आज्ञा से कूच करतेथे और परमेश्वर की आज्ञा से डेरा करतेथे जब लों तंबू पर मेघ
१९ रहताथा वे डेरे में चैन करतेथे। और जब बज़त दिन लों तंबू पर मेघ ठहरताथा इसराईल के संतानों ने परमेश्वर की
२० आज्ञा मानी और कूच न करतेथे। और ऐसेहो जब मेघ थोड़े दिन लों तंबू पर ठहरताथा वे परमेश्वर की आज्ञा के समान अपने डेरे में रहतेथे और परमेश्वर की आज्ञा से
२१ कूच करतेथे। और यों होताथा कि जब सांझ से बिहान लों मेघ ठहरताथा और बिहान को उठाया जाताथा तब वे कूच करतेथे चाहे दिन रहे चाहे रात जब मेघ उठाया
२२ जाताथा वे कूच करतेथे। अथवा दो दिन अथवा एक मास अथवा एक बरस मेघ तंबू पर रहताथा तब इसराईल के संतान अपने डेरों में रहतेथे और कूच न करतेथे परंतु जब वुह ऊपर उठाया जाताथा तब वे कूच
२३ करतेथे। परमेश्वर की आज्ञा से वे तंबू में चैन करतेथे और परमेश्वर की आज्ञा से कूच करतेथे परमेश्वर की आज्ञा जो

जिसके बिषय में परमेश्वर ने कहा है कि मैं तुम्हें देउंगा सो तू हमारे साथ आ हम तुझसे भलाई करेंगे क्योंकि
३० परमेश्वर ने इसराईल के विषय में अच्छा कहा है। उसने उसे कहा कि मैं न जाओंगा परंतु मैं अपने देश को और अपने
३१ कुटुम्बों में जाओंगा। तब उसने कहा कि हमें न छोड़िये क्योंकि आप जानते हैं कि अरण्य में हमें क्योंकर डेरा किया चाहिये
३२ सो आप हमारी आंखों की संती होंगे। और यों होगा कि यदि आप हमारे साथ चलें तो जो भलाई परमेश्वर हमसे
३३ करेगा सो हम आप से करेंगे। फिर उन्हों ने परमेश्वर के पहाड़ से तीन दिन की यात्रा किई और परमेश्वर की बाचा की मंजूषा उन तीन दिन के मार्ग से आगे गई जिसतें उनके
३४ लिये बिश्राम का स्थान ढूंढे। और जब वे छावनी से बाहर
३५ जाते थे तब परमेश्वर का मेघ दिन को ऊपर ठहरता था। और जब मंजूषा आगे बढ़ती थी तब यों होता था कि मूसा कहता था कि उठ हे परमेश्वर तेरे शत्रु छिन्न भिन्न होवें और जो तुझसे बैर रखता है सो तेरे आगे से भागे और जब वुह ठहरता था वुह कहता था कि हे परमेश्वर सहस्रों इसराईलियों में फिर आ।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ और जब लोग कुड़कुड़ाने लगे तो परमेश्वर उदास हुआ और सुना और उसका क्रोध भड़का और परमेश्वर की आग उनमें
२ फूट निकली और छावनी के अंत्य को भस्म किया। तब लोग मूसा के पास चिल्लाये और जब मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना
३ किई तब आग बुझ गई। इस लिये कि परमेश्वर की आग उनमें
४ भड़की उसने उस स्थान का नाम ज्वलन रक्खा। और मिलीजुली मंडली जो उनमें थी कुइच्छा करनेलगी और इसराईल के संतान भी बिलाप करके कहनेलगे कि कौन हमें

५ मांस का भोजन देगा। हमें वह मछली की सुधि आती है जो हम सेंतसे मिसर में खातेथे और खीरे और ख़रबूज़ा
६ और गंड़ना और पियाज़ और लहसुन। परंतु अब तो हमारा प्राण सूखगया यहां तो हम मन्न को छोड़ कुछ भी
७ नहीं देखते। और मन्न धनिये की नाईं और उसका रंग
८ मोती कासा था। लोग इधर उधर जाके उसे एकट्ठा करतेथे और चक्की में पीसतेथे अथवा उखली में कूटतेथे और फुलका बनाके तवे पर पकातेथे उसका स्वाद टटके तेल की नाईं था।
९ और रात को जब छावनी पर ओस पड़तीथी तब मन्न उस
१० पर पड़ताथा। तब मूसा ने सुना कि लोगों के हर एक घराने का हरएक मनुष्य अपने अपने तंबू के द्वार पर बिलाप कररहा है तो परमेश्वर का क्रोध अत्यंत भड़का और मूसा
११ भी उदास हुआ। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि तू अपने दासों को क्यों दुःख देरहा है और तेरी दृष्टि में मैंने क्यों नहीं अनुग्रह पाया कि तूने इन सब लोगों का बोझ मुझ पर
१२ डाला है। क्या मैंने इन सारे लोगों को गर्भ में रक्खा क्या मैंने उन्हें जना है कि तू मुझे कहता है कि उन्हें उस देश में जिसका तूने उनके पितरों से किरिया खाई है अपनी गोद में ले जिस रीति से पिता दूध पीवक बालक को गोद में लेता है।
१३ मैं कहां से मांस लाओं कि उन सब लोगों को देओं वे मुझे
१४ रो रो के कहते हैं कि हमें खाने को मांस दे। मैं एकेला इन सब लोगों का भार उठा नहीं सक्ता इस कारण कि मेरे लिये बहुत
१५ बोझ है। यदि तू मुझ्से योंहीं करता है तो मुझे मारके अलग कर और यदि मैं तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाये हों तो मैं
१६ अपनी बिपत्ति न देखों। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराईल के प्राचीनों में से सत्तर पुरुष जिन्हें तू प्राचीन और प्रधान जानता है मेरे लिये बटोर और उन्हें मंडली के
१७ तंबू पास ला वे तेरे संग वहां खड़े रहें। मैं उतरोंगा और

तेरे साथ बातें करोंगा और मैं उस आत्मा में से जो तुझ पर है कुछ लेकर उन पर डालोंगा कि तेरे साथ लोगों
१८ का बोझ उठावें जिस्तें तू अकेला उसे न उठावे। और लोगों से कह कि कल आप को पवित्र करो और तुम मांस खाओगे क्योंकि रोरोके तुम्हारा यह कहना परमेश्वर के कानों में पज्ञंचा कि कौन हमें मांस खाने को देगा क्योंकि हम तो मिसरही में भले थे सो परमेश्वर तुम्हें मांस देगा और तुम
१९ खाओगे। और तुम एकही दिन न खाओगे न दो दिन न
२० पांच दिन न दस दिन न बीस दिन। परंतु एक मास भर खाओगे जबलों कि वुह तुम्हारे नथुनों से न निकले और तुम उस्से घिन न करो क्योंकि तुम ने ईश्वर की निंदा किई जो तुम्हों में है और उसके आगे यों कहिके रोये कि हम मिसर से क्यों
२१ बाहर आये। तब मूसा ने कहा कि ये लोग जिनमें मैं हों छः लाख पगयत हैं और तूने कहा है कि मैं उन्हें इतना मांस
२२ देओंगा कि वे एक मास भर खावें। क्या झुंड और लेहंडे उन्हें तृप्त करने के लिये बधन कियेजायेंगे अथवा समुद्र की सारी मछलियां उनके लिये एकट्ठी किईजायेंगी जिसतें वे तृप्त होवें।
२३ परमेश्वर ने मूसा से कहा कि क्या परमेश्वर का हाथ घट गया
२४ अब तू देखेगा कि मैं बचन का पूरा हों कि नहीं। तब मूसा ने बाहर जाके परमेश्वर की बातें लोगों से कहीं और लोगों के प्राचीनों में से सत्तर मनुष्य एकट्ठे किये और उन्हें
२५ तंबू के आस पास खड़े किये। तब परमेश्वर मेघ में उतरा और उस्से बोला और उसके आत्मा में से कुछ लेके उन सत्तर प्राचीनों को दिया और जब आत्मा उन पर ठहरा वे भविष्य
२६ कहने लगे और न थमे। परंतु दो मनुष्य छावनी में रहि गये थे जिन में से एक का नाम अलदाद और दूसरे का मीदाद सो आत्मा उन पर ठहरा और वे उनमें लिखेगये थे परंतु तंबू के पास बाहर नहीं गये और वे तंबूही में भविष्य कहने लगे।

२७ तब एक तरुण ने दौड़के मूसा को संदेश दिया कि अलदाद
२८ और मीदाद तंबू में भविष्य कहते हैं। सो मूसा के सेवक
नून के बेटे यशूअ ने जो उसके तरुणों में से था मूसा से कहा
२९ कि हे मेरे स्वामी मूसा उन्हें बरज दे। मूसा ने उसे कहा कि
क्या तू मेरे कारण डाह रखता है हाय कि परमेश्वर के सारे
लोग भविष्य बक्ता होते और परमेश्वर अपना आत्मा उन
३० सभों पर डालता। और मूसा और इसराईल के प्राचीन छावनी
३१ में गये। तब परमेश्वर की ओर से एक पवन निकला और
बटेर को समुद्र से लाया और छावनी पर ऐसा गिराया जैसा
कि एक दिन के मार्ग इधर उधर छावनी की चारों ओर और
३२ जैसा कि दो हाथ भूमि के ऊपर। और लोग उस दिन और
रात भर और उसके दूसरे दिन भी खड़े रहे और बटेर बटोरे
जिसने थोड़े से थोड़ा बटोरा उसने आधमन के अंटकल बटोर
३३ और उन्होंने अपने लिये तंबू के आस पास फैलाये। और जब
लों उनके दांत तले मांस था चाबने से पहिले परमेश्वर का
क्रोध लोगों पर भड़का और परमेश्वर ने उन लोगों को बड़ी
३४ मरी से मारा। और उसने उस स्थान का नाम कुइच्छा का
समाधि रक्खा क्योंकि उन्होंने उन लोगों को जिन्होंने कुइच्छा
किई थी वहीं गाड़ा फिर उन लोगों ने कुइच्छा समाधि से
हसीरूस को यात्रा किई सो वे हसीरूस में रहे।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ मूसा की उस हबशी स्त्री से ब्याह करने के कारण से मरियम
और हारून ने उस पर अपवाद किया क्योंकि उसने एक
२ हबशी स्त्री से ब्याह कियाथा। और बोले क्या परमेश्वर ने
केवल मूसाही से बातें किई हैं क्या उसने हमसे भी बातें न
३ किईं और परमेश्वर ने सुना। मूसा समस्त लोगों से जो
४ पृथिवी पर थे अधिक कोमल था। सो परमेश्वर ने तत्काल

मूसा और हारून और मरियम को कहा कि तुम तीनों
५ मंडली के तंबू पास आओ सो वे तीनों आये। तब परमेश्वर
मेघ के खंभे में उतरा और तंबू के द्वारपर खड़ा ज़ुआ और
६ हारून और मरियम को बुलाया वे दोनों आये। तब उसने
कहा कि मेरी बातें सुनो यदि तुम्में कोई भविष्य बक्ता होवे तो
मैं परमेश्वर आप को दर्शन में उस पर प्रगट करोंगा और
७ उस्से खप्न में बातें करोंगा। मेरा दास मूसा ऐसा नहीं वुह
८ मेरे सारे घर में विश्वासी है। मैं उस्से आम्ने साम्ने अर्थात्
प्रत्यक्ष बातें करोंगा और गुप्त बातों से नहीं और वुह परमेश्वर
के आकार को देखेगा सो तुम मेरे सेवक मूसा पर अपबाद
९ करतेज़ुए क्यों नडरे। और परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का
१० और चलागया। तब मेघ तंबू पर से जातारहा और क्या
देखता है कि मरियम पाले की नाईं कोढ़ी होगई और
हारून ने मरियम को ओर दृष्टि किई तो वुह कोढ़ी थी।
११ तब हारून ने मूसा से कहा कि हे मेरे स्वामी मैं तेरी बिनती
करता हों यह पाप हम पर मत लगा इस में हमने मूर्खता
१२ किई और पापी ज़ुए। वुह उस मृतक के समान न हो जिसका
आधा मांस अपनी माता के गर्भ से उत्पन्न होतेहीं गलजाय।
१३ तब मूसा ने परमेश्वर के आगे बिनती कर के कहा कि हे
ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हों अब उसे चंगा कर।
१४ परमेश्वर ने मूसा से कहा कि यदि उसका पिता उसके
मुंह पर थूकता तो क्या वुह सात दिन लों लज्जित नरहती
सो सात दिन लों उसे छावनी से बाहर बंद कर उसके पीछे
१५ उसे मिलाले। सो मरियम छावनी के बाहर सात दिन लों
बंद ज़ुई और जबलों मरियम बाहर रही लोगों ने यात्रा
१६ न किई। उसके पीछे लोगों ने हसीरूस से यात्रा किई और
फ़ारान के अरण्य में डेरा किया।

१।२ फिर परमेश्वर ने मूसा को बचन कहा। कि लोगों को भेज जिसतें वे किनान के देश का भेद लेवें जो मैं इसराईल के संतानों को देता हों एक एक मनुष्य उनके पितरों की हर एक
३ गोष्ठी में से भेज उन में से हर एक प्रधान होवे। और परमेश्वर की आज्ञा से मूसा ने फ़ारान के अरण्य से उन्हें
४ भेजा वे सारे मनुष्य इसराईल के संतानों के प्रधान थे। उनके ये नाम राऊबीन की गोष्ठी में से ज़कोर का बेटा शमूअ।
५।६ और शमऊन की गोष्ठी में से हूरी का बेटा शाफ़ात। और
७ यहूदा की गोष्ठी में से येफ़ना का बेटा कालिब। और
८ ऐसाख़ार की गोष्ठी में से यूसफ़ का बेटा येगाल। और
९ अफ़राईम की गोष्ठी में से नून का बेटा ओशीअ। और
१० बनियामीन की गोष्ठी में से राफ़ू का बेटा फ़लती। और
११ ज़बलून की गोष्ठी में से सूदी का बेटा जदयाईल। और यूसफ़ की गोष्ठी में से अर्थात् मनस्सा की गोष्ठी में से सूसी का बेटा
१२ जदी। दान की गोष्ठी में से जमली का बेटा अमियाईल।
१३ और अशीर की गोष्ठी में से मीकाईल का बेटा शिथूर।
१४ और नफ़ताली की गोष्ठी में से वफ़सी का बेटा नहभी।
१५।१६ जाद की गोष्ठी में से माख़ी का बेटा ज़ाज़ाईल। उनके नाम जिन्हें मूसा ने देश के भेद लेने के लिये भेजा ये हैं और मूसा ने नून के बेटे ओशीअ का नाम यहूशूअ रक्खा।
१७ और मूसा ने उन्हें भेजा कि किनान के देश का भेद लेवें और उन्हें कहा कि तुम दक्षिण दिशा से चढ़ जाओ और
१८ पहाड़ के ऊपर चले जाओ। और देश को और उन लोगों को जो उसमें बसते हैं देखियो कि वे कैसे प्रबल हैं अथवा
१९ निर्बल थोड़े हैं अथवा बहुत। और वुह देश जिसमें वे रहते हैं कैसा है भला अथवा बुरा और कैसे कैसे नगर जिनमें वे
२० बसते हैं तंबुओं में हैं अथवा गढ़ों में। और देश कैसा है फलवंत है अथवा निष्फल उस में पेड़ हैं अथवा नहीं तुम

हियाव करो और उस देश का कुछ फल लेआओ और यह
२१ समय दाख के पहिले फलों का था। सो वे चढ़गये
और भूमि के भेद को ज़ीन के अरण्य में से रहूब लों जो
२२ हामास के मार्ग में है लिया। और वे दक्षिण की ओर से चढ़े
और हबरून को आये जहां अनाक के वंश अहीमान और
शिशा ई और टलमाई थे और मिसर का सोअन हबरून से
२३ सात बरस आगे बना था। सो वे अश्कूल की नाली में आये
वहां से उन्हों ने दाख का एक गुच्छा काटा और उसे एक लट्ठ
पर रख कर दो मनुष्यों ने उठाया और कुछ अनार और
२४ गूलर भी लिये। उस स्थान का नाम उस गुच्छे के लिये जिसे
इसराईल के संतान वहां से काट लाये थे नाली अश्कूल
२५ रक्खा। सो वे चालीस दिन के पीछे देश का भेद लेके फिर
२६ आये। और फिरके मूसा और हारून और इसराईल
के संतानों की सारी मंडली के पास फ़ारान के अरण्य में क़ादस
में आये और उन्हें और सारी मंडली को आगे संदेश दिया
२७ और उस भूमि का फल उन्हें दिखलाया। और उस्से कहिके
बोला कि हम उस देश में जिधर तू ने हमें भेजा था गये उसमें
सचमुच दूध और मधु बहता है और यह वहां का फल है।
२८ तथापि उस देश के बासी बलवंत हैं और उनके नगरों की
भीतें अति ऊंची हैं और हम ने अनाक के संतान को भी वहां
२९ देखा। और उस भूमि में दक्षिण की ओर अमालकी बसते हैं
और हत्ती और यबूसी और अमूरी पहाड़ों पर रहते हैं
और समुद्र के तीर पर और अर्दन के तीर पर किनानी
३० रहते हैं। तब कालिब ने मूसा के आगे लोगों को धीमा करके
कहा कि आओ एकसाथ चढ़जायें और बश में करें क्योंकि
३१ उस पर प्रबल होने में हमें शक्ति है। परंतु उस के संगियों
ने कहा कि हम उन लोगों का सामना करने में दुर्बल हैं क्योंकि
३२ वे हमसे अधिक बलवंत हैं। और उन्हों ने इसराईल के

संतानों के पास उस भूमि का जिसका भेद लेने को गये थे बुरा संदेश लाये और बोले कि वुह भूमि जिसका भेद लेने हम गये थे एक भूमि है जो अपने बासियों को खाजाती है
३३ और सब लोग जिन्हें हमने देखाहै बड़े डील के हैं। और हमने वहां दानव अनाक़ के बेटे दानवों को देखा और हम अपनी और उनकी दृष्टि में फनगे की नाईं थे।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

१ तब सारी मंडली चिल्लाके रोई और लोग उस रात भर
२ रोयाकिये। फिर सारे इसराईल के संतान मूसा और हारून पर कुड़कुड़ाये और समस्त मंडली ने उन्हें कहा हाय कि हम मिसर में मरजाते और हाय कि हम इसी अरण्य
३ में नष्ट होते। हमें किस लिये परमेश्वर इस देश में लाया कि खड्ग से मारेजायें और हमारी स्त्रियां और हमारे बालक पकड़ेजावें क्या हमारे लिये अच्छा नहीं कि मिसर
४ को फिर जावें। तब उन्हों ने आपुस में कहा कि आओ एक
५ को अपना प्रधान बनावें और मिसर को फिर चलें। तब मूसा और हारून इसराईल के संतानों की सारी मंडली के सान्ने
६ औंधे मुंह गिरे। और नून के बेटे यशूअ और यफ़ना के बेटे कालिब ने जो उनमें थे जो देश के भेद लेने गये थे
७ अपने कपड़े फाड़े। और उन्हों ने इसराईल के संतानों की सारी मंडली से कहा कि जिस देश के भेद लेने को हम
८ आरंपार गये अति अच्छी भूमि है। यदि ईश्वर हम से प्रसन्न होवे तो हमें उस देश में लेजायगा और वुह भूमि जिस पर
९ दूध मधु बहरहा है हमें देगा। अब तुम केवल ईश्वर से छल नकरो और उस देश के लोगों से मत डरो क्योंकि वे तो हमारे लिये भोजन हैं उनके आड़ उनसे जाचुके हैं और
१० परमेश्वर हमारे साथ है उनका भय मत करो। परंतु सारी

मंडली ने कहा कि उन पर पत्थरवाह करो उस समय मंडली के तंबू में सारे इसराईल के संतानों के साम्ने परमेश्वर का
११ महिमा प्रगट ज़आ। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि ये लोग कबलों मुझे खिझावेंगे और उन आश्चर्य्यों के कारण जो मैंने
१२ उनमें दिखाये हैं वे कब लों मुझ पर विश्वास नकरेंगे। मैं उन्हें मारोंगा और उन्हें अधिकार रहित करोंगा और तुझ से मरी से
१३ बड़ी और बलवंत जाति बनाओंगा। मूसा ने परमेश्वर से कहा कि तब मिसर के लोग सुनेंगे क्योंकि तू अपनी सामर्थ्य
१४ से इन लोगों को उनके मध्य से निकाल लाया। और वे इस देश के बासी से कहेंगे क्योंकि उन्हों ने तो सुनाहै कि तू परमेश्वर इन लोगों के बीच है कि तू हे परमेश्वर आम्ने साम्ने देखाजाताहै और कि तेरा मेघ उन पर रहताहै और कि तू दिन को मेघ के खंभे में और रात को आग के खंभे में उनके
१५ आगे आगे चलताहै। सो यदि तू इन लोगों को एक मनुष्य के समान मारडाले तब जातिगण जिन्हों ने
१६ तेरी कीर्त्ति सुनी हैं कहेंगे। इस कारण कि परमेश्वर ने इन लोगों से उस देश में पक़ंचा नसका जिसके बिषय में उनसे किरिया खाई थी इस लिये उस ने उन्हें अरण्य में
१७ घात किया। सो मैं तेरी बिनती करताहों हे मेरे प्रभु
१८ अपनी सामर्थ्य को प्रगट कर जैसा तूने कहाहै। कि परमेश्वर बड़ा धीर और महा दयाल है पापों और अपराधों को क्षमा करताहै जो किसी भांति से नछोड़ेगा पितरों के पापों को उन के लड़कों से जो उनकी तीसरी और चौथी पीढ़ी है प्रतिफल
१९ देताहै। अब तू अपनी दया को अधिकाई से इनलोगों का पाप क्षमा कर जैसा तू मिसर से लेके यहां लों क्षमा करता
२० आयाहै। परमेश्वर ने कहा कि मैंने तेरे कहेके समान
२१ क्षमा किया। परंतु अपने जीवन सों समस्त पृथिवी परमेश्वर
२२ की महिमा से भर जायगी। क्योंकि उन सब लोगों ने जिन्हों ने

मेरा विभव और मेरा आश्चर्य जो मैंने मिसर में और उस अरण्य में प्रगट किया देखा अबलों मुझे दसबार परखा और
२३ मेरा शब्द नमाना। सो वे उस देश को जिसके कारण मैंने उनके पितरों से किरिया खाई थी नदेखेंगे और जितनों ने
२४ मुझे खिझाया उनमें से कोई उसे नदेखेगा। परं मेरा दास कालिब क्योंकि औरही आत्मा उसके साथ था और उसने मेरी बात पूरी मानीहै मैं उसे उस देश में जहां वुह गया था लेजाओंगा और वे जो उसके वंश से होंगे उसके अधिकारी
२५ बनेंगे। अब अमालकी और किनानी तराई में बासकरतेथे सो कल फिरो और लाल समुद्र के मार्ग से अरण्य में जाओ।
२६ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहिके बोला।
२७ कि मैं कबलों उस दुष्ट मंडली की कुड़कुड़ाहट सहों इसराईल के संतान जो मुझ पर कुड़कुड़ाते हैं मैंने उनका कुड़कुड़ाना
२८ सुना। उनसे कह कि परमेश्वर कहता है मुझे अपने जीवन सों जैसा तुमने मुझे सुनाके कहा है मैं तुमसे वैसाही करोंगा।
२९ तुम्हारी और उन सभों की लोथ तुम्हारी समस्त गिनतियों के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों जो मुझ पर कुड़कुड़ाये
३० इस अरण्य में गिरेंगी। यफ़ना के बेटे कालिब और नून के बेटे यशूअ को छोड़ तुम निःसंदेह उस देश में नपज्ञंचोगे जिसमें मैंने तुम्हें बसाने की किरिया खाई है कि तुम्हें वहां
३१ बसाओंगा। परंतु तुम्हारे बालकों को जिनके बिषय में तुमने कहा है कि वे लुटजायेंगे मैं उन्हें पज्ञंचाओंगा जिन्हें तुमने
३२ तुच्छ जाना वे उस देश को जानेंगे। पर तुम्हारी लोथें इसही
३३ बन में गिरेंगी। और तुम्हारे लड़के उस अरण्य में चालीस बरस लों भ्रमते फिरेंगे और अपने व्यभिचारों को उठायाकरेंगे
३४ जबलों कि तुम्हारी लोथें इस बन में क्षीण नहोवें। उन दिनों की गिनती के समान जिनमें तुम उस भूमि का भेद लेतेथे जो चालीस दिन हैं दिन पीछे एक बरस सो तुम चालीस बरस

लों अपने पाप को भोगा करोगे तब तुम मेरी बाचा भंगकरना
३५ जानोगे। मैं परमेश्वर ने कहा है और इस दुष्ट मंडली के
लिये जो मेरे विरुद्ध में एकट्ठी है निश्चय पूरा करोंगा इसी
३६ बन में नष्ट किई जायगी और यहीं मरेगी। और जिन
मनुष्यों को मूसा ने देश के भेद लेने को भेजा था जिन्हों ने उस
देश पर बात बना बना के कहा है और सारी मंडलियों को
३७ उसपर कुड़कुड़वाया है। हां वे मनुष्य जो उस देश का बुरा
३८ संदेश लाये हैं परमेश्वर के आगे मरी से मरेंगे। पर नून का
बेटा यशूअ और यफ़ना का बेटा कालिब उनमें से जो देश का
३९ भेद लेने गयेथे जीते रहे। सो मूसा ने इन बातों को इसराईल
के समस्त संतानों को सुनाया और लोग बहुत बिलाप करने
४० लगे। और बिहान को तड़के वे उठे और यह
कहतेहुए पहाड़ पर चढ़गये देख हम उस स्थान पर चढ़
जायेंगे जिसकी परमेश्वर ने बाचा दिई है क्योंकि हमने पाप
४१ किया है। मूसा ने कहा है सो अब तुम लोग क्यों परमेश्वर
४२ की आज्ञा को भंग करतेहो परंतु नफलेगा। ऊपर मत जाओ
क्योंकि परमेश्वर तुम्हों में नहीं जिसतें तुम अपने बैरियों के
४३ आगे मारे नपड़ो। क्योंकि अमालकी और किनानी तुम्हारे आगे
हैं और तुम तलवार से बिछजाओगे क्योंकि तुम परमेश्वर से
४४ फिरगये हो सो परमेश्वर तुम्हारे साथ नहोगा। परंतु वे
ढिठाई से पहाड़ पर चढ़गये तथापि परमेश्वर की बाचा की
मंजूषा और मूसा छावनी के बाहर नगये तब अमालकी और
किनानी जो उस पहाड़ पर रहते थे उतरे और उन्हें हरमा
लों मारते गये।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहिके बोला। कि इसराईल के संतानों
को कहिके बोल कि जब तुम अपने निवास के देश में पहुंचो

३ जो मैं तुम्हें देउंगा। और आग से परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाओ अथवा मनौती पूरी करने का बलिदान अथवा वांछित भेंट अथवा ठहरायेहुए पर्ब्ब की भेंट परमेश्वर के लिये
४ आनंद का सुगंध लेहंड़े अथवा झुंड से चढ़ाओ। तब वुह जो अपनी भेंट परमेश्वर के लिये चढ़ाता है भोजन की भेंट पिसान का दसवां भाग सवा सेर तेल से मिला हुआ भेंट का बलिदान
५ लावे। एक मेम्ना के कारण होम की भेंट अथवा बलिदान पीने की
६ भेंट के लिये सवा सेर द्राक्षारस सिद्ध कीजियो। अथवा मेढ़े के लिये मांस की भेंट को दो दसवां भाग पिसान पौने दोसेर
७ तेल से मिलाहुआ सिद्ध कीजियो। और पीने की भेंट के लिये पौने दोसेर द्राक्षारस परमेश्वर के सुगंध के लिये चढ़ाइयो।
८ और जब तू होम की भेंट के लिये अथवा मनौती पूरी करने को बलिदान के लिये अथवा कुशल की भेंट परमेश्वर के लिये
९ बैल सिद्ध करो। तब वुह बैल के साथ भोजन की भेंट तीन दसवां
१० भाग पिसान अढ़ाई सेर तेल से मिला हुआ लावे। और पीने की भेंट के लिये द्राक्षारस अढ़ाई सेर आग से परमेश्वर के
११ आनंद की सुगंध के लिये लाइयो। एक एक बैल अथवा एक एक मेंढ़ा अथवा एक एक मेम्ना अथवा एक एक बकरी का मेम्ना
१२ योंही कियाजावे। गिनती के समान सिद्ध कीजियो हरएक
१३ उनकी गिनती के समान ऐसाही कीजियो। सब जिनका जन्म देश में हुआ आग से परमेश्वर के आनंद के सुगंध के लिये
१४ भेंट चढ़ावें तो उसी रीतिसे इनबातों को मानें। और यदि परदेशी तुम्में बास करे अथवा वुह जो तुम्हारी पीढ़ियों से होवे परमेश्वर के आगे सुगंध के लिये आग से भेंट चढ़ावे तो जिस
१५ रीति से तुम करते हो वैसा वुह भी करे। मंडली के लिये और उस परदेशी के लिये जो तुम्में बास करता है तुम्हारी पीढ़ियों में सदा एकही विधि होवे परमेश्वर के आगे जैसे तुम वैसे
१६ परदेशी भी हैं। तुम्हारे और परदेशियों के लिये जो तुम्में

१७ रहते हैं एकही व्यवस्था और एकही रीति होवे। फिर
१८ परमेश्वर मूसा से कहिके बोला। कि इसराईल के संतानों से
कहिके बोल कि जब तुम उस देश में पहुंचो जहां तुम्हें
१९ लेजाता हों। तब ऐसा होगा कि जब तुम उस भूमि पर की
रोटी खाओ तो परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट चढ़ाइयो।
२० तुम अपने पहिले गुंधेहुए आंटे से एक फुलका उठाने की भेंट
के लिये लेओ जैसी खलिहान की भेंट को उठाते हो वैसाही
२१ उसे उठाइयो। तुम अपने गुंधेहुए पिसान से पहिले अपने
पीढ़ियों में परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट चढ़ाइयो।
२२ और यदि तुम चूक किये हो और उन सब आज्ञाओं
२३ को जो परमेश्वर ने मूसा से कहीं पालन नकरो। जिस दिन
से परमेश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई है और अब से आगे लों अपनी
पीढ़ियों में समस्त आज्ञा जिन्हें परमेश्वर ने मूसा की ओर से
२४ तुम्हें दिई है। तब यों होगा कि यदि कुछ अज्ञानता होजाय
और मंडली न जाने तब समस्त मंडली होम की भेंट के लिये
परमेश्वर के सुगंध के लिये एक बछड़ा चढ़ावे उसके भोजन की
और पीने की भेंट के साथ रीति के समान और अपराध की
२५ भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना। और याजक इसराईल के
संतानों की सारी मंडली के लिये प्रायश्चित्त देवे और वुह क्षमा
किया जायगा क्योंकि अज्ञानता है और वे परमेश्वर के लिये
अपनी भेंट आग के बलिदान से लावें और अपने अज्ञानता के लिये
२६ अपने पाप की भेंट परमेश्वर के आगे लावें। और इसराईल के
संतानों की सारी मंडली और परदेशी जो उनमें रहते हैं
क्षमा किये जायेंगे इस लिये कि सारे लोग अज्ञानता में थे।
२७ और यदि कोई प्राणी अज्ञानता से पाप करे तो वुह पाप
२८ की भेंट के लिये पहिले बरस की एक बकरी लावे। और उस
प्राणी के लिये जो अज्ञानता से परमेश्वर के आगे पाप करे
उसके लिये याजक प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा किया

२९ जायगा । तुम अज्ञानता के अपराध के कारण उसके लिये जो इसराईल के संतानों में उत्पन्न हुआ हो और परदेशी के लिये
३० जो उनमें रहता हो एकही व्यवस्था रक्खो। परंतु जो प्राणी ढिठाई करे चाहे देशी चाहे परदेशी होय वही परमेश्वर की निंदा करता है और वही प्राणी अपने लोगों
३१ में से कट जायेगा। क्योंकि उसने परमेश्वर के बचन की निंदा किई और उसकी आज्ञा को भंग किया वही प्राणी सर्वथा
३२ कटजायगा उसका पाप उसी पर होगा। और जब इसराईल के संतान बन में थे उन्होंने एक मनुष्य को बिश्राम के
३३ दिन लकड़ियां बटोरते पाया। और जिन्होंने उसे लकड़ियां एकट्ठी करते पाया वे उसे मूसा और हारून और सारी
३४ मंडली के पास लाये। उन्होंने उसे बंद रक्खा इस कारण कि
३५ प्रगट न हुआथा कि उस्से क्या कियाजावे। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वुह मनुष्य निश्चय माराजायगा सारी
३६ मंडली छावनी के बाहर उस पर पत्थरवाह करे। जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी सारी मंडली उसे तंबू के बाहर लेगई उन्हों ने उस पर पत्थरवाह करके
३७ मारडाला। फिर परमेश्वर मूसा से कहिके बोला।
३८ कि इसराईल के संतानों से कह और उन्हें आज्ञा कर कि वे अपनी समस्त पीढ़ियों में अपने बस्त्रों के खूंट की झालर पर
३९ नीली चूली लगावें। यह तुम्हारे लिये झालर होगी जिसतें तुम उसे देखके परमेश्वर की सारी आज्ञाओं को स्मरण करो और उन्हें पालन करो और जिसतें तुम अपने मनका और आंखों का पीछा नकरो जैसे तुम आगे ब्यभिचार करतेथे।
४० जिसतें तुम मेरी सब आज्ञाओं को स्मरण करो और उनका
४१ पालन करो और अपने ईश्वर के लिये पवित्र होओ। मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों जो तुम्हें मिसर की भूमि से बाहर लाया कि तुम्हारा ईश्वर होओं मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हों।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ और लावी के बेटे कुहास के बेटे इज़हार के बेटे कोरह और राऊबीन के बेटे दासान और अबिराम इलियाब के बेटे और २ पिलथ के बेटे आन ने लोगों को लिया। उन्हों ने इसराईल के संतानों में से अढ़ाई सौ सभा के प्रधान और मंडली में नामी और लोगों में कीर्त्तिमान थे उन्हें लेके मूसा के आगे खड़ा ३ किया। तब मूसा और हारून के बिरोध में एकट्ठे होके उन्हें बोले कि आप को बड़त बढ़ातेहो मंडली में तो हरएक मनुष्य पवित्र है और परमेश्वर उनमें है सो किस लिये ४ परमेश्वर की मंडली से आप को बढ़ातेहो। मूसा यह सुनके ५ औंधा गिरा। फिर उसने कोरह और उसकी सारी जथा को कहा कि कलही परमेश्वर दिखलावेगा कि कौन उसका है और कौन पवित्र है और अपने पास पऊंचावेगा अर्थात् उसी ६ को जिसे उसने चुन लियाहै अपने पास पऊंचावेगा। सो कोरह और उसकी सारी जथा यह करो अपनी अपनी धूपावरी ७ लेओ। और उनमें आग रक्खो और कल परमेश्वर के आगे उनमें धूप जलाओ और यों होगा कि जो मनुष्य को परमेश्वर चुनता है वही पवित्र होगा हे लावी के बेटो तुम आप ८ को बढ़ातेहो। फिर मूसा ने कोरह से कहा कि हे लावी ९ के बेटो सुन रक्खो। तुम क्या उसे छोटा जानतेहो कि इसराईल के ईश्वर ने तुम्हें इसराईल की मंडली में से अलग किया कि अपने पास लाके परमेश्वर के तंबू की सेवा करावे १० और मंडली की सेवा के लिये खड़े रहो। और उसने तुझे तेरे समस्त भाई लावी के बेटे तेरे संग अपने पास किया अब ११ तुम याजकता भी ढूंढ़ते हो। इस कारण तू और तेरी सारी जथा परमेश्वर के बिरोध पर एकट्ठी ऊईहै और हारून १२ कौन है जो तुम उसके बिरोध में कुड़कुड़ातेहो। फिर मूसा ने अलियाब के बेटे दासान और अबिराम को बुलवाया

१३ वे बोले कि हम नआवेंगे। क्या यह छोटी बातहै कि तू हमें उस भूमि में से जिस में दूध और मधु बहताहै चढ़ालाया कि हमें अरण्य में नाश करे केवल तू आप को हमारे ऊपर
१४ सर्वथा अध्यक्ष बनावे। और तू हमें ऐसी भूमि में नलाया जहां दूध और मधु बहे तूने हमें खेत और दाख की बारी का अधिकारी नहीं कर दिया क्या तू इन लोगों की आंखें निकाल
१५ डालेगा हम तो नआवेंगे। तब मूसा का क्रोध भड़का और परमेश्वर से यों बोला कि तू उनकी भेंट की ओर मत ताक मैं ने उनसे एक गधा भी नहीं लिया न उनमें से किसी को
१६ दुःख दिया। फिर मूसा ने कोरह से कहा कि तू और तेरी सारी जथा और हारून सहित परमेश्वर के आगे कल के
१७ दिन आओ। और हर एक मनुष्य अपनी अपनी धूपावरी लेवे और उसमें धूप डाले और तुम्में से हर एक अपनी अपनी धूपावरी परमेश्वर के आगे लावे सब अढ़ाई सौ
१८ धूपावरी होवें तू और हारून अपनी धूपावरी लावे। सो हर एक ने अपनी अपनी धूपावरी लिई और उसमें आग रक्खी और धूप डाला और मंडली के तंबू के द्वार पर मूसा और
१९ हारून सहित आ खड़ेहुए। और क़ोरह ने सारी मंडली को मंडली के तंबू के द्वार पर उनके बिरोध पर एकट्ठा किया तब परमेश्वर की महिमा सारी मंडली के साम्ने प्रगट हुई।
२०।२१ और परमेश्वर मूसा और हारून से कहिके बोला। कि इस मंडली में से आप को अलग करो कि मैं उन्हें पल भर में
२२ नाश करों। तब वे औंधे गिरे और बोले कि हे ईश्वर सारे शरीरों के आत्मा का ईश्वर पाप एक करे और क्या तू सारी
२३ मंडली पर क्रुद्ध होवे। तब परमेश्वर मूसा से कहिके
२४ बोला। कि तू मंडली से कह कि कोरह और दासान
२५ और अबिराम के तंबुओं में से निकल आओ। सो मूसा उठा और दासान और अबिराम के यहां गया और

२६ इसराईल के प्राचीन उसके पीछे होलिये। और उसने मंडली से कहा कि उन दुष्टों के तंबुओं से निकल जाओ और उनकी किसी वस्तु को मत छूओ नहोवे कि तुम भी उनके सब
२७ पापों में नाश होजाओ। सो वे कोरह और दासान और अविराम के तंबुओं में से निकलगये और दासान और अबिराम और उनकी पत्नियां और बेटे और लड़के निकलके
२८ अपने तंबुओं के द्वार पर खड़ेहुए। तब मूसा ने कहा कि तुम इस्में जानोगे कि परमेश्वर ने यह कार्य्य करने को मुझे भेजा है
२९ और मैंने कुछ अपनी इच्छा से नहीं किया। यदि ये मनुष्य उस मृत्यु से मरें जिस मृत्यु से सब मरते हैं अथवा उन पर कोई विपत्ति ऐसी होवे जो सब पर होती है तो मैं ईश्वर
३० का भेजाहुआ नहीं। पर यदि परमेश्वर कोई नई बात करे और पृथिवी अपना मुंह फैलावे और उन्हें सब समेत निंगलजावे और वे जीते जी नरक में जा पड़ें तो तुम जानियो
३१ कि उन लोगों ने परमेश्वर को खिझायाहै। और यों हुआ कि ज्योंहीं वुह ये सब बातें कहिचुका तो उनके नीचे की भूमि
३२ फटगई। फिर पृथिवी ने अपना मुंह खोला और उन्हें और उनके घर और उन सब मनुष्यों को जो कोरह के थे और उन
३३ की सब संपत्ति को निंगलगई। सो वे और सब जो उनके थे जीतेजी नरक में गये और भूमि ने उन्हें छिपा लिया और
३४ मंडली के मध्य से नष्ट होगये। और सारे इसराईल जो उनके आस पास थे उनका चिल्लाना सुनके भागे क्योंकि उन्हों ने कहा
३५ नहो कि भूमि हमें भी निंगलजाये। फिर परमेश्वर के आगे से एक आग निकली और उन अढ़ाई सौ को जिन्हों ने धूप
३६ जलाया था खागई। और परमेश्वर मूसा से कहिके
३७ बोला। कि हारून याजक के बेटे इलिआज़र से कह कि धूपावरी को आग में से उठा और आग वहीं बखेरदे क्योंकि
३८ वे तो पवित्र हैं। अपने प्राण के बिरोध के पापियों की धूपावरियों

से चौड़े चौड़े पत्र बेदी के ढांपने के लिये बना क्योंकि उन्हों ने उन्हें परमेश्वर के आगे चढ़ाया इस लिये वे पवित्र हैं और वे
३९ इसराईल के संतानों के लिये एक चिन्ह होंगे। उन पीतल की धूपावरियों को जिन्हों ने जलायाथा जो जलगये थे तब इलिआज़र याजक ने उन्हें लिया और बेदी के लिये चौड़े पत्र ढांपने के
४० लिये बनाये। कि इसराईल के संतानों के लिये चेत होवे कि कोई परदेशी जो हारून के बंश से नहीं परमेश्वर के आगे धूप जलाने को पास न आवे जिसतें क़ोरह और उसकी जथा के समान नहोवे जैसा परमेश्वर ने मूसा के द्वारा से उसे कहाथा।
४१ परंतु बिहान को इसराईल के संतानों की सारी मंडली मूसा और हारून के बिरोध में कुड़कुड़ा के बोली कि तुमने
४२ परमेश्वर के लोगों को मारडाला। और यों ऊआ कि जब मूसा और हारून के बिरोध पर मंडली एकट्ठी ऊई तब उन्हों ने मंडली के तंबू की ओर ताका और क्या देखते हैं कि मेघ ने उसे ढांप
४३ लिया और परमेश्वर की महिमा प्रगट ऊई। तब मूसा और
४४ हारून मंडली के तंबू के आगे आये। और परमेश्वर मूसा
४५ और हारून से कहिके बोला। कि तुम इस मंडली में से अलग होओ जिसतें मैं उन्हें एक पल में नाश करडालों तब वे औंधे
४६ मुंह गिर पड़े। और मूसा ने हारून से कहा कि धूपावरी ले और उसमें बेदी परकी आग रख और धूप डाल और मंडली में शीघ्र से जाके उनके लिये प्रायश्चित्त दे क्योंकि परमेश्वर के आगे से कोप निकला और मरी आरंभ
४७ ऊई। तब जैसी मूसा ने आज्ञा किईथी हारून मंडली के मध्यमें दौड़गया और क्या देखताहै कि मरी उनमें आरंभ ऊई सो उसने धूप रखके उन लोगों के लिये प्रायश्चित्त किया।
४८ वुह जीवतों और मृतकों के बीच में खड़ा ऊआ तब मरी
४९ थमगई। सो जितने उस मरी से मरे उन्हें छोड़के जो क़ोरह के बिषय में नष्ट ऊए चौदह सहस्र सात सौ थे।

५० फेर हारून मंडली के तंबू के द्वार पर मूसा पास फिर आया और मरी थमगई।

१७ सत्तरहवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहिके बोला। कि इसराईल के संतानों से कह और उन में से उनके पितरों के घराने के समान हर घराने पीछे उनके सब प्रधानों से एक एक छड़ी ले और उनके पितरों के समान बारह छड़ी और हर एक का
३ नाम उसकी छड़ी पर लिख। और लावी की छड़ी पर हारून का नाम लिख क्योंकि हर एक प्रधान के कारण उनके
४ पितरों के घरानों के लिये एक एक छड़ी होगी। और उन्हें मंडली के तंबू में साक्षी के आगे रखदे जहां मैं तुझे भेंट
५ करोंगा। और यों होगा कि जिसे मैं चुनोंगा उसकी छड़ी में फूल लगेगा और मैं इसराईल के संतानों का कुड़कुड़ाना
६ जो वे बिरोध से कुड़कुड़ाते हैं दूर करोंगा। सो मूसा ने इसराईल के संतानों से कहा और हर एक ने उनके प्रधानों में से एक एक प्रधान के लिये उनके पितरों के घरानों के समान एक एक छड़ी अर्थात् बारह छड़ी दिई और हारून
७ की छड़ी उनकी छड़ियों में थी। और मूसा ने उन छड़ियों
८ को साक्षी के तंबू में परमेश्वर के आगे रक्खा। और ऐसा हुआ कि बिहान को मूसा साक्षी के तंबू में गया तो क्या देखता है कि लावी के घराने के लिये हारून की छड़ी में कली लगीं और कली निकलीं और फूल फूले और बादाम लगे।
९ तब मूसा सब छड़ियों को परमेश्वर के आगे से सब इसराईल के संतानों के पास निकाल लाया उन्हों ने देखा और हर एक
१० ने अपनी अपनी छड़ी फेर लिई। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून की छड़ी साक्षी के आगे रख कि दंगइत के बिरोध के लिये एक चिन्ह रहे और तू उनका

११ कुड़कुड़ाना मुझसे दूर करे जिसतें वे मर नजावें। और मूसा ने ऐसाही किया जैसा परमेश्वर ने उसे कहा वैसाही उसने
१२ किया। तब इसराईल के संतानों ने मूसा से कहा कि हम मरे
१३ हम नाश ऊए हम सब के सब बिनाश ऊए। जो कोई परमेश्वर के तंबू पास आवेगा सो मरेगा क्या हम सब मर मर के मिट जायेंगे।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि पवित्र स्थान का पाप तुझ पर और तेरे बेटों और तेरे संग तेरे पिता के घराने पर होगा और तेरे संग तेरे बेटे तुम्हारी याजकता का पाप
२ भोगेंगे। और तेरे भाई की गोष्ठी जो तेरे पिता की गोष्ठी है अपने साथ ला जिसतें वे तेरे साथ मिलाये जावें और तेरी सेवा करें पर तू अपने बेटों समेत साक्षी के तंबू के आगे रह।
३ और वे तेरी और सारे तंबू की रक्षा करें केवल वे पवित्र पात्रों और बेदी के पास न जावें न होवे कि वे भी और तुम
४ भी नाश होजाओ। और तंबू की सारी सेवा के लिये तेरे संग होके मंडली के तंबू की रक्षा करें और कोई परदेशी
५ तुम्हारे पास आने न पावे। और तुम पवित्र स्थान को और बेदी को अगोर रक्खो जिसतें आगेको फिर इसराईल के
६ संतानों पर कोप न पड़े। और देखो मैंने तुम्हारे भाई लावियों को इसराईल के संतानों में से लेके परमेश्वर की भेंट
७ के लिये तुम्हें दिया जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें। सो तू और तेरे संग तेरे बेटे बेदी की हर एक बात के और घूंघट के भीतर की सेवा के लिये अपने याजक के पद को पालन करो और सेवा करो मैंने याजक के पद में तुम्हें भेंट की सेवा दिई और
८ जो परदेशी पास आवे सो माराजायगा। फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि देख मैंने इसराईल के संतानों की समस्त

पवित्र किईऊई उठाने की भेंटों की रक्षा करना तुझे दिया मैंने उन्हें तेरे अभिषिक्त होने के कारण तुझे और तेरे बेटों
९ को सदा की विधि के निमित्त दिया। उन पवित्र वस्तुन में से जो आग से बचरही हैं ये तेरे लिये होंगी उनके सब बलिदान और उनके हर एक भोजन की भेंट और उनके हर एक पाप की भेंट और उनके हर एक अपराध की भेंट जो वे मेरे लिये चढ़ावेंगे तेरे और तेरे पुत्रों के लिये अत्यंत
१० पवित्र होंगे। तू उसे अत्यंत पवित्र स्थान में खाइयो हर एक
११ पुरुष उसे खाय यह तेरे लिये पवित्र है। और यह तेरी है इसराईल के संतानों की भेंट के उठाने के बलिदान उनके सब हिलायेऊए बलिदान सहित मैंने तुझे और तेरे संग तेरे बेटों को और तेरी बेटियों को सदा के व्यवहार के लिये दिया
१२ जो कोई तेरे घर में पवित्र होवे सो उसे खावे। सब अच्छे से अच्छा तेल और अच्छे से अच्छा दाखरस और गोहं का और इन सभों का पहिला फल जिन्हें वे परमेश्वर की भेंट के लिये
१३ लावेंगे मैंने तुझे दिया। देश में जो पहिले पकता है जिन्हें वे परमेश्वर के आगे लावें तेरे होंगे तेरे घर में जो कोई पवित्र
१४ होवे सो उसे खावे। इसराईल के संतानों के हर एक
१५ नैवेद्य की वस्तु तेरी होगी। समस्त प्राणी में से हर एक जो गर्भ खोलता है चाहे मनुष्य होय चाहे पशु जिसे वे परमेश्वर के लिये लाते हैं तेरा होगा तथापि तू मनुष्यों के और अपवित्र पशुन के पहिलौंठों को निश्चय छुड़ाइयो।
१६ और जो एक मास के वय से छुड़ाये जाने का होय पांच शेकल दाम जो पवित्र स्थान के शेकल के समान होवे जो बीस गिरह
१७ है अपने ठहराने के समान उसे छुड़ाइयो। परंतु गाय के पहिलौंठे अथवा भेड़ के पहिलौंठे अथवा बकरी के पहिलौंठे को मत छुड़ाना वे पवित्र हैं तू उनका लोह बेदी पर छिड़कियो और उनकी चिकनाई आग से परमेश्वर की सुगंध की भेंट

१८ के लिये जलाइयो। जैसे हिलाईऊई छाती और दहिना
१९ कांधा तेरे हैं वैसा उनका मांस तेरा होगा। पवित्र वस्तुन के
हिलाने के बलिदान जिन्हें इसराईल के संतान परमेश्वर के
लिये चढ़ातेहैं मैंने तुझे और तेरे संग तेरे बेटों को और तेरी
बेटियों को सदा की बिधि के लिये दिया परमेश्वर के आगे
तेरे और तेरे संग तेरे बंश के लिये नून की बाचा सदा के
२० लियेहै। फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि तू उनके देश
में कुछ अधिकार न रखना और उनमें कुछ भाग न रखना
इसराईल के संतानों में तेरा भाग और तेरा अधिकार मैं
२१ हों। देख मैंने लावी के संतान को उनकी सेवा के लिये जो
वे सेवा करतेहैं अर्थात् मंडली के तंबू की सेवा के लिये
२२ इसराईल में सारा दसवां भाग दिया। और आगे को
इसराईल के संतान मंडली के तंबू के पास नआवें नहो कि वे
२३ पापी होवें और मरजावें। परंतु लावी मंडली के तंबू की सेवा
करें और वे अपने पाप भोगेंगे तुम्हारी पीढ़ियों में यह सदा
की बिधि होगी कि वे इसराईल के संतानों में अधिकार नहीं
२४ रखते हैं। परंतु इसराईल के संतान का दसवां भाग जिन्हें वे
परमेश्वर के लिये हिलाने की भेंट के लिये चढ़ावें मैंने लावियों
के अधिकार में दिया इस कारण मैंने उन्हें कहा कि इसराईल
२५ के संतानों में वे अधिकार न पावेंगे। फिर परमेश्वर
२६ मूसा से कहिके बोला। कि लावियों को यों कह और उन्हें
बोल कि जब तुम इसराईल के संतानों से दसवां भाग लेओ
जो मैंने उनसे तुम्हारे अधिकार के लिये तुम्हें दिया है तुम
दहेकी का दसवां भाग उठाने के बलिदान के कारण परमेश्वर
२७ के आगे चढ़ाइयो। जैसा कि खलिहान का अन्न और कोल्हू की
२८ भरपूरी तुम्हारे उठाने की भेंटें गिनी जायेंगी। इस भांति से
तुमभी उठाने की भेंट परमेश्वर के लिये अपने सारे दसवें
भागों से चढ़ाओ जिन्हें तुम इसराईल के संतानों से पाओगे

और तुम उस में से परमेश्वर को उठाने की भेंटें हारून
२९ याजक को दीजियो। अपनी समस्त भेंटों में से उस अच्छे से
अच्छे अर्थात् उसमें का पवित्र कियाहुआ भाग परमेश्वर के
३० हिलाने की भेंट चढ़ाइयो। इस लिये उन्हें कहो की जब तुम
उनमें से अच्छे से अच्छे को उठाओ तब लावियों के लिये
खलिहान की बढ़ती और कोल्हू की बढ़ती की नाईं गिना जायगा।
३१ और तुम और तुम्हारा घराना हर एक स्थान में खावे क्योंकि
यह तुम्हारी उस सेवा का प्रतिफल है जो तुम मंडली के तंबू
३२ में करते हो। और जब तुम उसमें से अच्छे से अच्छा उठाओगे
तब तुम उसके कारण पापी न ठहरोगे और इसराईल के
संतानों की पवित्र वस्तु को अशुद्ध न करोगे और नाश
न होओगे।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहिके बोला। यह व्यवस्था
की रीति है जो परमेश्वर ने आज्ञा करके कहा कि इसराईल
के संतानों से कह कि एक निखोट और निर्दोष लाल कलोर
जिस पर कभी जूआ न रक्खा गयाहो तुझ पास लावें।
३ और तुम उसे इलिआज़र याजक को देओ कि उसे छावनी से
४ बाहर लेजावे और वुह उसके आगे बलि किई जावे। और
इलिआज़र याजक अपनी अंगुली पर उसका लोहू लेके
५ मंडली के तंबू के आगे सात बार छिड़के। फिर उसके आगे
कलोर जलाई जावे उसकी खाल और उसका मांस और
उसका लोहू और उसके गोबर सहित सब जलायेजायें।
६ फिर याजक देवदारु की लकड़ी और जूफा और लाल लेके
७ उस जलतीहुई कलोर के मध्य में डालदेवे। तब याजक अपने
कपड़े धोवे और पानी में स्नान करे उसके पीछे छावनी में
८ प्रवेश करे और याजक सांझ लों अशुद्ध रहेगा। और वुह जो

उसे जलाताहै अपने कपड़े पानी से धोवे और अपना आंग
९ धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। और कोई पावन
मनुष्य उस कलोर की राख को एकट्ठी करे और छावनी के
बाहर स्थान पर उठा रक्खे और वुह इसराईल के संतानों की
मंडली के लिये अलग करने के पानी के लिये होवे यह पाप
१० की पवित्रता के लिये है। और जो उस कलोर की राख को
समेटताहै सो अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा
और यह इसराईल के संतानों के और उन परदेशियों के
लिये जो उनमें बसतेहैं एक विधि सदा के लिये होवे।

११ जो कोई मनुष्य की लोथ को छूये सो सात दिनलों
१२ अपवित्र रहेगा। वुह आप को तीसरे दिन उसे पवित्र करे
और सातवें दिन पवित्र होगा पर यदि वुह आप को
तीसरे दिन पवित्र नकरे तो सातवें दिन पवित्र न होगा।
१३ जो कोई किसी मनुष्य की लोथ को छूये और आप को पवित्र
नकरे उसने परमेश्वर के तंबू को अशुद्ध किया वुह प्राणी
इसराईल के संतानों में से कटजायगा इस कारण कि अलग
करने का पानी उस पर छिड़का नहीं गया वुह अपवित्र है
१४ उसकी अपवित्रता अबलों उस पर है। जब मनुष्य तंबू में
मरे तब उसकी यही व्यवस्था है सब जो तंबू में आवें और
१५ सब जो तंबू में हैं सात दिन लों अशुद्ध होंगे। और हर एक
१६ खुला पात्र जिस पर ढंपना बंधा नहोवे अशुद्ध। और जो
कोई तलवार से अरण्य में मारेहुए को छूवे अथवा लोथ को
अथवा मनुष्य के हाड़ को अथवा समाधि को सो सात दिन लों
१७ अशुद्ध होयेगा। और अशुद्ध को पाप से पवित्र करने के लिये
जलीहुई कलोर की राख लेवे और एक बासन में बहतेहुए
१८ पानी उसपर डाले। और एक पवित्र मनुष्य जूफ़ा लेवे
और पानी में डुबोके तंबू पर और सारे पात्रों पर और उन
मनुष्यों पर जो वहां थे और उसपर जिसने हाड़ को अथवा

जूझेऊए को अथवा मृतक को अथवा समाधि को कूआहो
१९ छिड़के। और पवित्र जन तीसरे दिन और सातवें दिन
अपवित्र पर छिड़के और फिर सातवें दिन अपने को पवित्र
करे और अपने कपड़े धोवे और पानी में नहावे तब सांझ को
२० पवित्र होगा। परंतु वुह मनुष्य जो अपवित्र होय और आप
को पवित्र नकरे वही मनुष्य मंडली में से कटजायगा इस
कारण कि उसने परमेश्वर के पवित्र स्थान को अशुद्ध किया इस
लिये कि अलग करने का पानी उस पर छिड़का नगया वुह
२१ अशुद्ध है। और यह उनके लिये नित्य की बिधि होगी जो
कोई अलग करने के पानी को छिड़के सो अपने कपड़े धोवे
और जो कोई अलग करने के पानी को कूवे सो सांझ लों
२२ अशुद्ध रहेगा। और जो कुछ अपवित्र मनुष्य कूवे सो अपवित्र
होगा और जो प्राणी उसे कूवेगा सो सांझ लों अशुद्ध होगा।

२० बीसवां पर्ब्ब।

१ उसके पीछे इसराईल के संतानों की सारी मंडली पहिले
मास सीनाके अरख में आई और कादस में उतरपड़ी और
२ मरियम वहां मरगई और गाड़ीगई। वहां मंडली के लिये
पानी नथा तब वे मूसा और हारून के बिरोध पर एकट्ठे ऊए।
३ और लोगों ने मूसा से झगड़ के कहा हाय कि जब हमारे भाई
४ परमेश्वर के आगे मरगये हम भी मरजाते। तुम परमेश्वर
की मंडली को इस अरख में क्यों लाये कि हम और हमारे
५ ढोर मर जायं। और तुम हमें मिसर से इस बुरे स्थान
में क्यों चढ़ा लाये यहां तो खेत और गूलर और दाख और
६ अनार नहीं हैं यहां तो पीने को पानी भी नहीं। तब मूसा
और हारून सभा के आगे से मंडली के तंबू के द्वार पर गये
और औंधे मुंह गिरे तब परमेश्वर की महिमा उनपर प्रगट
७।८ ऊई। और परमेश्वर मूसा से कहिके बोला। कि छड़ी

ले और तू और तेरा भाई हारून मंडली को एकट्ठी करो और उनकी आंखों के आगे पर्ब्बत को कहो और वुह अपना पानी देगा तू उनके लिये पर्ब्बत से पानी निकाल और उसे तू
९ मंडली को और उनके पशुन को पिला। सो मूसा ने छड़ी को परमेश्वर के आगे से लिया जैसी उसने उसे आज्ञा किई थी।
१० और मूसा और हारून ने मंडली को उस पर्ब्बत के आगे एकट्ठी किया और उसने उन्हें कहा कि सुनो हे दंगइतो क्या हम
११ तुम्हारे लिये इस पर्ब्बत से पानी निकालें। तब मूसा ने अपना हाथ उठाया और उस पर्ब्बत को दोबार अपनी छड़ी से मारा तब बज्ञताई से पानी निकला और मंडली ने और उनके
१२ पशुन ने पीया। तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को इस कारण कहा कि तुम ने मेरी प्रतीति नकिई कि इसराईल के संतानों की दृष्टिमें मुझे पवित्र करो इस लिये तुम इस मंडली को उस देश में जो मैंने उन्हें दिया है नलाओगे।
१३ यह झगड़े का पानी है क्योंकि इसराईल के संतानों ने परमेश्वर से झगड़ा किया और उसने उनके मध्य आप को पवित्र
१४ किया। और क़ादस से मूसा ने अदूम के राजा के पास दूतों को भेजा कि तेरा भाई इसराईल कहता है कि जो जो
१५ दुःख हम पर बीतगया है तू जानता है। कि किस भांति से हमारे पितर मिसर में उतरगये और हम मिसर में बज्ञत दिन रहे और मिसरियों ने हमें और हमारे पितरों को दुःख
१६ दिया। और जब हम परमेश्वर के आगे चिल्लाये तब उसने हमारा शब्द सुना और एक दूत को भेजके हमें मिसर में से निकाल लाया और देख हम तेरे अत्यंत सिवाने के नगर
१७ क़ादस में हैं। सो हमें अपने देशमें होके जाने दीजिये कि हम खेतों और दाखों की बाटिकों में नजायेंगे और नकूओं का पानी पीवेंगे हम राजमार्ग से होके निकले चले जायेंगे हम दहिने अथवा बायें हाथ न मुड़ेंगे जब लों कि तेरे सिवानों

१८ से बाहर न निकल जायें। तब अदूम ने उसे कहा कि तुम मेरे पास से न जाओगे नहीं तो मैं तलवार से तुझपर निकलोंगा।
१९ फिर इसराईल के संतानों ने उसे कहा कि हम राज मार्ग से होके चले जायेंगे और यदि मैं अथवा मेरे ढोर तेरा पानी पीयें तो मैं उसका दाम देउंगा कुछ न करोंगा केवल मैं अपने
२० पाओं से चला जाओंगा। उसने कहा कि तू कधी जाने न पावेगा तब अदूम बड़े बल से और बहुत लोगों के साथ उस पर
२१ चढ़ आया। सो अदूम ने इसराईल को अपने सिवाने में से जाने न दिया इस कारण इसराईल उसे फिरगये।
२२ और इसराईल के संतानों की सारी मंडली कादस से
२३ कूच करके पहाड़ हूर पर आई। और परमेश्वर ने अदूम के देश के सिवाने के लग पहाड़ हूर पर मूसा और हारून से
२४ कहा। कि हारून अपने लोगों में एकट्ठा किया जायगा क्योंकि वुह उस देश में जिसे मैंने इसराईल के संतानों को दिया है न पहुंचेगा इस लिये कि तुम झगड़े के पानी पर मेरे बचन से
२५ फिर गये। हारून और उसके बेटे इलिआज़र को ले और उन्हें
२६ पहाड़ हूर पर ला। हारून के बस्त्र उतार और उन्हें उसके बेटे इलिआज़र को पहिना कि हारून समेटाजायगा और
२७ वहां मरजायगा। सो जैसा परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा ने वैसाही किया और वे मंडली के आगे पहाड़ हूर
२८ पर चढ़गये। और मूसा ने हारून के बस्त्र उतारे और उसके बेटे इलिआज़र को पहिनाया और हारून पहाड़ की चोटी पर मरगया और मूसा और इलिआज़र पहाड़ से उतर
२९ आये। और जब सारी मंडली ने देखा कि हारून मरगया तब इसराईल के सारे घराने हारून के कारण तीस दिन लों बिलाप किये।

१ और जब राजा अराद किनानी नें जो दक्षिण में बास करताथा सुना कि इसराईल भेदियों के मार्ग से आये तो इसराईल
२ से लड़ा और उनमें से बंधुआई किया। तब इसराईल ने परमेश्वर की मनौती मानी और बोला कि यदि तू सच मुच इन लोगों को मेरे बश में करदेगा तो मैं उनके नगरों को
३ सर्बथा नाश कर देउंगा। सो परमेश्वर ने इसराईल का शब्द सुना और किनानियों को उनके हाथमें सोंपदिया और उन्हों ने उन्हें और उनके नगरों को सर्बथा नष्ट करदिया और
४ उसने उस स्थान का नाम ऊर्मा रक्खा। फिर उन्हों ने पहाड़ हूर से लाल समुद्र की ओर कूच किया जिसतें अदूम के देश को घेरलेवें परंतु मार्ग के कारण से लोगों का प्राण बहुत
५ उदास हुआ। और लोग ईश्वर के और मूसा के बिरोधमें बोले कि तुम क्यों हमें मिसर से चढ़ा लाये कि हम अरण्य में मरें क्योंकि अन्नजल कुछ नहींहै हमें तो इस हलकी रोटी से
६ घिन आतीहै। तब परमेश्वर ने उन लोगों में आग के सर्प भेजे उन्हों ने उन्हें काटा और इसराईल के बहुत लोग
७ मरगये। इस लिये लोग मूसा पास आये और बोले कि हमने पाप किया है क्योंकि हमने परमेश्वर के और तेरे बिरोध में कहाहै सो तू परमेश्वर से प्रार्थना कर कि हम्में से उन सांपों
८ को उठालेवे सो मूसा ने लोगों के लिये प्रार्थना किई। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने लिये एक आग का सर्प बना और एक लट्ठ पर लटका और यों होगा कि हर एक
९ डंसाहुआ जब उस पर दृष्टि करेगा जीयेगा। सो मूसा ने पीतल का एक सर्प बनाके लट्ठ पर रक्खा और यों हुआ कि यदि सर्प किसीको डंसा तो जब उसने उस पीतल के सर्प
१० पर दृष्टि किई वुह जीया। तब इसराईल के संतान
११ आगे बढ़े और ओबूस में डेरा किया। फिर ओबूस से कूच किया और अजीअबरीम के बन में जो मवाब के आगे पूर्ब ओर

१२ है डेरा किया। वहां से कूच करके ज़रद की तराई
१३ में डेरा किया। वहां से जो चले तो अरनून के पार उस
बन में जो अमूरियों के सिवाने का अंत्य है आके डेरा किया
क्योंकि अरनून मवाब का सिवाना है मवाब और अमूरियों
१४ के मध्य। इसी लिये परमेश्वर के संग्राम की पुस्तक में लिखाहै
कि उसने लाल समुद्र में और अरनून के नालों में क्या क्या
१५ कुछ किया। और नालों के धारे के पास जो आर की बस्तियों
१६ के नीचे जाताहै और मवाबियों के सिवानों पर है। और
वहां से बीर को जो कूआं है जिसके कारण परमेश्वर ने मूसा से
कहा कि लोगों को एकट्ठे कर कि मैं उन्हें पानी देउंगा।
१७ उस समय इसराईल ने यह भजन गाया कि हे कूओं
१८ उबलो उसका उत्तर देओ। अध्यक्षों ने उसे खोदा लोगों के
महानों ने उसे खोदा ब्यवस्थादायक के समान अपनी लाठियों
१९ से और बन से मताना को गये। और मताना से नहालईल
२० को और नहालईल से बामूस को। और बामूस की तराई
से जो मवाब के देश में है पसगा की चोटी लों जहां से जसमन
२१ का ओर देखाताथा। और इसराईल अमूरियों के राजा
२२ सीहून के पास यह कहिके दूत भेजे। कि हमें अपने देश से
निकल जाने दे हम खेतों और दाखों की बारियों में न पैठेंगे
न हम कूए का पानी पीवेंगे परंतु राजमार्ग से चलेजायेंगे यहां
२३ लों कि तेरे सिवानों से बाहर होजायें। पर सीहून ने इसराईल
को अपने सिवानों से जाने न दिया परंतु अपने लोगों को
एकट्ठे करके इसराईल का साम्ना करने को अरण्य में निकला
२४ और यहाज में पहुंचके इसराईल से संग्राम किया। और
इसराईल ने उन्हें खड्ग की धार से मार लिया और उनके
देश पर अरनून से लेके जब्बुक़ लों अर्थात् अमून के संतान लों
बश में किया क्योंकि अमून के संतानों का सिवाना दृढ़ था।
२५ सो इसराईल ने ये सब नगर लेलिये और अमूरियों के सब

नगरों में और हश्बून में और उसके सारे गांओंमें बास
२६ किया। क्योंकि हश्बून अमूरियों के राजा सीहून का नगर था
जो मवाब के अगले राजा से लड़ा और उसका समस्त देश
२७ अरनून लों उसके हाथ से लेलिया। इसी लिये दृष्टांतवक्तों ने
कहाहै कि हश्बून में आओ सीहून का नगर बसजाय सिद्ध
२८ होय। क्योंकि आग हश्बून से निकली लवर सीहून के नगर से
जिसने मवाब के आर को और अरनून के ऊंचे स्थान के प्रधानों
२९ को भस्म किया। हे मवाब तुझ पर संताप हे कमूश के लोगो
तुम नाशहुए उसने अपने बचेहुए बेटों को देदिया और अपनी
बेटियां अमूरियों के राजा सीहून के बंधुआई में करदिया।
३० उनका दीया हश्बून से लेके दैबून लों बुझगया और नूफा लों
३१ जो मदीबा के पास है उजाड़ दिया। यों इसराईलियों ने
३२ अमूरियों के देश में बास किया। फिर मूसा ने जाज़र का भेद
लेनेको भेजा उन्हों ने उसके गांओं को लिया और अमूरियों
३३ को जो वहां थे हांक दिया। तब वे फिरे और बासान
की ओर चढ़े और बासान के राजा ऊज ने अपने सब लोग
लेके युद्ध के लिये अदरी में संग्राम के लिये उनका साम्ना किया।
३४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उसे मत डर क्योंकि मैंने
उसे और उसके समस्त लोगों को और उसके देश को तेरे
हाथ में सौंपदिया सो तू उनसे वैसा कर जैसा तूने अमूरियों
३५ के राजा सीहून से किया जो हश्बून में रहताथा। सो उन्हों
ने उसे और उसके बेटों और सारे लोगों को यहां लों मारा
कि कोई जीता नछूटा और उसके देश में बास किया।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

१ फिर इसराईल के संतान आगे बढ़े और अरीहा के लग अर्दन
२ के इसी पार मवाब के चौगानों में डेरा किया। और जब
सफ़ूर के बेटे बलक़ ने सब देखा जो इसराईल ने अमूरियों से

३ किया। तो मवाब उन लोगों से निपट डरा इस कारण कि वे बक्कत थे और मवाब इसराईल के संतानों के कारण से दुःखित
४ ज्ञआ। तब मवाब ने मदियान के प्राचीनों से कहा कि अब ये जथा उन सबको जो हमारे आस पास हैं यों चाटजायेंगी जैसा कि बैल चौगान की घास को चट करलेता है और सफ़र का बेटा
५ बलक़ मवाबियों का राजा था। सो उसने बऊर के बेटे बलआम पास फ़ासर को जो उसके लोगों के संतान के देश के नदी पास थे दूत भेजे जिसतें उसे यह कहिके बुलावें कि देख लोग मिसर से बाहर आये हैं देख उनसे पृथिवी छिपगई है और मेरे
६ साम्ने ठहरे हैं। सो अब आईये और मेरे लिये उन्हें स्राप दीजिये क्योंकि वे मुझसे अत्यंत बली हैं क्या जानें मैं उन्हें जीतों कि हम उन्हें मारें और उन्हें इस देश में से खदेड़ देवें क्योंकि मैं निश्चय जानताहूं कि जिसे तू आशीष देताहै सो आशीष प्राप्त करताहै
७ और जिसे तू स्राप देताहै वुह स्रापित है। मवाब और मदियान के प्राचीन टोने का प्रतिफल हाथ में लेके चले और
८ बलआम पास आये और बलक़ का बचन उसे कहा। उसने उन्हें कहा कि आज रात यहां रहो और जैसा परमेश्वर मुझे कहेगा मैं तुम्हें कहोंगा सो मवाब के प्रधान बलआम के संग
९ रहे। तब ईश्वर बलआम पास आया और उसे कहा कि तेरे
१० संग ये कौन मनुष्य। बलआम ने ईश्वर से कहा कि मवाब के
११ राजा सफ़ूर के बेटे बलक़ ने उन्हें मुझ पास भेजके कहा। कि देख लोग मिसर से निकल आये हैं जो पृथिवी को ढांपरहे हैं सो आ मेरे कारण उन्हें स्राप दे क्या जाने मैं उनसे जयपाओं
१२ और उन्हें खदेड़ देओं। ईश्वर ने बलआम से कहा कि तू उनके साथ मतजा तू उन्हें स्राप मत दे क्योंकि वे आशीष प्राप्त किये
१३ हैं। बलआम ने बिहान को उठके बलक़ के अध्यक्षों से कहा कि अपने देश को जाओ क्योंकि परमेश्वर मुझे तुम्हारे साथ
१४ जाने नहीं देता। मवाब के अध्यक्ष उठे और बलक़ पास गये

और बोले कि बलआम ने हमारे साथ आने को नाह
१५ किया है। तब बलक ने उनसे अधिक और प्रतिष्ठित
१६ अध्यक्षों को फिर भेजा। उन्हों ने आके बलआम से कहा कि
सफर के बेटे बलक ने यों कहा है कि मुझ पास आने में आप को
१७ कोई रोकने न पावे। क्योंकि मैं आप की अति बड़ी प्रतिष्ठा
करोंगा और जो कुछ आप मुझे कहेंगे मैं करोंगा मैं आप की
बिनती करता हूं कि आइये उन लोगों को मेरे निमित्त स्राप
१८ दीजिये। बलआम ने बलक के सेवकों से उत्तर देके कहा कि
यदि बलक अपना घर भरके चांदी सोना देवे तो मैं
परमेश्वर अपने ईश्वर के बचन को उल्लंघन करके घट बढ़ नहीं
१९ कर सक्ता। सो अब तुम लोग भी यहां रात भर रहो जिसतें
२० मैं देखों कि परमेश्वर मुझे अधिक क्या कहेगा। फिर ईश्वर
रात को बलआम के पास आया और उसे कहा कि यदि ये
मनुष्य तुझे बुलाने आवें तो उठके उनके साथ जा पर तथापि
२१ जो बचन मैं तुझे कहों सोई करियो। सो बलआम बिहान
को उठा और अपनी गदही पर काठी रक्खी और मवाब के
२२ प्रधानों के साथ गया। और उसके जाने के कारण ईश्वर का
क्रोध भड़का और परमेश्वर का दूत बैर लेने को उसके सन्मुख
मार्ग में खड़ा हुआ सो वुह अपनी गदही पर चढ़ा हुआ
२३ जाता था और उसके दो सेवक उसके साथ थे। सो गदही ने
परमेश्वर के दूत को अपने हाथ में तलवार खींचे हुए मार्ग में
खड़ा देखा तब गदही मार्ग से अलग खेत में फिर गई तब
२४ उसे मार्ग में फेरने के लिये बलआम ने गदही को मारा। तब
परमेश्वर का दूत दाख की बारियों के पथ में खड़ा हुआ था जिसके
२५ इधर उधर भीत थी। और जब परमेश्वर के दूत को गदही ने
देखा उसने भीत में जा रगड़ा और बलआम का पांव भीत से
२६ दबाया और उसने उसे फिर मारा। तब परमेश्वर का दूत
आगे बढ़ के एक संकेत स्थान में खड़ा हुआ जहां दहिने बायें

२७ फेरने का मार्ग नथा। और गदही परमेश्वर के दूत को देखके
बलआम के नीचे बैठगई तब बलआम का क्रोध भड़का और उसने
२८ गदही को लाठी से मारा। तब परमेश्वर ने गदही का मुंह
खोला और उसने बलआम से कहा कि मैंने तेरा क्या किया है
२९ कि तूने हमें अब तीन बार मारा। बलआम ने गदही स कहा
कि तूने मुझे बौड़हा बनाया मैं चाहता कि मेरे हाथ में तलवार
३० होती तो तुझे मार डालता। गदही ने बलआम से कहा कि
क्या मैं तेरी गदही नहीं हों जिस पर तू आज के दिन लों
चढ़ताहै क्या मैं ऐसा कधी करती आई हों वुह बोला कि
३१ नहीं। तब परमेश्वर ने बलआम की आंखें खोलीं और उसने
परमेश्वर के दूत को मार्ग में खड़ेहुए देखा और उसके हाथ में
खींचीहुई तलवार है उसने अपना सिर झुकाया और औंधा
३२ गिरा। परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि तूने अपनी गदही को
तीन बार क्यों मारा देख मैं तेरे बिरुद्ध में निकला हों इसलिये
३३ कि तेरी चाल मेरे आगे हठिली है। और गदही मुझे देखके
तीन बार मुझसे फिर गई यदि वुह मुझसे न फिरती तो निश्चय
३४ मैं तुझे मारही डालता और उसे जीता छोड़ता। बलआम
ने परमेश्वर के दूत से कहा कि मुझसे पाप हुआ क्योंकि मैंने
नजाना कि तू मेरे बिरुद्ध मार्ग में खड़ा है सो अब यदि
३५ आप अप्रसन्न हैं तो मैं फिर जाओंगा। परमेश्वर के दूत ने
बलआम से कहा कि मनुष्यों के साथ जा परंतु केवल जो बचन
मैं तुझे कहों सोई कहियो सो बलआम बलक़ के प्रधानों के
३६ साथ गया। जब बलक़ ने सुना कि बलआम पहुंचा
तो उसने अत्यंत तीर को अरनून के सिवाने में मवाब के एक
३७ नगर लों उसकी अगुआई को निकला। तब बलक़ ने बलआम
से कहा कि क्या मैंने बड़ी बिनती करके तुझे नहीं बुलाया तू
मुझ पास क्यों चला नआया क्या निश्चय मैं तेरा माहात्म्य नहीं
३८ बढ़ा सक्ता। बलआम न बलक़ से कहा क्या मुझ में कुछ शक्ति

है कि मैं कहां जो बात ईश्वर मेरे मुंह में डालेगा सोई
३९ कहोंगा। और बलआम और बलक साथ साथ गये और
४० करियासहसूस में पङंचे। बलक ने बैल और भेड़ चढ़ाये और
बलआम के और उन अध्यक्षों के पास जो उसके साथ थे भेजे।
४१ और बिहान को यों ऊआ कि बलक ने बलआम को साथ
लिया और उसे बआल के ऊंचे स्थानों में लाया जिस्तें वुह
वहां से लोगों के बाहर बाहर देखे।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

१ तब बलआम ने बलक से कहा कि मेरे लिये यहां सात बेदी
बना और मेरे लिये यहां सात बैल और सात मेंढ़े सिद्ध कर।
२ जैसा बलआम ने कहा था बलक ने वैसा किया और बलक और
बलआम ने हर बेदी पर एक बैल और एक मेढ़ा चढ़ाया।
३ फिर बलआम ने बलक से कहा कि अपने होम की भेंट के
पास खड़ा रह और मैं जाओंगा कदाचित परमेश्वर मुझे
भेंट करे जो कुछ वुह मुझे दिखावेगा मैं तुझे कहोंगा सो वुह
४ ऊंचे स्थान को चला। और ईश्वर बलआम को मिला और उसने
उसे कहा कि मैंने सात बेदी सिद्ध कियां और एक एक बैल और
५ एक एक मेंढ़ा हर एक पर चढ़ाया। तब परमेश्वर ने बलआम
के मुंह में बचन डाला और उसे कहा कि बलक पास फिर
६ जा और उसे यों कह। सो वुह उस पास फिर आया और
क्या देखता है कि वुह अपने होम के बलिदान के पास मवाब
७ के सब प्रधानों समेत खड़ा है। तब उसने अपने दृष्टांत में कहा
कि पूर्ब्ब के पहाड़ों से अरम से मवाब के राजा बलक ने मुझे
बुलाया कि मेरे निमित्त याक़ूब को स्राप दीजिये और इसराईल
८ को धिक्कारिये। मैं उसे क्योंकर स्रापें जिसे ईश्वर ने नहीं स्रापा
९ अथवा उसे धिक्कारों जिसे ईश्वर ने नहीं धिक्कारा। क्योंकि
पहाड़ की चोटी पर से मैं उसे देखता हों और पहाड़ों पर से

उसे ताकताहों देखो ये लोग अकेले रहेंगे और लोगों के
१० मध्य गिने न जायेंगे। याकूब की धूल को कौन गिन सक्ता है
और इसराईल की चौथाई का लेखा कौन ले सक्ता है हाय कि
११ मैं धर्मी की मृत्यु मरों और मेरा अंत्य उनका सा हो। तब
बलक़ ने बलआम से कहा कि तूने मुझे क्या किया मैं तुझे
अपने शत्रुन को स्राप देने को लिया और देख तूने उन्हें
१२ सर्वथा आशीष दिया। उसने उत्तर देके कहा कि मुझे उचित
नहीं कि वही बात कहों जो परमेश्वर ने मेरे मुंह में डाली है।
१३ फिर बलक़ ने उसे कहा कि अब मेरे साथ औरही स्थान पर
चलिये वहां से आप उन्हें देखिये आप केवल उनके बाहर
बाहर देखियेगा और उन्हें सब के सब न देखियेगा मेरे लिये
१४ वहां से उन पर स्राप दीजिये। और वुह उसे वहां से
जोफ़ीम के खेत में पसगा की चोटी पर लेगया और सात बेदी
१५ बनाईं हर बेदी पर एक बैल और एक मेंढ़ा चढ़ाया। तब
उसने बलक़ से कहा कि जबलों मैं वहां जाओं ईश्वर से
मिल आओं तू यहां अपने होम के बलिदान पास खड़ा रह।
१६ सो परमेश्वर बलआम को मिला और उसके मुंह में बचन
१७ डाला और कहा कि बलक़ पास फिर जा और यों कह। और
जब वुह उस पास पहुंचा तो क्या देखता है कि वुह अपने होम
के बलिदान के पास मवाब के प्रधानों समेत खड़ा है तब बलक़
१८ ने उसे पूछा कि परमेश्वर ने क्या कहा है। तब उसने अपने
दृष्टांत उठा के कहा कि उठ हे बलक़ और सुन हे सफूर के
१९ बेटे मेरी ओर कान धर। ईश्वर मनुष्य नहीं कि झूठ बोले न
मनुष्य का पुत्र कि वुह पछतावे क्या वुह कहे और न करे अथवा
२० बोले और उसे पूरा न करे। देख मैंने आशीष के निमित्त पाया है
२१ उसने आशीष दिया है मैं उसे पलट नहीं सक्ता। उसने याकूब
में बुराई नहीं देखी न उसने इसराईल में हठ देखा परमेश्वर
उसका ईश्वर उसके साथ है और एक राजा का ललकार उनके

२२ मध्यमें है। ईश्वर उन्हें मिसर से निकाल लाया वुह गैंडे कासा
२३ बल रखताहै। निश्चय याक़ूब के विरोध टोना नहीं और इसराईल के विरुद्ध कोई प्रश्न नहीं इस समय के समान याक़ूब के और इसराईल के विषयमें कहा जायगा कि ईश्वर ने क्या
२४ किया। देखा ये लोग महा सिंह की नाईं उठेंगे और आप को युवा सिंह के समान उठावेंगे वुह न सोवेगा जबलों अहेर
२५ न खाले और जबलों जूझे का लहू नपीले। तब बलक़
२६ ने बलआम से कहा कि न तो उन्हें स्राप न आशीष दीजिये। परंतु बलआम ने उत्तर दिया और बलक़ से कहा क्या मैंने तुझ नहीं कहा कि जो कुछ परमेश्वर कहेगा मैं अवश्य करोंगा।
२७ तब बलक़ ने बलआमसे कहा कि आइये मैं आप को और स्थान पर लेजाओं कदाचित् ईश्वर की इच्छा होवे कि वहां से आप
२८ मेरे लिये उन्हें स्राप दीजिये। तब बलक़ बलआम को पीयर की
२९ चोटी पर जो जशमन के सन्मुखहै लाया। वहां बलआम ने बलक़ से कहा कि मेरे लिये यहां सात बेदी बना और मेरे लिये सात
३० बैल और सात मेंढ़े सिद्ध कर। जैसा बलआम ने कहा था बलक़ ने वैसा किया और हर एक बेदी पर एक बैल और एक मेंढ़ा चढ़ाया।

२४ चैाबीसवां पर्ब्ब।

१ जब बलआम ने देखा कि इसराईल को आशीष देना ईश्वर को अच्छा लगा तब वुह अबकी आगे की नाईं नहीं गया कि टोना करे परंतु उसने अपने मुंह को बन की ओर
२ किया। और बलआम ने अपनी आंखें उठाईं और इसराईल को देखा कि अपनी अपनी गोष्ठियों के समान बसे हैं तब
३ ईश्वर का आत्मा उसपर उतरा। उसने अपने दृष्टांत उठाके कहा कि बऊर के बेटे बलआम ने कहा है और वुह
४ मनुष्य जिसकी आंखें खुलीहैं बोलाहै। जिसने ईश्वर के

बचन को सुना है और सर्वशक्तिमान ईश्वर का दर्शन पाया है
५ सो पड़ा है परंतु आंखें खुली हैं उसने कहा है। हे याकूब
तेरे तंबू क्याही सुंदर हैं और हे इसराईल तेरे तंबू।
६ वे तराई की नाईं और नदी के निकट की बारियों की नाईं
और जैसे अगर के वृक्ष जिसे परमेश्वर ने लगाया है
और जैसे पानी के निकट के आरज वृक्ष होवें फैलेजाते हैं।
७ वुह अपनी मोट से पानी बहावेगा और उसका बीज
बहुतसे पानियों में होगा उसका राजा अगाग से बड़ा
८ होगा और उसका राज्य बढ़जायेगा। ईश्वर उसे मिसर
से बाहर निकाल लाया उसमें गैंड़े कासा बल है वुह अपने
शत्रु के देशियों को भक्षण करेगा और उनकी हड्डियों को
९ चूर करेगा और अपने बाणों से उन्हें छेदेगा। वुह झुकता
है और सिंह की नाईं हां महासिंह की नाईं लेटा है उसे
कौन छेड़ सक्ता है धन्य है वुह जो तुझे आशीष देवे स्रापित है वुह
१० जो तुझे स्राप देवे। तब बलक का क्रोध बलआम पर
भड़का और उसने अपने दोनों हाथों से थपोली पीटी और
बलक ने बलआम से कहा कि मैंने तो तुझे अपने बैरी को स्राप
देने को बुलाया और देख तूने तीन बार उन्हें सर्वथा आशीष
११ दिया है। चल अब अपने स्थान को भाग मैंने तेरी बड़ी प्रतिष्ठा
करने चाहा था पर देख परमेश्वर ने तुझे प्रतिष्ठा से रोक रक्खा।
१२ बलआम ने बलक से कहा कि मैंने तेरे दूतों को जिन्हें तूने
१३ मेरे पास भेजा था नहीं कहा। कि यदि बलक अपना घर
भर चांदी सोना मुझे देवे मैं भला अथवा बुरा करने को
परमेश्वर की आज्ञा को उल्लंघन नहीं करसक्ता परंतु जो कुछ
१४ परमेश्वर कहे मैं वही कहोंगा। अब देख मैं अपने लोगों में
जाता हों सो आ मैं तुझे संदेश देओंगा कि ये लोग तेरे लोगों
१५ से पिछले दिनों में क्या करेंगे। फिर उसने अपने दृष्टांत
उठाके कहा और बोला कि बऊर का पुत्र बलआम कहता है

१६ और वुह मनुष्य जिसकी आंखें खुली हैं कहता है। वही जिसने ईश्वर के बचन को सुना है और अत्यंत महान के ज्ञान को जाना है और जिसने सर्बशक्तिमान का दर्शन पाया है जो पड़ा है
१७ परंतु उसकी आंखें खुली हैं। मैं उसे देखोंगा पर अभी नहीं मैं उसे देखोंगा परंतु पास नहीं याक़ूब से एक तारा निकलेगा और इसराईल से एक राजदंड उठेगा और मवाब के कोनों को मारलेगा और शीस के सारे संतान को नाश करेगा।
१८ अदूम अधिकार होगा और सैईर भी अपने शत्रुन के लिये
१९ अधिकार होगा और इसराईल बीरता करेगा। वुह जो राज्य पावेगा सो याक़ूब से निकलेगा और जो नगर में बच
२० रहेगा उसे नाश करेगा। फिर उसने अमालक को देखा और अपना दृष्टांत उठाया और कहा कि अमालक लोगों
२१ में पहिला था परंतु अंत में वुह नाश होगा। फिर उसने कीनियों पर दृष्टि किई और अपना दृष्टांत उठाया और कहा कि तेरा निवास दृढ़ है तू पहाड़ पर अपना खोंता बनाता है।
२२ तथापि कीनी उजाड़ किये जायेंगे यहांलों कि अशूर तुझे
२३ बंधुआई में लेजायेगा। फिर उसने अपना दृष्टांत उठाया और कहा कि हाय कौन जीता रहेगा जब ईश्वर योंहीं करेगा।
२४ कतीम के तीर से जहाज़ आवेंगे और अशूर को और इबरानियों को सतावेंगे और वुह भी सर्बथा नाश होवेगा तब बलआम उठा और चला और अपने स्थान को फिर गया और बलक़ ने भी अपना मार्ग लिया।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

१ सो इसराईली शित्तिम में रहे और लोगों ने मवाबियों की बेटियों
२ से व्यभिचार करना आरंभ किया। उन्हों ने अपने देवतों के बलिदानों में उन लोगों को नेउंता दिया और लोगों ने
३ खाया और उनकी देवतों को दंडवत् किई। और इसराईल

बाअलफ़ऊर से मिले तब परमेश्वर का क्रोध इसराईल पर
४ भड़का। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों के सारे
प्रधानों को पकड़ और उन्हें परमेश्वर के आगे सूर्य के सन्मुख
टांगदे जिसतें परमेश्वर के क्रोध का भड़कना इसराईल पर से
५ टलजाय। सो मूसाने इसराईल के न्यायियों से कहा कि तुम्में
से हर एक अपने लोगों को जो बाअलफ़ऊर से मिलगये थे
६ मारडाले। सो वहीं एक इसराईली आया और अपने
भाइयों के पास एक मदयानी स्त्री को मूसा और इसराईल के
संतानों की सारी मंडली के साम्ने लाया और वे मंडली के तंबू
७ के द्वार पर बिलाप करतेथे। और हारून याजक के बेटे
इलिआज़र के बेटे फ़निहाज़ ने यह देखा वुह मंडली में से उठा
८ और बरछी हाथ में लिई। और उस मनुष्य के पीछे तंबू में
घुसा और उन दोनों को इसराईली पुरुष और स्त्री के पेट को
९ गोदा तब इसराईल के संतानों में से मरी थमगई। वे जो उस
१० मरी से मरे चौबीस सहस्र थे। फिर परमेश्वर मूसा से कहिके
११ बोला। कि हारून याजक के बेटे इलिआज़र के बेटे फ़निहाज़
ने मेरे कोप को इसराईल के संतानों पर से फेरा जब वुह
उनमें मेरे निमित्त ज्वलित था जिसतें मैंने इसराईल के संतानों
१२ को अपने झल से भस्म नकिया। सो कह कि देख मैं उसे अपने
१३ कुशल की बाचा देताहों। सो वुह उसके और उसके पीछे
उसके वंशके लिये होगा अर्थात् सनातन की याजकता की बाचा
इस कारण कि वुह अपने ईश्वर के लिये ज्वलित था और उसने
१४ इसराईल के संतानों के लिये प्रायश्चित्त दिया। उस इसराईली
मनुष्य का नाम जो उस मदयानी स्त्री के साथ मारागया
ज़िमरी था सालू का बेटा जो शमऊनियों का एक श्रेष्ठ घर का
१५ अध्यक्ष था। और उस मदयानी स्त्री का नाम जो मारीगई
कसबी था सूर की बेटी जो लोगों का प्रधान और मदयान के
१६ संतानों में श्रेष्ठ घर का था। फिर परमेश्वर मूसा से

१७ कहिके बोला। कि मदयानियों को खिझाओ और उन्हें मारो।
१८ क्योंकि उन्हों ने अपने छल से जिस्से उन्हों ने फ़ऊर के विषय में तुम्हें छल दिया और कसबी के विषय में जो मदयानी के प्रधान की बेटी और उनकी बहिन थी जो उस मरी के दिन जो फ़ऊर के कारण से हुई मारी गई उन्हों ने तुम्हें खिझाया।

२६ छबीसवां पर्ब्ब।

१ और ऐसा हुआ कि उस मरी के पीछे परमेश्वर ने मूसा से
२ और हारून याजक के बेटे इलिआज़र से कहा। कि इसराईल के संतानों की समस्त मंडली को बीस बरस से लेके ऊपर लों उनके पितरों के समस्त घरानों को सब जो इसराईल में संग्राम
३ के योग्य हैं गिनती लेओ। सो मूसा और इलिआज़र याजक ने मवाब के चौगानों में अर्दन नदी और अरीहा के लग
४ उनसे कहा। कि बीस बरस से लेके ऊपर लों गिनो जैसे परमेश्वर ने मूसा और इसराईल के संतानों को जो मिसर
५ की भूमि से निकले थे आज्ञा किई थी। राऊबीन इसराईल का पहिलौंठा बेटा राऊबीन का संतान हनूख जिस्से हनूखियों
६ का घराना है और फ़लू जिस्से फ़लूइयों का घराना है। और हजरून जिस्से हजरूनियों का घराना है और करमी जिस्से
७ करमियों का घराना है। ये राऊबीनियों के घराने और जो
८ उनमें गिनेगये सो तेंतालीस सहस्र सात सौ तीस थे। और
९ फ़लू के बेटे अलियाब। और अलियाब के बेटे नमूईल और दासान और अबिराम ये वुह दासान और अबिराम जो मंडली में नामी जो क़ूरह की जथा में मूसा और हारून के बिरोध में झगड़ा जब उन्हों ने परमेश्वर के बिरोध में झगड़ा।
१० और भूमि ने अपना मुंह खोला और उन्हें क़ूरह सहित निंगलगई जिस समय वुह जथा मरगई जब कि उस आगने अढ़ाई सौ मनुष्यों को खालिया और वे एक चिन्ह हुए।

११।१२ तथापि ग़ूरह के संतान नमरे। और शमऊन के बेटे अपने घराने के समान नमूईल से नमूईलियों का घराना और यमीन से यमीनियों का घराना और याख़ीन से याख़ीनियों
१३ का घराना। ज़रह से ज़रहियों का घराना शाऊल से शाऊलियों
१४ का घराना। और ये शमूनियों के घराने बाईस सहस्र दो
१५ सौ थे। जाद़ के संतान अपने घराने के समान सफ़ून से सफ़ूनियों का घराना हजी से हजियों का घराना शूनी से
१६ शूनियों का घराना। अज़नी से अज़नियों का घराना और
१७ अरी से अरियों का घराना। अरूद से अरूदियों का घराना
१८ अरीली से जिसे अरीलियों का घराना। जाद़ के संतान के घराने उनकी गिनती के समान चालीस सहस्र पांच सौ थे।
१९ यहूदा के बेटे ईर और यूनान किनान के देश में मरगये।
२० और यहूदा के बेटे अपने घराने के समान थे हैं शीलाह से शीलानियों का घराना और फ़ारज़ से फ़रजियों का घराना
२१ ज़रह से ज़रहियों का घराना। फ़ारस के बेटे ये हैं हसरून से हसरूनियों का घराना और हामूल से हामूलियों का घराना।
२२ ये यहूदा के घराने उनकी गिनती के समान छिहत्तर सहस्र
२३ पांच सौ थे। यसाख़ार के बेटे उनके अपने घरानों के समान
२४ तूला से तूलियों का घराना पूआ से पूइयों का घराना। याशूब से याशूबियों का घराना शमरून से शमरूनियों का घराना।
२५ ये यसाख़ार के घराने उनमें गिने जाने के समान चौंसठ सहस्र
२६ तीन सौ थे। और ज़बुलून के बेटे अपने घराने के समान सरोद से सरोदियों का घराना ऐलून से ऐलूनियों का घराना
२७ जहलील से जहलियों का घराना। ये ज़बुलूनियों के घराने उनमें गिनेगये के समान साठ सहस्र पांच सौ थे।
२८ और यूसफ के बेटे अपने घराने के समान मनस्सा और
२९ अफ़राईम। मनस्सा के बेटे माख़ीर से माख़ीरियों का घराना माख़ीर से जलआज़ उत्पन्न हुआ जलआज़ से जलआज़ियों का

३० घराना। ये जलआ़ज़ के बेटे औज़र से औज़रियों का घराना
३१ और हलक़ से हलक़ियों का घराना। और असरील से
३२ असरीलियों का घराना शख़म से शख़मियों का घराना। और
शमीदा से शमीदियों का घराना हफ़ीर से हफ़ीरियों का
३३ घराना। हफ़ीर के बेटे जलोफ़िहाद के बेटे नथे परंतु
बेटियां जिनके ये नाम महला और नूआ और हुगला और
३४ मलका और तरसा। ये मनस्सा के घराने उनमें से जो गिनेगये
३५ बावन सहस्र सात सौ थे। अफ़राईम के बेटे अपने घरान
के समान शोथीला से शोथीलियों का घराना और बीकर से
३६ बिकरियों का घराना ताहन से ताहनियों का घराना। और
३७ शोथीला के बेटे ये ईरान से ईरानियों का घराना। ये अफ़राईम
के बेटे के घराने उनमें से जो गिनेगये बत्तीस सहस्र पांच सौ
३८ थे सो यूसफ़ के बेटे अपने घराने के समान ये थे। और बिनयामीन
के बेटे अपने घराने के समान बलअ़ से बलअ़नियों का घराना
अशबील से अशबीलियों का घराना अहीराम से अहीरामियों
३९ का घराना। शोफ़ाम से शोफ़ामियों का घराना हूफ़ाम से
४० हूफ़ामियों का घराना। बौला के बेटे अरद और नामान अरदियों
४१ का घराना नाअ़मान से नाअ़मानियों का घराना। ये बिनयामीन
के बेटे उनके घराने के समान और वे जो उनमें से गिनेगये
४२ पैंतालीस सहस्र छः सौ थे। और दान के बेटे अपने
घराने के समान शौहाम से शौहामियों का घराना दान के
४३ घराने उनके घरानों के समान। शौहामियों के सारे घराने
उनमें की गिनती के समान चौंसठ सहस्र चार सौ थे।
४४ और अशीर के संतान अपने घरानों के समान जमना से
जमनियों का घराना यसवी से यसवियों का घराना बरीया से
४५ बरियों का घराना। बरीया के बेटों से हबर से हबरियों का
४६ घराना मलकाईल से मलकाईलियों का घराना है। और
४७ अशीर की बेटी का नाम सारह था। और ये अशीर के संतान

के घराने हैं उनमें से जो गिनेगये तिरपन सहस्र चार
४८ सौ थे। नफ़ताली के बेटे अपने घराने के समान याज़ईल
से याज़ईलियों का घराना और गुनी से गुनियों का घराना।
४९ और यज़ीरा से यज़रियों का घराना और शलीम से शलीमियों
५० का घराना। उसके घराने के समान ये नफ़ताली के घराने थे
५१ उनमें से जो गिनेगये पैंतालीस सहस्र चार सौ थे। सब
इसराईल के संतान जो गिनेगये छः लाख एक सहस्र सात सौ
५२ तीस थे। फिर परमेश्वर मूसा से कहिके बोला।
५३ कि यह देश उनके नाम की गिनती के समान इनके लिये
५४ अधिकार में भाग कियाजाये। तू बज़तों को बज़तसा अधिकार
दीजियो और थोड़ों को थोड़ा अधिकार हरएक को उसके
५५ गिनेगये के समान दियाजाये। तिसपर भी देश चिट्ठी से बांटा
जावे वे अपने पितरों की गोष्ठियों के नाम के समान अधिकार
५६ पावें। बज़तों और थोड़ों में चिट्ठी से उनका अधिकार बांट
५७ दिया जाये। और वे जो लावियों में से गिनेगये उनके घराने
के समान ये हैं जिरशून से जिरशूनियों का घराना क़हास से
क़हासियों का घराना मरारि से मरारियों का घराना।
५८ लावी के घराने से लबनियों का घराना हबरूनियों का घराना
महली का घराना मूशी का घराना क़ूरह का घराना और
५९ क़हास से अमराम उत्पन्न ज़आ। और अमराम की पत्नी का
नाम यकीबद था लावी की कन्या जिसे उसकी माता लावी से
मिसर में जनी सो वुह अमराम से हारून और मूसा और
६० उनकी बहिन मरियम को जनी। और हारून के बेटे नादाब
६१ और अबीहू और इलिआज़र और इसामार। सो नादाब
और अबीहू उस समय कि वे उपरी आग परमेश्वर के
६२ आगे लाये मरगये। और वे जो उनमें गिनेगये एक मास
से लेके ऊपर लों तेईस सहस्र पुरुष थे ये इसराईल के संतानों
में गिने नहीं गये क्योंकि उन्हें इसराईल के संतान के साथ

६३ अधिकार नहीं दियागया। ये वे इसराईल के संतान हैं जिन्हें मूसा और इलिआज़र याजक ने मवाब के चौगानों
६४ में यर्दन नदी अरीहा के साम्ने गिना। परंतु मूसा और हारून याजक के गिनेहुओं में से जिस समय कि इसराईल के संतान को सीना के बन में गिनाथा एक मनुष्य भी उनमें नथा।
६५ क्योंकि परमेश्वर ने उनके विषय में कहा था कि वे निश्चय अरण्य में मरजायेंगे सो उनमें से केवल यफ़ना के बेटे कालिब और नून के बेटे यशूअ को छोड़ एक भी न बचा।

२७ सताईसवां पर्ब्ब।

१ तब यूसफ़ के बेटे मनस्सा के घराने से मनस्सा के बेटे मखीर के बेटे जलआद के बेटे हफ़ीर के बेटे जुलूफिहाद की बेटियां आईं और उसकी बेटियों के नाम ये हैं महला नूआ हुगला और
२ मलका और तरसा। और मूसा और इलिआज़र याजक और सब मंडली और अध्यक्षों के आगे मंडली के तंबू के द्वार
३ के निकट खड़ी हुईं और बोलीं। कि हमारा पिता बन में मरगया और वुह उनकी जथा में नथा जो परमेश्वर के बिरुद्ध होके एकट्ठे हुए थे अर्थात् क़ूरह की परंतु अपने पाप के
४ कारण मरगया उसके कोई बेटा नथा। सो हमारे पिता का नाम उसके घराने से क्यों कर निकाला जाय क्या इसलिये कि उसके कोई बेटा नथा हमें हमारे पिता के भाइयों में मिल
५ के भाग देओ। मूसा उनका पद परमेश्वर के निकट लेगया।
६।७ परमेश्वर मूसा से कहिके बोला। कि जुलूफिहाद की बेटियां सच कहती हैं तू उन्हें उनके पिता के भाइयों में भागी करके अवश्य अधिकार दे और ऐसा कर कि उनके पिता का
८ अधिकार उन्हीं को पहुंचे। और इसराईल के संतानों से कह यदि कोई पुरुष मरजाये और उसके कोई बेटा नहो तो उसका
९ अधिकार उसकी बेटी को पहुंचे। यदि उसकी बेटी भी न हो

१० तो उसके भाइयों को उसका अधिकार दीजियो। यदि उसके भाई नहीं तो तुम उसका अधिकार उसके पिता के भाइयों
११ को देउ। यदि उसके पिता के भाई भी नहीं तो तुम उसका अधिकार उसके घराने के समीपी कुटुम्ब को देओ वुह उसका अधिकारी होगा और यह आज्ञा इसराईल के संतानों के लिये जैसा परमेश्वर ने मूसा से कहा यह सदा के लिये बिधि
१२ होगी। फिर परमेश्वर मूसा से कहिके बोला कि अब तू अबारीम के पहाड़ पर चढ़जा और उस देश को जो मैंने
१३ इसराईल के संतानों को दिया है देख। और जब तू उसे देख लेगा तूभी अपने लोगों में मिलजायगा जिसरीति से तेरा भाई
१४ हारून मिलगया। क्योंकि मंडली के झगड़े में ज़ीन के अरण्य में तुम मेरी आज्ञा के बिरोध में फिरगये और उनकी आंखों के आगे पानी पास जो मरीबा के पानी कादस में ज़ीन के
१५ अरण्य में मुझे पवित्र नकिया। तब मूसा परमेश्वर के आगे
१६ कहिके बोला। कि हे परमेश्वर सब शरीरों के प्राणों का ईश्वर
१७ किसी को मंडली का प्रधान बना। जो बाहर भीतर उनके आगे आगे आया जाया करे और जो बाहर भीतर उनकी अगुआई करे जिसतें परमेश्वर की मंडली उन भेड़ों
१८ की नाईं नहोजाय जिनका कोई रखवाल नहो। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि नून के बेटे यशूअ को ले जिस
१९ पर आत्मा है और उस पर अपना हाथ रख। और उस इलिआज़र याजक और सारी मंडली के आगे खड़ा कर
२० और उनके आगे उसे आज्ञा कर। और अपनी प्रतिष्ठा में से उस पर कुछ रख जिसतें इसराईल के संतानों की
२१ सारी मंडली वश में होवे। वुह इलिआज़र याजक के आगे खड़ा होवे जो उसके लिये ऊरिम के न्याय के समान परमेश्वर के आगे पूछे वुह और सारे इसराईल के संतानों की सारी मंडली उसके कहने से बाहर जायें और उसके कहने से

२२ भीतर आवें। सो जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने यशूअ को लेके इलिआज़र याजक और सारी मंडली के साम्ने
२३ खड़ा किया। और उसने अपने हाथ उस पर रक्खे और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से कहा था उसे आज्ञा दिई।

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहिके बाेला। कि इसराईल के संतानों काे आज्ञा कर के उन्हें बाेल कि मेरी भेंट और हाेम के बलिदानों की राेटी मेरे सुगंध के लिये उनके समय में पालन करके
३ चढ़ाओ। तू उन्हें कह कि हाेम की भेंट जाे तुम परमेश्वर के लिये चढ़ाइयाे साे यह है कि पहिले बरस के दाे निष्खाेट मेम्ना
४ प्रति दिन नित्य के हाेम की भेंट के लिये। एक मेम्ना बिहान काे
५ और एक मेम्ना सांझ काे। और सवा सेर पिसान और सवा सेर
६ कूटाऊआ तेल भाेजन की भेंट के लिये। यह हाेम की भेंट नित्य के लिये है जाे सीना के पहाड़ पर हाेम के बलिदान परमेश्वर के
७ सुगंध के लिये ठहरायागया है। और उसके पीने की भेंट सवा सेर एक मेम्ना के लिये तीक्ष्ण दाखरस काे परमेश्वर के आगे
८ पीने की भेंट के लिये पवित्र स्थान में बिटावे। और तू दूसरा मेम्ना सांझ काे चढ़ाना तू बिहान के भाेजन की भेंट की नाईं उसके पीने की भेंट की नाईं परमेश्वर के सुगंध के लिये हाेम की
९ भेंट चढ़ा। और बिश्राम के दिन पहिले बरस का दाे निष्खाेट मेम्ना अढ़ाई सेर पिसान भाेजन की भेंट के लिये तेल से
१० मिलाऊआ और उसके पीने की भेंट समेत। हर एक बिश्राम के हाेम की भेंट नित्य के हाेम की भेंट काे छाेड़ के और उसके
११ पीने की भेंट यही है। और तुम्हारे मास के आरंभ में हाेम की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे दाे बछड़े एक मेढ़ा पहिले
१२ बरस के निष्खाेट सात मेम्ने चढ़ाओ। एक बछड़ा के लिये तेल से मिलाऊआ पाैने चार सेर पिसान भाेजन की भेंट के लिये एक

मेढ़े के लिये तेल से मिलाऊआ अढ़ाई सेर पिसान भोजन की
१३ भेंट के लिये। एक मेम्ना के भोजन की भेंट के लिये तेल से
मिलाऊआ सवा सेर पिसान सुगंध के होम की भेंट के लिये
१४ आग से बनाया ऊआ परमेश्वर के लिये बलिदान। और उनके
पीने की भेंट एक बछड़े पीछे अढ़ाई सेर दाखरस और मेढ़े
पीछे अढ़ाई पाव है और मेम्ना पीछे सवा सेर बरस के हर
१५ मास के होम का बलिदान यह है। और नित्य के होम के
बलिदान और उसके पीने के बलिदान को छोड़ पाप की
भेंट के लिये परमेश्वर के आगे बकरी का एक मेम्ना चढ़ाया
१६ जाय। पहिले मास की चौदहवीं तिथि परमेश्वर का पारजाना
१७ है। और इस मास के पंदरहवीं तिथि को पार जाने
का पर्ब्ब होगा सात दिन तुम अख़मीरी रोटी खाइयो।
१८ पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा उस दिन तुम कोई
१९ संसारिक कार्य न करना। और होम का बलिदान आग से
परमेश्वर के लिये यह चढ़ाइयो दो बछड़े एक मेढ़ा पहिले
२० बरस के सात निष्खोट मेम्ने। और उनके साथ भोजन की
भेंट पौने चारसेर पिसान तेल से मिलाऊआ हर बछड़े
२१ पीछे और हर मेढ़े पीछे अढ़ाई सेर चढ़ाइयो। और सातों
२२ मेम्ना में से हर मेम्ना पीछे सवा सेर चढ़ाइयो। और अपने
प्रायश्चित्त के निमित्त पाप की भेंट के लिये एक बकरी।

२३ तुम बिहान के होम के बलिदान से अधिक जो सदा
२४ जलायाजाता है चढ़ाया करो। परमेश्वर के सुगंध के लिये
होम के बलिदान के मांस को सात दिन भर प्रतिदिन इस
रीति से चढ़ाइयो नित्य के होम की भेंट और पीने की भेंट को
२५ छोड़ के इसे चढ़ाइयो। सातवां दिन तुम्हारा पवित्र बुलावा है
२६ उसमें तुम कोई संसारिक कार्य न करना। और
पहिले फल के दिन में भी जब तुम भोजन की भेंट अपने
अठवारों के पीछे परमेश्वर के आगे चढ़ाइयो तो तुम्हारे लिये

२७ पवित्र बुलावा होवे कोई संसारिक कार्य नकीजियो। और तुम परमेश्वर के सुगंध के लिये होम की भेंट चढ़ाइयो दो बछड़े एक मेढ़ा पहिले बरस का सात निष्खोट मेम्ना चढ़ाइयो।
२८ और उनके भोजन की भेंट पौने चार सेर पिसान तेल से मिलाऊआ हर बछड़े पीछे और अढ़ाई सेर हर मेंढ़े पीछे।
२९।३० और सवासेर सातों मेम्ना में से हर एक मेम्ना पीछे। और एक बकरी का मेम्ना जिसतें तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त में दियाजाय।
३१ सो नित्य के होम की भेंट और उसके भोजन की भेंट जो तुम्हारे लिये निष्खोट होवे और उनके पीने की भेंट छोड़के उसे जो निष्खोट होवे चढ़ाइयो।

२९ उंतीसवां पर्ब्ब।

१ और सातवें मास के पहिली तिथि में तुम्हारा पवित्र बुलावा होगा तुम कोई सेवा का कार्य न कीजियो यह तुम्हारे नरसिंगे
२ फूकने का दिन है। तुम परमेश्वर के सुगंध के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा और पहिले बरस का सात निष्खोट मेम्ना होम का
३ बलिदान चढ़ाइयो। और उनके भोजन की भेंट हर बछड़े पीछे पौने चार सेर पिसान तेल से मिलाऊआ और हर मेढ़े पीछे
४ अढ़ाई सेर। और सातो मेम्ना के लिये हर मेम्ना पीछे
५ सवा सेर। और बकरी का एक मेम्ना पाप की भेंट के लिये
६ जिसतें तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त कियाजाये। मास के होम की भेंट और उसके भोजन की भेंट और प्रतिदिन के होम की भेंट और उसके भोजन की भेंट और उनके पीने की भेंट उनके रीति के समान आग से कियेऊए बलिदान के अधिक परमेश्वर
७ के सुगंध के लिये चढ़ाइयो। और इस सातवें मास की दसवीं तिथि में पवित्र बुलावा होगा और तुम अपने प्राण
८ को क्लेश दीजियो और कोई कार्य नकरियो। परंतु परमेश्वर के सुगंध के होम की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा पहिले

बरस का सात मेम्ना चढ़ाइयो वे तुम्हारे लिये निष्खोट होवें।
९ और उनके भोजन की भेंट पौनेचार सेर पिसान तेल से मिलाऊआ बछड़ा पीछे और हर मेंढ़ा पीछे अढ़ाई सेर।
१०।११ और सातो मेम्ना के लिये हर मेम्ना पीछे सवा सेर। पाप के प्रायश्चित्त के भेंट के और नित्य के होम की भेंट के और उसके भोजन की भेंट के और उनके पीने की भेंट के अधिक पाप की
१२ भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना। और सातवें मास के पंदरहवीं तिथि में तुम्हारा पवित्र बुलावा होगा उस दिन तुम सेवा का कोई कार्य्य नकरो और सात दिन तक परमेश्वर के
१३ लिये पर्ब्ब करो। फिर तुम होम की भेंट के लिये परमेश्वर के सुगंध के लिये तेरह बछड़े दो मेंढ़े और पहिले बरस का चौदह मेम्ना आग से कियेऊए बलिदान चढ़ाइयो ये सब निष्खोट
१४ होवें। और उनके भोजन की भेंट तेल से मिलाऊआ पौनेचार सेर पिसान तेरह बछड़ों में से हर बछड़े के लिये अढ़ाई सेर
१५ दो मेंढ़ों में से हर मेंढ़े पीछे। और चौदह मेम्नों में से हर
१६ मेम्ना पीछे सवा सेर। नित्य के होम की भेंट और उसके भोजन की भेंट और उसके पीने की भेंट से अधिक पाप की भेंट
१७ के लिये बकरी का एक मेम्ना चढ़ाइयो। और दूसरे दिन बारह बछड़े दो मेंढ़े पहिले बरस के चौदह निष्खोट मेम्ने
१८ चढ़ाइयो। और उनके भोजन की भेंट और उनके पीने की भेंट बछड़ों और मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उनकी गिनती के
१९ और रीति के समान होवे। नित्य के होम की भेंट के और उसके भोजन की भेंट के और उनके पीने की भेंट के अधिक
२० पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना। और तीसरे दिन ग्यारह बछड़े दो मेंढ़े और पहिले बरस के चौदह निष्खोट
२१ मेम्ने। और उनके भोजन की भेंट और उनके पीने की भेंट बछड़ों और मेंढ़ों और मेम्नों उनकी गिनती के और रीति के
२२ समान होवें। नित्य के होम की भेंट के और उसके भोजन की

भट के और उसके पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट क
२३ लिये बकरी का एक मेम्ना चढ़ाइयो। और चौथे दिन
दस बछड़े दो मेढ़े पहिले बरस का चौदह निखोट मेम्ना।
२४ और उनके भोजन की भेंट और उनके पीने की भेंट बछड़ों
और मेढ़ों और मेम्नों के लिये उनकी गिनती के और रीति
२५ के समान होवें। नित्य के होम की भेंट के और उसके भोजन
की भेंट के और उसके पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट के
२६ लिये बकरी का एक मेम्ना होवे। और पांचवें दिन
नव बछड़े दो मेढ़े पहिले बरस के चौदह निखोट मेम्ने।
२७ और उनके भोजन की भेंट और उनके पीने की भेंट बछड़ों
और मेढ़ों और मेम्नों के लिये उनकी गिनती के और रीति के
२८ समान होवें। नित्य के होम की भेंट और उसके भोजन की
भेंट के और उसके पीने की भेट के अधिक पाप की भेंट के लिये
२९ एक बकरी होवे। और छठवें दिन आठ बछड़े दो मेढ़े
३० पहिले बरस के चौदह निखोट मेम्ने। और उनके भोजन की
भेंट और उनके पीने की भेंट बछड़ों और मेढ़ों और मेम्नों
३१ के लिये उनकी गिनती के और रीति के समान होवे। नित्य
के होम की भेंट के और उसके भोजन की भेंट के और उसके
पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे।
३२ और सातवें दिन सात बछड़े दो मेढ़े पहिले बरस के
३३ चौदह निखोट मेम्ने। और उनके भोजन की भेंट और उनके
पीने की भेंट बछड़ों और मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उनकी गिनती
३४ के और रीति के समान होवे। नित्य के होम की भेंट के और
उसके भोजन की भेंट के और उसके पीन की भेंट के अधिक
३५ पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे। आठवें दिन
तुम्हारी पवित्र सभा होगी तुम उस दिन सेवा का कोई कार्य्य
३६ न कीजियो। फिर तुम एक बछड़ा एक मेंढ़ा पहिले बरस के
सात निखोट मेम्ने होम की भेंट के कारण परमेश्वर के सुगंध

३७ के लिये आग से बनाईझई भेंट चढ़ाइयो। और उनके भोजन की भेंट और उनके पीने की भेंट बकड़ों और मेंढ़ों और मेम्नों के लिये उनकी गिनती के और रीति के समान
३८ होवे। नित्य के होम की भेंट के और उसके भोजन की भेंट के और उसके पीने की भेंट के अधिक पाप की भेंट के लिये
३९ एक बकरी होवे। अपनी मनौतियों के और अपनी वांछित भेंटों के और अपने होम की भेंटों के और भोजन की भेंटों के और पीने की भेटों के और अपने कुशल की भेंटों के अधिक
४० तुम इन्हें अपने ठहरायेझए पर्ब्बों में कीजियो। और मूसा ने परमेश्वर की समस्त आज्ञा के समान इसराईल के संतानों से कहा।

३० तीसवां पर्ब्ब।

१ यह वुह बात है जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी और उसने गोष्ठियों के प्रधानों से इसराईल के संतान के विषय में
२ कहा। यदि कोई पुरुष परमेश्वर की मनौती माने अथवा किरिया खाके अपने प्राण को बंधन में करे तो वुह अपनी बाचा को नतोड़े परंतु जो कुछ उसने अपने मुंह से कहा है
३ संपूर्ण करे। और यदि कोई स्त्री परमेश्वर की मनौती माने और अपने लड़काई में अपने पिता के घर में होतेझए आप
४ को बाचा में बांधे। और उसका पिता उसकी मनौती और उसकी बाचा जिस्से उसने अपने प्राण को बांधा है सुनके चुप होरहे तो उसकी सब मनौतियां और हर एक बाचा जिस्से
५ उसने अपने प्राण को बांधा है स्थिर रहेगी। परंतु यदि उसका पिता सुनतेझए उसे मान्ने नदेवे तो उसकी कोई मनौती और कोई बाचा जो उसने अपने प्राण को उस्से बांधा नठहरेगी और परमेश्वर उस स्त्री को क्षमा करेगा क्योंकि उसके पिता ने
६ उसे मान्ने नदिया। और जब उसने मनौती मानी अथवा

अपने मुंह से अपने प्राण को किसी बाचा से बांधा और यदि
७ उसका पति होवे । और उसका पति सुन के उस दिन चुपका
होरहा तो उसकी मनौतियां ठहरेंगी और उसकी बाचा
८ जिनसे उसने अपने प्राण को बांधा ठहरेगी। परंतु यदि
उसका पति सुनके उसी दिन उसने उसे मान्ने नदियाहो तो
उसने उसकी मनौती को जो उसने मानी और उसकी बाचा
को जो उसने अपने मुंह से अपने प्राण को उस्से बांधा बृथा किया
९ तो परमेश्वर उस स्त्री को क्षमा करेगा। परंतु बिधवा और
त्यक्त स्त्री अपनी हर एक मनौती जिस्से उन्होंने अपने प्राण
१० को बांधा उनपर बनी रहेगी। और यदि उसने अपने पति
के घर होतेऊए कुछ मनौती मानीहो और किरिया करके
११ किसी बाचा में आप को बांधे हो। उसका पति सुन के
चुप होरहे और उसे नरोके तो उसकी मनौतियां ठहरेंगी
और उसकी हर एक बाचा जिस्से उसने अपने प्राण को बांधा
१२ ठहरेगी। परंतु यदि सुनके उसी दिन उसका पति उसे
बृथा करे तो जो कुछ मनौतियें और अपने प्राण के बंधन के
बिषय में उसके मुंह से निकला सो नठहरेंगी उसके पति ने
१३ उन्हें बृथा किया परमेश्वर उसे क्षमा करेगा। सब मनौतियां
और किरिया जिस्से उसने अपने प्राण को दुःख देने के लिये
बांधा उसका पति चाहे तो उसे ठहरावे और चाहे मिटावे।
१४ परंतु यदि उसका पति सुनके प्रतिदिन चुप रहे तो उसने
उसकी समस्त मनौतियें और बाचें को जो उसपर हैं स्थिर
किया क्योंकि सुनके उसने अपने चुप रहने से उन्हें स्थिर किया।
१५ परंतु यदि उसने सुनलिया और उसके पीछे उसे बृथा किया तो
१६ वुह उसका पाप भोगेगा। पति और उसकी पत्नी के मध्य में
और पिता पुत्री के मध्य में जब पुत्री लड़काई के समय में पिता
के घर होवे ये बिधि जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहिके बोला। कि इसराईल के संतानों का पलटा मदियानियों से ले इसके पीछे तू अपने लोगों में
३ मिलजायेगा। तब मूसा ने लोगों से कहा कि आपुस में कितने संग्राम के लिये लैस करो और मदियानियों का सामा करो
४ जिसतें परमेश्वर का पलटा मदियानियों से लेओ। इसराईल की समस्त गोष्ठियों में से हर एक गोष्ठी से एक एक सहस्र
५ संग्राम करने को भेजो। सो इसराईल के सहस्रों में से हर गोष्ठी पीछे एक सहस्र बारह सहस्र हथियारबंध युद्ध के लिये
६ सौंपेगये। मूसा ने उन्हें इलिआज़र याजक के बेटे फिनिहास़ के साथ करके लड़ाई पर भेजा और पवित्र पात्र और फूकने
७ के नरसिंगे उसके हाथ सौंपे। जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उन्हों ने मदियानियों से युद्धकिया और सारे पुरुषों को
८ मारडाला। और उन्हों ने उन जूझेऊओं से अधिक मदियान के राजा अवी और रक़म और सूर और हूर और रीबा को जो मदियान के पांच राजा थे प्राणसे मारा और बऊर के बेटे
९ बलआम को भी खड्ग से मारडाला। और इसराईल के संतानों ने मदियान की स्त्रियों को और उनके गदेलों को बंधुआई में लिया और उनके पशु और चौपाय और संपत्ति समस्त
१० लूट लिया। और उनकी सारी बस्तियों और जिनमें वे रहतेथे
११ और उनके सुंदर गढ़ों को फूंक दिया। और उन्हों ने सारी
१२ लूट और समस्त मनुष्य और पशु को अहेर किया। और मूसा और इलिआज़र याजक और इसराईल के समस्त संतानों की मंडली छावनी में मवाब के चौगानों में जो अर्दन क लग
१३ अरीहा है बंधुए और लूट और अहेर को लाये। तब मूसा और इलिआज़र याजक और मंडली के समस्त प्रधान उन्हें आगे से मिलने के लिये छावनी में से बाहर गये।
१४ और मूसा सेना के प्रधानों से और सहस्रों के पतिन से

१५ और सैकड़ों के पतिन से जो लड़ाई से आये क्रुद्ध ज्ज्ञआ। और मूसा ने उन्हें कहा कि तुमने सब स्त्रियों को जीता रक्खा।
१६ देखो इन्होंने बलआम के मंत्र से इसराईल के बंश को पियूर के विषय में परमेश्वर के बिरोध में अपराध करवाया सो परमेश्वर
१७ की मंडली में मरीपड़ी। इस लिये गदेलों में से हर एक बेटे को और हर एक स्त्री को जो पुरुषसे संयुक्तज्ज्ञई हो प्राण से
१८ मारो। परंतु वे बेटी जो पुरुष से संयुक्त नज्ज्ञई हैं उन्हें अपने
१९ लिये जीती रक्खो। और तुम सारे दिन लों छावनी से बाहर रहो जिस किसी ने मनुष्य को मारा हो और जिस किसी ने लोथ को छूआ हो वुह आप को और अपने बंधुओं को तीसरे
२० दिन और सातवें दिन पवित्र करे। तुम अपने समस्त बस्त्र और सब जो चमड़े के बनेज्ज्ञए हैं और सब बकरी के रोम के
२१ कार्य और काष्ठ के पात्र शुद्ध करो। तब इलिआज़र याजक ने उन योद्धाओं को जो लड़ाई में गयेथे कहा कि यह व्यवस्था की बिधि है जो परमेश्वर ने मूसा से आज्ञा किई।
२२।२३ सोना रूपा पीतल लोहा रांगा सीसा। और समस्त बस्तें जो आग में ठहरें तुम उन्हें आग में डालो और पवित्र करो तथापि वुह अलग कियेज्ज्ञये जल से पवित्र कियाजायगा और सब बस्तें जो आगमें नहीं ठहरती तुम उन्हें जल में
२४ डालो। और सातवें दिन अपने कपड़े धोके पवित्र होओगे
२५ उसके पीछे छावनी में आओ। फिर परमेश्वर मूसा से कहि के
२६ बोला। कि तू और इलिआज़र याजक और मंडली के सब प्रधान मिलके मनुष्य की और पशुन की जो लूट में आयेहैं गिनती
२७ करो। और लूट को दो भाग करो एक उनको जो संग्राम में
२८ लड़े और एक समस्त मंडली को देउ। और योद्धा से जो लड़ाई में चढ़गये थे परमेश्वर के लिये कर लेओ पांच सौ में एक प्राणी चाहे मनुष्य हों चाहे गाय बैल चाहे गदहे हों चाहे
२९ भेड़ बकरी। और इलिआज़र याजक को दे जिसतें परमेश्वर

३० के लिये उठाने की भेंट होवे। और इसराईल के संतानों
के भाग में से क्या मनुष्य क्या गाय बैल क्या गदहे क्या भेड़
बकरी पचास पचास पीछे एक एक ले और लावियों को
३१ दे जो परमेश्वर के छावनी की रक्षा करते हैं। सो मूसा
और इलिआज़र याजक ने वैसाही किया जैसा परमेश्वर ने
३२ मूसा को आज्ञा किई। लूट का बचाऊआ जो योद्धा लोगों
३३ के पास था यह था छः लाख पचहत्तर सहस्र भेड़। और
३४ वहत्तर सहस्र गाय बैल। और एकसट सहस्र गदहे।
३५ और वे लड़कियां जो पुरुष से संयुक्त नथीं बत्तीस सहस्र
३६ थीं। तो आधा जो योद्धा लोगों का भाग ठहरा यह था
३७ तीन लाख सैंतीस सहस्र पांच सौ भेड़। और परमेश्वर का
३८ कर भेड़ में से छः सौ पचहत्तर थीं। और गाय बैल छत्तीस
३९ सहस्र थे जिनमें से परमेश्वर का कर वहत्तर थे। और गदहों
में से जो तीस सहस्र पांच सौ थे परमेश्वर का भाग एकसठ
४० थे। और मनुष्य में से जो सोलह सहस्र थे परमेश्वर का
४१ कर बत्तीस जन ऊए। सो मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के
समान उस कर को जो परमेश्वर की उठाने की भेंट थी
४२ इलिआज़र याजक को दिई। और इसराईल के संतानों
४३ का भाग जो मूसा ने योद्धा लोगों से लिया। सो बुह आधा
जो मंडली का भाग ऊआ यह था तीन लाख सैंतीस सहस्र
४४।४५ पांच सौ भेड़। और छत्तीस सहस्र ढोर। और तीस
४६।४७ सहस्र पांच सौ गदहे। और सोलह सहस्र जन। जैसा
परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा ने इसराईल के संतानों के
भाग में से हर पचास जीवधारी पीछे मनुष्य और पशु से
एक एक लिया और उसे लावियों को जो परमेश्वर के तंबू की
४८ रक्षा करते थे दिया। तब सेना के सहस्र पति और
४९ शत पति मूसा के पास आये। और उन्हों ने मूसा से कहा कि
तेरे सेवकों ने समस्त योद्धाओं को जो हमारी आज्ञा में हैं

५० गिना और उनमें से एक पुरुष भी न घटा। सो हम हर एक वस्तु में से जो हर एक ने पाई परमेश्वर के लिये भेंट लाये हैं सोने के गहने और सीकरें और कड़े और अंगूठियां और बालियां और जंत्र जिसतें हमारे प्राणों के लिये परमेश्वर
५१ के आगे प्रायश्चित्त होवे। सो मूसा और इलिआज़र याजक
५२ ने सोने के बनाये ऊए समस्त गहने उनसे लिये। और भेंट का सब सोना जो सहस्रपति और शतपतिन ने परमेश्वर के लिये
५३ चढ़ाया सो मन आठ एक का था। क्योंकि योद्धा में से हर एक
५४ जन अपने अपने लिये लूट लाया था। सो मूसा और इलिआज़र याजक उस सोने को जो उन्हों ने सहस्रों और सैकड़ों के प्रधानों से लिया मंडली के तंबू में लाये जिसतें परमेश्वर के आगे इसराईल के संतानों का स्मरण हो।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ अब राओबीन और जाद़ के संतानों के ढोर अति बऊत थे सो जब उन्हों ने जाज़र और जलआद के देश को देखा कि ढोर के लिये
२ बऊत अच्छा है। तो उन्हों ने आके मूसा और इलिआज़र याजक
३ और मंडली के अध्यक्षों से कहा। कि अतारूत और दीबून और ज़जीर और नमरा और हश्बून और इलआली और शबाम
४ और नबू और बऊन का देश। जिसे परमेश्वर ने इसराईल की मंडली के आगे मारा ढोर का देश और तेरे दासों के
५ ढोर हैं। इस कारण उन्हों ने कहा यदि आप की दृष्टि में हम लोगों ने अनुग्रह पाया है तो इस देश को अपने सेवकों के
६ अधिकार में दीजिये और हमें अर्दन पार न लेजाइये। मूसा ने जाद के संतान और राओबीन के संतान से कहा कि क्या तुम्हारे भाई लड़ाई करने जावें और तुम यहीं बैठे रहोगे।
७ जिस देश को परमेश्वर ने उन्हें दिया है उसमें जाने से
८ इसराईल के संतानों के मन को क्यों घटाते हो। जब मैं ने तुम्हारे पितरों को क़ादसबरनिया से उस देश को देखने भेजा

९ उन्हों ने भी ऐसाही किया। और जब वे अश्कूल की तराई को पहुंचे और उस देश को देखा तो उन्हों ने इसराईल के संतानों के मन को घटा दिया जिस्तें वे उस देश को जो
१० परमेश्वर ने उन्हें दिया था नजावें। और तभी परमेश्वर का
११ क्रोध भड़का और उसने किरिया खाके कहा। कि निश्चय लोगों में से जो मिसर से निकले बीस बरस से लेके ऊपर लों कोई उस देश को जिसके विषय में मैंने इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब से किरिया खाई है नदेखेगा इस कारण कि वे
१२ निरधार मेरी बात पर नचले। केवल कनीजी यफनी का बेटा कालिब और नून का बेटा यशूअ क्योंकि वे परमेश्वर की
१३ ओर निरधार चले। तब परमेश्वर का क्रोध इसराईल पर भड़का और उसने उन्हें बन में चालीस बरस लों भरमाया यहां लों कि वुह समस्त पीढ़ी जो परमेश्वर के आगे बुराई
१४ करती थी नष्ट हुई। और देखो तुम लोग अपने पितरों की संती पापमय जन बढ़गयेहो जिस्तें परमेश्वर के क्रोध को
१५ इसराईलियों की ओर बढ़ाओ। यदि तुम उस्से फिरजाओगे तो वुह उन्हें फिर बन में छोड़देगा और तुम इन सब लोगों
१६ को नाश करोगे। तब वे उसके पास आये और बोले कि हम अपने ढोर के लिये यहां भेड़ शाले और अपने बालकों
१७ के कारण नगर बनावेंगे। पर हम हथियार बांधेहुए लैस होके इसराईल के संतानों के आगे आगे जायेंगे यहां लों कि उन्हें उनके स्थान लों पहुंचावें और देश के वासियों के कारण हमारे
१८ बालक घेरित नगरों म रहेंगे। हम अपने घरों को नफिरेंगे जब लों इसराईल के संतानों में से हर एक अपना अपन
१९ अधिकार नपालेवें। क्योंकि हम उनके संग अर्दन के उस पार अथवा आगे अधिकार नलेंगे इस लिये कि हमारा अधिकार
२० पूर्ब का अर्दन के इस पार मिला है। मूसा ने उन्हें कहा कि यदि तुम यह करो और परमेश्वर के आगे हथियार बांधेहुए
२१ जाओगे। और हथियार बांधके परमेश्वर के आगे अर्दन के

उस पार जाओ यहां लों कि वुह अपने बैरियों को अपने आगे
२२ से दूर करे। और वुह देश परमेश्वर के आगे बश में होय
तो उसके पीछे तुम फिर आओगे और परमेश्वर के और
इसराईल के आगे निर्दोष ठहरागे तब परमेश्वर के आगे
२३ तुम्हारा अधिकार होगा। परंतु यदि तुम यूं न करोगे तो
देखो कि तुम परमेश्वर के आगे पापी ऊए और निश्चय जानो
२४ कि तुम्हारा पाप तुम्हें पकड़ेगा। सो तुम अपने बालकों के लिये
नगर बनाओ और अपनी भेड़ों के लिये भेड़शाले और जो
२५ तुम्हारे मुंह से निकला है सो करो। तब जाद के संतान और
राओबीन के संतान मूसा से कहिके बोले कि जैसा मेरे स्वामी
२६ ने आज्ञा किई है वैसाही तेरे सेवक करेंगे। हमारे बालक
हमारी पत्नियां हमारी झुंड हमारे ढोर जलआज़ के नगरों
२७ में रहेंगे। परंतु जैसा मेरा प्रभु कहता है, तेरे सेवक हर
एक हथियार बांधे ऊए संग्राम के लिये परमेश्वर के आगे
२८ पार जायेंगे। तब मूसा ने उनके विषय में इलिआज़र याजक
को और नून के बेटे यशूअ को और इसराईल के संतानों की
२९ गोष्ठी के प्रधान पितरों को कहा। और मूसा ने उन्हें कहा कि
यदि जाद के संतान और राओबीन के संतान परमेश्वर के आगे
तुम्हारे साथ अर्दन के पार हथियार बांध के जावें और लड़ें
और देश तुम्हारे बश में आवे तो तुम जलआज़ का देश उनका
३० अधिकार करदीजियो। परंतु यदि वे हथियार बांध के तुम्हारे
साथ पार नजावें तो वे एकट्ठे रहके किनान के देश में अधिकार
३१ पावें। तब जाद के संतान और राओबीन के संतान उत्तर में
बोले कि जैसा परमेश्वर ने तेरे सेवकों को कहा हम वैसाही
३२ करेंगे। हम हथियार बांध के परमेश्वर के आगे उस पार
किनान के देश को जायेंगे जिसतें अर्दन के इधर का देश
३३ हमारा अधिकार होवे। तब मूसा ने अमूरियों के राजा सैहून
का राज्य और बासान के राजा ऊज का राज्य वुह देश उनके
नगर समेत जो उस सिवाने में है और देश के चारों ओर

के नगरों को जाद के संतान और राओबोन के संतान और
३४ यूसफ के पुत्र मनस्सा की आधी गोष्ठी को दिया। तब
३५ जाद के संतान ने दीबून और अताहस और अरूईर। और
३६ अतहस और शूफ़ान और ज़ज़ीर और यग़बहा। और
बैतनिमरा और घेरेऊए नगर भेड़ों के लिये भेडशाले बनाये।
३७ और राओबोन के संतान ने हश्बून और इलआला और
३८ क़रयासाईम। और नबू और बाअलमीऊन उनके नाम फेरे
गये) और सबमा और उन नगरों के जो उन्हों ने बनाये औरही
३९ नाम रक्खे। तब माखीर के संतान मनस्सा के बेटे जलआद को
गये और उसे लेलिया और उसमें के अमूरियों को उठादिया।
४० और मूसा ने जलआज़ को माखीर मनस्सा के बेटे को दिया और
४१ वुह उसमें बास किया। और मनस्सा का बेटा यायर निकला
और उसके छोटे छोटे नगरों को लेलिया और उनका नाम
४२ यायरगावं रक्खा। और नूबा गया और क़नास और उसके
गांओं को लेलिया और उसका नाम अपने नाम के समान
नूबा रक्खा।

३३ तेंतीसवां पर्ब्ब।

१ मूसा और हारून के बश में होके मिसर देश से अपनी अपनी
सेना समेत इसराईल के संतान बाहर निकल आये उनकी
२ यात्रा ये हैं। और मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के समान
उनकी यात्रा के अनुसार उनका कूंच लिख रक्खा और उनकी
३ यात्रा के अनुसार उनका कूंच यह है। कि इसराईल के संतान
पहिले मास की पंदरहवीं तिथि में बीत जाने के पर्ब्ब के दूसरे
दिन रमसीस से बड़े बल के साथ यात्रा करके समस्त मिसरियों
४ की दृष्टि में सिधारे। क्योंकि मिसरियों ने अपने समस्त पहिलौंठों
को जिन्हें परमेश्वर ने उन में नाश किया था गाड़ा परमेश्वर ने
५ उनके देवतों को भी न्याय का दंड दिया। सो इसराईल के
६ संतानों ने रमसीस से उठके सकूस में डेरे किये। और सकूस

७ से चलके अताम में जो बनके सिवान में है डेरा किया। फेर अताम से कूच करके पीहाहिरूत को जो बालज़फून के सन्मुख
८ है फिरगये और मगदूल के आगे डेरा किया। फिर पिहाहीरूत से चले और समुद्र के मध्य में से निकल के बन में आये और ईथाम के बन में तीन दिन के टप्पे पर गये और मारा में डेरा
९ किया। और मारा से चलके ईलीम में आये जहां पानी के बारह सोते और खोहाड़े के सत्तर पेड़ थे और वहां डेरा किया।
१० और ईलीम से यात्रा करके लाल समुद्र के लग डेरा किया।
११।१२ और लाल समुद्र से चलके सीन के बन में डेरा किया। और
१३ सीना के बन से यात्रा करके दफका में डेरा किया। और दफका
१४ से चलके आलश में डेरा किया। और आलश से चलके रफ़ीदीम
१५ में डेरा किया वहां लोगों के पीने के लिये पानी न था। और
१६ रफ़ीदीम से चलके सीना के अरण्य में आये। और सीना के
१७ अरण्य से चलके किब्रूसहटावा में डेरा किया। और किब्रूसहटावा
१८ से यात्रा करके हसीरूस में डेरा किया। और हसीरूस से चलके
१९ रसमा में डेरा किया। और रसमा से चलके रमूनफारस में
२० डेरा किया। और रमूनफारस से चलके लबना में डेरा किया।
२१।२२ और लबना से चलके रिस्सा में डेरा किया। और रिस्सा
२३ से चलके क़हीलाथा में डेरा किया। और क़हीलाथा से चलके
२४ शाफर पहाड़ में डेरा किया। और शाफर पहाड़ से चलके
२५ हरादा में डेरा किया। और हरादा से चलके मखीलूत में डेरा
२६।२७ किया। और मखीलूत से चलके ताहस में डेरा किया। और
२८ ताहस से चलके तारह में डेरा किया। और तारह से यात्रा
२९ करके मिथ्का में डेरा किया। और मिथ्का से चलके हश्मूना में
३० डेरा किया। और हश्मूना से चलके मूसीरूस में डेरा किया।
३१ और मूसीरूस से चलके बनीयाअक़ान में डेरा किया।
३२ और बनीयाअक़ान से चलके हूरहागिदगाद में डेरा किया।
३३ और हूरहागिदगाद से चलके यतबाता में डेरा किया।
३४।३५ और यतबाता से चलके इबरूना में डेरा किया। और

३६ इब्रूना से चलके असीयूनगाबर में डेरा किया। और असीयूनगाबर से सीन के अरण्य में जो क़ादस है डेरा किया।
३७ और क़ादस से चलके हूर पर्ब्बत के बन में जो अदूम के
३८ देश का सिवाना है डेरा किया। हारून याजक परमेश्वर की आज्ञा से हूर पर्ब्बत पर चढ़गया और वहां मर गया यह इसराईल के संतानों के मिसर से बाहर निकलने के
३९ चालीसवें बरस के पांचवें मास की पहिली तिथि थी। और हारून एक सौ तेईस बरस का था जब वुह हूर पर्ब्बत पर
४० मरगया। और अराद राजा किनानी ने जो किनान के देश की दक्षिण ओर रहताथा सुना कि इसराईल के संतान आ पहुंचे।
४१ और हूर पर्ब्बत से यात्रा करके सलमूना में डेरा किया।
४२।४३ और सलमूना से चलके पूनून में डेरा किया। और पूनून
४४ से चलके अबूस में डेरा किया। और अबस से चलके
४५ अजीअबरीम में जो मवाब का सिवाना है डेरा किया। और
४६ ईम से चलके दीबूनज़ाज में डेरा किया। और दीबूनज़ाज से
४७ चलके अलमूनदबलासाईम में डेरा किया। और अलमून दबलासाईम से यात्रा करके अबरीम पर्ब्बतों पर नबू के
४८ आगे डेरा किया। और अबरीम पर्ब्बतों से चलके मवाब के चौगानों में अर्दन के तीर पर जो अरीहा के लग है डेरा
४९ किया। और अर्दन के तीर बैतयसीमूस से यात्रा करके अबलश्तीम से होके मवाब के चौगानों में डेरा किया।

५० और परमेश्वर मवाब के चौगानों में अर्दन के तीर
५१ अरीहा के लग मूसा से कहिके बोला। कि इसराईल के संतानों को आज्ञा कर और कह कि जब तुम अर्दन से पार होके
५२ किनान के देश में पहुंचो। तब तुम उन सब को जो उस देश के बासी हैं अपने सन्मुख से दूर करो उनकी सारी प्रतिमा को नाश करो और उनकी ढाली हुई मूर्तों को नष्ट करो और
५३ उनके सब ऊंचे स्थानों को ढादेओ। और उन्हें देश से बिदेश करके उसमें बास करो क्योंकि मैंने वुह देश तुम्हें तुम्हारे

५४ अधिकार के लिये दिया है । और तुम चिट्ठी डालके उस देश को आपुस में अपने घराने के समान बांटलेओ बहुतों को बहुत अधिकार देओ और थोड़ों को थोड़ा हर एक का उसी में स्थान होगा जहां उसकी चिट्ठी पड़े अपने पितरों की गोष्ठियों के ५५ समान तुम अधिकार लेओ। परंतु यदि तुम उस देश के बासियों को अपने आगे से दूर नकरोगे तो यूं होगा कि जिन्हें तुम रहने देओगे वे तुम्हारी आंखों में कांटे और तुम्हारे पांजरों में कील होंगे और उस देश में जहां तुम बसोगे तुम्हें ५६ सतावेंगे। परंतु अंत को यह होगा कि जो कुछ उनसे किया चाहता हों सो मैं तुमसे करोंगा।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब ।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहिके बोला। कि इसराईल के संतानों को आज्ञा कर और कह कि जब तुम किनान के देश में पहुंचो (वुह देश जो तुम्हारे अधिकार में पड़ेगा अर्थात् किनान का ३ देश उसके सिवाने सहित)। तब सीन के बन से अदूम के सिवाने लों तुम्हारी दक्षिण दिशा होगी और तुम्हारा दक्षिण सिवाना ४ खारी समुद्र के अंततीर पूर्ब दिशा होगी। और तुम्हारा दक्षिण सिवाना अक्राबीम की चढ़ाव के मार्ग लों घेरेगा और सीन लों पहुंचेगा और कादसबरनिया को दक्षिण की ओर निकलेगा और हसारअदा लों जायगा और अज़मून लों चलाजायगा। ५ और यह सिवाना अज़मून से घूम के मिसर की नदी लों ६ पहुंचेगा और उसका निकास समुद्र से होगा। और तुम्हारा पश्चिम का सिवाना महा समुद्र होगा यही तुम्हारा पश्चिम ७ सिवाना होगा। और यह तुम्हारा उत्तर सिवाना होगा ८ महा समुद्र से हूर पर्ब्बत लों। और हूर पहाड़ से हामात के पैठ लों और वुह सिवाना ज़ीदाद लों जायगा। ९ और वुह सिवाना ज़फरून को और उसका निकास १० हसारईनान से होजायगा यहि तुम्हारी उत्तर दिशा है। और

तुम अपने लिये पूर्ब्ब दिशा हसारईनान से लेके सिफाम लों
११ ठहराइयो। और उसका सिवाना शफाम से लेके रबना लों
आईन के पूर्ब्ब ओर होगा और सिवाना वहां से उतर के
१२ जनसर के समुद्र को पूर्ब्ब दिशा में मिलेगा। और उसका
सिवाना अर्दन को उतरेगा और उसका निकास खारा समुद्र
लों होगा यही तुम्हारे देश और उनको तीर समेत चौदिशा
१३ में होंगे। फेर मूसा ने इसराईल के संतानों से कहा कि यह
वुह देश है जिसके अधिकारी तुम चिट्ठीसे होओगे जिसके
विषय में परमेश्वर ने कहा कि तू साढ़े नव गोष्ठियों को
१४ बांट दीजियो। क्योंकि राओबीन की गोष्ठी ने अपने पितरों के
घराने के समान और जाद के संतान ने अपनी गोष्ठी के घराने
के समान और मनस्सा की आधी गोष्ठी अपने घराने के समान
१५ पाया। उन अढ़ाई गोष्ठियों ने अर्दन के इसपार अरीहा के
१६ लग पूर्ब्ब दिशा को अपना अधिकार पाया। फिर परमेश्वर
१७ ने मूसा को आज्ञा करके कहा। जो जन तुम्हारे देश को
बांटेंगे उनके ये नाम हैं इलियाज़र याजक और नून का
१८ बेटा यशूअ्। और तुम अपने लिये हर गोष्ठी का एक प्रधान
१९ लेओ जिसतें उस देश को भाग करें। और उन प्रधानों के नाम
२० ये हैं यफना का बेटा कालिब यहूदा की गोष्ठी का। और
अमीहूद का बेटा शमुईल शमऊन की गोष्ठी के घराने का।
२१ और कसलून का बेटा अबीदाद बनियामीन के घराने का।
२२ और दान के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष इवली का बेटा बक्की।
२३ यूसफ के संतान के प्रधान मनस्सा के संतानों की गोष्ठी के लिये
२४ यफद का बेटा हनाईल। और अफराईम के संतान की गोष्ठी
२५ का अध्यक्ष शफतान का बेटा कमूईल। जबलून के संतान की
२६ गोष्ठी का अध्यक्ष फरनाख का बेटा इलीसाफान। और
यसाखार के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष अज़ान का बेटा
२७ फलतियाईल। और अशीर के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष
२८ शलूमी का बेटा अखीहूद। और नफताली के संतान की गोष्ठी

२९ का अध्यक्ष अम्मिहूद का बेटा फिदाहील। ये वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने आज्ञा किई कि किनान का देश इसराईल के संतान को अधिकार में बांट देवें।

३५ पैंतीसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मवाब के चैागान में अर्दन के तीर पर अरीहा के
२ लग मूसा से कहिके बोला। कि इसराईल के संतानों से कह कि लावियों को अपने अधिकार में से अधिकार के लिये नगर बसने को देवें और नगरों के चारों ओर के आस पास उन्हें
३ देओ। और नगरों को उनके रहने के कारण और आस पास उनके गाय बैल के कारण और उनकी संपत्ति और उन समस्त
४ पशुन के लिये हों। और नगरों के आस पास जो तुम लावियों को देओगे चाहिये कि नगर की भीत से सहस्र हाथ बाहर
५ होवे। और तुम नगर से लेके बाहर पूर्ब की ओर दो सहस्र हाथ नापो और दक्षिण की ओर दो सहस्र हाथ और पश्चिम की ओर दो सहस्र हाथ और उत्तर की ओर दो सहस्र हाथ और उनके मध्य में ये उनके लिये नगरों के आस पास होंगे।
६ और उन नगरों के मध्य में जो तुम लावियों को देओगे छः नगर शरण के लिये होवें जिसे तुम घातक के लिये ठहराओ
७ और उनमें बयासी नगर और भी मिलादेओ। सो सारे नगर जो तुम लावियों को देओगे अठतालीस नगर उनके आस
८ पास सहित। और जो नगर तुम देओगे सो इसराईल के संतानों के अधिकार में से बहुत से बहुत दीजियो और थोड़े से थोड़ा सब कोई अपने अधिकार के समान अपने नगरों
९ में से जो उसके अधिकार में है लावियों को दीजियो। फिर
१० परमेश्वर मूसा से कहिके बोला। कि इसराईल के संतानों को आज्ञा कर और उन्हें कह कि जब तुम अर्दन पार किनान के
११ देश में पहुंचो। तब तुम अपने लिये नगरों को शरण नगर के कारण ठहराओ जिसतें वुह घातक जिस्से अनजाने घात

१२ होजाय भाग के वहां जारहे। और वुह तुम्हारे लिये पलटा दायक से शरण नगर होगा और घातक जबलों विचार के
१३ लिये मंडली के आगे खड़ा नहोवे मारा नजाय। सो जो जो
१४ नगर तुम देओगे उनमें छः नगर शरण के लिये होंगे। अर्दन के इस पार तीन नगर दीजियो और किनान के देश में तीन
१५ नगर दीजियो ये शरण नगर होंगे। ये छः नगर इसराईल के संतानों और परदेशी और उनके कारण जो तुम्म रहतेहैं शरण के लिये होंगे कि जो कोई अनजाने किसी को मारे उधर
१६ भागजाय। और यदि कोई किसी को लोहे के हथियार से मारे ऐसा कि वुह मरजाय तो वुह घातक है घातक अवश्य
१७ घात कियाजायगा। और यदि कोई किसी को ऐसा पत्थर फेंक मारे कि वुह मरजाय तो वुह घातक है घातक अवश्य
१८ मारडालाजाय। अथवा कोई किसी को ऐसा लठ मारे कि वुह मरजाय तो वुह घातक है घातक अवश्य घात कियाजाय।
१९ लोहू का पलटा दायक वही घातक को आपही उसे घातकरे
२० जब वुह उसे पावे उसे मारडाले। और यदि कोई किसी को डाह से ढकेलदेवे अथवा दावघात से उसे पटकदेवे कि वुह
२१ मरजाय। अथवा बैरी को हाथ से मारे कि वुह मरजाय तो जिसने उसे मारा वुह निश्चय माराजायगा मारेज़ए का कुटुंब
२२ जब उस घातक को पावे उसे घात करे। और यदि कोई किसी को बिना बैर के अकस्मात् ढकेलदेवे अथवा बिना दावघात
२३ उसपर कोई वस्तु डालदेवे। अथवा उसे बिन देखे ऐसा पत्थर फेंके कि उसपर गिरे और वुह मरजाय और वुह उसका
२४ बैरी नथा और न उसकी बुराई चाहताथा। तब मंडली उस घातक और लोहू के पलटा दायक के मध्य इस न्याय के समान
२५ विचार करे। कि मंडली उस घातक को लोहू के पलटा दायक के हाथ से छुड़ाके उस शरण नगर में जहां वुह भाग के गयाथा फिर भेजदेवे जब लों कि प्रधान याजक जो पवित्र तेल से अभिषिक्त
२६ ज़आ था मरजाय वुह वहीं रहे। परंतु यदि घातक उस शरण

के नगर के सिवाने से जहां वुह भागके गयाथा बाहर आवे।
२७ और लोह्न का पलटा दायक घातक को शरण नगर के सिवाने से बाहर पावे और घातक को मारडाले तो उस पर घात का
२८ अपराध नहीं। क्योंकि उस घातक को उचित था कि प्रधान याजक की मृत्यु लों शरण के नगर में रहता और उसके मरने के पीछे
२९ अपने अधिकार के देश में आता। सो तुम्हारी सारी पीढ़ियों में
३० और समस्त बस्तियों में न्याय के लिये यह व्यवस्था होगी। जो किसी को मारडाले सो घातक साक्षियों की साखी के समान घात कियाजाय परंतु एक साक्षी की साखी से किसी को घात न
३१ करना। और तुम घातक के प्राण की संती जो घात के योग्य है
३२ मोल मतलेओ परंतु वुह अवश्य माराजाय। और तुम उस्से भी जो अपने शरण के नगर को भाग गयाहो घात का मोल मतलेओ
३३ जिसतें वुह याजक की मृत्यु लों अपने देश में आ बसे। सो जहां हो उस देश को अशुद्ध मत कीजियो क्योंकि घातही से देश अशुद्ध होताहै और देश उस लोह्न से जो उसमें बहाया गयाहै शुद्ध नहीं होता परंतु केवल उसी के लोह्न से जिसने उसे बहायाहै।
३४ सो तुम अपने निवास के देश को जहां मैं रहता हों अशुद्ध नकरो क्योंकि मैं परमेश्वर इसराईल के संतानों के मध्यमें रहता हों।

३६ छतीसवां पर्ब्ब ।

१ जलआद के संतान के घराने के पितरों के प्रधान और यूसफ के संतान के घराने मेंसे मनस्सा के बेटे माखीर के बेटे जलआद के संतान के घराने के पितरों के प्रधान आके मूसा के आगे
२ और इसराईल के संतानों के पितरों के आगे बोले। कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु को आज्ञा किई कि चिट्ठी डाल के देश को इसराईल के संतानों को अधिकार के लिये देवे और हमारे प्रभु ने परमेश्वर की आज्ञा से कहा कि हमारे भाई
३ जलोफिहाद का अधिकार उसकी बेटियों को दियाजाय। सो यदि वे इसराईल के संतानों की और गोष्ठियों के बेटों में से

किसी के साथ ब्याहीजावें तो उनका अधिकार हमारे पितरों के अधिकार से निकल जायगा और उस गोष्ठी के अधिकार में जहां वे ब्याही गईं मिलजायगा सो हमारी चिट्ठी का
४ अधिकार घट जायेगा। और जब इसराईल के संतानों के आनंद का बरस आवे तब उनका अधिकार उस घराने के अधिकार में जहां वे ब्याही गईं मिलजायगा और उनका अधिकार हमारे पितरों की गोष्ठी के अधिकार में से निकल
५ जायगा। तब मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा से इसराईल के संतानों से कहा कि यूसफ के संतान की गोष्ठी अच्छा कहती हैं।
६ सो परमेश्वर जलोफिहाद की बेटियों के विषय में यूं आज्ञा करता है कि वे जिसे चाहें उसे ब्याह करें केवल अपने पिता
७ की गोष्ठी में ब्याह करें। जिसतें इसराईल के संतानों का अधिकार एक गोष्ठी से दूसरी गोष्ठी में नजावे और इसराईल के संतान में से हर जन आप को अपनेही पितरों की गोष्ठी के
८ अधिकार में रक्खे। और हर एक बेटी इसराईल के संतानों की किसी गोष्ठी में अधिकार रक्खे अपने बापही के घराने की गोष्ठी में से एक की पत्नी होवे जिसतें इसराईल के संतान में
९ हर जन अपने पिता के अधिकार पर स्थिर रहे। और अधिकार एक गोष्ठी में से दूसरी गोष्ठी में न जाय परंतु इसराईल के संतान के घरानों में हर एक जन अपने अधिकार
१० में आप को रक्खे। सो जलोफिहाद की बेटियों ने वैसाही
११ किया जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी। क्योंकि महला और तरसा और हगला और मिलका और नूआ जलोफिहाद की बेटियां अपने चचेरे भाईयों के साथ ब्याही
१२ गईं। यूसफ के बेटे मनस्सा के घरानों में ब्याही गईं और उनका
१३ अधिकार उनके पिता की गोष्ठी में बना रहा। ये वे आज्ञा और बिचार हैं जो परमेश्वर ने मूसा की ओर से मवाब के चौगानों में अर्दन के तीर पर अरीहा के सन्मुख इसराईल के संतानों को आज्ञा किई।

मूसा की पांचवीं पुस्तक जो बिवाद की कहवती है।
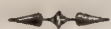
१ पहिला पर्ब्ब ।

१ ये वे बातें हैं जिन्हें मूसा ने अर्दन के इस पार अरण्य में लाल समुद्र के सन्मुख चौगान में फारान और तूफल और लाबान और हसीरूत और दीज़िहाब के मध्य में इसराईल के संतानों
२ से कहा। होरेब से क़ादशबरनीया लों सीर पर्ब्बत के मार्ग से
३ ग्यारह दिन के पथ पर है। ऐसा ऊआ कि चालीसवें बरस के ग्यारहवें मास की पहिली तिथि में उन समस्त आज्ञाओं के समान जिन्हें परमेश्वर ने उसे दिई थी जिसतें इसराईल के
४ संतानों से कहीजावें मूसा ने उन्हें कहीं। उसके पीछे कि उसने अमूरियों के राजा सैह्नन को जो हशबून में रहता था और बाशान के राजा ऊज को जो असतारूस और अद्री में
५ रहता था बधन किया। अर्दन के इस पार मवाब के चौगान में
६ इस ब्यवस्था को बर्णन करना अरंभ किया और कहा। कि परमेश्वर हमारा ईश्वर होरेब में हमें यह कहिके बोला कि तुम
७ इस पहाड़ पर बऊत रहे। फिरो और यात्रा करो और अमूरियों के पहाड़ को और उसके समस्त परोसियों में जाओ चौगान में पहाड़ों में और तराई में दक्खिन में और समुद्र के तीर किनानियों के देश को और लबनान को महानदी फुरात
८ लों जाओ। देखो मैंने आगे का देश तुम्हें दिया प्रवेश करो और उस देश पर जिसके बिषय में परमेश्वर ने तुम्हारे पितर इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब से किरिया खाई कि तुम्हें और तुम्हारे पीछे तुम्हारे वंश को देउंगा अधिकार में
९ लेओ। और उसी समय मैंने तुम्हें कहा कि मैं अकेला
१० तुम्हारा बोझ नहीं उठा सक्ता। परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें

बढ़ाया और देखो तुम आज के दिन आकाश के तारों की नाई
११ मंडली हो। परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें इसे भी सहस्र गुण अधिक बढ़ावे और जैसा उसने तुमसे कहा है तुम्हें
१२ आशीष देवे। मैं तुम्हारे परिश्रम और बोझ और झगड़ों को
१३ अकेला क्योंकर उठा सकों। सो तुम बुद्धिमान और ज्ञानी और अपनी गोष्ठियों में से प्रसिद्ध लोगों को लाओ और मैं उन्हें
१४ तुम पर आज्ञाकारी करोंगा। और तुम ने मुझे उत्तर देके कहा
१५ कि जो कुछ तू ने कहा है सो पालन करने को भला है। सो मैं ने तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधानों को बुद्धिमान और प्रसिद्धों को लिया और उन्हें तुम्हारा प्रधान सहस्रों का प्रधान और सैकड़ों का प्रधान और पचास पचास का प्रधान और दस दस का प्रधान तुम्हारी
१६ गोष्ठियों में करोड़ा किया। और उस समय मैं ने तुम्हारे न्यायियों को आज्ञा करके कहा कि अपने भाइयों का बिवाद सुनो मनुष्य में और उसके भाइयों में और उसके साथ के परदेशियों में धर्म से
१७ न्याय करो। तुम न्याय में किसी के रूप को मत मानो बड़े के समान छोटे की भी सुनियो तुम मनुष्य के रूप से न डरो क्योंकि न्याय ईश्वर का है और जो बिषय तुम्हारे लिये कठिन होय मेरे पास लाओ मैं
१८ उसे सुनोंगा। सब जो तुम्हें करना था मैं ने उसी समय में तुम्हें
१९ आज्ञा किई। और हम ने होरेब से यात्रा किई तो जैसा परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें आज्ञा किई थी उन समस्त महाभयंकर बनों में गये जिन्हें तुम ने अमूरियों के पहाड़ को जाते
२० ऊए देखा और क़ादसबरनीया में आये। और मैं ने तुम्हें कहा कि तुम अमूरियों के पहाड़ को पऊंचे हो जो परमेश्वर हमरा ईश्वर
२१ हमें देता है। देख परमेश्वर तेरे ईश्वर ने यह देश तेरे आगे धरा है चढ़ और उसे बश में कर जैसा परमेश्वर तेरे पितरों के ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है मत डर और हियाव न छोड़।
२२ तब हर एक तुम्में से मुझ पास आया और बोला कि हम अपने आगे लोग भेजेंगे वे हमारे लिये उस देश का भेद लेवें और

आके हम से कहें कि हम किस मार्ग से वहां आवें और कौन
२३ कौन नगरों में प्रवेश करें। वुह कहना मुझे भाया और मैंने
२४ तुम्में से गोष्ठी पीछे एक बारह मनुष्य लिये। वे चल निकले
और पहाड़ पर गये और इस्कूल की तराई में आये और
२५ उसका भेद लिया। और वे उस देश में का फल अपने हाथों
में लेके हमारे पास उतर आये और संदेश लेआये और बोले
२६ कि परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें उत्तम देश देताहै। तथापि
तुम चढ़ नगये परंतु परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा से
२७ फिरगये। और तुम अपने तंबूओं में कुड़कुड़ाके बोले इसकारण
कि परमेश्वर हमसे डाह रखताथा हमें मिसर के देश से
निकाल लाया कि हमें अमूरियों के हाथ में करके नाश करे।
२८ हम कहां चढ़ें हमारे भाइयों ने तो यूंकहिके हमारे मन को घटा
दिया कि वे लोग तो हम से बड़े और लम्बे हैं और उनके नगर
बड़े हैं जिनकी भीतें स्वर्ग लों हैं और इस्से अधिक हमने
२९ अनाकियों के बेटों को वहां देखा। तब मैंने तुम्हें कहा कि मत डरो
३० और उनसे भय मत करो। परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर जो तुम्हारे
आगे आगे जाताहै वही तुम्हारे लिये लड़ेगा जैसा कि उसने
३१ तुम्हारी दृष्टि में तुम्हारे लिये मिसर में किया। और अरण्य में
जहां तुम ने देखा कि जैसा मनुष्य अपने बेटे को उठाताहै
वैसा परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने सारे मार्ग में जहां जहां तुम गये
३२ तुम्हें उठायाहै जबलों तुम इस स्थान में आये। तथापि इस बात में
३३ तुमने परमेश्वर अपने ईश्वर की प्रतीति नकिई। वुह रात को
आग में और दिन को मेघ में जिसतें तुम्हें जाने का मार्ग बतावे
मार्ग में तुम से आगे आगे गया जिसतें तुम्हारे लिये स्थान
३४ ठहरावे जहां अपने तंबू खड़े करो। तब परमेश्वर ने तुम्हारी
३५ बातें सुनीं और क्रुद्ध हुआ और किरिया खाके बोला। कि निश्चय
इस दुष्ट पीढ़ी में से एक भी उस अच्छे देश को जिसके देने
३६ को मैंने उनके पितरों से किरिया खाई है नदेखेगा। केवल

१५ उनसे किरिया खाईथी। क्योंकि निश्चय परमेश्वर का हाथ उनकी विरुद्धता में था कि सेना में से उन्हें नाश करे यहां लों कि वे भस्म
१६ होगये। सो ऐसा ऊआ कि जब समस्त लड़ाके मिट के
१७ लोगों में से मरगये। तब परमेश्वर मुझे कहिके बोला।
१८ कि तू आज आर में होके जो मवाब का सिवाना है चलाजायगा।
१९ और जब तू अमून के संतान के आम्ने साम्ने आ पऊंचे तो उन्हें दुःख नदे न उन्हें छेड़ क्योंकि मैं अमून के संतान के देश में तुझे अधिकार नहीं देनेका इसकारण कि मैंने उसे लूतके संतान के अधिकार
२० में दियाहै। वुह भी दानव का देश कहावता था आगे वहां
२१ दानव रहतेथे और अमानी उन्हें जमज़मीम कहतेथे। वे बऊत और लंबे लंबे अनाकियों के समान थे परमेश्वर ने उन्हें उनके आगे नाश किया सो उन्होंने उन्हें निकालदिया और उनके स्थान
२२ पर बसे। जैसा उसने ऐस के संतानों से किया जो सईर में रहतेथे जब उसने होरियों को उनके आगे से नाश किया सो उन्होंने उन्हें निकालदिया और उनके स्थान पर आज लों
२३ बसेहैं। और अवीमी को भी जो हजीरम में रहतेथे और कफतूरी जो कफतूर से आये उन्हें नाश किया और उनके स्थान में
२४ बसे। सो तुम उठो चलो अरनून के पार जाओ देखो मैंने हशबून के राजा अमूरी सीहून को उसकी भूमि सहित तुम्हारे हाथ में दियाहै सो अधिकार लेनेको आरंभ करो और
२५ लड़ाई में उनका साम्ना करो। आजके दिन से मैं तुम्हारा डर और भय जातिगणों पर डालोंगा जो सारे आकाश के नीचेहैं वे तुम्हारी सुधि पावेंगे और घबरावेंगे और तुम्हारे आगे थर्थरा
२६ जायेंगे। तब मैंने क़दीमूस से हशबून के राजा सीहून
२७ पास दूतों से मिलाप का यह वचन कहिला भेजा। कि तू अपने देश मेंसे मुझे जाने दे मैं राजमार्ग में होके जाउंगा और मैं
२८ दहिने बायें हाथ नमुड़ोंगा। खाने के लिये दाम लेके मुझे अन्न
२९ जल दीजियो केवल मैं पांव पांव चला जाओंगा। जिस रीती

से कि ऐस के संतान ने जो सईर में रहतेहैं और मवाबियों ने जो आर म बसतेहैं मुझे किया जिसतें हम अर्दन के पार उस
१० भूमि में पऊंचें जो परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें देताहै। परंतु हश्बून के राजा सीहून ने हमें अपने पास से जाने नदिया क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने उसके आत्मा को कठोर और उसके मन को ढीठ करदिया जिसतें उसे आज के समान तेरे
३१ हाथ में देवे। फिर परमेश्वर ने मुझे कहा कि देख मैंने सीहून को उसके देश सहित तुझे देना आरंभ किया तू अधिकार लेना आरंभ कर जिसतें तू उसके देश का अधिकारी होवे।
३२ तब सीहून अपने सारे लोग लेके यहास में लड़ने को निकल
३३ आया। सो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने उसे हमें सौंपदिया और हमने उसे और उसके बेटे और उसके सब लोगों को मारा।
३४ और हमने उसी समय उसके समस्त नगरों को लेलिया और हरएक नगर के पुरुष और स्त्री और लड़कों को नाश किया
३५ और किसी को नछोड़ा। केवल ढोर हमने अपने लिये अहेर
३६ में लिया और नगरों की लूट जिसे हमने लिया। अरुईर से लेके जो अरनून की नदी के तीर पर है और उस नगर से लेके जो नदी के तीर पर है अर्थात जलयाद लों ऐसा कोई नगर हमारे लिये दृढ़ नथा जिसे परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हम
३७ सौंपदिया। केवल अमून के संतान के देश जिसके निकट हम नगये और नदी यबूक के किसी स्थान में न पहाड़ के नगरों में और जहां जहां परमेश्वर हमारे ईश्वर ने हमें बरजा।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ तब हम फिरे और बाशान की ओर चढ़गये और बाशान का राजा ऊज इद्री में अपने सारे लोग लेके हमारे सन्मुख लड़ने
२ को निकला। और परमेश्वर ने मुझे कहा कि उससे मत डर क्योंकि मैं उसे और उसके सारे लोगों को उसके देश सहित तेरे

२६ जा अर्दन के पार है वुह सुंदर पर्व्वत और लबनान। परंतु परमेश्वर तुम्हारे कारण मुझसे क्रुद्ध ऊआ और उसने मेरी नसुनी और परमेश्वर ने मुझे कहा कि यही बस है उस विषय
२७ में फेर मुझसे मत कह। पसगा की चोटी पर चढ़जा और अपनी आंखें पश्चिम और उत्तर और दक्षिण और पूर्ब्ब की ओर उठा और अपनी आंखों से देख क्योंकि तू इस अर्दन के
२८ पार नजायगा। पर यशूअ को आज्ञा कर और उसे ढियाव दे और उसे दृढ़ कर क्योंकि वुह इन लोगों के आगे पार जायगा और वही उन्हें उस देश का जो तू देखता है अधिकारी करेगा।
२९ सो हम तराई में फ़ाऊर के सन्मुख रहे।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ सो अब हे इसराईल के संताना जो विधि और बिचार मैं तुम्हें सिखलाताहों सुनो और उन पर ध्यान करो जिसतें तुम जीयो और उस देश में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर
२ तुम्हें देता है पऊंचके उसके अधिकारी होओ। तुम उस बात में जो मैं तुम्हें कहताहों कुछ मत मिलाइयो न घटाइयो जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को जो मैं तुम्हें आज्ञा
३ करताहों पालन करो। जो कुछ कि परमेश्वर ने बअलफ़ऊर से किया तुमने सब अपनी आंखों से देखा क्योंकि उन सब पुरुषों को जिन्हों ने बअलफ़ऊर का पीछा किया परमेश्वर
४ तुम्हारे ईश्वर ने तुम्में से नष्ट किया। परंतु तुम जो परमेश्वर अपने ईश्वर से लवलीन हो रहे हो सो तुम्में से हर एक
५ आज लों जीता है। देखो मैंने विधि और बिचार जिस रीति से परमेश्वर मेरे ईश्वर ने मुझे आज्ञा किई तुम्हें सिखलाये जिसतें तुम उस देश में जाके जिस के अधिकारी होओगे उनका
६ पालन करो। सो उन्हें धारण करो और मानो क्योंकि जातिगणों के आगे यही तुम्हारी बुद्धि और समुझ है कि वे इन

समस्त विधिन को सुनके कहेंगे कि निश्चय यह जाति बुद्धिमान
७ और ज्ञानमान है। क्योंकि कौन जातिगण ऐसी बड़ी है जिसके
पास ईश्वर ऐसा समीप होवे जैसा परमेश्वर हमारा ईश्वर
८ सब में जो हम उसे मांगते हैं हमारे समीप है। और कौन
ऐसी बड़ी मंडली है जिसकी विधि और विचार ऐसा धर्म्म
का हो जैसी यह समस्त व्यवस्था जो मैं आज तुम्हारे आगे
९ धरता हों। केवल आप से चौकस रहो और अपने प्राण को
यत्न से रक्खो ऐसा न हो कि तुम उन बस्तुन का जिन्हें तेरी
आंखों ने देखा भूल जाओ और ऐसा न हो कि वे बातें जीवन
भर में कभी तुम्हारे अंतःकरणों से जाती रहें परंतु तुम ये बातें
१० अपने बेटों और पोतों को सिखलाओ। जिस दिन तू परमेश्वर
अपने ईश्वर के आगे होरेब में खड़ा ऊआ और परमेश्वर ने
मुझे कहा कि लोगों को मेरे आगे एकट्ठा कर और मैं
उन्हें अपना बचन सुनाओंगा जिसतें वे मेरा डर सीखें
जबलों वे भूमि पर जीते रहें और वे अपने लड़कों को
११ सिखलावें। सो तुम पास आये और पहाड़ के नीचे खड़े रहे
और पहाड़ स्वर्ग के मध्य लों अंधकार और मेघ और गाढ़ा
१२ अंधकार आग से जल रहाथा। और परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने
उस आग के मध्य में स तुम्हारे साथ बातें किईं तुमने बातों
१३ का शब्द सुना परंतु मूर्त्ति न देखी केवल शब्द। और उसने
अपनी बाचा तुम्हारे आगे बर्णन किई जिसे उसने तुम्हें पालन
करनेको आज्ञा किई दस आज्ञा उसने उन्हें पत्थर की दो
१४ पटियों पर लिखीं। और परमेश्वर ने उस समय मुझे
आज्ञा किई कि तुम्हें बिधि और बिचार सिखलाओं जिसतें
तुम उस देश में जाके जिसके तुम अधिकारी होओगे उनपर
१५ चलो। सो तुम आप से बऊत चौकस रहो क्योंकि जिस दिन
परमेश्वर ने होरेब में आग के मध्य में से तुम्हारे साथ बातें कहीं
१६ तुमने किसी प्रकार का रूप न देखा। ऐसा न हो कि तुम बिगड़

जाओ और अपने लिये खोदी ऊई मूर्त्ति किसी पुरुष अथवा स्त्री
१७ की प्रतिमा बनाओ। किसी पशु की प्रतिमा जो पृथिवी पर है
१८ अथवा किसी पंखी का रूप जो आकाश में उड़तेहैं। अथवा
किसी जंतु का रूप जो भूमि पर रेंगतेहैं अथवा किसी
१९ मछली का रूप जो पृथिवी के नीचे पानियों में हैं। ऐसा न हो
कि तुम स्वर्ग की ओर आंखें उठाओ और सूर्य्य और
चंद्रमा और तारों को और आकाश की समस्त सेनों को
देखो तब उन्हें पूजने को बगदाये जाओ और उनकी सेवा
करो जिन्हें परमेश्वर ने स्वर्ग के तले समस्त जाति गणों के लिये
२० बिभाग कियाहै। परंतु परमेश्वर ने तुम्हें लिया और वुह
तुम्हें लोहे के भट्ठे से अर्थात् मिसर में से निकाल लाया
जिसतें तुम उसकी ओर से अधिकार के लोग होओ जैसा कि
२१ आज के दिन हो। परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे कारण
से मुझ पर रिसिया के किरिया खाई कि तू अर्दन पार न जायगा
और उस अच्छे देश में जिस का परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे
२२ अधिकारी करताहै न पहुंचेगा। परंतु मैं अवश्य इसी देश में
मरोंगा निश्चय मैं अर्दन पार उतरने न पाओंगा परंतु तुम
पार उतरोगे और उस अच्छी भूमि के अधिकारी होओगे।
२३ आपसे चौकस रहो ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर
की बाचा को जो उसने तुम से किई भूलजाओ और अपने
लिये खोदीऊई मूर्त्ति अथवा किसी बस्तु का रूप बनाओ
२४ जिसके बनाने से परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे बर्जाहै। क्योंकि
परमेश्वर तेरा ईश्वर एक भस्मक अग्नि ज्वलित ईश्वर है।

२५ जब तुझ से लड़के और लड़कों के लड़के उत्पन्न होंगे और
तुम अनेक दिन लों उस देश में रहोगे और बिगड़ जाओगे
और खोदीऊई मूर्त्ति और किसी का रूप बनाओगे और
परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बुराई करके उसके क्रोध को
२६ भड़काओगे। तो मैं आज के दिन तुम पर स्वर्ग और पृथिवी

को साची धरताहों कि तुम उस देश पर से जहां तुम अर्दन पार जातेहो कि अधिकारी बनो शीघ्र नाश होजाओगे तुम वहां अपने दिन को नबढ़ाओगे परंतु सर्बथा नष्ट होजाओगे।
२७ और परमेश्वर तुम्हें जातिगणों में छिन्न भिन्न करेगा और अन्य देशियों के मध्य में जिधर तुम्हें परमेश्वर लेजायगा थोड़े से
२८ रहजाओगे। वहां उन देवतों की प्रार्थना करोगे जो मनुष्यों के हाथों से बनेहैं लकड़ी के और पत्थर के जो न देखते न सुनते
२९ न खाते न सूंघते हैं। पर वहां भी जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर को खोज करेगा यदि तू अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से
३० उसे ढूंढ़ेगा तो उसे पावेगा। जब तू कष्ट में होगा और ये सब अंत्य के दिनों में तुझ पर आपड़े यदि तू परमेश्वर अपने
३१ ईश्वर की ओर फिरेगा और उसका शब्द मानेगा। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर दयाल है वुह तुझे न छोड़ेगा न तुझे नष्ट करेगा और तेरे पितरों की बाचा को जो उसने उनसे
३२ किरिया खाईहै न भूलेगा। क्योंकि अगले दिनों से जो तुझसे आगे होगये उस दिन से जो मनुष्य को परमेश्वर ने पृथिवी पर उत्पन्न किया और स्वर्ग की एक अलंग से लेके दूसरी लों पूछो यदि ऐसी बड़ी बात कभी हुई अथवा उसके समान सुनी
३३ गई। कि कभी लोगोंने परमेश्वर का शब्द सुनाथा कि आग में
३४ से बोले जैसा तूने सुना और जीताहै। अथवा कभी ईश्वर ने इच्छा किई कि जाके एक जातिगण को जातिगण के मध्य में से परिच्छा से और लच्चण से और लड़ाई से और सामर्थी हाथ से और बढ़ाईहुई भुजों से और बड़े बड़े भय से अपने लिये लवे जिस रीति से परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारी आंखों
३५ के साम्ने मिसर में तुम्हारे लिये किया। यह सब तुझे दिखायागया जिसतें तू जाने कि परमेश्वर वही ईश्वर है और उसे छोड़
३६ कोई नहीं है। उसने अपना शब्द स्वर्ग में से तुझे सुनाया जिसतें तुझे सिखावे और पृथिवी पर उसने तुझे अपनी बड़ी

आग दिखाई और तू ने उसका बचन आग में से सुना।
३७ और इसकारण कि उसने तेरे पितरों से प्रेम किया उसने
उनके पीछे उनके बंश को इसकारण चुनलिया और अपनी बड़ी
सामर्थ्य से तुझे मिसर से अपनी दृष्टि के आगे निकाल लाया।
३८ जिसतें तेरे आगे से जातिगणों को जो तुझसे बड़े और
बलवंत हैं दूर करे और तुझे लावे और उनके देश का अधिकारी
३९ करे जैसा आज के दिन है। सो आज के दिन जान और
अपने मन में सोच कि परमेश्वर ऊपर स्वर्ग में और नीचे
४० पृथिवी में वुह ईश्वर है और कोई नहीं है। सो तू उसकी
बिधि और उसकी आज्ञाओं को जो आज मैं तुझे कहताहों
पालन कर जिसतें तेरे और तेरे पीछे तेरे बंश के लिये भला होवे
और तेरी बय उस देश पर जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे
४१ देताहै बढ़जाय। फिर मूसा सूर्य्य के उदय की ओर
४२ अर्दन के इसी पार तीन बस्तियां अलग किईं। जिसतें घातक
जो अचानक अपने परोसी को घात करे और आगे से
उस्से बैर न रखताथा और जब उन नगरों में से एक
४३ में भागके प्रवेश करे तो जीता रहे। अर्थात् बासर बन
में राऊबिनियों के चौगान के देश में और जादियों में रामूस
४४ जलआद में और मनस्सा के गोलान बासान में। यह वुह
व्यवस्था है जिसे मूसाने इसराईल के संतानों के आगे धरी।
४५ येहैं वे साक्षियां और बिधि और बिचार जिन्हें मूसाने
इसराईल के संतानों के लिये जब वे मिसर से निकलआये
४६ उनसे कहा। अर्दन के इसी पार बैतफ़ाऊर के सन्मुख की
तराई में अमूरियों के राजा सैहून के देश में जो हसबून में
रहताथा जिसे मूसा और इसराईल के संतानों ने मिसर से
४७ निकलके मारा। और वे उसके और बासान के राजा ऊज के
राज्य के अधिकारी हुए ये अमूरियों के दो राजा थे जो अर्दन
४८ के इस पार सूर्य्य के उदय की ओर रहतेथे। अरोईर से लके

जो अरनून की नदी के तीर पर है सैहून के पहाड़ लों जो
४९ हरमून है। और समस्त चैागान इसी पार अर्दन की पूर्व
ओर चैागान के समुद्र लों जो पसगा के सोतों के नीचे है।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ फिर मूसा ने समस्त इसराईलों को बुलाके कहा कि हे इसराईलियो
यह बिधि और बिचार सुनरक्खो जिन्हें मैं आज तुम्हारे कानों
में कहताहों जिसतें तुम उन्हें सीखो और धारण करके माने।
२ परमेश्वर हमारे ईश्वर ने होरब में हमसे एक बाचा बांधी।
३ परमेश्वर हमारे ईश्वर ने यह बाचा हमारे पितरों से नहीं
बांधी परंतु हमसे हमीं से जो सब आज के दिन जीतेहैं।
४ पर्ब्बत पर आग के मध्य में से परमेश्वर ने तुम्हारे संग आम्ने
५ साम्ने वार्त्ता किई। मैंने तुम्हारे और परमेश्वर के मध्य में खड़े
होके परमेश्वर का वचन तुम्हें दिखाया क्योंकि तुम आग के
६ कारण से डरगये और पहाड़ पर नचढ़े। मैं परमेश्वर
तेरा ईश्वर जो तुम्हें मिसर के देश से और सेवकाई के घर से
७।८ बाहर लाया। मेरे आगे तेरा कोई ईश्वर नहोवे। अपने
लिये खोदीहुई मूर्त्ति किसी का रूप जो ऊपर स्वर्ग में अथवा
नीचे पृथिवी पर अथवा पृथिवी के नीचे पानियों में है मत बना।
९ तू उन्हें दंडवत नकरना उनकी सेवा नकरना क्योंकि मैं
परमेश्वर तेरा ईश्वर ज्वलित ईश्वर हों जो पितरों के अपराध
का प्रतिफल बालकों पर तीसरी चैाथी पीढ़ी लों जो मुझसे बैर
१० रखतेहैं देताहों। और सहस्रों पर जो मुझसे प्रेम रखतेहैं
और मेरी आज्ञाओं को पालन करतेहैं दया करताहों।
११ तू परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारथ मत लेना क्योंकि
जो उसका नाम अकारथ लेताहै परमेश्वर उसे निर्दोष
१२ नठहरावेगा। बिश्राम दिन को पवित्र के लिये धारण कर
१३ जैसा परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किईहै। छः दिन लों

१४ परिश्रम करना और अपने समस्त कार्य करना। परंतु सातवां दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर का बिश्राम है कोई कार्य नकरना न तू नतेरा पुत्र नतेरी पुत्री नतेरा दास नतेरी दासी नतेरा बैल नतेरा गदहा न तेरे ढोर नपाऊन जो तेरे फाटकों के भीतरहैं जिसतें
१५ तेरा दास और तेरी दासी तेरी नाईं चैन करें। चेत कर कि तू मिसर के देश में सेवक था और परमेश्वर तेरा ईश्वर अपने सामर्थी हाथ और बढ़ाईऊई भुजा से तुझे वहां से निकाल लाया इसलिये परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई
१६ कि तू बिश्राम दिन का पालन करे। अपने माता पिता को प्रतिष्ठा दे जैसा परमेश्वर तेरे ईश्वर ने आज्ञा किई है जिसतें तेरा जीवन बढ़जाय और उस देश में जिसे तेरा ईश्वर तुझे
१७।१८ देताहै तेरा भला होवे। हत्या मत कर। पर स्त्री गमन
१९।२० मत कर। चोरी मत कर। अपने परोसी पर झूठी साची
२१ मत दे। अपने परोसी की पत्नी की इच्छा मत कर अपने परोसी के घर की और उसके खेत की अथवा उसके दास और दासी की उसके बैल और गदहे की और परोसी की
२२ किसी वस्तु की लालच मत कर। परमेश्वर ने पहाड़ पर मेघ और गाढ़े अंधकार की आगमें से तुम्हारी समस्त मंडली से महा शब्द से बातें किईं और उसे अधिक कुछ नकहा और उसने उन्हें पत्थर की दो पटियों पर लिखा और उन्हें
२३ मुझे सौंपा। और यों ऊआ कि जब तुमने अंधकार में से यह शब्द सुना क्योंकि पहाड़ आग से जलरहाथा तुम और तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधान और तुम्हारे प्राचीन मेरे पास आये।
२४ और तुमने कहा कि देख परमेश्वर हमारे ईश्वर ने अपना ऐश्वर्य और अपनी महिमा दिखाई और हमने आग के मध्य में से उसका शब्द सुना हमने आज के दिन देखा कि ईश्वर
२५ मनुष्य से बार्त्ता करताहै और मनुष्य जीताहै। सो अब हम किस लिये मरें कि यह ऐसी बड़ी आग हमें भस्म करेगी यदि

हम परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द अबके फिर सुनेंगे तो
२६ हम मरही जायेंगे। क्योंकि समस्त शरीरों में से ऐसा कौन है
जिसने हमारे समान आग के बीच में से जीवत ईश्वर का
२७ शब्द सुना और जीता रहा। तू आपही समीप जा और
सब जो कुछ कि परमेश्वर हमारा ईश्वर कहे सुन और जो
कुछ परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें कहे तू हमसे कह हम उसे
२८ सुनके मानेंगे। और जब तुम ने मुझसे कहा परमेश्वर ने
तुम्हारी बातों का शब्द सुना तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि
मैंने इन लोगों की बातों का शब्द जो उन्हों ने तुझसे कहीं
२९ सुना जो कुछ उन्हों ने कहा अच्छा कहा। हाय कि उनके
ऐसे मन होते कि वे मुझे डरते और सदा मेरी समस्त
आज्ञाओं को पालन करते जिसतें उनके लिये और उनके
३० बंश के लिये सनातन लों भला होवे। जा उन्हें कह कि अपने
३१ अपने तंबू को फिर जाओ। परंतु तू जो है यहां मुझ पास
खड़ा रह और मैं समस्त आज्ञा और बिधि और बिचार
तुझे बताओंगा तू उन्हें सिखलाना जिसतें वे उस देश में
३२ जिसका अधिकारी मैंने उन्हें किया है उन पर चलें। सो तुम
चौकस होके जैसा परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने आज्ञा किई है
३३ पालन करो और दहिने बायें नमुड़ो। तुम सब मार्गों पर
चलो जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें बताये जिसतें तुम
जीते रहो और तुम्हारा भला होवे और उस देश में जिसके
तुम अधिकारी होओगे तुम्हारे जीवन बढ़ें।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ ये वे आज्ञा और बिधि और बिचार हैं जो परमेश्वर तुम्हारे
ईश्वर ने तुम्हें सिखलाने को मुझे आज्ञा किई जिसतें तुम उस
देश में जिसके अधिकारी होने पार जाते हो उन पर चलो।
२ जिसतें तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरके उसकी सब बिधि

और आज्ञाओं को जो मैं तुझे आज्ञा करताहों चेत में रक्खे
तू और तेरा पुत्र और तेरा पौत्र जीवन भर जिसतें तेरा
३ जीवन बढ़जाय। सो हे इसराईल सुनले और उसे
सोचके मान जिसतें तेरा भला होवे और तुम उस देश में
अत्यंत बढ़ जाओ जिस में दूध और मधु बहताहै जैसा
परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने तुमसे प्रण कियाहै।
४ सन ले हे इसराईल परमेश्वर हमारा ईश्वर एक परमेश्वर है।
५ अपने सारे मन से और सारे जीव से और अपने सारे
६ पराक्रम से परमेश्वर अपने ईश्वर से हित रख। और ये बातें
जो आज के दिन मैं तुझे कहताहों तेरे अंतःकरण में रहें।
७ और ये बातें अपने लड़कों को यत्न से सिखला और अपने
घर में बैठतेहुए और मार्ग में चलतेहुए और सोते और
८ जागते उनको चर्चा कर। और उन्हें चिन्ह के लिये अपने
हाथ पर बांध और वे तेरी आंखों के मध्य में टीकों की नाईं
९ होंगे। और उन्हें अपने घर के खंभों पर और द्वारों पर
१० लिख। और यों होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे
उस देश में लेजायेगा जिसके विषय में उसने तेरे पितर
इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब से किरिया खाईहै
कि बड़ी और उत्तम बस्तियां जो तूने नहीं बनाईं तुझे देवे।
११ और समस्त उत्तमों से भरेहुए जिन्हें तूने नहीं भरा और
खोदेखोदाये कूये जो तूने नहीं खोदे और दाख की बारी
और जलपाई के पेड़ जो तूने नहीं लगाये तुझे देगा और
१२ तू खायेगा और संतुष्ट होगा। चौकस रह नहो कि तू
परमेश्वर को भूल जाय जो तुझे मिसर के देश से दासों के
१३ घर से निकाल लाया। तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरियो और
उसकी सेवा कीजियो और उसके नाम की किरिया खाइयो।
१४ तुम आन आन देवतों के पीछे लोगों के देवतों के जो तुम्हारे
१५ आस पास हैं मत जाइयो। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुम्हारे

मध्य में है ज्वलित ईश्वर है नहो कि परमेश्वर तेरे ईश्वर के कोप की आग तुझ पर भड़के और तुम्हें पृथिवी पर से
१६ मिटाडाले। तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की परीक्षा
१७ मत कीजियो जैसा तुमने मासा में उसकी परीक्षा किई। तुम यत्न से परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को और उसकी साक्षियों को और बिधि को जो उसने तुम्हें आज्ञा किई है
१८ स्मरण करियो। और वही कीजियो जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक और भला है जिसतें तुम्हारा भला होवे और तुम उस सुथरी भूमि में जिसके विषय में परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों से
१९ किरिया खाईहै प्रवेश करके अधिकारी होओ। कि तुम्हारे
२० आगे से दूर करे जैसा परमेश्वर ने कहाहै। जब कल को तेरा बेटा तुझे यह कहिके पूछे कि ये कैसी साक्षियां और बिधि और बिचार हैं जो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने तुम्हें
२१ आज्ञा किईहै। तब अपने बेटे से कहियो कि हम मिसर में फ़रऊन के बंधुए थे तब परमेश्वर सामर्थी हाथ से हमें
२२ मिसर से निकाल लाया। और परमेश्वर ने चिन्ह और बड़े बड़े दुःख और पीड़ा के आश्चर्य मिसर पर फ़रऊन पर और
२३ उसके सारे घराने पर हमारी आंखों के आगे दिखाये। वुह हमें वहां से निकाल लाया जिसतें हमें उस देश में पहुंचावे जिसके बिषय में उसने हमारे पितरों से किरिया खाई हमें
२४ देवे। सो परमेश्वर ने हमें आज्ञा किई कि हम उन सब बिधिन पर चलें और परमेश्वर अपने ईश्वर से अपने भले के लिये सर्वदा डरें जिसतें वुह हमें जीता रक्खे जैसा आज के
२५ दिन है। और यही हमारा धर्म्म होगा यदि हम इन सब आज्ञाओं को परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उसकी आज्ञा के समान पालन करें।

तुझे निकाललाया जिन लोगों से तू डरता है परमेश्वर तेरा
२० ईश्वर उनसे वैसाही करेगा। और परमेश्वर तेरा ईश्वर
उन पर बर्रें को भेजेगा जबलों वे जो बचेहुए और तुमसे
२१ छिपते हैं नाश होजावें। तू उनसे मत डरना क्योंकि परमेश्वर
२२ तेरा ईश्वर तुझमें है सामर्थी और भयानक ईश्वर। और
परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को तेरे आगे थोड़ी थोड़ी
करके उखाड़ेगा तू एक बार उन्हें नाश न करना नहोवे कि बनैले
२३ पशु तुझ पर बढ़जावें। परंतु परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे
आगे सौंप देगा और महा नाश से उन्हें नाश करेगा यहां
२४ लों कि वे नाश होजायें। और वुह उनके राजाओं को तुम्हारे
हाथों में सौंपेगा और तू उनके नाम को स्वर्ग के तले से
मिटादेगा और कोई मनुष्य तेरे आगे ठहर न सकेगा जबलों
२५ तू उन्हें नाश न करले। तुम उनकी खोदीहुई देवतों की
मूर्त्तिन को आग से जला देना तू उनपर के रूपे सोने का
लोभ न करना और उसे अपने लिये मत लेना नहो कि तू
उनमें बझजाय क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे वुह
२६ घिनित है। और तू कोई घिनित अपने घर में मत लाइयो
नहो कि तू उसकी नाईं स्रापित होजाय तू उनसे सर्वथा
घिन कीजियो और उसे सर्वथा तुच्छ जानियो क्योंकि वुह
स्रापित वस्तु है।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ समस्त आज्ञाओं को जो आज के दिन मैं तुम्हें देता हों मानियो
और उन्हें पालन कीजियो जिसतें तुम जीयो और बढ़जाओ
और उस देश में जाओ जिसके बिषय में परमेश्वर ने तुम्हारे
२ पितरों से किरिया खाई है अधिकारी होओ। और उस
समस्त मार्ग को स्मरण करियो जिसमें परमेश्वर तेरा ईश्वर
बन में इन चालीस बरस से तुझे लिये फिरा जिसतें तुझे

दीन करे और तुझे परखे और तेरे मन की बात जांचे यदि
३ तू उसकी आज्ञाओं को पालन करेगा कि नहीं। और उसने
तुझे दीन किया और तुझे भूखा रक्खा और वुह मन्न जिसे तू
न जानता था और न तेरे पितर जानतेथे तुझे खिलाया जिसतें
तुझे सिखलावे कि मनुष्य केवल रोटीही से नहीं जीता रहता
परंतु हर एक बात से जो परमेश्वर के मुंह से निकलती है जीता
४ रहता है। चालीस बरस लों तेरे कपड़े तुझ पर पुराने नऊए
५ और तेरे पांव नसूजे। तू अपने मन में सोचियो कि जिस
रीति से मनुष्य अपने बेटे को ताड़ना करता है परमेश्वर तेरा
६ ईश्वर तुझे ताड़ता है। सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर के मार्ग पर
चलने को और उसे डरने के लिये उसकी आज्ञा पालन करियो।
७ क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे एक उत्तम भूमि में पऊंचाता है
पानी के नालों और सोतों और गहिराओं के जो नीचाई
८ और पहाड़ों से बहता है। गोहूं और जव और दाख और
गूलर और अनार का और तेल के जलपाई का पेड़ और
९ मधु का देश। वुह देश जहां तू बिन महंगी से रोटी खाओगे
जहां तेरे लिये किसी बात की घटती न होगी जिसके पत्थर
१० लोहे हैं और पहाड़ों से तू तांबा खोदे। जब तू खावे और
तृप्त होवे तब तू परमेश्वर अपने ईश्वर को जिसने तुझे वुह
११ अच्छा देश दिया धन्य माने। चौकस रह कि तू परमेश्वर
अपने ईश्वर को भूल न जाय कि उसकी आज्ञाओं और विचार
१२ और विधि पर जो आज मैं तुझे कहता हों न चले। ऐसा
न हो कि जब तू खाके तृप्त होवे और सुथरे सुथरे घर बनावे
१३ और उन में रहे। और तेरे लेहंड़े और झुंड बढ़जायें और
तेरी चांदी और तेरा सोना बढ़ जाय और तेरा सब कुछ
१४ अधिक होवे। तब तेरा मन उभड़जाय और तू परमेश्वर
अपने ईश्वर को भूल जाय जो तुझे मिसर के देश से और
१५ बंधुआई के घर से निकाल लाया। जो उस बड़े भयानक

बन में तुझे लिये फिरा जहां आग के सर्प और बिच्छू थे और सूखा जहां पानी न था जिसने तेरे लिये पथरी के चटान से
१६ पानी निकाला। जिसने बन में तुझे मन्न खिलाया जिसे तेरे पितर न जानते थे जिसतें तुझे दीन करे और तुझे परखे जिसतें
१७ अंत्य समय में तेरा भला करे। और तू अपने मन में कहे कि मैंने अपने पराक्रम और भुजा के बल से यह संपत्ति प्राप्त
१८ किई। परंतु तू अपने ईश्वर परमेश्वर को स्मरण करियो क्योंकि वही तुझे संपत्ति प्राप्त करने को बल देता है जिसतें वुह अपनी बाचा को जो उसने किरिया खाके तेरे पितरों से किया दृढ़
१९ करे जैसा आज के दिन है। और यों होगा कि यदि तू कभी परमेश्वर अपने ईश्वर को भूलेगा और औरही देवों का पीछा करेगा और उनकी सेवा और दंडवत करेगा तो मैं आज के दिन तुम पर साक्षी देता हूं कि तुम निश्चय नष्ट
२० होजाओगे। उन जातिगणों के समान जिन्हें परमेश्वर तुम्हारे सन्मुख नष्ट करता है तुम भी वैसा नष्ट होजाओगे इसकारण कि तुम ने अपने ईश्वर परमेश्वर के शब्द को न माना।

९ नवां पर्ब्ब।

१ हे इसराईल सुनले तुझे आज के दिन अर्दन पार जाना है जिसतें तू उन जातिगणों का जो तुझ से बड़ी और पराक्रमी हैं और उन नगरों का जो बड़े और स्वर्ग लों घेरे हैं अधिकारी
२ होवे। वहां के लोग बड़े और लम्बे हैं जो अनाकियों के संतान हैं जिन्हें तू जानता है और कहते ऊए सुना है कि कौन है जो अनाक के
३ संतान के आगे ठहर सक्ता है। सो तू आज के दिन समझले कि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तेरे आगे आगे पार जाता है भसक अग्नि के तुल्य वुह उन्हें नाश करेगा और वुह उन्हें तेरे आगे ध्वस्त करेगा तू उन्हें हांकदेगा और शीघ्र नष्ट करेगा
४ जैसा परमेश्वर ने तुझे कहा है। और जब परमेश्वर तेरा

ईश्वर उन्हें तेरे आगे से दूर करदेवे तब अपने मन में मत कहना कि परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के कारण से मुझे इस देश का अधिकारी किया परंतु परमेश्वर उन जातिगणों की दुष्टता के
५ कारण से उन्हें तेरे आगे से हांकदेताहै। तू अपने धर्म्म से और अपने मन की खराई से उस देश का अधिकारी होने नहीं जाता परंतु परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों की दुष्टता के कारण उन्हें तेरे आगे से हांकदेताहै जिसतें वुह उस बचन को जो उसने किरिया खाके तेरे पितर इबराहीम और
६ इसहाक़ और याक़ूब से कहा पूरा करे। सो समुझले कि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे धर्म्म के कारण से तुझे उस अच्छे देश का अधिकारी नहीं करता क्योंकि तुम तो कठोर लोगहो।
७ सो चेत कर और भूल नजा कि तूने परमेश्वर अपने ईश्वर के कोप को बन में क्योंकर भड़काया जिस दिन से कि तुम मिसर से बाहर निकले जबलों इस स्थान में आये
८ तुमें परमेश्वर से फिरगयेहो। और तुमने होरेब में भी परमेश्वर के क्रोध को भड़काया सो परमेश्वर तुम्हें नाश
९ करने के लिये क्रुद्ध हुआ। जब मैं दो पत्थर की पटियां लेने को पहाड़ पर चढ़ा अर्थात् नियम की पटियां जो परमेश्वर ने तुम से किया तब मैं चालीस रात दिन उस पहाड़ पर रहा मैंने
१० रोटी न खाई नपानी पीया। तब परमेश्वर ने पत्थर की दो पटियां मुझे सौंपीं जिन पर परमेश्वर ने अपनी अंगुलियों से लिखाथा उन सब बातों के समान जो परमेश्वर ने पहाड़ पर
११ आग में से तुम्हारे एकट्ठे होने के दिन तुमसे कहींथीं। और ऐसा हुआ कि चालीस दिन के पीछे परमेश्वर ने पत्थर की वे
१२ दोनों पटियां अर्थात् नियम की पटियां मुझे दिईं। और परमेश्वर ने मुझे कहा कि उठ चल यहां से नीचे जा क्योंकि तेरे लोगों ने जिन्हें तू मिसर से निकाललाया आप को बिगाड़ दिया वे झट पट उस मार्ग से जो मैं ने उन्हें बताया फिर गये उन्हों ने

१३ अपने लिये एक ढालीऊई मूर्त्ति बनाई। और परमेश्वर मुझे कहिके बोला कि मैंने इन्हें देखाहै देख ये कठोर
१४ लोगहैं। मुझे छोड़ कि मैं उन्हें नाश करों और उन का नाम स्वर्ग के तले से मिटाडालों और मैं तुझे एक जाति जो इस्से
१५ बऊत और बली है बनाओंगा। सो मैं फिरा और पहाड़ पर से उतरा और पर्ब्बत आग से जल रहा था और
१६ नियम की दोनों पटियां मेरे दोनों हाथ में थीं। तब मैंने दृष्टि किई और क्या देखता हों कि तुमने परमेश्वर अपने ईश्वर का पाप कियाथा और अपने लिये ढालाऊआ बछड़ा बनाया तुम बऊत शीघ्र उस मार्ग से जो परमेश्वर ने तुम्हें बताया फिर गये।
१७ तब मैंने दोनों पटियां लेके अपने दोनों हाथों से पटक दिईं
१८ और तुम्हारी आंखों के आगे तोड़ डालीं। और उन सब पापों के कारण जो तुमने किये जब तुमने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई करके उसे रिस दिलाये मैं आगे की नाईं चालीस रात दिन परमेश्वर के आगे गिरा पड़ा रहा मैंने रोटी न खाई
१९ न पानी पीया। क्योंकि मैं परमेश्वर के कोप और क्रोध से डरा कि वुह तुम्हें नाश करने के लिये कोपित था परंतु
२० परमेश्वर ने उस समय में भी मेरी सुनी। तब हारून को नाश करने के लिये परमेश्वर का क्रोध भड़का तब मैंने उस समय
२१ में हारून के लिये भी प्रार्थना किई। और मैंने तुम्हारे पाप को अर्थात् उस बछड़े को जो तुमने बनाया था लिया और आग में जलाया फिर उसे कूटा और बुकनी किया ऐसा कि वुह धूलसा होगया और मैंने उस धूल को नाली में जो पर्ब्बत से
२२ बहती थी डालदिया। और तबीरा में और मासा में और
२३ कबूरुसहतावा में तुमने परमेश्वर को कोपित किया। और उसी ढब से उस समय में जब परमेश्वर ने तुम्हें क़ादश बरनीअ से यह कहिके भेजा कि चढ़जाओ और उस देश के जो मैंने तुम्हें दियाहै अधिकारी होओ तब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की

आज्ञा से फिरगये और तुम उसपर बिश्वास नलाये और
२४ उसके शब्द को नसुना। जिस दिन से मैंने तुम्हें जाना तुम
२५ परमेश्वर से फिरगये हो। सो मैं परमेश्वर के आगे चालीस
रात दिन पड़ा रहा क्योंकि परमेश्वर ने कहा था कि मैं इन्हें
२६ नाश करोंगा। सो मैंने परमेश्वर की बिनती किई और कहा
कि हे परमेश्वर प्रभु अपने लोग को और अपने अधिकार को
जिन्हें तूने अपने महत्व से छुड़ालाया तू अपनी भुजा के पराक्रम से
२७ मिसर से निकाललाया नाश नकर। अपने सेवक इबराहीम
और इसहाक़ और याक़ूब को स्मरण कर इस लोग की ढिठाई
२८ और दुष्टता और पापों पर दृष्टि नकर। न होवे कि वुह देश
जहां से तू हमें निकाललाया कहे कि परमेश्वर सामर्थी नथा
कि उन्हें उस देश में जिसके बिषय में उनसे बाचा किई पहुंचावे
और इस लिये कि वुह उनसे डाह रखताथा इस कारण वुह
२९ उन्हें निकाल लेगया कि उन्हें बन में नाश करे। तथापि वे तेरे
लोग और तेरे अधिकार जिन्हें तू अपने बड़े पराक्रम और
बढ़ाईऊई भुजासे निकाललाया है।

१० दसवां पर्ब्ब।

१ उस समय परमेश्वर ने मुझे कहा कि अपने लिये पत्थर की
दो पटियां अगली के समान चीर और पहाड़ पर मुझ पास आ
२ और अपने लिये लकड़ी की एक मंजूषा बना। मैं उन
पटियों पर वे बातें लिखोंगा जो अगली पटियों परथीं जिन्हें
३ तूने तोड़डाला और तू उन्हें मंजूषा में रखियो। तब मैंने
शमशाद की लकड़ी की मंजूषा बनाई और पत्थर की दो पटियां
अगली के समान चीरीं और उन दोनों पटियों को अपने
४ हाथ में लियेऊए पहाड़ पर चढ़गया। और उसने पटियों
पर अगले लिखेऊए के समान वे दस बचन लिखे जो परमेश्वर ने
पहाड़ पर आग के मध्य से सभा के दिन तुम्हें कहाथा

५ और परमेश्वर ने उन्हें मुझे दिईं। फिर मैं फिरा और पहाड़ पर से उतरा और उन पटियों को उस मंजूषा में जिसे मैंने बनाया था रक्खीं सो वे परमेश्वर की आज्ञा के समान अबलों
६ उसमें हैं। तब इसराईल के संतान ने याकान के संतान बोरुत से मोसीरा को यात्रा किई वहां हारून मरगया और वहीं गाड़ागया और उसका बेटा इलआज़र याजक के
७ पद पर उसके स्थान में सेवा किई। वहां से उन्हों ने जदजदा को यात्रा किई और जदजदा से यदबसा को जो पानियों के
८ नदियों का देश है। उस समय परमेश्वर ने लावी की गोष्ठी को इस लिये अलग किया कि परमेश्वर के नियम की मंजूषा को उठावें और परमेश्वर के आगे खड़े होके सेवा करें और उसके नामसे आशीष देवें सो आज के दिन लों योंहीहै।
९ इस लिये लावी का अंश और अधिकार उसके भाइयों के साथ नहीं परमेश्वर उसका अधिकार है जैसा परमेश्वर तेरे
१० ईश्वर ने उसे बचन दिया। और मैं अगले दिनों के समान फिर चालीस रात दिन पहाड़ में रहा और उस समय भी परमेश्वर ने मेरी सुनी और परमेश्वर ने न चाहा कि तुझे
११ बिनाश करे। फिर परमेश्वर ने मुझे कहा कि उठ और लोगों के आगे चल और उन्हें लेजा जिसतें वे उस देश में बसें जो मैंने उनके पितरों से किरिया खाके कहाथा कि उन्हें
१२ देउंगा। अब हे इसराईल परमेश्वर तेरा ईश्वर मुझसे क्या चाहताहै केवल यही कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरे और उसके सारे मार्गों पर चले और उससे प्रेम रक्खे और अपने मन से और अपने सारे प्राण से परमेश्वर अपने ईश्वर की
१३ सेवा करे। और उसकी आज्ञा और बिधि को जो आज के दिन तेरी भलाई के लिये तुझे कहताहों पालन करे।
१४ देख कि स्वर्ग और स्वर्गों के स्वर्ग और पृथिवी उस सब समेत
१५ जो उसमें है परमेश्वर तेरे ईश्वर का है। केवल परमेश्वर ने

चाहा कि तुम्हारे पितरों से प्रेम रक्खे इस लिये उनके पीछे उनके बंश को अर्थात् तुम्हें समस्त लोगों से अधिक चुनलिया
१६ जैसा कि आज है। सो अपने मन का खतनः करो और आगे
१७ को कठोर मत होओ। क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर ईश्वरों का ईश्वर और प्रभुओं का प्रभु एक महा ईश्वर शक्तिमान भयंकर है जो मानुषत्व पर दृष्टि नहीं करता और अकोर नहीं लेता।
१८ वुह अनाथों और बिधवों का न्याय करता है और परदेशियों से
१९ प्रेम रख के उन्हें भोजन बस्त्र देता है। सो तुम भी परदेशियों को प्यार करो क्योंकि तुम भी मिसर के देश में परदेशी थे।
२० परमेश्वर अपने ईश्वर से डरता रह उसकी सेवा कर और
२१ उसी से लवलीन रह उसी के नाम की किरिया खा। वही तेरी स्तुति और तेरा ईश्वर है जिसने तेरे लिये ऐसे ऐसे बड़े और
२२ भयंकर कार्य्य किये जिन्हें तूने अपनी आंखों से देखा। तेरे पितर सत्तर जन लेके मिसर में उतरे और अब परमेश्वर तेरे ईश्वर ने आकाश के तारे के समान तुझे बढ़ाया।

११ ग्यारहवां पर्व्व।

१ सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रख और उसकी आज्ञा और विधि और न्याय और उसके बचन सदा पालन कर।
२ और तुम आज के दिन जानलेओ क्योंकि मैं तुम्हारे बंश से नहीं बोलता जिन्होंने तुम्हारे ईश्वर की ताड़ना और उसकी महिमा और उसके हाथ का बल और उसकी बढ़ाईहुई भुजा
३ नजाना है नदेखा है। और उसके आश्चर्य्य और उसके कार्य्य जो वुह मिसर के मध्य में और मिसर के राजा फ़रऊन के
४ मध्य में उसके समस्त देश में किये। और जो कुछ उसने मिसर की सेनाओं के साथ और उनके घोड़ों और उनकी गाड़ियों के साथ किये किस रीति से उसने लाल समुद्र का पानी उन पर उभाड़ा जब उन्होंने तुम्हारा पीछा किया सो परमेश्वर ने उन्हें

५ नष्ट किया जैसा आज के दिन लों है। और जो कुछ उसने अरण्य में जबलों कि तुम यहां पहुंचे तुम्हारे साथ किया।
६ और जो उसने दासान और अबिराम के साथ किया जो राऊबीन के बेटे अलियाब के बेटे थे किस रीतिसे पृथिवी ने अपना मुंह खोला और उन्हें और उनके घरानों और उनके तंबुओं को और समस्त जीवधारियों को जिन्होंने उनका पीछा किया और जो उनके बश में थे समस्त इसराईल के मध्य में
७ उन्हें निंगल गई। परंतु तुम्हारी आंखोंने परमेश्वर के कियेहुए
८ समस्त महान कार्य्य देखा। सो तुम उन समस्त आज्ञाओं को जो आज मैं तुम्हें कहताहों पालन करो जिसतें तुम बली होओ और जाके उस देश के जिसके अधिकारी होने के लिये पार
९ जातेहो अधिकारी होओ। और जिसतें तुम उस देश पर अपना जीवन बढ़ाओ जिसके कारण परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाके कहा कि मैं उन्हें और उनके बंश को
१० देउंगा वुह देश जिसमें दूध और मधु बहताहै। क्योंकि वुह देश जिसका तू अधिकारी होने जाताहै मिसर के समान नहीं जहां से तुम निकल आये जहां तू बीहन बोताथा और उसे अपने तरकारी की बारी की नाईं पांव से पानी सींचताथा।
११ परंतु वुह भूमि जिसके अधिकारी होनेको जातेहो पहाड़ों और तराई का देश है जो आकाश के मेघ से सींची जातीहै।
१२ यह वुह देश है जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चाहताहै और बरस के आरंभ से लेके बरस के अंत लों सदा परमेश्वर तेरे ईश्वर
१३ की आंखें उस पर लगी हैं। और यों होगा कि यदि तुम ध्यान से मेरी आज्ञाओं को सुनोगे जो मैं तुम्हें आज के दिन आज्ञा करताहों परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम करो कि अपने समस्त
१४ मन से और अपने सारे प्राण से उसकी सेवा करो। तो मैं तुम्हारी भूमि में समय पर मेह बरसाओंगा आरंभ के मेह और अंत के मेह मैं तुम्हें देओंगा जिसतें तुम अपना अन्न और दाखरस

१५ और तेल एकट्ठा करो। और तेरे खेत में घास उगाओंगा जिसतें
१६ तू खाय और तृप्त होवे। तुम आपसे चौकस रहो जिसतें
तुम्हारे मन छल नखावें और तुम फिर जाओ अरु और देवतों की
१७ सेवा करो और उनकी दंडवत करो। और परमेश्वर का
क्रोध तुमपर भड़के और वुह स्वर्ग को बंद करे जिसतें मेह न
बरसे और भूमि अपना फल नदेवे और तुम उस भूमि से जो
१८ परमेश्वर तुम्हें देताहै शीघ्र नष्ट होजाओ। सो मेरी
इन बातों को अपने अंतःकरण में और मन में रख छोड़ो
और चिन्ह के लिये अपने हाथों पर बांधो जिसतें वे तुम्हारी
१९ दोनों आंखों के मध्य में टीके की नाईं रहें। और तुम उन्हें
अपने घरमें बैठेऊए और मार्ग चलतेऊए और लेटतेऊए
२० और उठने के समय अपने लड़कों को सिखाओ। और तू उन्हें
२१ अपने घर के फाटकों पर और द्वारों पर लिखे। जिसतें तेरे
और तेरे वंश के दिन जैसा कि स्वर्ग के दिन पृथिवी पर बढ़ते हैं
वैसेही तुम्हारे दिन उस देश में जिसके कारण परमेश्वर ने तेरे
पितरों से किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हें देओंगा बढ जायें।

२२ क्योंकि यदि तुम उन सब आज्ञाओं की जो मैं तुम्हें आज्ञा
करताहों यत्न से पालन करोगे और उन्हें मानोगे और परमेश्वर
अपने ईश्वर से प्रेम रक्खोगे और उसके समस्त मार्गों पर
२३ चलोगे और उस्से लवलीन रहोगे। तब परमेश्वर इन सब
जातिगणों को तुम्हारे आगे से हांक देगा और तुम जातिगणों को
जो बड़े बली और तुम से अधिक सामर्थी हैं अधिकारी होओगे।
२४ जिस जिस स्थान पर तुम्हारे पांओं का तलवा पड़ेगा सो सो
तुम्हारा होजायगा बन और लबनान से और नदी से फ़रात नदी से
२५ लेके अत्यंत समुद्र लों तुम्हारा सिवाना होगा। किसी की सामर्थ्य
नहोगी कि तुम्हारे आगे ठहर सके परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर
तुम्हारा भय और तुम्हारा डर समस्त देश में जिस पर तुम्हारा
२६ पैर पड़ेगा डालेगा जैसा उसने तुम से कहा है। देखो

मैं आज के दिन तुम्हारे आगे आशीष और स्राप धर देताहों।
२७ आशीष यदि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को जो
२८ आज मैं तुम्हें देताहों पालन करोगे। और स्राप यदि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा पालन नकरोगे परंतु उस मार्ग से फिरके जो आज मैं तुम्हें आज्ञा करताहों अन्य और देवता का
२९ पीछा करोगे जिन्हें तुमने नहीं जाना। और यों होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश में जहां तू अधिकारी होने को जाताहै पहुंचावे तो तू आशीष को गरिज़िम के
३० पहाड़ पर रखियो और स्राप को ऐबाल के पहाड़ पर। क्या वे अर्दन पार नहीं उसी मार्ग में जिधर सूर्य अस्त होताहै किनानियों के देश में जो जलजाल के साम्ने चौगान में रहतेहैं
३१ और चौगानों के लग हैं। क्योंकि तुम अर्दन पार जाते हो जिसतें उस देश के जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देताहै अधिकारी होओ और तुम उसके अधिकारी होगे और उसमें
३२ बसोगे। सो तुम समस्त विधि और बिचार जो आज मैं तुम्हारे आगे धरताहों सोच रखियो।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ ये वे विधि और बिचार हैं जिन्हें तुम उस देश में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें अधिकार में देताहै जबलों तुम
२ पृथिवी पर जीते रहो उन्हें सोचके मानियो। तुम उन स्थानों को सर्वथा नाश कीजियो जहां वे जातिगण जिनके तुम अधिकारी होओगे अपने देवतों की सेवा कियेहैं ऊंचे पहाड़ों पर और
३ टीलों पर और हर एक हरे पेड़ तले। उनकी बेदियों को ढादीजियो और उनके खंभों को तोड़ियो और उनके कुंजों को आग से जलाइयो और उनके देवतों की खोदीहुई मूर्त्तों को ढादीजियो और उनके नाम को उस स्थान से मिटा दीजियो।
४ तुम ऐसा कुछ परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मत कीजियो।

५ परंतु वुह स्थान जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारी समस्त गोष्ठियोंमेंसे चुनेगा कि अपना नाम उसपर रक्खे और
६ उसीके निवास को ढूंढ़ो और उसी स्थान पर आओ। और वहीं होम की भेटें और अपने बलि और अपने अंश और अपने हाथ की हिलाईऊई भेटें और अपनी मनौतियां और अपनी बांछा की भेटें और अपने ढोर और झुंड के
७ पहिलौंठे लाइयो। वहां परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे खाओगे और अपने सारे घराने समेत अपने हाथ के सब कामों में जिनमें परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें आशीष दिया आनंद
८ करोगे। तुम ऐसे कार्य्य जैसे हम यहां करतेहैं हर एक जो
९ अपनी अपनी दृष्टि में ठीक है वहां मत कीजियो। क्योंकि तुम उस बिश्राम और अधिकार को जो परमेश्वर तुम्हारा
१० ईश्वर तुम्हें देताहै अबलों नहीं पऊंचे। परंतु जब तुम अर्दन पार जाओ और उस देश में बसो जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा अधिकार करदेताहै और तुम्हें तुम्हारे सब शत्रुन के जो चारों ओर हैं चैन देगा ऐसा कि तुम चैन से
११ बसो। तब वहां एक स्थान होगा जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर चुनके अपना नाम उसपर रक्खे सो तुम सब कुछ जो मैं तुम्हें कहताहों वहां लेजाइयो अर्थात् अपनी होम की भेंटें और अपने बलि अपने अंश और अपने हाथ की हिलाईऊई भेंट और अपनी बांछा की मनौती जो तुम परमेश्वर
१२ के लिये मानतेहो वहां लाइयो। और अपने बेटों और अपनी बेटियों और अपने दासों और अपनी दासियों और उस लावी सहित जो तुम्हारे फाटकों में हो इस लिये कि उसका अंश और अधिकार तुम्हारे साथ नहीं परमेश्वर
१३ अपने ईश्वर के आगे आनंद कीजियो। अपने से सोचेत रहो और अपनी भेंट हर एक स्थान पर जहां संयोग मिले मत
१४ चढ़ाइयो। परंतु उसी स्थान में जिसे परमेश्वर तुम्हारी

१३ तेरहवां पर्व्व।

१ यदि तुम्में कोई आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी प्रगट होवे
२ और तुम्हें कोई लक्षण अथवा आश्चर्य दिखावे। और वुह
लक्षण अथवा आश्चर्य जो उसने दिखाया पूरा होवे और वुह
तुम्हें कहे कि आओ हम आन देवतों का पीछा करें जिन्हें तू ने
३ नहीं जाना और उनकी सेवा करें। तो कभी उस आगमज्ञानी
अथवा स्वप्नदर्शी के बचन मत सुनियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा
ईश्वर तुम्हें परखता है जिसतें देखे कि तुम परमेश्वर अपने
ईश्वर को अपने सारे जीव से और सारे प्राण से मित्र रखतेहो
४ कि नहीं। तुम अपने ईश्वर परमेश्वर का पीछा करो और
उसे डरो और उसकी आज्ञाओं को धारण करो और उसका
शब्द मानो तुम उसकी सेवा करो और उसीसे लवलीन रहो।
५ और वुह आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी घात किया जायगा क्योंकि
उसने तुम्हें परमेश्वर अपने ईश्वर से फिरावने की बात कही
जो तुम्हें मिसर से बाहर निकाल लाया और तुम्हें बंधुआई के
घर से छुड़ाया जिसतें तुम्हें उस मार्ग में से जो परमेश्वर तुम्हारे
ईश्वर ने आज्ञा किईहै बगदादेवे सो तुझे उचित है कि तू उस
६ बुराई को अपने मध्य से निकाल डाले। यदि तेरा सगा
भाई अथवा तेरा बेटा अथवा तेरी बेटी अथवा तेरी गोद की
पत्नी अथवा तेरा मित्र जो तेरे प्राण के समान होवे तुझे चुपकेसे
फुसलावे और कहे कि चल दूसरी देवतों की सेवा करें जिन्हें तू
७ और तेरे पितर नहीं जानतेहैं। उन लोगों के देवतों में से
जो तुम्हारे आसपास तेरे चारों ओर हैं अथवा तुझे दूर
८ भूमि के इस खूंट से उस खूंट लों। तू उसकी बात न मानियो
न उसको सुनियो न उस पर दया की दृष्टि कीजियो तू उसे
९ मत छोड़ न उसको छिपा। परंतु उसे अवश्य मार डालियो
उसके बंधन में पहिले तेरा हाथ उस पर पड़े और पीछे सब
१० लोगों के हाथ। तू उस पर पथरवाह कीजियो जिसतें वुह

मरजाय क्योंकि उसने चाहा कि परमेश्वर तेरे ईश्वर से तुझे भटकावे जो तुझे मिसर के देश और बंधुआई के घरसे
११ निकाल लाया। और सारे इसराईल सुनके डरेंगे और
१२ तुम्हारे मध्य में फेर ऐसी दुष्टता नकरेंगे। यदि तू उन नगरों में जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे बसने के लिये दिये हैं
१३ यह कहते सुने। कि कितने लोग तुम्में से निकल गये और अपने नगर के बासियों को यूं कहिके भटकाया कि आओ चलें
१४ और देवतों की सेवा करें जिन्हें तुमने नहीं जाना है। सो खोजियो और यत्न से पूछियो और देख यदि सत्य होय और
१५ निःसंदेह कि ऐसा घिनित कार्य तुम्में है। तो उस नगर के बासियों को खड्ग की धारसे निश्चय मार डालियो उसे और जो कुछ उसमें है और वहां के ढोर को खड्ग की धारसे सर्वथा नाश
१६ कीजियो। और तू वहां की सारी लूट को वहां की सड़क के मध्य में एकट्ठे कीजियो और उस नगर को और वहां की सारी लूट को परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये जला दीजियो और वुह सनातन लों एकट्ठे रहेगा फिर बनाया नजायगा।
१७ और उस स्रापित बस्तु में से कुछ तेरे हाथ में सटी नरहे जिसतें परमेश्वर अपने क्रोध के जलजलाहट से फिर जाय और तुझ पर अनुग्रह करे और दयाल होवे और तुझे बढ़ावे
१८ जैसा कि उसने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है। जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुने कि उसकी सारी आज्ञा को जो आज मैं तुझे कहता हों जो परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे ठीक है उसे पालन करे।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

१ तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के संतान हो तुम मृतक के लिये अपने को काट कूट नकरियो न अपने माथे को मुंड़ाइयो।
२ क्योंकि तू परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र लोग है और

परमेश्वर ने समस्त जातिगणों में से जो पृथिवी पर हैं तुझे
३ चुन लिया कि अपना निज लोग बनावे। तू किसी घिनित
४ वस्तु को मत खाइयो। इन पशुन को खाइयो बैल भेड़ बकरी।
५ और हरिण और हरिणी और कंदली और बनैली बकरी
६ और गवय और बनैला बैल और बातप्रमो। और हर एक
चौपाया जिसके खुर चिरेऊए हों और उसके खुर में विभाग हो
७ और पागुर करताहो तुम उसे खाइयो। तथापि उन में से जो
पागुर करते हैं अथवा उन के खुर चिरेऊए हैं जैसे ऊंट और
खरहा और सफन तुम इन्हें मत खाइयो इस लिये कि वे पागुर
नहीं करते परंतु उन के खुर चिरेऊए हैं सो वे तुम्हारे लिये
८ अशुद्ध हैं। और सूअर इस कारण कि उसके खर चिरेऊए हैं
तथापि पागुर नहीं करता वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध है तुम
९ उनका मांस नखाइयो न उनकी लोथों को छूइयो। सब में से
जो पानियों में रहते हैं इन्हें खाइयो जिनके पंख और छिलके हों।
१० और जिस किसी के पंख और छिलके नहों तुम उन्हें नखाइयो
११ वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध है। समस्त पावन पक्षी को खाइयो।
१२ परंतु उनमें इन्हें नखाइयो गिद्ध और हाड़गिल और
१३ कुरर। और धंकर चील्ह और चील्ह और भांति भांति के
१४।१५ गिद्ध। और भांति भांति के कव्वे। पेंचा और लक्ष्मीपेंचा
१६ और कोइल और भांति भांति क सिकरा। और छोटा पेंचा
१७ और उल्लू और राजहंस। और गरुड़ और बासा और
१८ मकरंक। और सारस और भांति भांति के बगुले और टिटिहरी
१९ और चमगूदर। और हर एक रेंगवैया जो उड़ता है तुम्हारे
२० लिये अशुद्ध है वे खाये नजावें। समस्त पवित्र पक्षी खाइयो।
२१ जो कुछ आपसे मर जाय उसे मत खाइयो तू उसे किसी
परदेशी को जो तेरे फाटकों में है खाने को दीजियो अथवा
किसी विदेशी के हाथ बेच डालियो क्योंकि तू परमेश्वर अपने
ईश्वर का पवित्र लोग है तू मेम्ना को उसकी माता के दूध में

२२ मत उसिनना। बरस बरस जो बीज तेरे खेतों में उगे तू
२३ निश्चय उसका अंश दिया कर। तू परमेश्वर अपने ईश्वर के
आगे उस स्थान में जिसे वुह अपने नाम के लिये चुनेगा
अपने अन्न का अपनी मदिरा का अपने तेल का अपने ढोर
और अपनी झुंड के पहिलौंठों के अंश को खाइयो जिसतें तू
२४ सर्बदा परमेश्वर अपने ईश्वर से डरने को सीखे। और यदि
मार्ग तेरे लिये अति दूर होवे यहां लों कि तू उसे न लेजासके
यदि वुह स्थान जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना जिसतें
अपना नाम वहां स्थिर करे बहुत दूर होवे तो जब परमेश्वर
२५ तेरा ईश्वर तुझे आशीष देवे। तब तू उन्हें बेचके उनका रोकड़
अपने हाथ में लेके उस स्थान को जा जो तेरे परमेश्वर ने
२६ चुना है। और उस रोकड़ से जिस बस्तु को तेरा मन चाहे
मोल ले गाय बैल अथवा भेड़ अथवा दाखरस अथवा मद्य
अथवा जो बस्तु तेरा जीव चाहे तू और तेरा घराना परमेश्वर
२७ अपने ईश्वर के आगे खा और आनंद कर। और जो लावी
तेरे फाटकों में है उसे त्याग मत करियो क्योंकि उसका भाग
२८ और अधिकार तेरे साथ नहीं है। तीन बरस के पीछे
अपनी बढ़ती का समस्त दसवां भाग उसी बरस लाइयो और
२९ अपने फाटकों के भीतर धरियो। और इसकारण कि लावी
तेरे संग भाग और अंश नहीं रखता है और परदेशी और
अनाथ और बिधवा जो तेरे फाटकों में हैं आवें और खावें
और तृप्त होवें जिसतें परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के समस्त
कार्यों में जो तू करता है आशीष देवे।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

१।२ सात बरसों के पीछे तू छुटकारा ठहराओ। और छुटकारे की
रीति यह है कि हर एक धनिक जो अपने परोसी को ऋण
देता है सो उसे छोड़ देवे और अपने परोसी से अथवा भाई से

न लेवे इस कारण कि यह परमेश्वर का छुटकारा कहावता है।
३ परदेशी से तू ले सके परंतु यदि तेरा कुछ तेरे भाई पर है
४ तो उसे छोड़ दे। जिसतें तुम्में कोई कंगाल न होवे
क्योंकि परमेश्वर उस देश में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे
५ अधिकार में देता है तुझे आशीष देगा। यदि तू केवल
परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुने और ध्यान से उन
६ समस्त आज्ञाओं पर चले जो आज मैं तुझे कहता हों। तो
परमेश्वर तेरा ईश्वर जैसा उसने तुझे प्रण किया है तुझे
आशीष देगा और तू बहुत जातिगणों को उधार देगा परंतु
तू उधार न लेगा और तू बहुतसे जातिगणों पर राज्य करेगा
७ परंतु वे तुझ पर राज्य न करेंगे। तुम्हारे भाइयों में से
तेरे किसी फाटकों में तेरे उस देश पर जिसे परमेश्वर तेरा
ईश्वर तुझे देता है यदि तुम्में कोई कंगाल होवे तो उसे अपने
मन को कठोर मत करियो और अपने कंगाल भाई की ओर से
८ अपना हाथ न खींचियो। परंतु अवश्य उसकी सहाय करियो
परंतु उसे हाथ बंद मत कीजियो और निश्चय उसके
९ आवश्यक के समान उसे उधार देना। सावधान हो कि तेरे दुष्ट
मन में कोई बुरी चिंता न कहे कि सातवां बरस तेरे छुटकारे का
बरस पास है और तेरी आंख तेरे कंगाल भाई की ओर बुरी
होवे और तू उसे कुछ न देवे और वुह तुझ पर परमेश्वर के
१० आगे बिलाप करे और तेरे लिये पाप होवे। अवश्य उसे
दीजियो और जब तू उसे देवे तो तेरा मन उदास न होवे
क्योंकि इस कारण से परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे समस्त कार्यों में
११ जिन में तू हाथ लगावे बढ़ती देगा। क्योंकि देश में से कंगाल
न मिटेंगे इस लिये मैं तुझे आज्ञा करता हों कि अपने भाई के
लिये जो तेरे सन्मुख और अपने कंगाल और अपने दरिद्र के
१२ लिये जो तेरे देश में है अपना हाथ खोलियो। यदि
तेरा इबरानी भाई पुरुष अथवा स्त्री तेरे हाथ बेचा जाय और

छः बरस लों तेरी सेवा करे तब सातवें बरस सेंत से उसे जान
१३ दीजियो। और जब तू उसे अपने पास से जाने देवे तो उसे छूछे
१४ हाथ मत जाने दीजियो। परंतु अपनी भुंड और खत्ते और कोल्हू
में से उस बढ़ती में से जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिई है
१५ उसे मन खोलके दीजियो। और स्मरण कीजियो कि मिसर के
देश में तू बंधुआ था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे छुड़ाया
१६ इस लिये आज मैं तुझे आज्ञा करता हों। और यदि वुह तुझे कहे
कि मैं तुझ पास से नजाउंगा इस कारण कि वुह तुझ से और तेरे
१७ घर से प्रीति रखता है क्योंकि वुह तेरे संग कुशल से है। तो तू
एक सुतारी लेके अपने द्वार पर उसका कान छेदियो जिसतें वुह
सदा को तेरा सेवक होगा और अपनी दासी से भी तू ऐसाही
१८ करियो। और जब तू उसे छोड़ देवे तो तुझे कठिन न समुझ पड़े
क्योंकि उसने दो बनिहारों के तुल्य छः बरस लों तेरी सेवा किई
सो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हर एक कार्य में तुझे आशीष
१९ देगा।   तेरे ढोर के और तेरे भुंड के सारे पहिलौंठे नरख
परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र करियो तू अपने बैलों के
पहिलौंठों से कुछ कार्य मत लीजियो अपनी भेड़ के पहिलौंठों को
२० मत कतरना। परमेश्वर मत अपने ईश्वर के आगे उस स्थान में जो
२१ परमेश्वर चुनेगा अपने घराने सहित खाइयो। परंतु यदि उस
में कोई खोट देवे लंगड़ा अथवा अंधा अथवा कोई भारी खोट
होवे तो उसे परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बलिदान मत करियो।
२२ जैसे हरिन और बारहसींगा तुम उसे अपने द्वारों पर खाइयो
२३ पवित्र हो अथवा अपवित्र दोनों समान हैं। केवल उसका लोहू
मत खाइयो तू उसे पानी की नाईं भूमि पर ढाल दीजियो।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

१ अबिब के मास का पालन करियो और परमेश्वर अपने ईश्वर का
बीतजाना मानियो क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर अबिब के

२ मास में रातको तुझे मिसर से निकाल लाया। उस स्थान में जिसे परमेश्वर अपना नाम स्थापन करने के लिये चुनेगा अपने परमेश्वर ईश्वर के लिये तू ओर अपने ढोर में से बीतजाना
३ बलि करियो। तू उसके साथ ख़मीरी रोटी मत खाना सात दिन उसके साथ अख़मीरी रोटी अर्थात् कष्ट की रोटी खाइयो क्योंकि तू मिसर के देश से उतावली से निकला जिसतें तू उस दिन को अपने जीवन भर स्मरण करे जब तू मिसर से
४ निकला। ओर तेरे सारे सिवाने में सात दिन लों ख़मीरी रोटी दिखाई न देवे ओर न उस मांस में से जिसे तूने पहिले दिन सांझ को बलि किया रात भर बिहान लों बच रहे।
५ तू अपने किसी फाटकों के भीतर जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे
६ देता है बीतजाना बलि मत करियो। परंतु उसी स्थान में जिस परमेश्वर तेरा ईश्वर अपना नाम स्थापन करने के लिये चुनेगा सांझ को सूर्य अस्त होते उसी समय में जब तू मिसर से
७ निकला बीतजाना बलि करियो। ओर उस स्थान में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा तू उसे भून के खाइयो ओर
८ बिहान को फिर के अपने तंबुओं को चले जाइयो। छः दिन लों अख़मीरी रोटी खाइयो ओर सातवें दिन जो तेरे ईश्वर के
९ रोक का दिन है कुछ कामकाज न करना। अपने लिये सात अठवारे गिन ओर खेती में हंसुआ लगाने से गिन्ने का
१० आरंभ करियो। ओर परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये अपने हाथ के मनमनता के कर से अठवारों का पर्ब्ब रखियो जिसे
११ तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आशीष के समान दीजियो। ओर परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे तू ओर तेरा बेटा बेटी ओर तेरे दास दासी ओर लावी जो तेरे फाटकों के भीतर हैं ओर परदेशी ओर अनाथ ओर विधवा जो तुम्में हैं उस स्थान में आनंद करियो जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना है कि अपना
१२ नाम वहां स्थापन करे। ओर सुधि रखियो कि तू मिसर में

दास था सो चौकस रह कि इन बिधिन को पालन कर और
१३ मान। जब तू अपने खरिहान और अपने कोल्हू को
१४ एकट्ठा कर चुके तो सात दिन लों तंबुओं का पर्ब्ब मानियो। और
अपने बेटा बेटी और अपने दास दासी और लावी और
परदेशी और अनाथ और बिधवा समेत जो तेरे फाटकों के
१५ भीतर हैं आनंद करियो। सात दिन लों अपने ईश्वर परमेश्वर के
लिये उसी स्थान में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा पर्ब्ब
मानियो इस लिये कि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी सारी
बढ़तियों में और तेरे हाथों के समस्त कार्यों में तुझे बर देगा
१६ सो तू निश्चय आनंद करियो। बरस में तेरे समस्त पुरुष
तीन बार अर्थात् अख़मीरी रोटी के पर्ब्ब में और अठवारों के
पर्ब्ब में और तंबुओं के पर्ब्ब में परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे
उस स्थान में जिसे वुह चुनेगा एकट्ठे होवें और वे परमेश्वर के
१७ आगे छूछे न आवें। हर एक पुरुष अपनी पूंजी के समान और
परमेश्वर तेरे ईश्वर के आशीष के समान जो उसने तुझे
१८ दिया है देवे। अपने समस्त फाटकों में जो परमेश्वर तेरा
ईश्वर तुझे देगा अपनी समस्त गोष्ठियों में न्यायी और प्रधान
ठहराइयो और वे याथार्थ्य से लोगों का न्याय करें। तू अन्याय
१९ बिचार मत करियो तू पक्ष न करियो घूस मत लीजियो
क्योंकि घूस बुद्धिमान को अंधा करदेता है और धर्म्मी की बातों को
२० फेर देता है। जो हर प्रकार से याथार्थ्य है तू उस का पीछा
करियो जिसतें तू जीये और उस देश का जो परमेश्वर तेरा
२१ ईश्वर तुझे देता है अधिकारी होवे। परमेश्वर अपने
ईश्वर की बेदी के लग अपने लिये पेड़ों का कुंज जिसे तू लगाता है
२२ न लगाइयो। न अपने लिये किसी भांति की मूर्त्ति स्थापित
करियो जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर को घिन है।

१७ सतरहवां पर्ब्ब।

१ तू परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बैल अथवा भेड़ जिस में कोई खोट अथवा बुराई होय बलि मत चढ़ाइयो क्योंकि
२ परमेश्वर तेरे ईश्वर को उस्से घिन है। यदि तुम्हारे किसी फाटकों के भीतर जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तुम्हों में कोई पुरुष अथवा स्त्री होय जिसने परमेश्वर तेरे ईश्वर के
३ आगे उसकी बाचा को भंग करके दुष्टता किई होय। और जाके दूसरे देवों की पूजा किई हो और उन्हे दंडवत् किई हो जैसे सूर्य अथवा चंद्रमा अथवा आकाश की कोई सेना जिनकी
४ मैंने आज्ञा नहीं दिई। और तुझे कहाजाय और तूने सुनाहै और यत्न से खोजा और सत्य पाया और निश्चय
५ कियाजाय कि इसराईल में ऐसा घिनित कार्य्य हुआहै। तब तू उस पुरुष अथवा उस स्त्री को जिसने तेरे फाटकों में दुष्ट कार्य्य कियाहै उसी पुरुष अथवा उसी स्त्री को बाहर लाइयो और उनपर यहां लों पथरवाह कीजियो कि वे मर जावें।
६ दो अथवा तीन की साक्षी से जो मारडालने के योग्य है मारडालाजाय परंतु एक साक्षी से वुह मारा नजाय।
७ साक्षियों के हाथ पहिले उस पर और पीछे सब लोगों के
८ तुम अपनों में से बुराई को यों मिटाडालियो। यदि आपुस के लोहू बहाने में और आपुस के बिवाद में और आपुस की मार पीट में तेरे फाटकों के भीतर अपवाद के विषय में तेरे विचार के लिये कठिन होय तो उठ और उस
९ स्थान को जा जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना है। और याजकों अर्थात् लावियों पास और उस न्यायी के पास जो उन दिनों में हो जा और उसे पूछ और वे तुझे न्याय की आज्ञा बतावेंगे।
१० और तू उस आज्ञा के समान करना जो वे तुझे उस स्थान से जिसे परमेश्वर चुनेगा बतावें सोचके उन सभों के समान
११ जो वे तुझे बतावें मानना। और उस ब्यवस्था की आज्ञा के

समान जो वे तुझे सिखलावें और उस बिचार के तुल्य जो तुझे कहें करियो और उस आज्ञा से जो वे तुझे बतावें दहिने
१२ बायें मत मुड़ियो। और जो मनुष्य ढिठाई करे और उस याजक की बात जो परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे सेवा करने के लिये खड़ा है अथवा उस न्यायी का बचन नसुने वही मनुष्य मारडालाजाय और तू इसराईल में से उस बुराई को यों
१३ मिटा दीजियो। जिसतें समस्त लोग सुनें और डरें और
१४ फेर ढिठाईसे अपराध नकरें। जब तू उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है पहुंचे और उसे अपने बश में करे और उस में बसे और कहे कि उन सब जातिगण के समान जो मेरे आस पास हैं मैं भी अपने लिये एक राजा
१५ बनाओंगा। जो तू किसी रीति से अपने ऊपर राजा ठहराना जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुने तू अपने भाइयों में से एक को अपना राजा बनाना और किसी परदेशी को जो तेरा
१६ भाई नहीं है अपने ऊपर नठहराना। परंतु वुह अपने लिये घोड़े नबढ़ावे और नलोगों को मिसर में फेर लेवाजाय जिसतें वुह घोड़े बढ़ावे जैसा कि परमेश्वर ने तुम्हें कहा है कि तुम उस
१७ मार्ग में फेर कधी नजाना। और वुह अपने लिये पत्नी नबटोरे ऐसा नहो कि उसका मन फिरजाय और वुह अपने
१८ लिये बहुत रूपा और सोना बटोरे। और यूं होगा कि जब वुह अपने राज्य के सिंहासन पर बैठे तो इस ब्यवस्था को पुस्तक में
१९ अपने लिये लिखे जो लावी याजकों के आगे है। वुह उसके साथ रहा करे और अपने जीवन भर उसे पढ़ा करे जिसतें वुह परमेश्वर अपने ईश्वर का डर सीखे और इस ब्यवस्था के समस्त
२० बचन और इन बिधिन को पालन करे और माने। जिसतें उसका अंतःकरण अपने भाइयों के ऊपर नउभड़े और कि वुह आज्ञा से दहिने अथवा बायें नमुड़े जिसतें उसके राज्य में उसके और उसके बंश के इसराईल के मध्य में जीवन बढ़ जायें।

१८ आठारहवां पर्ब्ब।

१ याजकों और लावी और लावियों की समस्त गोष्ठी का भाग और अधिकार इसराईल के साथ न होगा वे परमेश्वर के
२ होम की भेंट और उसके अधिकार खायें। इस लिये वे अपने भाइयों में अधिकार न पावेंगे परमेश्वर उनका अधिकार है
३ जैसा उसने उन्हें कहा है। और लोगों में से जो बलिदान चढ़ाते हैं चाहे बैल अथवा भेड़ याजक का भाग यह होगा कि वे याजक को कांधा और दोनों गाल और झोझ
४ देवें। और तू अपने अन्न और अपनी मदिरा और तेल में का पहिला भाग और अपनी भेड़ों के रोम में का पहिला उसे
५ देना। क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरी समस्त गोष्ठियों में से उसे चुना है कि वुह और उसके बेटे परमेश्वर के नाम की सदा
६ सेवा करें। यदि कोई लावी समस्त इसराईल में से तेरे किसी फाटकों से आवे यहां वुह बास करता था और उस स्थान में
७ जिसे परमेश्वर चुनेगा बड़ी लालसा से आपज़ंचे। तो वुह परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम से सेवा करे जैसे उसके समस्त
८ लावी भाई जो परमेश्वर के आगे वहां खड़े रहते हैं। अपने पितरों की बेचीऊई वस्तुन के मोल को छोड़के वे उनके भाग के
९ समान खाने को पावें। जब तू उस देश में पज़ंचे जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तो उन जातिगणों के घिनित कार्य
१० नसीखियो। तुझमें कोई ऐसा न हो कि अपने बेटे अथवा बेटी को आग में से चलावे अथवा दैवज्ञ कार्य करे अथवा मुहूर्त्त माने
११ अथवा मायावी अथवा टोनहिन। अथवा तान्त्रिक अथवा
१२ बशकारी अथवा टोनहा अथवा गणक। क्योंकि सब लोग ऐसे कार्य करते हैं परमेश्वर से घिनित हैं और ऐसे घिन के कारण से
१३ उनको परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे आगे से दूर करता है। तू
१४ परमेश्वर अपने ईश्वर से निष्कपट हो। क्योंकि ये जातिगण जिनका तू अधिकारी होगा मुहूर्त्त के मनवैये को और दैवज्ञ को

सुनतेथे परंतु तू जो है परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे रोक
१५ रक्खा है। परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे कारण तेरेही
मध्य में से तेरेही भाइयों में से एक आगमज्ञानी मेरे तुल्य
१६ उदय करेगा तुम उसकी सुनियो। इन सभों की नाईं जो
तूने परमेश्वर अपने ईश्वर से होरेब में सभा के दिन मांगा
और कहा ऐसा नहो कि मैं परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द
सुनो और ऐसी बड़ी आग मैं फेर देखों जिसतें कि मैं
१७ मर नजाऊं। और परमेश्वर ने मुझे कहा कि उन्होंने जो कुछ
१८ कहा सो अच्छा कहा। मैं उनके लिये उनके भाइयों में से तेरे
तुल्य एक आगमज्ञानी उदय करोंगा और अपना बचन उसके
मुंहमें डालोंगा और जो कुछ मैं उसे कहोंगा वुह उनसे
१९ कहेगा। और ऐसा होगा कि जो कोई मेरी बातों को जिन्हें
वुह मेरे नाम से कहेगा नसुनेगा मैं उस्से लेखा लेउंगा।
२० परंतु जो आगमज्ञानी ऐसी ढिठाई करे कि कोई बात जो
मैंने उसे नहीं कही मेरे नाम से कहे अथवा जो और देवों के
२१ नाम से कहे तो वुह आगमज्ञानी मारडालाजाय। और यदि
अपने मन में कहे कि मैं उस बचन को क्योंकर जानों जिसे
२२ परमेश्वर ने नकहा। जब आगमज्ञानी परमेश्वर के नाम से
कुछ कहे और वुह जो उसने कहाहै नहोवे अथवा पूरी तो
नहो वुह बात परमेश्वर ने नहीं कही परंतु उस आगमज्ञानी
ढिठाई से कहीहै तू उसे मत डर।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को जिनका देश
परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देताहै काटडाले और तू उनका
अधिकारी होवे और उनके नगरों में और उनके घरों में
२ बसे। तो तू अपने उस देश के मध्य में जिसे परमेश्वर तेरा
ईश्वर तेरे बश में करताहै अपने लिये तीन नगर अलग करना।

३ तब तू अपने लिये एक मार्ग सिद्ध करना और अपने देश क सिवानों को जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार में देताहै
४ तीन भाग करना जिसतें हर एक घाती उधर भागे। और घाती वहां भागके जीता रहे जिस में वुह बच रहे उसकी ब्यवस्था यह है जो कोई अपने परोसी को अजान से मारे और
५ वुह उस्से बैर आगे नरखताथा। जब कोई मनुष्य अपने परोसी के साथ लकड़ी काटने को वन में आय और कुल्हाड़ा हाथ में उठावे कि लकड़ी काटे और कुल्हाड़ा बेंट से निकलजाय और उसके परोसी को ऐसा लगे कि वुह मरजाय तो वुह उन में से
६ एक नगर में भागके बचे। नहो कि मार्ग के दूर होने के कारण लोहू का प्रतिफलदायक अपने मनके कोप से घाती का पीछा करे और उसे पकड़ लेवे और उसे मारडाले यद्यपि वुह मारडालने के योग्य नहीं क्योंकि वुह आगे से उसका डाह नरखताथा।
७ इस लिये मैं तुझे आज्ञा करके कहताहूं कि तू अपने कारण
८ तीन नगर अलग करना। और यदि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा सिवाना बढ़ावे जैसा उसने तेरे पितरों से किरिया खाके कहाहै और वुह समस्त देश तेरे पितरों को देने को बाचा
९ किई तुझे देवे। यदि तू इन समस्त आज्ञाओं को पालन करे और उन्हें माने जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करताहूं और परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रखके सर्बदा उसके मार्ग पर चले तो तू इन तीन नगरों से अधिक अपने लिये तीन
१० नगर बढ़ाना। जिसतें तेरे देश पर जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा अधिकार कर देताहै निर्दोष लोहू बहाया नजाय कि
११ हत्या तुझ पर होय। परंतु यदि कोई जन जो अपने परोसी से बैर रखताहो और उसकी घात में लगाहो और उसके बिरोध में उठके उसे ऐसा मारे कि वुह मरजाय
१२ और इन में से एक नगर में भागजाय। तो उसके नगर के प्राचीन भेजके उसे वहां से मगावें और लोहू के प्रतिफलदाताके

१३ हाथ में सैांप देवें कि वुह घात कियाजाय । तेरी आंख उस पर दया नकरे परंतु तू निर्दाेष लोहू के पाप को इसराईल से यों
१४ दूर करना तेरा भला हो । सिवाने को मत हटा कि उसे अगिले लोगों ने तेरे अधिकार में रक्खाहै तू उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार और बश में करदेताहै अपने परोसी के सिवाने को मत हटा जिसे अगिले लोगों ने
१५ तेरे अधिकार में रक्खा है । किसी मनुष्य के अपराध और पाप पर कोई पाप क्योंन हो एक साक्षी ठीक नहीं है अथवा तीन साक्षियों के मुंह से हर एक बात ठहराई
१६ जायगी । यदि कोई झूठा साक्षी उठके किसी मनुष्य पर
१७ साक्षी देवे । तो वे दोनों जिनमें बिवाद है परमेश्वर के आगे याजकों और न्यायियों के सन्मुख जो उन दिनों में होंगे खड़े
१८ कियेजायें । और न्यायी यत्न से बिचार करें सो यदि वुह साक्षी झूठा ठहरे और उसने अपने भाई पर झूठी साक्षी
१९ दिईहो । तब तुम उसे ऐसा करना जो उसने चाहाथा कि अपने भाई से करे इस रीतिसे बुराई को अपने में से दूर
२० करना । अरु और जो हैं सुनके डरेंगे और आगे को तुम्में
२१ ऐसी बुराई फेर नकरेंगे । और तेरी आंख दया न करे कि प्राण की संती प्राण आंख की संती आंख दांत की संती दांत हाथ की संती हाथ पांव की संती पांव होगा ।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

१ और जब तू लड़ाई के लिये अपने बैरियों पर चढ़जाय और देखे कि उनके घोड़े और गाड़ियां और लोग तुझसे बहुत हैं तो तू मत डर क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुझे
२ मिसर के देश से निकाल लाया तेरे साथहै । और यों होगा कि जब तू संग्राम के निकट पहुंचे तो याजक आगे होके लोगों
३ को कहे । और उनसे बोले कि हे इसराईलियो सुनो तुम

आज के दिन अपने बैरियों से लड़ाई करने को आते हो सो तुम्हारा मन न घटे डरो मत और मत घबराओ और उनसे मत
४ थर्थराओ। क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे साथ जाता है
५ कि तुम्हारे लिये बैरियों से लड़के तुम्हें बचावे। और प्रधान लोगों से कहे और बोले कि तुम्में कौन मनुष्य है जिसने नया घर बनाया हो और उसे नहीं स्थापा है वुह अपने घर को फिर जाय ऐसा न हो कि वुह लड़ाई में मारा जाय और दूसरा
६ मनुष्य उसे स्थापे। और कौन मनुष्य है जिसने दाख की बारी लगाई हो और उसके फल न खाया हो वुह अपने घर को फिर जाय ऐसा न हो कि वुह लड़ाई में मारा जाय और दूसरा
७ उसे खावे। और कौन मनुष्य है जो किसी स्त्री से बचन दत्त ऊआ है और वुह उसे घर न लाया हो वुह अपने घर को फिर जाय ऐसा न हो कि वुह लड़ाई में मारा जाय और दूसरा
८ उसे लेवे। और प्रधान लोगों से यह भी कहे कि कौन मनुष्य है जो डरपोकना और बोदामन अपने घर को फिर जाय न हो कि उसके भाइयों के मन उसके मन की नाईं बोदे होजायें।
९ और यों हो कि जब प्रधान लोगों से कहचुके तो वे सेना के
१० प्रधानों को ठहरावें कि लोगों की अगुआई करे। जब तू लड़ाई के लिये किसी नगर के पास पऊंचे तो पहिले उस्से मिलाप का प्रचार कर यदि वुह तुझे मिलाप का उत्तर देवे
११ और तेरे लिये खोले। तब यों होगा कि सब लोग जो उस
१२ नगर में हैं तेरे करदायक होंगे और तेरी सेवा करेंगे। और यदि वे तुझ्से मिलाप न करें परंतु तुझ्से लड़ाई करें तो तू
१३ उसे घेरले। और जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उसे तेरे हाथ में कर देवे तू वहां के हर एक पुरुष को तलवार की धार से
१४ मारडालियो। परंतु स्त्रियों और लड़कों और पशुन को उन सब समेत जो उस नगर में हों उसकी समस्त संपत्ति अपने लिये ले और तू अपने बैरियों की लूट को जो परमेश्वर तेरे

१५ ईश्वर ने तुझे दिईहै खाना। तू उन सब नगरों से जो तुझसे बहुत दूर हैं और इन जातिगणों के नगरों में से नहीं हैं ऐसा
१६ करना। परंतु इन लोगों के नगरों को जिन्हें परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा अधिकार करदेताहै किसी को जो सांस लेताहो
१७ जीता नछोड़ना। परंतु उन्हें सर्वथा नाश करडालना हट्टी और अमूरी और किनानी और फरजी और हवी और यबूसी को जैसा परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किईहै।
१८ जिसतें वे समस्त घिनौने जो उन्हों ने अपने देवों से किये तुम्हें नसिखलावें कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के अपराधी
१९ होजाओ। जब तू किसी नगर के लेने में लड़ाई में बहुत दिनलों घेरे रहे तू कुल्हाड़ी उसके वृक्षों पर चलाके नाश मत करना क्योंकि तू उनका फल खासके सो तू उन्हें काट नडालना क्योंकि खेत के पेड़ मनुष्य के लिये घेरने के काम में
२० आवेंगे। केवल वे वृक्ष जो खाने के काम के नहीं उन्हें काट के नाश करियो और उस नगर के आगे जो तुझसे लड़ताहै गढ़ बना जबलों वुह तेरे बश में होवे।

२१ इक्कीसवां पर्ब्ब।

१ यदि उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे बश में करताहै किसी की लोथ खेत में मारीहुई पड़ी मिले और जाना नजाय
२ कि किसने उसे मारा। तब तेरे प्राचीन और तेरे न्यायी बाहर निकलें और उन नगरों को जो घातित के चारों ओर हैं
३ नापें। और यों होगा कि जो नगर घातित के समीप है उसी नगर के प्राचीन एक कलोर लेवें जिससे कार्य नकियागया हो
४ और जूये तले नआईहो। और नगर के प्राचीन उस कलोर को खड़बिड़ तराई में जो नजोतागयाहो न उसमें कुछ बोयागयाहो लेजाय और उसी तराई में कलोर के सिर को
५ उतारें। तब याजक जो लावी के संतान हैं पास आवें क्योंकि

परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपनी सेवा के लिये और परमेश्वर के नाम से आशीष देने के लिये उन्हीं को चुना है और उन्हीं के बचन से हर एक झगड़ा और हर एक बिपत्ति का निर्णय
६ किया जायगा। फेर उस नगर के समस्त प्राचीन जो घातित के पास है उस कलोर के ऊपर जो तराई में बलि किई गई अपने
७ हाथ धोवें। और उत्तर देके कहें कि हमारे हाथों ने यह
८ लोहू नहीं बहाया है न हमारी आखों ने देखा है। हे परमेश्वर अब अपने इसराईली लोगों पर दया कर जिन्हें तू ने छुड़ाया है और वृथा हत्या अपने इसराईली लोगों पर मत रख तब
९ वुह हत्या क्षमा किई जायगी। सो जब तू इसी रीति से वुह करे जो परमेश्वर के आगे ठीक है तब तू हत्या को अपने में से
१० दूर करेगा। और जब तू युद्ध के लिये अपने बैरियों पर चढ़े और परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे हाथ में कर
११ देवे और तू उन्हें बंधुआ करे। और उन बंधुओं में सुंदर स्त्री देखे और तेरा मन उस पर चले कि उसे अपनी पत्नी करे।
१२ तब तू उसे अपने घर में ला उसका सिर मुड़वा और नंह
१३ कटवा। तब वुह बंधुआई का बस्त्र उतारे और तेरे घर में रहे और पूरा एक मास भर अपने मा बाप के लिये शोक करे उसके पीछे तू उसे ग्रहण करना और उसका पति होना
१४ और वुह तेरी पत्नी। उसके पीछे यदि तू उस्से प्रसन्न न हो तो जिधर वुह चाहे उसे जाने दे पर तू उसे रोकड़ की संती मत बेचना तू उस्से कुछ बाणिज्य न करना क्योंकि तूने उसे नम्र
१५ किया। यदि किसी की दो पत्नियां हों एक प्रिया और दूसरी अप्रिया और प्रिया और अप्रिया दोनों से लड़के हों
१६ और पहिलौंठा अप्रिया से हो। तो यों होगा कि जब वुह अपने पुत्रों को अधिकारी करे तब वुह प्रिया के बेटे को
१७ अप्रिया के बेटे पर पहिलौंठा न करे। परंतु वुह अप्रिया के बेटे को अपनी समस्त संपत्ति से दूना भाग देके पहिलौंठा

ठहरावे क्योंकि वुह उसके बल का आरंभ है और पहिलौंठे
१८ होने का भाग उसीका है ।　　यदि किसी का पुत्र ढीठ
और मगरा होय जो अपने माता पिता की आज्ञा नमाने
१९ और जब वे उसे ताड़ना करें और वुह उसे नमाने । तब
उसके माता पिता उसे पकड़के उस नगर के प्राचीनों पास
२० उस स्थान के फाटक पर लावें । और वहां के प्राचीनों से जाके
कहें कि हमारा यह बेटा ढीठ और मगरा है हमारी बात
२१ नहीं मानता बड़ा ही खाऊ और पिअक्कड़ है । नगर के सब
लोग उस पर पथरवाह करें कि वुह मर जाय इस रीति से
तू दुष्ट को अपने में से दूर करना और समस्त इसराईल सुनके
२२ डरेंगे ।　　और यदि किसीने मार डालने के योग्य पाप
किया हो और वुह मारा जाय तू उसे पेड़ पर लटका देवे ।
२३ उसकी लोथ रात भर पेड़ पर लटकी नरहे परंतु तू उसी
दिन उसे गाड़ियो क्योंकि जो फांसी दियाजाता है सो ईश्वर का
धिक्कारित है इसकारण चाहिये कि तेरी भूमि जिसका
अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है अशुद्ध
नहोजाय ।

२२ बाईसवां पर्ब्ब ।

१ तू अपने भाई के बैल और भेड़ को भटकीहुई देख के आप को
उनसे मत छिपा परंतु किसी भांतिसे उन्हें अपने भाई पास
२ फेर ला । और यदि तेरा भाई तेरे परोस में नहो अथवा तू उसे
पहिचानता नहो तब उसे अपनेही घर ला और वुह तेरे पास
रहे जब लों तेरा भाई उसकी खोज करे और तू उसे फेर देना ।
३ और इसीरीति से तू उसके गदहे से और उसके वस्त्र से और
सब कुछ से जो तेरे भाई की खोईहुई हो और तूने पाई है ऐसाही
४ कर तू आप को मत छिपाना ।　　अपने भाई का गदहा
अथवा बैल मार्ग में गिराहुआ देखके आपको उनसे मत

५ छिपा निश्चय उसका सहाय करके उठा देना। पुरुष का
बस्त्र स्त्री नपहिने और नपुरुष स्त्री का पहिने क्योंकि सब जो
६ ऐसा करतें हैं परमेश्वर तेरे ईश्वर के घिनित हैं। यदि
पथ में चलते किसी पच्छी का खोंता पेड़ पर अथवा भूमि पर
तुझे दिखाई देवे चाहे उसमें गेदे अथवा अंडे हों और मां गेदों
पर अथवा अंडों पर बैठीऊई हो तो तू गेदों को मां समेत
७ मत पकड़ना। परंतु माता को छोड़ देना और गेदों को
अपने लिये लना जिसतें तेरा भलाहोय और तेरा जीवन
८ बढ़ जाय। जब तू नया घर बनावे तब अपनी छत पर आड़ के
मुंडेरा बना ऐसा नहो कि कोई ऊपर से गिरे और तू अपने
९ घरमें हत्याका कारण हो। अपने दाख की बारी में नाना
प्रकार के बीज मत बोना ऐसा नहो कि बीज की भरपूरी
जिसे तूने बोयाहै और तेरी दाख की बारी का फल अशुद्ध
१० होजाय। तू गदहे को बैल के साथ मत जोतना।
११ नाना भांति का बस्त्र जैसा कि ऊन और सूत का मत
१२ पहिनियो। अपने ओढ़ने की चारों ओर झालर लगाना।
१३ यदि कोई पत्नी करे और उसे ग्रहण करे और उस्से घिन
१४ करे। और उस पर कलंक की बात लगावे और कहे कि
मैंने इस स्त्री से ब्याह किया और जब मैं उस पास गया तब
१५ मैंने उसे कुमारी नपाया। तब उस कन्या के माता पिता उसके
कुमारीपन का चिन्ह लेके उस नगर के फाटक पर प्राचीनों के
१६ आगे लावें। और उस लड़की का पिता प्राचीनों से कहे कि
मैंने अपनी पुत्री इस पुरुष को ब्याह दिईहै अब यह उस्से
१७ घिन करताहै। और देखो वुह उस पर कलंक की बात
लगाताहै कि मैंने तेरी पुत्री को कुमारी नपाया तथापि ये
मेरी पुत्री की कुमारीपन के चिन्ह हैं और वुह कपड़ा नगर के
१८ प्राचीनों के आगे फैलावे। तब प्राचीन उस पुरुष को पकड़ के
१९ दंड देवे। और वे उस्से सौ टुकड़ा चांदी डांड़ दिलावें और

लड़की के पिता को देव इस लिये कि उसने इसराईल की एक कुमारी पर कलंक लगाया और वुह उसकी पत्नी बनी रहेगी
२० वुह जीवन भर उसे त्याग नकरे। परंतु यदि यह बात ठीक
२१ ठहरे और लड़की की कुमारीपन का चिन्ह नपाया जाय। तब वुह उस लड़की को उसके पिता के घर के द्वार पर निकाल लावे और उस नगर के लोग उस पर पथरवाह करके मारडालें क्योंकि उसने अपने पिता के घरमें छिनाला करके इसराईल में मूर्खता किई इस रीति से तू बुराई को अपने मेंसे दूर करना।
२२ यदि कोई पुरुष बिवाहिता स्त्री से पकड़ाजाय तब वे दोनो मारडाले जाव व्यभिचारी पुरुष और स्त्री इसरीति से तू अपने
२३ में से बुराई को दूर करना। यदि कुमारी लड़की किसी से बचन दत्त होवे और कोई दूसरा पुरुष उसे कुकर्म करे।
२४ तब तुम उन दोनो को उस नगर के फाटक पर निकाल लाओ और उन पर पथरवाह करके उन दोनों को मारडालो कन्या को इस लिये कि वुह नगर में होतेऊए नचिल्लाई और पुरुष को इस कारण कि उसने अपने परोसी की पत्नी को अपनी किया
२५ इस रीति से तू बुराइ को अपने में से दूर करना। परंतु यदि कोई पुरुष किसी बचन दत्त कन्या को खेत म पावे और पुरुष बरबस उसे कुकर्म करे तो केवल पुरुष जिसने यह कर्म्म कियाहै
२६ मारडाला जाय। परंतु उस लड़की को कुछ नकर क्योंकि लड़की को घात का पाप नहींहै क्योंकि यह ऐसाहै जैसे कोई
२७ अपने परोसी पर ऊलर करे और उसे मारडाले। क्योंकि उसने उसे खेत में पाया और वुह बचन दत्त लड़की चिल्लाई
२८ और छुड़ाने को कोई नथा। यदि कोई कुमारी कन्या को जो किसी से बचन दत्त नहो पकड़ के उसे कुकर्म्म करे और
२९ वे पकड़े जावें। तब वुह पुरुष जिसने उसे कुकर्म्म किया लड़की के पिता को पचास टुकड़ा चांदी देवे और वुह उसकी पत्नी होगी इस कारण कि उसने उसे अपत किया वुह उसे

३० जीवन भर त्याग न करे। कोई अपने पिता की पत्नी को न ले और अपने पिता को नभता को न उघारे।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

१ जिसके अंडकोश में घाव होवे अथवा लिंग कटगया हो वुह
२ परमेश्वर की मंडली में प्रवेश न करे। जारज अपनी दसवीं
३ पीढ़ी लों परमेश्वर की मंडली में प्रवेश न करे। और अमोनी और मवाबी परमेश्वर की मंडली में दसवीं पीढ़ी लों प्रवेश न करें कोई उनमें से सनातन लों परमेश्वर की मंडली में
४ प्रवेश न करेगा। इसकारण कि जब तुम मिसर से निकले उन्हों ने पंथ में अन्न जल लेके तुम से भेंट न किई इसकारण कि उन्हों ने बऊर के पुत्र बलआम को अरम नहर के फासूर से
५ बुलाया जिसतें तुझे स्राप देवे। तथापि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरे लिये श्राप को आशीष की संती पलट दिया क्योंकि परमेश्वर
६ तेरे ईश्वर ने तुझ पर प्रेम किया। जीवन भर सदा लों तू
७ उनका कुशल और भलाई न चाहना। और किसी अदूमी से घिन न करना क्योंकि वुह तेरा भाई है और किसी मिसरी से घिन न करना इसकारण कि तू उसके देश में
८ परदेशी था। उनकी तीसरी पीढ़ी के जो लड़के उत्पन्न हों
९ परमेश्वर की मंडली में प्रवेश करें। जब सेना अपने
१० बैरियों पर चढ़े तब हरएक पाप से आपको बचा रखना। यदि तुम्में कोई पुरुष रात्री की अशुद्धता के कारण अशुद्ध होवे तो वुह छावनी से बाहर निकल जाय और छावनी के भीतर
११ न आवे। परंतु संध्या के समय में जल से स्नान करे और जब
१२ सूर्य अस्त हो चुके तब छावनी में आवे। और छावनी के बाहर एक स्थान होगा वहां बाहर निकल के जाया करना।
१३ और तेरे पास हथियार पर एक खंती होय और जब तू बाहर जाके बैठे तो उस्से खोदना और मल को ढांप देना।

१४ इस लिये कि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी छावनी के मध्य में फिरताहै कि तुझे बचावे और तेरे बैरियों को तेरे बश में करे सो तेरी छावनी पवित्र होगी नहोवे कि वुह तेरे मध्य में
१५ किसी वस्तु की नग्नता देखे और तुझ्से फिर जाय। यदि किसी का सेवक अपने स्वामी से भाग के तुझ पास आवे तू उसे
१६ उसके स्वामी को मत सैांप। वुह तेरे स्थानों में से जहां चाहे तहां तेरे साथ रहे तेरे फाटकों में से किसी एक में जो उसे अच्छा
१७ लगे तू उसे क्लेश मत देना। इसराईल की बेटियों में
१८ बेश्या नहों न इसराईल के बेटों में पुरुषगामी हों। तू किसी छिनाल की कमाई अथवा कुत्ते का मोल किसी मनौती में परमेश्वर अपने ईश्वर के मंदिर में मत लाइयो कि ये दोनों
१९ परमेश्वर तेरे ईश्वर से घिनित हैं। अपने भाई को बियाज पर ऋण मत देना अथवा कोई वस्तु जो बियाज पर दिई
२० जाती है बियाज पर मत देना। परदेशी को बियाज पर उधार दे सके परंतु अपने भाई को बियाज पर उधार मत देना जिसतें परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देशमें जिसका तू अधिकारी होने जाताहै जिस जिस काम में तू हाथ लगावे तुझे आशीष
२१ देवे। जब तूने कोई मनौती परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मानी उसे पूरा करने में बिलम्ब मत कर इस लिये कि परमेश्वर तेरा ईश्वर निश्चय तुझ्से उसका लेखा लेगा और
२२ तुझ पर पाप ठहरेगा। परंतु यदि तू कुछ मनौती नमाने तो
२३ अपराधी नहीं। जो कुछ तेरे मुंह से निकला अर्थात् बांछा की भेंट जैसा तूने परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मानीहै जिसे तूने
२४ अपने मुंह से प्रण किया है उसे मान और पूरी कर। जब तू अपने परोसी के दाख की बारी में जावे तब जितने दाख चाहे अपनी इच्छा भर खा परंतु अपने पात्र में मत रख।
२५ जब तू अपने परोसी के अन्न के खेत में जाय तब अपने हाथ से बालें तोड़ सके परंतु अपने भाई का खेत हंसुआ से मत काट।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

१ जब कोई पुरुष पत्नी से ब्याह करे और उसके पीछे ऐसा हो कि वुह उसकी दृष्टि में अनुग्रह नपावे इस कारण कि उसने उसमें कुछ अशुद्ध बात पाई तो वुह त्याग पत्र लिखके २ उसके हाथ में देवे और उसे अपने घर से बाहर करे। और जब वुह उसके घर से निकलगई तब वुह दूसरे पुरुष की ३ होसके। और दूसरा पति भी उसे देख नसके और त्याग पत्र लिखके उसके हाथ में देवे और अपने घर से निकाल ४ देवे अथवा दूसरा उसे पत्नी करके मर जाय। तो उचित नहीं कि उसका पहिला पति जिसने उसे निकाल दिया था जब वुह अशुद्ध होचुकी उसे फिर लेके पत्नी करे क्योंकि वुह परमेश्वर के आगे घिनित है सो उस देश को अशुद्ध मत कर जिसका ५ अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करताहै। जब किसी का नया विवाह होवे तब वुह लड़ाई को नजाय और उसे कुछ कार्य नलिया जाय परंतु वुह एक बरस अपने घर में ६ अवकाश से रहे और अपनी पत्नी को बहलावे। कोई मनुष्य किसी की चक्की के ऊपर का अथवा नीचे का पाट बंधक ७ नरक्खे क्योंकि वुह जीवन को बंधक रखताहै। यदि मनुष्य इसराईल के संतानों में से किसी भाई को चुरातेहुए पकड़ाजाय और उसका बैपार करे अथवा उसे बेंचे तो वुह चोर ८ मारा जाय और तू बुराई को अपने में से दूरकर। चौकस रह कि कोढ़ की मरी में तू चौकसी से देख और सब जो लावी याजक तुम्हें सिखावे उसकी रीति पर चल जैसा मैंने तुझे ९ आज्ञा किईहै वैसाही करना। चेत कर कि जब तुम मिसर से निकले परमेश्वर तेरे ईश्वर ने मार्ग में मरियम से क्या किया।

१० जब तू अपने भाई को कोई वस्तु मंगनी अथवा उधार ११ देवे तब उसका बंधक लेने को उसके घरमें मत पैठ। तू बाहर खड़ा रह और उधारनिक आप अपना बंधक तेरे पास बाहर

१२ लावेगा। और यदि वुह कंगाल होवे तो तू उसके बंधक से
१३ मत सोजा। किसी भांति से जब सूर्य अस्त होने लगे उसका
बंधक उसे फेर देना जिसतें वुह अपने बस्त्र में सोवे और
तुझे आशीष देवे सो तुझे परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे धर्म्म
१४ होगा। ऐसा न हो कि तू कंगाल और दीन बनिहार
को सतावे चाहे वुह तेरे भाई में से हो अथवा तेरे परदेशियों
१५ में से जो तेरे देश में तेरे फाटकों में रहते हैं। तू उस दिन
सूर्य अस्त होने से पहिले उसकी बनी दे डालना क्योंकि वुह
दरिद्र है और उसका मन उसी में है न हो कि परमेश्वर के
१६ आगे तुझ पर दोष देवे और तुझ पर पाप ठहरे। संतान की
संती पितर मारे न जावें न पितरों की संती संतान मारे जावें
१७ हर एक अपने ही पाप के कारण मारा जायगा। तू परदेशी
और अनाथ के बिचार को मत बिगाड़ और बिधवा का कपड़ा
१८ बंधक मत रख। परंतु चेत कर कि तू मिसर में बंधुआ था
और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे वहां से छुड़ाया इस लिये
१९ मैं तुझे यह कार्य आज्ञा करता हों। जब तू अपने खेत में
कटनी करे और एक गट्ठी खेत में भूल के छूट जाय तो उसके
लेने को फेर मत जा वुह परदेशी और अनाथ और बिधवा के
लिये रहे जिसतें परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के समस्त
२० कार्यों में तुझे आशीष देवे। जब तू अपने जलपाई के वृक्ष को
हिलावे तो फेर के उसकी डालियों को मत झाड़ वुह परदेशी
२१ और अनाथ और बिधवा के लिये रहे। जब तू अपनी बारी के
दाख एकट्ठा करे तो उसके पीछे मत बीनना वुह परदेशी
२२ और अनाथ और बिधवा के लिये रहे। और चेत कर कि तू
मिसर के देश में बंधुआ था इस लिये मैं तुझे यह कार्य करने
को आज्ञा देता हों।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

१ यदि लोगों में झगड़ा होवे और धर्म्म सभा में आवें कि न्यायी उनका न्याय करें तो वे धर्म्मी को निष्पापी और दुष्ट को पापी
२ ठहरावें। और यदि वुह दुष्ट पीटे जाने के योग्य होवे तो न्यायी उसे लेट वावे और जैसा उसका अपराध होवे न्यायी अपने आगे
३ ठहराये ऊए के समान उसे पिटावे। चालीस मार मारें और उस्से बढ़ती नहीं नहोवे कि यदि वुह उस्से बढ़जाय और इन्हों से बऊत अधिक मारे तब तेरा भाई तेरे आगे तुच्छ समुझा जाय।
४।५ दांवने के समय में बैल का मुंह मत बांध। यदि कोई भाई एकट्ठे रहे और उनमें से एक निर्ब्बंश मरजाय तो उस मृतक की पत्नी का बिवाह किसी परदेशी से नकियाजाय परंतु उसका दूसरा कुटुंब उसे ग्रहण करे और उसे अपनी पत्नी
६ करे और पति के भाई का ब्यवहार उस्से करे। और यों होगा कि जो पहिलौंठा वुह जने मृतक के भाई के नाम पर होवे जिसतें
७ उसका नाम इसराईल मेंसे नमिटे। और यदि वुह पुरुष कुटुंब की पत्नी को लेने नचाहे तो उसके भाई की पत्नी प्राचीनों पास फाटक पर जाय और कहे कि मेरे पति के भाई इसराईल में अपने भाई के नाम को स्थापने से नाह करताहै मेरे पति के
८ भाई का कार्य पूरा नकरेगा। तब उसके नगर के प्राचीन उस पुरुष को बुला के उसे समुझावें यदि वुह उसी पर खड़ाहोवे
९ और कहे कि मैं उसे लेने नहीं चाहता। तो उसके भाई की पत्नी प्राचीन के सन्मुख उसके पास आवे और उसके पाओं से जूती खोले और उसके मुंह पर थूक देवे और उत्तर देके कहे कि उस मनुष्य की यही दशा होगी जो अपने भाई के घर को
१० नखड़ा करे। और इसराईल में उसका यह नाम रक्खा जायगा
११ कि यह उस जन का घर है जिसका जूता खोलागया। जब मनुष्य आपुस में लड़तेहों और एक की पत्नी आवे कि अपने पति को उसके हाथ से जो उसे मार रहाहै छोड़ावे और

१२ अपना हाथ बढ़ा के उसके गुप्तें को पकड़े। तो तू उसका हाथ
१३ काटडालना तेरी आंख उस पर दया नकरे। तू अपने
१४ थैले में बड़े छोटे बटखरे नरखना। अपने घर में छोटा बड़ा
१५ नपुआ मत रखना। पूरे और ठीक बटखरे रखना और पूरे
और टीक नपुए रखना जिसतें उस देश में जिसे परमेश्वर तेरा
१६ ईश्वर तुझे देताहै तेरा जीवन बढ़जाय। क्योंकि सब जो ऐसा
१७ अधर्म्म करतेंहै परमेश्वर तेरे ईश्वर से घिनित हैं। चेत कर
कि जब तू मिसर से निकला तब मार्ग में अमालक ने तुझे
१८ क्या किया। मार्ग में तुझ पर क्योंकर चढ़आया जब तू मूर्छित
और थका था तब उसने तेरे पीछे के सब लोगों को जो दुर्बल
१९ पिछरे ऊए थे मारा और वुह ईश्वर से नडरा। इस लिये ऐसा
होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जो परमेश्वर
तेरा ईश्वर तेरे अधिकार के लिये तुझे देता है तुझे तेरे चारों
ओर के बैरियों से चैन देवे तब तू स्वर्ग के तले से अमालक के
नाम को मिटा डालना इसे मत भूलना।

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब।

१ और जब तू उस देश में प्रवेश करे जिसका अधिकारी
परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करताहै और उसे बश में करे और
२ उस में बसे। तब तू उस देश का जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे
दियाहै समस्त फलों का पहिला जिसे तू भूमि से लेके पऊंचावेगा
एक टोकरे में रखके उस स्थान में लेजा जिसे परमेश्वर तेरा
३ ईश्वर अपने नाम को स्थापन करने के लियेचुनेगा। और उन
दिनों में जो याजक होगा उसके पास जा और कह कि आज
परमेश्वर के आगे प्रण करताहों कि मैं उस देश में जिसके
विषय में परमेश्वर ने हमारे पितरों से किरिया खाके हमें देने को
४ कहा प्रवेश करो। और याजक वुह टोकरा तेरे हाथ से लेके
५ परमेश्वर तेरे ईश्वर की बेदी के आगे रखदेवे। तब तू परमेश्वर

अपने ईश्वर के आगे बिनती करके यों कहना कि सुरिआनी जो मरने पर था मेरा पिता था वुह मिसर मे उतरा और उसने थोड़े लोगों के साथ वहां बास किया फिर वहां एक बज़त बड़ी
६ बलवती मंडली बनी। और मिसरियों ने हमसे बुरा व्यवहार
७ किया और हमें सताया और हमसे कठिन सेवा कराई। और जब हमने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर के आगे दोहाई दिई तब परमेश्वर ने हमारा शब्द सुना और हमारे परिश्रम
८ और अंधेर को देखा। और परमेश्वर ने सामर्थी हाथ और बढ़ाईऊई भुजा और अस्चर्य से आश्चर्यित और अद्भुत
९ लक्षणों के हाथसे हमें मिसर के दुःख से निकाललाया। और हमें इस स्थान में लाया और उसने हमें यह देश दिया जिसमें
१० दूध और मधु बहताहै। और अब देख मैं इस देश के पहिलेफल जिसे हे परमेश्वर तूने मुझे दिया लाया हों सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उसे रखदेना और परमेश्वर
११ अपने ईश्वर के आगे दंडवत करना। और तू और लावी और जो परदेशी तुझमें होवे मिलके हर एक भलाई पर जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे और तेरे घराने को दियाहै अनंद
१२ करना। जब तू तीसरे बरस दसवां अंश के बरस में अपने दसवें अंश की समस्त बढ़ती के दसवें अंश को करचुका और लावी और परदेशी और अनाथ और बिधवा को दियाहै
१३ जिसतें वे तेरे फाटकों के भीतर खावें और तृप्त होवें। तब तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे यों कहना कि मैं अपने घरसे पवित्र वस्तें लायाहों और लावी और परदेशी और अनाथ और बिधवा को उन समस्त आज्ञाओं के समान जो तूने मुझे किया और मैंने तेरी आज्ञाओं से बिरुद्ध न किया और उन्हें
१४ भूला। और मैंने उसमें से अपने बिलाप में न नखाया और मैंने उस में से किसी अशुद्ध बात में न उठाया और न कुछ मृतकों के लिये देडाला परंतु मैंने परमेश्वर अपने ईश्वर के

शब्द को माना और जो कुछ तूने मुझे आज्ञा किई है मैंने
१५ उन सभोंके समान किया। अपने पवित्र निवास स्वर्ग पर से
नीचे दृष्टि कर और अपने इसराईली लोगों को और इस
देश को जिसे तूने हमें दियाहै बढ़ती दे जैसी तूने हमारे
पितरों से किरिया खाई एक देश जिसमें दूध और मधु
१६ बहताहै। आजके दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे इन
बिधिन को और बिचारों को पालन करने को आज्ञा दिई
इस लिये उन्हें पालन कर और अपने सारे मन और अपने
१७ सारे प्राण से उन्हें मान। तूने आज के दिन मान लियाहै
कि परमेश्वर मेरा ईश्वर है और मैं उसके मार्गों पर चलोंगा
और उसकी बिधिन को और उसकी आज्ञाओं को और
उसकी ब्यवस्थों को पालन करोंगा और उसके शब्द को सुनोंगा।
१८ और परमेश्वर ने भी आजके दिन मान लियाहै कि तू उसका
निज लोग होवे और तू उसकी समस्त आज्ञा को पालन करे।
१९ और तुझे समस्त जातिगणों से जिन्हें उसने उत्पन्न किया बड़ाई
और नाम और प्रतिष्ठा में अधिक बढ़ावे और कि तू परमेश्वर
अपने ईश्वर का पवित्र लोग होवे जैसा उसने कहा।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ फिर मूसाने इसराईल के प्राचीनों के साथ होके लोगों को
आज्ञा करके कहा कि उन आज्ञाओं को जो आजके दिन मैं
२ तुम्हें कहताहों पालन करो। और यों होगा कि जिस दिन
तुम अर्दन पार होके उस देश में पहुंचे जो परमेश्वर तेरा
ईश्वर तुझे देताहै तब तू अपने लिये बड़े बड़े पत्थर खड़ा करना
३ और उन पर गच करना। और जब तू पार उतरे तब इस
ब्यवस्था के समस्त बचन को उनपर लिखना जिसतें तू उस
देशमें प्रवेश करे जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देताहै वुह
एक देश है जिसमें दूध और मधु बहताहै जैसा परमेश्वर

३ तेरे पितरों के ईश्वर ने तुझे देने को बाचा बांधी है। सो जब तुम अर्दन के पार उतर जाओ तब तुम उन पत्थरों को जिनके विषय में मैं तुम्हें आज के दिन आज्ञा करता हों ईबालके
५ पहाड़ पर खड़ा करना और उनपर गच फेरना। और वहां परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पत्थर की एक बेदी बनाना
६ और उनपर लोहा न उठाना। तू परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी ढोकों से बनाना और उसपर परमेश्वर अपने ईश्वर के
७ लिये होम की भेंट चढ़ाना। और कुशल की भेंट चढ़ाना और वहीं खाना और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे आनंद
८ करना। और उन पत्थरों पर व्यवस्था के समस्त बचन खोलके
९ लिखना। फिर मूसा और लावी याजकों ने समस्त इसराईलियों से कहा कि हे इसराईल चौकस हो और सुन
१० तू आजके दिन परमेश्वर अपने ईश्वर की मंडली ऊआ। सो इस लिये परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को मान और उसकी आज्ञाओं को और उसकी बिधिन को पालन कर जो आजके
११ दिन मैं तुझे कहता हों। और मूसा ने उस दिन मंडली
१२ को आज्ञा करके कहा। कि जब अर्दन पार जाओ तब शमऊन और लावी और यहूदा और यसाख़ार और यूसफ़ और बनियामीन जरिज़िम के पहाड़ पर खड़े होके लोगों को आशीष
१३ देवें। और राओबीन और जाज़ और अशर और ज़बूलून और दान और नफ़ताली ईबाल के पहाड़ पर साप देने के
१४ लिये खड़े होवें। और लावी इसराईल के समस्त पुरुषों
१५ को बड़े शब्द से कहें। कि वुह पुरुष सापित है जो खोदके अथवा ढ़ालके मूर्त्ति बनावे जो परमेश्वर के आगे घिनितहै और कार्यकारी के हाथ के बनायेऊए और गुप्त स्थान में रक्खे
१६ तब समस्त मंडली उत्तर देके कहे आमीन। जो कोई अपने माता पिता की निंदा करे वुह सापित और समस्त लोग बोलें
१७ आमीन। जो अपने परोसी के सिवाने के चिन्ह को हटावे सो

१८ स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन। जो अंधेको मार्गसे
१९ बहकावे सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन। जो परदेशी
और अनाथ और बिधवा के बिचार को बिगाड़ देवे सो
२० स्रापित समस्त लोग कहें आमीन। जो अपने पिता की पत्नी के
साथ कुकर्म्म करे सो स्रापित क्योंकि उसने अपने पिता की
२१ नमता उघारी समस्त लोग कहें आमीन। जो किसी प्रकार के
२२ पशुसे कुकर्म्म करे सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन। जो
कोई अपनी बहिन अपनी माता अथवा अपने पिता की पुत्री के
साथ कुकर्म्म करे सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन।
२३ जो कोई अपने सास मैभाके संग कुकर्म्म करे सो स्रापित समस्त
२४ लोग कहें आमीन। जो कोई अपने परोसी को छिप के मारे
२५ सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन। जो कोई घूस लेके
किसी निर्दोषी को घात करे सो स्रापित सब लोग कहें
२६ आमीन। जो कोई इस व्यवस्था के वचन को पालन करने को
स्थिर नरहे सो स्रापित समस्त लोग कहें आमीन।

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब ।

१ और ऐसा होगा कि यदि तू ध्यान से परमेश्वर अपने ईश्वर का
शब्द सुनेगा और चेत में रख के उसकी समस्त आज्ञाओं को
मानेगा जो आज के दिन मैं तुझे देता हों तो परमेश्वर तेरा
२ ईश्वर तुझे पृथिवी के समस्त जातिगणों में श्रेष्ठ करेगा। और
यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुनेगा तो ये समस्त
३ आशीष तुझ पर होंगे और तुझे लेईलेंगे। तू नगर में
४ धन्य होगा और खेतमें धन्य होगा। तेरे शरीर का और तेरी
भूमि का फल और तेरे ढोर का फल तेरी गाय बैल की बढ़ती
५ और तेरे भेड़ के झुंड धन्य होंगे। तेरा टोकरा और तेरा
६ कठरा धन्य होंगे। तेरा बाहर भीतर आना जाना धन्य होगा।
७ परमेश्वर तेरे बैरियों को जो तेरे बिरुद्ध उठेंगे तेरे सन्मुख

मारेगा वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ आवेंगे और सात मार्गों से
८ तेरे आगे से भाग निकलेंगे। परमेश्वर तेरे भंडार पर और
तेरे हाथ के समस्त कार्यों पर तेरे लिये आशीष की आज्ञा
करेगा और उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे
९ देता है तुझे आशीष देगा। यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की
आज्ञाओं को पालन करे और उसके मार्गों पर चले तो परमेश्वर
तुझे अपना पवित्र लोग बनावेगा जैसा उसने तुझसे किरिया
१० खाई है। और पृथिवी के समस्त लोग देखेंगे कि तू परमेश्वर के
११ नाम से प्रसिद्ध है सो वे तुझसे डरते रहेंगे। और परमेश्वर
तेरी संपत्ति में और तेरे शरीर के फल में और तेरे ढोर के
फल में और तेरी भूमि के फल में उस देश में जिसके
विषय में परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया खाके कहा कि
१२ तुझे देउंगा तुझे बढ़ती देगा। परमेश्वर अपना सुथरा
भंडार तेरे आगे खोलेगा कि आकाश तेरे देश पर ऋतु में
जल बरसावेगा और तेरे हाथ के समस्त कार्यों में आशीष
देगा तू बहुत से जातिगणों को ऋण देगा परंतु तू ऋण
१३ न लेगा। और परमेश्वर तुझे सिर बनावेगा और पोंछ नहीं
और तू केवल ऊंचा होगा और नीचा न होगा आज के दिन
जो आज्ञा मैं तुझे करता हों यदि तू उन आज्ञाओं को सुने और
१४ पालन कर के माने। और तू उन सब कामों में जो आज के
दिन मैं तुझे आज्ञा करता हों दहिने बायें न मुड़े अरु और
१५ देवतों का पीछा करके उनकी सेवा न करे। परंतु यदि तू
परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द न सुनेगा और ध्यान कर के
उसकी समस्त आज्ञा को और उसकी विधिन को जो आज के
दिन मैं तुझे आज्ञा करता हों न मानेगा तो ये समस्त स्राप
१६ तुझ पर पड़ेंगे और तुझे जा लेंगे। तू नगर में स्रापित और
१७ खेत में स्रापित। तेरा टोकरा और तेरी थाल स्रापित होगी।
१८ तेरे शरीर का फल और तेरी भूमि का फल तेरी गाय बैल की

१९ बढ़ती और तेरी भेड़ बकरी के झुंड स्रापित होजायेंगे। तू
२० बाहर भीतर जाने आने में स्रापित होगा। परमेश्वर तेरे
हाथ के समस्त कार्यों में तुझ पर स्राप और झंझट और दपट
भेजेगा यहां लों कि तू नाश होजाय और शीघ्र मिट जाय
तेरी करनी की दुष्टता के कारण जिस्से तू ने मुझे त्याग किया।
२१ परमेश्वर तुझ पर मरी संयुक्त करेगा यहां लों कि तुझे उस
देश से मिटाडालेगा जिसका तू अधिकारी होने जाता है।
२२ परमेश्वर तुझे चयी और ज्वर और ज्वाला और अत्यंत
ज्वलन और पियास और झुलस से और लेंढ़ा से मारेगा और
२३ वे तुझे रगेद रगेद के नाश करेंगे। और तेरे सिर पर का स्वर्ग
पीतल और तेरे तले की पृथिवी लोहे की होगी। परमेश्वर
२४ तेरे देश का बरसना बुकनी और धूल बनाडालेगा यह स्वर्ग से
तुझ पर उतरेगा जबलों तू नाश न होजाय। परमेश्वर तुझे
२५ तेरे बैरियों के आगे मारेगा तू एक मार्ग से उन पर चढ़जायगा
और उनके आगे सात मार्गों से भागेगा और पृथिवी के समस्त
२६ राज्यों में निकाला जायगा। और तेरी लोथ आकाश के समस्त
पक्षियों का और बन के पशुन का भोजन होजायगी और कोई
२७ उन्हें नहांकेगा। परमेश्वर तुझे मिसर के फोड़े और बरसी
और दिनाय और खजुली से मारेगा उनसे तू कधी चंगा
२८ नहोगा। ईश्वर तुझे बौड़हापन और अंधापन और मन की
२९ घबराहट से मारेगा। और जिस रीति से कि अंधा अंधेरे में
टटोलता है तू दोपहर दिन को टटोलता फिरेगा और तू अपने
मार्गों में भाग्यमान् नहोगा और केवल तुझ पर अंधेर हुआ
३० करेगा और कोई नबचावेगा। तू पत्नी से मंगनी करेगा और
दूसरा उसे ग्रहण करेगा तू घर बनावेगा परंतु उस में बास
नकरेगा तू दाख की बारी लगावेगा परंतु उसका फल
३१ नखायेगा। तेरा बैल तेरी आंखों के साम्ने मारा जायगा और
तू उस्से नखायेगा तेरा गदहा तेरे आगे से बरबस लिया जायगा

और तुझे फेरा नजायगा तेरी भेड़ें तेरे बैरियों को दिईं
३२ जायेंगी और कोई नछोड़ावेगा। तेरे बेटे और तेरी बेटियां
और लोगों को दिईं जावेंगी और तेरी आखें देखेंगी और
दिन भर उन के लिये घट जायेंगी और तेरे हाथ में कुछ
३३ बल नरहेगा। तेरे देश का और तेरे सारे परिश्रम का फल
एक जाति जिसे तू नहीं जानता खाजायगी और तुझ पर
३४ नित्य केवल अंधेर और मसलना होगा। यहां लों कि तू
३५ आखों से देखते देखते बौड़हा होजायगा। परमेश्वर तुझे
घुठनों में और टांगों में ऐसे बुरे फोडों से मारेगा कि पाओं के
३६ तलवों से लेके चांदी ताईं चंगा नहोसकेगा। परमेश्वर तुझे
और तेरे राजा को जिसे तू अपने ऊपर स्थापित करेगा
उस जाति के पास लेजायगा जिसे तू और तेरे पितर
नजानते थे और वहां तू लकड़ी पत्थर की देवतों की पूजा
३७ करेगा। और तू उन सब जातियों में जहां जहां परमेश्वर तुझे
पढ़ंचावेगा एक आश्चर्य और कहावत और ओलाना होगा।
३८ तू खेत में बहुत से बीज बोयेगा और थोड़ा बटोरेगा इस लिये
३९ कि उन्हें टिड्डी चाटलेंगी। तू दाख की बारी लगावेगा और
उसकी सेवा करेगा और मदिरा पीने और दाख एकट्ठा करने
४० नपावेगा क्योंकि उन्हें कीड़े खाजायेंगे। तेरे समस्त सिवानों में
जलपाई के पेड़ होंगे परंतु तू चिकनाई लगाने नपावेगा
४१ क्योंकि उनका जलपाई झड़ जायगा। तू बेटे बेटियां जन्मावेगा
४२ और वे तेरे नहोंगे क्योंकि वे बंधुआई में जायेंगे। तेरे समस्त
पेड़ को और तेरी भूमि के फल को टिड्डी चाटजायेंगी।
४३ परदेशी जो तुझ में होगा तुझ से प्रबल और ऊंचा होगा
४४ और तू नीचा होजायगा। वुह तुझे उधार देगा परंतु तुझ से
४५ उधार नलेगा वुह सिर होगा और तू पोंछ होगा। और
ये समस्त स्राप तुझ पर आवेंगे और तेरे पीछे पड़ेंगे और
तुझे जाही लेंगे जबलों तू नाश नहोवे इसकारण कि तूने

परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को न सुना कि उसकी आज्ञाओं को और उसकी विधिन को पालन करता जैसा उसने तुझे आज्ञा
४६ किई है। और वे तुझ पर और तेरे बंश पर सदा के लिये चिन्ह
४७ और आश्चर्य होंगे। इसकारण कि तूने समस्त बहुताई के लिये मन की आनंदता और मगनता से परमेश्वर अपने ईश्वर की
४८ सेवा न किई। इस लिये तू भूख में और पियास में और नग्नता में और दरिद्रता में अपने बैरियों की सेवा करेगा जिन्हें परमेश्वर तुझ पर भेजेगा और वुह तेरे गले में लोहे का
४९ जूआ डालेगा जबलों तुझे नाश न करलेवे। परमेश्वर दूर से एक जाति को और पृथिवी के अंतसिवाने से ऐसा जैसा गिद्ध उड़ता है तुझ पर चढ़ालावेगा एक जाति जिसकी भाषा तू
५० न समुझेगा। भयंकर रूपकी जाति जो न बूढ़ों को समुझेगी
५१ न तरुण पर दया करेगी। और वुह तेरे ढ़ोर का फल और तेरे देश का फल खाजायगी जबलों तू नाश न होजाय जो तेरे लिये अन्न और दाख रस अथवा तेल अथवा तेरी गाय बैल की बढ़ती अथवा भेड़ की झुंड़ न छोड़ेगी जबलों तुझे नाश न करें।
५२ और वे तुझे तेरे हर एक फाटकों में आघेरेंगे यहांलों कि तेरी ऊंची और दृढ़ भीतें जिन पर तूने भरोसा किया था गिरजायेंगी और वे तुझे उस समस्त देश में जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे
५३ दिया है हर एक फाटकों में आघेरेंगे। सकेती और कष्ट में जो तेरे बैरियों के कारण से तुझ पर पड़ेंगे तू अपने देह का फल और अपने बेटे बेटियों का मांस खायेगा जिन्हें परमेश्वर तेरे
५४ ईश्वर ने तुझे दिया है। उस जन की आंखें जो तुम्में कोमल और अति सुकुआर होगा अपने भाई और अपनी गोद की
५५ पत्नी और अपने बचेहुए लड़कों से बुरी होजायेंगी। यहांलों कि वुह अपने बालक के मांस में से जिसे वुह खायगा उन्में से किसी को कुछ न देगा इस कारण कि उस सकेती और क्लेश में जो तेरे बैरियों के कारण से तेरे समस्त फाटकों में तुझ पर

५६ होंगे उसके लिये कुछ नबचेगा। तुम्में कोमल और सुकुआर स्त्री जो कोमलता और सुकुआरी के मारे अपने पांओं को भूमि पर नधरती थी अपने गोद के पति और अपने बेटा बेटी
५७ की ओरसे उसकी आंखें बुरी होजायेंगी। और अपने नन्हे बालक से जो उस्से उत्पन्न होगा और अपने लड़कों से जिन्हें वुह जनेगी क्योंकि वुह सकेतों के कारण से जो तेरे बैरी तेरे
५८ फाटकों में तुझ पर लावेंगे छिपके उन्हें खायगा। यदि तू पालन करके व्यवस्था के समस्त बचन पर जो इस पुस्तक में लिखे हैं नचलेगा जिसतें तू उसके तेजमय और भयंकर नाम से
५९ जो परमेश्वर तेरा ईश्वर है नडरे। तब परमेश्वर तेरी मरियों को और तेरे बंश की मरियों को अर्थात् बड़ी बड़ी मरियों को जो बहुत दिनलों रहेंगी और बड़े बड़े रोगों को
६० जो बहुत दिनलों रहेंगे आश्चर्यित बनावेगा। और मिसर के सारे रोग जिनसे तू डरता था तुझ पर लावेगा और वे सब
६१ तुझ पर चिपकेंगे। और हर एक रोग और हर एक मरी जो इस व्यवस्था की पुस्तक में नहीं लिखी है परमेश्वर तुझ पर
६२ पहुंचावेगा जबलों तू नाश नहोवे। और जैसा कि तुमलोग स्वर्ग के तारों की नाईं थे गिनती में थोड़े से रहजाओगे इस कारण
६३ कि तूने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को नमाना। और ऐसा होगा कि जिस रीति से परमेश्वर ने तुम पर आनंद होके तुम्हारे साथ भलाई करके तुम्हें बढ़ाया उसी रीति से परमेश्वर तुम्हें नाश करके मिटा देने में आनंदित होगा और तू उस देश से उखाड़ा जायगा जिसका अधिकारी तू होने जाता है।
६४ और परमेश्वर तुझे समस्त जातियों में पृथिवी के इसखूंट से उसखूंटलों छिन्न भिन्न करेगा और वहां तू और देवतों की जो काष्ठ और पत्थर हैं जिसे तू और तेरे पितर नहीं जानते थे
६५ पूजा करेगा। और उन जातिगणों में तुझ को चैन नमिलेगा और न तेरे पांओं के तलवों को बिश्राम मिलेगा परंतु परमेश्वर

वहां तुझे थर्थराता मन और आखों का घटना और मनको
६६ उदासी देगा। और तेरा जीवन तेरे आगे दुबधा में टंगा
रहेगा और तू रात दिन डरता रहेगा और तेरे जीवन का
६७ भरोसा नरहेगा। अपने मन के डर से जिस्से तू डरेगा और
उन बस्तुन से जिन्हें तेरी आखें देखेंगी बिहान को तू कहेगा
कि हाय कब सांझ होगी और सांझ को कि हाय कब बिहान
६८ होगा। और परमेश्वर तुझे उस मार्ग से जिसके बिषय में मैंने
तुझे कहा कि तू उसे फिर नदेखेगा तुझे जहाज़ों में मिसर को
फेर लावेगा और तुम वहां दासों और दासियों की नाईं
अपने बैरियों के हाथ बेचे जाओगे और कोई तुम्हें मोल
६९ नलेगा। ये उस नियम की बातें हैं जो परमेश्वर ने मूसा को
आज्ञा किई कि मवाब की भूमि में इसराईल के संतानों से करे
उस नियम को छोड़ जो उसने उनसे होरेब में कियाथा।

२९. उन्तीसवां पर्ब्ब।

१ मूसाने समस्त इसराईल को बुला के उन्हें कहा जो कुछ कि
परमेश्वर ने तुम्हारी आखों के आगे मिसर के देश में फ़रऊन
और उसके समस्त सेवकों और उसके समस्त देश से किया
२ तुमने देखा है। वे बड़ी बड़ी परीक्षा जिन्हें तेरी आखोंने
३ देखा है वे लक्षण और बड़े बड़े आश्चर्य। तथापि परमेश्वर ने
तुम्हें समझने का मन और देखने की आखें और सुन्ने के
४ कान आजलों न दिये। और मैं तुम्हें चालीस बरस बन में लिये
फिरा तुम पर तुम्हारे कपड़े पूराने नऊए न तुम्हारे जूते तुम्हारे
५ पांओं में पुराने ऊए। तुमने रोटी नखाई और तुमने
मदिरा अथवा मद्य न पिया जिसतें तुम जानो कि मैं परमेश्वर
६ तुम्हारा ईश्वर हों। और जब तुम इसस्थान में आये तब
हशबून का राजा सैहून और बाशान का राजा ऊज संग्राम के
७ लिये तुम पर चढ़ आये और हमने उन्हें मारा। और हमने

उनका देश ले लिया और राओबीनियों और जाज़ियों और
८ मनस्सी की आधी गोष्ठी को अधिकार में दिया। सो तुम इस
नियम की बातों को पालन करो और उन्हें मानो जिस्तें
९ अपने सब कामों में भाग्यमान् होओ। आज के दिन
तुम और तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधान और तुम्हारे प्राचीन
१० और तुम्हारे करोड़े और समस्त इसराईल के लोग। तुम्हारे
बालक और तुम्हारी पत्नियां और तुम्हारे परदेशी जो तुम्हारी
छावनी में रहते हैं तुम्हारे लकड़हारे से लेके पनिहार लों
११ परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे खड़े हो। जिसतें तू परमेश्वर
अपने ईश्वर के उस नियम और किरिया में प्रवेश करे जिसे
१२ परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ से आजके दिन करता है। जिसतें
वुह आजके दिन तुझे अपने लिये एक लोग स्थिर करे कि वुह
तेरा ईश्वर होवे जैसा उसने तुझे कहा और जैसा उसने तेरे
पितर इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब से किरिया
१३ खाई है। सो मैं तुम्हारेही साथ केवल यह नियम और
१४ किरिया नहीं करता। परंतु उसके साथ भी जो आजके दिन
परमेश्वर हमारे ईश्वर के आगे हमारे संग खड़ा है और उसके
१५ साथ भी जो आजके दिन हमारे साथ नहीं है। क्योंकि तुम
जानते हो कि हम मिसर में क्योंकर बास करते थे और क्योंकर
१६ उन लोगों के मध्य में से जिनमें तुम रहते थे निकल गये। और
तुमने उनकी लकड़ी और पत्थर और चांदी और सोने की
१७ घिनित मूरतों को देखा है। ऐसा न हो कि तुम्हों में कोई पुरुष
अथवा स्त्री अथवा घराना अथवा गोष्ठी ऐसा हो कि जिसका
मन आजके दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर से फिरता है और
इन जातियों की देवतों की प्रार्थना करे ऐसा न हो कि तुम्हारे
बीच ऐसी जड़ हो जो विष की नाईं कड़ुआ और नागदौना
१८ उपजावे। और यों होवे कि जब वुह इस स्राप की बातें सुने
वुह आप को अपने मन में आशीष देके कहे कि मैं चैन करोंगा

यद्यपि अपने मन की भावना में चलों कि पियास में मतवालपन
१९ मिलाओं। सो परमेश्वर उसे न छोड़ेगा परंतु उसी समय उस जन पर परमेश्वर का झल भड़केगा और समस्त स्राप जो इस पुस्तक में लिखे हैं उस पर पड़ेंगे और परमेश्वर उसके
२० नाम को स्वर्ग के तले से मिटादेगा। और परमेश्वर बाचा के समस्त स्रापों के समान जो इस ब्यवस्था की पुस्तक में लिखे हैं इसराईल की सारी गोष्ठियों में से बुराई के लिये उसको अलग
२१ करेगा। यहांलों कि अवैया पीढ़ी जो तुम्हारे बालकों में से उठेगी और परदेशी जो दूर देश से आवेंगे उस देश की मरी और रोगों को जो परमेश्वर ने उस पर धरे हैं देखके
२२ कहेंगे। कि यह सारा देश गंधक और लोन से जलगया कि नबोया जाता न उपजता और न कुछ घास ऊगती है और जैसे कि सदूम और अमूरा और अज़मा और सबूयम उलटगये परमेश्वर ने उसे भी अपनी रिस से और अपने कोप से उलट
२३ दिया। अर्थात् समस्त जातिगण कहेंगे कि प्रभु परमेश्वर ने इस देश पर ऐसा क्यों किया और इस महा कोप के तपन का
२४ क्या कारण है। तब लोग कहेंगे इस लिये कि उन्होंने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर की उस बाचा को त्याग किया जो मिसर के
२५ देश से निकालने के समय उन से बांधी थी। क्योंकि उन्होंने जाके आन आन देवतों की सेवा किई और उन्हें दंडवत किई उन देवतों को जिन्हें वे न जानते थे और जिन्हें उसने उन्हें न दिया था।
२६ सो परमेश्वर का क्रोध इस देश पर भड़का कि उसने समस्त
२७ स्राप जो इस पुस्तक में लिखे हैं इस पर प्रगट किये। और परमेश्वर ने रिस और कोप और बड़े जलजलाहट से उनके देश से उन्हें उखाड़ा है और दूसरे देश पर आज के दिन की
२८ नाईं उन्हें डालदिया। गुप्त बातें परमेश्वर हमारे ईश्वर की हैं परंतु प्रकाशित हमारे और हमारे बंश के लिये सदालों हैं जिसतें हम सद्द ब्यवस्था के समस्त बचन को पालें।

३० तीसवां पर्व्व।

१ और यों होगा कि जब यह सब तुझ पर पड़ेगा आशीष और स्राप जिन्हें मैंने तेरे आगे रक्खा और तू उन सब लोगों में जहां जहां परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे हांकेगा उन्हें चेत
२ करेगा। और तू परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरेगा और उसको उन आज्ञाओं के समान जो आज मैं तुझे कहताहों अपने लड़कों समेत अपने सारे मन से और अपने
३ सारे प्राण से उसे पालन करेगा। तब परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी बंधुआई को पलट डालेगा और तुझे उन सब लोगों में से जिनमें परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे छिन्न भिन्न कियाहै
४ दयाल होके फेरेगा और एकट्ठे करेगा। यदि कोई तुझ में आकाश के अंतलों हांका गया होगा तो परमेश्वर तेरा ईश्वर
५ वहां से एकट्ठा करके फेर लावेगा। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश में लावेगा जिसके तेरे पितर अधिकारी थे और तू उसका अधिकारी होगा और वुह तुझ्से भलाई
६ करेगा और तेरे पितरों से अधिक तुझे बढ़ावेगा। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे और तेरे बंश के मन का खतनः करेगा जिसतें तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे मन और
७ अपने सारे प्राण से प्रेम करे और जीता रहे। और परमेश्वर तेरा ईश्वर ये समस्त स्राप तेरे बैरियों पर और उन पर
८ डालेगा जो तेरा डाह रखतेहैं जिन्होंने तुझे सताया। और तू फिर आवेगा और परमेश्वर के शब्द को मानेगा और उसकी उन आज्ञाओं पर जो आज के दिन मैं तुझे करताहों
९ पालन करेगा। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के हर एक काम में और तेरे शरीर के फल में और तेरे ढोर के फल में और तेरी भूमि के फल में भलाई के लिये तुझे अधिक करेगा क्योंकि परमेश्वर आनंदित होके तुझ्से फेर भलाई करेगा
१० जैसा वुह तेरे पितरों से आनंदित था। यदि तू परमेश्वर

अपने ईश्वर के शब्द को सुनेगा और उसकी आज्ञा और विधिको जो व्यवस्था की इस पुस्तक में लिखी हुई हैं स्मरण करेगा और यदि तू अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से
११ परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरेगा। क्योंकि यह आज्ञा जो आज मैं तुझे करता हों वुह तुझ से न छिपी है
१२ न दूर है। वुह स्वर्ग पर नहीं जो तू कहे कि हमारे लिये कौन स्वर्ग पर जायगा और हमारे पास उसे लावे जिसतें हम उसे
१३ सुनें और पालन करें। और न समुद्र पार है जो तू कह कौन हमारे लिये समुद्र पार जायगा और उसे हम पास लावे
१४ कि हम उसे सुनें और उसे पालन करें। परंतु बचन तेरे पासही तेरे मुंह में और तेरे अंतःकरण में है जिसतें तू उसे
१५ पालन करे। देख मैंने आज जीवन और भलाई को
१६ और मृत्यु और बुराई को तेरे आगे रक्खा है। सो मैं तुझे परमेश्वर अपने ईश्वर पर प्रेम करने को और उसके मार्गों पर चलने को और उसकी आज्ञाओं और विधिन और उसके बिचारों को पालन करने को आज तुझे आज्ञा करता हों जिसतें तू जीये और बढ़े और परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में
१७ जिसका तू अधिकारी होने जाता है तुझे आशीष देवे। परंतु यदि तेरा मन फिरजाय यहां लों कि तू न सुने परंतु खींचाजाय
१८ अरु और देवतों को दंडवत करे और उनकी सेवा करे। तो आज मैं तुम्हें सुना रखता हों कि तुम निश्चय नाश होजाओगे और उस देश पर जिसके अधिकारी होने अर्दन पार जाते हो
१९ तुम्हारी बय अधिक न होगी। मैं आज स्वर्ग और पृथिवी को तुम्हारे ऊपर साक्षी लाता हों कि मैंने जीवन और मृत्यु और आशीष और स्राप तुम्हारे साम्ने रक्खे सो तुम जीवन को चुनो
२० जिसतें तुम और तुम्हारा बंश दोनों जीवें। कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम करे और उसके शब्द को माने और उसे लवलीन रहे क्योंकि वही तेरा जीवन और तेरे बय की

अधिकाई है जिसतें तू उस देश में बास करे जिसके कारण परमेश्वर ने तेरे पितर इब्राहीम और इसहाक़ और याक़ूब से किरिया खाके कहा कि मैं उसे तुम्हें देओंगा।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब।

१।२ तब मूसा ने जाके ये बातें समस्त इसराईल से कहीं। और उसने उन्हें कहा कि मैं तो आज एकसौ बीस बरसका हों आगे मैं भीतर बाहर जा नहीं सक्ता और परमेश्वर ने भी
३ मुझे कहाहै कि तू अर्दन पार न जायगा। परमेश्वर तेरा ईश्वर ही तेरे आगे आगे पार जायगा और वही इन जातिगणों को तेरे आगे नाश करेगा और तू उन्हें बश में करेगा और यशूअ परमेश्वर के कहने के समान तेरे आगे आगे पार जायगा।
४ और परमेश्वर उनसे वैसाही करेगा जैसा उसने अमूरियों के राजा सीहून और ऊज से और उनकी भूमि से किया जिन्हें
५ उसने नाश किया। और परमेश्वर उन्हें तुम्हारे आगे सौंप देगा जिसतें तुम उनसे उन सब आज्ञाओं के समान जो मैंने
६ तुम्हें कहीं करो। पोढ़ होओ और साहस करो भय न करो और उनसे मत डरो क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तेरे साथ
७ जाताहै वुह तुझे न छोड़ेगा न त्याग करेगा। फिर मूसाने यशूअ को बुलाया और सारे इसराईल के आगे उसे कहा कि दृढ़ होओ और साहस करो क्योंकि तू इन लोगों के साथ उस देश में प्रवेश करेगा जिसके देनेके बिषय में परमेश्वर ने उनके पितरों से किरिया खाई और तू उन्हें उसका अधिकारी
८ करेगा। और परमेश्वर तेरे आगे आगे जाताहै वुह तेरे साथ रहेगा वुह तुझे न छोड़ेगा न त्याग करेगा सो तू भय
९ मत कर और मत डर। और मूसाने इस व्यवस्था को लिखा और लावी के बेटे याजकों को जो परमेश्वर के साक्षी की मंजूषा को उठाते थे और इसराईल के समस्त प्राचीनों को

१० सौंप दिया। और मूसा उन्हें यह कहिके बोला कि हर एक सात बरस के अंत में छुटकारे के ठहरायेऊए समय में तंबू के
११ पर्ब्ब में। जब कि सारे इसराईल परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस स्थान पर जिसे वुह चुनेगा जाया करें तब तू इस व्यवस्था को
१२ पढ़के समस्त इसराईल को सुनाया कर। समस्त पुरुषों को और स्त्रियों और लड़कों और अपने परदेशी को जो फाटकों के भीतर हो एकट्ठे कीजियो कि वे सुनें और सीखें और परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर से डरें और इस व्यवस्था के समस्त बचन को
१३ पालन करें और मानें। और जिसतें उनके लड़के जिन्होंने अबलों ये बातें नहीं जानी सुनें और जबलों तुम उस देश में जिसके अधिकारी होने को अर्दन पार जाते हो परमेश्वर
१४ अपने ईश्वर से डरा करो। फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख तेरे दिन आ पऊंचे हैं तुझे मरना है सो तू यशूअ को बुला और मंडली के तंबू में खड़े होओ जिसतें मैं उसे आज्ञा करों सो मूसा और यशूअ चले और मंडली के
१५ तंबू में खड़े ऊए। और परमेश्वर मेघ के खंभों में होके तंबू में
१६ प्रगट ऊआ और मेघ का खंभा तंबू के द्वार पर आके ठहरा।
तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख तू अपने पितरों के साथ शयन करेगा और इस मंडली के लोग उठेंगे और उस देश पर जहां ये बसने जाते हैं कुकर्म्मी होके वहां अन्यदेशी देवतों का पीछा करेंगे मुझे छोड़ देंगे और उस वाचा को
१७ जो मैंने उनके साथ बांधी है तोड़ेंगे। तब मेरा क्रोध उन पर भड़केगा और मैं उन्हें त्याग करोंगा और मैं उनसे अपना मुंह छिपाओंगा और बिपत्ति उन्हें पकड़ेगी तब वे उस दिन कहेंगे कि क्या हमपर ये बिपत्ति इस लिये नहीं पड़ीं कि हमारा
१८ ईश्वर हम्में नहीं। और उन सब बुराइयों के कारण से जो वे करेंगे और इस लिये कि उपरी देवतों की ओर लवलीन
१९ होंगे मैं निश्चय उस दिन अपना मुंह छिपाओंगा। सो तुम

यह गीत अपने लिये लिखो और उसे इसराईल के संतानों को सिखाओ और उन्हें पढ़ाओ जिसतें यह गीत इसराईल के
२० संतानों पर मेरी साक्षी रहे। इस लिये कि जब मैं उन्हें उस देश में पहुंचाओंगा जिसके कारण मैंने उन के पितरों से किरिया खाई जिसमें दूध और मधु बहताहै और वे उसे खायेंगे और तृप्त होवेंगे और मोटे हो जायेंगे तब वे और देवतों की ओर फिर जायेंगे और उनकी सेवा करेंगे और
२१ मुझे खिजावेंगे और मुझसे बाचा तोड़ देंगे। और यों होगा कि जब बहुत कष्ट और बिपत्ति उन पर पड़ेंगी तब यही गीत उन पर साक्षी देगा क्योंकि वुह उनके बंश के मुंह से बिसर नजायगा क्योंकि मैं उनके बिचारों को जानताहों जो वे आज करतेहैं उससे आगे कि मैं उस देश में जिसके कारण
२२ मैंने किरिया खाई है उन्हें पहुंचाओं। सो उसी दिन मूसा ने यह गीत लिखा और इसराईल के संतान को सिखाया।
२३ और उसने नून के बेटे यशूअ को आज्ञा किई और कहा कि दृढ़होओ और साहस करो क्योंकि इसराईल के संतान को उस देश में जिसके कारण मैंने उनसे किरिया खाई है तू
२४ लेजायगा और मैं तेरे साथ होऊंगा। और ऐसा हुआ कि जब मूसा इस व्यवस्था की बातों को पुस्तक में
२५ लिखचुका और उन्हें समाप्त किया। तब मूसा ने लावियों को
२६ जो परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा को उठाते थे कहा। कि इस व्यवस्था की पुस्तक को लेके परमेश्वर अपने ईश्वर की बाचा की मंजूषा के अलंग में रक्खो जिसतें यह तुम्हारी साक्षी के लिये
२७ वहां रहे। क्योंकि मैं तेरे झगड़े और तेरे गले की कठोरता को जानताहों देख अबलों मैं जीता और आजके दिनलों तुम्हारे साथ हों और तुम ईश्वर से फिरगयेहो तुम मेरे मरने के पीछे
२८ कितना अधिक करोगे। अपनी गोष्ठियों के समस्त प्राचीनों को और प्रधानों को मुझ पास एकट्ठा करो जिसतें

मैं ये बातें उन्हें सुनाओं और स्वर्ग और पृथिवी को उन पर
२९ साक्षी में लाओं। क्योंकि मैं जानता हों कि मेरे मरने के पीछे
तुम आपको नष्ट करोगे और उस मार्ग से जो मैंने तुम्हें
आज्ञा किई है फिर जाओगे और पिछले दिनों में तुम पर
विपत्ति पड़ेंगी क्योंकि तुम परमेश्वर के आगे बुराई करोगे कि
३० अपने हाथ के कार्यों से उसे खिझाओगे। सो मूसा ने इस
गीत के वचन को इसराईल की समस्त मंडली को कह सुनाके
पूरा किया।

३२ बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ कि हे स्वर्गो कान धरो और मैं कहोंगा और हे पृथिवी मेरे
२ मुंह की बातें सुन। मेरी शिक्षा मेंह की नाईं टपकेंगी और मेरी
बातें ओस के समान चूयेंगी जैसे सागपात पर फूही पड़ें और
३ घास पर की झड़ियां। इस कारण कि मैं परमेश्वर के नाम को
प्रगट करोंगा तुम महिमा हमारे ईश्वर के नाम पर ठहराओ।
४ कि वुह पहाड़ है उसका कार्य सिद्ध है क्योंकि उसके सब मार्ग
न्याय के हैं वुह सच्चा ईश्वर है और बुराई से रहित वुह याथार्थ्य
५ और सच्चा है। उन्हों ने आपको नष्ट किया उनका कोंटा उसके
६ बालकों का नहीं है हठीली और टेढ़ी पीढ़ी है। हे मूर्ख
और निर्बुद्धि लोगो क्या तुम परमेश्वर को यों पलटा देते हो क्या
वुह तेरा पिता नहीं है जिसने तुझे मोल लिया क्या उसने तुझे
७ नहीं सिर्जा और तुझे स्थिर न किया। अगिले दिनों को
चेत करो और पीढ़ी पर पीढ़ी के बरसों को सोचो अपने
पिता से पूछ और वुह तुझे बतावेगा और अपने प्राचीनों से
८ और वे तुझसे कहेंगे। जब अति महान ने जातिगणों के लिये
अधिकार बांटा जब उसने आदम के बेटों को अलग किया
इसराईल के संतानों की गिनती के समान उसने लोगों का
९ सिवाना ठहराया। क्योंकि परमेश्वर का भाग उसके लोग हैं

१० याक़ूब उसके अधिकार की रस्सी है। उसने उसे उजाड़ देश और भयानक अरन्य में पाया उसने उसे घेरलिया और उसने उसे शिक्षा दिई उसने अपनी आंख की पुतली की नाईं
११ उसकी रक्षा किई। जैसा गिद्ध अपने खोते को हिलाता है और अपने छौनों पर फरफराता है और अपने पंखों को फैलाके
१२ उन्हें लेता है और अपने पंखों पर उन्हें उठाता है। वैसा केवल परमेश्वर ने उसकी अगुआई किई और उसके साथ कोई
१३ उपरी देव नथा। उसने उसे पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर बढ़ाया जिसतें वुह खेतों की बढ़ती खावे और उसने उसे चटान में से
१४ मधु और चकमक के चटान में से तेल चुसाया। और गाय के मक्खन और भेड़ के दूध और मेम्नों की चिकनाई और बाशान देश के पलेहुए मेढ़ों और बकरों के गुर्दों गोहूं की चिकनाई
१५ सहित तूने दाख का निराला रस पीया। परंतु यशूरन मोटा हुआ और लतिआया तू मोटा हुआ है और फैल गया है तू ढंप गया है तब उसने ईश्वर अपने परमेश्वर को छोड़ दिया और अपनी मुक्ति के पहाड़ को तुच्छ जाना।
१६ उन्होंने उपरी देवतों के कारण उसे झल दिया और उन्होंने
१७ उसे घिनितों से रिस दिलाया। उन्होंने पिशाचों के लिये बलिदान चढ़ाये जो ईश्वर नथे परंतु उन देवतों के लिये जिनको वे नपहिचानतेथे वे देवता जो थोड़े दिनों से प्रगटहुए जिनसे
१८ तुम्हारे पितर न डरतेथे। तू उस पहाड़ से अचेत है जिसने तुझे उत्पन्न किया और उस ईश्वर को भूलगया जिसने तेरा डौल
१९ किया। और जब परमेश्वर ने देखा उसने घिन किया इस
२० कारण कि उसके बेटा बेटी ने उसे रिस दिलाया। और उसने कहा कि मैं उनसे अपना मुंह छिपाओंगा जिसतें मैं उनका अंत देखों क्योंकि वे टेढ़ी पीढ़ी हैं और ऐसे लड़के
२१ जिनमें विश्वास नहीं। उन्होंने अनीश्वर से मुझे झल दिलाया उन्होंने व्यर्थों से मुझे रिस दिलाया सो मैं भी उन्हें अलोग से

झल दिलाओंगा और एक मूर्ख जाति से उन्हें रिस दिलाओंगा।
२२ क्योंकि मेरे रिस में आग भड़की है और अत्यंत नरक लों जली है
और पृथिवी को उसकी बढ़ती समेत भस्म करगई और पहाड़ों
२३ की नेओं को जला दिया है। मैं उन पर बिपत्ति की ढेर करोंगा
२४ और उन पर अपने बाणों को घटाओंगा। वे भूख से जल जायेंगे
और भस्मक तपन और कड़वे बिनाश से भक्षण किये जायेंगे
मैं पशुओं के दांतों को भी धूल के सर्प के बिष के संग उनपर
२५ छोड़ोंगा। बाहर में तलवार और कोठरियों से भय तरुण
मनुष्य को और कुंआरी को भी दूध पीवक को भी पुरनिआ
२६ सहित नाश करेंगे। मैंने कहा कि मैं उन्हें कोने कोने छिन्न भिन्न
२७ करता मैं मनुष्यों मेंसे उनका नाम मिटा देता। यदि मैं
शत्रु के क्रोध को न मानता नहो कि उनके बैरी घमंड करें और
नहो कि वे कहें कि हमाराही हाथ प्रबल ऊआ परमेश्वर ने
२८ ये सब नहीं किये। क्योंकि वे मंत्र रहित जाति हैं और
२९ उनमें बुद्धि नहीं। हाय कि वे बुद्धिमान होके इसे समुझते
३० और अपने अंतकाल की चिंता करते। कि एक कैसा सहस्र को
खेदता और दो दस सहस्र को भगाते यदि उनका पहाड़ उन्हें
बेच डाले होता और परमेश्वर उन्हें बंद किये होता।
३१ क्योंकि उनका पहाड़ हमारे पहाड़ के समान नहीं हां हमारे
३२ बैरी आप न्यायी हैं। क्योंकि उनका दाख सदूम के दाख के और
गमूरा के खेतों का है उनके अंगूर पित्त के अंगूर हैं उनके गुच्छे
३३ कड़वे हैं। उनकी मदिरा नागों का बिष है और सपोलों का
३४ कठिन बिष। क्या यह मुझ पास धरा नहीं और मेरे भंडारों
३५ में बंद नहीं। प्रतिफल और दंड देना मेरा है उनका पांव
समय पर फिसलेगा क्योंकि उनकी बिपत्ति का दिन आपऊंचा
३६ और उन पर जो बस्तु आती है सो शीघ्र करती है। जब वुह
देखेगा कि सामर्थ्य जाती रही और कोई बंद अथवा छूटा नहीं है
तब परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करेगा और अपने सेवकों के

३७ लिये पछतावेगा। और कहेगा कि उनके देव गण पहाड़
३८ जिनका उन्हें भरोसा था क्या ऊए। जिन्हों ने उनके बलिदानों की
चिकनाई खाई और पीने की भेंट की मदिरा पीई वे उठें
३९ और तुम्हारा बचाव करें और सहायक होवें। अब देखो कि
मैं मैंहीं हों और कोई ईश्वर मेरा साथी नहीं मैंहीं मारता हों
और मैंहीं जिलाता हों मैं घायल करता हों और मैंहीं चंगा
४० करता हों ऐसा कोई नहीं जो मेरे हाथ से छुड़ावे। क्योंकि मैं
अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाताहों और कहताहों कि मैं
४१ सनातन से जीवता हों। यदि मैं अपना चमकता ऊआ खड्ग
चोखा करों और मेरा हाथ न्याय धारण करे तो मैं अपने
शत्रुन से प्रतिफल लोंगा और जो मुझे बैर रखते हैं उन्हें
४२ पलटा दोंगा। मारेऊओं के और बंधुओं के लोहू से और
शत्रु पर पलटा लेने के आरंभ से मैं अपने बाणों को रुधिर से
४३ उन्मत्त करोंगा और मेरी तलवार मांस खायगी। हे जातिगणो
उसके लोगों के साथ आनंद से गाओ क्योंकि वुह अपने सेवकों के
लोहू का पलटा और अपने शत्रुन से प्रतिफल लेगा अपने देश
४४ और अपने लोगों पर दयाल होगा। तब मूसा और
नून के बेटे यशूअ ने आके इस गीत की सारी बातें लोगों को कह
४५ सुनाईं। और जब मूसा ये सारी बातें इसराईल के संतानों को
४६ कह चुका। तब उसने उन्हें कहा कि उन सारी बातों से जिन की
मैं आज के दिन तुम्हों में साक्षी देताहों अपने मन लगाओ
और अपने बालकों को कहो कि पालन करके इस व्यवस्था की
४७ सारी बातों को मानें। क्योंकि वुह तुम्हारे लिये वृथा नहीं
इस कारण कि तुम्हारा जीवन है और इसी बात के लिये इस
देश में जिसके अधिकारी होने तुम अर्दन पार जाते हो अपनी
४८ अयुर्दाय बढ़ाओगे। और परमेश्वर ने उसी दिन मूसा से
४९ यह बचन कहा। अबारीम के इस पर्ब्बत पर नबू पहाड़ों पर
मवाब के देश में जो अरीहा के साम्ने है चढ़जा और किनान के

देश को देख जिसे मैं इसराईल के संतान को अधिकार में
५० देता हों। और उसी पहाड़ी पर जिसपर तू जाता है मरजा
और अपने लोगों में बटुरजा जैसे तेरा भाई हारून हर पहाड़
५१ पर मर गया और अपने लोगों में बटुर गया। इस कारण
कि तुम्हों ने इसराईल के संतान के मध्य क़ादस के झगड़े के
पानी पर सीन के अरण्य में मेरा अपराध किया क्योंकि तुमने
५२ इसराईल के संतान के मध्य में मुझे पवित्र न किया। तथापि
तू आगे के देश को देख लेगा परंतु जो देश मैं इसराईल के
संतानों को देता हों तू उसमें न जायगा।

३३ तेंतीसवां पर्ब्ब।

१ यह वुह आशीष है जिस्से ईश्वर के जन मूसाने अपने मरने से
२ आगे इसराईल के संतानों को आशीष दिया। और कहा कि
परमेश्वर सीना से आया और सईर से प्रगट ऊआ और फ़ारान
पहाड़ से उन पर चमक उठा और वुह दस सहस्र सिद्धों के
साथ आया उसके दहिने हाथ से एक आग की व्यवस्था उनके
३ लिये निकली। हां उसने लोगों से प्रेम किया उसके समस्त
सिद्ध तेरे हाथ में और वे तेरे चरणों के पास बैठगये और
४ तेरी बातों से पावेंगे। मूसा ने हम से अर्थात् याक़ूब की
५ मंडली के अधिकार के लिये एक व्यवस्था कही। और जब
लोगों के प्रधान इसराईल की गोष्ठी एकट्ठे थे वुह यशूरन का
६ राजा था। राओबीन जीये और न मरे और उसके जन
७ थोड़े न हों। और यहूदा के लिये उसने कहा कि हे परमेश्वर
यहूदा का शब्द सुन और उसे उसके लोगों में पऊंचा उसके
हाथ उसके लिये बऊत होवें और तू बैरियों से सहायक हो।
८ और उसने लावी के विषय में कहा कि तेरा तमीम और
तेरा ऊरीम तेरे धर्म्मभय के साथ होवे जिसे तूने मासा में
परखा और जिसके साथ तूने मरीबा के पानियों पर झगड़ा।

९ जिसने अपनी माता पिता से कहा कि मैंने उसे न देखा और उसने अपने भाइयों को न माना न अपने बालकों को पहिचाना क्योंकि उन्होंने तेरे बचन को माना और तेरी बाचा को
१० धारण किया। वे तेरे विचार याक़ूब को और तेरी व्यवस्था इसराईल को सिखावें वे तेरी नासिका के आगे धूप रक्खें और
११ होम के पूरे बलिदान बेदी पर धरें। हे परमेश्वर उसकी संपत्ति पर आशीष दे और उसके हाथों के कामों को ग्राह्य कर और जो उसके बिरोध में उठें और जो उसे बैर रक्खें उन की
१२ कटि बेधडाल जिसतें वे फिर न उठें। उसने बनियामीन के विषय में कहा कि परमेश्वर का प्रिय उसके पास चैन से रहेगा उसे दिन भर आड़ करेगा और वुह उसके दोनों कांधों के बीच
१३ रहेगा। और उसने यूसफ़ के विषय में कहा कि उसकी भूमि पर ईश्वर का आशीष होगा स्वर्ग की बक्क मूल्य वस्तुन के लिये और ओस के कारण और गहिराव के कारण जो नीचे
१४ झुका है। और सूर्य्य के निकालेऊए अच्छे फलों में से और
१५ चंद्रमा की अच्छी निकाली ऊई वस्तुन के कारण। प्राचीन पहाड़ों की श्रेष्ठ वस्तुन के लिये दृढ़ टीलों की बक्क मूल्य वस्तुन के
१६ कारण। और पृथिवी की बक्कमूल्य वस्तें और उसकी भर पूरी के कारण और उसकी भलाई के लिये जो झाड़ी में रहता था यूसफ़ के सिर पर उतरे और उसके मस्तक पर जो अपने
१७ भाइयों से अलग किया गया था। उसका बिभव उसके बैल के पहिलौंठे की नाईं और उसके सींग गैंड़े के सींग वुह उन्हीं से लोगों को पृथिवी के सिवानेलों रेलेगा और वे अफ़राईम के
१८ दस सहस्र और वे मनस्सा के दस सहस्र। और उसने ज़बूलून के विषय में कहा कि हे ज़बूलून अपने बाहर जाने में
१९ आनंद हो और एसाख़ार तू अपने तंबूओं में। वे लोगों को पहाड़ पर बुलावेंगे और वहां धर्म्म के बलिदान चढ़ावेंगे क्योंकि वे समुद्रों की अधिकाई को और भंडारों को जो बालू में छिपे हैं

२० चूसेंगे । और उसने जाद के विषय में कहा कि धन्य है वुह जो जाद को फैलाता है वुह सिंह के समान पड़ा रहता है और
२१ सिर की चांदी को भुजा सहित फाड़ता है । उसने पहिला भाग अपने लिये ठहराया इस कारण कि वहां व्यवस्था दायक के भाग को चुना और वुह लोगों के प्रधानों के साथ आया वुह परमेश्वर के न्याय को और उसके विचार को इसराईल से बजा लाया ।
२२ और दान के विषय में कहा कि दान एक सिंह का बच्चा है जो
२३ बाशान से उछलेगा । और उसने नफ़ताली के विषय में कहा कि हे नफ़ताली तू अनुग्रह से तृप्त और परमेश्वर के आशीष से
२४ पूर्ण तू पश्चिम और दक्षिण का अधिकारी हो । और उसने अशर के विषय में कहा कि अशर बालकों का आशीष पावे और अपने भाइयों का ग्राह्य होवे और अपना पांव तेल में डुबोवे ।
२५ तेरे जूते के तले लोहा और पीतल होगा और तेरे समय के
२६ समान तेरा बल होगा । यशूरून के ईश्वर के समान कोई नहीं जो स्वर्ग पर तेरी सहाय के लिये चढ़ता है और उसकी
२७ प्रतिष्ठा में आकाश पर । सनातन का ईश्वर तेरा शरण है और नीचे सनातन की भुजा और बैरियों को तेरे आगे से वुह
२८ हांकेगा और कहेगा कि उन्हें नाश कर । तब इसराईल अकेला चैन से रहेगा याक़ूब का सोता अन्न और मदिरा की भूमि पर
२९ होगा उसके आकाश से ओस पड़ेगी । हे इसराईल तू धन्य, हे लोग तुझसा कौन है कि परमेश्वर ने तुझे बचाया है वुह तेरी सहाय के लिये ढाल और तेरी बड़ाई की तलवार है तेरे शत्रु तेरे बश में होंगे और तू उनके ऊंचे स्थानों को लताड़ेगा ।

३४ चौंतीसवां पर्ब्ब ।

१ और मूसा मवाब के चौगानों से नबू के पहाड़ पर पसगा की चोटी पर जो अरीहा के साम्ने है चढ़गया और परमेश्वर ने
२ उसे जलाद के समस्त देश दान लों । और समस्त नफ़ताली और

अफ़राईम और मनस्सा के देश और यहूदा के समस्त देश अत्यंत
२ समुद्रलों। और दक्षिण और अरीहा के चौगान की नीचाई
३ जो खजूर के पेड़का नगर है ज़ुअर लों उसको दिखाया। और
४ परमेश्वर ने उसे कहा कि यह वुह देश है जिस की मैं ने
इबराहीम और इसहाक़ और याक़ूब से किरिया खाके कहा कि मैं
उसे तेरे बंश को देंगा मैंने तुझे आंखों से दिखा दिया परंतु
५ तू उधर पार न जायगा। सो परमेश्वर का सेवक मूसा
परमेश्वर के बचन के समान मवाब के देश में मर गया।
६ और उसने उसे मवाब के देश की तराई में बैतफ़ाऊर के साम्ने
गाड़ा पर आजके दिनलों कोई उसकी समाधि को नहीं
७ जानता। और मूसा अपने मरने के समय में एकसौ
बीस बरस का था उसकी आंखें धुंधलीं न ऊईं और उस का
८ स्वाभाविक बल न घटा। और इसराईल के संतानों ने मूसा के
लिये मवाब के चौगानों में तीस दिनलों बिलाप किया और
९ मूसा के लिये उनके रोने पीटने के दिन समाप्त ऊए। और
नून का बेटा यशूअ बुद्धि के आत्मा से भर गया क्योंकि मूसा ने
अपने हाथ उस पर रक्खे थे और इसराईल के संतान ने
उसे माना और जैसा परमेश्वर ने मूसा को कहा था उसने
१० वैसाही किया। और तब से इसराईल में मूसा के
समान कोई आगमज्ञानी फेर न ऊआ जिसे परमेश्वर आम्ने
११ साम्ने जानता था। उन सब अचंभित और आश्चर्य्यित में फ़रऊन
और उसके सब सेवकों के और उसके समस्त देश में परमेश्वर ने
१२ मिसर के देश में उसे भेजा था। और समस्त सामर्थी हाथ
और समस्त बड़े बड़े भय में जो मूसा ने समस्त इसराईल के
आगे दिखाये।

4

यशूत्र्य की पुस्तक ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

मूसा की संती परमेश्वर यशूत्र्य को ठहराता है और उसे हियाव देता है १—९ अर्दन पार होने के लिये यशूत्र्य लोगों को सिद्ध करता है १०—११ अढ़ाई गोष्ठी को उनकी बाचा से चेत करता है १२—१५ वे उसकी बात को मानते हैं १६—१८ ।

१ जब परमेश्वर का सेवक मूसा मरगया तब यों हुआ कि
२ परमेश्वर ने मूसा के सेवक नून के बेटे यशूत्र्य को कहा। कि मेरा सेवक मूसा मरगया है सो अब उठ तू और समस्त लोग उस देश को जो मैं उन्हें देता हों अर्थात् इसराईल के संतानों
३ को इस अर्दन पार उतरजायें। जैसा मैं ने मूसा से कहा कि हर एक स्थान जिस पर तेरे पांव का तलवा पड़ेगा मैं ने तुझे दिया
४ है। अरण्य से और इस लबनान से लेके महा नदी अर्थात् फुरात नदी लों हित्तियों का सारा देश महा समुद्र लों सूर्य के
५ अस्त होने की ओर तुम्हारा सिवाना होगा। तेरे जीवन भर कोई तेरे आगे ठहर न सकेगा जैसा मैं मूसा के साथ था
६ तेरे साथ रहोंगा मैं तुझे न घटोंगा न तुझे त्यागोंगा। सो बलवंत हो और सुसाहस कर इसलिये कि यह भूमि जो मैं ने किरिया खाके उनके पितरों को देने कही है तू उसे
७ अधिकार में दिलावेगा। केवल तू बलवंत और अति साहसी हो जिसतें तू इस व्यवस्था के समान जिसकी मेरे सेवक मूसा

ने तुझे आज्ञा किई है सोच के माने और उसे दहिने बायें मत
८ मुड़ जिसतें जहां कहीं तू जाय भाग्यमान होवे। इस व्यवस्था
की पुस्तक की चर्चा तेरे मुंह से जाने न पावे परंतु रात दिन
उसमें ध्यान कर जिसतें तू सोच के जो कुछ उसमें लिखा है
माने क्योंकि तब तू अपने मार्ग में भाग्यमान होगा और तेरा
९ कार्य्य सुसिद्ध होगा। क्या मैं ने तुझे आज्ञा न किई कि बलवंत
हो और सुसाहस कर डर मत और मत घबरा क्योंकि परमेश्वर
१० तेरा ईश्वर जहां जहां तू जाता है तेरे साथ है। तब यशूअ
११ ने लोगों के अध्यक्षों को आज्ञा करके कहा। कि तुम सेनाओं
में से होके जाओ और लोगों को आज्ञा करके कहो कि अपने
लिये भोजन सिद्ध करें क्योंकि तीन दिन के भीतर तुम इस अर्दन
पार उतरोगे जिसतें उस भूमि के जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर
१२ तुम्हें देता है अधिकारी होओ। और राओबीनियों और
जाद़ियों को और मनस्सा की आधी गोष्ठी को यशूअ कहिके
१३ बोला। कि जो बात परमेश्वर के सेवक मूसा ने तुम्हें कही
थी चेत करो कि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें बिश्राम दिया है
१४ और यह देश तुम्हें दिया है। और तुम्हारी पत्नियां और
तुम्हारे बालक और तुम्हारे ढोर इस देश में रहें जो मूसा ने
अर्दन के इस पार तुम्हें दिया है परंतु तुम लोग अर्थात् समस्त
बीर अपने भाइयों के आगे आगे हथियार बांधके चलो
१५ और उनकी सहाय करो। जब लों परमेश्वर तुम्हारी नाईं
तुम्हारे भाइयों को चैन देवे और वे भी उस भूमि के जो परमेश्वर
तुम्हारा ईश्वर उन्हें देता है अधिकारी होवें तब तुम उस देश
में जो तुम्हारा अधिकार है और परमेश्वर के सेवक मूसा ने
अर्दन के इसी पार पूर्वदिशा में तुम्हें दिया है फिर आइयो
१६ और उसे भोग कीजियो। तब उन्हों ने यशूअ को उत्तर दिया
कि जो जो आपने हमें कहा सो सो हम मानेंगे और जहां जहां
१७ हमें भेजेंगे हम जायेंगे। जिस रीति से हमने मूसा की सब

बातें मानीं उसी रीति से आपकी सब मानेंगे केवल परमेश्वर आप का ईश्वर जिस रीति से मूसा के साथ था आप के साथ
१८ भी रहे। जो कोई आप की आज्ञा को नमाने और आप की सारी बातों को जो आप कहेंगे न सुनेगा सो मारडालाजायगा केवल बलवंत हो और सुसाहस कर।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

रहाब दोनों भेदियों को ग्रहण करके छिपाती है १—७ वे आपुस में बाचा बांधते हैं ८—२२ वे फिर आके संदेश लाते हैं २३—२४ ।

१ तब नून के बेटे यहूसू ने शतीम से दो मनुष्य भेजे कि चुपके से भेद लेवें और उन्हें कहा कि जाओ उस देश को अर्थात् अरीहा को देखो सो वे गये और एक गणिका के घरमें जिसका नाम
२ राहाब था आके उतरे। तब अरीहा के राजा को संदेश पहुंचा कि देख आज रात इसराईल के संतान में से जन आयेहैं
३ जिसतें देश का भेद लेवें। अरीहा के राजा ने राहाब को यह कहिके कहला भेजा कि उन मनुष्यों को जो तुझ पास आये हैं और तेरे घरमें उतरेहैं निकाल दे क्योंकि वे सारे देश का भेद
४ लेनेको आये हैं। तब उस स्त्री ने उन दोनों मनुष्यों को लेके छिपा रक्खा और यों कहा कि मेरे पास आये तो थे परमैं
५ नहीं जानती कि कहां के थे। और यों हुआ कि फाटक बंद करते वे अंधेरे में निकल गये और मैं नहीं जानती कि वे कहां गये सो शीघ्र उनका पीछा करो क्योंकि तुम उन्हें जाही लेओगे।
६ परंतु वुह उन्हें अपनी छत पर चढ़ा लेगई और सनई के नीचे जो
७ छत पर सजी रक्खीं थीं छिपादिया। और लोग उनके पीछे अर्दन की ओर हलाव लों गये और ज्यों उनके खोजी बाहर
८ निकलगये त्योंही उन्हों ने फाटक बंद करलिया। और वुह
९ स्त्री उनके लेटने से आगे छत पर उनपास गई। और उन्हें कहा

कि मैं जानती हों कि परमेश्वर ने यह देश तुम्हें दिया है और तुम्हारा भय हमोंपर पड़ा है और इस देश के समस्त वासी
१० तुम्हारे आगे गलगये हैं। क्योंकि हमने सुना है जब कि तुम मिसर से बाहर निकले तो परमेश्वर ने तुम्हारे लिये लाल समुद्र के पानियों को किसरीति से सुखादिया और जो कुछ तुमने अमूरानियों के दो राजाओं सीहून और ऊजसे जो अर्दन के उस पार थे क्या किया और जिन्हें उसने सर्वथा
११ नाश किया। और ज्योंही हमने सुनाथा त्योंही हमारे मन गलगये और किसी में तुम्हारा साम्ना करने का तनिक भी हियाव नरहा क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर ऊपर स्वर्ग में और नीचे
१२ पृथिवी में वही ईश्वर है। सो अब मुझसे परमेश्वर की किरिया खाइये जैसा मैं ने तुम पर अनुग्रह किया वैसाही तुम भी मेरे पिता के घराने पर अनुग्रह करियो और मुझे एक सच्चाचिह्न
१३ दीजिये। कि मेरे पिता और मेरी माता को और मेरे भाइयों और बहिनों को और सब जो उनका है बचाओ और हमारे
१४ प्राणों को मृत्यु से छुड़ाओ। उन्हों ने उसे उत्तर दिया कि मृत्यु के बिषय में हमारे प्राण तुम्हारे प्राण की संती यदि तू हमारा यह कार्य न उचारे और ऐसा होगा कि जब परमेश्वर इस देश को हमें देगा तब हम तेरे साथ सच्चाई से और अनुग्रह से
१५ व्यवहार करेंगे। तब उसने उन्हें डोरी से खिड़की में से उतारदिया क्योंकि उसका घर नगर की भीत पर था और
१६ वुह भीतही पर रहती थी। और उसने उन्हें कहा कि पहाड़ को जाओ नहो कि खोजी तुम्हें मिलें सो तुम तीन दिन लों छिपे रहो जबलों कि खोजी फिर आवें उसके पीछे तुम अपने
१७ मार्ग लीजियो। तब उन मनुष्यों ने उसे कहा कि इस किरिया से
१८ जो तूने हम से लिई है हम दोषी होंगे। देख जब हम इस देश में आवेंगे तब यह लाल सूत की डोरी इस खिड़की से बांधियो जिस्से तूने हमें नीचे उतारदिया और अपने पिता

और अपनी माता और अपने भाइयों को और अपने पिता
१९ के सारे घराने को अपने यहां बटोरियो। और ऐसा होगा
कि जो कोई तेरे घर के द्वारों से बाहर जायगा उसका
लहू उसके सिर पर होगा और हम निर्दोष होंगे और जो
कोई तेरे साथ घर में होगा यदि किसी का हाथ उस पर पड़े
२० तो उसका लहू हमारे सिर पर। और यदि तू हमारा यह
कार्य उचारे तो हम उस किरिया से जो तूने हम से लिई अलग
२१ होंगे। वुह बोली जैसा तुम ने कहा वैसाही हो सो उन्हें
बिदाकिया और वे चलेगये तब उसने उस लाल सूत की डोरी
२२ खिड़की पर बांधी। और वे वहां से चलके तीन दिन लों
पहाड़ पर रहे जबलों कि खोजी लौट आये और उन खोजियों
२३ ने उन्हें समस्त मार्ग में ढूंढ़ा और नपाया। तब वे दोनों
पुरुष फिरे और पहाड़ से उतरे और पार ऊए और नून के
बेटे यशूअ पास आये और जो जो कुछ उन पर बीता था
२४ सब उसे कहा। और उन्होंने यशूअ को कहा कि निश्चय परमेश्वर
ने यह समस्त देश हमारे बश में करदिया और देश के समस्त
बासी हमारे कारण गलगये।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

यशूअ अर्दन के तीर आता है और लोगों को पार
जाने की आज्ञा होती है १—६ परमेश्वर अशूअ को
हियाव देता है ७—८ यशूअ लोगों को उभाड़ता है
९—१३ अर्दन के जल बिभाग होते हैं १४—१७।

१ तब यशूअ बड़े तड़के उठा और शतीम से यात्रा किई वुह और
समस्त इसराईल के संतान अर्दन पर पऊंचे और पार उतरने
२ से आगे वहां डेराकिया। और यूं ऊआ कि तीन दिन के पीछे
३ अध्यक्ष सेना में होके गये। और लोगों को आज्ञा किई कि जब
तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की साक्षी की मंजूषा को लावी याजक

को उठाते ज़ए देखो तब तुम अपने स्थान से यात्रा करो
४ और उसके पीछे पीछे चलो। परंतु तुम्हारे और उसके मध्य
में दो सहस्र हाथ का टप्पा रहे और उसके पास मत आओ
जिसतें जिस मार्ग से तुम्हें जाना है तुम पहिचानो क्योंकि तुम
५ इस मार्ग से आज कल नहीं गये। और यहूशूअ ने लोगों को कहा
कि अपने को शुद्ध करो क्योंकि कल परमेश्वर तुम्हों में आश्चर्य्य
६ दिखावेगा। फिर यहूशूअ याजकों को कहिके बोला कि साक्षी
की मंजूषा को उठाओ और लोगों के आगे आगे पार उतरो
सो उन्हों ने साक्षी की मंजूषा को उठाया और लोगों के आगे
७ आगे चले। तब परमेश्वर ने यहूशूअ को कहा कि आज
के दिन से मैं समस्त इसराईल की दृष्टि में तेरी महिमा करोंगा
जिसतें वे जानें कि जिस रीतिसे मैं मूसा के साथ था तेरे साथ
८ होओंगा। और तू उन याजकों को जो साक्षी की मंजूषा को
उठाते हैं कहियो कि जब तुम अर्दन के जल के तीर पर पज़ंचो
९ तब अर्दन में खड़े रहियो। सो यहूशूअ ने इसराईल के संतानों
से कहा कि इधर आओ और परमेश्वर अपने ईश्वर की बात
१० सुनो। और यहूशूअ ने कहा कि अब इस्से तुम जानोगे कि जीवत
ईश्वर तुम्हों में है और वुह किनानियों और हित्तियों और हवियों
और फ़रज़ियों और जरज़ासियों और अमूरियों और यबूसियों
११ को तुम्हारे आगे से निश्चय हांकदेगा। देखो समस्त पृथिवी के
परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा तुम्हारे आगे आगे अर्दन में पार
१२ जाती है। सो अब तुम बारह जन इसराईल की गोष्ठियों में
१३ से हर एक गोष्ठी पीछे एक मनुष्य लेओ। और ऐसा होगा
कि ज्यों हीं याजक के पांव के तलवे जो परमेश्वर समस्त पृथिवी
के प्रभु की साक्षी की मंजूषा उठाते हैं अर्दन के जल में ठहरें
त्योंही अर्दन के पानी जो ऊपर से बहते हैं थमजायेंगे और ढेर
१४ होजायेंगे। और ऐसा ज़आ कि जब लोग अपने डेरे से
चलनिकले कि अर्दन पार जावें और याजकों ने लोगों के आगे

१५ साक्षी की मंजूषा को उठाया। और ज्यों वे जो मंजूषा को उठायेऊएथे अर्दन लों पऊंचे और उन याजकों के पांव जो मंजूषा को उठायेऊएथे तीर के पानी में डूबे (क्योंकि लवनी के
१६ समय में अर्दन अपने समस्त कडारों के ऊपर बहता है)। कि जल जो ऊपर से आये ठहरगये और ढेर होके आदम नगर से बऊत दूर उभड़े जो ज़रीतान के पास है और जो समुद्र के चैागान की ओर बहिआये अर्थात् खारी समुद्र के घटगये और अलग कियेगये और लोग अरीहा के सन्मुख पार उतरगये।
१७ और याजक जो परमेश्वर की बाचा की मंजूषा को लियेऊएथे दृढ़ता से सूखी भूमि पर अर्दन नदी में खड़ेरहे और समस्त इसराईली सूखी भूमि पर पार उतरगये जब लों समस्त लोग निर्धार पार उतरगये।

४ चैाथा पर्ब्ब ।

बारह पत्थर चिन्ह के लिये अर्दन से निकाले जाते हैं १—९ लोग पार उतरते हैं १०—१३ परमेश्वर यहूसूअ को महिमा देता है १४—१८ बारह पत्थर जलजाल में खड़े किये जाते हैं १९—२४ ।

१ और यों ऊआ कि जब सारे लोग अर्दन पार उतरचुके तब
२ परमेश्वर यहूसूअ से कहिके बोला। कि लोगों में से बारह मनुष्य
३ लेओ हर एक गोष्ठी में से एक मनुष्य। और उन्हें आज्ञा करके कह कि अपने लिये अर्दन के बीचोंबीच में से उस स्थान से जहां याजकों के पांव दृढ़ खड़ेरहे बारह पत्थर लेओ और उन्हें अपने साथ पार लेजाओ और उन्हें निवास स्थान में जहां
४ तुम आज रात निवास करोगे वहां धरो। तब यहूसूअ ने उन बारह मनुष्यों को जिन्हें उसने इसराईल के संतानों में से सिद्ध
५ कियाथा बुलाया एक एक गोष्ठी पीछे एक मनुष्य। और यहूसूअ ने उन्हें कहा कि अपने ईश्वर परमेश्वर की मंजूषा के आगे पार

उतरके अर्दन के बीचोंबीच जा और हर एक तुम्में से इसराईल के संतानों की गोष्ठी की गिनती के समान पत्थर अपने कांधे
६ पर लेवे। जिसतें यह तुम्में एक चिन्ह होवे और जब कलको
७ तुम्हारे बंश पूछें और कहें कि ये पत्थर कैसे हैं। तो तुम उन्हें उत्तर दीजियो कि अर्दन के पानी परमेश्वर की बाचा की मंजूषा के आगे दो भाग हुए जब वुह अर्दन पारगया तो अर्दन के पानी दो भाग हुए सो ये पत्थर चिन्हानी के लिये इसराईल
८ के संतानों के कारण होंगे। इसराईल के संतानों की गोष्ठियों की गिनती के समान जैसा परमेश्वर ने यशूअ को कहा और जैसा यशूअ ने उन्हें आज्ञा किई इसराईल के संतानों ने वैसाही किया और अर्दन के मध्य में से बारह पत्थर उठाये और
९ उन्हें अपने संग उस स्थान लों जहां वे टिके लेगये। तब यशूअ ने अर्दन के बीचोंबीच उस स्थान पर जहां याजकों के पांव पड़े जो साक्षी की मंजूषा को उठाये थे बारह पत्थर खड़ेकिये सो वे
१० आज के दिन लों वहां हैं। क्योंकि याजक जो मंजूषा को उठाये हुये थे अर्दन के बीचोंबीच खड़ेरहे जब लों हर एक बात जो परमेश्वर ने यशूअ को आज्ञा किई कि मूसा की आज्ञाओं के समान मंडली को कहे संपूर्ण होचुकी उसके पीछे लोग शीघ्रता
११ करके पार उतरगये। और यों हुआ कि जब समस्त लोग पार होचुके तब लोगों के आगे याजक परमेश्वर की मंजूषा लियेहुए
१२ पार गये। तब राओबीन के संतान और जाद़ के संतान और मनस्सा की आधी गोष्ठी जैसा मूसा ने कहा था इसराईल
१३ के संतानों के आगे हथियार बांधे हुए पार उतरगये। चालीस सहस्रएक हथियार बांधेहुए लैस संग्राम के निमित्त परमेश्वर के
१४ आगे अरीहा के चौगानों में पार उतरे। उस दिन परमेश्वर ने समस्त इसराईल की दृष्टि में यशूअ को महिमा दिई और वे उसके जीवन भर उस्से ऐसा डरे जैसा वे मूसा से डरते थे।
१५।१६ तब परमेश्वर यशूअ से कहिके बोला। कि उन याजकों को

जो साक्षी की मंजूषा उठाते हैं कहा कि अर्दन से बाहर निकल
१७ आओ। सो यशूअ ने याजकों को कहा कि अर्दन से निकल
१८ आओ। और ऐसा हुआ कि जब वे याजक जो परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा उठायहुएथे अर्दन के बीच में से बाहर आये और याजकों के पांव के तलवे सूखी भूमि पर निकल आये त्योंही अर्दन के पानी अपने स्थानों में फिरआये और आगे के
१९ समान अपने सब कड़ारों पर बहनेलगे। और मंडली पहिले मास की दसवीं तिथि को अर्दन से निकली और अरीहा के पूर्ब्ब
२० सिवाने में जलजाल में छावनी किई। और यशूअ ने उन बारह पत्थरों को जो अर्दन से उठायेगयेथे जलजाल में
२१ खड़ा किया। और इसराईल के संतानों को कहा कि जब तुम्हारे
२२ लड़के कलको अपने पितरों से पूछें कि ये पत्थर कैसे हैं। तो तुम अपने लड़कों को बतलाइयो कि इसराईल इस अर्दन
२३ से सूखी भूमि से पार आये। क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने अर्दन के पानियों को तुम्हारे आगे सुखादिया जबलों तुम पार होगये जैसा परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने लाल समुद्र को किया था जिसे उसने हमारे आगे सुखादिया जबलों
२४ हम पार उतरगये। जिसतें समस्त पृथिवी के लोग जानें कि परमेश्वर का हाथ सामर्थी है जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर से सदा डराकरो।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

किनानी डर जाते हैं और लोगों का ख़तना करवाया जाता है १—९ बीत जाने का पर्ब्ब रक्खा जाता है और स्वर्गीय भोजन थम जाता है १०—१२ एक दूत यशूअ पर प्रगट होता है १३—१५ ।

१ और ऐसा हुआ कि जब अमूरानियों के सारे राजाओं ने जो अर्दन के इस पार पश्चिम दिशा में थे और किनानियों के

समस्त राजाओं ने जो समुद्र के तीर पर थे सुना कि परमेश्वर ने इसराईल के संतानों के आगे अर्दन के पानियों को सुखा दिया यहां लों कि वे पार उतरगये तो उनके मन घट गये
२ और इसराईल के कारण उनमें प्राण नरहा। उस समय परमेश्वर ने यशूअ को कहा कि चोखी छूरी बना और
३ इसराईल के संतानों का ख़तनः फेर कर। और यशूअ ने चोखी छूरियां बनाईं और खलड़ियों के टीले पर इसराईल के संतानों
४ का ख़तनः किया। और यशूअ ने जो ख़तनः किया उसका कारण यह है कि सारे लोग जो मिसर से निकल आये थे
५ अर्थात् समस्त योद्धा पुरुष अरण्य के मार्ग में मरगये। सो सब लोग जो बाहर आये ख़तनः कियेगये पर वे सब जो मिसर से निकलने के पीछे अरण्य के मार्ग में उत्पन्न ऊए थे उनका
६ ख़तनः नऊआ था। इसलिये कि इसराईल के संतान चालीस बरस अरण्य में फिरते रहे यहां लों कि सारे योद्धा जो मिसर से बाहर आये नष्ट ऊए क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के शब्द को नमाना जिनसे परमेश्वर ने किरिया खाई थी कि मैं तुम्हें वुह देश न दिखलाओंगा जिसके कारण मैं ने तुम्हारे पितरों से किरियाखाके कहा कि मैं तुम्हें वुह देश देओंगा जिसमें दूध और
७ मधु बहता है। और उनके संतानों ने जिन्हें उसने उनकी संती खड़ाकिया यशूअ ने उनका ख़तनः किया क्योंकि वे अख़तनः थे
८ इस कारण कि उन्हों ने मार्ग में ख़तनः नकरवाया। और ऐसा ऊआ कि जब वे ख़तनः करवाचुके तब वे छावनी में अपने अपने
९ स्थान में रहे जबलों वे चंगेऊए। फिर परमेश्वर ने यशूअ को कहा कि आज के दिन मैं ने मिसर के अपमान को तुमपर से मिटा दिया इसलिये वुह स्थान आज के दिन लों जलजाल
१० कहावता है। सो इसराईल के संतानों ने जलजाल में डेरा किया और उन्हों ने अरीहा के चौगान में मास की चौदहवीं
११ तिथि में सांझ को पारजाने का पर्ब्ब रक्खा। और उन्हों ने

बिहान को उसी दिन पार जाने के पर्ब्ब के पीछे उस देश के पुराने
१२ अन्न अख़मीरी फुलके और भूना खाये। और जब उन्हों ने उस देश
के पुराने अन्न खाये उसी दिन से मन्न बरसना थम गया और
इसराईल के संतानों के लिये मन्न न था और उन्हों ने उसी बरस
१३ किनान के देश की बढ़ती खाई। और ऐसा ऊआ कि जब यशूअ
अरीहा के पास था तो उसने आंख ऊपर किई और देखा कि
उसके साम्ने एक मनुष्य तलवार हाथ में खींचेऊए खड़ा है तब
यशूअ उस पास गया और उसे कहा कि तू हमारी ओर अथवा
१४ हमारे शत्रुन की ओर है। वुह बोला नहीं परंतु मैं अभी
परमेश्वर की सेना का अध्यक्ष होके आया हों तब यशूअ भूमि पर
औंधा गिरा और दंडवत किई और उसे कहा कि मेरे प्रभु अपने
१५ सेवक को क्या आज्ञा करता है। तब परमेश्वर की सेना के अध्यक्ष
ने यशूअ को कहा कि अपने पांव से जूता उतार क्योंकि यह स्थान
१६ जहां तू खड़ा है पवित्र है। और यशूअ ने ऐसा ही किया।

६ छठवां पर्ब्ब ।

अरीहू बंद किया जाता है और परमेश्वर उसे घेरने को उपदेश करता है १—११ नगर की चारों ओर सेना फिरा करती हैं नगर स्रापित है और भीतें गिर पड़ती हैं १२—२१ राहाब बचाई जाती है २२—२५ अरीहू के बनाने वाले पर स्राप होता है २६—२७ ।

१ अब इसराईल के संतानों के कारण अरीहा बंद ऊआ और
बंद किया गया कोई बाहर न जाता था न भीतर आता था।
२ और परमेश्वर ने यशूअ को कहा कि देख मैं ने अरीहा को
और उसके राजा और वहां के महाबीरों को तेरे बश में कर
३ दिया। सो समस्त योद्धा लोग नगर को घेर लेओ और एक
बार उसकी चारों ओर फिरो इस रीति से छः दिन लों

४ कीजियो। और सात याजक मंजूषा के आगे सात नरसिंगे उठावें और तुम सातवे दिन सात बार नगर की चारों ओर
५ फिरो और याजक नरसिंगे फूंकें। और यों होगा कि जब वे देर लों नरसिंगे फूंकेंगे और जब तुम नरसिंगे का शब्द सुनो तो समस्त लोग महा शब्द से ललकारें और नगर की भीत नीचे से गिरजायेंगी और लोग ऊपर चढ़जावें हर एक जन अपने
६ अपने आगे। तब नून के बेटे यशूअ ने याजकों को बुलाया और उन्हें कहा कि साक्षी की मंजूषा उठाओ और सात याजक सात नरसिंगे परमेश्वर की मंजूषा के आगे लियेहुए चलें।
७ तब उसने लोगों को कहा कि जाओ नगर को घेरो और जो हथियारबंद हैं सो परमेश्वर की मंजूषा के आगे आगे चलें।
८ और ऐसा हुआ कि जब यशूअ ने लोगों से यह कहा तो सात याजक सात नरसिंगे लेके परमेश्वर के आगे आगे चले और उन्हों ने नरसिंगे फूंके और परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा
९ उनके पीछे पीछे गई। और हथियारबंद लोग उन याजकों के जो नरसिंगे फूंकते थे आगे आगे चले और जुटोहुई सेना मंजूषा के पीछे पीछे जाती थी नरसिंगे फूंकतेहुए बढ़तेगये।
१० और यशूअ ने लोगों को आज्ञा करके कहा कि तुम मतललकारियो और न अपना शब्द सुनाइयो और तुम्हारे मुंहसे कुछ बात ननिकले जबलों मैं तुम्हें ललकारने को कहों तब
११ ललकारियो। सो परमेश्वर की मंजूषा नगर की चारों ओर एक बार फिर आई और वे छावनी में आये और वहां
१२ ठहरगये। फिर बिहान को यशूअ उठा और याजकों ने
१३ परमेश्वर की मंजूषा को उठालिया। और सात याजक सात नरसिंगे लेके परमेश्वर की मंजूषा के आगे आगे नरसिंगे फूंकते चलेजातेथे और वे जो हथियारबंद थे उनके आगे आगे हो लिये और वे जो पीछे थे परमेश्वर की मंजूषा के पीछे हुए और
१४ नरसिंगे फूंकते जातेथे। सो दूसरे दिन भी वे एक बार नगर

की चारों ओर फिरे और छावनी में फिर आये ऐसाही उन्हों
१५ ने छः दिन लों किया। और सातवें दिन यों हुआ कि वे बिहान
को पौ फटते भोर को उठे और उसी भांति से नगर की चारों
ओर सात बार फिरे केवल उसी दिन वे सात बार नगर की
१६ चारों ओर फिरे। सो सातवीं फेरी में ऐसा हुआ कि जब
याजकों ने नरसिंगे फूंके तब यशूअ ने लोगों को कहा कि
१७ ललकारो क्योंकि परमेश्वर ने नगर तुम्हें दिया। और
नगर और सब जो उसमें हैं परमेश्वर के लिये स्रापित होंगे
केवल राहाब गणिका उनसब समेत जो उसके साथ
उसके घरमें हैं जीती बचेगी इसलिये कि उसने उन अगुओं
१८ को जो हमने भेजेथे छिपाया। परंतु तुम जो हो अपने को
स्रापित बस्तों से अलग रखियो ऐसा नहोवे कि तुम स्रापित
बस्तु लेके स्रापित होजाओ और इसराईल की छावनी को
१९ स्रापित करके उसे दुःखदेओ। परंतु सब चांदी सोना और
लोहे पीतल के पात्र परमेश्वर के लिये पवित्र हैं वे परमेश्वर के
२० भंडार में पहुंचाये जायेंगे। सो लोगों ने ललकारा और उन्हों ने
नरसिंगे फूंके और ऐसा हुआ कि जब लोगों ने नरसिंगे का
शब्द सुना और लोगों ने महा शब्द से ललकारा तब भीतें नीचे
से गिरपड़ीं यहां लों कि लोग नगर पर चढ़गये हर एक
२१ मनुष्य अपने अपने आगे और नगर को लेलिया। और उन्हों
ने उन सबको जो नगर में थे क्या पुरुष क्या स्त्री क्या युवा क्या
बृद्ध क्या गाय बैल क्या भेड़ गदहे एक बार तलवार की धार से
२२ मार डाला। परंतु यशूअ ने उन दो मनुष्यों को जो भेद के
लिये उसदेश में गयेथे कहा कि गणिका के घर जाओ और
वहां से उस स्त्री को और सब जो उसका हो जैसे तुम ने उस्से
२३ किरिया खाई थी निकाल लाओ। तब वे दोनों तरुण भेदिये
चलेगये और राहाब को उसके पिता और उसकी माता
और उसके भाइयों और सब जो उसका था और उसके

समस्त घराने समेत निकाल लाये और उन्हें इसराईल के संतानों
२४ की छावनी के बाहर रक्खा। फिर उन्हों ने उस नगर को और
सब जो उसमें थे आग से फूंक दिया परंतु चांदी और सोना
और पीतल और लोहे के पात्र परमेश्वर के घरके भंडार में
२५ पज्जंचाये। और यशूअ ने राहाब गणिका को और उसके पिता
के घराने को और सब जो उसका था बचाया और उसका निवास
आज लों इसराईल के संतानों में है इसकारण कि उसने उन
भेदियों को जिन्हें यशूअ ने अरीहा को भेजा था छिपाया था।
२६ और यशूअ ने उस समय किरिया खाई और कहा कि जो मनुष्य
उठे और अरीहा के नगर को फिर बनावे वुह परमेश्वर के आगे
स्रापित होगा और अपने पहिलौंठे पर उसकी नेंव डालेगा और
२७ अपने छोटके पर उसके फाटक को खड़ाकरेगा। सो परमेश्वर
यशूअ के साथ था और समस्त देश में उसकी कीर्त्ति फैली।

७ सातवां पर्ब्ब ।

इसराईली अई के आगे मारे जाते हैं १—५ यशूअ
बिलाप करता है ६—९ ईश्वर उसे सिखाता है
१०—१५ चिट्ठी के डालने से आकान पकड़ा जाता
है १६—१८ वुह पाप को मान लेता है १९—२१
वुह और उसका घराना अकूर की तराई में मारा
जाताहै २२—२६ ।

१ परंतु इसराईल के संतानों ने स्रापित बस्तु के बिषय में अपराध
किया क्योंकि यहूदा की गोष्ठी का जमरी का पुत्र करमी के
पुत्र आकान ने स्रापित बस्तु में से लिई और परमेश्वर का कोप
२ इसराईल के संतानों पर भड़का। तब यशूअ ने अरीहा से
अई में जो बैतआवन के लग बैतईल की पूर्ब्ब ओर है लोगों
को भेजा और उन्हें कहिके बोला कि जाओ और देश को
३ देखआओ सो वे गये और अई को देख आये। और वे

यशूअ़ पास फिर आये और उसे कहा कि समस्त लोग न चढ़ें केवल दो अथवा तीन सहस्र जनके लगभग जावें और अई को मारें
४ और सब लोगों को परिश्रम न दीजिये क्योंकि वे थोड़े हैं। सो लोगों में से तीन सहस्र के लगभग चढ़गये और अई के लोगों
५ के आगे से भागे। और अई के लोगों ने उनमें से छत्तीस मनुष्य मार लिये क्योंकि वे उन्हें फाटक के आगे से लेके शबरीम लों रगेदे आये और उन्हों ने उतरके उन्हें मारा इस कारण
६ लोगों के मन घट गये और पानी की नाईं होगये। तब यशूअ़ और इसराईल के प्राचीनों ने अपने कपड़े फाड़े और परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा के आगे सांझ लों औंधे पड़ेरहे
७ और अपने सिरों पर धूल उड़ाई। और यशूअ़ बोला कि हाय हे प्रभु परमेश्वर तू इनलोगों को किस कारण अर्दन पार लाया कि हमें नाश करने के लिये अमूरियों के हाथ में सौंप देवे हाय कि
८ हम संतोष करते और अर्दन के उसी पार रहते। हे परमेश्वर जब इसराईल अपने शत्रुन के आगे पीठ फेरते हैं तब मैं क्या
९ कहों। क्योंकि किनानी और देश के समस्त बासी सुनेंगे और हमें घेर लेंगे और हमारा नाम पृथिवी पर से मिटा डालेंगे
१० और तू अपने महत नाम के लिये क्या करेगा। तब परमेश्वर
११ ने यशूअ़ को कहा कि उठ तू किस लिये औंधा पड़ाहै। इसराईल ने पाप कियाहै और उन्हों ने उस बाचा से जो मैं ने उनसे बांधी अपराध किया क्योंकि उन्हों ने स्रापित बस्तु में से भी कुछ लिया और चोरी भी किई और छल भी किया और अपनी
१२ सामग्रीमें भी रखलिया। इसराईल के संतान अपने शत्रुन के आगे ठहर नसके और उनके आगे पीठ फेरी क्योंकि वे स्रापित ऊए सो अब मैं आगे को तुम्हारे साथ नहोंगा जब
१३ लों तू स्रापित को अपने में से नाश नकरे। उठ लोगों को शुद्ध कर और कह कि अपने को कलके लिये शुद्ध करो क्योंकि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि हे इसराईल

तेरे मध्य स्रापित बस्तु है तू अपने शत्रुन के सान्ने ठहर नहीं सक्ता जबलों स्रापित बस्तु को अपने में से दूर नकरेगा।
१४ सो तुम बिहान को अपनी अपनी गोष्ठी के समान पऊंचाये जाओगे और ऐसा होगा कि जिस गोष्ठी को परमेश्वर पकड़ेगा सो अपने घराने समेत आवे और जिस घराने को परमेश्वर पकड़ेगा वुह अपने परिवार समेत आवे और जिस
१५ घराने को परमेश्वर पकड़ेगा सो एक एक जन आवे। और ऐसा होगा कि जो किसी स्रापित बस्तु के साथ पकड़ाजायगा सो अपनी सामग्री समेत आग से जलादियाजायगा इसलिये कि उसने परमेश्वर की बाचा का अपराध किया और इसकारण कि उसने इसराईल के संतानों में दुष्टता किई।
१६ तब यशूअ बिहान को तड़के उठा और इसराईल को उनकी गोष्ठियों के समान लाया और यहूदा की गोष्ठी पकड़ीगई।
१७ और यहूदा के घरानों को समीप लाया और ज़ारह का घराना पकड़ागया और ज़ारह के घराने के एक एक मनुष्य को आगे
१८ लाया और ज़बदी पकड़ा गया। और वुह उसके घराने का एक एक जन लाया ज़ारह का बेटा ज़बदी का बेटा करमी का बेटा यहूदा की गोष्ठी का आखान पकड़ा गया।
१९ तब यशूअ ने आखान को कहा कि हे मेरे बेटे अब परमेश्वर इसराईल के ईश्वर की महिमा कर और उसके आगे मानले
२० और मुझे कह कि तूने क्या किया है मुझे मत छिपा। तब आकान ने यशूअ को उत्तर दिया और कहा कि निश्चय मैं ने परमेश्वर इसराईल के ईश्वर का पाप किया है और मैं ने ऐसा
२१ ऐसा किया है। जब मैं ने बबलूनी सुंदर बस्त्र और दो सहस्र शेक़ल चांदी और पचास शेक़ल के तोल की सोने की गुल्ली लूट के धन में से देखा तो मैं ने लालच किई और उन्हें लेलिया और देख वे मेरे तंबू के बीच भूमि में गड़े हैं और
२२ चांदी उसके तले। तब यशूअ ने दूत भेजे और वे तंबू को

दौड़े और देखा कि उसके तंबू में गड़ा था और चांदी
२३ उसके तले। और वे उन्हें तंबू में से निकाल के यशूअ और समस्त इसराईल के संतान के आगे लाये और उन्हें परमेश्वर
२४ के आगे डाल दिया। फिर यशूअ और सारे इसराईल ने ज़ारह के बेटे आखान को और चांदी और वस्त्र और सोने की गुल्ली और उसके बेटे बेटियां और उसके गोरू और गदहे और भेड़ और उसके तंबू और सब जो उसका था लिया
२५ और आख़ूर की तराई में लाये। और यशूअ ने कहा कि तूने हमें क्यों दुःख दिया परमेश्वर आज तुझे दुःख देगा तब समस्त इसराईल ने उसपर पत्थरवाह किया और उसके पीछे
२६ उन्हें आग से जलादिया। और उन्हों ने उसपर पत्थरों का ढेर किया जो आजलों है तब परमेश्वर अपने क्रोध की जलजलाहट से फिरगया इसलिये उस स्थान का नाम आजलों दुःख की तराई है।

८ आठवां पर्ब्ब।

परमेश्वर यशूअ को उभाड़ता है १—२ नगर के लेने की जुगत ३—२८ वहां का राजा टांगा जाता है २९ यशूअ बेदी बनाता है ३०—३१ व्यवस्था को पत्थरों में खोदता है ३२—३५।

१ तब परमेश्वर ने यशूअ को कहा कि मत डर और भय मत कर सारे योद्धाओं को साथ ले और उठ और अई पर चढ़जा देख मैं ने अई के राजा और उसके लोग और उसके नगर और
२ उसके देश को तेरे हाथ में करदिया है। तू अई से और उसके राजा से वही कीजियो जो तूने अरीहा से और उसके राजा से किया केवल वहां का धन और ढोर तुम अपने लूट
३ के लिये लीजियो नगर के पीछे से ढूके में बैठियो। सो यशूअ और सारे योद्धा उठे जिसतें अई पर चढें और यशूअ ने तीस

४ सहस्र महावीर चुनलिये और रात को उन्हें भेजदिया। और उन्हें आज्ञा करके कहा कि देखो तुम नगर के पिछवाड़े ढूके में बैठियो नगर से बज्जत दूर मत जाइयो परंतु सब सैस
५ होरहो। और मैं अपने संगी लोगों के नगर की ओर बढ़ोंगा और ऐसा होगा कि जब वे हमारा साम्ना करेंगे तब हम
६ आगे की नाईं उनके आगे से भागेंगे। क्योंकि वे हमारा पीछा करेंगे यहांलों कि हम उन्हें नगर से खैंचलेजावें क्योंकि वे कहेंगे कि वे आगे की नाईं हमारे आगे से भागते हैं इसलिये
७ हम उनके आगे से भागेंगे। तब तुम ढूके से उठियो और नगर को लेलीजियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर उसे तुम्हारे
८ हाथ में सैांप देगा। और यों होगा कि जब तुम नगर को लेओगे तब नगर में आग लगाइयो और परमेश्वर की आज्ञा
९ के समान कीजियो देखो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई है। सो यशूअ ने उन्हें भेजदिया वे ढूके में बैठनेगये और बैतईल और अई के मध्यमें अई की पश्चिम ओर रहे परंतु यशूअ उसी रात
१० लोगों में रहा। और यशूअ ने बिहानको उठके लोगों को गिना और वुह इसराईल के प्राचीन लोगों के आगे होके
११ अई पर चढ़गया। और समस्त योद्धा जो उसके साथ थे चढ़े और पास आये और नगर के आगे पज्जंचे और अई की उत्तर अलंग डेरे किये और उनमें और अई में एक नीचाई
१२ थी। तब उसने पांच सहस्र मनुष्य के लगभग लिये और उन्हें बैतईल और अई के मध्य में नगर की पश्चिम अलंग ढूके
१३ में बैठाया। और जब उन्हों ने सारे लोगों को अर्थात् समस्त सेना को जो नगर के उत्तर थी और अपने ढूके के लोगों को नगर की पश्चिम ओर ढूके में बैठलाया तब यशूअ उसी रात उस
१४ नीचाई के मध्य में गया। और ऐसा ज्ञआ कि जब अई के राजा ने देखा तब उन्हों ने उतावली किई और तड़के उठे और नगर के मनुष्य राजा और उसके सारे लोग ठहराये ज्जए

समय में चौगान के आगे इसराईल से लड़ाई करने के लिये निकले परंतु उसने न समुझा कि नगर के पीछे उसके विरोध
१५ में लोग ढूके में लगे हैं। तब यशूअ और सारे इसराईल ने ऐसा किया जैसा कि उनके आगे मारेगये और अरण्य की
१६ ओर भागे। और अई के समस्त लोग उनका पीछा करने के लिये एकट्ठे बुलायेगये सो उन्होंने यशूअ का पीछा किया और
१७ नगर से खींचेगये। उस समय में अई में अथवा बैतईल में कोई पुरुष नछूटा जिसने इसराईल का पीछा न किया और उन्हों ने नगर को खुला छोड़ा और इसराईल का पीछा किया।
१८ तब परमेश्वरने यशूअ से कहा कि अपने हाथ में के भाले को अई की ओर बढ़ा क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में करदूंगा सो यशूअ ने अपने हाथ के भाले को उस नगर की ओर बढ़ाया।
१९ उसके हाथ फैलातेही ढूकिये अपने स्थान से तत्काल उठे और नगर में पैठगये और उसे लेलिया और चटक से नगर में
२० आग लगाई। और जब अई के लोगों ने अपने पीछे देखा तो क्या देखते हैं कि नगर का धूआं स्वर्ग लों उठ रहा है और उन्हें इधर उधर भागने की सामर्थ्य नरही और जो अरण्य
२१ की ओर भागगये थे खेदवैयों पर उलटे फिरे। और जब यशूअ और सारे इसराईलने देखा कि ढूकियोंने नगर लेलिया और नगर से धूआं उठ रहा है तब वे उलटे फिरे और अई
२२ के लोगों को घात किया। और वे नगर में से उन पर निकल आये और इसराईल के मध्य में पड़गये कुछ इधर कुछ उधर और उन्हों ने उन्हें ऐसा मारा कि उनमें से एक को न
२३ छोड़ा न भागने दिया। और उन्हों ने अई के राजा को
२४ जीता पकड़लिया और उसे यशूअ पास लाये। और यों हुआ कि जब इसराईल खेत में उस अरण्य में जहां उनका पीछा किया अई के सारे निवासियों को मारचुके और जब वे सब खड्ग की धार पर पड़गये और खपगये तब सारे इसराईली

२५ अई को फिरे और उसे खड्ग की धार से मारा। और यों हुआ कि जो उस दिन मारेगये पुरुष और स्त्री बारह सहस्र थे
२६ अर्थात् अई के सब लोग। क्योंकि यहूश्र ने भाले के बढ़ाने से अपने हाथ को नखींचा जबलों अई के सारे निवासियों को
२७ सर्वथा नाश नकियाथा। परमेश्वर के वचन के समान जो उसने यहूश्र को आज्ञा किई थी इसराईल ने उस नगर के
२८ केवल ढोर और लूट को आपही लिया। और यहूश्र ने अई को जलाके सदा के लिये ढेर करदिया सो वुह आजलों
२९ उजाड़ है। और उसने अई के राजा को फांसी देके सांझ लों पेड़ पर लटका रक्खा और ज्योंही सूर्य अस्त हुआ यहूश्र ने आज्ञा किई कि उसकी लोथ को पेड़ से उतारें और नगर के फाटक के पैठ में फेंक देवें और उस पर पत्थरों की बड़ी ढेर
३० करें सो आजलों है।　　तब यहूश्र ने ईबाल के पहाड़ पर
३१ परमेश्वर इसराईल के ईश्वर के लिये एक बेदी बनाई। जैसा परमेश्वर के सेवक मूसा ने इसराईल के संतान को कहा था जैसा मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखाहुआ है कि ढोकों की एक बेदी जिस में टांकी न लगाईगईहो और उन्हों ने परमेश्वर के लिये उसपर होम की भेंटें और कुशल के बलि चढ़ाये।
३२ और उसने वहां उन पत्थरों पर उस व्यवस्था को खोदा जो मूसा ने इसराईल के संतानों के आगे लिखी थी।
३३ और समस्त इसराईल और उनके प्राचीन और अध्यक्ष और उनके न्यायी लावी याजकों के आगे जो परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा को उठायाकरतेथे मंजूषा के इधर उधर खड़े हुए और उसी रीति से परदेशी और जो उनमें उत्पन्न हुएथे आधे गरज़ीम के पहाड़ पर और आधे ईबाल के पहाड़ पर जैसा कि परमेश्वर के सेवक मूसा ने पहिले कहाथा कि वे
३४ इसराईल के संतानों को आशीष देवें। और उसने व्यवस्था की पुस्तक के समस्त लिखेहुए के समान आशीष और साप को व्यवस्था

३५ के समस्त वचन को पढ़ा। मूसा की समस्त आज्ञा के समान एक बात भी न रही जिसे यहूशूअ़ ने इसराईल की सारी मंडली और स्त्रियों और बालकों और उन परदेशियों के आगे जो उनमें चलतेथे न पढ़ा।

९ नवां पर्ब्ब।

राजा लोग इसराईल के विरोध में एका करते हैं १—२ गबियूनी छल से इसराईलियों से मेल करते हैं ३—१५ उसी कारण उनको बंधुआई की आज्ञा होती है १६—२७।

१ यों हुआ कि जब सारे राजाओंने जो अर्दन के इसी पार पहाड़ों में और तराइयों में और महासागर के समस्त तीरों में जो लबनान के आगे हैं हित्ती और अमूरी और किनानी २ और फरज़ी और हव्वी और जबूसीने सुना। वे एकमता से ३ यहूशूअ़ से संग्राम करनेके लिये एकट्ठे हुए। और जो कुछ यहूशूअ़ने अरीहा और अई से कियाथा जब गबियून के ४ बासियोंने सुना। तब वे कपट से दूतका भेष बनाके पुराने पुराने बोरे और पुराने और टूटे और जोड़ेहुए मदिरा के ५ कुप्पे अपने गदहों पर लादे। और पुरानी और जोड़ीहुई जूती पांओं में और अपने पर पुराने बस्त्र और उनके भोजन ६ की रोटी सूखी और फफूंदी लगीहुई। वे यहूशूअ़ पास जलजाल की छावनी में गये और उसे और इसराईल के लोगोंसे कहा कि हम दूरदेश से आये हैं सो अब तुम हमसे बाचा बांधो। ७ तब इसराईल के लोगोंने हव्वियों को कहा कि कदाचित् तुम हमों में बास करतेहो फेर हम तुमसे क्योंकर मेल करें। ८ उन्होंने यहूशूअ़ से कहा कि हम तेरे सेवक हैं तब उसने उनसे पूछा ९ कि तुम कौन और कहां से आयेहो। उन्होंने उसे कहा कि तेरे सेवक परमेश्वर तेरे ईश्वर के नाम के लिये अति दूरदेशसे आये

हैं क्योंकि हमने उसकी कीर्त्ति सुनी है और सब जा उसने
१० मिसर में किये। और सब जो उसने अमूरियों के दो राजाओं
से जो अर्दन के उस पार अर्थात् हशबून के राजा सीहून और
११ बाशान के राजा ऊज से जो अश्तरूस में था किये। इस लिये
हमारे प्राचीन और हमारे देश के समस्त वासी हमसे कहि के
बोले कि तुम यात्रा का भोजन अपने साथ लेओ और उन से
भेंटकरो और उन्हें कहो कि हम तुम्हारे सेवक हैं इस लिये
१२ तुम हम से मेल करो। सो हमने जिस दिन तेरे पास आने को
अपने घर छोड़े हमारे भोजन के लिये रोटी टटकी थीं परंतु
१३ अब देख सूख गईं और फफूंदी लगगई। पर जब हम ने
इन्हें भरा था तब ये मदिरा के कुप्पे नये थे और हमारे ये
१४ वस्त्र और जूते दूर की यात्रा के कारण से पुराने होगये। तब
उन्होंने उनके भोजन के कारण उन्हें ग्रहण किया और परमेश्वर
१५ से न बूझा। और यशूअने उन से मिलाप किया और
उन्हें जीते छोड़ने के लिये उन से बाचा बांधी और मंडली के
१६ अध्यक्षों ने उन से किरियाखाई। और उन से बाचा
बांधने के तीन दिन पीछे यों हुआ कि उन्होंने सुना कि व
१७ हमारे परोसी हैं और हमें रहते हैं। और इसराईल के
संतान यात्रा कर के तीसरे दिन उनके नगर में पहुंचे जिनके
नाम गबियून और कफ़ीरा और बीरूस और करियासयारीम
१८ थे। तब इसराईल के संतानों ने उन्हें नमारा इसलिये कि
मंडली के अध्यक्षोंने उन से परमेश्वर इसराईल के ईश्वर की
किरिया खाईथी सो सारी मंडली अध्यक्षों से कुड़कुड़ाई।
१९ परंतु सारे अध्यक्षोंने समस्त मंडली को कहा कि हमने उन से
परमेश्वर इसराईल के ईश्वर की किरियाखाई है सो इस लिये
२० हम उन्हें छू नहीं सकते। हम उन से यह करके उन्हें जीता
छोड़ेंगे ऐसा नहो कि उस किरिया के कारण जो हमने उन
२१ से खाई है हम पर कोप पड़े। और अध्यक्षोंने उन्हें कहा कि

उन्हें जीता छोड़ा परंतु वे सारी मंडली के लिये लकड़हारे और पनिहारे होवें जैसा कि अध्यक्षोंने उन से प्रणकिया था।
२२ तब यशूअ्ने उन्हें बुलाया और कहा कि तुमने हम से यह कहिके क्यों छल किया कि हम तुम्हों से दूर हैं जब कि तुम हम्में
२३ रहते हो। सो इसलिये तुम स्रापित ऊए और तुम्में से कोई बंधूआई से छुट्टी न पावेगा जो मेरे ईश्वर के घर के लिये
२४ लकड़हार और पनिहार नहो। उन्होंने यशूअ् को उत्तर दिया और कहा कि तेरे सेवकों से निश्चय कहागयाथा कि किस रीति से परमेश्वर तेरे ईश्वरने अपने दास मूसा को आज्ञा किई कि मैं सारा देश तुम्हें देओंगा और उस देश के सारे बासियों को तुम्हारे आगे नाश करोंगा इसलिये हमने तुम्हारे कारण अपने प्राण से
२५ डर के यह काम किया। और अब देख हम तेरे बशमें हैं जो कुछ आपको हमारे लिये भला और ठीक जानपड़े सो करिये।
२६ और उसने उनसे वैसाही किया और इसराईल के संतान के
२७ हाथ से उन्हें बचाया कि उन्हें मार नडालें। और यशूअ् ने उन्हें उसी दिन मंडली के लिये और परमेश्वर की बेदी के लिये उस स्थान से जिसे वुह चुनेगा लकड़हार और पनिहार ठहराये।

१० दसवां पर्ब्ब ।

पांच राजा गबियून से लड़ते हैं १—५ यशूअ् उन्हें बचाता है ६—७ यशूअ् राजाओं को मारलेता है और चंद्रमा और सूर्य्य उसके बचन से थम जाते हैं ८—१४ पांच राजा खोह में जा छिपते हैं १५—२० वे निकाले जाके फांसी दिये जाते हैं २१—२७ यशूअ् और सात राजा पर जय पाता है और जलजाल को फिर आता है २८—४३।

१ और जब यिरोशलीम के राजा अदूनीसिदक़ ने सुना कि यशूअ् ने किस रीति से अई को लेलिया और उसे सर्बथा नाश किया

जैसा उसने अरीहा और उसके राजा से कियाथा वैसाही उसने अई और उसके राजा से किया और किस रीति से गबियून के बासियों ने इसराईल से मिलाप किया और उनमें
२ रहे। तब वुह निपट डरगया इस कारण कि गबियून एक बड़ा नगर था और राजनगरों के समान था और इस कारण
३ कि वुह अई से भी बड़ाथा और वहां के लोग बली थे। तब यिरोशलीम के राजा अदूनीसिदक़ने हबरून के राजा होहाम और यरमूस के राजा पिराम और लाख़ीश के राजा याफिआ
४ और अगलून के राजा दबर के पास कहलाभेजा। कि मुझ पास चढ़ आओ और मेरी सहाय करो जिसतें हम गबियून को मारें क्योंकि उसने यशूअ और इसराईल के संतानों से मिलाप
५ किया। इसलिये अमूरियों के पांच राजा अर्थात् यिरोशलीम का राजा हबरून का राजा यारमूस का राजा लाख़ीश का राजा अगलून का राजा एकट्ठे होके अपनी अपनी सेनाओं को लेके गबियून के आगे डेरे खड़े किये और उससे लड़ाई किई।
६ तब गबियून के लोगों ने यशूअ के पास जो जलजाल में डेरा कियेथा कहला भेजा कि अपने सेवकों से अपना हाथ मत खींचिये हम पास शीघ्र आइये और हमें बचाइये और हमारी सहाय कीजिये क्योंकि अमूरियों के सारे राजा जो पहाड़ में
७ रहते हैं हमारे विरोध में एकट्ठे हुए हैं। तब यशूअ सारे योद्धाओं को और समस्त महाबीरों को साथ लेके जलजाल से
८ चढ़गया। और परमेश्वर ने यशूअ को कहा कि उनसे मत डर क्योंकि मैं ने उन्हें तेरे बश में करदिया उनमें से एक जन भी
९ तेरे सान्ने ठहर नसकेगा। तब यशूअ जलजाल से उठके रात
१० भर चलागया और अचानक उन पर आपहुंचा। और परमेश्वर ने इसराईल के आगे उन्हें ध्वस्त किया गबियून में बड़ी मार से उन्हें मारा और बैतहूरून को जातेहुए मार्गमें उन्हें
११ रगदा और अज़ीक़ा और मक़ीदा लों उन्हें मारा। और ऐसा

ऊआ कि जब वे इसराईल के साम्ने से भाग निकले और बैतहूरून के उतरने की ओर गये तब परमेश्वर ने अजीका लों स्वर्ग से उन पर बड़े बड़े पत्थर बरसाये और वे मूये और वे जो ओलेसे मारेगयेथे उन से अधिकथे जिन्हें इसराईल के
१२ संतानों ने तलवारसे मारा। जब परमेश्वर ने अमूरियों को इसराईल के संतान के बश में करदिया तब यशूअ ने उसीदिन परमेश्वर को इसराईल के संतान के आगे यों कहा कि हे सूर्य्य गबिऊन पर और हे चंद्रमा तू अजालून की नीचाईमें ठहर जा।
१३ तब सूर्य्य ठहरगया और चंद्रमा स्थिर ऊआ जब लों उन लोगोंने अपने शत्रुन से पलटालिया क्या यशर की पुस्तक में नहीं लिखा है सो सूर्य्य स्वर्ग के मध्यमें ठहररहा और दिन
१४ भर अस्त होने में शीघ्र नकिया। और उस्से आगे पीछे ऐसा दिन कभी नऊआ कि परमेश्वर ने एक पुरुष के शब्द को माना
१५ क्योंकि परमेश्वर ने इसराईल के लिये युद्ध किया। तब यशूअ समस्त इसराईल के संग जलजाल की छावनी को
१६ फिरगया। परंतु पांचो राजा भागे और मक्कीदा की कंदला
१७ में जा छिपे। और यशूअ को संदेश पऊंचा कि पांचो राजा मक्कीदा
१८ की कंदला में छिपेऊए पायेगये। तब यशूअ ने कहा कि बड़े बड़े पत्थल उस कंदला के मुंह पर ढुलकाओ और उस
१९ पर चौकी बैठाओ। और तुम मत ठहरो परंतु अपने शत्रुन का पीछा करो और उनके पछरे ऊओं को मारडालो उनको नगरों में उन्हें पैठने मतदेओ क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने
२० उन्हें तुम्हारे हाथमें कर दियाहै। और ऐसा ऊआ कि जब यशूअ और इसराईल के संतान उन्हें नाश करचुके और बड़ी मारसे उन्हें घातकिया यहां लों कि वे नष्टऊए उनमें के उबरेऊए बाड़े
२१ के नगरों में पैठगये। और सारे लोग मक्कीदा को छावनी में यशूअ पास कुशलसे फिर आये और इसराईल के संतानों
२२ के बिरोध में किसीन चूं न किया। तब यशूअ ने कहा कि

कंदला के मुंह को खोलो और उन पांचो राजाओं को कंदला
२३ से मुझ पास बाहर लाओ। उन्हों ने ऐसाही किया और उन
पांचो राजाओं को अर्थात् यिरोशलीम के राजा को और
हबरून के राजा को और यारमूस के राजा को और लाकीश
के राजा को और अगलून के राजा को कंदला से उस पास
२४ निकाल लाये। और यों ऊआ कि जब वे उन राजाओं को
यशूअ के आगे लाये तब यशूअ ने इसराईल के सारे मनुष्यों को
बुलाया और अपने साथ के योद्धाके प्रधानों को कहा कि आगे
आओ इन राजाओं के गलों पर पांव रक्खो वे पास आये और
२५ उनके गलों पर पांव रक्खे। तब यशूअ ने उन्हें कहा कि डरो मत
और बिस्मित मत हो और प्रबलहोके हियाव करो क्योंकि
परमेश्वर तुम्हारे समस्त शत्रुन से, जिन से लड़ोगे, ऐसाही करेगा।
२६ उसके पीछे यशूअ ने उन्हें मारा और घातकिया और उन्हें पांच
पेड़ पर लटका दिया और वे सांझ लों पेड़ों पर लटके रहे।
२७ और सूर्य अस्त होनेपर यों ऊआ कि उन्हों ने यशूअ की आज्ञा
से उन्हें पेड़ों परसे उतारा और उसी कंदला में जिस में वे
जाछिपेथे डालदिया और कंदला के मुंह पर बड़े बड़े पत्थल
२८ ढुलकाये सो आज के दिन लों हैं। और उसी दिन यशूअ ने
मकीदा को लेलिया और उसे और उसके राजा को और उसमें
के सारे प्राणियों को तलवार की धार से नाशकिया और किसी
को नछोड़ा उसने मकीदा के राजा से वही किया जो उसने
२९ अरीहा के राजा से कियाथा। तब यशूअ सारे इसराईल
३० सहित मकीदा से लबना को गया और लबना से लड़ा। और
परमेश्वर ने उसे भी उसके राजा समेत इसराईल के हाथ में
कर दिया और उसने उसे और उसमें के समस्त प्राणियों को
तलवार की धारसे नाशकिया उसने उसमें एक भी नछोड़ा
परंतु वहां के राजा से उसने वही किया जो अरीहा के राजा
३१ से कियाथा। फिर लबना से यशूअ सारे इसराईल समेत

लाख़ीश को गया और उसके आगे छावनी किई और उस्से
३२ लड़ा। और परमेश्वर ने लाख़ीश को इसराईल के हाथमें
करदिया उसने दूसरे दिन उसे लेलिया और उसे और उसमें
के सारे प्राणियों को तलवार की धार से नाश किया जैसाकि
३३ उसने लबना से कियाथा। तब गजर का राजा होराम लाख़ीश
को सहाय को चढ़ आया पर यशूअ ने उसे और उसके लोगों को
३४ यहां लों मारा कि एक भी नबचा। और यशूअ लाख़ीश से सारे
इसराईल समेत अजलून को गया और उसके साम्ने छावनी
३५ किई और उस्से लड़ा। और उसी दिन उसे लेलिया और
उसे तलवार की धार से मारा और उसमें के समस्त प्राणियों
को सर्बथा नाश किया जैसाकि उसने लाख़ीश से कियाथा।
३६ फिर अजलून से यशूअ सारे इसराईल समेत हबरून को गया
३७ और उस्से लड़ा। और उसे लिया और उसे और उसके
राजा को और उसके समस्त नगरों को और उसमें के समस्त
प्राणियों को तलवार की धारसे मारडाला जैसा उसने अजलून
से कियाथा उसमें एक को भी नछोड़ा परंतु उसे और उसमें
३८ के सारे प्राणियों को सर्बथा नाश किया। यशूअ सारे इसराईल
३९ सहित वहां से दबर को फिरा और उस्से लड़ा। और उसे
और उसके राजा और उसके सारे नगरों को लेलिया और
उन्हें तलवार की धार से मारडाला और उसमें के समस्त
प्राणियों को सर्बथा नाश किया उसने एक को भी नछोड़ा
जैसा उसने हबरून से और लबना से भी किया था वैसाही
४० दबर से और उसके राजा से किया। सो यशूअ ने पहाड़ों
के और दक्षिण की और तराई के और सोतों के देशों को
और उनके राजाओं को मारा उसने एक को नछोड़ा परंतु
समस्त स्वासियों को सर्बथा नाश किया जैसा कि परमेश्वर
४१ इसराईल के ईश्वर ने आज्ञा किईथी। और यशूअ ने क़ादश
बरनीया से लेके ग़ज़ों और जोशन के सारे देश को

४२ गबियून लों मारडाला। और यहूशू ने उन सब राजाओं को और उनके देश को एकही समय में लेलिया इस कारण कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर इसराईल के लिये लड़ा उसके पीछे यहूशू सारे इसराईल सहित जलजाल की छावनी को फिरआया।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

कई राजा मारे जाते हैं १—९ हासूर लिया जाके जलाया जाता है १०—१५ यहूशू समस्त देश को लेलेता है १६—२० अनाकी नाश किये जाते हैं २१—२३ ।

१ और यों हुआ कि जब हाज़ूर के राजा याबीन ने सुना तो उसने मादून के राजा यूबाब और शमरून के राजा और
२ अख़शाफ के राजा को। और उन राजाओं को जो पहाड़ में उत्तर दिशा को और कनीरूस की दक्षिण दिशा के चौगान को
३ और तराई में और दोर के सिवाने पश्चिम में। और पूर्ब्ब और पश्चिम में किनानियों को और अमूरियों और हत्तियों और फ़रज़ियों और यबूसियों को पर्ब्बतों में और हव्वियों को
४ जो हरमून के नीचे मसफ़ा में थे कहला भेजा। तब वे अपनी सब सेना समेत बहुत लोग हां समुद्र के तीर के बालु के समान मंडली में घोड़े और बहुतसे रथों के साथ बाहर निकले।
५ और जब ये समस्त राजा ठहराके एकट्ठे निकले तब उन्हों ने मीरूम के पानियों पर एकट्ठे छावनी किई जिसतें इसराईल
६ से लड़ें। तब परमेश्वर ने यहूशू को कहा कि उनसे मत डर इस कारण कि कल इसी समय उन सभोंको इसराईल के आगे मारके डाल देओंगा तू उनके घोड़ों के पुट्ठे की नस काटना और
७ उनके रथों को आग से जलादेना। सो यहूशू और सारे लड़ाके लोग मीरूम के पानियों पास अचानक उन पर आगिरे।

८ और परमेश्वर ने उन्हें इसराईल के हाथ में सौंपदिया उन्हों ने उन्हें मारा और बड़े सीदून और उद्म जल और पूर्ब में मसफा की नीचाई लों उन्हें रगेदा और यहां लों मारा कि एक
९ भी नबचा। और यशूअ ने परमेश्वर की आज्ञा के समान उनके घोड़ों के पुट्ठे की नस काटी और उनके रथ जलाये।
१० फिर यशूअ उसी समय फिरा और हाज़ूर को लेलिया और उसके राजा को तलवार से मारा क्योंकि अगले समय में
११ हाज़ूर समस्त राज्यों से श्रेष्ठथा। और उन्हों ने समस्त प्राणियों को जो वहां थे तलवार की धार से मार के सर्वथा नाश किया वहां एक भी स्वास धारी नबचा और उसने हाज़ूर को आग
१२ से जलादिया। और यशूअ ने उन राजाओं के सारे नगरों को और उन नगरों के सारे राजाओं को लिया और उन्हें तलवार से मार के सर्वथा नाश किया जैसाकि परमेश्वर के सेवक
१३ मूसा ने आज्ञा किई थी। परंतु हाज़ूर को छोड़ उन नगरों को
१४ जो अपने टीलों पर थे इसराईल के संतान ने नजलाया। और इन नगरों की सारी लूट और ढोर इसराईल के संतान ने अपने लिये रक्खा परंतु हर एक जन को तलवार की धार से मारडाला यहां लों कि उन्हें नाश करदिया कि एक को भी स्वास
१५ लेने को नछोड़ा। जैसाकि परमेश्वर ने अपने दास मूसा को आज्ञा किई थी वैसाही मूसा ने यशूअ को आज्ञा किई और यशूअ ने वैसाही किया उसने उन बस्तुन में जो परमेश्वर ने मूसा
१६ को आज्ञा किई थी एक को भी न टाला छोड़ा। सो यशूअ ने उससारे देश और पर्ब्बतों को और दक्षिण के समस्त देश और जोशन की समस्त भूमि और तराई और चौगान और
१७ इसराईल का पहाड़ और उसकी तराई को लिया। और चिकने पहाड़ से जो सईर की ओर चढ़ता है बाअलजाद लों जो लबनान की तराई में हरमून पहाड़ के नीचे है लेलिया और उसने उनके सारे राजाओं को लिया और उन्हें मारा और नाश किया।

१८ और यशूअ उन समस्त राजाओं से बहुत दिन लों लड़ा किया ।
१९ हव्वियों को छोड़ जो गबियून के बासी थे कोई नगर नथा जिसने इसराईल के संतान से मिलाप किया हो परंतु सब को उन्हों ने
२० लड़ाई में लिया । क्योंकि यह परमेश्वर की ओर से था कि उनके मन को कठोर करे जिसतें वे इसराईल के संतान से लड़ें और जिसतें वुह उन्हें सर्वथा नाश करे और जिसतें उन पर दया न होवे परंतु जिसतें वुह उन्हें नाश करे जैसा कि परमेश्वर
२१ ने मूसा को आज्ञा किई थी । और उसी समय यशूअ ने अनाकियों को पहाड़ों से नाश किया और हबरून से और दबर से और अनआब से यहूदा के सारे पहाड़ों से और इसराईल के सारे पहाड़ों से यशूअ ने उन्हें उनके नगरों सहित
२२ सर्वथा नाश किया । सो अनाकियों में से इसराईल के संतानों के देश में कोई न बचा परंतु केवल ग़ज़े और गास और अशदूद में
२३ कुछ बचे थे । सो यशूअ ने उस समस्त देश को लिया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को कहा था और यशूअ ने उसे इसराईल को उनके भागों के और उनकी गोष्ठियों के समान अधिकार में दिया और देश ने युद्ध से चैन पाया ।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

दो राजा के देश लेके मूसा बांट देता है १—६
अर्दन के उस पार यशूअ एकतीस राजाओं को मार लेता है ७—२४ ।

१ उस देश के राजा जिन्हें इसराईल के संतानों ने मारडाला और उनका देश अर्दन के उस पार उदय की ओर अरनून की नदी से लेके हरमून पहाड़ लों और पूर्ब्ब दिशा के सारे चौगान
२ अधिकार में लिया ये हैं । अरूईर से लेके, जो अरनून की नदी के तीर पर है और नदी के मध्य से और आधे जलआद से
३ यबुक़ की नदी लों जो अमून के संतान का सिवाना है । और

चौगान से पूर्ब्ब ओर कनेरुस के सागर लों और चौगान के सागर लों अर्थात् पूर्ब के खारी सागर लों उस मार्ग से जो बैतजशीमूस को जाता है और दक्षिण से जो पसगा के सोतों के तले है हश्बून का बासी अमूरियों का राजा सैहून प्रभुता
४ करता था। और बाशान के राजा ऊज के सिवाने जो दानव के उबरे ऊए में थे जो अश्तरूस और इदरी में रहताथा।
५ और हरमून पहाड़ में और सलका में और सारे बाशान में जशूरियों और माकियों का सिवाना और आधा जलआद
६ जो हश्बून के राजा सैहून का सिवाना था राज्य किया। उन को परमेश्वर के सेवक मूसा और इसराईल के संतानों ने मारा और परमेश्वर के सेवक मूसा ने राऊबीनियों और जादियों और मनस्सा की आधी गोष्ठी को उसे अधिकार में दिया।
७ और उस देश के राजा ये हैं, जिन्हें यशूअ और इसराईल के संतानों ने अर्दन के इस पार पश्चिम दिशा में मारा, बालगाद से लेके लबनान की तराई में चिकना पहाड़ लों जो साईर को जाता है जिसे यशूअ ने इसराईल की गोष्ठियों को उनके
८ भागों के समान बांटा। हत्ती और अमूरी और किनानी और फरज्जी और हव्वी और यबूसी जो पहाड़ों में और तराइयों में और चौगानों में और सोतों में और अरण्यों में और दक्षिण
९ देश में रहते थे। अरीहा का राजा एक, अई का राजा जो
१० बैतईल के लग है एक। यिरोशलीम का राजा एक, हबरून का
११ राजा एक। यारमूस का राजा एक, लाख़ीश का राजा एक।
१२।१३ अजलून का राजा एक, गज़र का राजा एक। दीबर का राजा
१४ एक, गदर का राजा एक। ऊरमा का राजा एक, अराद का
१५ राजा एक। लबनाह का राजा एक, अदुल्लम का राजा एक।
१६।१७ मक़ीदा का राजा एक, बैतईल का राजा एक। टप्पुआ का
१८ राजा एक, हफीर का राजा एक। अफ़ीक का राजा एक, लशारून
१९ का राजा एक। मदून का राजा एक, हाज़ूर का राजा एक।

२० शमरूनमीरून का राजा एक, अख़शाफ़ का राजा एक।
२१।२२ तनाख़ का राजा एक, मगिद्दू का राजा एक। क़ादश का
२३ राजा एक, यक्नियम करमिल का राजा एक। दोर के राजा
दोर के सिवाने में एक, जातिगणों का राजा जलजाल में का एक।
२४ तरसा का राजा एक, ये सब एकतीस राजा थे।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

देश के सिवाने अबलों बश में नहीं ऊए १—७
अढ़ाई गोष्ठियों के अधिकार ८—२१ बलआम
मारा जाता है २२—जाद के और मनस्सा के अधिकार
के सिवाने २३—३३ ।

१ अब यशूञ्र वृद्ध होके पुरनिया ऊआ और परमेश्वर ने उसे
कहा कि तू बूढ़ा और पुरनिया ऊआ और अब लों बऊतसी
२ भूमि अधिकार के लिये धरी हैं। और यह देश अब लों धरा है
३ फलस्तियों का समस्त बिभाग और समस्त जसूरी। सैहूर से
जो मिसर के आगे है अक़रान के सिवाने लों उत्तर दिशा को
किनानों में गिनाजाता है जो फ़लस्तानियों के पांच अध्यक्ष हैं
ग़ज़ाथी और अशदूथी और अशकलूनी और गित्ती और
४ अक़रूनी और अ़वी भी। दक्षिण दिशा से किनान के सारे देश
और कंदला जो सीदूनियों के लग है अमूरियों के सिवाने अफीक
५ लों। और जब गिबलीथी का देश और सारा लबनान उदय की
ओर बआलजाद से जो हरमून के पहाड़ के नीचे है हमास
६ की पैठ लों। पहाड़ी देश के समस्त बासी लबनान से लेके
मसरीफ़ूसमाईम लों और सारे सैदानी में उन्हें इसराईल
के संतान के साम्ने से दूर करोंगा केवल तू चिट्ठी डालके उसे
इसराईलियों को अधिकार के लिये बांट दे जैसा मैं ने तुझे
७ आज्ञा किई है। सो अब इस देश को नव गोष्ठियों को और
८ मनस्सा की अधी गोष्ठी को अधिकार के लिये बांट दे। जिनके

साथ राओबीनी और जाज़ी अपने अधिकार पाये हैं जो मूसा ने अर्दन के पार उन्हें दिया पूर्ब्ब दिशा को जैसा कि परमेश्वर के सेवक मूसा ने उन्हें दिया। ९ अरूईर से जो अरनून के तीर पर है और उस नगर से जो पानी के बीचोंबीच है और १० मदीबा के चौगान से लेके दीबून लों। और अमूरियों के राजा सीहून के सारे नगर जो हश्बून में राज्य करताथा अमून के ११ संतान के सिवाने लों। और जलियाद और जशूरी का सिवाना और माकाती और हरमून का सारा पर्ब्बत और सारा बाशान १२ सलका लों। बाशान में ऊज का सारा राज्य जो अशतरूस और अद्री में राज्य करताथा जो दानव के उबरे ऊए से बचरहाथा १३ सो मूसाने उन्हें मारा और उन्हें बाहर किया। तथापि इसराईल के संतानों ने जशूरी और माकातियों को दूर नकिया परंतु जशूरी और माकाती आज लों इसराईलियों में १४ बसते हैं। केवल लावी की गोष्ठी को अधिकार नदिया इसराईल के ईश्वर परमेश्वर के होम के बलिदान उस के कहने १५ के समान उनका अधिकार है। और मूसा ने राओबीन के संतान की गोष्ठी को उनके घरानों के समान अधिकार दिया। १६ और अरूईर से जो अरनून की नदी के तीर पर है उनका सिवाना था और वुह नगर जो नदी के मध्य में है और सारा १७ चौगान जो मदीबा के लग है। हश्बून और उसके सारे नगर जो चौगान में हैं और दीबून और बाल के ऊंचे स्थान और १८ बालमाऊन का घर। और यहाज़ा और क़दिमूस और मफ़ास। १९ और करयासायम और सबमा और सारसशाहर जो तराई २० के पहाड़ में हैं। और बैतफ़ऊर और पसगा के सोते और २१ बैतजशीमूस। और चौगान के सारे नगर और अमूरियों के राजा सीहून का सारा राज्य जो हश्बून म राज्य करताथा जिसे मूसा ने मदियान के प्रधानों अवी और राक़म और सूर और हूर और रीबा जो सीहून के अध्यक्ष उस देश में बसतेथे

२२ मारडाला। और बऊर का बेटा बलआम जो गणक था जिसे इसराईल के संतान ने उनके जूझेऊए के साथ अपनी तलवार से
२३ मारा। और राओबीन के संतान का सिवाना अर्दन और उसका सिवाना ऊआ ये नगर और उनके गांओं राओबीन के संतान के
२४ घरानें के समान अधिकार में पड़े। और मूसा ने जाद़ की
२५ गोष्ठी को उनके घरानें के समान भाग दिया। और उनका सिवाना जज़र और जलियाद के सारे नगर और अमून के संतान
२६ का आधा देश अरुईर लों जो राबा के आगे है। और हश्बून से रामास मजपा और बतूनिम लों और महानाईम से ले के दबीर
२७ के सिवाने लों। और बैतअरम की तराई में और बैतनमरा और सकूस और साफ़ून जो हश्बून के राजा सीहून के राज्य में से बचरहाथा और अर्दन और उसके सिवाने कनारस के समुद्र
२८ के तीर लों अर्दन के उस पार पूर्ब ओर। ये नगर और उनके गांओं जाद़ के संतान के अधिकार उनके घरानें के समान
२९ ऊए। और मूसा ने मनस्सा के संतान की आधी गोष्ठी को भी भाग दिया सो मनस्सा के संतान की आधी गोष्ठी का
३० भाग उनके घरानें के समान यह था। और उनके सिवाने महानाईम से सारा बाशान और बाशान के राजा ऊज का सारा राज्य औ यायर के सारे नगर बाशान में हैं साठ नगर।
३१ और आधा जलियाद और अश्तरूस और अद्री बाशान के राजा ऊजके नगर मनस्सा के बेटे माखीर के संतान को अर्थात्
३२ माख़ीर के आधे संतान उनके घरानें के समान। इन्हें मूसा ने मवाबके चौगान में अर्दन के उस पार अरीहा के लग पूर्ब
३३ ओर अधिकार के लिये दिया। परंतु मूसा ने लावी के संतान को अधिकार नदिया इस लिये कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर उनका अधिकार था जैसा उसने उन्हें कहा।

साढ़े नव गोष्ठी चिट्ठी डाल के अधिकार पाती हैं
१—५ कालिब हबरून को पाता है ६—१५ ।

१ और इन्हें किनान के देश में इसराईल के संतानों ने अपने अधिकार में लिया जिन्हें इलिआज़र याजक और नून के बेटे यशूअ और इसराईल के संतानों की गोष्ठियों के पितरों के
२ प्रधानों ने उन्हें अधिकार में बांटदिया। जैसा परमेश्वर ने साढ़े नव गोष्ठी के विषय में मूसा के द्वारा से कहा उनका
३ अधिकार चिट्ठी से हुआ। क्योंकि मूसा ने अर्दन के उस पार अढ़ाई गोष्ठी को अधिकार दियाथा पर लावियों को उनमें
४ कुछ अधिकार नदिया। क्योंकि यूसफ़ के संतान दो गोष्ठी थे मनस्सा और अफ़राईम सो उन्हों ने लावियों को देश में कुछ भाग नदिया केवल कई एक नगर उनके रहने के लिये और उनके आसपास की बस्तियां उनके ढोर और संपत्ति के लिये।
५ जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई इसराईल के संतानों ने
६ वैसाही किया और उन्हों ने देश का भाग किया। तब यहूदा के संतान जलजाल में यशूअ पास आये और क़नोज़ी यफ़ना के बेटे कालिब ने उसे कहा कि उस बात को जो ईश्वर ने अपने जन मूसा को मेरे और तेरे विषय में कादसबर्निया में कहा
७ तू जानता है। जिस समय ईश्वर के दास मूसा ने कादसबर्निया से मुझे भेजा कि देश का भेद लेओं उस समय मैं चालीस बरसका था और मैं ने उसे अपने मन के समान संदेश
८ पहुंचाया। तथापि मेरे भाइयों ने जो मेरे साथ चढ़गये थे मंडली के मन को पघिला दिया परंतु मैं ने परमेश्वर अपने
९ ईश्वर का परिपूर्णता से पीछाकिया। और मूसा ने उसी दिन किरिया खाके कहा कि निश्चय वुह देश जिस पर तेरे चरण पड़े थे तेरा और तेरे बेटों का सदा का अधिकार होगा इस कारण कि तू ने परमेश्वर मेरे ईश्वर का परिपूर्णता से पीछा
१० किया। और अब देख परमेश्वर ने मुझे अप‍े कहे क

समान आज के दिन लों जीता रक्खा और उस समय से लेके जो परमेश्वर ने यह बात मूसा को कही जब कि इसराईल अरण्य में फिरे किये इस समय लों पैंतालीस बरस बीतगये और आज के
११ दिन मैं पचासी बरस का वृद्ध हों। अब लों मैं ऐसा बली हों जैसा उस दिन था जब मूसा ने मुझे भेजा जैसा लड़ाई के लिये और बाहर भीतर आने जाने के लिये मेरा बल तब था वैसाही
१२ अब भी है। सो अब यह पहाड़ जिसके विषय में परमेश्वर ने उस दिन कहा मुझे दीजिये क्योंकि तू ने उस दिन सुना था कि अनाकी वहां हैं और नगर बड़े और बाड़े ऊए सो यदि ऐसा हो कि परमेश्वर मेरे साथ होवे तब मैं परमेश्वर के कहे के समान उन्हें
१३ निकाल देओंगा। तब यशूअ ने उसे आशीष दिया और यफ़ना
१४ के बेटे कालिब को हबरून अधिकार में दिया। सो हबरून क़नीज़ी यफ़ना के बेटे कालिब का आज लों अधिकार ऊआ इस लिये कि उसने परमेश्वर इसराईल के ईश्वर का पीछा परिपूर्णता से किया।
१५ और अगिले समय में हबरून का नाम करियाथअर्बा और जो अर्बा अनाकियों में महा जन था और देश ने लड़ाई से चैन पाया।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब ।

यहूदा की चिट्ठी के सिवाने १—१२ कालिब का भाग और उसका जय पाना १३—१५ शूरता के कारण अखईल कालिब की लड़की से ब्याहा जाता है १६—१९ यहूदा की बस्तियां २०—६२ यबूसी वश में नहीं होते हैं ६३— ।

१ और यहूदा के संतान की गोष्ठी की चिट्ठी उनके घरानों के समान यह थी सीन के बन से दक्षिण दिशा दक्षिण के अत्यंत
२ तीर अदूम के सिवाने लों दक्षिण और उसका दक्षिणी सिवाना खारी सागर से अर्थात् उस कोल से जो दक्षिण ओर
३ जाता है। और वुह दक्षिण को अक्रंग निकल के अक्राबिम

को चढ़गया और जाते जाते सीन को और चढ़के दक्षिण अलंग कादसबरनिया लों और हसरून को चलागया और आदार को
४ चढ़गया और घूम के क़रक़ाआ को गया। और वहां से असमून को पज़ंचा और निकल के मिसर की नदी लों गया और उसके तीर के निकास समुद्र को गये यही तुम्हारा दक्षिण सिवाना
५ होगा। और उसका पूर्ब्ब सिवाना खारी समुद्र से अर्दन के अंत लों और उसका उत्तर का सिवाना समुद्र के कोल से जो अर्दन
६ का अत्यंत है। और यह सिवाना बैतहग़ला को चढ़गया और बैतअराबा के उत्तर को अलंग चलागया और राओबीन के बेटे
७ बोहन के पत्थर लों सिवाना चढ़गया। फिर आख़ूर की तराई से दबर की ओर चढ़गया और यों उत्तर को जलजाल की ओर गया जो अदमीम की चढ़ाई के सामने है जो नदी के दक्षिण अलंग है और वुह सिवाना अनशीमश के पानियों की
८ ओर गया और उसके निकास अनरोगल में थे। और यबूसी जो यिरोशलीम है उसकी उत्तर अलंग हनूम के बेटे की तराई के पास सिवाना चढ़गया और उस पहाड़ की चोटी लों जो पश्चिम दिशा हनूम की तराई के आगे है जो उत्तर दिशा
९ में दानव की तराई के अंत में है। और सिवाना पहाड़ की चोटी से नफ़तूअह के सोता के पास और अफ़रून पहाड़ के नगरों के पास जा निकला और वहां से सिवाना बआला को जो करियासयारीम
१० है खिंचगया। और बाला की पश्चिम दिशा से घूम के सिवाना सीर पहाड़ को और वहां से जियारीम पहाड़ की अलंग गया जो ख़सालून है उत्तर अलंग की ओर बैतशमश को उतर गया
११ और तीमना को निकलगया। और सिवाना अक्करून की उत्तर दिशा के पास से जानिकला और सिवाना शक्करून को खिंचगया और बाला पहाड़ को गया और यबनील को निकला
१२ और सिवाने के निकास समुद्र को थे। और उसका पश्चिम सिवाना महा सागर और उसके तीर लों था यहूदा के संतान

के घराने का सिवाना उनके घरानों के समान यह है।
१३ और उसने यफ़ना के बेटे कालिब को यहूदा के संतानों में जैसा कि परमेश्वर ने यहूशूअ को आज्ञा किई थी करियातअर्बा
१४ अनाक का पिता जो हबरून है भाग दिया। और कालिब ने अनाक के तीन बेटे शीशाय और अहीमन और तलमाय को
१५ जो अनाक के संतान हैं वहां से दूर किया। और वुह वहां से दबीर के वासियों पर चढ़ा और दबीर का नाम आगे
१६ करियातसफ़र था। सो कालिब ने कहा कि जो कोई क़रियातसफ़र को मारे और उसे लेवे मैं उसे अपनी बेटी अकसा को ब्याह
१७ देऊंगा। तब कालिब के छोटे भाई क़िनाज़ के बेटे अस्नईल ने उसे लिया तब उसने अपनी बेटी अकसा को उसे ब्याह दिई।
१८ और ऐसा हुआ कि जब वुह उस पास गई तो उसे उभारा कि वुह उसके पिता से एक खेत मांगे सो वुह अपने गदहे परसे उतरी तब कालिब ने उसे कहा कि तू क्या चाहती
१९ है। उसने उत्तर दिया कि मुझे आशीष दीजिये क्योंकि आपने मुझे दक्षिण की भूमि दिई सो मुझे पानी के सोते भी दीजिये
२० तब उसने उसे ऊपर के सोते और नीचे के सोते दिये। यहूदा के संतान की गोष्ठी का अधिकार उनके घरानों के समान
२१ यह है। और अदूम के सिवाने की ओर दक्षिण दिशा यहूदा के संतान की गोष्ठी के नगर के अंत्य ये हैं क़बसील और
२२ ईदर और यगूर। और क़ीनाह और दमूना और अदादः।
२३।२४ और क़ादस और हाज़ूर और यसनान। और ज़ीफ़ और
२५ तालीम और बिआलूस। और हाज़ूर और हदता और
२६ क़रियूस और हसरून जो हासूर है। अमाम और शमा और
२७ मूलादा। और हसारगद्दा और हश्मून और बैतपालत।
२८ और हाज़र शुआल और बीरशबा और बिसजुसजा।
२९।३० बाला और ईम और आसम। और अलतुलाद और
३१ ख़सील और हुरमा। और सक़लाग़ और मदमना और

३२ सनसना। और लबाऊस और शलहीम और आईन और
३३ रमून ये सब उंतीस नगर और उनके गांओं। और वे तराई
३४ में इश्ताऊल और सुरिअः और अश्नः। और सनूह और
३५ अनगनिम और टपूअ और ईनाम। और यरमूस और अदुल्लम
३६ और सोकः और अज़ीका। और शरायम और अदीसाईम
और गदीरः और गदीरूसाईम चौदह नगर उनके गांओं समेत।
३७।३८ सिनान और हदाशा और मगदलगद। और दिलिआन
३९ और मसफा और यक़तील। लाख़ीश और बासक़ास और
४० अगलून। और कबून और लहमाम और कश्लीस।
४१ और गदीरूस और बैतदाग़ून और नआमा और मक़ीदा
४२ सोलह नगर उनके गांओं समेत। लबनः और असीर और
४३।४४ अशान। और यफ़तः और अश्नः और नसेब। और
कईला और अकज़िब और मरीशः नव नगर उनके गांओं समेत।
४५।४६ अक़रून उसके नगर और गांओं समेत। और अक़रून से
समुद्र लों और सब जो अशदूद के आस पास थे उनके गांओं
४७ समेत। और अशदूद अपने नगरों और गांओं सहित और
ग़ज़ह अपने नगरों और गांओं समेत मिसर की नदी लों और
४८ महासागर और उसका सिवाना। और पहाड़ों में शमीर
४९ और यतीर और सोकुः। और दन्नः और क़रियासन्नः जो
५०।५१ दबर है। और अनाब और अश्तिमुः और अनीम। और
गोशन और हलन और गिलुः ग्यारह नगर उनके गांओं समेत।
५२।५३ और अरब और दूमः और अशिअन। और जानम
५४ और बैतटफ़ुआ और अफ़ीकः। और हमतः और करयासअर्बः
५५ जो हबरून है और सीऊर नव नगर उनके गांओं समेत। और
५६ माऊन और करमिल और ज़ीफ़ और जत्ता। और यज़रील
५७ और यक़दीयम और ज़नूअः। और क़ीन और गबियः और
५८ तमनः दस नगर उनके गांओं समेत। और हलहूल और
५९ बैतसूर और जदूर। और मारासः और बैतअनूस और

६० अलतिकून छः नगर उनके गांओं समेत। और करियासबाल जो करयासयारीम और रब्बः है दो नगर उनके गांओं सहित।
६१ और अरण्य में बैतअराबा और मदीन और सकाका।
६२ और निबशान और लोन का नगर और अनगदी छः नगर
६३ उनके गांओं समेत। परंतु यबूसी जो थे यिरोशलीम में रहते थे सो उन्हें यहूदा के संतान दूर न करसके परंतु यबूसी यहूदा के संतान के साथ आज के दिन लों यिरोशलीम में रहते हैं।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

यहूदा के संतान के सिवाने १—४ अफ़राईम के अधिकार का सिवाना ५—९ किनानी बश में नहीं होते हैं—१० ।

१ और यूसफ़ के संतान की चिट्ठी अर्दन से अरीहा के पास निकलके अरीहा के पानी के पूर्ब जो है और उस बन लों जो
२ अरीहा से बैतईल पहाड़ के आरपार को जाताहै। और बैतईल से निकल के लूज़ को जाके अरकी के सिवानों को अतारूस
३ के पास चला। और पश्चिम दिशा से यफ़लती के तीर को जाताहै नीचे की ओर बैतहूरून के तीर को और जज़र लों
४ पहुंचताहै और उसके निकास समुद्र में हैं। सो यूसफ़ के संतान मनस्सा और अफ़राईम ने अपना अधिकार लिया।
५ और अफ़राईम के संतान का सिवाना उनके घरानों के समान यह था अर्थात् उनके अधिकार का सिवाना पूर्ब
६ की ओर अतरूस अदार से ऊपर के बैतहूरून को गया। और सिवाना निकल के समुद्र की ओर उत्तर दिशा में मखमीता को निकला और सिवाना पर्ब की ओर तानाशीलो को गया
७ और उसके पूर्ब को होके जनूहा का गया। और जनूहा से अतारूस को और नारास को और अरीहा को आया और
८ अर्दन पास जानिकला। पश्चिम का सिवाना टप्पूआ से कोनाकी

नदी को और उसके निकास समुद्र को हैं अफ़राईम के संतान
९　की गोष्ठी का अधिकार उनके घरानों के समान यह है। और
अफ़राईम के संतान के लिये अलग अलग नगर मनस्सा के
संतान के अधिकार में थे सारे नगर उनके गांओं सहित।
१०　और उन्हों ने उन किनानियों को जो गज़र में रहते थे दूर न किया
परंतु किनानी अफ़राईमियों में आज के दिन लों बसते हैं
और कर के बश से सेवा करते हैं।

१७ सतरहवां पर्ब्ब।

मनस्सा का भाग १—६ उसका सिवाना ७—११
किनानी नहीं दूर किये गये १२—१३ यूसफ़ के
संतान दूसरा भाग पाते हैं १४—१८।

१　मनस्सा की गोष्ठीने भी अधिकार पाया क्योंकि वुह यूसफ़ का
पहिलौंठा था सो जलयाद के पिता मनस्सा के पहिलौंठे माखीरने
२　जो लड़ाक था जलियाद और बाशान अधिकार पाया। और
मनस्सा के संतान के उबरे ऊओं को उनके घरानों के समान
अधिकार मिला अबीईज़र के संतान के लिये और हीलक़ के
संतान के लिये और अबईल के संतान के लिये और सख़ीम के
संतान के लिये और हफ़र के संतान के लिये और शमीदा के संतान
के लिये यूसफ़ के बेटे मनस्सा के घरानों के समान पुरुष बालक ये थे।
३　परंतु मनस्सा का बेटा माखर का बेटा जलियाद का बेटा
हफ़र का बेटा ज़लोफ़ीहाद के बेटे न थे परंतु बेटियां थीं जिन क
नाम ये हैं महला और हगला और अज़ला और मलका और
४　तरसा। सो वे इलियाज़र याजक और नून के बेटे यशूअ के
और प्रधानों के आगे आके बोलीं कि ईश्वर ने मूसा को आज्ञा
किई कि वुह हमारे भाइयों के मध्यमें हमें अधिकार देवे
सो ईश्वर की आज्ञा के समान उसने उनके पिता के भाइयोंमें
५　उन्हें अधिकार दिया। सो जलियाद और दाशान के देश को

छोड़ के जो अर्दन के उस पार है मनस्सा को दस भाग पड़े।
६ इस लिये कि मनस्सा की बेटियों ने अपने भाइयों के साथ अधिकार पायाथा और मनस्सा के उबरेऊए बेटों ने जलियाद
७ का देश पाया। और अशीर से लेके मिकमीथा लों जो शकीम के साम्ने है मनस्सा का सिवाना था और सिवाना
८ दहिने से निकल के इनटपुआ के बासी लों गया। इसलिये कि टपुआ का देश मनस्सा का था परंतु टपुआ जो मनस्सा के सिवाने
९ में था अफ़राईम के संतान का भाग था। सो उसका तीर नल की नाली की दक्षिण ओर था और अफ़राईम के ये नगर मनस्सा के नगरों में मिले हैं और मनस्सा का तीर उत्तर की
१० नदी से था और उसके निकास समुद्रमें थे। सो दक्षिण दिशा अफ़राईम की ऊई और उत्तर दिशा मनस्सा की और उसका सिवाना समुद्र था सो वे दोनों उत्तर दिशा अशर और पूर्ब
११ दिशा यसाख़ार से जामिलीं। और मनस्सा यसाख़ार में और अशीर में बैतशियान और उसके नगर और इबलियाम और उसके नगर और दूर के निवासी और उसके नगर और इनदूर के निवासी और उसके नगर और तानाक के बासी और उसके नगर और मगिद्दू के निवासी और उसके
१२ नगर अर्थात् तीन देश रखतेथे। तथापि मनस्सा के संतान उन नगरों के बासियों को दूर न करसके परंतु किनानी उस
१३ देश में बसबही किये। तथापि यों ऊआ कि जब इसराईल के संतान प्रबल ऊए तो किनानियों से कर लिया परंतु उन्हें सर्बथा
१४ दूर न किया। सो यूसफ़ के संतान ने यशूअ को कहा कि तू ने किस लिये चिट्ठी में से हमें एकही अधिकार और केवल एकही भाग दिया यह जान के कि हम बऊत हैं
१५ जैसा कि ईश्वर ने हमें अब लों आशीष दिया है। तब यशूअ ने उन्हें उत्तर दिया कि यदि तुम बऊतसे हो तो बन पर चढ़जाओ और यदि अफ़राईम तुम्हारे लिये सकेत है तो

१६ अपने लिये फ़रज़ी के और दानव के देश काटो। तब यूसफ़ ने कहा कि यह पहाड़ हमारे लिये थोड़ा है और समस्त किनानी जो बैतशान के और उसके नगर के और जज़रील की नीचाई के और जो नीचाई के देश में रहते हैं लोहे की

१७ गाड़ियां रखते हैं। तब यहूश्रू ने यूसफ़ के संतान अफ़राईम और मनस्सा को कहा कि तुम बहुत हो और बड़ी सामर्थ्य

१८ रखते हो तुम्हारे लिये केवल एकही भाग न होगा। परंतु पहाड़ तेरा होगा क्योंकि वुह अरण्य है तुम उसे काटडालियो और उसके निकास तेरे होंगे क्योंकि तू किनानियों को खदेड़ेगा यद्यपि वे लोहे के रथ रखके बली हैं।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

तंबू खड़ा किया जाता है और उबरे हुए देश का बर्णन और विभाग १—१० बनियामीन का भाग और सिवाना और नगर ११—२८।

१ तब सारे इसराईल के संतान की मंडली शैलू में एकट्ठी हुई और वहां मंडली के तंबू को खड़ा किया और देश उनके

२ बश में कियागया। और इसराईल के संतानों में सात

३ गोष्ठी रहिगई थीं जिन्हों ने अब लों अधिकार न पाया था। सो यहूश्रू ने इसराईल के संतानों से कहा कि कबलों उस देश को बश करने में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने

४ तुम्हें दिया है बिलम्ब करोगे। सो अपने में से हर एक गोष्ठी में से तीन तीन जन देओ और मैं उन्हें भेजोंगा कि वे उठें उस देश के आरंपार फिरें और उसे अपने अधिकार के

५ समान लिखें और फिर मुझ पास आवें। और वे उसके सात भाग करें यहूदा अपने तीर पर दक्षिण की ओर रहे और

६ यूसफ़ के घराने उत्तर दिशा में अपने तीरों पर ठहरें। सो उस देश के सात भाग लिखके मुझ पास यहां लाओ जिसतें

मैं परमेश्वर के आगे जो हमारा ईश्वर है तुम्हारे लिये चिट्ठी डालों।
७ परंतु तुम्हों में लावी का भाग नहीं क्योंकि परमेश्वर की याजकता उनका अधिकार है और जाद और राओबोन और मनस्सा की आधी गोष्ठी ने तो अर्दन के पार पूर्ब्ब दिशा में अपने अधिकार पाये हैं जो परमेश्वर के सेवक मूसा ने उन्हें दिया था।
८ तब लोग उठे कि चलें सो जो देश के लिखाने को गयेथे यशूअ ने उन्हें आज्ञा करके कहा कि उस देश में जाओ और आरंपार फिरो और लिखके मुझ पास फिर आओ जिसतें मैं शीलू में
९ परमेश्वर के आगे तुम्हारे लिये चिट्ठी डालों। सो लोग गये और उस देश में आरंपार फिरे और उसे नगर नगर सात भाग कर के एक पुस्तक में बर्णन किया और यशूअ पास शीलू में
१० सेना को फिर आये। तब यशूअ ने शीलू में उनके लिये चिट्ठी डाली और देश को इसराईल के संतान को उनके भाग के समान वहां
११ बांटदिया। और बनियामीन के संतान की गोष्ठी की चिट्ठी उनके घरानों के समान निकली और उनके भाग का सिवाना यहूदा के संतान और यूसफ़ के संतान के मध्यमें
१२ निकला। और उनका सिवाना उत्तर दिशा अर्दन नदी से था और उसका सिवाना अरीहा के पास से उत्तर दिशा को चढ़ा और पर्बतों में से पच्छिम चढ़गया और उसके निकास बैत अवन के बन
१३ में थे। और सिवाना वहां से लूज़ की ओर गया लूज़ की अलंग जो बैतईल है दक्षिण दिशा को और सिवाना अतरूसअ़दार को उतरा उस पहाड़ के पास जो नीचे के बैतहूरून की दक्षिण
१४ की ओर है। और खींचाजाके सिवाना उस पहाड़ पास जो बैतहूरून के दक्षिण को है दक्षिण की ओर समुद्र के कोने को और उसके निकास करियासबाल को थे जो करियासयारीम
१५ है यहूदा के संतान का एक नगर जो पश्चिम की ओर। और दक्षिण की अलंग करियासयारीम के अंत से और सिवाना पश्चिम को गया और निकल के नफलूह के पानियों के कूएं को

१६ गया। और सिवाना उस पहाड़ पास जो हिनम के बेटे की तराई के आगे है उतरा जो दानव की तराई के उत्तर को है और दक्षिण हिनम की तराई को दक्षिण को यबूसी की अलंग में
१७ अनरूगिल को उतरगया। और उत्तर से खींचा आके ऐनशमश को निकलगया और वहां से गलीलूस की ओर जो अदुम्मिम की घाटी के सान्ने है और वहां से राओबीन के बेटे
१८ बोहान के पत्थर लों उतरा। और उत्तर दिशा से चैगान के सान्ने होके उसकी अलंग की ओर निकलगया और अराबाको
१९ उतरा। फिर उत्तर दिशा से निकल के बैतहगला की एक ओर को गया और सिवाने के निकास उत्तर को खारी समुद्र के कोल पर और अर्दन के दक्षिण अंत को थे यही दक्षिण तीर
२० था। और उसका पूर्ब्ब सिवाना अर्दन था बनियामीन के संतान के सिवाने का अधिकार उसके सब तीरों के समान उनके घरानों
२१ के समान चारों ओर यह था। अब वे बस्तियां जो बनियामीन के संतान की गोष्ठी की थीं उनके घरानों के समान अरीहा
२२ और बैतहग़ला और क़ज़िज़ की तराई थीं। और बैतअर्बा
२३ और समाराईम और बैतईल। और अविम और पारः और
२४ अफ़रा। और किफ़ारहमूनाई और अफ़नी और गाबा
२५ बारह नगर उनके गांव सहित। और गबियून और रामा और
२६।२७ बीरूस। और मसफ़ा और कफ़ीरा और मूज़ा। और
२८ मूज़ाराक़म और अरपील और तराला। और सलाह इलाफ़ और यबूसी जो यिरोशलीम है और गबियासकरियास चौदह नगर उनके गांव सहित बनियामीन के संतान का अधिकार उनके घरानों के समान यह है।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब ।

शमऊन का भाग १—९ जबलून का १०—१६
यसाख़ार का भाग १७—२३ अशर का २४—३१

नफ़्ताली का भाग ३२—३९ दान का ४०—४८ इसराईल के संतान यहूसूअ को भाग देते हैं ४९—५१ ।

१ और दूसरी चिट्ठी शमऊन के संतान की गोष्ठी की उनके घरानों के समान निकली और उनका अधिकार यहूदा के संतान के
२ अधिकार के भीतर था। और उनके अधिकार में बीरशबा
३ और शबा और मूलादा था। और हज़ारशुआल और बाला
४ और आसम। और अलतूलाद और बैतऊल और ऊरमा।
५।६ और ज़िक़लाग़ और बैतमुरकबूस और हज़ारसूसा। और बैतलबाऊस और शरोहेन तेरह नगर उनके गांव समेत।
७ और अईन और रमून और ईथर और आशान चार नगर
८ उनके गांव समेत। और सारे गांव जो उन नगरों के आसपास थे बालासबीर दक्षिण का रामास शमऊन के संतान की गोष्ठी का
९ अधिकार उनके घरानों के समान यह है। यहूदा के संतान के भाग में से शमऊन के संतान का भाग था इसलिये कि यहूदा के संतान के भाग का देश उनके लिये अति था इस कारण शमऊन के संतान ने उनके अधिकार के भीतर अपना भाग पाया।
१० और तीसरी चिट्ठी ज़बलून की उनके घरानों के समान निकली सो उनके अधिकार का सिवाना सारीद लों ऊआ।
११ और उनका सिवाना समुद्र की और मराला की ओर गया और दबाशोष लों पहुंचा और जकनियम के आगे की नदी लों गया।
१२ और पूर्ब ओर सलीद से फिरके सूर्य के उदय की ओर कसलूसताबूर के सिवाने की ओर निकलजाता है और वहां से दबीरास और
१३ याफिया पर चढ़ा। और वहां से जाते जाते पूर्ब की ओर गित्ताहीफ़र और अताक़ासीन लों गया और वहां से रमूनमथूआर
१४ और निया पास जा निकला। और उसका सिवाना उत्तर अलंग हनासून को घूम जाता है और उसके निकास यफ़तईल की तराई
१५ हैं। और क़तास और नाहलाल और शमरून और यदाला

१६ और बैतलहम बारह नगर उनके गांव सहित। ये सब नगर और उनके गांव ज़बलून के संतान के घरानें के अधिकार थे।

१७ और यसाख़ार के संतान के घरानें के समान यसाख़ार

१८ के लिये चौथी चिट्ठी निकली। और उनका सिवाना यज़रईल

१९ और कसोलूस और शूनेम की ओर था। और हफ़राईम और

२० शीहून और अनाहरस। और रबीस और किशीयून और

२१ अबस। और रमस और ऐनगनीम और ऐनहदा और

२२ बैतफ़सीस। उनका सिवाना ताबूर और शहासामा और बैतशमश से जामिला और उसके सिवाने के निकास अर्दन को

२३ ऊए सोलह नगर उनके गांव समेत। ये नगर और उनके गांव यसाख़ार के संतान का अधिकार उनके घरानें के समान है।

२४ और पांचवीं चिट्ठी आशीर के संतान की गोष्ठी के लिये

२५ उनके घरानें के समान निकली। और उनका सिवाना हलक़ास

२६ और हली और बतन और अख़शाफ़ ऊआ। और अलम्मलख़ और अमाद और मिशियाल और उनका सिवाना पश्चिम

२७ दिशा करमाल और शीहूर लिबनास लों पऊंचता है। और उदय की ओर बैतदागून को फिरा और ज़बलून और यफ़तईल की तराई को बैतअमक की उत्तर ओर जामिला

२८ और नयाईल और काबूल के बाईं ओर निकलता है। और

२९ हबरून और रहूब और हमून और क़ानाबड़ेसीदून लों। और उसका तीर रामा को और दृढ़नगर सूर को फिर जाता है और वहां से मुड़ के होसा लों गया और उसके निकास समुद्र

३० के तीरसे अकज़िब को। और अम्मा और अफ़ीक और रहूब

३१ बाईस नगर उनके गांव सहित। अशर के संतान की गोष्ठी का अधिकार उनके घरानें के समान ये नगर उनके गांओं

३२ सहित। छठवीं चिट्ठी नफ़ताली के संतान के अर्थात् नफ़ताली

३३ के संतान के घरानें के समान निकली। और उनके सिवाने हलफ़ से और अलून से सअनानिम को और अदामी नक़ब

और यबनईल लक्कूम लों और उसके निकास अर्दन से थे।
३४ और सिवाना पश्चिम दिशा को फिर के अजनूसतावूर को जाता है और वहां से जाके हकूक को दक्षिण दिशा जबलून को पहुंचता है और पश्चिम दिशा में अशीर को पहुंचता है और
३५ पूर्व की ओर अर्दन पर यहूदा से जा मिलता है। और सद्दीम और सीर और हमात और रक्कात और कनीरत ये बाड़ा के
३६।३७ नगर हैं। और अदामा और रामा और हासूर। और
३८ क़ादस और अद्री और ईनहासूर। और ईरान और मगदलईल और हरीम और बैतअनात और बैतशमश उन्नीस
३९ नगर उनके गांओं सहित। ये नगर और उनके गांव नफ़ताली के संतान की गोष्ठी का अधिकार उनके घरानों के समान था।
४० और सातवीं चिट्ठी दान के संतान की गोष्ठी के घरानों के
४१ समान निकली। और उनके अधिकार के सिवाने सोराह
४२ और इशताऊल और अरशमश थे। और शालब्बीन और
४३ अजालून और जथलाह। और ईलून और तमनासा और
४४ अक़रून। और अलतक़ा और ग़बोतून और बाहलाथ।
४५।४६ और जिहूद और बनीबरक़ और गाथरमून। और मजारकून और रकून उस सिवाने समेत जो याफू के सन्मुख है।
४७ और दान के संतान का सिवाना निकला वुह उनके लिये थोड़ा था इस लिये दान के संतान लाशीम से लड़ने को चढ़गये और उसे लेलिया और उसे तलवार की धार से मारडाला और उसे बश में करलिया और उसमें बसे और लाशीम
४८ का नाम दान रक्खा जो उनके पिता का नाम था। ये सब नगर उनके गांओं समेत दान के संतान की गोष्ठी का भाग था।
४९ जब उन्हों ने अधिकार के लिये उनके सिवानों के समान देश का बांटना समाप्त किया तब इसराईल के संतान ने नून के बेटे
५० यहूशूअ को अपने मध्य में अधिकार दिया। और उसने तिमनात सारह का नगर जो अफ़राईम के पहाड़ में है मांगा सो उन्हों ने

परमेश्वर के बचन के समान उसे दिया और उसने उस नगर
५१ को बनाया और उसमें जा बसा। ये वे अधिकार हैं जिन्हें
इलियाज़र याजक ने और नून के बेटे यशूअ ने और इसराईल
के संतान की गोष्ठियों के पितरों के प्रधानों ने चिट्ठी डाल के
शीलू में परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर अधिकार
के लिये बांट दिया सो उन्हों ने देश का बांटना समाप्त किया।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

परमेश्वर की आज्ञा १—६ इसराईल के संतान
शरण नगर ठहराते हैं ७—९ ।

१।२ और परमेश्वर भी यशूअ को कहिके बोला। कि इसराईल के
संतान को यह कहिके बोल कि अपने लिये शरण के नगर ठहराओ
३ जिनके विषय में मैं ने तुम्हें मूसा के द्वारा से कहा। जिसतें
वुह घातक जो अज्ञान से अथवा अकस्मात किसी को मारडाल के
वहां भागे तो लोहू के पलटा लेवैयेसे वे तुम्हारे शरण होवें।
४ और जब कोई उनमें से किसी एक नगर में भाग जाय तो
नगर के फाटक की पैठ में खड़ा रहे और उस नगर के प्रधानों
से अपना समाचार बर्णन करे तब वे उसे नगर में अपने पास
५ लेवें और स्थान देवें कि वुह उनके साथ रहे। और यदि
घात का पलटा लेवैया उसे खेदे तो वे घातक को उसे न
सौंपे क्योंकि उसने अपने परोसी को अज्ञान से मारा और
६ उसे आगे बैर न रखता था। और वुह उसी नगर में रहे
जबलों न्याय के लिये मंडली के आगे न खड़ा होवे और जब
लों प्रधान याजक न मरे जो उन दिनों में होवे उसके पीछे
वुह घातक फिरे और अपने नगर में और अपने घर में
७ जाय जहांसे वुह भागाथा। सो उन्हों ने बचाव
के लिये जलील में क़ादश को नफ़ताली पर्ब्बत पर और
अफ़राईम पर्ब्बत पर शकीम को और क़रियातअर्बा को, जो

८ हबरून है यहूदा के पहाड़ में पवित्र किया। और अर्दन के पार अरीहा के पास और पूर्ब्ब दिशा को बासरा के अरण्य में राओबीन के संतान की गोष्ठी के चौगान में और रामः जलियाद में जो जाद की गोष्ठी का है और गोलान मनस्सा की गोष्ठी
९ के बाशान में ठहराया। सारे इसराईल के संतान के लिये और उस परदेशी के लिये जो उनमें बसता है इन बस्तियों को ठहराया जिसतें जो कोई कि अज्ञान से किसी को मारडाले सो उधर भागे और जबलों कि मंडली के आगे न आवे तबलों लोहू के पलटा लेवैये के हाथ से मारा न जावे।

२१ एक्कीसवां पर्ब्ब ।

और और गोष्ठियों में से अठतालीस नगर लावियों को दिये जाते हैं १—४२ अपनी बाचा के समान ईश्वर इसराईलियों को चैन देता है ४३—४५ ।

१ तब लावियों के पितरों के प्रधान इलियाज़र याजक और नून के बेटे यशूअ और इसराईल के संतान की गोष्ठियों के
२ पितरों के प्रधान पास आये। और वे किनान के देश शील में उन्हें कहिके बोले कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा किई कि हमारे निवास के लिये बस्तियां उनके आस पास सहित
३ हमारे ढोर के लिये हमें दिई जावें। तब इसराईल के संतान ने अपने अधिकार में से परमेश्वर की आज्ञा के समान
४ ये नगर और उनके आस पास लावियों को दिये। सो चिट्ठी क़हासियों के घरानों के लिये और हारून याजक के बंश के जो लावियों में से थे उन्हों ने चिट्ठी डाल के यहूदा की गोष्ठी और शमऊन की गोष्ठी और बनियामीन की गोष्ठी में से तेरह
५ नगर पाये। और क़हास के उबरे ऊए बंश ने अफ़राईम की गोष्ठी के घरानों में से और दान की गोष्ठी में से और मनस्सा
६ की आधी गोष्ठी में से दस नगर पाये। और जरशून के संतान ने

चिट्ठी के समान यसाखार की गोष्ठी के घराने में से और अशीर
की गोष्ठी में से और नफताली की गोष्ठी में से और मनस्सा
७ की आधी गोष्ठी में से बाशान में तेरह नगर पाये। और मरारी
के संतान ने अपने घरानें से राओबीन की गोष्ठी में से और
जाद की गोष्ठी में से और ज़बलून की गोष्ठी में से बारह नगर
८ पाये। और इसराईल के संतान ने चिट्ठी डाल के ये नगर और
उनके आस पास जैसा परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा
९ किई थी लावियों को दिया। सो उन्हों ने यहूदा के संतान
की गोष्ठी में से और शमऊन के संतान की गोष्ठी में से ये नगर
१० दिये जिनके नाम लिये जाते हैं। हारून के संतान को जो
क़हासियों के घराने में से थे क्योंकि पहिली चिट्ठी उनके नाम
११ की थी। सो उन्हों ने अनाक़ के पिता अर्बा का नगर जो
हबरून है यहूदा के पहाड़ पर उसके चारों ओर के आस पास
१२ समेत उन्हें दिये। परंतु नगर के खेत और उसके गांव
उन्हों ने यफ़ना के बेटे कालिब को अधिकार के लिये दिया।
१३ सो उन्हों ने हारून याजक के संतान को घातक के शरण के नगर
के लिये हबरून का नगर और लबना उसके आस पास समेत
१४ दिये। और यतीर उसके आस पास समेत और इश्तमूअ
१५ उसके आस पास समेत। और हालून उसके आस पास समेत
१६ और दीबर उसके आस पास समेत। और आईन उसके
आस पास समेत और जत्ता उसके आस पास समेत और
बैतशमश उसके आस पास समेत नव नगर उन दोनों गोष्ठियों
१७ में से। और बनियामीन के घरानें में से गब्रियून उसके
१८ आस पास समेत और गिबा उसके आस पास समेत। और
अनातूस उसके आस पास समेत और अलमून उसके
१९ आस पास समेत चार नगर। सो सारे नगर हारून याजक
२० के संतान के तेरह नगर उनके आस पास समेत थे। और
कहास के संतान के घरानें को लावियों से जो कहास के संतान

में से उबरेऊए थे अफ़राईम के घरानें में से ये नगर अधिकार
२१ मिले। घातक के शरण का नगर अफ़राईम के पहाड़ में
शकीम के। उसके आस पास सहित दिया और गज़र उसके
२२ आस पास सहित। और किबज़ाम उसके आस पास सहित
२३ और बैतहूरून उसके आस पास सहित चार नगर। और
दान की गोष्ठी में से इलतक़ी उसके आस पास सहित और
२४ जबशून उसके आस पास समेत। अजालून उसके आस पास
२५ समेत ग़ासरमून उसके आस पास समेत चार नगर। और
मनस्सा का आधी गोष्ठी में से तानाख़ उसके आस पास सहित
२६ और गाथरमून उसके आस पास समेत दो नगर। ये सब दस
नगर अपने अपने आस पास समेत क़हास के बचेऊए बंश के घरानें
२७ को मिले। और ज़रशून के संतान को जो लावियों के घरानें
में से हैं मनस्सा की आधी गोष्ठी में से घातक के शरण के लिये
उन्हों ने बाशान में गोलान उसके आस पास समेत और बीशतरा
२८ उसके आस पास समेत दो नगर दिये। और यसाख़ार की गोष्ठी
में से कैशून उसके आस पास सहित और दाबार उसके आस पास
२९ सहित। और जारमूस उसके आस पास सहित और एनगन्नि
३० उसके आस पास समेत चार नगर। और अशीर की गोष्ठी में से
मशाल उसके आस पास समेत और अबदून उसके आस पास
३१ समेत। हलकाथ उसके आस पास समेत और रहूब उसके
३२ आस पास समेत चार नगर। और नफ़ताली की गोष्ठी में से
जलील में कादश उसके आस पास समेत घातक के शरण के
नगर के लिये और हमूसडूर उसके आस पास सहित और
३३ क़रतान उसके आस पास सहित तीन नगर। गरशूनियों के
सारे नगर उनके घरानें के समान तेरह नगर उनके आस पास
३४ सहित। और मरारी के संतान के घरानें को, जो
लावियों में से उबरे थे ज़बलून की गोष्ठी में से ये नगर मिले
यकनियाम उसके आस पास सहित और करता उसके

३५ आस पास सहित । दमना उसके आस पास समेत नाहलाल
३६ उसके आस पास सहित चार नगर । और राओबीन की गोष्ठी
में से बासर उसके आस पास सहित और यहेज़ा उसके
३७ आस पास समेत । और क़दमूस उसके आस पास सहित और
३८ मीफ़ास उसके आस पास समेत चार नगर । और जाद की
गोष्ठी में से घातक के शरण का नगर गलियाद में से रामू
उसके आस पास सहित और महानाईम उसके आस पास
३९ समेत । और हशबून उसके आस पास समेत जाज़र उसके
४० आस पास समेत सब में चार नगर । सो वे सारे नगर मरारी
के संतान के घरानों के लिये जो उबरे थे बारह नगर चिट्ठी
४१ से मिले । इसराईल के संतान के अधिकार में लावियों के सब
४२ नगर अरतालीस थे उनके आस पास सहित । उन नगरों में
से हर एक नगर अपने आस पास समेत चारों ओर योंही
४३ समस्त नगर थे ।　　सो परमेश्वर ने सब देश जिसके
विषय में उसने उनके पितरों को देने को किरिया खाई थी
इसराईल को दिया सो वे उसे बश में किया और उस में
४४ बसे । और परमेश्वर ने अपनी किरिया के समान जो उनके
पितरों से खाई थी चारों ओर से उन्हें चैन दिया और उनके
सब शत्रुन में से एक भी उनके साम्ने न ठहरा परमेश्वर ने उनके
४५ सारे शत्रुन को उनके हाथ में कर दिया । उन सारी अच्छी
बातों में से जो परमेश्वर ने इसराईल के घराने को कही थी
एक बात न घटी सब को सब पूरी ऊईं ।

२२ बाईसवां पर्ब्ब ।

अढ़ाई गोष्ठी आशीष पाके अपने अपने देश को
जाती हैं १—८ वे साक्षी की बेदी बनाती हैं
९—१० इसराईली उस्से क्रुद्ध होते हैं ११—२०
वे उनका बोध करते हैं २१—३४ ।

१ तब यहूश्रू ने राऊबीनियों और जादियों और मनस्सा की
२ आधी गोष्ठी को बुलाया। और उन्हें कहा कि उन सब को जो
परमेश्वर के दास मूसा ने तुम्हें आज्ञा किई तुमने पालन किया
३ और उनसब बातों को जो मैं ने तुम्हें कहीं तुम ने माना। और
तुम ने अपने भाइयों को बहुत दिनों से आज लों नहीं छोड़ा
४ परंतु परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा का पालन किया। और
अब परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे भाइयों को चैन दिया
जैसा उसने उनसे बाचा बांधी थी सो तुम अब फिर जाओ
और अपने तंबूओं को अधिकार की भूमि में जाओ जो
परमेश्वर के दास मूसा ने अर्दन के उस पार तुम्हें दिई है।
५ परंतु चैकसी के साथ आज्ञा और व्यवस्था पर जो
परमेश्वर के दास मूसा ने तुम्हें आज्ञा दिई है पालन करो
जिसतें परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रक्खो और उसकी सारी
बातों पर चलो और उसकी आज्ञाओं को पालन करो और
उस्से लवलीन रहो और अपने सारे मन और अपने सारे
६ प्राण से उसकी सेवा करो। और यहूश्रू ने उन्हें आशीष दिया
और उन्हें बिदा किया सो वे अपने अपने तंबूओं को गये।
७ और मनस्सा की आधी गोष्ठी को मूसा ने बाशान में
अधिकार दिया था और आधी को यहूश्रू ने उनके भाइयों के
मध्य में अर्दन के इसी पार पश्चिम दिशा में अधिकार दिया और
जब यहूश्रू ने उन्हें अपने अपने तंबूओं को बिदा किया तब
८ उन्हें भी आशीष दिया। और उन्हें कहा कि बड़े धन के साथ
बहुतसे ढोर और चांदी और सोना और तांबा और लोहा
और बहुत से बस्त्र लेके अपने डेरों को जाओ और अपने
९ शत्रुन की लूट को अपने भाइयों के साथ बांटलेओ। तब
राऊबीन के संतान और जाद के संतान और मनस्सा की
आधी गोष्ठी फिरे और शीलू में से जो किनान की भूमि है
इसराईल के संतान से चले गये जिसतें जलियाद के देश को अपने

अधिकार के देश में जावें जिसे उन्हों ने मूसा के द्वारा से परमेश्वर
१० के बचन के समान पाया था । और जब कि वे अर्दन के
तीरों पर किनान के देश में पहुंचे तो राऊबीन के संतान और
जाद के संतान और मनस्सा की आधी गोष्ठी ने वहां अर्दन
११ पास एक बेदी बनाई एक बड़ी बेदी कि उसे देखा करें। और
इसराईल के संतान ने यह सुन के कहा कि देखो राऊबीन के
संतान और मनस्सा की आधी गोष्ठी ने किनान के देश के साम्हे
अर्दन के तीर पर इसराईल के संतान के मार्ग में बेदी बनाई ।
१२ और जब इसराईल के संतान ने सुना तो इसराईल की
सारी मंडली शीलू में एकट्ठी हुई जिसतें उनपर लड़ाई के
१३ लिये चढ़ जाय। और इसराईल के संतान ने राऊबीन के
संतान के और जाद क संतान के और मनस्सा की आधी गोष्ठी
१४ के पास इलियाज़र याजक के बेटे फिनिहाज़ को भेजा। और
उसके संग दस अध्यक्ष इसराईल की समस्त गोष्ठियों में से
हर एक घर में से श्रेष्ठ अध्यक्ष भेजा जो उन में से हर एक
अपने पितरों के घरानों में सहस्रों इसराईलियों का प्रधान था ।
१५ सो वे राऊबीन के संतान और जाद के संतान के और
मनस्सा की आधी गोष्ठी पास जलियाद के देश में आये और
१६ उन्हें कहि के बोले। कि परमेश्वर की सारी मंडलियों ने कहा
है कि तुमने इसराईल के संतान के ईश्वर के बिरोध यह क्या
अपराध किया है जो तुम आज के दिन परमेश्वर का पीछा
करने से उस बात में फिरगये कि अपने लिये एक बेदी बनाई
१७ जिसतें तुम आज के दिन परमेश्वर के बिरोधी होओ। क्या
हमारे लिये फ़ऊर की बुराई कुछ थोड़ी थी जिस्से हम आज
के दिनलों पवित्र नहीं हुए यद्यपि परमेश्वर की मंडली में
१८ मरी थी। परंतु क्या तुम्हें उचित था कि आज के दिन परमेश्वर
की सेवा करने से फिरजाओ आज तो तुम परमेश्वर से फिरे
हुए हो और कल इसराईल की सारी मंडली पर उसका

१९ कोप भड़केगा। तथापि यदि तुम्हारे अधिकार की भूमि अशुद्ध होवे तो पार आओ इस देश में जो परमेश्वर का अधिकार है जहां परमेश्वर का तंबू है और हमारे बीच अधिकार लेओ परंतु हमारे ईश्वर परमेश्वर की बेदी को छोड़ अपने लिये बेदी बना के परमेश्वर से और हमसे मत फिरजाओ।
२० क्या ज़ारह के बेटे आख़न ने स्थापित बस्तु में चूक न किया और इसराईल की सारी मंडली पर कोप न पड़ा और वुह जन
२१ अकेलाही अपनी बुराई से नाश न हुआ। तब राऊबीन के संतान और जाद के संतान और मनस्सा की आधी गोष्ठी ने इसराईलियों के सहस्रों के प्रधानों को उत्तर देके कहा।
२२ कि परमेश्वर ईश्वरों का ईश्वर परमेश्वर ईश्वरों का ईश्वरही जानता है और इसराईलीभी जानेगा कि यदि फिर जाने में अथवा परमेश्वर के बिरोध करने में यह किया तो हमें आज
२३ के दिन मत छोड़। हमने बेदी बनाई जिसतें परमेश्वर की सेवा से फिरें अथवा उस पर होम की भेंटें अथवा भोजन की भेंट अथवा कुशल की भेंट चढ़ावें तो परमेश्वरही विचार करे।
२४ और यदि हमने उस भय से यह कहिके किया है कि आगे को तुम्हारा बंश हमारे बंश को कहिके बोले कि तुम्हें परमेश्वर
२५ इसराईल के ईश्वर से क्या काम। क्योंकि परमेश्वर ने हमारे और तुम्हारे मध्य में अर्दन की मेड़ बांधी सो हे राऊबीन के संतान और जाद के संतान परमेश्वर में तुम्हारा भाग नहीं सो
२६ तुम्हारा बंश हमारे बंश को परमेश्वर के भय से फेर देवे। इस लिये हमने कहा कि आओ हम अपने लिये एक बेदी बनावें कुछ
२७ होम की भेंटों के और बलिदान के लिये नहीं। परंतु इस लिये कि यह हमारे तुम्हारे मध्यमें और हमारे पीछे हमारी पीढ़ियों के मध्यमें एक साची होव जिसतें हम परमेश्वर के आगे अपनी होम की भेंटों से और बलिदानों से और अपने कुशल के बलिदानों से परमेश्वर की सेवा करें जिसतें

आगे को तुम्हारे बंश हमारे बंश को न कहें कि परमेश्वर में
२८ तुम्हारा भाग नहीं। इस लिये हमने कहा कि ऐसा होगा
कि जब वे हमें अथवा हमारे बंश को कल को कहें तब हम
उन्हें उत्तर देंगे कि देखो परमेश्वर की बेदी का डौल जिसे
हमारे पितरों ने बनाया कुछ होम की भेंट और मनौती की भेंट
के लिये नहीं परंतु इस लिये कि हमारे तुम्हारे मध्य में साक्षी
२९ रहे। ईश्वर न करे कि हम परमेश्वर से फिरजायं और आज
परमेश्वर से फिर के परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी को छोड़ें
जो उसके तंबू के साम्ने है और होम की भेंटें और भोजन की
३० भेंटें और बलिदान के लिये एक बेदी बनावें। जब
फिनिहाज़ याजक और मंडली के अध्यक्ष और इसराईल के
सहस्रों के प्रधानों ने जो उसके साथ थे ये बातें सुनीं जो
राऊबीन के संतान और जाद के संतान और मनस्सा के संतान
३१ ने कहीं तब उनकी दृष्टि में अच्छा लगा। तब इलियाज़र
के बेटे फिनिहाज़ याजक ने राऊबीन के संतान और जाद के
संतान और मनस्सा के संतान से कहा कि आज के दिन हम
देखते हैं कि परमेश्वर तुम्में है इस कारण कि तुमने परमेश्वर
का अपराध न किया क्योंकि तुमने इसराईल के संतान को
३२ परमेश्वर के हाथ से छुड़ाया। तब इलियाज़र का बेटा फिनिहाज़
याजक और अध्यक्ष और राऊबीन के संतान और जाद के
संतान पास से जलियाद की भूमि से किनान के देश में इसराईल
के संतान पास फिर आये और उन पास संदेश पहुंचाये।
३३ उसी बात से इसराईल के संतान प्रसन्न हुए और इसराईल
के संतान ने ईश्वर की स्तुति किई और न चाहा कि युद्ध के लिये उन
पर चढ़जायें और उस देश को जिसमें राऊबीन के संतान और
३४ जाद के संतान बसते थे उजाड़ देवें। तब राऊबीन के संतान और
जाद के संतान ने उस बेदी का नाम साक्षी रक्खा क्योंकि वुह
हमारे मध्य में एक साक्षी ठहरी कि परमेश्वर ईश्वर है।

२३ तेईसवां पर्ब्ब।

अपने मरने से आगे यहूशूअ इसराईलियों को उपदेश करता है १—१६।

१ बहुत दिन पीछे जब परमेश्वर ने इसराईल के संतान को उनके सारे शत्रुन से चैन दिया कि यहूशूअ वृद्ध और २ दिनी हुआ। तब यहूशूअ ने सारे इसराईल और उनके प्राचीन और उनके प्रधान और उनके न्यायी और उनके कड़ोरों को बुलाया और उन्हें कहा कि मैं वृद्ध और दिनी ३ हों। और सब कुछ जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने उन सब जातिगणों के साथ किया देखचुके हो क्योंकि परमेश्वर ४ तुम्हारा ईश्वर आप तुम्हारे लिये लड़ा। देखो मैं ने चिट्ठी डाल के इन सब जातिगणों को जो बचे हैं तुम्हारी गोष्ठियों के लिये अर्दन से लेके समस्त जातिगणों के साथ जिन्हें मैं ने काटडाला है अर्थात् अस्त की ओर महा समुद्र लों अधिकार ५ दिया। और परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही उन्हें तुम्हारे आगे निकाल देगा और तुम्हारी दृष्टि से दूर करेगा और तुम उनकी भूमि को बश में करोगे जैसा कि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम ६ से बाचा बांधी है। इस लिये सब जो मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है उन्हें पालन करने को और धारण करने को हियाव करो जिसतें दहिने अथवा बायें हाथ न मुड़ो। ७ जिसतें तुम इन जातिगणों में जो तुम्हों में बचे हैं मतजाओ और उनके देवों के नाम मत लेओ और उनकी किरिया मत खिलाओ और उनकी सेवा मत करो और न उनको ८ दंडवत करो। परंतु परमेश्वर अपने ईश्वर से लवलीन ९ रहो जैसा आजके दिन लों रहे हो। क्योंकि ईश्वर ने तुम्हारे आगे बड़े बड़े और बलवंत जातिगण को नष्ट किया परंतु कोई आज के दिन लों तुम्हारे साम्ने ठहर न १० सका। तुम्में से एक पुरुष सहस्र को खेदेगा क्योंकि परमेश्वर

तुम्हारा ईश्वर है जो तुम्हारे लिये लड़ता है जैसा उसने तुमसे
११ बाचा बांधी है । इसलिये अपने प्राण को अत्यंत चैाकसी से
१२ रक्खो और परमेश्वर अपने ईश्वर के प्यार करो । यदि तुम
किसी रीति से फिर जाओ और इन्हीं जातिगणों में मिलजाओ
जो तुम्हारे मध्य बचे हैं और उनके साथ बिवाह करो और
१३ उनमें आया जाया करो । तो निश्चय जानो कि परमेश्वर
तुम्हारा ईश्वर फिर उन लोगों को तुम्हारे आगे से दूर न करेगा
परंतु वे तुम्हारे लिये फंदे और जाल और तुम्हारे पंजरों में
छड़ियां और तुम्हारी आंखों में कांटे होंगे यहां लों कि उस
अच्छे देश में से जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें दियाहै
१४ तुम नाश होजाओ । और देखो आज के दिन मैं समस्त
पृथिवी के मार्ग जाता हों और तुम अपने सारे मनों में
और सारे प्राणों में जानते हो कि उन सब भली बातों से जो
जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे विषय में कहीं हैं एक भी
१५ न घटी परंतु सब की सब पूरी हुईं और एक भी न घटी । सो
ऐसा होगा कि जिसरीति से वुह सारी भलाइयां जिनके कारण
परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने बाचा बांधी थी तुम्हारे आगे आईं
उसी रीति से परमेश्वर सारी बुराइयां तुम पर लावेगा यहां
लों कि उस अच्छे देश में जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें
१६ दियाहै तुम्हें नाश करे । जब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की
उस बाचा को जो उसने तुम से किई भंग करोगे और जाके
और देवतों की सेवा करोगे और उन्हें दंडवत करोगे तब
परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़केगा और तुम उस अच्छे देश
से जो उसने तुम्हें दियाहै शीघ्र नाश हो जाओगे ।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब ।

यहूशू सब गोष्ठियों को एकट्ठा करता है और
संक्षेप में परमेश्वर के आशीष बर्णन करता है

१—१३ उनमें और ईश्वर में बाचा को दुहराता है १४—२५ एक पत्थर को साक्षी करता है २६—२८ यशूअ का वय, मृत्यु, और गाड़ा जाना और समाधि पाना २९—३१ यूसफ़ की हड्डियां गाडी जाती हैं और इलियाज़र की मृत्यु ३२—३३

१ उसके पीछे यशूअ ने सारे इसराईल की गोष्ठियों को शकीम में एकट्ठा किया और इसराईल के प्राचीनों को और उनके प्रधानों को और उनके न्यायियों को और उनके करोड़ों को बुलाया और वे ईश्वर के आगे ङए। २ तब यशूअ ने सब लोगों को कहा कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि तुम्हारे पितर इबराहीम का पिता तारा और नाहूर के पिता प्राचीन समय से नदी के उस पार रहते थे अरु और देवतों की सेवा करते थे। ३ और मैं तुम्हारे पिता इबराहीम को नदी के उस पार से लेके किनान के समस्त देश में लिये फिरा और उसके वंश को बढ़ाया और उसे इसहाक़ दिया। ४ और इसहाक़ को याक़ूब और यशू दिये और यशू को रहने के लिये सीर पहाड़ दिया परंतु याक़ूब और उसके वंश मिसर को उतरगये। ५ तब मैं ने मूसा और हारून को भेजा और उन सब कामों से जो मैं ने वहां किये मिसर को मारा और उसके पीछे तुम्हें निकाल लाया। ६ और मैं तुम्हारे पितरों को मिसर से निकाल लाया और तुम समुद्र पर आये तब मिसरियों ने रथ और घोड़चढ़े लेके लाल समुद्र लों तुम्हारा पीछा किया। ७ और जब उन्हों ने परमेश्वर की प्रार्थना किई तब उसने तुम्हारे और मिसरियों के मध्य अंधियारा करदिया और समुद्र को उन पर फेर दिया और उन्हें ढांप लिया और जो कुछ मैं ने मिसर में किया तुम ने अपनी आंखों से देखा और तुम बऊत दिन लों अरण्य में रहा किये। ८ फिर मैं तुम्हें उन अमूरियों के देश में जो अर्दन के उस पार रहते थे ले आया वे तुम से लड़े और

मने उन्हें तुम्हारे हाथ में सौंपदिया जिसतें तुम उनके देश को बश में करो और मैं ने उन्हें तुम्हारे आगे नाश किया।
९ तब मवाब का राजा सफ़्फूर का बेटा बलक उठा और इसराईल से लड़ा और बऊर के बेटे बलआम को बुलाभेजा कि तुम्हें
१० स्राप देवे। पर मैं बलआम की न सुनताथा इसलिये वुह तुम्हें आशीष देतागया सो मैं ने तुम्हें उसके हाथ से छुड़ाया।
११ फिर तुम अर्दन पार उतरे और अरीहा को आये और अरीहा के लोग अमूरी और फ़रज़ी और किनानी और हट्टी और गर्गसी और हवी और यबूसी तुम से लड़े और मैं ने
१२ उन्हें तुम्हारे बश में किया। तब मैं ने तुम्हारे आगे बर्रों को भेजा जिसने उन्हें अर्थात् अमूरियों के दो राजाओं को तुम्हारे आगे से हांकदिया परंतु तुम्हारी तलवार और धनुष से नहीं।
१३ और मैं ने तुम्हें वुह देश दिया जिसके लिये तुम ने परिश्रम न किया और वे नगर जिन्हें तुम ने न बनाया और तुम उनमें बसे हो तुम दाख की बारी और जलपाई की बारी से जो
१४ तुम ने नहीं लगाई खाते हो। सो अब तुम परमेश्वर से डरो और सीधाई से और सचाई से उसकी सेवा करो और उन देवतों को जिन की तुम्हारे पितर नदी के उस पार और मिसर में सेवा करते थे निकाल फेंको और परमेश्वर की सेवा
१५ करो। और यदि परमेश्वर की सेवा करना तुम्हें बुरा जानपड़े तो आज के दिन चुनो कि किसकी सेवा करोगे उन देवतों की जिनकी सेवा तुम्हारे पितर नदी के उस पार करते थे अथवा अमूरियों के देवतों को जिनके देश में तुम बसते हो परंतु मैं
१६ और मेरा घराना परमेश्वर की सेवा करेंगे। तब लोगों ने उत्तर देके कहा कि ईश्वर न करे कि हम परमेश्वर को त्यागके
१७ आन देवतों की सेवा करें। क्योंकि परमेश्वर हमारा ईश्वर है जो हमें और हमारे पितरों को मिसर देश से बंधुआई के घर से निकाललाया और जिसने बड़े बड़े आश्चर्य हमारी

आंखों के साम्ने दिखाये और हमारे सारे मार्गों में जहां जहां हम चलते थे और उन सब लोगों के मध्य जिन में से होके
१८ आये हमारी रक्षा किई। और परमेश्वर ने सारे लोगों को अर्थात् अमूरियों को जो उस देश में बसते थे हमारे आगे से निकालदिया इस लिये हम भी परमेश्वर की सेवा करेंगे क्योंकि
१९ वही हमारा ईश्वर है। फिर यशूअ ने लोगों को कहा कि तुम परमेश्वर की सेवा न करसकोगे क्योंकि वुह पवित्र ईश्वर और ज्वलित ईश्वर है जो तुम्हारे अपराधों और तुम्हारे पापों को क्षमा
२० न करेगा। यदि तुम परमेश्वर को त्यागोगे और उपरी देवतों की सेवा करोगे तो वुह भला करने के पीछे फिर के तुम्हें
२१ दुःखदेगा और तुम्हें नाश करडालेगा। तब लोगों ने यशूअ को कहा कि कभी नहीं परंतु हम परमेश्वरही की सेवा करेंगे।
२२ फिर यशूअ ने लोगों को कहा कि तुम आपही अपने पर साक्षी हो कि सेवा के लिये तुम ने परमेश्वर को चुनलिया है वे बोले
२३ कि हम साक्षी हैं। सो अब तुम उपरी देवतों को जो तुम्हारे मध्य हैं निकाल फेंको और अपने अपने मनको परमेश्वर
२४ इसराईल के ईश्वर की ओर झुकाओ। तब लोगों ने यशूअ को कहा कि हम परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करेंगे और उसका
२५ शब्द मानेंगे। तब यशूअ ने उस दिन लोगों से वाचा बांधी और उनके लिये बिधि और व्यवहार शकीम में ठहराये।
२६ और यशूअ ने ईश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में उन बातों को लिख रक्खा और एक बड़ा पत्थर लेके सीतावृक्ष तले, जो
२७ परमेश्वर की पवित्रता में था, खड़ा किया। और यशूअ ने सारे लोगों को कहा कि देखो यह पत्थर हमारा साक्षी होगा क्योंकि उसने वे सब बातें जो परमेश्वर ने हमें कहीं सुनी हैं इस लिये यही तुम पर साक्षी होगा नहो कि तुम अपने ईश्वर से
२८ मुकर जाओ। फिर यशूअ ने हर एक जन को अपने अपने
२९ अधिकार की ओर बिदा किया। और ऐसा हुआ कि

उन बातों के पीछे परमेश्वर का दास नून का बेटा यशूअ एकसै।
१० दस बरस का होके मरगया। और उन्हों ने उसके अधिकार अर्थात् तिमनाससीराह के सिवाने में जो गआश की पहाड़ी की
११ उत्तर दिशा अफराइम पहाड़ में है, उसे गाड़ा। और इसराईल यशूअ के जीवन भर और प्राचीनों के जीवन भर जो यशूअ के पीछे जीये और परमेश्वर के सारे कार्यों को जो उसने इसराईल के संतान के लिये किये जानते थे परमेश्वर की
१२ सेवा करते रहे। और यूसफ़ की हड्डियों को जिन्हें इसराईल के संतान मिसर से उठालाये थे उन्हों ने शकीम की उस भूमि में गाड़ा जिसे याक़ूब ने शकीम के पिता हमूर के बेटों से सौ टुकड़े चांदी से मोल लियाथा सो वुह भूमि यूसफ़ के संतान की
१३ अधिकार हुई। और हारून का बेटा इलियाज़र भी मरगया और उन्हों ने उसे उस पहाड़ में जो उसके बेटे फिनिहाज़ का था जो अफराईम के पहाड़ में उसे दिया गया था, गाड़ा।

न्यायियों की पुस्तक।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

यहूदा और शमऊन का किनानियों से युद्ध करना और उन्हें वशमें लाना १—२० बनियामीन यबूसियों को यिरोशलीम से दूर नहीं कर सक्ता २१। अफराईम और मनस्सा बैतईल को लेते हैं २२—२६ मनस्सा, अफराईम, ज़बलून, अशर, नफतूली ने किनानियों को दूर न किया २७—३३ अमूरी ने दान को पर्ब्बत में खेदा ३४—३६।

१ अब यशूअ के मरने के पीछे यों हुआ कि इसराईल के संतानों ने परमेश्वर से यह कहिके पूछा कि किनानियों से युद्ध करने को २ हमारे कारण पहिले कौन चढ़ जाय। परमेश्वर ने कहा कि यहूदा चढ़ जाय और देखो मैंने देश को उसके हाथ में ३ कर दियाहै। तब यहूदा ने अपने भाई शमऊन को कहा कि मेरे भाग में मेरे साथ चढ़िये जिस्तें हम किनानियों से लड़ें और इसी रीति से मैं भी तेरे भाग में तेरे साथ ४ चढ़ोंगा सो शमऊन उसके साथ गया। तब यहूदा चढ़ गये और परमेश्वर ने किनानियों और फ़रज़ियों को उनके हाथ में कर दिया और उन्हों ने उनमें से बज़क में दस सहस्र पुरुष को ५ घात किया। और उन्हों ने अदूनीबज़क को बज़क में पाया और ६ उस्से लड़े और किनानियों और फ़रज़ियों को मारा। परंतु अदूनीबज़क भाग निकला और उन्हों ने उसका पीछा किया

७ और जा पकड़ा और उसके हाथ पांव के अंगूठे काटे। तब अदूनीबज़क ने कहा कि हाथ पांव के अंगूठे काटे ऊर सत्तर राजा मेरे मंच के तले चूर घार चुन चुन खाते थे सा जैसा मैंने किया था वैसाही ईश्वर ने मुझे पलटा दिया फिर
८ वे उसे यिरोशलीम में लाये और वुह वहां मर गया। अब यहूदा के संतान यिरोशलीम से लड़े थे और उसे लेलिया था और उसे तलवार की धार से मारा और नगर को आग से
९ फूंक दिया। उसके पीछे यहूदा के संतान उतर के उन किनानियों से जो पहाड़ में और दक्षिण में और तराई में
१० बसते थे लड़े। और यहूदा ने उन किनानियों का साम्ना किया जो हबरून में रहते थे उन्हों ने शीशाई और अहीमान और तलमई को मारा हबरून का नाम आगे करियासअर्बा था।
११ और वुह वहां से दबर के बासियों पर चढ़ गया और दबर का
१२ नाम आगे करियाससफ़र था। तब कालिब ने कहा कि जो कोई करियाससफ़र को मार लेगा मैं उसे अपनी कन्या
१३ अक़साह को बियाह देऊंगा। तब कालिब के लहुरे भाई क़ीनाज़ के बेटे असनईल ने उसे लेलिया और उसने अपनी
१४ कन्या अक़साह उसे बियाह दिई। और ऐसा हुआ कि जातेही उसने उसे उभाड़ा कि पिता से एक खेत मांगे फिर वुह अपने गदहे पर से उतरी तब कालिब ने उसे कहा कि
१५ तू क्या चाहती है। उसने उसे कहा कि मुझे आशीष दीजिये क्योंकि तूने मुझे दक्षिण दिशा की भूमि दिई मुझे पानी के सोते भी दीजिये तब कालिब ने ऊपर के और नीचे के सोते
१६ उसे दिये। तब मूसा के ससुर क़ीनी का बंश यहूदा के संतान के साथ खजूरों के नगर में से यहूदा के अरण्य को जो आराद की दक्षिण की ओर है चढ़गये और उन लोगों में
१७ जा बसे। और यहूदा अपने भाई शमऊन के साथ गया और उन्हों ने उन किनानियों को जो सूफ़ास में रहते थे जा मारा

और उसे सर्बथा नाश किया और उस नगर का नाम हुरमा
१८ रक्खा। और यहूदा ने ग़ज़ः को उसके सिवाने सहित और
असक़लून को उसके सिवाने सहित और अक़रून को उसके
१९ सिवाने सहित लेलिया। और परमेश्वर यहूदा के साथ था
और उसने पर्ब्बतियों को दूर किया परंतु तराई के बासियों को
२० निकाल न सका क्योंकि उनके रथ लोहे के थे। तब उन्हों ने
मूसा के कहने के समान कालिब को हबरून दिया और उसने
२१ वहां से अनाक के तीन बेटों को दूर किया। और बनियामीन के
संतान यबूसियों को जो यिरोशलीम में रहते थे दूर न किया
परंतु यबूसी बनियामीन के संतान के साथ आज के दिन लों
२२ यिरोशलीम में बसते हैं। और यूसफ़ का घराना भी
२३ बैतईल पर चढ़गया और परमेश्वर उनके साथ था। और
यूसफ़ के घराने ने बैतईल का भेद लेने को भेजा इस नगर का
२४ नाम आगे लूज़ था। और भेदियों ने नगर से एक मनुष्य को
बाहर आते देखके उसे कहा कि नगर का पैठ हमें बतला
२५ और हम तुझ पर दया करेंगे। सो जब उसने उन्हें नगर का
पैठ बताया उन्हों ने नगर को तलवार की धार से मारा परंत
२६ उस मनुष्य को उसके सारे घराने समेत छोड़ दिया। और
वुह मनुष्य हट्टियों की भूमि में गया और वहां एक नगर
बनाया और उसका नाम लूज़ रक्खा जो आज लों उसका
२७ नाम है। और मनस्सा के संतान ने भी बैतशियन और
उसके गाओं को और तानाख़ को और उसके गांओं को और
दोर के बासियों को और उसके गांओं को और इबलियाम को
और उसके गांओं के बासियों को और मगद्दू के और उसके
गांओं के बासियों को न निकाल दिया परंतु किनानी उसी
२८ देश में बसेही किये। और यों हुआ कि जब इसराईल
प्रबल हुए तब उन्हों ने किनानियों से कर लिया और उन्हें
२९ सर्बथा निकाल न दिया। और अफ़राईम ने भी उन

किनानियों को जो गज़र में बसते थे न निकाला परंतु किनानी
३० उनके साथ गज़र में बसते थे। और ज़बलून ने भी कितरून और
नहलूल के बासियों को न निकाला परंतु किनानी उन्हीं में रहे
३१ और करदायक ऊए। और अशीर ने भी अक्कू और
सीदून और अहलाब और अकज़िब और हलबः और अफ़ीक़
३२ और रहूब के बासियों को दूर न किया। परंतु अशीरी उन
किनानियों में जो उस देश के बासी थे बसे क्योंकि उन्हों ने
३३ उन्हें दूर न किया। और नफ़ताली ने भी बैतशमश और
बैतअनास के बासियों को दूर न किया परंतु वुह उस देश के बासी
किनानियों में रहा तथापि बैतशमश और बैतअनास के बासी
३४ उनके करदायक ऊए। और अमूरियों ने दान के संतान को
३५ पहाड़ में खेदा क्योंकि वे उन्हें तराई में उतरने न देते थे। परंतु
अमूरी हीरीस पहाड़ में अजलून में और शालबीम में
बसही किये तथापि यूसफ़ के घराने का हाथ गरू ऊआ यहां लों
३६ कि उन्हें करदायक किया। और अमूरानियों का सिवाना
अक्रबिम की चढ़ाई से पहाड़ से ऊपर लों था।

२ दूसरा पर्ब्ब।

एक दूत लोगों की अवज्ञा के कारण उन्हें दपटता है और लोग विलाप करते हैं १—५ लोग यशूअ और प्राचीन के समय लों परमेश्वर की सेवा करते हैं परंतु दूसरी पीढ़ी प्रतिमा पूजती है ६—१३ परमेश्वर उनसे उदास है तथापि उनपर दया करता है १४—१८ किनानी उनके पाप के कारण उनकी परीक्षा के लिये देश में रहने पाते हैं १९—२३।

१ तब परमेश्वर के दूत ने जलजाल से बोकिम को आके कहा
कि मैंने तुम्हें मिसर से उठाके इस देश में जिसके कारण
तुम्हारे पितरों से किरिया खाई थी ले आया और मैंने कहा

२ कि मैं तुमसे कभी अपनी बाचा नतोड़ोंगा। और तुम इस देश के बासियों के साथ बाचा नबांधियो तुम उनकी बेदियों को ढाइयो परंतु तुमने मेरे शब्द को नमाना तुमने ऐसा क्यों किया।
३ इसी कारण मैंने भी कहा कि मैं उन्हें तुम्हारे आगे से दूर नकरोंगा परंतु वे तुम्हारे पांजरों में कांटे और उनके देवते
४ तुम्हारे लिये फंदे होंगे। और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर के दूत ने सारे इसराईल के संतान को ये बातें कहीं तो उन्हों ने
५ बड़े शब्द से बिलाप किया। और उन्हों ने उस स्थान का नाम बिलापी रक्खा और उन्हों ने वहां परमेश्वर के लिये बलि
६ चढ़ाया। और जब कि यशूअ ने लोगों को बिदा किया था तब इसराईल के संतान में से हर एक अपने अपने
७ अधिकार को गया जिसतें उस देश को बश में करे। और यशूअ के जीवन भर और उन प्राचीनों के जीवन भर जो यशूअ के पीछे रहे जिन्हों ने परमेश्वर के बड़े बड़े कार्य जो उसने इसराईल के लिये किये देखे थे तब लों लोग परमेश्वर की
८ सेवा करते रहे। और परमेश्वर का दास नून का बेटा यशूअ
९ एक सौ दस बरस का वृद्ध होके मर गया। और उन्हों ने उसके अधिकार के सिवाने तमनासहिरिस में अफ़राईम के पहाड़ में
१० जो गाश के पहाड़ की उत्तर अलंग है उसे गाड़ा। और वही समस्त पीढ़ी भी अपने पितरों में बटोरी गई और उनके पीछे दूसरी पीढ़ी उठी जिसने परमेश्वर को और उन कार्य्यों को
११ नहीं पहिचाना जो उसने इसराईल के लिये किये थे। तब इसराईल के संतान ने परमेश्वर के आगे बुराई किई और
१२ बआलिम की सेवा किई। और अपने पितरों के परमेश्वर ईश्वर को जो उन्हें मिसर के देश से निकाल लाया था छोड़ दिया और उपरी देवों का पीछा किया अर्थात् अपने चारों ओर के लोगों के देवों के आगे दंडवत किई और परमेश्वर को
१३ रिस दिलाया। सो उन्हों ने परमेश्वर को छोड़ दिया और

१४ बअ़ाल और अश़्तरूत की सेवा किई । तब परमेश्वर का क्रोध इसराईल पर भड़का और उसने उन्हें नष्ट कारियों के बश में कर दिया जिन्हों ने उन्हें नष्ट किया और उसने उन्हें आस पास के बैरियों के हाथ में बेचा यहां लों कि आगे वे
१५ अपने बैरियों के आगे न ठहर सके थे । सो जहां कहीं वे निकलते थे परमेश्वर का हाथ बुराई के लिये उनके बिरोध में था जैसा कि परमेश्वर ने कहा था और जैसा कि परमेश्वर ने
१६ उन से किरिया खाई थी और वे अत्यंत दुःखी हुए । तथापि परमेश्वर ने न्यायियों को खड़ा किया जिन्हों ने उन्हें उनके नष्ट
१७ कारियों के हाथ से छुड़ाया । तद भी वे अपने न्यायियों की भी न सुनते थे परंतु उपरी देवों के पश्चाद्गामी हुए और उनके आगे दंडवत किई और वे उस मार्ग से जिस पर उनके पितर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके चलते थे बहुत शीघ्र उलटे
१८ फिरे परंतु उन्हें पालन न किया । और जब परमेश्वर उनके लिये न्यायियों को खड़ा करता था तब परमेश्वर न्यायी के साथ रहता था और उन्हें उनके शत्रुन के हाथ से न्यायी के जीवन भर छुड़ाता रहा क्योंकि उनके कहरने के कारण से जो उनको और से था जो उन्हें सताते और खिजाते थे परमेश्वर
१९ पछताया । और ऐसा हुआ कि जब न्यायी मर जाता था तब वे फेर फिर जाते थे और आप को अपने पितरों से अधिक उपरी देवों के पीछे उनकी सेवा करने को और उन्हें दंडवत करने को चल चल के बिगाड़ते थे वे अपनी अपनी चाल से
२० और अपने अपने हठीले मार्ग से न फिरते थे । तब परमेश्वर का क्रोध इसराईल पर भड़का और उसने कहा इस कारण कि जैसा इन लोगों ने मेरी उस बाचा को जो मैंने उनके पितरों से बांधी थी भंग किया है और मेरे शब्द को
२१ न माना है । मैं भी अब से उन लोगों में से जिन्हें यहूसूअ छोड़ के
२२ मरा किसी को भी उनके आगे से दूर न करोंगा । जिसतें मैं

उनके द्वारा से इसराईल को परखें कि वे अपने पितरों की नाईं परमेश्वर के मार्ग पर चलने को पालन करेंगे कि नहीं।
२३ सो परमेश्वर ने उन जातिगणों को छोड़ा कि उन्हें शीघ्र दूर न किया और उसने उन्हें यशूअ के हाथ में न सौंपा।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

जातिगण इसराईल की परीक्षा के लिये छोड़ेगये और इसराईल उन से देव पूजा में फुसलाये गये ईश्वर का कोप और दया उन पर होतीहै १—११ पाप के कारण वे बैरी के वश में होतेहैं फेर परमेश्वर उन्हें छुड़ाताहै १२—३० एक जन छःसौ फलस्तियों को बैल की अरई से बधन करताहै ३१ ।

१ येवे जातिगण जिन्हें परमेश्वर ने इसराईल की परीक्षा के लिये उन में छोड़ा अर्थात् उन में जो किनान के सारे संग्राम
२ न जानतेथे। केवल जिसतें इसराईल के संतान की पीढ़ी निज करके जो आगे लड़ाई का भेद नजानतेथे उन से सीखें।
३ फ़लस्तियों के पांच अध्यक्ष और सारे किनानी और सैदानी और हव्वी थे जो लबनान पर्ब्बत में बाल हरमून पर्ब्बत से लेके
४ हमास के पैठलों बसतेथे। और वे इसराईल की परीक्षा के लिये थे जिसतें देखें कि वे परमेश्वर की उन आज्ञाओं को जो उसने मूसा की ओर से उनके पितरों को दिईथी मानेंगे कि
५ नहीं। सो इसराईल के संतान किनानियों और हित्तियों और अमूरियों और फ़रज़ियों और हव्वियों और
६ यबूसियों में बसतेथे। और उन्हों ने उनकी बेटियों को अपनी पत्नियां किया और उनको बेटियां अपने बेटों को दिया और
७ उनके देवों की सेवा किई। और इसराईल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और परमेश्वर अपने ईश्वर को
८ भूलगये और बालिम और कुंजों की सेवा किई। इसलिये

इसराईल के संतान पर परमेश्वर का कोप भड़का और उसने उन्हें कुशानरिशाथाईम अरमनहाराईम के राजा के हाथ बेचा और इसराईल के संतान ने कुशानरिशाथाईम की सेवा
९ आठ बरस लों किई। और जब इसराईल के संतान ने परमेश्वर से दोहाई दिई तब परमेश्वर ने इसराईल के संतान के लिये एक निस्तारक खड़ा किया जिसने उन्हें छुड़ाया अर्थात्
१० कालिब के लहुरे भाई कीनाज़ के पुत्र असनईल। और परमेश्वर का आत्मा उसपर था और उसने इसराईल का न्याय किया और संग्राम को निकला तब परमेश्वर ने अरम के राजा कुशानरिशाथाईम को उसके हाथ में सौंप दिया और
११ उसका हाथ कुशानरिशाथाईम पर प्रबल हुआ। और देश को चालीस बरस लों चैन हुआ और कीनाज़ का बेटा असनईल
१२ मरगया। फिर इसराईल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई तब परमेश्वर ने मवाब के राजा अग़लून को इसराईल पर प्रबल किया इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर की
१३ दृष्टि में बुराई किई। और उसने अमून के और अमालक के संतान को अपने पास एकट्ठा किया और जाके इसराईल को
१४ मारा और खजूर पेड़ों के नगर को बश में किया। सो इसराईल के संतान मवाब के राजा अग़लून की सेवा अठारह
१५ बरस लों करते रहे। परंतु जब इसराईल के संतान परमेश्वर के आगे चिल्लाये तब परमेश्वर ने एक बनियामीनी जारा के बेटे यहूद को जो बैंहथा था उनके छुड़ाने के लिये उभाड़ा और इसराईल के संतान ने उसके द्वारा से मवाब के राजा अग़लून के
१६ लिये भेंट भेजी। परंतु यहूद ने हाथ भर का दोधारा खंजर बनाया और उसे अपने दहिनी जांघ में बस्त्र के तले बांधा।
१७ और वुह मवाब के राजा अग़लून के पास भेंट लाया और
१८ अग़लून बड़ा मोटा जन था। और जब वुह भेंट देचुका तब
१९ उसने उन लोगों को जो भेंट उठाये थे बिदा किया। परंतु

वुह आप उन मूरतों के पास से जा जलजाल में है लौटा और कहा कि हे राजा मेरे पास तेरे लिये एक गुप्त संदेश है उसने कहा कि चुपके रह तब जितने लोग पास खड़ेथे बाहर
२० निकल गये । तब यहूद उस पास आया और वुह एक ठंडी बैठक में जो उसने अपने लिये बनाई थी एकेला बैठा था और यहूद ने कहा कि ईश्वर का संदेश आप के लिये मुझ पास है तब
२१ वुह आसन पर से उठखड़ा हुआ । तब यहूद ने अपना बांयां हाथ बढ़ाया और दहिनी जांघ पर से खंजर को लिया और
२२ उसकी तोंद में गोद दिया । और मूठ भी फलके पीछे पैठगई और चिकनाई से फल ढंपगया यहां लों कि वुह खंजर को उसकी
२३ तोंद से निकाल नसका और मल निकल पड़ा । तब यहूद ओसारे में होके बाहर निकला और अपने पीछे बैठक के
२४ द्वारों को खींच लिया और उन्हें बंद किया । और वुह बाहर निकल गया तब उसके सेवक आये और उन्हों ने बैठक के द्वार को बंद देख के कहा कि निश्चय वुह अपने ग्रीष्म स्थान में
२५ चैन करता है । और वे ठहरते ठहरते लज्जित हुए और देखो कि उसने बैठक के द्वार को नहीं खोला इस लिये उन्हों ने कूंजी लेके खोला और क्या देखते हैं कि उनका प्रभु भूमिपर
२६ मरापड़ा है । पर उनके ठहरते ठहरते यहूद भाग निकला
२७ और मूरतों से पार हुआ और सीरात को बचगया । और आतेही यों हुआ कि उसने पहाड़ अफ़राईम पर नरसिंगा फूंका तब इसराईल के संतान उसके साथ पहाड़ पर से उतरे
२८ और वुह उनके आगे आगे हुआ । और उसने उन्हें कहा कि मेरे पीछे पीछे हो लेओ क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे शत्रु मवाबियों को तुम्हारे हाथ में कर दिया सो वे उसके पीछे पीछे उतर आये और अर्दन के घाटों को, जो मवाब की ओर थे,
२९ लेलिया और एक को भी पार उतर ने न दिया । उसी समय उन्हों ने मवाब के दस सहस्र मनुष्य के अटकल सब जो पुष्ट

३० और लड़ाक थे घात किये उनमें से एक भी न बचा। सो उस दिन मवाब इसराईल के बश में ऊआ और देश ने अस्सी
३१ बरस लों चैन पाया। उसके पीछे अनास का बेटा शमगर ऊआ जिसने छः सौ फ़लस्तानियों को बैल की अरइ से मारा और उसने भी इसराईल को छुड़ाया।

४ चौथा पर्ब्ब।

इसराईल फेर परमेश्वर से फिरजाते हैं और बैरी के बश में होते हैं १—३ उनके गिड़गिड़ाने से परमेश्वर उनका निस्तार करता है और उनका बैरी एक स्त्री के हाथ से मारा जाता है ४—२४।

१ और जब यहूद मरगया तब इसराईल के संतान ने फिर
२ परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई। और परमेश्वर ने उन्हें किनान के राजा याबीन के हाथ में बेचा जो हासूर में राज्य करता था उसकी सेना के अध्यक्ष का नाम सिसरा था जो
३ अन्य देशी के हरोशीथ में रहता था। तब इसराईल के संतान परमेश्वर के आगे चिल्लाये क्योंकि उस पास लोहे के नवसौ रथ थे और उसने बीस बरस लों इसराईल के संतान को कठोरता से
४ सताया। और लपीडूस की पत्नी दबूरा आगमज्ञानिनी
५ उस समय में इसराईल का न्याय करती थी। और पहाड़ अफ़राईम में रामा और बैतईल के मध्य दबूरा के खजूर तले रहती थी और इसराईल के संतान उस पास न्याय के लिये
६ चढ़ आते थे। उसने क़ादस नफ़ताली से अबीनोआम के बेटे बरक़ को बुला भेजा और उसे कहा कि क्या परमेश्वर इसराईल के ईश्वर ने आज्ञा नहीं किई कि जा और ताबूर पहाड़ की ओर लोगों को बटोर? और नफ़ताली और ज़बलून के संतान में से
७ दस सहस्र जन अपने साथ ले। और मैं कीसून की नदी पर सिसरा को याबीन की सेना का प्रधान उसके रथ और उसकी

मंडली समेत तेरी ओर बटोरोंगा और उसे तेरे हाथ में
८ कर देऊंगा। और बरक़ ने उसे कहा कि यदि तू मेरे साथ
जायेगी तो मैं जाओंगा परंतु यदि तू मेरे साथ न जायेगी
९ तो मैं न जाओंगा। वुह बोली कि निश्चय मैं तेरे साथ चलूंगी
तथापि जो यात्रा तू करता है सो तेरी प्रतिष्ठा के लिये नहोगी
क्योंकि परमेश्वर सिसरा को एक स्त्री के हाथ में सौंपेगा तब
१० दबूरा उठी और बरक़ के साथ क़ादस को गई। और
बरक ने ज़बुलून और नफ़ताली को क़ादस में बुलाया और वुह
दस सहस्र जन अपने साथ लेके चढ़ा और दबूरा भी उसके
११ साथ साथ चढ़गई। अब हीबर कीनी ने जो मूसा के ससुर
होबाब के वंश में का था, कीनियों से आप को अलग किया
और अपना डेरा सआनाईम में क़ादस के लग चैागान में
१२ खड़ा किया। तब सिसरा को संदेश पऊंचा कि अबीनोआम का
१३ बेटा बरक़ पहाड़ ताबूर पर चढ़ गया। तब सिसरा ने अपने
समस्त रथ अर्थात् लोहे के नौ सौ रथ और अपने साथ के
सारे लोग लिये अन्यदेशी के हरोशीथ से कीसून की नदी पर
१४ प्रचार कर के एकट्ठे किये। तब दबूरा ने बरक़ को कहा कि
उठ क्योंकि यह वुह दिन है जिसमें परमेश्वर ने सिसरा को
तेरे हाथ में कर दिया है क्या परमेश्वर तेरे आगे नहीं गया
तब बरक़ ताबूर पहाड़ से नीचे उतरा और दस सहस्र जन
१५ उसके पीछे पीछे। और परमेश्वर ने सिसरा को, और समस्त
रथों को, और सारी सेना को, बरक़ के आगे तलवार की धार से
हरा दिया यहां लों कि सिसरा रथ पर से उतर के पांव पांव
१६ भागा। परंतु बरक़ रथों और सेनाओं के पीछे अन्यदेशियों के
हरोशीथ लों रगेदे गया और सिसरा की सारी सेना तलवार की
१७ धार से मारी गई और एक भी नबचा। तथापि सिसरा
पांव पांव भाग के हीबर कीनी की पत्नी जाईल के तंबू में घुसा
क्योंकि हासूर के राजा याबीन और हीबर क़ीनी के घर में

१८ मिलाप था। तब जाईल सिसरा से मिलने को निकली और उसे कहा कि हे मेरे प्रभु इधर फिरिये मेरे यहां फिरिये मत डरिये और जब वुह उसके तंबू में फिर गया उसने उसे एक १९ ओढ़ने से ढांप दिया। तब उसने उसे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हों कि मुझे तनिक जल दीजिये क्योंकि मैं प्यासा हों सो उसने दूध का एक कुप्पा खोल के उसे पिलाया २० और उसे ढांप दिया। फिर उसने उसे कहा कि तंबू के द्वार पर खड़ी रह और यों होगा कि जब कोई आके तुझ्से पूछे और २१ कहे कि कोई पुरुष यहां है तो कहियो कि नहीं। तब हीबर की पत्नी जाईल ने तंबू का एक कील और हथौरा हाथ में लिई और हौले हौले उस पास जाके कील को उसकी कनपटी में ठोंका और भूमि में गड़ा दिया क्योंकि वुह थका होके बड़ी नींद २२ में था सो वुह मर गया। और देखो कि जब बरक़ सिसरा को रगेदता आया तो जाईल उसकी भेंट को निकली और उसे कहा कि आ मैं तुझे उस जन को, जिसे तू ढूंढ़ता है, दिखाओं और जब वुह भीतर आया तो देखता है कि सिसरा मरा २३ पड़ा है और कील उसकी कनपटी में है। सो ईश्वर ने उस दिन किनान के राजा याबीन को इसराईल के संतान के बश में किया। २४ और इसराईल के संतान का हाथ भाग्यमान हुआ और किनान के राजा याबीन पर प्रबल हुआ यहां लों कि उन्हों ने किनान के राजा याबीन को नाश किया।

५ पांचवां पर्ब्ब।

दबूरा और बरक़ का भजन।

१ उसी दिन दबूरा और अबीनोआम के बेटे बरक़ ने गाके कहा।
२ कि इसराईल के पलटा लेने के लिये जब लोगों ने मनमंता आपको
३ सौंप दिया परमेश्वर की स्तुति करो। हे राजाओ सुनो और हे राज पुचो कान धरो मैं हीं परमेश्वर के लिये गाओंगा मैं

४ परमेश्वर इसराईल के ईश्वर के लिये गाओंगा। हे परमेश्वर जब तू सईर से निकला जब तूने अदूम के चैागान से यात्रा किई तब भूमि थर्थरा उठी और स्वर्ग टपके और मेघों से भी
५ बूंदियां पड़ीं। पहाड़ परमेश्वर के आगे बहिगये अर्थात्
६ सीना परमेश्वर इसराईल के ईश्वर के आगे। अनास के बेटे शमगार के दिनों में जाईल के समय में राजमार्ग सूने थे और
७ पथिक टेढ़े मार्गों से जाते थे। गांव रहिगये वे इसराईल में से उठगये जब लों कि मैं दबूरा न उठी कि मैं इसराईल में एक
८ माता उठी। जब उन्हों ने नये देवों को चुनलिया तब फाटकों पर युद्ध ऊआ क्या इसराईल के चालीस सहस्त्रों में एक ढ़ाल
९ अथवा एक भाला था? । मेरा मन इसराईल के अध्यक्षों की ओर है जिन्हों ने लोगों में मनमंता आप को सौंप दिया तुम
१० परमेश्वर का धन्य माना। तुम जा श्वेत गदहों पर चढ़तेहा और जा न्याय पर बैठतेहा और मार्ग चलतेहा साचा।
११ कि पानी खींचने के स्थानों में धनुषधारियों क शब्द से लोग परमेश्वर के धर्मों की चर्चा करेंगे अर्थात् धर्म कार्य्यों को जो गांओं में इसराईल पर ऊए तब परमेश्वर के लोग फाटकों पर
१२ उतरजायेगें। जाग जाग हे दबूरा जाग जाग और गीत गा, उठ हे बरक़ और अबीनोआम के बेटे अपने बंधुअन को बंधुआई
१३ में लेजा। फिर उसने उसे, जो बच रहाहै, लोगों के प्रधानों पर प्रभुता दि॰ परमेश्वर ने मुझे सामर्थी पर प्रभुता दिई।
१४ अफ़राईम में से एक जड अमालक के सन्मुख ऊई और तेरे लोगों में से हे बनियामीन तेरे पीछे माखीर में से अध्यक्ष उतर आये और ज़बुलून में से जो लेखनी से खींचते हैं।
१५ यसाख़ार के अध्यक्ष दबूरा के साथ थे अर्थात् यसाख़ार बरक़ के साथ वुह पांव पांव तराई को भेजा गया क्योंकि राओबीन
१६ के बिभागों में मन में बड़ी बड़ी चिंता ऊई। तू क्यों झुंडों का मिमियाना सुन्ने को भेड़ शालों में रहा, राओबीन के बिभागों से

१७ मन में बड़ी बड़ी चिंता ऊई। जलियाद अर्दन पार रहा
और दान जहाज़ों पर क्यों रहगया? और अशर समुद्र के
१८ घाट में और कोलों में ठहर रहा। और ज़बलून और
नफ़ताली ने चैागान में ऊंचे ऊंचे स्थानों पर अपने प्राण को
१९ तुच्छ जाना। राजा आके लड़े किनान के राजाओं ने तनाक
में मगद्दू के पानियों पर युद्ध किया उन्हों ने कुछ रोकड़ न लिया।
२० वे स्वर्ग पर से लड़े तारागण अपने अपने चक्र में सिसरा से
२१ लड़े। कैशून की नदी वुह प्राचीन नदी कैशून नदी उन्हें बहा ले
२२ गई हे मेरे प्राण तू ने बल को रौंद डाला। तब उनके वीरों के
२३ घोड़ों के खुर उनके योद्दों के टाप से टूट गये। परमेश्वर के
दूत ने कहा कि मरूज़ को स्राप देओ वहां के बासियों को अति
स्राप देओ इस कारण कि वे परमेश्वर की सहाय के लिये
अर्थात् परमेश्वर की सहाय के लिये बलवंतों के सन्मुख न आये।
२४ क़ीनी हीबर की पत्नी जाईल सब स्त्रियों से अधिक धन्य होगी
२५ वुह उन स्त्रियों से जो डेरों में हैं अधिक धन्य होगी। उसने पानी
मांगा और उसने उसे दूध दिया वुह प्रतिष्ठित पात्र में मक्खन
२६ लाई। उसने अपना हाथ कील पर रक्खा और अपना दहिना
हाथ कार्य्यकारी के हथौड़ी पर और हथौड़ी से सिसरा को
मारा उसने उसके सिर को गोदा और उसकी कनपटी को
२७ आरंपार छेदा। वुह उसके गोड़ तले झुका वुह गिरपड़ा
और पड़ रहा वुह उसके चरणों के आगे झुका वुह गिरपड़ा
२८ जहां वुह झुका तहां गिर के नाश ऊआ। सिसरा की
माता ने झरोखे से झांका और झरोखे से पुकारा कि उसका
रथ क्यों बिलंब करता है? उसके रथों के पहिये क्यों बिलंब
२९ करते हैं?। उसकी बुद्धिमती स्त्रियों ने उसे उत्तर दिया हां वुह
३० अपनेही से कहा। क्या उन्हों ने कार्य्य सिद्ध न किया क्या उन्हों
ने लूट न बांटी एक एक पुरुष पीछे दो एक सहेलियां और
सिसरा को भांति भांति की रंगीली लूट अर्थात् बूटे काढे ऊए

नानारंग की लूट दोनों अलंग बूटे काढ़े ज़ए नानारंग के गले के
३१ लिये लूट । इसी रीति से हे परमेश्वर तेरे सारे शत्रु नाश
होवें परंतु जो उसे प्रेम रखते हैं सो सूर्य्य के तुल्य होवें जब
वुह अपने पराक्रम से निकलता है और देश ने चालीस बरस
चैन पाया ।

६ छठवां पर्ब्ब ।

इसराईल के संतान पाप करते हैं और मदियानियों के बश में पड़ते हैं १—६ परमेश्वर पर आशा रखने से परमेश्वर एक आगमज्ञानी को उन पास भेज के चिताता है ७—१० परमेश्वर अपने दूत की ओर से गदऊन को उनके लिये निस्तारक ठहराता है और इस बात को पूरा करने को लक्षण देता है ११—४० ।

१ फिर इसराईल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई
किई तब परमेश्वर ने उन्हें सात बरस लों मदियानियों के
२ हाथ में सौंपदिया । और मदियानियों का हाथ इसराईल
पर प्रबल ज़आ और मदियानियों के कारण इसराईल के
संतानों ने अपने लिये पहाड़ों में मांद और कंदला और दृढ़
३ स्थान बनाये । और ऐसा होता था कि जब इसराईल कुछ
बोते थे तब मदियानी और अमालकी और पूर्ब्बी बंश उन
४ पर चढ़ आते थे । और उनके सान्ने डेरा खड़ा करके गज़ा
लों भूमि की बढ़ती को नष्ट करते थे और इसराईल के लिये
न जीविका न भेड़ बकरी न गाय बैल न गदहा छोड़ते थे ।
५ क्योंकि वे अपने ढोर और अपने तंबूओं सहित फनगा की नाईं
मंडली होके आते थे वे और उनके ऊंट अगणित थे और वे
६ पैठ के उनके देश को नष्ट करते थे । सो इसराईल मदियानियों
के कारण कंगाल होते थे और इसराईल के संतान ने परमेश्वर

७ को दोहाई दिई। और ऐसा ऊआ कि जब इसराईल के संतान ने मदियानियों के कारण परमेश्वर की दोहाई दिई।
८ तब परमेश्वर ने इसराईल के संतान पास एक जन अर्थात् आगमज्ञानी भेजा जिस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि मैं तुम्हें मिसर से ऊपर लाया और
९ मैं तुम्हें सेवकाई के घर से निकाल लाया। और मैं ने तुम्हें मिसरियों के हाथ से और उन सब के हाथ से जो तुम्हें सताते थे छुड़ाया और तुम्हारे आगे से उन्हें दूर किया और उनका
१० देश तुम्हें दिया। और मैं ने तुम्हें कहा कि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर मैं हों उन अमूरियों के देवतों से, जिन के देश में बसते
११ हो, मत डरो पर तुम ने मेरा शब्द न माना। फिर परमेश्वर का एक दूत आया और सोता वृक्ष तले अफ़रा में बैठा जो अबीअ़जरी योआश का था और उसका बेटा गदऊन कोल्हू के पास गोहूं झाड़ रहा था जिसतें मदियानियों के हाथ
१२ से छिपावे। तब परमेश्वर का दूत उसे दिखाई दिया और
१३ उसे कहा कि हे महावीर परमेश्वर तेरे साथ। गदऊन ने उसे कहा कि हे मेरे प्रभु यदि परमेश्वर हमारे साथ है तो हम पर ये सब क्यों बीतते हैं और उसके समस्त आश्चर्य कहां हैं जो हमारे पितरों ने हम से बर्णन किया था क्या परमेश्वर हमें मिसर से नहीं निकाल लाया? परंतु अब परमेश्वर ने हम त्याग किया और हमें मदियानियों के हाथों में सौंपदिया।
१४ तब परमेश्वर ने उस पर दृष्टि किई और कहा कि अपनी इसी सामर्थ्य से जा और तू इसराईल को मदियानियों के हाथ
१५ से छुड़ावेगा क्या मैं ने तुझे नहीं भेजा। उसने उसे कहा कि हे मेरे परमेश्वर मैं किस्से इसराईल को छुड़ाओं? देख मेरा सहस्र मनस्सा में सब से तुच्छ और मैं अपने पितरों के घराने में
१६ सब से छोटा। परमेश्वर ने उसे कहा कि मैं निश्चय तेरे साथ होंगा और तू एकही मनुष्य के समान सारे मदियानियों को

१७ मारेगा। तब उसने उसे कहा कि यदि अब मैं ने तेरी दृष्टि
में अनुग्रह पाया है तो मुझे कोई लक्षण दिखा कि तू मुझसे
१८ बोलता है। मैं तेरी बिनती करता हों जब लों मैं तुझ पास
फिर आओं और अपने मांस की भेंट लाओं और तेरे आगे
धरों तब लों तू यहां से मत जाइयो सो उसने कहा कि जब लों
१९ तू फिर न आवे मैं ठहरोंगा।   तब गदऊन गया और
उसने बकरी का एक मेम्ना और एक ईफा पिसान के फुलके
सिद्ध किये और मांस को उसने टोकरी में रक्खा और रस
एक कटोरे में डालके उसके लिये सोता वृक्ष तले लाके भेंट
२० चढ़ाई। तब ईश्वर के दूत ने उसे कहा कि मांस और फुलकों
को लेके इस चटान पर रख और रस उंड़ेल सो उसने
२१ वैसेही किया।   तब परमेश्वर के दूत ने अपने हाथ की
लाठी को बढ़ाया और टोंक से मांस और फुलकों को छूआ
और उस चटान से आग निकली और मांस और फुलके को
भस्म किया तब परमेश्वर का दूत उसकी दृष्टि से जाता रहा।
२२ और जब गदऊन ने देखा कि वुह परमेश्वर का दूत था तब
गदऊन ने कहा कि हाय हे प्रभु परमेश्वर इस कारण कि मैं ने
२३ ईश्वर का दूत आम्ने साम्ने देखा। तब परमेश्वर ने उसे कहा
२४ कि तुझ पर कुशल हो मत डर तू न मरेगा। तब गदऊन ने
वहां परमेश्वर के लिये बेदी बनाई और उसका नाम यह रक्खा
कि परमेश्वर कुशल भेजे सो वुह अबीअज़री अफरा में आज
२५ के दिन लों बनी है।   और ऐसा हुआ कि उसी रात
परमेश्वर ने उसे कहा कि अपने पिता की कलोर अर्थात्
सातव बरस का दूसरा बैल लेके और तेरे पिता के बआल की
बेदी जो है तिसे ढ़ादे और वुह कुंज जो उसके निकट है
२६ काटडाल। और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये इस चटान
पर जिस रीति से आज्ञा किई थी एक बेदी बना और उस
दूसरे बछड़े को लेके उस कुंज की लकड़ियों के साथ जिसे तू

२७ काटेगा होम की भेंट चढ़ा। तब गदऊन ने अपने सेवकों से दस जन लिये और जैसा कि परमेश्वर ने उसे कहा था वैसा किया और इस कारण वुह अपने पिता के घराने से और उस नगर के लोगों से डरता था वुह दिन को न कर सका उसने यह
२८ काम रात को किया। और जब उस नगर के लोग बिहान को उठे तो क्या देखते हैं कि बआल की बेदी ढाई ऊई पड़ी है और उसके पास का कुंज कटा पड़ा है और उस बेदी पर जो बनाई गई थी दूसरा बछड़ा चढ़ाया ऊआ है।
२९ तब उन्हों ने आपुस में कहा कि वुह कौन है जिसने यह काम किया और जब उन्हों ने यत्न कर के पूछा तो लोगों ने कहा कि
३० जोआश के बेटे गदऊन का यह काम है। तब उस नगर के लोगों ने जोआश को कहा कि अपने बेटे को निकाल ला जिसतें मारा जाय इस लिये कि उसने बआल की बेदी ढाई और उसके
३१ पास के कुंज को काटडाला। जोआश ने उन सभों को जो उसके सामने खड़े ऊए थे कहा क्या तुम बआल के कारण बिवाद करोगे और तुम उसे बचाओगे? जो कोई उसके लिये बिवाद करे सो बिहान होतेही माराजाय यदि वुह देव है तो आपही अपने लिये बिवाद करे क्योंकि उसने उसकी बेदी गिरादिई।
३२ इस लिये उसने उस दिन से उसका नाम यरबआल रक्खा और कहा कि बआल अपना बिवाद उस्से करे इस लिये कि
३३ उसने उसकी बेदी गिरादिई। तब सारे मदियानी और अमालकी और पूर्बी बंश एकट्ठे ऊए और पार उतर के
३४ यज़रईल की तराई में डेरे खड़े किये। परंतु परमेश्वर का आत्मा गदऊन पर उतरा सो उसने नरसिंगा फूंका और
३५ अबिईज़र के लोग उसके पीछे एकट्ठे ऊए। फिर उसने सारे मनस्सा में दूत भेजे सो वे भी उसके पीछे एकट्ठे ऊए और उसने अशर के और ज़बूलून के और नफ़ताली के पास दूत
३६ भेजे सो वे भी उनको भेंट करने को आये। तब गदऊन ने

ईश्वर से कहा कि यदि अपने कहने के समान तू इसराईल को
३७ मेरे हाथ से निस्तार देगा। तो देख मैं ऊन का एक गुच्छा खलिहान में रखता हों यदि ओस केवल गुच्छेही पर पड़े और समस्त पृथिवी सूखी रहे तो मैं निश्चय जानोंगा कि तू अपने कहे के समान इसराईल को मेरे हाथों से निस्तार
३८ देगा। और यों हुआ कि वुह प्रातःकाल को उठा और उस गुच्छे को बटोरा और उस में की ओस एक कटोरा
३९ भर के निकली। तब गदऊन ने ईश्वर से कहा कि तेरा क्रोध मुझ पर न भड़के मैं एकही बार और कहोंगा मैं तेरी बिनती करता हों कि इसी गुच्छे पर एक बार और तेरी परिच्छा करों सो अबकी केवल गुच्छा सूखा रहे और समस्त
४० भूमि पर ओस पड़े। सो ईश्वर ने उसी रात ऐसा किया कि गुच्छा तो सूखा था और केवल सारी भूमि पर ओस थी।

७ सातवां पर्ब्ब।

गदऊन की सेना का घटायाजाना १—८ गदऊन की युक्ति ९—१५ उसके बैरियों को जीतना १६—२३ मदियानी के दो राजाओं को मारता है २४—२५।

१ तब यरबआल जो गदऊन है सारे लोग सहित जो उसके साथ थे तड़के उठा और हारुद के कूए पर डेरा खड़ा किया यहां लों कि मदियानियों की सेना उनके उत्तर अलंग मूरी
२ के पहाड़ पास तराई में थी। तब परमेश्वर ने गदऊन को कहा कि मदियानियों को तेरे बश में करदेने को लोग अति बहुत हैं ऐसा नहो कि इसराईल मेरे साम्ने अहंकार करके
३ कहे कि मेरेही हाथ ने मुझे बचाया। सो तू अब जाके लोगों के कान में प्रचार करके कह कि जो कोई डरपुकनाहो और भय रखता हो सो जलियाद पहाड़ से तड़के फिर जाय

सो उन लोगों में से बाईस सहस्र फिर गये और दस सहस्र
४ रहिगये। और परमेश्वर ने गदऊन को कहा कि तथापि अभी
लोग बज़त हैं तू उन्हें पानी पर उतार ला और वहां मैं उन्हें तेरे
लिये अलग करोंगा और ऐसा होगा कि जिसके विषय में मैं
तुझे कहोंगा कि ये तेरे साथ जावें वेही तेरे साथ जायेंगे और वे
सब जिन के विषय में मैं कहों कि ये तेरे साथ न जावें सो न जायेंगे।
५ सो वुह उन लोगों को पानी पर उतार लाया और परमेश्वर
ने गदऊन से कहा कि जो कोई पानी को कूकर की नाईं चपड़
चपड़ पीये तू उन में से हर एक को अलग रख और हर एक
६ जो अपने घुठनों पर झुक के पीये उन्हें भी। सो जिन्हों ने
अपने हाथ अपने मुंह पास लाके चपड़ चपड़ पीया सो तीन
सौ जन थे परंतु बचे ज़ए लोग पानी पीने को घुठनों पर झुक
७ गये। तब परमेश्वर ने गदऊन को कहा कि मैं उन तीन सौ
मनुष्यों से जिन्हों ने चपड़ चपड़ पीया तुझे बचाओंगा और
मदियानियों को तेरे हाथ में कर देओंगा और समस्त लोग
८ अपने स्थान को फिर जायें। तब उन लोगों ने अपना भोजन
और अपने नरसिंगे हाथों में लिये और उसने सब इसराएल
को डेरों में भेजा और उन तीन सौ को रख छोड़ा और
९ मदियानियों की सेना उसके नीचे तराई में थी। और
ऐसा ज़आ कि उसी रात परमेश्वर ने उसे कहा कि उठ और
१० सेना में उतर जा क्योंकि मैं ने उन्हें तेरे वश में करदिया। परंतु
यदि तू एकेला उतरने को डरता है तो अपने सेवक फ़ारा
११ के साथ सेना में उतर। और सुन वे क्या कहते हैं उसके
पीछे सेना में जाने से तेरे साथ बली होंगे सो वुह अपने
सेवक फ़ारा को साथ लेकर सेना के हथियारबंद की पांतियों
१२ के बाहर गया। और मदियानी और अमालकी और पूर्बी बंश
बज़ताई से फनगा की नाईं तराई में पड़े थे और उनके ऊंट
१३ समुद्र के तीर की बालू के समान अगणित थे। और जब

गदऊन आया तो क्या देखता है कि एक जन अपने परोसी से अपना स्वप्न कहिरहा है कि देख मैं ने एक स्वप्न देखा कि जव की रोटी का एक फुलका मदियानी की सेना में लुढ़का और एक तंबू में आया और उस तंबू को ऐसा मारा कि वुह गिरगया १४ और उलटदिया ऐसा कि वुह डेरा पड़ारहा। तब उसके परोसी ने उत्तर देके कहा कि यह इसराईल के पुरुष यूआश के बेटे गदऊन की तलवार को छोड़ और नहीं है ईश्वर ने १५ मदियान और सारी सेना उसके बश में करदिया। और ऐसा ऊआ कि गदऊन ने यह स्वप्न और उसका अर्थ सुन के दंडवत किई और इसराईल की सेना को फिर आके कहा कि उठो क्योंकि परमेश्वर ने मदियानी सेना को तुम्हारे हाथ में १६ सौंप दिया। तब उसने उन तीन सौ मनुष्यों को तीन जथा किया और उन सभों के हाथ में नरसिंगा और छूछा घड़ा १७ दिया और एक एक दीपक घड़े के भीतर रक्खा। और उन्हें कहा कि मुझे देखो और वैसाही करो और सौचेत रहियो जब मैं छावनी के बाहर जाओं तब जो कुछ मैं करों १८ सो तुम भी कीजियो। जब मैं और मेरे संगी नरसिंगा फूंकें तब तुम लोग भी सेना की हर एक ओर से नरसिंगा फूंकियो और बोलियो कि परमेश्वर के लिये और गदऊन के लिये।

१९ फिर गदऊन और वे सौ जन जो उसके साथ थे दो पहर को छावनी के बाहर आये और वहीं पहरे बैठाये थे और उन्हों ने नरसिंगे फूंके और उन घड़ों को जो उनके हाथों में २० थे तोड़ा। और उन तीनों जथा ने नरसिंगे फूंके और घड़े तोड़े और दीपकों को अपने बायें हाथ में लिया और नरसिंगों को फूंकने के लिये अपने दहिने हाथों में और चिल्ला उठे कि ईश्वर २१ की और गदऊन की तलवार। और उन में से हर एक जन अपने स्थान पर सेना की चारों ओर खड़ा था तब सारी सेना २२ दौड़ी और चिल्लाई और भाग निकली। और उन तीनों

सैा ने नरसिंगे फूंके और परमेश्वर ने सारी सेना में हर एक की तलवार उसके संगी पर चलवाई और वे बैतशित्ता और ज़रीरास को और अबिलमहूला की ओर तब्बास लों भाग

२३ गये। तब इसराईली लोग नफ़ताली और अशर और समस्त मनस्सा से एकट्ठे होके निकले और मदियानियों का पीछा

२४ किया। और गदऊन ने सारे अफ़राईम पहाड़ में दूत भेजे और कहा कि मदियानियों के बिरोध में उतरो और उनके आगे पानियों को बैतबरा और अर्दन लों रोको तब सारे अफ़राईमियों ने एकट्ठे होके पानियों को बैतबरा और

२५ अर्दन लों रोका। और उन्हों ने मदियान के दो अध्यक्षों को ओरेब और ज़ीब को पकड़ा और ओरेब को ओरेब पहाड़ पर और ज़ीब को ज़ीब के कोल्हू पास मारडाला और मदियान का पीछा किया और ओरेब और ज़ीब का सिर अर्दन के उस पार गदऊन पास लाये।

८ आठवां पर्ब्ब ।

बैरी की सेना के दो अध्यक्ष का पकड़ा जाना १—१३ सकूस और पनुईल का नाश होना १४—१७ दोनों अध्यक्ष का बधन करना १८—२१ गदऊन का मरना और इसराईलियों का मूर्त्ति पूजना २२—३५।

१ और अफ़राईम के लोगों ने उसे कहा कि तू ने हम से यह क्यों किया कि जब तू मदियानियों से लड़ने गया तब हमें न

२ बुलाया? और उन्हों ने उस्से बिवाद किया। उसने उन्हें कहा कि मैं ने तुम्हारे तुल्य अब क्या किया अफ़राईम के दाख का बीनना

३ अबईज़र की लवनी से अति अच्छा है। ईश्वर ने मदियान के अध्यक्ष ओरेब और ज़ीब को तुम्हारे हाथों में सैांप दिया सो तुम्हारे तुल्य हमारी सामर्थ्य कहां थी जब उसने यह कहा

४ तब उनकी रिस धीमी ऊई। और गदऊन अर्दन पास आया और वुह और उसके संगी तीन सौ सहित
५ पार उतरे और थकेऊए रगेदते गये। तब उसने सकूस के लोगों से कहा कि मेरे संगियों को रोटियां दीजिये क्योंकि वे थके हैं और मैं मदियान के राजाओं का ज़ीबाह
६ और ज़लमना का पीछा किये जाताहूं। तब सकूस के अध्यक्षों ने कहा कि क्या ज़ीबाह और ज़लमनाह के हाथ अब तेरे हाथ में होगये कि हम तेरे कटक को रोटियां देवें।
७ गदऊन बोला कि जब परमेश्वर ज़ीबाह और ज़लमना को मेरे हाथों में करदेगा उस समय मैं तुम्हारे मांस को बन के
८ कांटों से और ऊंटकटारों से पीटोंगा। और वुह वहां से पनुईल को गया और वहां के लोगों से वही कही और पनुईल
९ के लोगों ने भी सकूस के लोगों के समान उत्तर दिया। उसने पनुईल के मनुष्यों से भी कहा कि जब मैं कुशल से फिरोंगा
१० तब इस बुर्ज को ढादेओंगा। अब ज़ीबाह और ज़लमना अपनी सेना सहित जो पंदरह सहस्र पूर्ब के संतान की सेना में से बचे थे कारकूर में था क्योंकि एक लाख बीस
११ सहस्र मनुष्य खड्गधारी तलवार से जूझगये थे। तब गदऊन उनकी ओर जो नूबाह और यगबोहा की पूर्ब दिशा को तंबूओं में रहते थे गया और सेना को मारा क्योंकि वुह सेना निश्चिंत
१२ थी। और जब ज़ीबाह और ज़लमना भागे तो उसने उनका पीछा किया और मदियानी राजाओं को ज़ीबाह और ज़लमना
१३ को पकड़ा और सारी सेना को डरादिया। और यूआश का
१४ बेटा गदऊन सूर्य्य के उदय से आगे संग्राम से फिरा। और सकूस में के एक तरुण को पकड़ा और उसे पूछा उसने उसे सत्तर मनुष्यों का पता बतलाया जो सकूस के अध्यक्ष और
१५ प्राचीन थे। तब वुह सकूसियों पास आया और कहा कि देखो ज़ीबाह और ज़लमना जिनके विषय में तुमने यह कहिके मुझे

ओलाना दिया कि क्या ज़ीबाह और ज़लमना के हाथ तेरे हाथ में हैं कि हम तेरे थके ऊए लोगों को रोटियां देवें।
१६ तब उसने नगर के प्राचीनों को और बन के कांटों को और ऊंटकटारों को लिया और उनसे सकूसियों को जनाया।
१७ और पनुईल का गढ़ ढादिया और नगर के बासियों को मार
१८ डाला। फिर उसने ज़ीबाह और ज़लमना को कहा कि वे लोग कैसे थे जिन्हें तुमने ताबूर में घात किया वे बोले कि
१९ तेरे समान और हर एक राजपुत्र के डौल था। तब उसने कहा कि वे मेरे सगे भाई थे सो जीवते परमेश्वर की किरिया है
२० यदि तुम उन्हें जीता छोड़ते तो मैं भी तुम्हें न मारता। फिर उसने अपने पहिलौंठे यासीर को आज्ञा किई कि उठ उन्हें बधन कर परंतु उस तरुण ने अपनी तलवार न खींची क्योंकि
२१ वुह डरता था इस कारण कि वुह अबलों तरुण था। तब ज़ीबाह और ज़लमना ने कहा कि तू उठके हमें घात कर क्योंकि जैसा मनुष्य तैसा उसका बल सो गदऊन ने उठके ज़ीबाह और ज़लमना को मारडाला और वे आभूषण जो उनके
२२ ऊंटों के गले में थे लेलिये। तब इसराईल के मनुष्यों न गदऊन को कहा कि तू हम पर राज्य कर और तेरा बेटा और तेरा पोता भी हम पर राज्य करे क्योंकि तू ने हमें मदियान
२३ के हाथों से छुड़ाया। गदऊन ने उन्हें कहा कि मैं तुम पर प्रभुता न करोंगा और न मेरा बेटा परंतु परमेश्वर तुम पर
२४ प्रभुता करेगा। और गदऊन ने उन्हें कहा कि मैं तुम से एक बात चाहता हों हर एक मनुष्य तुम्में से अपनी लूट का करनफूल मुझे देवे क्योंकि (वे सोने के करनफूल रखते थे इस
२५ कारण कि वे इस्माईली थे)। उन्हों ने उत्तर दिया कि हम मनमंता देंगे तब उन्हों ने बस्त्र बिछाया और हर एक ने अपनी
२६ लूट के धन से करनफूल उस पर डालदिये। सो वे सोने के करनफूल जो उसने मांगे तौल में एक सहस्र सात सौ शैकल

सोने के थे गहना और पट्टा और लालवस्त्र जो मदियानी राजा
२७ पहिनते थे और ऊंटों के गले की सीकरों से अधिक थे। तब गदऊन
ने उसका एक अफ़ूद बनाया और उसे अपने नगर अफ़रा में
रक्खा और वहां सारे इसराईल के संतान उसके पीछे कुकर्मी
ऊए और गदऊन और उसके घर के लिये फंदा ऊआ।
२८ और मदियानी इस रीति से इसराईल के संतान के
वश में ऊए कि सिर फिर न उठा सके और गदऊन के समय
२९ में चालीस बरस लों देश में चैन रहा। और यूआश
३० का बेटा यरबआल अपने घर को फिरगया। और गदऊन
के सत्तर निज पुत्र थे क्योंकि उसकी पत्नियां बऊत थीं।
३१ और उसकी एक दासी भी, जो शकीम में थी, उस्से एक बेटा
३२ जनी और उसने उसका नाम अबीमलक रक्खा। और
यूआश का बेटा गदऊन अच्छा पुरनिया होके मर गया और
अपने पिता यूआश की समाधि में अबइज़र के अफ़रा में गाड़ा
३३ गया। और ऐसा ऊआ कि गदऊन के मरतेही इसराईल
के संतान फिरगये और बालीम के पीछे कुकर्मी ऊए और
३४ बाआल बरीस को अपना देव बनाया। और इसराईल
के संतान ने तो परमेश्वर अपने ईश्वर को, जिसने उन्हें हर एक
ओर से, उनके शत्रुन के हाथ से बचाया था, स्मरण न किया।
३५ और उन्हों ने यरबआल गदऊन के घर पर, जैसा उसने
इसराईल से भलाई किई, वैसा उन्हों ने अनुग्रह न किया।

९ नवां पर्ब्ब ।

अबीमलक आप को राजा बनाके अपने सत्तर
भाई को घात करता है १—६ यूसाम का दृष्टांत
७—२१ अबीमलक और शकीम से बैर होता है
२२—२९ अबीमलक शकीम को नष्ट करता है
और वहां के लोगों को मारडालता है ३०—४५

अबीमलक शकीम को बुर्ज में आग लगाता है ४६—४९ एक स्त्री चक्की के पाट से अबीमलक को मारडालती है इस रीति से परमेश्वर ने अबीमलक की दुष्टता का पलटा लिया ५६—५७ ।

१ तब यरबआल का बेटा अबीमलक अपने मामूओं के पास शकीम को गया और उनसे और अपने नाना के समस्त घराने से कहा।
२ कि शकीम के सारे लोगों को कहो कि तुम्हारे लिये क्या भला है कि यरबआल के सब सत्तर बेटे तुम पर राज्य करें अथवा कि एकही राज्य करे और यह भी चेत रक्खो कि मैं तुम्हारी
३ हड्डी और तुम्हारा मांस हूं। और उसके मामूओं ने भी उसी के लिये शकीम के लोगों से बऊत कुछ कहा यहां लों कि उनके मन अबीमलक की ओर झुके क्योंकि वे बोले कि यह
४ हमारा भाई है। और उन्हों ने बआलबीरिस के मंदिर में से सत्तर टुकड़ा चांदी उसे दिई जिन से अबीमलक ने तुच्छ
५ और नीच लोगों को अपनी ओर किया। और वुह अफ़रा में अपने पिता के घर गया और उसने यरबआल के बेटे अपने सत्तर भाइयों को एक पत्थर पर मारडाला तथापि यरबआल का सब से छोटा बेटा यूसाम बचरहा क्योंकि उसने आपको
६ छिपाया। तब शकीम के सारे लोग और मिल्लू के सारे बासी एकट्ठे ऊए और गये और सीताहच्च के खंभे के निकट, जो शकीम में था,
७ पऊंच के अबीमलक को राजा किया। और जब यूसाम ने यह सुना तो वुह गया और जरज़ीम पहाड़ की चोटी पर चढ़ के खड़ा ऊआ और अपने शब्द से पुकारा और उन्हें कहा कि हे शकीम के लोगो मेरी सुना जिसतें ईश्वर तुम्हारी सुने।
८ हच्च निकले कि किसी को राज्याभिषेक करें सो उन्हों ने जाके
९ जलपाई हच्च को कहा कि तू हम पर राज्य कर। परंतु जलपाई हच्च ने उनसे कहा कि मैं अपनी चिकनाई को, जिस्से वे परमेश्वर को और मनुष्य को प्रतिष्ठा देते हैं, छोड़ देऊं और जाके हच्चों

१० पर बढ़ाया जाओं । तब वृक्षों ने गूलर वृक्ष को कहा कि तू आ
११ और हम पर राज्य कर । गूलर वृक्ष ने उन्हें कहा कि क्या
मैं अपनी मिठाई और सुफल छोड़के वृक्षों पर बढ़ाया जाओं ।
१२ तब वृक्षों ने दाख को कहा कि चल हम पर राज्य कर ।
१३ दाख ने उन्हें कहा कि क्या मैं अपनी मदिरा, जिस्से ईश्वर
और मनुष्य आनंद होते हैं, छोड़के जाओं और वृक्षों पर
१४ बढ़ाया जाओं । तब सब वृक्षों ने भटकटैया से कहा कि तू
१५ आके हम पर राज्य कर । भटकटैया ने वृक्षों से कहा कि यदि
सच मुच मुझे अपने ऊपर राज्याभिषेक करते हो तो आओ मेरे
छाये में शरण लेओ और यदि नहीं तो भटकटैया से एक आग
१६ निकलेगी और लबनान के आरज वृक्ष को जलावेगी । सो अब
यदि सचाई और निष्कपट से तुम ने अबीमलक को अपना
राजा किया और यदि यरबआल से और उसके घर से
अच्छा व्यवहार किया और यदि उसे, उस उपकार के समान,
१७ जो उसके हाथों ने किया है, पलटा दिया । (क्योंकि मेरा पिता
तुम्हारे कारण लड़ा और अपने प्राण को धर दिया और
१८ तुम्हें मदियान के हाथों से छुड़ाया । और तुम आज मेरे पिता
के घर पर उठे हो और उसके सत्तर बेटों को एक पत्थर पर
मार डाला और उसकी दासी के पुत्र अबीमलक को शकीम
के लोगों पर राजा किया इस कारण कि वुह तुम्हारा भाई है) ।
१९ सो यदि तुम ने सचाई और निष्कपट से यरबआल और
उसके घर के साथ आज यह व्यवहार किया है तो तुम
भी अबीमलक से आनंद रहो और वुह तुम से आनंद रहे ।
२० परंतु यदि नहीं तो अबीमलक से आग निकले और शकीम के
लोगों को और मिल्लू के घर को भस्म करे और शकीम के लोग
और मिल्लू के घर में से भी एक आग निकले और अबीमलक
२१ को भस्म करे । तब यूसाम भाग के चलागया और अपने
२२ भाई अबीमलक के डरकेमारे बीर में जाके रहा । जब

२३ अबीमलक ने इसराईल पर तीन बरस राज्य किया। तब ईश्वर ने अबीमलक और शकीमियों के मध्य दुष्टात्मा भेजी और
२४ शकीम के लोगों ने अबीमलक से छल किया। जिसतें वुह कठोरता जो यरबअ़ाल के सत्तर बेटों के साथ किया था आवे और उनका लोहू उनके भाई अबीमलक के सिर पर, जिसने उन्हें मारडाला, और शकीमियों के सिर पर, पड़े जो उसके
२५ भाइयों के मारने में साभी ऊए। तब शकीम के लोगों ने उसके लिये पहाड़ों की चोटियों पर ढूके में लोगों को बैठाया और जो उस मार्ग से आ निकलते थे वे उन्हें लूटते थे और अबीमलक
२६ को संदेश पऊंचा। तब अबद का बेटा गाल अपने भाइयों समेत आया और शकीम को गया और शकीम के लोगों ने
२७ उस पर भरोसा रक्खा। और वे खेतों में निकले और अपने दाख के खेतों को लताड़ा और रौंदा और आनंद किया और अपने देवतों के मंदिर में घुसे और खाया पीया और
२८ अबीमलक को धिक्कारा। तब अबद के बेटे गाल ने कहा कि अबीमलक कौन और शकीम क्या है कि हम उसकी सेवा करें? क्या यरबअ़ाल का बेटा नहीं? और क्या ज़बूल उसका अध्यक्ष नहीं? तुम शकीम के पिता हमूर के लोगों की सेवा करो हम
२९ उसकी सेवा क्यों करें। हाय कि लोग मेरे वश में होते मैं अबीमलक को अलग कर देता तब उसने अबीमलक को कहा
३० कि तू अपने कटक बढ़ा और निकल आ। और जब नगर के अध्यक्ष जबूल ने अबद के बेटे गाल की ये बातें सुनीं
३१ तो उसका क्रोध भड़का। और उसने चतुराई से अबीमलक के पास दूत भेज के कहा कि देख अबद का बेटा गाल अपने भाइयों समेत शकीम में आया और देख वे तेरे विरोध में नगर
३२ को दृढ़ करते हैं। इस लिये तू अपने लोगों सहित रात को
३३ उठ और खेत में ढूके में बैठ। और बिहान को ज्योंहीं सूर्य्य उगे त्योंहीं नगर पर चढ़जा और नगर से लड़ और देखो जब वुह

और उसके लोग तेरे पास निकल आवें तब जो हाथ में आवे
३४ सो करियो। तब अबीमलक अपने सारे लोग सहित
रातही को उठा और चार जथा कर के शकीम के साम्ने ढूके
३५ में बैठा। और अबद का बेटा गाल बाहर निकला और नगर
के फाटक की पैठ पर खड़ा हुआ और अबीमलक अपने लोगों
३६ सहित ढूके से उठा। और जब गाल ने लोगों को देखा तो
उसने ज़बूल से कहा कि देख पहाड़ की चोटी पर से लोग
उतरते हैं ज़बूल ने उसे कहा कि तू पहाड़ की छाया को मनुष्य
३७ की नाईं देखता है। तब गाल फिर कहि के बोला कि देखो
लोग खेत के मध्य से निकले आते हैं और एक जथा
३८ मिओनीनम के चौगान से आती है। तब ज़बूल ने उसे कहा
कि अब तेरा वुह मुंह कहां है जिस्से तू ने कहा कि अबीमलक
कौन जो हम उसकी सेवा करें क्या ये वे लोग नहीं जिसकी
तू ने निंदा किई सो अब बाहर जाइये और उनसे युद्ध कीजिये।
३९ तब गाल शकीमियों के साम्ने बाहर निकला और अबीमलक
४० से युद्ध किया। और अबीमलक ने उसे खदेड़ा और वुह
उसके साम्ने से भाग निकला और फाटक के पैठ लों आते
४१ बहुतेरे जूझ गये और बहुतेरे घायल हुए। और अबीमलक ने
अरूमा में बास किया और ज़बूल ने गाल को और उसके
४२ भाइयों को खदेड़ दिया कि वे शकीम में न रहें। और बिहान
को ऐसा हुआ कि लोग निकल के खेत में गये और अबीमलक
४३ को संदेश पहुंचा। और उसने लोगों को लेके उनकी तीन
जथा बिभाग किया और चौगान में ढूके में बैठा और क्या
देखता है कि लोग नगर से निकले उसने उनका साम्ना किया
४४ और उन्हें मार लिया। और अबीमलक अपने साथ की जथा
समेत आगे बढ़ा और नगर के फाटकों की पैठ में जाके खड़ा
हुआ और दो जथा उन लोगों पर आपड़ी जो खेत में थी
४५ और उन्हें काट डाला। और अबीमलक उस दिन भर

नगर से लड़ता रहा और नगर को लेलिया और नगर के लोगों को मार डाला और नगर को ध्वस्त किया और वहां
४६ नोन छींट दिया। और जब शकीम के गढ़ के लोगों ने यह सुना तो वे अपने देव बिरीत के मंदिर के गढ़ में शरण के
४७ लिये जा घुसे। और अबीमलक को यह संदेश पहुंचा कि
४८ शकीम के गढ़ के सब लोग एकट्ठे ऊए हैं। तब अबीमलक अपने सारे लोग समेत सलमन् पहाड़ पर चढ़ा और अबीमलक ने कुल्हाड़ा अपने हाथ में लिया और वृक्षों में से एक डाली काटी और उसे उठा के अपने कांधे पर धरा और अपने साथियों से कहा कि जो कुछ तुम ने मुझे करते देखा है तुम भी शीघ्र
४९ वैसा करो। तब सब लोगों में से हर एक ने एक एक डाली काट लिई और अबीमलक के पीछे हो लिये और उन्हें गढ़ पर डाल लोग के उन में आग लगादिई यहां लों कि शकीम के गढ़ के समस्त
५० जलमरे वे सब पुरुष और स्त्री सहस्र के लगभग थे। तब अबीमलक ताबूस में आया और उसके साम्हे डेरा किया और
५१ उसे लेलिया। परंतु नगर के भीतर एक दृढ़ गढ़ था उस में समस्त पुरुष और स्त्रियां और नगर के सारे बासी भाग के जाघुसे और उसे बंद किया और गढ़ की छतपर चढ़गये।
५२ तब अबीमलक गढ़ पर आया और उस्से लड़ा और चाहा कि
५३ गढ़ के द्वार जलादेवे। तब किसी स्त्री ने चक्की के पाट का एक टुकड़ा अबीमलक के सिर पर देमारा जिसतें उसकी खोपड़ी
५४ चूर होजाय। तब उसने अपने अस्त्रधारी तरुण को शीघ्र बुलाया और उसे कहा कि अपनी तलवार खींच और मुझे मार डाल जिसतें मेरे बिषय में कहा न जाय कि एक स्त्री ने उसे घातकिया तब उस तरुण ने उसे गोदा और वुह मरगया।
५५ और इसराईलियों ने देखा कि अबीमलक मरगया तब हर एक
५६ अपने अपने स्थान को चलागया। इसी रीति से ईश्वर ने अबीमलक की दुष्टता को, जो उसने अपने सत्तर भाइयों को

५७ मार के अपने पिता से किई थी, पलटा दिया । और अकीम के लोगों की सारी बुराई ईश्वर ने उनके सिरों पर डाली और बुह स्राप, जो यरबअल के बेटे यूसाम ने उन पर किई थी, उन पर पड़ी ।

१० दसवां पर्ब्ब ।

तोला और उसके पीछे याईर ने इसराईल का न्याय किया १—५ इसराईल परमेश्वर को छोड़ के मूर्त्तिन की सेवा करते हैं और परमेश्वर का कोप उन पर पड़ता है ६—९ वे परमेश्वर के आगे दीन होते हैं और मूर्त्तिन को त्याग करते हैं १०—१८

१ और अबीमलक के पीछे यसाख़ार का एक जन दूदू का पोता यूआ का पुत्र तोला इसराईल के संतान के बचाव के लिये उठा २ वुह अफ़राईम पहाड़ शामिर में रहता था । उसने तेईस बरस इसराईल का न्याय किया और मरगया और शामिर ३ में गाड़ा गया । उसके पीछे जलियादी याईर उठा और ४ उसने इसराईल का बाईस बरस न्याय किया । उसके तीस बेटे थे जो गदहों के तीस बछेरों पर चढ़ाकरते थे और उनके तीस नगर थे जिनके नाम आज के दिन लों याईर के ५ गांव हैं जो जलियाद के देश में हैं । और याईर मरगया ६ और क़मून में गाड़ा गया । तब इसराईल के संतानों ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और उन्हों ने बआलिम और सुरिया और सैदून के और मवाब के और अमून के संतान के और फ़लस्तानियों के देवों की सेवा किई और परमेश्वर ७ की सेवा त्याग किई । तब परमेश्वर का क्रोध इसराईल पर भड़का और उसने उन्हें फ़लस्तानियों, और अमून के संतानों ८ के, हाथों में कर दिया । और उन्हों ने उस बरस से सारे इसराईल के संतान को, जो अर्दन के उस पार अमूरियों के

देश में और जलियाद में थे, अठारह बरस लों उन्हें अति खिजाके
९ चूर किया । और अमून के संतान ने अर्दन पार होके यहूदा
से भी और बनियामीन और अफ़राईम के घर से युद्ध किया
१० यहां लों कि इसराईल अति दुःखी ऊए । तब इसराईल
के संतान ने परमेश्वर की प्रार्थना करके कहा कि हम ने
तेरे बिरुद्ध में पाप किया इस कारण कि अपने ईश्वर को छोड़ा और
११ बञालिम की सेवा भी किई । तब परमेश्वर ने इसराईल के
संतान को कहा कि क्या मैं ने तुम्हें मिसरियों से और अमूरियों
से और अमून के संतान से और फ़लस्तानियों से नहीं छुड़ाया? ।
१२ और सैदूनियों से भी और अमालिक़ियों और माऊनियों ने भी
तुम्हें दुःख दिया और तुम ने मेरी दोहाई दिई सो मैं ने तुम्हें
१३ उनके हाथों से छुड़ाया । तथापि तुम ने मुझे त्याग किया और
उपरी देवतों की सेवा किई इस लिये अब मैं तुम्हें न छुड़ाओंगा ।
१४ तुम जाओ और जिन देवों को तुम ने चुना है उनकी दोहाई
१५ देओ कि वे तुम्हें कष्ट से छुड़ावें । फिर इसराईल के
संतानों ने परमेश्वर से कहा कि हम ने तो पाप किया सो जो
तेरी दृष्टि में अच्छा जान पड़े सो हम से कर हम तेरी बिनती
१६ करते हैं केवल अबकी हमें छुड़ा । और उन्हों ने परदेशियों की
देवतों को अपने में से दूर किया और परमेश्वर की सेवा करनेलगे
तब उसका जीव इसराईल की बिपत्ति के लिये ब्याकुल में पड़ा ।
१७ तब अमून के संतान एकट्ठे चिल्लाये और जलियाद में छावनी
किई और इसराईल के संतान एकट्ठे ऊए और मिज़पः में
१८ छावनी किई । तब जलियाद के अध्यक्षों और लोगों ने आपुस
में कहा कि वुह कौन जन है जो अमून के संतान से युद्ध आरंभ
करेगा वही जलियाद के बासियों का प्रधान होगा ।

यफ़ता जलिआ़द का प्रधान होता है १—११ यफ़ता अमून के संतानों पास दूत भेजता है पर वे नहीं मानते हैं १२—२८ परमेश्वर का आत्मा यफ़ता पर उतरता है और वुह किरिया खाता है और वुह उनसे संग्राम करने को जाता है २९—३१ यफ़ता अमून के संतान से संग्राम करके उन्हें वश में करता है ३२—३३ उसकी एकलौती पुत्री उसको भेंट को आती है और वुह उसे परमेश्वर की भेंट चढ़ाता है ३४—४०

१ अब जलिआ़दी यफ़ता एक महाबीर था जो गणिका स्त्री का
२ बेटा था और जलिआ़द से यफ़ता उत्पन्न ज़आ और जलिआ़द की पत्नी उस्से बेटे जनी और उसकी पत्नी के बेटे जब सयाने ज़ए तब उन्हों ने यफ़ता को निकाल दिया और उसे कहा कि हमारे पिता के घर में तेरा अधिकार नहीं इस लिये कि तू
३ उपरी स्त्री का लड़का है। तब यफ़ता अपने भाई के आगे से भागा और तूब के देश में जारहा और उसके पास बज़त से तुच्छ लोग एकट्ठे ज़ए और वे उसके साथ आया जाया करते थे।
४ और कितने दिनों के पीछे अमून के संतान ने इसराईल से
५ लड़ाई किई और ऐसा ज़आ कि जब अमून के संतान ने इसराईल से लड़ाई किई तब जलिआ़द के प्राचीन निकले कि यफ़ता
६ को तूब के देश से लेआवें। और उन्हों ने यफ़ता को कहा कि आ और हमारा प्रधान हो जिसतें हम अमून के संतानों
७ से संग्राम करें। यफ़ता ने जलिआ़द के संतानों से कहा कि तुम ने मुझे बैर करके मेरे पिता के घर से निकाल नहीं दिया? सो अब जो तुम विपत्ति में पड़े तो मुझ पास क्यों आये हो?।
८ जलिआ़द के प्राचीनों ने यफ़ता को कहा कि अब हम इस लिये तेरे पास फिर आये कि तू हमारे साथ चलके अमून के संतान से संग्राम करे और हमारा और जलिआ़द के सारे बासियों का

९ प्रधान होवे। यफ़ता ने जलिआद के प्राचीनों से कहा कि यदि अमून के संतान से लड़ाई करने के लिये तुम मुझे घर फेर लिये चलते हो और परमेश्वर उन्हें मेरे आगे सौंप देवे तो क्या
१० तुम मुझे अपना प्रधान करोगे?। जलिआद के प्राचीनों ने यफ़ता को उत्तर दिया कि परमेश्वर हमारे मध्य में सुनवैया होवे यदि
११ हम तेरे कहने के समान न करें। तब यफ़ता जलिआद के प्राचीनों के साथ चला गया और लोगों ने उसे अपना प्रधान और अध्यक्ष किया और यफ़ता ने मसपः में परमेश्वर के आगे अपनी
१२ सारी बातें उच्चारण किईं। और यफ़ता ने अमून के संतान के राजा पास यह कहके दूत भेजे कि तुझे मुझसे क्या काम? जो तू मुझ पर मेरे देश में युद्ध करने को चढ़ आया है?।
१३ अमून के संतान के राजा ने यफ़ता के दूतों को कहा इस लिये कि जब इसराईल मिसर से निकल आये तब उन्हों ने मेरे देश को अरनून से लेके यबूक़ और अर्दन लों लेलिया सो अब
१४ कुशल से उन्हें फेर देओ। यफ़ता ने दूतों को फेर अमून के
१५ संतान के राजा पास भेजा। और उसे कहा कि यफ़ता यह कहता है कि इसराईल ने मवाब का देश और अमून के
१६ संतान का देश नहीं लिया। परंतु जब इसराईल मिसर से चढ़ आये और अरण्य से होके लाल समुद्र और क़ादश में
१७ चले आये। तब इसराईलियों ने अदूम के राजा को दूतों से यह कहला भेजा कि हमें अपने देश में से जाने दीजिये परंतु अदूम के राजा ने उनकी न सुनी और उसी रीति से उन्हों ने मवाब के राजा को कहला भेजा परंतु उसने भी न माना और
१८ इसराईल क़ादश में ठहरे रहे। तब वे अरण्य में होके चले गये और अदूम के देश और मवाब के देश से चक्कर खाके मवाब की पूर्व ओर से आये और अरनून के पले ओर डेरा खड़ा किया पर मवाब के सिवानों में प्रवेश न किया क्योंकि
१९ अरनून मवाब का सिवाना था। तब इसराईलियों ने अमूरियों

के राजा सैहून को हश्बून के राजा कने दूत भेजे और उसे बोले कि हमें अपने स्थान को अपने देश में से जाने दीजिये।
२० पर सैहून ने उन्हें अपने सिवाने से जाने न दिया परंतु सैहून ने अपने लोग एकट्ठे किये और यहाज़ में डेरा खड़ा किया और
२१ इसराईल से लड़े। और परमेश्वर इसराईल के ईश्वर ने सैहून को उसके सारे लोग समेत इसराईल के हाथ में सैांप दिया और उन्हों ने उन्हें मारा से। इसराईलियों ने अमूरियों के सारे देश और उस देश के बासियों का अधिकार पाया।
२२ और उन्हों ने अरनून से लेके यबूक लों और अरण्य से अर्दन
२३ लों अमूरियों के सारे सिवानों को बश में किया। सो अब परमेश्वर इसराईल के ईश्वर ने अमूरियों को अपने इसराईल लोग के आगे से दूर किया तो क्या तू उसे बश में करेगा?।
२४ जो तेरे देव कमूश ने तेरे बश में किया है उसे नहीं चाहता है? सो परमेश्वर हमारा ईश्वर जिन्हें हमारे आगे से दूर
२५ करेगा हम उन्हें बश में करेंगे। और क्या तू मवाब के राजा सफूर के बेटे बलक से भला है? उसने कभी इसराईल से झगड़ा
२६ किया अथवा उसने कभी उनसे युद्ध किया। जब लों इसराईल हश्बून में और उसके नगरों में और अरूईर और उसके नगरों में और उन सब नगरों में जो अरनून के सिवानों में हैं तीन सो बरस रहा किये उस समय लों तुम ने उन्हें क्यों न छुड़ाया।
२७ सो मैं ने तेरा अपराध नहीं किया परंतु मुझ से युद्ध करने में तू अनुचित करता है सो परमेश्वर न्यायी इसराईल के संतान के और
२८ अमून के संतान के मध्य में आज के दिन न्याय करे। तिस पर भी अमून के संतान के राजा ने उन बातों को, जो यफ़ता ने उसे
२९ कहला भेजीं न सुना। तब परमेश्वर का आत्मा यफ़ता पर आया और वुह जलिआद और मनस्सा के पार गया और जलिआद के मसपः से पार गया और जलिआद के मसपः से अमून
३० के संतान की ओर उतरा। और यफ़ता ने परमेश्वर की मनौती

मानी और कहा कि यदि तू सच मुच अमून के संतान को मेरे हाथ
३१ में सौंप देगा । तो ऐसा होगा कि जब मैं अमून के संतान से
कुशल से फिर आओंगा तो जो कुछ मेरे घर के द्वारों से पहिले मेरी
भेंट को निकलेगा वुह निश्चय परमेश्वर का होगा अथवा मैं
३२ उसे होम की भेंट के लिये चढ़ाओंगा । तब यफ़ता अमून
के संतान की ओर पार उतरा कि उनसे लड़े और परमेश्वर
३३ ने उन्हें उसके हाथ में सौंप दिया । और अरुईर से लेके
मिन्नीस के पज्ञंचने लों बीस नगर और दाख की बारी के
चौगान लों अति बड़ी मार से उन्हें मारा इसी रीति से अमून
३४ के संतान इसराईल के संतानों के बश में ज़ए । और जब
यफ़ता मसपः को अपने घर आया तब क्या देखता है कि
उसकी बेटी तबले बजाती और नाचती ज़ई उसे आगे लेने
को निकली और वुह उसकी एकलौती थी उसे छोड़ कोई बेटा
३५ बेटी न थी । और यों ज़आ कि जब उसने उसे देखा तब अपने
कपड़े फाड़े और बोला हाय हाय मेरी बेटी तू ने मुझे अति
उदास किया तू उन में से एक है जो मुझे सताते हैं क्योंकि
मैं ने तो परमेश्वर को बचन दिया है और हट नहीं सक्ता ।
३६ उसने उसे कहा कि हे मेरे पिता यदि तू ने ईश्वर को बचन
दिया है तो जो कुछ तेरे मुंह से निकला सो मुझे कीजिये
क्योंकि परमेश्वर ने तेरे शत्रु अमून के संतान से तेरा पलटा
३७ लिया है । फिर उसने अपने पिता से कहा कि मेरे लिये
इतना कीजिये कि दो मास मुझे छोड़िये जिसतें मैं पहाड़ों
में फिरों और अपनी संगियों को लेके अपने कुआंरपन पर
३८ बिलाप करों । वुह बोला कि जा और उसने उसे दो मास
की छुट्टी दिई और वुह अपनी संगियों सहित गई और
३९ पहाड़ों पर अपने कुआंर पन पर बिलाप किया । और दो
मास के पीछे अपने पिता पास फिर आई उसने जैसी मनौती
मानी थी वैसाही उस्से किई और वुह पुरुष से अज्ञान रही

४० और यह इसराईल में विधि ऊई। सो इसराईल की कन्या बरस बरस जलिश्रादी यफ़ता की बेटी से बरस में चार दिन बात चीत करने को जातीं थीं।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

अफ़राईमी यफ़ता से और जलिश्रादियों से युद्ध करके मारे जाते हैं १—६ यफ़ता का मरना ७ अबिजान और इलून और अबदून इसराईलियों के न्यायी होते हैं ८—१५ ।

१ उस समय अफ़राईम के लोग एकट्ठे होके उत्तर दिशा को गये और यफ़ता से कहा कि जब तू अमून के संतान से युद्ध करने को पार उतरा तब हमें क्यों न बुलाया सो अब हम तेरे घर २ को तुझ समेत जलादेंगे। यफ़ता ने उन्हें उत्तर दिया कि मैं और मेरे लोग अमून के संतान से बड़ा झगड़ा रखते थे और जब मैं ने तुम्हें बुलाया तुम ने उनके हाथ से मुझे न ३ छुड़ाया। और जब मैं ने यह देखा कि तू ने मुझे न छुड़ाया तब मैं ने अपना प्राण हाथ पर रक्खा और पार उतर के अमून के संतान का साम्ना किया और परमेश्वर ने उन्हें मेरे हाथ में सैांप दिया सो तुम आज के दिन किस लिये मुझ पर लड़ने को ४ चढ़ आये हो?। तब यफ़ता ने सारे जलिश्रादियों को एकट्ठा करके अफ़राईमियों से लड़ाई किई और जलिश्रादियों ने अफ़राईमियों को मार लिया क्योंकि वे कहते थे कि जलिश्रादी अफ़राईमियों में और मनस्सों में अफ़राईमियों के भगोड़े हैं। ५ और जलिश्रादी ने अफ़राईमियों के आगे अर्दन के घाटों को लेलिया और ऐसा ऊआ कि जब अफ़राईमी भागे ऊए आये और बोले कि मुझे पार जाने दे? तब जलिश्रादी उसे कहते थे ६ कि तू अफ़राईमी है यदि उसने नाह किया। तब उन्हों ने उसे कहा कि शबूलीस कहो और उसने सबूलीस कहा इस लिये

कि वुह ठीक उच्चारण कर न सक्ता था तब वे उसे पकड़के अर्दन के घाटों पर मार डालते थे सो उस समय वहां बयालीस

७ सहस्र अफ़राईमी मारे गये। और यफ़ता ने छः बरस लों इसराईल का न्याय किया उसके पीछे जलिआदी यफता मर गया

८ और जलिआद की बस्तियों में गाड़ा गया। उसके पीछे

९ बैतुल्लहम का अबसान इसराईल का न्यायी हुआ। उसके तीस तो बेटे थे और तीस बेटियां और उसने बेटों को बाहर भेज के उनके लिये तीस बेटियां मंगवाईं उसने सात बरस इसराईल का

१० न्याय किया। तब अबसान मर गया और बैतुल्लहम में गाड़ा

११ गया। उसके पीछे ज़बुलूनी अलून इसराईल का न्यायी हुआ

१२ और उसने दस बरस इसराईल का न्याय किया। और जबुलूनी अलून मर गया और आजालून में ज़बुलून के देश में गाड़ा

१३ गया। उसके पीछे हलील का बेटा अबदून एक पीराथूनी

१४ इसराईल का न्यायी हुआ। उसके चालीस बेटे और तीस पोते थे जो सत्तर गदहों के बच्चेड़ों पर चढ़ा करते थे आठ

१५ बरस उसने इसराईल का न्याय किया। और हलील का बेटा पीराथूनी अबदून मर गया और अमालकियों के पहाड़ अफ़राईम के देश में पीराथून में गाड़ा गया।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

इसराईल पाप करता है और फलस्तानियों के वश में होता है १—२ परमेश्वर का दूत प्रगट होके समसून के जन्म का संदेश देता है ३—२५

१ फिर इसराईल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में अधिक बुराई किई और परमेश्वर ने उन्हें चालीस बरस लों फलस्तानियों के

२ हाथ में सौंप दिया। और दान के घराने में सोरा का एक जन था जिसका नाम मनूआ था उसकी स्त्री बांझ होके न

३ जनती थी। तब परमेश्वर का दूत उस स्त्री को दिखाई दिया

और उसे कहा कि देख तू बांझ होके नहीं जनती है पर तू
४ गर्भिणी होगी और बेटा जनेगी। सो सेचेत हो मदिरा
अथवा अमल की कोई बस्तु न पीजियो और कोई अशुद्ध बस्तु
५ न खाइयो। क्योंकि तू गर्भिणी होगी और बेटा जनेगी उसके
सिर पर छूरा न फिरेगा क्योंकि वुह बालक गर्भ से परमेश्वर
के लिये नासरी होगा और वुह इसराईलियों को फलस्तानियों
६ के हाथ से छुड़ानेको आरंभ करेगा। तब उस स्त्री ने
आके अपने पति से कहा कि ईश्वर का एक जन मुझ पास
आया उसका स्वरूप ईश्वर के दूत की नाईं अति भयानक था
परंतु मैं ने उसे न पूछा कि तू कहां का और उसने भी अपना नाम
७ मुझे न बताया। पर उसने मुझे कहा कि देख तू गर्भिणी होके
बेटा जनेगी अब तू मदिरा और कोई अमल की बस्तु न पीजियो
और अपवित्र बस्तु मत खाइयो क्योंकि वुह बालक गर्भ में से
८ जीवन भर ईश्वर के लिये नासरी होगा। तब मनूआ ने परमेश्वर
से बिनती करके कहा कि हे मेरे परमेश्वर ऐसा कर कि ईश्वर
का वुह जन जिसे तू ने भेजा था हम पास फिर आवे और हमें
सिखलावे कि हम उस लड़के के बिषय में जो उत्पन्न होगा क्या
९ करें। और ईश्वर ने मनूआ का शब्द सुना और ईश्वर का दूत
उस स्त्री पास, जब वुह खेत में थी, फिर आया परंतु उसका पति
१० मनूआ उस पास न था। तब वुह स्त्री फुरती से दौड़ी गई और
अपने पति को जताया और उसे कहा कि देख वही मनुष्य
जो अगले दिन मुझे दिखाई दिया था फिर दिखाई दिया है।
११ मनूआ उठके अपनी पत्नी के पीछे चला और उस मनुष्य पास
आके उसे कहा कि तू वही पुरुष है जिसने इस स्त्री से बातें किईं?
१२ उसने कहा कि मैं हों। तब मनूआ ने कहा कि जैसे तू ने कहा
वैसेही होवे लड़के की कौनसी रीति अथवा वुह क्या करेगा।
१३ परमेश्वर के दूत ने मनूआ से कहा कि सब जो मैं ने स्त्री से कहा है
१४ वुह चौकस रहे। वुह दाख में का कुछ न खाय और मदिरा

और कोई अमल न पीये और अपवित्र वस्तु न खाय सब जो मैं ने
१५ उसे आज्ञा किई सो पालन करे।　　मनूआ ने परमेश्वर
के दूत को कहा कि तनिक आप ठहर जाइये कि हम आप के
१६ आगे एक मेम्ना सिद्ध करें। परमेश्वर के दूत ने मनूआ से
कहा कि यद्यपि तू मुझे रोके तथापि मैं तेरी रोटी न खाओंगा
और यदि तू होम की भेंट चढ़ावे तो तुझे उचित है कि
परमेश्वर के लिये चढ़ावे क्योंकि मनूआ न जानता था कि वुह
१७ परमेश्वर का दूत है। फिर मनूआ ने परमेश्वर के दूत से कहा
कि आप का नाम क्या जिसतें जब आप का कहा पूरा होवे हम
१८ आपकी प्रतिष्ठा करें। परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि तू
१९ मेरा नाम यों क्यों पूछता है कि वुह आश्चर्यित। तब मनूआ
ने एक मेम्ना भोजन की भेंट के कारण परमेश्वर के लिये एक
चटान पर चढ़ाया और उसने आश्चर्य रीति किई और मनूआ
२० और उसकी स्त्री देख रहे थे। क्योंकि ऐसा हुआ कि जब
बेदी पर से स्वर्ग की ओर लवर उठी तब परमेश्वर का दूत
लवर में होके बेदी पर से स्वर्ग को चला गया और मनूआ
और उसकी स्त्री ने देखा और औंधे मुंह भूमि पर गिरे।
२१ परंतु परमेश्वर का दूत मनूआ को और उसकी स्त्री को फेर दिखाई
न दिया तब मनूआ ने जाना कि वुह परमेश्वर का दूत था।
२२ और मनूआ ने अपनी पत्नी से कहा कि हम अब निश्चय मरजायेंगे
२३ क्योंकि हमने ईश्वर को देखा। परंतु उसकी पत्नी ने उसे कहा
कि यदि परमेश्वर की इच्छा हमें मारने को होती तो वुह
होम की भेंट और भोजन की भेंट हमारे हाथों से ग्राह्य न
करता और हमें यह सब न दिखाता और इस समय के समान
२४ हमें ये बातें न कहता।　　और वुह स्त्री बेटा जनी और उसका
नाम समसून रक्खा वुह लड़का बढ़ा और परमेश्वर ने उसे
२५ आशीष दिया। और परमेश्वर के आत्मा ने दान की छावनी
में सुरा और अस्तऊल के बीच उसे उभाड़ने लगा।

शमसून फलस्तानियों की बेटियों से बिवाह करने चाहता है १—४ एक सिंह उस पर झपटता है और शमसून उसे मेम्ना की नाईं टुकड़ा टुकड़ा करता है और फेर उसकी लोथ में एक मधु का छत्ता पाताहै ५—९ वुह अपनी ससुरार को जाता है और उनसे एक पहेली कहता है और उसकी स्त्री के गिड़गिड़ाने से वुह उसका अर्थ बताता है १०—१८ वुह तीस मनुष्यों को मार के उनके वस्त्र उतार के उन्हें देता है १९—२० ।

१ और शमसून तमनास में उतरा और तमनास में उसने २ फलस्तानियों की बेटियों में से एक को देखा । और उसने ऊपर आके अपनी माता पिता से कहा कि मैं ने फलस्तानियों की बेटियों में से तमनास में एक को देखा सो उसे मेरा बिवाह ३ करा देओ । उसकी माता पिता ने उसे कहा कि क्या तेरे भइयों की बेटियों में और मेरे सारे लोगों में कोई स्त्री नहीं जो तू अख़तना फलस्तानियों में से पत्नी लिया चाहता है, शमसून ने अपने पिता से कहा कि स्त्री को मुझे दिलाइये ४ क्योंकि वुह मेरे मन में भाई है। परंतु उसकी माता पिता न समझे कि यह परमेश्वर की ओर से है और फलस्तानियों से बैर ढूंढ़ता है क्योंकि उस समय में फलस्तानी इसराईलियों ५ पर प्रभुता करते थे । तब शमसून अपनी माता पिता के संग तमनास को उतरा और तमनास के दाख की बारियों में आये और क्या देखता है कि एक युवा सिंह उसके सन्मुख आके उसे ६ मिलतेही उस पर गर्जा । तब परमेश्वर का आत्मा सामर्थ्य के साथ शमसून पर पड़ा और उसने उसे ऐसा फाड़ा जैसे कोई मेम्ना को फाड़ता है और उसके हाथ में कुछ न था परंतु जो ७ कुछ उसने किया था सो अपनी माता पिता से भी न कहा । तब उसने जाके उस स्त्री से बातें किईं और वुह शमसून के मन में

८ भाई। और कितने दिनों के पीछे वुह उसे लेने फिरा और वुह अलग होके उस सिंह की लोथ देखने गया और क्या देखता है कि सिंह की लोथ में मधु मक्खी का झुंड और
९ छत्ता है। उसने उस में से हाथ में लिया और खाता ज्ञआ चला गया और अपनी माता पिता के पास आया और उन्हें भी कुछ दिया उन्हों ने खाया परंतु उसने उन्हें न कहा कि
१० यह मधु सिंह की लोथ में से निकला। फिर उसका पिता उस स्त्री के पास गया वहां शमसून ने जेवनार
११ किया क्योंकि तरुणों का यह व्यवहार था। और ऐसा ज्ञआ कि जब उन्हों ने उसे देखा तो वे तीस संगी को लाये कि उसके
१२ साथ रहें। शमसून ने उन्हें कहा कि मैं तुमसे एक पहेली कहताहों यदि तुम जेवनार के सात दिन के भीतर निश्चय उसका अर्थ मुझे बतलाओगे और उसका भेद पाओगे तो मैं
१३ तीस ओढ़ना और तीस जोड़े वस्त्र तुम्हें देओंगा। परंतु यदि तुम न बता सकोगे तो तुम तीस ओढ़ना और तीस जोड़े वस्त्र मुझे देओगे वे बोले कि अपनी पहेली कह कि हम सुनें।
१४ तब उसने उन्हें कहा कि भक्षक में से भक्ष्य निकला और बली में से मिठास, और वे तीन दिनलों उस पहेली का अर्थ न बता
१५ सके। और यों ज्ञआ कि सातवें दिन उन्हों ने शमसून की स्त्री से कहा कि अपने पति को फुसला कि वुह इस पहेली का अर्थ हमें बतावे नहीं तो हम तेरा और तेरे पिता का घर आग से जला देंगे तुम ने हमें बुलाया है कि अपना कर
१६ लेओ। तब शमसून की पत्नी उसके आगे बिलाप करके बोली कि तू मुझसे बैर रखता है और मुझे प्यार नहीं करता तू ने मेरे लोगों के संतानों से एक पहेली कही और मुझे न बतलाई उसने उसे कहा कि मैं ने अपनी माता पिता को नहीं
१७ बताया सो क्या तुझे बताओं। और वुह उसके आगे उनके जेवनार के सात दिन लों रोई किई और सातवें दिन ऐसा

हुआ कि उसने उसे बता दिया क्योंकि उसने उसे निपट सताया और उसने उस पहेली का अर्थ अपने लोगों के संतानों से कहा। १८ और उस नगर के मनुष्यों ने सातवें दिन सूर्य्य के अस्त होने से पहिले उसे कहा कि मधु से मीठा क्या है? और सिंह से बलवान कौन? तब उसने उन्हें कहा कि यदि तुम मेरी कलोर से न १९ जोत्ते तो मेरी पहेली का भेद न पावते। फिर परमेश्वर का आत्मा उस पर पड़ा और वुह अस्कलून को गया और उन में से तीस मनुष्यों को मार डाला और उनके वस्त्र लिये और उन्हें जोड़ा जोड़ा वस्त्र दिये जिन्हों ने पहेली का अर्थ कहा था सो उसका क्रोध भड़का और अपने पिता के घर २० चढ़ गया। परंतु शमसून की पत्नी उसके संगी को, जिसे वुह मित्र जानता था, दिई गई।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब।

शमसून की पत्नी दूसरे को दिई जाती है १—२ शमसून उसका पलटा लेता है ३—५ फलस्तानी उसकी पत्नी और ससुर को जलाते हैं ६— शमसून उन्हें बधन करके पर्ब्बत पर जा बैठता है ७—८ यहूदा के लोग उसे बांध के फलस्तानी को सौंपते हैं ९—१३ शमसून एक गदहे की दाढ़ से सहस्र मनुष्य को बधन करता है १४—१७ दाढ़ में से पानी निकलता है और शमसून अपनी प्यास मिटाता है १८—२०।

१ कितने दिन पीछे गोहूं की कटनी के समय में ऐसा हुआ कि शमसून एक मेम्ना लेके अपनी पत्नी की भेंट को गया और उसने कहा कि मैं अपनी पत्नी पास कोठरी में जाओंगा परंतु २ उसके पिता ने उसे जाने न दिया। और उस पिता ने कहा कि मुझे निश्चय हुआ कि तू उसे सर्वथा बैर रखता था इस

लिये मैं ने उसे तेरे संगी को दिया और उसकी लहुरी बहिन उस्से क्या अति सुंदरी नहीं सो उसकी संती इसे लीजिये ।

३ शमसून ने उनके विषय में कहा कि अब मैं फलस्तानियों ४ से निर्दोष होंगा यद्यपि मैं उन्हें उदास करों । शमसून ने जाके तीन सौ लोमड़ियां पकड़ीं और दो दो करके पूंछ से पूंछ बांधी और पलीता लिया और पूंछ बांध के एक एक ५ पलीता बीच में बांधा । और पलीतों को बार के उन्हें फलस्तानियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया और पूलों से लेके खड़े खेत लों और दाख के बाटिकों को और जलपाई को जला दिया ।

६ तब फलस्तानियों ने कहा कि यह किसने किया है? वे बोले कि तमनी के जवाई शमसून ने, इस लिये कि उसने उसकी पत्नी को लेके उसके संगी को दिया तब फलस्तानी चढ़ आये और उसे और उसके पिता को आग से जला दिया ।

७ शमसून ने उन्हें कहा कि यद्यपि तुम्हों ने ऐसा किया है तथापि मैं तुम से प्रतिफल लेओंगा तब पीछे चैन करोंगा । ८ और उसने उन्हें जांघ और कूला से मार मार के बड़ा नाश ९ किया और फिर जाके इताम पर्ब्बत पर बैठगया । तब फलस्तानी चढ़ गये और यहूदा में डेरा किया और लही १० में फैल गये । यहूदा के मनुष्यों ने उनसे कहा कि तुम हम पर क्यों चढ़ आये हो? वे बोले कि शमसून के बांधने को कि ११ जैसा उसने हम से किया हम उस्से करें । तब यहूदा के तीन सहस्र मनुष्य इताम पर्ब्बत की चोटी पर गये और शमसून को कहा कि क्या तू नहीं जानता है कि फलस्तानी हम पर प्रभुता करते हैं? सो तू ने हम से यह क्या किया है? उसने उन्हें कहा कि १२ जैसा उन्हों ने मुझे किया मैं ने उनसे किया । उन्हों ने उसे कहा कि अब हम आये हैं कि तुझे बांध के फलस्तानियों के हाथ में सौंप देवें शमसून ने उन्हें कहा कि मुझ्से किरिया खाओ कि १३ हम आप तुझे न मारेंगे । उन्हों ने उसे कहा कि नहीं परंतु

हम तुझे दृढ़ता से बांधेंगे और उनके हाथ में सौंपेंगे पर निश्चय हम तुझे मार न डालेंगे फिर उन्हों ने उसे दो नई
१४ डोरी से बांधा और पहाड़ी पर से उतार लाये। जब वुह लही में पहुंचा तब फलस्तानी उस पर ललकारे उस समय परमेश्वर का आत्मा सामर्थ्य के साथ उस पर पड़ा और उसके बांह पर की डोरी जले सन की नाईं होगईं और उसके हाथों
१५ के बंधन खुल गये। तब उसने गदहे की एक नई दाढ़ पाई और हाथ बढ़ा के उसे लिया और उसने उससे सहस्र मनुष्य
१६ मार डाले। और शमसून बोला कि एक गदहे की दाढ़ से ढेर पर ढेर, मैं ने एक गदहे की दाढ़ से एक सहस्र पुरुष मारे।
१७ और ऐसा हुआ कि इतना कहिके दाढ़ को अपने हाथ से फेंक दिया और उस स्थान का नाम दाढ़ का फेंकना रक्खा।
१८ और वुह निपट पियासा हुआ तब वुह परमेश्वर की बिनती करके बोला कि तू ने अपने दास के हाथ से ऐसा बड़ा बचाव दिया और अब क्या मैं पियासा मर के अख़तनों
१९ के हाथ में पड़ों। तब परमेश्वर ने दाढ़ गहिरी किई और वहां से पानी निकला और उसने उसे पीया तब उसके जी में जी आया और वुह फिर जीया इस लिये उसने उसका नाम
२० रोविये का कूआं रक्खा जो आज लों लही में है। और उसने फलस्तानियों के समय में बीस बरस लों इसराईल का न्याय किया।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

शमसून नगर के दो खंभे और फाटक उठा के एक पहाड़ी पर ले जाता है १—४ फेर शमसून एक फलस्तानी स्त्री से मित्रता करता है और वुह स्त्री उसे बैरियों के हाथ में सौंप देती है ५—२० फलस्तानी शमसून की आंखें निकाल के उसे बंदीगृह

में डालते हैं परंतु परमेश्वर को सहाय से शमसून फलस्तानियों को नाश करता है २१—३१ ।

१ उसके पीछे शमसून गज़ा को गया और वहां एक गणिका स्त्री
२ देखी वुह उस पास गया । गाज़ियों को कहा गया कि शमसून यहां आया है उन्हों ने उसे घेर लिया और सारी रात नगर के फाटक पर उसकी घात में लगे रहे पर रात भर यह कहिके चुपचाप रहे कि जब बिहान होगा तब हम उसे
३ मार लेंगे । और शमसून आधी रात लों पड़ा रहा और आधी रात को उठा और उसने नगर के फाटकों के द्वारों को और दो खंभों को अपने कांधे पर धर के उस पहाड़ी की चोटी
४ पर, जो हवरून के आगे है ले गया । और बहुत दिन के पीछे ऐसा हुआ कि उसने सूरेक की तराई में एक स्त्री से
५ प्रीति किई जिसका नाम दलीला था । और फलस्तानियों के प्रधान उस पास चढ़ गये और उसे कहा कि उसे फुसला और देख कि उसका महा बल कहां है और किस रीति से हम उसे बश में करें जिसतें हम उसे बांधके सतावें और हर एक हम में से ग्यारह ग्यारह सौ टुकड़े चांदी तुझे देगा ।
६ दलीला ने शमसून से कहा कि मुझे बताइये कि तेरा महा बल किस में है और किस्से तू बांधा जाय कि तुझे
७ सतावें । शमसून ने उसे कहा कि यदि वे मुझे सात ओदी डोरियों से जो कभी झूरी न हुई हों बांधें तब मैं निर्बल
८ होजाओंगा और दूसरे मनुष्य की नाईं होजाओंगा । तब फलस्तानियों के प्रधानों ने उस पास सात ओदी डोरी लाये
९ जो कभी न सखी थीं और उसने उनसे उसे बांधा । और लोग उसके संग कोठरी के भीतर ढुके में लगे थे स्त्री ने उसे कहा कि हे शमसून फलस्तानी तुझ पर पड़े उसने उन डोरियों को सन के सूत की नाईं तोड़ा जो आग में लग जाय सो उसका
१० बल जाना न गया । तब दलीला ने शमसून से कहा कि देख

तू ने मुझे चिड़ाया और झूठ बोला अब मुझे बताइये कि तू
११ किस्से बांधा जाय। उसने उसे कहा कि यदि वे मुझे नई
रस्सियों से, जो कभी काम में न आई हों कसके बांधें तब मैं
१२ निर्बल होके दूसरे मनुष्य की नाईं होजाओंगा। इस लिये
दलोला ने उसे नई रस्सियों से बांधा और बोली कि हे शमसून
फलस्तानी तुझ पर चढ़े और लोग कोठरी में ढुके में बैठे थे सो
उसने अपनी भुजाओं से उन्हें तागे की नाईं तोड़ डाला।
१३ फिर दलीला ने शमसून से कहा कि अब लों तू ने मुझे चिड़ाया
और झूठ बोला मुझे बताइये कि तू किस्से बांधा जाय उसने
१४ उसे कहा कि यदि तू मेरी सात जटा ताने में बिने। तब
उसने खूंटे से उन्हें कसा और बोली कि हे शमसून फलस्तानी
तुझ पर आपड़े वुह नींद से जागा और बुन्ने के खूंटे को ताने
१५ के साथ लेके चला गया। फेर उसने उसे कहा कि
क्योंकर तू कहता है कि मैं तुझ्से प्रीति रखता हों अब लों तेरा
मन मुझ्से नहीं लगा तू ने यह तीन बार मुझे चिड़ाया और
१६ मुझे नहीं बताया कि तेरा महा बल किस में है। अंत को, जब
उसने उसे प्रति दिन बातों से दबाया और उसे उसकाया
१७ किया यहां लों कि वुह जीवन से उदास हुआ। तब उसने
अपने मन का सारा भेद खोलके कहा कि मेरे सिर पर छूरा
नहीं फिरा क्योंकि मैं अपनी माता के गर्भ में से ईश्वर के लिये
नासरी हों यदि मेरा सिर मुड़ाया जाय तब मेरा बल
मुझ्से जाता रहेगा और मैं निर्बल होके और मनुष्य की नाईं
१८ होजाओंगा। और जब दलीला ने देखा कि उसने अब अपने
सारे मन का भेद कह दिया तब उसने फलस्तानियों के
प्रधानों को यह कहिके बुलवाया कि एक बार फेर आओ
क्योंकि उसने अपने मन का सारा भेद मुझ पर प्रगट किया
तब फ़लस्तानियों के प्रधान उस पर चढ़ आये और रोकड़
१९ अपने हाथ में लाये। और उसने उसे अपने घुठनों पर

सोला रक्खा और एक जन को बुलवा के सात जटा जो उसके सिर पर थीं मुड़वाईं और उसे सताने लगी और उसका बल
२० जाता रहा। और वुह बाली कि हे शमसून फ़लस्तानी तुझ पर चढ़े वुह नींद से जागा और कहा कि मैं आगे की नाईं बाहर जाओंगा और आप को बल से हिलाओंगा परंतु वुह
२१ न जानता था कि परमेश्वर उसे छोड़ गया। तब फ़लस्तानियों ने उसे पकड़ा और उसकी आंखें निकाल डालीं और उसे ग़ज़े में उतार लाये और पीतल की सीकरों से उसे
२२ जकड़ा और वुह बंदीगृह में पड़ा चक्की पीसता था। तथापि सिर
२३ मुड़ाने के पीछे उसके बाल फेर बढ़ने लगे। और फ़लस्तानियों के प्रधान एकट्ठे हुए कि अपने देव दाग़ून के लिये बड़ा बलिदान चढ़ावें और आनंद करें क्योंकि उन्हों ने कहा कि हमारे देव ने हमारे बैरी शमसून को हमारे बश में कर दिया।
२४ और जब लोगों ने उसे देखा तब उन्हों ने अपने देव की स्तुति किई क्योंकि उन्हों ने कहा कि हमारे देव ने हमारे बैरी को जिसने हमारा देश उजाड़ा और हमारे बहुतसे लोगों को
२५ नाश किया हमारे हाथ में सौंप दिया। और ऐसा हुआ कि जब वे मगन हो रहे थे तब उन्हों ने कहा कि शमसून को बुलाओ कि हमारे आगे लीला करे सो उन्हों ने उसे बंदीगृह से बुलवाया वुह उनके आगे लीला करने लगा उन्हों ने उसे
२६ खंभों के मध्य में रक्खा। और शमसून ने उस छोकड़े को जो उसका हाथ पकड़े हुए था कहा कि मुझे खंभे टटोलने दे
२७ जिन पर घर खड़ा है जिसतें उन पर ओठगों। और घर पुरुषों और स्त्रियों से भर पूर था और फ़लस्तानियों के समस्त प्रधान वहीं थे और तीन सहस्र के लग भग स्त्री पुरुष
२८ छत पर थे जो शमसून की लीला देख रहे थे। शमसून ने परमेश्वर को पुकारा और कहा कि हे प्रभु ईश्वर दया कर के मुझे स्मरण कीजिये केवल इसी बार मुझे बल दीजिये जिसतें

में एकट्ठे फ़लस्तानियों से अपनी दोनों आंखों का पलटा
२९ लेओं। तब शमसून ने दोनों मध्य के खंभों को, जिन पर घर खड़ा
था एक को दहिने हाथ से और दूसरे को बायें से, पकड़ा।
३० और बोला कि मेरा प्राण फ़लस्तानियों के साथ और वुह बल
से झुका और घर उन प्रधानों और उन सब लोगों पर, जो
उसमें थे, गिरपड़ा सो मृतक जिन्हें उसने अपने मरने के
समय मारा उनसे अधिक थे जो उसने अपने जीतेजी मारा
३१ था। तब उसके भाई और उसके पिता के सारे घराने आय
और उसे उठाया और उसे सुरा और अष्तऊल के मध्य में,
उसके पिता मनूअह की समाधि स्थान में गाड़ा उसने बीस
बरस लों इसराईल का न्याय किया।

१७ सतरहवां पर्ब्ब।

मीका की मूर्त्ति पूजा १—६ वुह एक लावी को
अपना पुरोहित बनाता है ७—१३।

१ और अफ़राईम पहाड़ का एक जन था जिसका नाम मीका
२ था। उसने अपनी माता से कहा कि वे ग्यारह सौ चांदी
जो तुझसे लिई गई थी, जिसके कारण तू ने स्राप दिया और
जिसके विषय में मैं ने भी सुना देखो चांदी मेरे पास है
मैं ने उसे लिया उसकी माता बोली कि हे मेरे बेटे ईश्वर का
३ धन्यवाद। और जब उसने ग्यारह सौ चांदी अपनी माता को
फेर दिई तब उसकी माता ने कहा कि मैं ने यह चांदी अपने
बेटे के लिये अपने हाथ से सर्बथा परमेश्वरार्पण किया था कि
एक खोदी ऊई और एक ढाली ऊई मूर्त्ति बनाओं सो अब
४ मैं तुझे फेर देती हों। तथापि उसने वुह रोकड़ अपनी
माता को दिया उसकी माता ने दो सौ चांदी लेके सोनार
को दिया उसने एक खोदी ऊई और एक ढाली ऊई मूर्त्ति
५ बनाई और वे दोनों मीका के घर में थीं। और मीका की देवतों

का एक मंदिर था और एक अफूद और तराफीम बनाया और अपने बेटों में से एक को पवित्र किया था जो उसके
६ लिये पुरोहित ऊआ। उन दिनों में इसराईल में कोई राजा न था और जिसको जो ठीक सूझ पड़ता था सो करता था।
७ और यहूदा के घराने का बैतुल्लहम यहूदा में का एक
८ तरुण लावी था जो वहां आ रहा था। वुह मनुष्य नगर में से यहूदा के बैतुल्लहम से निकला कि अंते बास करे और वुह चलते चलते अफ़राईम पहाड़ को मीका के घर पऊंचा।
९ मीका ने उसे कहा कि तू कहां से आता है उसने उसे कहा कि मैं बैतुल्लहम यहूदा में का एक लावी हों और जाता हों कि
१० जहां कहीं ठिकाना होवे तहां रहों। मीका ने उसे कहा कि मेरे साथ रह और मेरे लिये पिता और पुरोहित हो मैं तुझे बरस बरस दस टुकड़े चांदी और एक जोड़ा वस्त्र
११ और भोजन देओंगा सो लावी भीतर गया। और वुह लावी उस मनुष्य के साथ रहने पर प्रसन्न ऊआ और वुह तरुण
१२ उसके एक बेटों के समान ऊआ। और मीका ने उस लावी को पवित्र किया और वुह तरुण उसका पुरोहित बना और मीका
१३ के घर में रहने लगा। तब मीका ने कहा कि मैं जानता हों कि अब परमेश्वर मेरा भला करेगा इस कारण कि एक लावी मेरा पुरोहित है।

१८ अठारहवां पर्व्व।

दान की गोष्ठी अधिकार के लिये भेदिये भेजती है और मीका के लावी से सुदिन धराते हैं और वुह उसे कुशल से भेजता है १—६ वे अपने भाई पास संदेश लाते हैं ७—१० दान के घराने से छः सौ अस्त्रधारी मीका के घर में पऊंचते हैं ११—१३ वे मीका की मूर्त्तिन को और उस

लावी को संग करलेते हैं १४—२१ वे आके लाईश
के नगर को मारलेते हैं २२—२९ दान के संतान
मीका की मूर्त्तिन को स्थापित करते हैं ३०—३१

१ उन दिनों में इसराईल में कोई राजा न था और उन्हीं दिनों में दान की गोष्ठी अपने अधिकार के निवास ढूंढ़ती थी क्योंकि उस दिन लों इसराईल की गोष्ठियों में उन्हें कुछ अधिकार न मिला था। २ सो दान के संतान ने अपने घराने में से पांच जन अपने सिवाने सुरा और अस्तऊल से भेजे कि उनके देश को देखके भेद लेवें तब उन्हों ने उन्हें कहा कि जाओ देश को देखो जब वे अफ़राईम पहाड़ को मीका के घर आये तो वहां उतरे। ३ जब वे मीका के घर के पास आये तब उस लावी तरुण का शब्द पहिचाना और उधर मुड़ के उसे कहा कि तुझे यहां कौन लाया तू यहां क्या करता है और तेरा यहां क्या काम। ४ उसने उन्हें कहा कि मीका मुझसे यों यों व्यवहार करता है और मुझे बनी में रक्खा है और मैं उसका पुरोहित हों। ५ उन्हों ने उसे कहा कि ईश्वर से मंत्र लीजिये जिसतें हम जाने कि ६ हमारे कार्य्य सिद्ध होंगे अथवा नहीं। पुरोहित ने उन्हें कहा कि तुम्हारी यात्रा परमेश्वर के आगे है सो कुशल से जाओ।

७ तब वे पांचो जन चल निकले और लाईश को आये और वहां के लोगों को देखा कि सैदानियों के समान निश्चिंत रहते हैं और देश में कोई स्वामी न था जो उन्हें किसी बात में लज्जित करता और वे सैदानियों से दूर थे और किसी से ८ कुछ कार्य्य न रखते थे। तब वे अपने भाई कने सुरा और अस्तऊल को आये और उनके भाइयों ने पूछा कि क्या कहते ९ हो?। वे बोले कि उठो हम उन पर चढ़ जायें क्योंकि हमने उस भूमि को देखा है जो बहुत अच्छी है और तुम चुपके हो? उस १० भूमि में पैठके अधिकार लेने में आलस न करो। जब चलोग तब निश्चिंत लोगों पर और बड़े देश में पहुंचोगे क्योंकि ईश्वर

ने उसे तुम्हारे हाथ में कर दिया है वुह एक देश है जिसमें
११ पृथिवी में की कोई वस्तु घटी नहीं है। तब दान के घराने
में से सुरा और अश्तऊल के छः सौ पुरुष युद्ध के हथियार बांधे
१२ ऊए वहां से चले। वे चढ़गये और आके यहूदा के करियात
यारीम में डेरा किया इस लिये आज के दिन लों उस स्थान का
नाम उन्हों ने दान का डेरा रक्खा और देखो वुह करियात यारीम
१३ के पीछे है। और वहां से चलके अफ़राईम पहाड़ को पऊंचे
१४ और मीका के घर में आये। तब उन पांच पुरुषों ने, जो लाईश
के देश का भेद लेने को गये थे अपने भाइयों से उत्तर देके कहा
कि तुम जानते हो कि इन घरों में अफूद और तराफ़ीम
और एक खोदी ऊई और एक ढ़ाली ऊई मूर्त्ति हैं सो अब
१५ सोचो कि क्या करोगे?। तब वे उधर फिरे और मीका के घर
में उस लावी तरुण के स्थान में प्रवेश किये और उसे कुशल
१६ पूछा। और वे छः सौ जो दान के संतान के हथियारबंद थे
१७ फाटक की पैठ में खड़े रहे। और वे पांच, जो देश के भेद
को निकले थे, घर के भीतर घुसे और खोदी ऊई और ढ़ाली
ऊई मूर्त्ति और अफ़ूद और तराफीम लिये और वुह पुरोहित
उन छः सौ हथियारबंद मनुष्यों के साथ फाटक की पैठ में
१८ खड़ा था। और उन्हों ने मीका के घर में घुस के खोदी ऊई और
ढाली ऊई मूर्त्ति और अफ़ूद और तराफ़ीम उठा लिये तब
१९ पुरोहित उनसे बोला कि तुम यह क्या करते हो?। उन्हों ने
उसे कहा कि चुप रह अपने मुंह पर हाथ रख के हमारे साथ
चल और हमारे लिये पिता और पुरोहित हो कौनसी बात
भली है कि एक मनुष्य के घर का पुरोहित हो अथवा यह कि
२० तू इसराईल के घराने की एक गोष्ठी का पुरोहित हो?। और
पुरोहित का मन मगन ऊआ और उसने अफ़ूद और तराफ़ीम
और खोदी ऊई मूर्त्ति को उठा लिया और लोगों के मध्य में
२१ प्रवेश किया। सो वे फिरे और चले और बालकों और ढोर

२२ और गाड़ी को अपने आगे किया। वे मीका के घर से बहुत दूर निकल गये थे कि मीका के घर के आस पास के बासी
२३ एकट्ठे हुए और दान के संतान को जा ही लिया। और उन्हों ने दान के संतान को ललकारा तब उन्हों ने मुंह फेरा और
२४ मीका से कहा कि तुझे क्या हुआ जो तू एकट्ठे हुआ है?। वुह बोला कि तुम मेरे देवों को, जिन्हें मैं ने बनाया और मेरे पुरोहित को, लेके चले गये हो अब मेरा क्या रहा और तुम कहते हो कि
२५ तेरा क्या हुआ?। तब दान के संतान ने उसे कहा कि तू अपना शब्द हमें न सुना न हो कि क्रूर लोग तुझ पर लपकें और
२६ तू और तेरा घराना मारा जाय। और दान के संतान ने अपना मार्ग लिया और जब मीका ने देखा कि वे मुझ से बली हैं
२७ तब मुंह फेर के अपने घर को लौट आया। और वे मीका की बनाई हुई वस्तें उसके पुरोहित समेत लिये हुए लाईश को, उन लोगों पर, आये जो चैन में और निश्चिंत थे और उन्हें
२८ तलवार की धार से मारा और नगर को जला दिया। कोई छोड़वैया न था इस कारण कि सैदून से वुह दूर था और वे किसी से व्यवहार न करते थे और वुह उस तराई में था जो बैतरहूब के लग है और उन्हों ने एक नगर बनाया और उस में बसे।
२९ और उस नगर का नाम दान रक्खा जो उनके पिता इसराईल के बेटे का नाम था परंतु पहिले उस नगर का नाम लाईश
३० था। और दान के संतान ने उस खोदी हुई मूर्त्ति की स्थापना किई और मनस्सा के बेटे जरशूम का बेटा यूनासान और उसके बेटे उस देश की बंधुआई के दिन लों दान की
३१ गोष्ठी के पुरोहित बने रहे। और जब लों ईश्वर का मंदिर शीलू में था उन्हों ने मीका की खोदी हुई मूर्त्ति अपने लिये स्थापित किई।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब ।

एक जन अपनी स्त्री को लेके घर जाता है और उस रात गबिया में रहता है १—२१ उस नगर के दुष्ट लोग कुकर्म्म करके उसे मार डालते हैं २२—२८ वुह पुरुष उसे अपने घर लेजाके बारह टुकड़े करके इसराईल के समस्त सिवानों में भेजता है २९—३० ।

१ जब इसराईल में कोई राजा न था तब ऐसा ऊआ कि किसी लावी ने जो अफ़राईम पहाड़ के अलंग में रहता था यहूदा २ बैतुलहम से एक दासी को लिया । उसकी दासी कुकर्म्म करके उस पास से यहूदा बैतुलहम में अपने पिता के घर जा रही ३ और चार मास लों वहां रही । और उसका पति उठा और उसके पीछे चला कि उसे मनावे और फेर लावे और उसके साथ एक सेवक और दो गदहे थे सो वुह उसे अपने पिता के घर में लेगई और उस दासी के पिता ने ज्यों उसे देखा त्यों ४ उसकी भेंट से मगन ऊआ । और उसके ससुर अर्थात् उस स्त्री के पिता ने उसे रोका और वुह उसके साथ तीन दिन लों ५ रहा और उन्हों ने खाया पीया और वहां टिके । चौथे दिन जब वे तड़के उठे तब उसने चाहा कि यात्रा करे तब दासी के पिता ने अपने जवाई से कहा कि रोटी के एक टुकड़े से अपने ६ मन को संतुष्ट कर तब मार्ग लीजियो । सो वे दोनों बैठ गये और मिलके खाया पीया क्योंकि दासी के पिता ने उस जन को कहा कि मैं तेरी बिनती करता हों मानजा और रात भर रहिजा और ७ मन को आह्लादित कर । फिर जब वुह मनुष्य बिदा होने को उठा तब उसके ससुर ने उसे रोका इस लिये वुह फेर वहां ८ रहा । और पांचवें दिन भोर को उठा कि बिदा होवे फिर दासी के पिता ने उसे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हों कि अपने मन को मगन कर सो वे दिन ढले लों ठहरे रहे और

९ दोनों ने एकट्ठे खाया पीया। फिर वुह मनुष्य और उसकी दासी और उसका सेवक बिदा होने को उठे फिर कन्या के पिता ने उसे कहा कि देख दिन ढलचला है और सांझ पहुंची है अब रात भर ठहरजा देख दिन समाप्त हो चला है अब रहिजा जिसतें तेरा मन मगन हो जाये और कल तड़के डेरे जाने को
१० सिधार। परंतु वुह जन उस रात को न रहा पर उठके बिदा हुआ और याबुस के सन्मुख आया जिसका दूसरा नाम यिरोशलीम है और उसके संग काठी बांधे हुए दो गदहे और
११ उसकी दासी भी उसके साथ थी। जब वे याबुस पास पहुंचे तब दिन बहुत ढल गया इतने में सेवक ने अपने स्वामी से कहा कि मैं आपको बिनती करता हों आइये याबुसियों के इस
१२ नगर में मुड़ें और इसी में टिकें। उसके स्वामी ने उसे कहा कि हम उपरी नगरों में जो इसराईल के संतानों का नहीं है,
१३ न टिकेंगे परंतु गबिया को पार जायेंगे। और अपने सेवक से कहा कि चल इन स्थानों में से गबिया अथवा रामा में
१४ रात भर टिकें। और उनके जाते जाते बनियामीन के गबिया
१५ के पास सूर्य्य अस्त हुआ। और वे उधर फिरे कि गबिया में टिकें और नगर के एक मार्ग में उतर के बैठ गये क्योंकि कोई
१६ ऐसा न था जो उन्हें अपने घर ले जाके टिकावे। और देखो कि एक वृद्ध खेत पर से काम करके सांझ को वहां आया वुह भी अफ़राईम पहाड़ का था जो गबिया में आके
१७ बसा था परंतु उस स्थान के बासी बनियामीनी थे। जब उसने आंखें उठाईं तब देखा कि एक पथिक नगर के मार्ग पर है उस वृद्ध ने उसे कहा कि तू किधर जाता है और कहां से
१८ आता है?। उसने उसे कहा कि हम यहूदा बैतुलहम से अफ़राईम के पहाड़ की ओर जाते हैं जहां के हैं और हम यहूदा बैतुलहम को गये थे परंतु अब परमेश्वर के मंदिर को जाते हैं यहां कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो हमें अपने घर उतारे।

१९ तथापि हमारे साथ गदहों के लिये अन्न भूसा है और मेरे और तेरी दासी के लिये और इस तरुण के लिये, जो मेरा सेवक है, रोटी और मदिरा है किसी वस्तु की घटी नहीं है।
२० उस वृद्ध ने कहा कि तेरा कल्याण होवे तिसपर भी तेरा आवश्यक मुझ पर होवे केवल मार्ग में रात को मत टिको।
२१ वुह उसे अपने घर लेगया और उसके गदहों को चारा दिया
२२ उन्हों ने अपने पांव धोये और खाया पीया। और जब वे मगन हो रहे थे तब देखो कि उस नगर के लोगों ने जो बलियाल के लड़के थे उस घर को घेर लिया और द्वार ठोंक के उस घर के स्वामी अर्थात् उस वृद्ध को कहा कि उस जन को, जो तेरे घर में आया है बाहर ला जिसतें हम उसे कुकर्म्म
२३ करें। तब उस घर का स्वामी बाहर निकला और उन्हें कहा कि नहीं भाइयो मैं तुम्हारी बिनती करता हों ऐसी दुष्टता न कीजिये देखो यह जन मेरे घर में आया है सो ऐसी मूढ़ता
२४ न कीजिये। देख मैं अपनी कुंआरी बेटी और उसकी दासी को बाहर ले आता हों आप उन्हें नम्र कीजिये और इच्छा भर मनमंता जो चाहिये सो करिये परंतु उस मनुष्य से ऐसी दुर्गति
२५ न कीजिये। पर वे उसकी बात न मानते थे सो वुह जन उसकी दासी को उन पास बाहर ले आया उन्हों ने उसे कुकर्म्म किया और रात भर बिहान लों उसकी दुर्दशा किई और
२६ जब दिन निकलने लगा तब उसे छोड़ गये। वुह स्त्री पो फटतेही उस पुरुष के घर के द्वार पर, जहां उसका स्वामी था आके
२७ गिर पड़ी यहां लों कि उंजियाला हुआ। और उसका स्वामी बिहान को उठा और उसने घर के द्वारों को खोला और बाहर निकला कि यात्रा करे और क्या देखता है कि उसकी दासी घर के द्वार पर पड़ी है और उसके हाथ डेवढ़ी पर
२८ थे। उसने कहा कि उठ आ चलें पर कोई उत्तर न दिया तब उस मनुष्य ने उसे गदहे पर धर लिया और अपने स्थान

२९. को चलनिकला । उसने घर पऊंच के छूरी लिई और अपनी दासी को पकड़ के हड्डियों समेत उसके बारह भाग करके टुकड़े टुकडे काटे और इसराईल के समस्त सिवानों
३० में भेज दिये । और ऐसा ऊआ कि जिस किसीने वुह देखा सो बोला कि जिस दिन से इसराईल के संतान मिसर से चढ़ आये ऐसा कर्म्म न ऊआ न देखा गया सोचो और विचार करो और बोलो ।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

समस्त इसराईल इस बात के विचार के लिये एकट्ठे होते हैं १—७ और बनियामीन से युद्ध करने के लिये एकट्ठे होते हैं ८—११ वे बनियामीनियों से उस कुकर्म्मी को चाहते हैं पर वे नहीं मानते १२—१७ इसराईली गबिया पर चढ़ जाते हैं और दो बार मारे जाते हैं १८—२५ इसराईल के संतान ब्रत करके परमेश्वर के आगे बिलाप करते हैं और बनियामीनों को मार लेते हैं २६—४८ ।

१ तब इसराईल के सारे संतान निकले और दान से लेके बीरशबा लों और जलियाद के देश लों मंडली एक मन होके परमेश्वर
२ के आगे मज़पः में एकट्ठी ऊई । और समस्त लोगों के अर्थात् इसराईल की समस्त गोष्ठियों के प्रधान, जो ईश्वर के लोगों की
३ सभा में आये, चार लाख पगइत खड्ग धारी थे । (अब बनियामीन के संतानों ने सुना कि इसराईल के संतान मज़पः में एकट्ठे ऊए) तब इसराईल के संतानों ने कहा कि कह यह दुष्टता क्योंकर
४ ऊई । तब उस लावी पुरुष ने जो मारी गई स्त्री का पति था उत्तर देके कहा कि मैं अपनी दासी समेत बनियामीन की
५ गबिया में टिकने को आया । और गबिया के लोग मुझ पर चढ़ आये और घर रात को घेर लिया और चाहा कि मुझे

मार लेवें और उन्हों ने मेरी दासी पर बरबस किया कि
६ वुह मर गई । सो मैं ने अपनी दासी को पकड़ के टुकड़े टुकड़े
किये और उन्हें इसराईल के अधिकार के समस्त देश में भेजा
७ क्योंकि इसराईल में उन्हों ने कुकर्म्म और मूढ़ता किई । देखो हे
इसराईल के समस्त संतानो अब तुम हीं अपना मंत्र और
८ परामर्श देओ । तब सब के सब यह कहिके एक जन की
नाईं उठे और बोले कि हम में से कोई अपने डेरे में न जायगा
९ और हम में से कोई अपने घर की ओर न फिरेगा । परंतु अब
हम गबिया से यह करेंगे कि चिट्ठी डाल के उस पर चढ़ेंगे ।
१० और हम इसराईल के संतान की हर एक गोष्ठी में से सौ
पीछे दस और सहस्र पीछे सौ और दस सहस्र पीछे एक
सहस्र पुरुष लेंगे जिसतें लोगों के लिये भोजन लावें और जिस
समय कि बनियामीन के गबिया में आवें तब उन समस्त मूढ़ता
११ के कारण उनसे करें जो उन्हों ने इसराईल में किईं । सो सारे
इसराईल के लोग एक मता होके उस नगर पर एकट्ठे हुए ।
१२ और इसराईल की गोष्ठियों ने बनियामीन की समस्त
गोष्ठी में यह कहिके लोग भेजे कि यह क्या दुष्टता है जो तुम्में
१३ हुई । अब बलियाल के संतानों को, जो गबिया में हैं, हमें सौंप
देओ कि हम उन्हें मार डालें और इसराईल में से बुराई को
मिटा डालें परंतु बनियामीन के संतान ने अपने भाई इसराईल
१४ के संतान का कहा न माना । परंतु बनियामीन के संतान
नगरों में से गबिया में एकट्ठे हुए जिसतें इसराईल के संतान
१५ से संग्राम करें । और बनियामीन के संतान, जो नगरों में से
उस समय गिने गये, गबिया के सात सौ चुने हुए जन को
१६ छोड़ के छब्बीस सहस्र खड्गधारी थे । इन सब लोगों में
सात सौ चुने हुए बैंहथे थे जिनमें हर एक ढिलवांस से पत्थर
१७ को बाल भर मारने में न चूकता था । और बनियामीन को
छोड़ इसराईल के संतान चार लाख योद्धा खड्गधारी थे ।

१८ और इसराईल के संतान उठके ईश्वर के मंदिर को गये और ईश्वर से मंत्र चाहा और कहा कि हम्में से कौन पहिले बनियामीन के संतानों पर युद्ध के लिये चढ़ जाय? परमेश्वर ने
१९ कहा कि पहिले यहूदा। सो इसराईल के संतान विहान को
२० उठे और गबिया के सन्मुख छावनी किई। और इसराईल के संतान बनियामीन से लड़ाई करने को निकले और इसराईल के संतान गबिया में उनके आगे पांती बांध संग्राम के लिये
२१ खड़े ज्ञए। तब बनियामीन के संतान ने गबिया से निकल के उस दिन बाईस सहस्र इसराईली को मार के धूल में मिला
२२ दिया। और इसराईल के संतानों ने हियाव किया और उसी
२३ स्थान पर जहां वे पहिले दिन लैस थे, संग्राम किया। (और इसराईल के संतानों ने ऊपर जाके सांझ लों परमेश्वर के आगे बिलाप किया और यह कहिके परमेश्वर से मंत्र चाहा कि हम अपने भाई बनियामीन के संतानों से संग्राम करें? परमेश्वर ने
२४ कहा कि उन पर चढ़ जाओ)। सो इसराईल के संतान दूसरे
२५ दिन बनियामीन के संतान के बिरोध में समीप आये। और उस दूसरे दिन बनियामीन ने गबिया से निकल के इसराईल के संतान के अठारह सहस्र मनुष्य मार के भूमि पर डाल दिये सब
२६ खड्गधारी थे। तब सारे इसराईल के संतान और सारे लोग ईश्वर के मंदिर को चढ़ गये और रोये और वहां परमेश्वर के आगे बैठे और उस दिन सांझ लों ब्रत किया और होम
२७ की भेंट और कुशल की भेंट परमेश्वर के आगे चढ़ाईं। और इसराईल के संतानों ने परमेश्वर से बूझा (क्योंकि परमेश्वर की
२८ साक्षी की मंजूषा उन दिनों में वहां थी। और हारून के बेटे इलिआज़र का बेटा फिनिहाज़ उन दिनों में उसके आगे खड़ा रहता था) तब उन्हों ने पूछा कि मैं अपने भाई बनियामीन के संतान से फिर संग्राम के लिये जाओं अथवा रहिजाओं? परमेश्वर ने कहा कि चढ़ जा क्योंकि कल मैं उन्हें तेरे हाथ

२९ में कर देओंगा । सो इसराईल के संतानों ने गबिया के चारों
३० ओर ढूकियों को बैठाया । और इसराईल के संतान तीसरे
दिन बनियामीन के संतान के साथ चढ़ गये और गबिया के
३१ सन्मुख आगे के समान फिर पांती बांधी । और बनियामीन के
संतान ने उनका साम्ना किया और नगर से खींचे गये और
आगे की नाईं राज मार्गों में, जो बैतईल को जाता है और
३२ दूसरा गबिया को, तीस मनुष्य के अंटकल मारते गये । और
बनियामीन के संतान ने कहा कि वे आगे की नाईं हमारे आगे
मारे पड़े परंतु इसराईल के संतान ने कहा कि आओ भागें
३३ और उन्हें नगर से राज मार्गों में खींच लावें । तब सारे इसराईल
के लोग अपने स्थान से निकले और उस स्थान पर पांती बांधी
जिसका नाम बआलतामार है और इसराईल के ढूकिये
३४ अपने स्थानों से गबिया के खेतों में से निकले । और समस्त
इसराईल में से दस सहस्र चुने हुए जन गबिया के सन्मुख
आये और बड़ा संग्राम हुआ पर उन्हों ने न जाना कि बिपत्ति
३५ आन पहुंची । तब परमेश्वर ने बनियामीन को इसराईल के
आगे मारा और इसराईल के संतान ने उस दिन पचीस
सहस्र एक सौ जन बनियामीनी मारे ये सब खड्गधारी थे ।
३६ और बनियामीन के संतान ने देखा कि हम मारे पड़े क्योंकि
इसराईल के मनुष्य बनियामीनी को निकाल लाये इस लिये
कि वे उन ढूकियों के भरोसे पर थे जिन्हें उन्हों ने गबिया के
३७ अलंग बैठाया था । तब ढूकियों ने फुरती किई और गबिया
पर लपके और बढ़ गये और सारे नगर को तलवार की धार
३८ से घात किया । अब इसराईल के मनुष्यों में और उन ढूकियों
में एक पता ठहराया हुआ था कि नगर में से धूआं के साथ
३९ बड़ी लवर निकालें । और जब इसराईल के मनुष्य संग्राम में
हटगये तब बनियामीनी उनमें के तीस मनुष्य के अंटकल मार
ने लगे क्योंकि उन्हों ने कहा कि निश्चय आगे के संग्राम के

४० समान वे हमारे आगे मारे पड़े। परंतु जब लवर और धूआं एक साथ नगर से उठे तो बनियामीनी ने पीछे दृष्टि किई और
४१ क्या देखते हैं कि नगर से स्वर्ग लों लवर उठ रही है। और जब इसराईल के संतान फिरे तब बनियामीन के मनुष्य घबराये क्योंकि उन्हों ने देखा कि हम पर बिपत्ति आ पहुंची।
४२ इस लिये उन्हों ने इसराईलियों से भाग के अरण्य का मार्ग लिया परंतु संग्राम ने उन्हें जा ही लिया और जो नगरों से निकल
४३ आये थे उन्हों ने अपने बीच में नाश किया। उन्हों ने यों बनियामीनी को घेरा और खेदा और सहज से गबिया के
४४ साम्ने पूर्ब्ब दिशा में लताड़ा। और अठारह सहस्र बनियामीनी
४५ जूझ गये ये सब बीर थे। सो वे फिरे और रमून की पहाड़ी की ओर अरण्य में भाग गये और उन्हों ने राज मार्गों में चुन चुन के पांच सहस्र पुरुष मारे और गदूम लों उनका पीछा
४६ किया और दो सहस्र और मारे। सो सब बनियामीनी जो
४७ उस दिन जूझे पचीस सहस्र खड्गधारी बीर थे। परंतु छः सौ मनुष्य बन की ओर फिर के रमून पहाड़ी को भाग गये और
४८ चार मास रमून पहाड़ी में रहे। तब इसराईल के मनुष्य बनियामीन के संतान पर फिरे और उन्हें, क्या पुरुष क्या पशु और सब जो हाथ लगा नगर के मारे और जिस जिस नगर में आये उसे फूंक दिया।

२१ एकीसवां पर्ब्ब ।

इसराईली बनियामीनी के लिये बिलाप करके परमेश्वर से मंत्र लेते हैं १—७ जिन्हों ने उनकी सहाय न किई सो मारे जाते हैं ८—१४ बनियामीनी को फेर बसाते हैं १५—२२।

१ अब इसराईल के संतानों ने मिज़पः में यह कहिके किरिया खाई थी कि हम में से कोई अपनी बेटी बनियामीन को न देगा।

२ और लोग ईश्वर के मंदिर को आये और ईश्वर के आगे सांझ
३ लों चिल्लाये और बिलख बिलख रोये। और बोले कि हे
परमेश्वर इसराईल के ईश्वर इसराईल पर यह क्या हुआ
४ कि इसराईल में आज के दिन एक गोष्ठी घट गई। और यों
हुआ कि बिहान को उठके उन लोगों ने वहां एक बेदी बनाई
५ और होम की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ाईं। और
इसराईल के संतानों ने कहा कि मंडली में इसराईल की सारी
गोष्ठियों में से परमेश्वर की मंडली के संग कौन कौन नहीं
चढ़ा? क्योंकि उन्हों ने उसके विषय में बड़ी किरिया खाई
थी कि जो मज़पः में परमेश्वर के आगे न आवेगा सो
६ निश्चय मारा जायगा। सो इसराईल के संतान अपने
भाई बनियामीन के कारण पछताये और बोले कि आज
७ इसराईल में से एक गोष्ठी कटगई। हम उनके लिये पत्नियां
कहां से लावें क्योंकि हम ने तो परमेश्वर की किरिया खाई है
८ कि हम अपनी बेटियां उन्हें पत्नियां के लिये न देंगे। तब
उन्हों ने कहा कि इसराईल की गोष्ठियों में से वुह कौन है जो
मज़पः में परमेश्वर के आगे नहीं चढ़ा और देखो कि
९ याबश जलियाद में से कोई सभा में नहीं आया था। क्योंकि
लोग गिने गये और याबश जलियाद के वासियों में से कोई
१० न था। तब मंडली ने बारह सहस्र जन को, जो बड़े बीर थे
आज्ञा करके उधर भेजा कि याबश जलियाद के वासियों को
जाके, स्त्री और बालक सहित, खड्ग की धार से मार डालो।
११ पर इतना कीजियो कि हर एक पुरुष और हर एक स्त्री को
१२ जो पुरुष से ज्ञाता हो सर्वथा नष्ट कर देना। सो उन्हों ने
याबश जलियाद के वासियों में चार सौ कुंआरी पाईं जो
पुरुष से अज्ञान थीं और उन्हें शीलू की छावनी में, जो किनान
१३ के देश में है, ले आये। तब सारी मंडली ने बनियामीन के
संतान को, जो रमून की पहाड़ी में थे, कहला भेजा और

१४ उनसे कुशल का प्रचार किया। और उस समय बनियामीन फिर आये और उन्हों ने उन स्त्रियों को, जो याबश जलियाद में से जीती बचा रक्खा था, उन्हें दिया तथापि उनके लिये
१५ नपटीं। और लोग बनियामीन के लिये पछताये इस लिये कि परमेश्वर ने इसराईल की गोष्ठियों में दरार किया।
१६ तब मंडली के प्राचीन बोले कि उबरे ऊओं के लिये पत्नियां कहां से लावें क्योंकि बनियामीन में से सारी स्त्री
१७ नष्ट ऊईं। तब उन्हों ने कहा कि बनियामीन में से जो बच रहे हैं अवश्य है कि उनके लिये अधिकार होवे जिसतें इसराईल
१८ की एक गोष्ठी नष्ट न होजाय। तथापि हम तो अपनी बेटियां उन्हें पत्नियों के लिये दे नहीं सक्ते क्योंकि इसराईल के संतानों ने यह कहिके किरिया खाई है कि वुह जो बनियामीन को
१९ पत्नी देवे सो स्रापित है। तब उन्हों ने कहा कि देखो शीलू में परमेश्वर के लिये बरस का पर्ब्ब है जो बैतईल की उत्तर अलंग को और उस राज मार्ग की पूर्ब अलंग जो बैतईल से
२० सकीम को जाता है और लबोना के दक्षिण। इस लिये उन्हों ने बनियामीन के संतानों को आज्ञा करके कहा कि जाओ
२१ और दाख की बारियों में घात में रहो। और देखते रहो यदि शीलू में की कन्या नाचने को बाहर आवें तो दाख की बारियों में से निकलो और हर एक पुरुष शीलू की बेटियों में से अपनी पत्नी के लिये पकड़े और बनियामीन के
२२ देश को जाय। और यों होगा कि जब उनके पिता अथवा भाई हमारे पास आके दोहाई देंगे तब हम उन्हें कहेंगे कि हमारे कारण उन पर कृपा कीजिये क्योंकि संग्राम में हम ने हर एक पुरुष के लिये उसकी पत्नी न छोड़ी क्योंकि
२३ अबकी तुम ने उन्हें न दिया जिसतें दोषी होते। सो बनियामीन के संतानों ने ऐसाही किया और अपनी गिनती के समान उन में से, जो नाचतीं थीं, एक एक पत्नी ले लिई और उन्हें लिये

ऊए अपने अधिकार को फिरे और अपने नगरों को सुधारा
२४ और उनमें बसे। और इसराईल के संतान उस समय
वहां से चले और हर एक अपनी अपनी गोष्ठी और अपने
२५ अपने घरानें में और अपने अपने अधिकार को गया। उन्हीं
दिनों में इसराईल में कोई राजा न था और जिसको जो
अच्छा लगता था सो करता था।

रूत की पुस्तक।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

अकाल के कारण अलीमलक अपने घराने समेत मवाब के देश में जारहता है उसके दो बेटे बियाह करते हैं फेर वे तीनों पुरुष उस देश में मरजाते हैं १—५ नावमी अपनी पतोह रूत के साथ किनान के देश में फिर आती है ६—१८ वे बैतुल्लहम में पऊंचती हैं १९—२२।

१ अब न्यायियों की प्रभुता के दिनों में देश में अकाल पड़ा और यहूदा बैतुल्लहम से एक जन अपनी पत्नी और दो बेटे समेत
२ निकला कि मवाब के देश में जारहे। उस पुरुष का नाम अलीमलक और उसकी पत्नी का नाम नावमी था और उसके दो बेटों के नाम महलून और किलियून था ये यहूदा बैतुल्लहम के अफ़राती थे सो वे मवाब के देश में आये और वहां रहे।
३ नावमी का पति अलीमलक मरगया और वुह और उसके
४ दोनों बेटे रह गये। उन दोनों ने मवाबी स्त्रियों से बियाह किया एक का नाम अरफ़ा और दूसरी का रूत था और वे बरस दस
५ एक वहां रहे। और महलून और कलियून भी दोनों मरगये सो वुह स्त्री अपने दो बेटों से और पतिसे अकेली छोड़ी गई।
६ तब वुह अपनी बहू समेत उठी कि मवाब के देश से फिर जाय क्योंकि उसने मवाब के देश में सुना था कि परमेश्वर ने
७ अपने लोगों पर कृपा करके उन्हें अन्न दिया। इसलिये वुह उस

स्थान से जहां थी दोनों बहू समेत चल निकली और अपना मार्ग
८ लिया कि यहूदा के देश को फिर जाय। तब नावमी ने अपनी
दोनों बहू से कहा कि अपने अपने मैके को जाओ और जैसे तुमने
मृतक से और मुझसे व्यवहार किया वैसे ही परमेश्वर तुम पर
९ अनुग्रह करे। परमेश्वर ऐसा करे कि अपने अपने पति के घर
में बिश्राम पाओ तब उसने उन्हें चूमा और उन्होंने चिल्लाके बिलाप
१० किया। फिर उन्होंने उसे कहा कि हमतो निश्चय तेरे साथ तेरे
११ लोगों में फिर जायेंगे। और नावमी बोली मेरी बेटियो फिर
जाओ मेरे साथ किस लिये जाओगी क्या मेरी कोख में और बेटे
१२ हैं कि तुम्हारे पति होवें। मेरी बेटियो फिर जाओ क्योंकि पति
करने को मैं अति वृद्ध हों यदि मैं कहों कि मेरी आशा है और
१३ आजरात पति करों और बेटे जनों। तो क्या तुम उनके सयाने
होने लों आशा रखती और पति करने से उनके लिये ठहरती
नहीं मेरी बेटियो मैं तुम्हारे लिये निपट दुःखी हों क्योंकि
१४ परमेश्वर का हाथ मेरे बिरोध पर निकला। तब वे फिर चिल्लाके
रोईं और अरफ़ा ने अपनी सास का चूमा लिया परंतु रूत अपनी
१५ सास से लपटी रही। वुह बोली कि देख तेरी गोतनी अपने
लोगों और अपनी देवतों कने फिर गई तूभी अपनी गोतनी
१६ के पीछे फिर जा। रूत बोली मुझे आप से छोड़के फिर जानेको
मत मना क्योंकि जिधर आप जायंगी मैं भी जाओंगी और जहां
आप रहेंगी रहोंगी आपके लोग मेरे लोग और आपका ईश्वर
१७ मेरा ईश्वर। जहां आप मरेंगी मैं मरोंगी और गाड़ी जाओंगी
ईश्वर मुझसे ऐसाही करे और उससे अधिक यदि केवल मृत्यु मुझे
१८ आपसे अलग करे। जब उसने देखा कि उसका मन उसके
१९ साथ जाने पर दृढ़ है तब वुह चुप होरही। सो वे दोनों जातीं
जातीं बैतुल्लहम में आईं और यों हुआ कि जब वे बैतुल्लहम में
पहुंचीं तो सारे नगर उनके बिषय में चंचल होके बोले कि यह
२० नावमी। उसने उन्हें कहा कि मुझे नावमी मत कहो परंतु मारा

कहो। क्योंकि सर्ब शक्तिमान ने अति कड़वाहट से मुझसे ब्यवहार
२१ किया है। मैं भरीपुरी निकल गई और परमेश्वर मुझे छूछी
फेरलाया मुझे नावमी क्यों कहते हो देखते हो कि परमेश्वर ने
मुझ पर साक्षी दिई है और सर्ब सामर्थी ने मुझे दुःख दिया
२२ है। सो नावमी अपनी बहू मवाबी रूत समेत मवाब के
देश से फिर आई और जव की कटनी के आरंभ में बैतुल्लहम में
पहुंची।

२ दूसरा पर्ब्ब।

रूत बोआज़ के खेत में बीन्ने को जाती है और वुह
उसका समाचार पूछता है १—७ बोआज़ उसपर
दया करता है ८—१७ रूत ये सब बातें नावमी
से कहती है १७—२३।

१ नावमी के पति का एक कुटुम्ब था जो अलीमलक के घराने में
२ बड़ा धनी था जिसका नाम बोआज़ था। और मवाबी रूत ने
नावमी से कहा कि मुझे उसके खेत में जो मुझपर कृपा करे अन्न
३ बीन्ने को जाने दीजिये वुह उसे बोली कि मेरी बेटी जा। सो वुह
गई और लवैयों के पीछे पीछे खेत में बीन्ने लगी संजोग से वुह
४ अलीमलक के कुटुम्ब बोआज़ के खेत में गई। और देखो कि
बोआज़ बैतुल्लहम में से आगया और लवैयों से बोला कि
परमेश्वर तुम्हारे साथ वे उत्तर देके बोले कि परमेश्वर आप को
५ बढ़ती देवे। फिर बोआज़ ने अपने सेवक से, जो लवैयों पर था,
६ पूछा कि यह किसकी कन्या। तब जो सेवक लवैयों पर था सो
उत्तर देके बोला कि यह मवाबी कन्या है जो मवाब के देश से
७ निकलके नावमी के साथ फिर आई। और वुह बोली मुझे
लवैयों के पीछे पीछे गट्ठों के बीच बीच में बीन्ने दीजिये सो वुह
आई और बिहान से अबलों बनीरही और तनिक घर में ठहरी।
८ बोआज़ ने रूत को कहा कि हे बेटी क्या तू नहीं सुनती है तू

दूसरे खेत में अन्न बीन्ने न जा और यहां से मत जा परंतु मेरी
९ कन्यों से मिलची रह। तेरी आंखें उसी खेतपर होवें जो वे
लवते हैं और उनके पीछे पीछे चली जा क्या मैं ने तरुणों को
नहीं चेताया कि तुझे न छूवें और जब तू पीयासी होय तो
१० पात्रों में से जाके पी जो तरुणों ने खींचा है। तब उसने
मुंह के बल भूमि पर झुकके दंडवत किई और उसे बोली कि
आपकी दृष्टि में किस कारण मैंने अनुग्रह पाया कि आप मेरी
११ सुधि लेते हैं यद्यपि परदेशिन हों। तब बोआज़ ने उत्तर देके
उसे कहा कि जो तूने अपने पति के मरने के पीछे अपनी सास से
किया है रती रती मुझ पर प्रगट ज़ुआ है तूने आपनी माता पिता
को और अपनी जन्म भूमि को छोड़ा और इन लोगों में आई
१२ जिन्हें तू आगे न जानती थी। परमेश्वर तेरे कार्य्य का प्रतिफल
देवे और परमेश्वर इसराईल का ईश्वर जिसके डैने के नीचे
१३ भरोसा रखने आई है तुझे परिपूर्ण पलटा देवे। तब वुह
बोली कि हे मेरे प्रभु आप की कृपा मुझ पर होवे क्योंकि आपने
मुझे शांति दिई है और इस लिये कि तूने स्नेह से अपनी दासी
से बातें किईं यद्यपि मैं तेरी दासियों में से एक के समान नहीं।
१४ फिर बोआज़ ने उसे कहा कि भोजन के समय में तू इधर आ
और रोटी खा और कौर को सिरके में चभोर तब वुह लवैयों
के पीछे बैठगई और उसने उसे चबेना दिया और वुह खाके
१५ तृप्त ज़ुई और कुछ छोड़ दिया। और जब वुह बीन्ने को उठी तब
बोआज़ ने अपने तरुणों को आज्ञा करके कहा कि उसे गट्ठोंहीं
१६ के बीच में बीन्ने देओ और उसे लज्जित न करो। और
जानबूझके उसके लिये मुट्ठी भर भर गिरा भी देओ और छोड़
१७ देओ जिसतें वुह बीने और उसे कोई न झिड़के। सो वुह सांझ
लों खेत में बीनती रही और जो कुछ उसने बीना था सो झाड़ा
१८ वुह चार पसेरी से ऊपर ज़ुआ। सो वुह उसे उठाके नगर
को गई और जो कुछ उसने बीना था सो उसकी सासने देखा और

तृप्त होके, जो कुछ उसने रख छोड़ा था सो निकाल के अपनी
१९ सास को दिया। फिर उसकी सास ने पूछा कि तूने आज कहां
बीना है और कहां परिश्रम किया धन्य है वुह जिसने तेरी
सुधि लिई तब उसने जिसके यहां परिश्रम किया था अपनी
सास को बता के कहा कि जिसके यहां मैं ने आज परिश्रम
२० किया है उसका नाम बोआज़। नावमी ने अपनी बहू से कहा
कि वुह परमेश्वर का धन्य है जिसने जीवतों और मृतकों से
अपना अनुग्रह न उठाया नावमी ने उसे कहा कि वुह जन हमारा
२१ कुटुम्ब है हमारा एक समीपी कुटुम्ब। मवाबी रूत बोली कि
उसने मुझे यह भी कहा कि जबलों मेरी समस्त लवनी न हो
२२ जाय तू मेरे तरुणों के पास पास रहियो। नावमी ने अपनी
बहू से कहा कि मेरी बेटी भला है कि तू उसकी कन्यों के साथ
साथ जाया करे जिसतें वे किसी दूसरे खेत में तुझे न पावें।
२३ जव और गोहूं की लवनी के अंत्य लों वुह बोआज़ की कन्यों के
साथ पिलची रही और अपनी सास के साथ रहती थी।

३ तीसरा पर्ब्ब।

नावमी का मंत्र रूत को १—५ रूत वैसाही करती
है और उसे बोआज़ अनुग्रह की बातें करता है
६—१३ वुह उसे अन्न देके चुपके से उसकी सास
पास भेजता है १४—१८।

१ तब उसकी सास नावमी ने उसे कहा कि हे बेटी क्या मैं तेरा
२ चैन न चाहों जिसमें तेरा भला होवे। और अब क्या बोआज़
हमारा कुटुम्ब नहीं जिसकी कन्यों के साथ तू थी देख वुह
३ आज रात खलिहान में जव फटकता है। सो तू स्नान कर और
चिकनाई लगा और वस्त्र पहिन और खलिहान को उतर जा
जबलों वुह खा पी न चुके तबलों आप को उस पुरुष पर प्रगट
४ मत कर। और ऐसा हो कि जब वुह लेटजाय तब तू उसके

शयन स्थान को देख रख और भीतर जाके उसके पांव को उघार और वहीं लेट जा और जो कुछ तुझे करना है वुह सब
५ बतावेगा । उसने अपनी सास को कहा कि जो आप मुझे
६ कहतीहैं मैं सब करोंगी । सो वुह खलिहान को उतर गई और जो कुछ कि उसकी सासने आज्ञा किई थी उसने किया ।
७ और जब बोआज़ खा पी चुका और उसका मन मगन हुआ अन्न की ढेर की एक अलंग जाके लेट गया तब उसने हौले
८ हौले आके उसके पांव को उघारा और लेट गई । और ऐसा हुआ कि आधी रात को वुह पुरुष डर के करवट लिया और क्या देखता है कि एक स्त्री उसके पांव पास पड़ी है ।
९ तब उसने पूछा कि तू कौन है वुह बोली कि आपकी दासी रूत तूअपनी दासी पर अपने अंचल फैला क्योंकि आप छुड़ाने
१० का पद रखते हैं । उसने कहा कि हे बेटी तू ईश्वर की धन्य क्योंकि तू ने आरंभ से अंत को मुझ पर अधिक कृपा किई है इस कारण कि तूने तरुणों का पीछा न किया चाहे कंगाल चाहे धनमान
११ हो । अब हे बेटी मतडर जो कुछ तू चाहती है मैं सब तुझसे करोंगा क्योंकि लोगों का सारा नगर जानताहै कि तू धर्म्मी
१२ स्त्री है । और यह सच है कि मैं समीपी कुटुम्ब हों तथापि
१३ एक कुटुम्ब मुझसे अधिक समीपी है । आज रात ठहर जा और बिहान को ऐसा होगा कि यदि नाते का व्यवहार पूरा करे तो भला नाते का व्यवहार करे और यदि वुह नाते का व्यवहार तुझसे न करे तो परमेश्वर के जीवन सों मैं नाते का
१४ व्यवहार तुझसे करोंगा सो बिहान लों लेटी रह । सो वुह बिहान लों उसके पांव पास पड़ी रही और उससे पहिले उठी कि एक दूसरे को चीन्ह सके तब उसने कहा कि कोई जान्ने
१५ न पावे कि कोई स्त्री खलिहान में आई थी । फिर उसने यह भी कहा कि अपनी ओढ़नी धर और जब उसने धरा तो उसने छः नपुआ जव उसपर डाल दिये और वुह नगर को गई ।

१६ जब वुह अपनी सास पास आई तब वुह बोली हे बेटी तू कौन और जो कुछ कि उस पुरुष ने उस्से किया था उसने सब बर्णन
१७ किया। और कहा कि मुझे उसने यह छः नपुआ जव दिया क्योंकि उसने मुझे कहा कि तू अपनी सास पास छूछा मत
१८ जा। तब उसने कहा कि हे बेटी जबलों इस बात का अंत न देख ले तबलों चुपकी रह क्योंकि जबलों आज इस बात को समाप्त न करले वुह पुरुष चैन न करेगा।

४ चौथा पर्ब्ब।

प्राचीनों को बटोर के बोआज़ रूत के बिषय में नाते के पद का बिचार करता है १—५ वुह कुटुम्ब नाते के पद का व्यवहार त्याग करके बोआज़ को सौंपता है ६—८ बोआज़ प्राचीनों के आगे अधिकार को छुड़ाता है और रूत को अपनी पत्नी बनाता है और उस्से बालक उत्पन्न होता है ९—१२ बालक के बिषय में लोगों का बिचार और नावमी बालक की सेवा करती है १३—१७ स्त्री बालक का नाम रखती हैं दाऊद के घराने से यह पुस्तक समाप्त होती है १८—२२।

१ तब बोआज़ फाटक पर चढ़ गया और वहां जा बैठा और क्या देखता है कि जिस कुटुम्ब के बिषय में बोआज़ ने कहा था वुह आया जिसे उसने कहा कि अहो अमुक आइये एक अलंग
२ हो बैठिये सो वुह एक अलंग जा बैठा। बोआज़ ने नगर के दस प्राचीन बुलाये और कहा कि यहां बैठिये सो वे बैठ गये।
३ तब उसने उस कुटुम्ब को कहा कि नावमी जो मवाब के देश से फिर आई है भूमि का एक टुकड़ा बेचती है जो हमारे भाई
४ अलीमलक का था। सो यह कहिके मैंने तुझे चेताने चाहा कि निवासियों के आगे और मेरे लोगों के प्राचीनों के

आगे उसे मोल ले यदि तू छुड़ावे तो छुड़ा और यदि न छुड़ावे तो मुझे कह जिसतें मैं जानों क्योंकि तुझे छोड़ कोई छुड़वैया
५ नहीं तेरे पीछे मैं हों वुह बोला कि मैं छुड़ाओंगा। तब बोआज़ ने कहा कि जिस दिन तू वुह खेत नावमी से मोल लेवे रूत मवाबी से भी जो म्रतक की पत्नी है मोल लेना तुझे अवश्य है
६ और म्रतक का नाम उसके अधिकार पर ठहरावे। तब उस कुटुम्ब ने कहा कि मैं अपने लिये छुड़ा नहीं सक्ता नहो कि मैं अपना अधिकार बिगाड़ों सो तू अपने लिये मेरा पद छुड़ा
७ क्योंकि मैं छुड़ा नहीं सक्ता। सब बात को दृढ़ करने के लिये अगले समय में पलटने और छुड़ाने के विषय में इसराईल में यह व्यवहार था कि मनुष्य अपना जूता उतार के अपने परोसी
८ को देता था और इसराईल में यही साक्षी थी। इस लिये उस कुटुम्ब ने बोआज़ को कहा कि तू अभी मोल ले सो उसने
९ अपना जूता उतारा। और बोआज़ ने प्राचीनों को और सारे लोगों को कहा कि तुम आज साक्षी हो कि मैं ने अलीमलक और कलियून और महलून का सब कुछ नावमी के
१० हाथ से मोल लिया। और उस्से अधिक मैंने महलून की पत्नी मवाबी रूत को अपनी पत्नी के लिये मोल लिया जिसतें म्रतक के नाम को उसके अधिकार में स्थिर करों कि म्रतक का नाम अपने भाइयों से और अपने स्थान के फाटक में से मिट नजावे
११ तुम आज के दिन साक्षी हो। तब सारे लोगों ने, जो फाटक पर थे और प्राचीनों ने कहा कि हम साक्षी हैं परमेश्वर इस स्त्री को, जो तेरे घर में आई है, राहील और लिया के समान करे जिन दोनों ने इसराईल के घरानों को बनाया तू अफ़राता में योग्यता कर और अपना नाम बैतुल्लहम में प्रचार कर।
१२ और तेरा घर, जिसे परमेश्वर इस कन्या के बंश से तुझे देगा फ़ारिज़ के घर के समान होवे जिसे तामर यहूदा के लिये जनी।
१३ तब बोआज़ ने रूत को लिया और वुह उसकी पत्नी

ऊई और जब उसने उसे ग्रहण किया तब वुह परमेश्वर के
१४ अनुग्रह से गर्भिणी ऊई और बेटा जनी। और स्त्रियों ने
नावमी से कहा कि परमेश्वर धन्य है जिसने तुझे आजके दिन
बिना कुटुम्ब नछोड़ा जिसतें उसका नाम इसराईल में प्रसिद्ध
१५ होवे। और वुह तेरे जीवन के बढ़ाने का कारण और तेरी
बुढ़ापे के पालने का कारण होगा क्योंकि तेरी बहू जो तुझे
प्रीति रखती है जो सात बेटों से तेरे लिये भली है उसके लिय
१६ जनी है। और नावमी ने उस बालक को लिया और अपनी
१७ गोद में रक्खा और उसकी दहा ऊई। तब उसकी परोसिन
उसका नाम लेकर बोलीं कि नावमी का बेटा उत्पन्न ऊआ और
उन्होंने उसका नाम ओबेद रक्खा वुह यस्सी का पिता दाऊद का
१८ पिता। सो फ़ारिज़ की बंशावली यह है कि फ़ारिज़ से
१९ हसरून उत्पन्न ऊआ। और हसरून स राम और राम से
अमीनादाब और अमीनादाब से नख़शून और नख़शून से
सलमून और सलमून से बोआज़ और बोआज़ से ओबेद
और ओबेद से यस्सी और यस्सी से दाऊद उत्पन्न ऊआ।

5
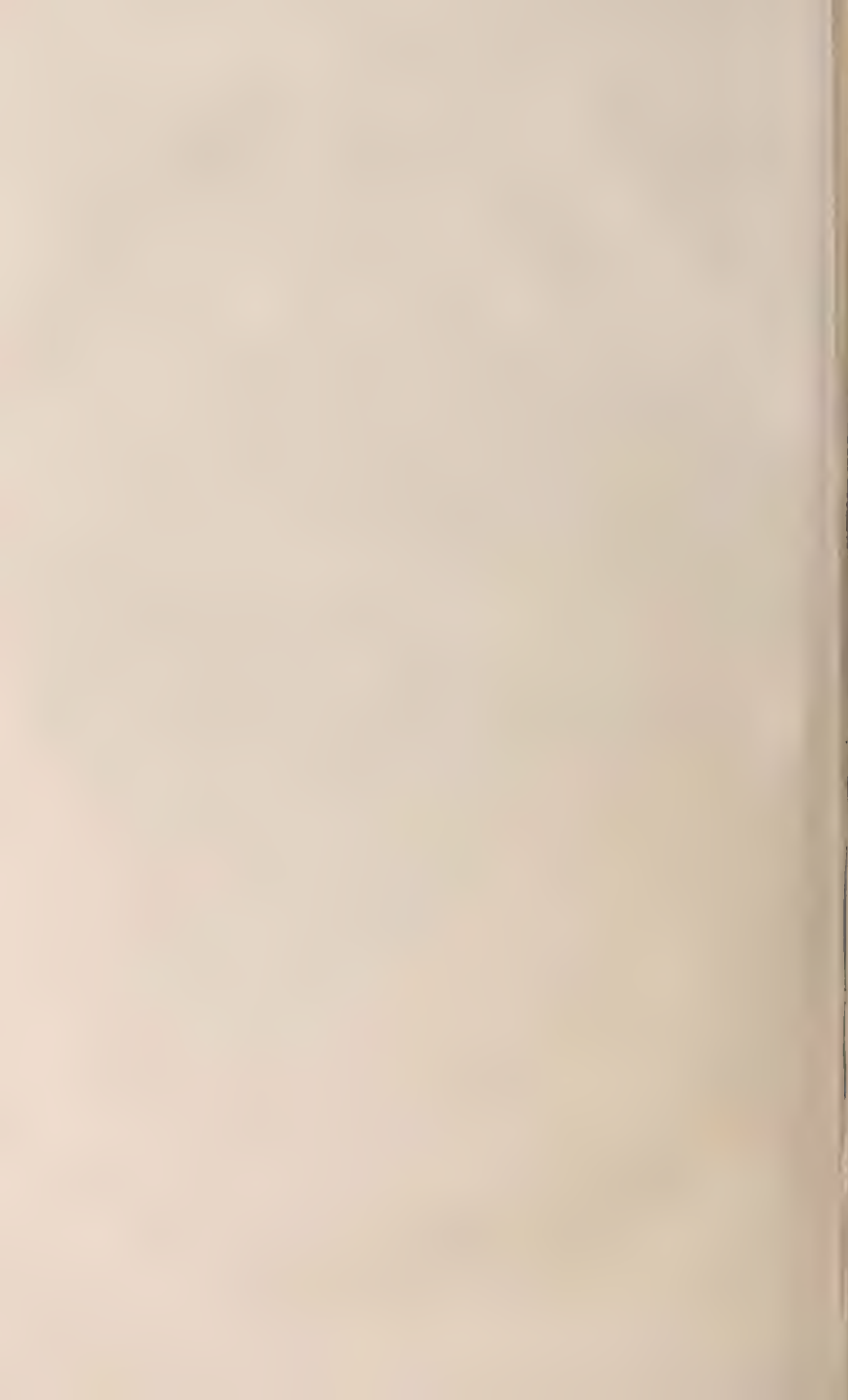
समूएल की पहिली पुस्तक जो राजाओं की पहिली पुस्तक कहावती है।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

एलकाना और उसकी पत्नियों का समाचार १—८ हन्ना की प्रार्थना और मनौती और उसके पुत्र समूएल का जन्म ९—२० हन्ना अपने बेटे को परमेश्वर को सौंप के अपनी मनौती पूरी करती है और उसके समर्पण के लिये बलि चढ़ाती है २१—२८।

१ अफ़राईम पहाड़ के रामातईम सूफ़ीम का एक जन था वुह सूफ़ अफ़राती के बेटे तूह का बेटा अलीहू का बेटा यरोहाम
२ का बेटा था और उसका नाम एलकाना था। उसकी दो पत्नियां थीं एक का नाम हन्ना और दूसरी का पनिन्ना और पनिन्ना के
३ बालक थे परंतु हन्ना के बालक न था। वुह जन बरस बरस अपने नगर से जाके शीलू में सेनाओं के परमेश्वर के आगे सेवा करके बलि चढ़ाता था और एली के दो बेटे हफ़नी और
४ फ़िनिहाज़ वहां परमेश्वर के याजक थे। और ऐसा था कि जब एलकाना भेंट चढ़ाता था वुह अपनी पत्नी पनिन्ना को
५ और उसके सब बेटों और बेटियों को भाग देताथा। परंतु हन्ना को दुहरा भाग दिया करता था क्योंकि वुह हन्ना से प्रीति रखता था परंतु परमेश्वर ने उसकी कोख बंद कर रक्खी थी।
६ और उसकी सौत उसे कुढ़ाने के लिये अत्यंत खिझाती थी इस कारण कि परमेश्वर ने उसकी कोख बंद कर रक्खी थी।

७ और बरस बरस वुह परमेश्वर के मंदिर में जाता था उसी रीति से वुह उसे खिझाती थी सो वुह रो रो के कुछ न खाती
८ थी। तब उसके पति एलकाना ने उसे कहा कि हे हन्ना तू क्यों बिलाप करती है? और क्यों नहीं खाती है? और तेरा मन क्यों
९ शोकित है? तेरे लिये मैं दस बेटों से अच्छा नहीं?। और जब वे शीलू में खा पी चुके तो हन्ना उठी और उस समय इली याजक परमेश्वर के मंदिर के खंभेपास बैठक पर बैठा ज्ञआ था।
१० और हन्ना ने मन के शोक से परमेश्वर की प्रार्थना किई और
११ बिलख बिलख रोई। और उसने मनैाती मान के कहा कि हे सेनाओंके परमेश्वर यदि तू अपनी दासी के कष्ट पर दृष्टि करे और मेरी सुधि लेवे और अपनी दासी को भूल न जाय परंतु अपनी दासी को पुत्र देवे तो मैं उसे जीवन भर परमेश्वर के लिये समर्पण करोंगी और उसके सिर पर छुरा न फिरेगा।
१२ और यों ज्ञआ कि जब वुह परमेश्वर के आगे प्रार्थना कर रही
१३ थी इली उसके मुंह को देख रहा था। अब हन्ना मनही मन कहि रही थी केवल उसके होंठ हिलते थे परंतु उसका शब्द सुना न जाता था इसलिये इली समुझा कि वुह अमल में है।
१४ और इली ने उसे कहा कि कबलों तू मतवाली रहेगी? अपनी
१५ मदिरा त्याग कर। तब हन्ना ने उत्तर देके कहा कि नहीं मेरे प्रभु मेरा मन दुःखी है मैंने मदिरा अथवा अमल नहीं पीया
१६ परंतु अपने मन को परमेश्वर के आगे बहा दिया है। आप अपनी दासी को बलिआल की पुत्री मत जानिये क्योंकि मैं अपने ध्यान
१७ और शोक की अधिकाई से अबलों बोली हों। तब इली ने उत्तर देके कहा कि कुशल से जा इसराईल का ईश्वर तेरी
१८ प्रार्थना, जो तूने उस्से किई, पूरी करे। उसने कहा कि तेरी दासी तेरी दृष्टि में अनुग्रह पावे तब वुह स्त्री चली गई और खाया
१९ और फिर उसका मुंह उदास न ज्ञआ। और वे बिहान को तड़के उठे और परमेश्वर के आगे दंडवत किई और

फिरे और रामा में अपने घर आये और एलकाना ने अपनी पत्नी हन्ना को ग्रहण किया तब परमेश्वर ने उसे स्मरण किया।

२० और कितने दिन बीते ऐसा हुआ कि हन्ना गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उसका नाम, इस कारण, समुईल रक्खा

२१ कि मैंने उसे परमेश्वर से मांगा है। और एलकाना अपने समस्त घर समेत चढ़गया कि बरस का बलिदान परमेश्वर के

२२ आगे चढ़ावे और मनौती पूरी करे। परंतु हन्ना ऊपर न गई क्योंकि उसने अपने पति से कहा कि जबलों बालक का दूध छुड़ाया न जाय मैं यहीं रहोंगी और तब इसे ले जाओंगी जिसतें वुह परमेश्वर के आगे दिखाई देवे और सदा वहीं रहे।

२३ तब उसके पति एलकाना ने उसे कहा कि जो तुझे भला लगे सो कर तू उसका दूध छुड़ाने लों ठहरी रह केवल परमेश्वर अपने बचन को स्थिर करे सो वुह स्त्री ठहरी रही और जबलों उसका दूध न छुड़ाया गया अपने बेटे को दूध पिलाया किया।

२४ और जब उसने उसका दूध छुड़ाया तो तीन बैल सहित उसे ले चली और आधे मन से ऊपर पिसान और एक कुप्पा मदिरा शीलू में परमेश्वर के मंदिर में लाई और बालक छोटा था।

२५ तब उन्होंने एक बैल को बलि किया और बालक को एली पास

२६ लाये। और बोली कि हे मेरे प्रभु तेरे जीवन सों मेरे प्रभु मैं वही स्त्री हों जो तेरे पास परमेश्वर के आगे यहां खड़ी होके

२७ प्रार्थना किई थी। मैंने इस बालक के लिये प्रार्थना किई थी सो परमेश्वर ने मेरी बिनती, जो मैंने उस्से किई थी, ग्रहण किई।

२८ इसलिये मैंने इसे बिनती से पाके परमेश्वर को फेर दिया जो मैंने बिनती से पाया सो परमेश्वर को फेराजायगा और उसने वहां परमेश्वर को दंडवत किई।

२ दूसरा पर्ब्ब।

हन्ना की स्तुति १—१० एली के पुत्र का घिनित कर्म्म ११—१७ समुएल का समाचार और उसकी माता पिता को परमेश्वर का आशीष १८—२१ अपने बेटे के न रोकने से एली का दोष २२—२६ परमेश्वर का संदेश एली को और उसके घराने के नष्ट होने का आगम बचन २७—३६।

१ और हन्ना ने प्रार्थना करके कहा कि मेरा मन परमेश्वर से आनंद है परमेश्वर से मेरा सींग बढ़ाया गया शत्रुन के सामे बोलने को मेरा मुंह बढ़गया क्योंकि मैं तेरी मुक्ति में आनंद हों।
२ परमेश्वर के तुल्य कोई पवित्र नहीं क्योंकि तुझे छोड़ कोई नहीं
३ कोई चटान हमारे ईश्वर के समान नहीं। अति घमंड से फेर मत कहो और अहंकार तुम्हारे मुंह से न निकले क्योंकि परमेश्वर ज्ञान का ईश्वर है और करणी उस्से जांचीजाती हैं।
४ बलवंतों के धनुष टूट गये और ठोकर खायेऊओं की कटि
५ दृढ़ता से बंध गई। तृप्त ने आप को बनी में लगाया है और भूखे थम गये यहां लों कि बांझ सात जनी और जिसके बऊत बालक
६ हैं सो दुर्बल ऊई। परमेश्वर मारता है और जिलाता है और
७ वही समाधि में उतारता है और उठाता है। परमेश्वर कंगाल करता है और धनी बनाता है वुह घटाता है और बढ़ाता है।
८ वुह कंगाल को धूल से उठाता है और कुअरों में बैठानेके लिये भिखारी को कूड़े की ढेर से उठाता है और बिभव क सिंहासन का अधिकारी करता है क्योंकि भूमि के खंभे परमेश्वर के
९ हैं और उसने जगत को उनपर धरा है। वुह अपने सिद्धों के चरणों की रक्षा करेगा और दुष्ट अंधियारे में चुप चाप पड़े रहेंगे
१० क्योंकि बल से कोई नजीतेगा। परमेश्वर के बैरी चूर होंगे स्वर्ग से वुह उन पर गर्ज्जेगा परमेश्वर पृथिवी के अंत का न्याय करेगा और वुह अपने राजा को बल देगा और अपने अभिषिक्त

११ के सींग को उभाड़ेगा। और एलकाना अपने घर रामा को
गया और वुह लड़का इली याजक के आगे परमेश्वर की सेवा
१२ करता रहा। अब इली के बेटे जो बलियाल के पुत्र थे
१३ परमेश्वर को पहिचानते न थे। और लोगों से याजकों की
यह रीति थी कि जब कोई बलि चढ़ाता था और जबलों मांस
उसना जाता था याजक का सेवक त्रिशूली मांस की कांटिया
१४ हाथ में लेके आता था। और उसे कड़ाही अथवा
बटलोही अथवा हंड़ा अथवा हांड़ी में लगाता था जितना
उस कांटे में निकलता था याजक आप लेता था सो वे सारे
१५ इसराईलियों से, जो शीलू में जाते थे, योंहीं करते थे। और
चिकनाई जलाने से आगे भी याजक का सेवक आता था और
बलि के चढ़वैये से कहता था कि भूनने के लिये याजक को मांस
देओ क्योंकि वुह तुझ से सिझाया हुआ मांस न लेगा परंतु कच्चा।
१६ और यदि कोई उसे कहता कि हम अभी चिकनाई जलालेवें तब
जितना तेरा जी चाहे उतना लेना तब वुह उत्तर देता था कि नहीं
१७ तू मुझे अभी दे नहीं तो मैं छीन लेओंगा। इसलिये परमेश्वर
के आगे उन तरुणों का महा पाप था क्योंकि लोग परमेश्वर की
१८ भेंट से घिन करते थे। परंतु सूती अफूद कसा हुआ
१९ वुह बालक समुईल परमेश्वर के आगे सेवा करता था। और
उससे अधिक उसकी माता एक छोटी कुरती बनाके बरस
बरस जब अपने पति के साथ भेंट चढ़ाने आती थी उसके लिये
२० लाया करती थी। सो इली ने एलकाना और उसकी
पत्नी को आशीष देके कहा कि परमेश्वर इस उधार की संती जो
परमेश्वर को उधार दिया गया तुझे इस स्त्री से बंश देवे और
२१ वे अपने घर को गये। फिर हन्ना पर परमेश्वर की कृपा हुई
यहां लों कि वुह गर्भिणी हुई और तीन बेटे दो बेटियां जनी
और वुह बालक समुईल परमेश्वर के आगे बड़ा हुआ।
२२ अब इली अति वृद्ध हुआ और उसने सब कुछ सुना जो उसके

बेटे समस्त इसराईलियों से करते थे और किस रीति से वे उन स्त्रियों से कुकर्म करते थे जो जथा की जथा मंडली के तंबू के
२२ द्वार पर एकट्ठी होती थीं। और उसने उन्हें कहा कि तुम यह क्या करते हो? क्योंकि मैं तुम्हारी बुराइयां हरएक जन से सुनता
२४ हों। हे मेरे बेटो यह अच्छा नहीं जो मैं सुनता हों सो भला
२५ नहीं तुम परमेश्वर के लोगों से पाप कराते हो। यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के विरोध में पाप करे तो न्यायी विचार करेगा परंतु यदि कोई परमेश्वर के विरोध में पाप करे तो उसके लिये कौन बिनती करेगा तिसपरभी उन्होंने अपने पिता का कहा न माना क्योंकि परमेश्वर उन्हें घातकिया चाहता था।
२६ और वुह लड़का समुईल बढ़ता गया और परमेश्वर के और
२७ लोगों के आगे अनुग्रह पाया। तब ईश्वर का एक जन एली पास आया और उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या मैं तेरे पिता के घराने पर, जब वुह मिसर में फरऊन के देश में था,
२८ खोल के प्रगट न ऊआ?। और क्या मैंने उसे इसराईल की समस्त गोष्ठियों से चुन न लिया कि मेरा याजक होवे? और मेरी बेदी पर बलिदान चढ़ावे और सुगंध जलावे और मेरे आगे अफ़ूद पहिने और होम की सारी भेंटजो इसराईल के संतान
२९ चढ़ाते हैं मैंने तेरे पिता के घराने को नहीं दिया?। फेर तुम काहे को मेरे बलिदानों को और भेंटों को, जो मैंने अपने निवास में आज्ञा किई है, लताड़तेहो? और अपने बेटों को मुझसे अधिक प्रतिष्ठा देता है कि मेरे लोग इसराईल के संतान की
३० भेंटों से मोटे बनो। सो परमेश्वर इसराईल का ईश्वर कहता है कि मैंने निश्चय कहाथा कि तेरा घर और तेरे पिता का घर सदा मेरे आगे चले परंतु अब परमेश्वर कहता है कि यह मुझसे दूर होवे क्योंकि जो मुझे प्रतिष्ठा देते हैं मैं उन्हें प्रतिष्ठा देओंगा और जो मेरी निंदा करते हैं सो निंदित होंगे।
३१ देखो वे दिन आते हैं कि मैं तेरी भुजा और तेरे पिता के घराने

३२ को भुजा काट डालोंगा कि तेरे घर में कोई बूढ़ा न होगा। और समस्त धन की संती जो ईश्वर इसराईल को दिये होता तू मंदिर का कष्ट देखेगा और तेरे वंश में कभी कोई वृद्ध न
३३ होगा। और तेरा वुह जन, जिसे मैं अपनी वेदी में से काट न डालोंगा, तेरी आंखें फोड़ेगा और तेरे मन को शोकित करेगा
३४ और तेरे घर की बढ़ती तरुणाई में मरजायगी। कि तेरे दोनों बेटों हफनी और फनिहाज़ पर यह पड़ेगा तेरे लिये यह पता है
३५ कि एकही दिन में दोनों के दोनों मरजायेंगे। और मैं अपने लिये एक विश्वासमय याजक उठाओंगा जो मेरे मन के, और अंतःकरण के समान करेगा और उसके लिये मैं एक घर स्थिर
३६ करोंगा और वुह सदा मेरे अभिषिक्त के आगे चलेगा। और ऐसा होगा कि हरएक जन, जो तेरे घर में बच रहेगा, एक टुकड़ा चांदी और एक एक कौर रोटी के लिये उसके पीछे फिरेगा और कहेगा कि उन याजकों मेंसे मुझे एक की सेवा दीजिये कि मैं एक टुकड़ा रोटी खायाकरों।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

समुईल परमेश्वर की सेवा करता है और उसपर आकाश वाणी होती है १—१० एली के घर की विपत्ति परमेश्वर समुईल पर प्रगट करता है ११—१४ समुईल उस समाचार को एली को सुनाता है १५—१८ समुईल आगमज्ञानी होने पर स्थिर होता है १९—२१।

१ और बालक समुईल एली के आगे परमेश्वर की सेवा करता था और उन दिनों में ईश्वर का बचन बहुमूल्य था कोई प्रगट दर्शन
२ न होता था। तभी ऐसा हुआ कि जब एली अपने स्थान में लेटा था और उसकी आंखें धुंधली होने लगीं ऐसा कि वुह

३ देख न सक्ता था। जहां ईश्वर की मंजूषा थी तहां परमेश्वर के मंदिर का दीपक अबलों न बुझा था और समुईल लेट गया
४ था। कि परमेश्वर ने समुईल को पुकारा उसने उत्तर दिया
५ कि मैं यहीं हों। और इली पास दौड़के कहा कि मैं यहीं हों क्योंकि तूने मुझे पुकारा है वुह बोला कि मैंने नहीं पुकारा
६ फिर लेट जा वुह जाके लेट गया। और परमेश्वर ने समुईल का फेर पुकारा समुईल उठके इली पास गया और बोला कि मैं यहीं हों क्योंकि तूने मुझे बुलाया उसने उत्तर दिया कि हे पुत्र
७ मैंने नहीं बुलाया फिर लेट जा। समुईल अबलों परमेश्वर को न जानता था और न परमेश्वर का वचन उसपर प्रगट ऊआ था।
८ परमेश्वर ने तीसरे बार समुईल को फिर पुकारा और वुह उठके इली पास गया और कहा कि मैं यहीं हों क्योंकि तूने मुझे बुलाया इली ने बूझा कि इस बालक को परमेश्वर ने
९ पुकारा है। इस लिये इली ने समुईल को कहा कि जा पड़ रह और यों होगा कि यदि तुझे पुकारे तो कहियो कि हे परमेश्वर कह क्योंकि तेरा दास सुनता है सो समुईल अपने स्थान पर जाके
१० लेट रहा। और परमेश्वर आ के खड़ा ऊआ और आगे की नाईं पुकारा समुईल समुईल तब समुईल ने उत्तर दिया कि
११ कहिये क्योंकि तेरा दास सुनता है। परमेश्वर ने समुईल से कहा कि देख मैं इसराईल में ऐसा कार्य्य करोंगा
१२ जिसतें सुनयों का कान झंझना उठे। मैं उस दिन सब कुछ जो मैंने इली के घराने के विषय में कहा है पूरा करोंगा जब मैं
१३ आरंभ करोंगा तब समाप्त भी करोंगा। क्योंकि मैंने उसे कहा है कि मैं उस बुराई की संतो जो वुह जानता है उसके घर का न्याय करोंगा इस कारण कि उसके बेटों ने आप को स्रापित किया है
१४ और उसने उन्हें न घुरका। इस लिये इली के घर के विषय में मैंने किरिया खाई है कि इली के घर का पाप बलिदानों और
१५ भेंटों से कधी पावन न किया जायगा। फिर समुईल

बिहान लों पड़ा रहा और उसने ईश्वर के मंदिर के द्वार खोले
१६ और समुईल उस दर्शन को इली पर प्रगट करते डरा। तब
इली ने समुईल को बुलाया और कहा कि हे मेरे बेटे समुईल
१७ वुह बोला कि मैं यहीं हों। उसने पूछा कि वुह क्या है जो तुझे कहा
गया है? मुझसे मत छिपा यदि तू इसमें से कुछ छिपावे जो उसने
१८ तुझे कहा है तो ईश्वर तुझसे ऐसा ही करे और अधिक। समुईलने
रती रती कहा और कुछ न छिपाया वुह बोला कि वुह परमेश्वर
१९ है जो भला जाने सो करे। और समुईल बढ़ा और
परमेश्वर उसके साथ था और उसने उसकी कोई बात भूमि पर
२० अकारथ गिरने न दिई। और दान से लेके बीरसबा लों समस्त
इसराईल जान गये कि समुईल परमेश्वर का आगमज्ञानी
२१ स्थिर ज्ञआ। और परमेश्वर शीलू में फेर प्रगट ज्ञआ क्योंकि
परमेश्वर ने अपने को शीलू में समुईल पर अपने वचन के द्वारा
से प्रगट किया।

४ चौथा पर्ब्ब ।

इसराईलियों और फ़लस्तानियों से संग्राम होता है
और इसराईल हार जाते हैं १—२ वे परमेश्वर
की मंजूषा को लेके फेर फ़लस्तानियों से लड़ते हैं
जिसमें तीस सहस्र योद्धा हफ़नी और फ़निहाज़ के
साथ जूझ जाते हैं और मंजूषा बैरी के बश में
पड़ती है ३—११ इली को संदेश पज्ञंचता है
और वुह आसन से गिरके मर जाता है १२—१८
इन बातों का समाचार सुनतेही फनिहाज़ की पत्नी
को जन्ने की पीड़ा लगती है और बालक जनतेही
मरजाती है १९—२२।

१ और समुईल की बात सारे इसराईल को पज्ञंची और ऐसा
ज्ञआ कि इसराईल फ़लस्तानियों से संग्राम करने को निकल

और सहाय के पत्थर के पास डेरा खड़ा किया और
२ फ़लस्तानियों ने आफ़िक में डेरा खड़ा किया । और
फ़लस्तानियों ने इसराईल के आगे पांती बांधी और जब
संग्राम फैलगया तब इसराईल फ़लस्तानियों के आगे मारेगये
और उन्होंने पांतियों मेंसे चार सहस्र मनुष्य चैागान में मारे ।
३ और जब लोग छावनी में आये इसराईल के प्राचीनों ने
कहा कि परमेश्वर ने आज हमें फ़लस्तानियों के आगे क्यों ध्वस्त
किया? आओ परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा शीलू से लेआवें
कि जब वुह हम्में आवे वुह हमें बैरियों के हाथ से बचावे ।
४ सो लोगों ने शीलू को भेजा जिसतें सेनाओं के परमेश्वर की
साक्षी की मंजूषा को, जो दो करोबियों के मध्य में रहती है,
ले आवें और इली के दोनों बेटे हफनी और फनिहाज़
५ ईश्वर की साक्षी की मंजूषा के पास वहां थे । और जब
परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा छावनी में पहुंची तब सारे
इसराईलियों ने बड़े शब्द से ललकारा यहांलों कि भूमि कांप
६ उठी । और जब फ़लस्तानियों ने ललकारने का शब्द सुना तो बोले
कि इबरानियों की छावनी में यह क्या महा शब्द? फिर
उन्होंने समझा कि परमेश्वर की मंजूषा छावनी में पहुंची ।
७ तब फ़लस्तानी डरे क्योंकि उन्होंने कहा कि ईश्वर छावनी में आया
है और बोले कि हाय हमपर क्योंकि आजकल ऐसी बात नहीं
८ हुई । हाय हम पर कौन ऐसे बलवंत देवों के हाथ से हमें बचावेगा
ये वे देव हैं जिन्हों ने मिसरियों को अरण्य में समस्त मरियों से
९ मारा । हे फ़लस्तानियो बलवंत होओ और पुरुषार्थ करो
जिसतें तुम इबरानियों के सेवक न बनो जैसा वे तुम्हारे हुए हैं
१० परंतु पुरुषार्थ करो और लड़ो । सो फ़लस्तानियों ने लड़ाई
किई और इसराईल मारे गये और हरएक पुरुष अपने अपने तंबू
को भागा और वहां बड़ा जूझ हुआ क्योंकि तीस सहस्र इसराईल के
११ पैदल मारे गये । और ईश्वर की मंजूषा लिई गई और इली के

१२ दोनों बेटे हफ़नी और फ़निहाज़ जूझ गये। और
बनियामीन का एक जन सेना से दौड़ा और कपड़े फ़ाड़े ऊए
१३ और सिर पर धूल डाले ऊए उसी दिन शीलू में आया। और
जब वुह पऊंचा तब देखो एली एक आसन पर मार्ग के लग
बैठ के बाट जोह रहा था क्योंकि ईश्वर की मंजूषा के लिये उसका
मन थर्थरा रहा था और जब उस जन ने नगर में पऊंच के
१४ संदेश दिया तब सारे नगर में रोना पीटना ऊआ। और
जब एली ने रोने का शब्द सुना तब उसने कहा कि इस हौरे के
शब्द का कारण क्या? वुह जन झप आ पऊंचा और एली को
१५ कहा। अब एली अट्ठानवे बरस का वृद्ध था और उसकी
१६ आंखें धुंधलीं थीं और वुह देख न सक्ता था। सो उस जन ने
एली से कहा कि मैं सेना से आज भाग आया हों और वही हों
जो सेना से निकला हों वुह बोला हे बेटे क्या समाचार है।
१७ उस दूत ने उत्तर देके कहा कि इसराईल फ़लस्तानियों के आगे
भाग गये और लोगों में बड़ा जूझ ऊआ और तेरे दोनों
बेटे भी हफ़नी और फ़निहाज़ मर गये हैं और ईश्वर की
१८ मंजूषा लिई गई। और यों ऊआ कि जब उसने एली से
ईश्वर की मंजूषा का नाम लिया वुह आसन पर से फाटक के
लग पिछले बल गिरा और उसका गला टूट गया और मर गया
क्योंकि वुह वृद्ध और भारी था और उसने चालीस बरस
१९ इसराईल का न्याय किया। और उसकी बह्न फ़निहाज़
की पत्नी गर्भिणी थी और उसके जन्ने का समय समीप था
जब उसने यह संदेश सुना कि ईश्वर की मंजूषा लिई गई
और उसका ससुर और पति मर गये तब वुह झुक गई और
२० पीड़ित ऊई क्योंकि उसकी पीड़ा आन पऊंची। और उसके
मरते मरते उन स्त्रियों ने जो उस पास खड़ीं थीं उसे कहा
कि मत डर क्योंकि तू बेटा जनी है परंतु उसने उत्तर न दिया
२१ न सुरत लगाई। और उसने यह कहिके उस बालक का नाम

इकाबोद रक्खा और बोली कि बिभव इसराईल में से जाता रहा इसलिये कि परमेश्वर की मंजूषा लिई गई और उसके
२२ ससुर और उसके पति के कारण। और वुह बोली कि बिभव इसराईल से जाता रहा क्योंकि ईश्वर की मंजूषा लिई गई।

५ पांचवां पर्ब्ब।

मंजूषा को लेके फ़लस्तानी अपनी देवता के मंदिर में रखते हैं उनके देवता की मूर्त्ति उसके आगे गिर पड़ती है १—३ वे फेर उसे खड़ा करते हैं परंतु मूर्त्ति फेर गिर पड़ती है और उसका सिर और हाथ कटके भूमि पर गिर पड़ते हैं ४—५ परमेश्वर का कोप फ़लस्तानियों पर पड़ता है ६—१२।

१ और फ़लस्तानी परमेश्वर की मंजूषा को सहाय के पत्थर से
२ लेके अशदूद को आये। और जब फ़लस्तानी परमेश्वर की मंजूषा को ले गये तब उन्हों ने उसे दाग़ून के मंदिर में पहुंचाया
३ और दाग़ून के पास रक्खा। और जब अशदूदी बिहान को तड़के उठे तो क्या देखते हैं कि दाग़ून परमेश्वर की मंजूषा के आगे मुंह के बल भूमि पर गिरा है उन्हों ने दाग़ून को उठा के
४ उसके स्थान पर फिर रक्खा। फिर जब वे तड़के बिहान को उठे तब क्या देखते हैं कि दाग़ून परमेश्वर की मंजूषा के आगे मुंह के बल भूमि पर पड़ा है और दाग़ून का सिर और दोनों हथेलियां कटी हुईं डेहरी पर पड़ी हैं केवल दाग़ून का
५ धर रह गया था। इसलिये दाग़ून के पुजेरी और वे जो उसके मंदिर में जाते हैं दाग़ून के उतरांगे पर आजलों पांव नहीं
६ धरते। परंतु परमेश्वर का कोप अशदूदियों पर भारी पड़ा था और उसने उन्हें नाश किया और अशदूद को और उसके
७ सिवानों को बवेसी से मारा। और जब अशदूदियों ने यह

देखा तब बोले कि इसराईल के ईश्वर की मंजूषा हमारे साथ न रहेगी क्योंकि उसका कोप हम पर और हमारे देव
८ दागून पर पड़ा है। सो उन्हों ने फ़लस्तानियों के सारे प्रधानों को बुला भेजा और कहा कि हम इसराईल के ईश्वर की मंजूषा को क्या करें वे बोले कि आओ इसराईल के ईश्वर की मंजूषा को गात को ले जावें सो वे इसराईल के ईश्वर की
९ मंजूषा को वहां ले गये। और उसके ले जाने के पीछे ऐसा हुआ कि परमेश्वर का हाथ अत्यंत नाश से उस नगर के विरोध में पड़ा और उसने उस नगर के लोगों को छोटे से लेके बड़े लों मारा और उनके गुप्तों में बयेसी का लोहू बहने
१० लगा। इसलिये उन्हों ने ईश्वर की मंजूषा अकरून में पहुंचाई तब अकरूनी चिल्लाके बोले कि वे इसराईल के ईश्वर की मंजूषा को इसलिये हम्में लाये हैं कि हमें और हमारे
११ लोगों को घात करें। सो उन्हों ने भेजके फ़लस्तानियों के प्रधानों को एकट्ठे किया और कहा कि इसराईल के ईश्वर की मंजूषा को जहां से वुह आई वहीं फेर भेजो जिसतें वुह हमें और हमारे लोगों को घात न करे क्योंकि सारे नगर में मारू नाश हुआ और परमेश्वर का महा कोप उन पर था।
१२ और जो मर न गये सो बयेसी से रोगी थे और नगर का बिलाप स्वर्ग लों पहुंचा था।

६ छठवां पर्ब्ब।

सात मास के पीछे फ़लस्तानी ईश्वर की मंजूषा को यहूदा के देश में फेर भेजते हैं १—९ उस गाड़ी को लेके गायें बैतशमश में आती हैं १०—१५ फ़लस्तानियों के प्रधान भेंट चढ़ाते हैं १६—१८ मंजूषा में झांकने से बैतशमशी लोग मारे जाते हैं १९—२१।

१ सो परमेश्वर की मंजूषा सात मास लों फ़लस्तानियों के देश में थी।
२ तब फलस्तानियों ने याजकों और देवज्ञों को बुलाके पूछा कि परमेश्वर की मंजूषा से क्या करें हमें बताओ कि हम किस
३ रीति से उसे उसके स्थान को भेजें। वे बोले कि यदि तुम इसराईल के ईश्वर की मंजूषा को भेजते हो तो छूछी मत भेजो परंतु किसी भांति से पाप की भेंट के साथ उसे फेर भेजो तब तुम चंगे होओगे और तुम्हें जान पड़ेगा कि वुह तुमसे
४ किस लिये हाथ नहीं उठाता है। तब उन्हों ने पूछा कि वुह कौनसा पाप का बलिदान है जो हम उसे फेर देव वे बोले कि फ़लस्तानी प्रधानों की गिनती के समान पांच सोनैाली बवेसी और सोने के पांच मूस क्योंकि तुम सभों पर और तुम्हारे
५ प्रधानों पर एकही मरी है। सो तुम अपनी बवेसी की और मूसों की मूर्त्ति बनाओ जो देश को नष्ट करते हैं और इसराईल के परमेश्वर की महिमा करो क्या जाने वुह तुम से और तुम्हारी देवतों से और तुम्हारे देश से हाथ उठा लेवे।
६ तुम क्यों अपने मन को कठोर करते हो जैसा कि मिसरियों ने और फ़रऊन ने अपने मन को कठोर किया था जब कि ईश्वर ने आश्चर्यित कार्य्य उनमें किये सो क्या उन्होंने उन्हें जाने न दिया
७ और वे बिदा न ऊए?। अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ और दो दुधार गायें, जो जूआ तले न आई हों, लेओ और उन गायों को गाड़ी में जोतो और उनके बछड़ों को घर में
८ उनके पीछे रहने देओ। और परमेश्वर की मंजूषा लेके उस गाड़ी पर रक्खो और सोने के पात्र जो पाप की भेंट के कारण फेर देते हो एक मंजूषा में धर के उसकी अलंग में
९ रख देओ और उसे छोड़ देओ कि चली जाय। और देखो यदि वुह अपनेही सिवाने से होके बैतशमश को चढ़े तब उसीने हमपर यह बड़ी बिपत्ति भेजी परंतु यदि नहीं तो हम जानेंगे कि उसका हाथ हमपर नहीं पड़ा परंतु यह बिपत्ति आकस्मात ऊई।

१० सो लोगों ने वैसाही किया और दो दुधार गायें लिईं और उन्हें गाड़ी में जोता और उनके बछड़ों को घर में
११ बंद किया । और परमेश्वर की मंजूषा और सोने के मूसों को
१२ और बयेसियों को मंजूषा में रखके गाड़ी पर धरा । सो उन गायों ने बैतश्मश का सीधा मार्ग लिया और राज मार्ग में बंबातीं चलीं और दहिने अथवा बायें हाथ न मुड़ीं और फ़लस्तानियों के प्रधान उनके पीछे पीछे बैतश्मश के सिवाने
१३ लों गये । और तराई में बैतश्मशी गोहूं लवते थे और जब उन्हों ने आंखें ऊपर किईं तब मंजूषा को देखा और देखतेही
१४ आनंद हुए । और गाड़ी बैतश्मशी यहूश्रू के खेत में आई और जहां बड़ा पत्थर था आके खड़ी हुई सो उन्हों ने गाड़ी की लकड़ियों को चीरा और गायों को परमेश्वर के
१५ लिये होम की भेंट चढ़ाईं । और लावियों ने परमेश्वर की मंजूषा को उस मंजूषा सहित जो उसके साथ थी जिसमें सोने के गहने थे नीचे उतारा और उसे बड़े पत्थर पर रक्खा और बैतश्मश के लोगों ने उसी दिन परमेश्वर के लिये होम की
१६ भेंटें और बलिदान चढ़ाये । और जब फ़लस्तानियों के पांच प्रधानों ने यह देखा तो वे उसी दिन अक्रूरून को फिर गये ।
१७ और सोनैाली बयेसी जिन्हें फ़लस्तानियों ने पाप की भेंट के लिय परमेश्वर को चढ़ाया ये हैं अश्दूद के लिये एक, और ग़ज़ः के लिये एक, और अस्क़लून के लिये एक, और गात के लिये एक,
१८ और अक्रूरून के लिये एक । और सोने के मूस फ़लस्तानियों के सारे नगरों की गिनती के समान थे जो पांच प्रधानों के थे बाड़े के नगर और बाहर बाहर के गांओं हाबील के बड़े पत्थर लों जिस पर उन्हों ने परमेश्वर की मंजूषा को रक्खा जो
१९ आज के दिन लों बैतश्मशी यहूश्रू के चैागान में है । और परमेश्वर ने बैतश्मश के लोगों को मारा इसकारण कि उन्हों ने परमेश्वर की मंजूषा के भीतर देखा अर्थात् पचास सहस्र

और सत्तर मनुष्य लोगों में से मारे गये इस कारण कि परमेश्वर ने लोगों में से बहुतों को वधन किया लोगों ने
२० बिलाप किया। सो बैतश्मश के लोग बोले कि किस को सामर्थ्य है कि इस पवित्र परमेश्वर ईश्वर के आगे खड़ा होवे
२१ और हम्में से वुह किसके पास चढ़जायगा। तब उन्हों ने करियासयारीम के निवासियों के पास यह कहिके दूत भेजे कि फ़लस्तानी परमेश्वर की मंजूषा को फेर लाये हैं तुम उतर के अपने पास ले जाओ।

७ सातवां पर्ब्ब।

करियासयारीम के लोग मंजूषा को ले जाते हैं १—२ और वुह बीस बरस लों वहीं रहती है समुईल लोगों को दपट के उन्हें मज़फः में बटोरता है ३—६ फ़लस्तानी उन पर चढ़ जाते हैं परंतु परमेश्वर उन्हें घबरा के इसराईलियों को जय देता है ७—१२ फ़लस्तानी सर्वथा बश में होते हैं और इसराईल सब नगरों को लेते हैं १३—१४ समुईल इसराईल का न्याय करता है १५—१७।

१ तब करियासयारीम के लोग आये और परमेश्वर की मंजूषा को ले जाके अबीनादाब के घर में पहाड़ी पर रक्खा और उसके बेटे इलीआज़र को पवित्र किया कि परमेश्वर की मंजूषा की
२ रक्षा करे। और यों हुआ कि मंजूषा करियासयारीम में बहुत दिन लों रही क्योंकि बीस बरस बीत गयेथे तब इसराईल
३ के सारे घरानों ने परमेश्वर के लिये बिलाप किया। और समुईल इसराईल के सारे घराने को कहिके बोला कि यदि तुम अपने सारे मन से परमेश्वर की ओर फिरोगे तो उन उपरी देवतों को और अश्तरूत को अपने में से निकाल फेंको और परमेश्वर के लिये मन को सिद्ध करो और केवल उसकी

सेवा करो, और वुह तुम्हें फ़लस्तानियों के हाथ से छुड़ावेगा।
४ तब इसराईल के संतान ने बालिम और अश्तरूत को
५ दूर किया और केवल परमेश्वर की सेवा करने लगे। फिर
समुईल ने कहा कि सारे इसराईल मज़फ़ः में एकट्ठे होवें और
६ मैं तुम्हारे लिये परमेश्वर से प्रार्थना करोंगा। सो वे सब
मज़फ़ः में एकट्ठे हुए और पानी खींचा और परमेश्वर के आगे
उंडेला और उस दिन ब्रत रक्खा और वहां बोले कि हम
परमेश्वर के अपराधी हैं और समुईल मज़फ़ः में इसराईल के
७ संतान का न्यायी हुआ। और जब फ़लस्तानियों ने
सुना कि इसराईल के संतान मज़फ़ः में एकट्ठे हुए तब उनके
प्रधान इसराईल के साम्ने चढ़ आये सो इसराईल के संतान
८ यह सुनके फ़लस्तानियों से डर गये। और इसराईल के
संतान ने समुईल को कहा कि हमारे लिये परमेश्वर हमारे
ईश्वर से प्रार्थना करने में थम मत जा जिस्तें वुह हमें
९ फ़लस्तानियों के हाथ से बचावे। समुईल ने दूध पीउआ
एक मेम्ना लिया और परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाई
और समुईल ने इसराईल के लिये परमेश्वर की प्रार्थना किई
१० और परमेश्वर ने उत्तर दिया। और समुईल होम की भेंट
चढ़ा रहा था कि फ़लस्तानी संग्राम के लिये इसराईल के सन्मुख
आये परंतु परमेश्वर उस दिन फ़लस्तानियों पर महा गर्ज्जन से
गर्ज्जा और उन्हें हरा दिया और वे इसराईल के आगे
११ मारे गये। और इसराईली लोगों ने मज़फ़ः से निकल के
फ़लस्तानियों को खदेड़ा और बैतकार के नीचेलों उन्हें मारते
१२ चले गये। तब समुईल ने एक पत्थर लेके मज़फ़ः और शीन के
मध्य में खड़ा किया और उसका नाम यह कहिके सहाय का
पत्थर रक्खा कि परमेश्वर ने यहांलों हमारी सहाय किई।
१३ सो फ़लस्तानी वश में हुए और वे इसराईल के सिवानों में
फिर न आये और परमेश्वर का हाथ समुईल के जीवन भर

१४ फ़लस्तानियों के विरुद्ध था। और वे बस्तियां जो फ़लस्तानियों ने इसराईल से ले लिई थीं इसराईल को फेरी गईं अक्करून से लेके गात लों और उनके सिवाने को इसराईल ने फ़लस्तानियों के हाथ से छुड़ाया और इसराईलियों में और अमूरियों में
१५ मेल हुआ। और समुईल अपने जीवन भर इसराईल का
१६ न्यायी रहा। और बरस बरस वुह बैतईल का और जलजाल का और मज़पः का दौरा करता था उन समस्त
१७ स्थानों में इसराईल का न्याय करता था। और रामा को फिर आता था क्योंकि वहां उसका घर था और इसराईल का न्याय वहां करता था और वहां उसने परमेश्वर के लिये बेदी बनाई।

८ आठवां पर्ब्ब।

समुईल वृद्ध होके अपने बेटों को न्यायी बनाता है उनकी अनीति से लोग एक राजा चाहते हैं १—५ समुईल और परमेश्वर उदास होते हैं परंतु राजा ठहराने को आज्ञा करता है ६—९ समुईल वही करता है और बताता है कि राजा की क्या रीति होगी १०—१८ लोग इस बात पर हठ करते हैं और समुईल परमेश्वर के आगे समाचार पहुंचाता है और उन्हें बिदा करता है १९—२२।

१ और जब समुईल वृद्ध हुआ तब ऐसा हुआ कि उसने अपने
२ बेटों को इसराईल पर न्यायी किया। अब उसके पहिलौंठे का नाम जोईल था और उसके दूसरे का नाम अबिया वे
३ बीरसबा में न्यायी थे। पर उसके बेटे उसकी चाल पर न चलतेथे परंतु लोभ करके घूस लेने लगे और न्याय बिरुद्ध
४ करने लगे। तब इसराईल के सारे प्राचीनों ने आप को एकट्ठे
५ किया और रामा में समुईल पास आये। और उसे कहा कि देख तू वृद्ध है और तेरे बेटे तेरी चाल पर नहीं चलते सो

अब समस्त जातिगणों की नाईं हमारा न्याय करने के लिये
६ एक राजा ठहरा। परंतु जब उन्होंने उसे कहा कि
हमारे न्याय करने के लिये हमें एक राजा दे इस बात से
समुईल उदास हुआ और समुईल ने परमेश्वर से प्रार्थना किई।
७ और परमेश्वर ने समुईल को कहा कि लोगों के शब्द पर जो
वे तुझे कहें कान धर क्योंकि उन्होंने कुछ तुझे त्याग नहीं किया
परंतु मुझे त्याग किया जिसतें मैं उन पर राज्य न करों।
८ जब से कि मैं उन्हें मिसर से निकाल लाया आजलों उनसब
कार्य्यों के समान उन्होंने किया जिनसे मुझे छोड़ दिया और
आन आन देवों की सेवा किई वैसाही वे तुझसे भी करते हैं।
९ सो अब उनके शब्द पर कान धर तथापि अतिदृढता से उनके
बिरुद्ध उन्हें कहि दे और उस राजा का व्यवहार बता जो
१० उन पर राज्य करेगा। और समुईल ने उन लोगों को,
जो उस्से राजा के खोजी थे, परमेश्वर की सारी बातें कहीं।
११ और उसने कहा कि उस राजा के, जो तुमपर राज्य करेगा ये
व्यवहार होंगे कि वुह तुम्हारे बेटों को लेके अपने लिये और अपने
रथोंके और घोड़चढ़ों के लिये ठहरावेगा और अपने रथोंके
१२ आगे दौड़ावेगा। और अपने लिये सहस्र सहस्र के प्रधान
और पचास पचास के प्रधान ठहरावेगा और अपनी भूमि
उनसे जोता के बोआवेगा और लवावेगा और अपने
१३ संग्राम के और अपने रथों के हथियार बनवावेगा। और
तुम्हारी बेटियों को मिठाई के अर्थ और भोजन के अर्थ और
१४ रोटी पोने के अर्थ ठहरावेगा। और वुह तुम्हारे खेतों को और
दाख के और जलपाई की बारियों को जो अच्छे से अच्छे होंगे
१५ लेके अपने सेवकों को देगा। और तुम्हारे अन्न और दाख की
बारियों का दसवां अंश लेके अपने नपुंसकों को और अपने
१६ सेवकों को देगा। और वुह तुम्हारे दासों और तुम्हारी
दासियों को और सुंदर से सुंदर युबा मनुष्यों को और तुम्हार

१७ गदहों को लेके अपने काम में लगावेगा। और तुम्हारी भेड़ों का दसवां अंश लेगा और तुम उसके सेवक होओगे।
१८ और तब तुम अपने राजा के कारण, जिसे तुमने चुना है, दोहाई देओगे उस दिन परमेश्वर तुम्हारी न सुनेगा।
१९ तिसपरभी उन लोगों ने समूईल की बात न मानी पर
२० बोले कि नहीं परंतु हम एक राजा लेंगे। जिसतें हम भी समस्त जातिगणों के समान होवें और जिसतें हमारा राजा हमारे लिये न्याय करे और हमारे आगे आगे चले और
२१ हमारे लिये संग्राम करे। समूईल ने मंडली की सारी बातें
२२ सुनी और परमेश्वर के श्रवण लों पहुंचाईं। परमेश्वर ने समूईल को कहा कि तू उनका शब्द सुन और उनके लिये एक राजा ठहरा तब समूईल ने इसराईल के मनुष्यों से कहा कि हरएक अपनी अपनी बस्ती को जावे।

९ नवां पर्ब्ब।

साऊल का समस्त समाचार, उसका पिता अपने गदहे को खोजने उसे भेजता है १—५ उन्हें नहीं पाके समूईल से पूछने को जाता है ६—१४ परमेश्वर समूईल को कहता है कि साऊल को राज्य के लिये अभिषेक कर १५—१६ समूईल उसे नेवता देता है और राज्य का समाचार सुनाता है १७—२१ भोजन के पीछे आपुस में परामर्श करते हैं २२—२७।

१ अब बनियामीन का एक जन था जो अफ़िया के बेटे बकरास के बेटे सरूर के बेटे अबियाल का बेटा जिसका नाम क़ीस था
२ वुह बनियामीनी और महाबली था। उसके एक बेटा था जिसका नाम साऊल जो सुंदर और चुनाहुआ तरुण था और इसराईल के संतानों में उससे कोई अधिकसुंदर न था

३ सारे लोगों में कांधे से लेके ऊपर लों ऊंचा था। और
साऊल के पिता के गदहे खो गये थे सो क़ीस ने अपने बेटे
साऊल को कहा कि सेवकों में से एक को अपने साथ ले और
४ उठ जा गदहों को ढूंढ़। सो वुह अफ़राईम पहाड़ में से
और शलीशा के देश में होके निकला परंतु न पाया तब वे
शालीम के देश में से निकले परंतु वहां भी न पाया और वुह
५ बनियामीन के देश में होके गया परंतु न पाया। तब वे सूफ़
के देश में आये और साऊल ने अपने साथ के सेवक को
कहा कि आ फिर चलें ऐसा न हो कि मेरा पिता गदहों
६ को छोड़ हमारे लिये चिंता करे। उसने उसे कहा कि
देख इस नगर में ईश्वर का एक जन है जो प्रतिष्ठित है जो
कुछ वुह कहता है सो निश्चय होता है आ उधर जायें क्या
जाने कि जो मार्ग हमें जाना उचित है वुह हमें बतासके।
७ साऊल ने अपने सेवक से कहा कि देख यदि हम जायें तो हम
उस जन के लिये क्या ले जावें क्योंकि हमारे पात्रों में रोटी
चुकगई और ईश्वर के जन के लिये भेंट नहीं हम क्या रखते हैं।
८ सेवक ने साऊल को उत्तर देके कहा कि देख पांच शेकल चांदी
मुझ पास है सो मैं ईश्वर के जन को देओंगा कि हमें मार्ग
९ बतावे। (अगले समय में जब मनुष्य परमेश्वर से प्रश्न करने
जाता था तब यह कहता था कि आओ दर्शी पास जायें क्योंकि
१० आगमज्ञानी आगे दर्शी कहावता था)। तब साऊल ने अपने
सेवक से कहा कि तूने अच्छा कहा आ चलें सो वे नगर को
११ आये जहां ईश्वर का वुह जन था। और उस नगर की
चढ़ाई पर चढ़तेऊए उन्हें कई कन्या मिलीं जो पानी भरने
१२ जाती थीं उन्हों ने पूछा कि दर्शी यहां है। उन्होंने उन्हें उत्तर
दिया और कहा कि देख वुह तुम्हारे आगे है शीघ्र करो
क्योंकि वुह आज नगर में आया है और आज ऊंचे
१३ स्थान में लोगों का जेवनार है। जब तुम नगर में पऊंचो

तब तुम उस्से आगे कि वुह ऊंचे स्थान में खाने जाय उसे पाओगे
क्योंकि जबलों वुह न जाये लोग न खायेंगे इसकारण कि वुह
बलि को आशीष देता है उसके पीछे नेउतहरी खाते हैं सो अब
१४ तुम चढ़ो क्योंकि आज तुम उसे पाओगे। सो वे नगर को चढ़े
और नगर में जातेही क्या देखते हैं कि समुईल उनके आगे
१५ आया कि ऊंचे स्थान पर चढ़जाय। और अब परमेश्वर ने
साऊल के आने से एक दिन आगे समुईल के कान में प्रगट
१६ कह दिया था। कि कल इसी समय में एक जनको,
बनियामीन के देश से, तुझ पास भेजोंगा और तू मेरे इसराईल
लोगों पर उसे प्रधान अभिषेक करियो जिसतें वुह मेरे लोगों
को फ़लस्तानियों के हाथ से छुड़ावे क्योंकि मैंने अपने लोगों पर
१७ दृष्टि किई और उनका रोना मेरे पास पहुंचा। सो जब
समुईल ने साऊल को देखा तब परमेश्वर ने उसे कहा कि
देख यही जन है जिसके कारण मैंने तुझे कहा था यही मेरे
१८ लोगों पर राज्य करेगा। तब साऊल समुईल के पास फाटक
पर आके बोला कि कृपा करके हमें बतलाईये कि दर्शी का घर
१९ कहां है। समुईल ने साऊल को उत्तर देके कहा कि दर्शी मैंहीं
हों मेरे आगे आगे ऊंचे स्थान पर चढ़ क्योंकि तुम आज
मेरे साथ भोजन करोगे और कल मैं तुझे बिदा करोंगा और
२० जो कुछ तेरे मन में है तुझे बताओंगा। और तेरे गदहे जो
आज तीन दिन से खो गये हैं उनकी ओर से निश्चिंत रह
क्योंकि वे मिल गये और इसराईल की सारी इच्छा किस पर
२१ है क्या तेरे और तेरे पिता के समस्त घराने पर नहीं। सो
साऊल ने उत्तर देके कहा कि मैं बनियामीनी इसराईल की
गोष्ठियों में से सब से छोटा नहीं? और क्या मेरा घराना
बनियामीन की गोष्ठी के सारे घरानों में छोटे से छोटा नहीं?
२२ इस बचन के समान तू मुझे क्यों बोलता है। और समुईल
साऊल को और उसके सेवक को लेके उन्हें बैठक में लाया

और उन्हें नेउतहरियों में जो बुलाये गये थे जो जन तीस
२३ एक थे सब से श्रेष्ठ स्थान में बैठलाया। समुईल ने रसोईं
कारक को कहा कि वुह भाग जो मैंने तुझे रख छोड़ने को कहा
२४ था ले आ। रसोईं कारक ने एक कांधे को और जो उसपर
था उठा लिया और साऊल के आगे रख के कहा कि देख
यह जो धरा है अपने आगे रख के खा इस लिये कि मैंने जब
से कि लोगों का नेउंता किया अबलों तेरे लिये रख छोड़ा था
सो साऊल ने उस दिन समुईल के साथ भोजन किया।

२५ और जब वे ऊंचे स्थान से नगर में उतर आये उसने
२६ साऊल से छत पर बात चीत किई। और वे तड़के उठे और
बिहान होतेही समुईल ने साऊल को फिर छत पर बुला के
कहा कि उठ मैं तुझे बिदा करों सो साऊल उठा और वे दोनों
२७ वुह और समुईल बाहर चले गये। और जब वे नगर के
निकास पर जाते थे तब समुईल ने साऊल को कहा कि अपने
सेवक को कह कि हमसे आगे बढ़े और वुह बढ़गया पर तू
तनिक खड़ा रह जिसतें ईश्वर का बचन तुझे बताओं।

१० दसवां पर्ब्ब।

समुईल साऊल को अभिषेक करता है १—८
साऊल भविष्य बोलता है ९—१३ साऊल का चचा
उसे वार्त्ता करता है १४—१६ समुईल लोगों को
बटोर के उनका पाप उन्हें दिखाता है और साऊल
को राज्य पर स्थिर करता है १७—२५ और
साऊल अपने घर को जाता है २६—२७।

१ फिर समुईल ने एक कुप्पी तेल लिया और उसके सिर पर
ढाला और उसे चूमा और कहा कि यह इसकारण नहीं कि
परमेश्वर ने तुझे अपने अधिकार के ऊपर प्रधान करके अभिषेक
२ किया। जब तू मेरे पास से आज चला जायगा तब दो जन को

राहील की समाधि के पास बनियामीन के सिवाने के जलजाल में पाओगे और वे तुझे कहेंगे कि जिन गदहों को तू ढूंढ़ने गया था सो मिले और अब तेरा पिता गदहों की चिंता छोड़कर तेरे लिये कुढ़ता है और कहता है कि मैं अपने बेटे के
३ लिये क्या करों। तब तू वहां से आगे बढ़ेगा और तबूर के चैागान को पहुंचेगा और वहां तुझे तीन जन मिलेंगे जो बैतईल के ईश्वर कने चले जाते होंगे एक तो बकरी के तीन मेम्ना लिये हुए और दूसरा तीन रोटी और तीसरा एक
४ कुप्पा दाख रस। और वे तेरा कुशल पूछेंगे और दो रोटी
५ तुझे देंगे तू उनके हाथ से ले लीजियो। उसके पीछे तू ईश्वर के पहाड़ पास जहां फ़लस्तानियों की चौकी है पहुंचेगा और जब नगर में प्रवेश करेगा ऐसा होगा कि तू आगमज्ञानियों की एक जथा पावेगा जो ऊंचे स्थान से उतरती होगी जिनके आगे आगे मुरचंग और ढोलक और बांसुरी और बीणा होंगे
६ और वे भविष्य कहेंगे। तब परमेश्वर का आत्मा तुझ पर उतरेगा और तू भी उनके साथ भविष्य कहेगा और औरही
७ मनुष्य होजायगा। और यों होगा कि जब तू ये चिन्ह पावे फिर जैसा संयोग होवे वैसा कीजियो क्योंकि ईश्वर तेरे साथ है।
८ और मेरे आगे तू जलजाल को उतरियो और देख मैं तुझ पास उतरोंगा जिसतें होम की भेंट और कुशल की भेंट बलि करों सो तू सात दिन लों वहीं ठहरियो जबलों मैं तुझ पास
९ आओं और तुझे बताओं कि तू क्या क्या करेगा। और ऐसा हुआ कि ज्योंहीं उसने समुईल से जाने को कांधा फेरा त्योंहीं ईश्वर ने उसे दूसरा मन दिया और वे सब लक्षण उसने
१० उसी दिन पाये। और जब वे उधर पहाड़ को आये तो क्या देखते हैं कि आगमज्ञानियों की एक जथा उन्हें मिली और ईश्वर का आत्मा उस पर उतरा और वुह उनमें भविष्य कहने
११ लगा। और यों हुआ कि जब उसके अगले जान पहिचानों ने

यह देखा कि वुह आगमज्ञानियों के मध्य भविष्य कहता है
तब लोगों ने आपुस में कहा कि क़ीस के बेटे को क्या हुआ? क्या
१२ साऊल भी आगमज्ञानियों में है? । एक ने उनमें से उत्तर दिया
और कहा कि उनका पिता कौन है? तबहीं से यह कहावत
१३ चला कि क्या साऊल भी आगमज्ञानियों में है? । और जब
१४ वुह आगम कह चुका तब ऊंचे स्थान में आया । और
साऊल के चचा ने उसे और उसके सेवक को कहा कि तुम कहां
गयेथे? वे बोले कि गदहे ढूंढ़ने और जब उन्हें कहीं न पाया तो
१५ समुईल पास गये । साऊल का चचा बोला कि मुझे बता कि
१६ समुईल ने तुझे क्या कहा? । साऊल ने अपने चचा से कहा कि
उसने हमें खोल के बताया कि गदहे मिल गये पर राज्य का
समाचार जो, समुईल ने उसे कहा था, उसे न बताया ।
१७ और समुईल ने मसफ़ः में परमेश्वर के आगे लोगों को एकट्ठे
१८ बुलाया । और इसराईल के संतान को कहा कि परमेश्वर
इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि मैं इसराईल को मिस्र से
निकाल लाया और तुम्हें मिसरियों के, और सारे राजाओं के
१९ हाथ से, और जो तुम्हें सताते थे, उनसे छुड़ाया । और तुमने
आज के दिन अपने ईश्वर को त्याग किया जिसने तुम्हें तुम्हारे
सारे बैरियों और तुम्हारी बिपतों से बचाया और तुमने उसे
कहा कि हम पर एक राजा ठहरा सो अब अपनी अपनी गोष्ठी
के और सहस्र सहस्र के समान परमेश्वर के आगे आओ ।
२० और जब समुईल ने इसराईल की सारी गोष्ठियों को एकट्ठी किई
२१ तब बनियामीन की गोष्ठी लिई गई । और जब वुह बनियामीन
की गोष्ठी को उनके घरानों के समान पास लाया तब मत्री का
घराना चुना गया और क़ीस का बेटा साऊल चुना गया
२२ और जब उन्होंने उसे ढूंढ़ा तो न पाया । इसलिये उन्हों ने
परमेश्वर से पूछा कि वुह जन फिर यहां आवेगा कि नहीं?
परमेश्वर ने उत्तर दिया कि देखो वुह सामग्री के बीच

२३ छिपरहा है। तब वे दौड़े और उसे वहां से लाये और जब वुह लोगों में खड़ा ऊआ तब कांधे से लेके ऊपर लों सभों से
२४ अधिक ऊंचा था। और समुईल ने समस्त लोगों को कहा कि जिसे परमेश्वर ने चुना है तुम उसे देखते हो क्योंकि उसके समान सारे लोगों में कोई नहीं तब समस्त लोग ललकार के
२५ बोले कि राजा जीवे। फिर समुईल ने लोगों को राज्य की रीति बतलाई और पुस्तक में लिख के परमेश्वर के आगे रक्खा और समुईल ने हरएक मनुष्य को अपने अपने घर भेजा।
२६ और साऊल भी अपने घर गबिया को गया और उसके साथ लोगों की एक जथा जिनके मन को ईश्वर ने
२७ फेर दिया था, हो लिई। परंतु बलिआल के संतान बोले कि यह जन हमें क्योंकर बचावेगा? और उसकी निंदा किई और उसके पास भेंट न लाये पर वुह अनसुने के समान हो रहा।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

अमूनी नहाश यबशगलियाद को घेरता है वे अपने भाइयों की सहाय चाहते हैं १—३ वे दूतों को भेजते हैं और साऊल उन्हें बचाता है ४—११ उसे साऊल दोहरा के राज्य पर स्थिर होता है १२—१५।

१ तब अमूनी नहाश चढ़ा और यबशगलियाद के साम्ने छावनी किई तब यबश के सब लोगों ने नहाश से कहा कि हम से बाचा
२ बांध और हम तेरी सेवा करेंगे। और अमूनी नहाश ने उन्हें उत्तर दिया कि इस बात पर मैं तुम्से बाचा बांधोंगा कि मैं तुम सभों की हरएक दहिनी आंख फोड़ देओं और समस्त
३ इसराईल के अपमान के लिये धरों। तब यबश के प्राचीनों ने उसे कहा कि हमें सात दिन की छुट्टी दे जिसतें हम इसराईल के सारे सिवानों में दूत भेजें यदि कोई उद्धारक न ठहरे तब

४ हम तुझ पास निकलेंगे। तब साऊल का दूत गबिया में पहुंचा और लोगों के कान लों यह संदेश पहुंचाया तब ५ सब लोगों ने चिल्ला चिल्ला के बिलाप किया। और देखो कि साऊल खेत से ढोर के पीछे पीछे चला आता था और साऊल ने कहा कि क्या है कि लोग बिलाप करते हैं? उन्हों ने यबशियों ६ का संदेश उसे कह सुनाया। इन संदेशों को सुनतेही साऊल पर ईश्वर का आत्मा पड़ा और उसका क्रोध अत्यंत भड़का। ७ और उसने एक जोड़ा बैल लिया और उन्हें टुकड़ा टुकड़ा किया और उन्हें दूतों के हाथ इसराईल के सारे सिवानों में यह कहिके भेजा कि जो कोई साऊल और समुईल के पीछे पीछे न निकल आवेगा उसके बैलों की यही दशा होगी तब लोगों पर परमेश्वर का डर पड़ा और वे एक जनकी नाईं ८ निकल आये। और उसने उन्हें बाज़ाक में गिना इसराईल के ९ संतान तीन लाख थे और यहूदा के मनुष्य तीस सहस्र। और उन्हों ने उन दूतों को कहा कि तुम याबशगलियाद के लोगों को कहो कि कल सूर्य्य की तपन होतेही तुम छुटकारा पाओगे और दूतों ने आके यबश के मनुष्यों से कहा और वे आनंद १० हुए। इसलिये यबश के मनुष्यों ने कहा कि कल तुम पास हम निकलेंगे और जो भला जानो सो हमारे बिषय में ११ कीजियो। और बिहान को साऊल ने लोगों की तीन जथा किई और तड़के के पहर सेना के मध्य में आया और दिन के घाम लों अम्मूनियों को मारा और ऐसा हुआ कि वे जो रहगये सो १२ छिन्न भिन्न हो गये यहांलों कि दो एकट्ठे न थे। तब लोग समुईल से बोले कि किसने कहा है कि क्या साऊल हम पर राज्य करेगा? उनलोगों को लाओ जिसतें हम उन्हें बधन १३ करें। साऊल बोला कि आज के दिन कोई मनुष्य मारा न जायगा इसलिये कि आज के दिन परमेश्वर ने इसराईल को १४ बचाया। तब समुईल ने लोगों को कहा कि आओ जलजाल को

१५ जावें और राज्य को दोहरावें। तब सारे लोग जलजाल को गये और जलजाल में परमेश्वर के आगे उन्हों ने साऊल को राजा किया और वहां उन्हों ने कुशल की भेंटों को परमेश्वर के आगे बलि किया और वहां साऊल ने और सारे इसराईल के समस्त जनों ने बड़ा आनंद किया।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

समुईल अपनी खराई पर साक्षी देता है १—५ पिछले दिनों का समाचार समुईल लोगों के आगे वर्णन करता है ६—१५ समुईल लोगों को आश्चर्य दिखाता है १६—१९ समुईल उन्हें चिताता है २०—२५ ।

१ तब समुईल ने सारे इसराईल से कहा कि देखो जो कुछ तुम ने मुझे कहा मैंने तुम्हारी हर एक बात मानी और एक को २ तुम पर राजा किया। और अब देखो राजा तुम्हारे आगे आगे जाता है और मैं वृद्ध और मेरा बाल पकगया और देखो मेरे बेटे तुम्हारे साथ और मैं लड़काई से आज लों तुम्हारे ३ आगे आगे चला। देखो मैं यहां हों सो आओ परमेश्वर के और उसके अभिषिक्त के आगे मुझ पर साक्षी देओ कि मैं ने किसका बैल लिया? अथवा किसका गदहा मैंने रख छोड़ा? अथवा मैंने किसे छला? अथवा किस पर मैंने अंधेर किया? अथवा किसके हाथ से मैं ने घूस लिया कि उस्से अपनी आंखें ४ मूंदों? और मैं तुम्हें फेर देओंगा। वे बोले कि तूने हमें न छला न हम पर अंधेर किया और तूने किसी के हाथ से कुछ न ५ लिया। तब उसने उन्हें कहा कि परमेश्वर तुम पर साक्षी और उसका अभिषिक्त आज साक्षी है कि मेरे हाथ में तुम ने ६ कुछ न पाया वे बोले कि वुह साक्षी है। फिर समुईल ने लोगों से कहा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून को बढ़ाया

और तुम्हारे पितरों को मिसर के देश से ऊपर निकाल लाया।
७ सो अब ठहर जाओ जिसतें मैं परमेश्वर के आगे उन सब भलाइयों के कारण जो परमेश्वर ने तुमसे और तुम्हारे पितरों के
८ साथ किई तुमसे विचार करों। जब याक़ूब मिसर में आया और तुम्हारे पितर परमेश्वर के आगे चिल्लाये तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को बुलाया वे तुम्हारे पितरों को मिसर से
९ निकाल लाये और उन्हें इस स्थान में बसाया। और जब वे परमेश्वर अपने ईश्वर को भूल गये उसने उन्हें हासूर की सेना के प्रधान सिसरा के हाथ और फ़लस्तानियों के हाथ और
१० मवाब के राजा के हाथ बेंचा और वे उनसे लड़े। फिर वे परमेश्वर के आगे चिल्ला के बोले कि हमने पाप किया क्योंकि हमने परमेश्वर को त्याग किया और बालिम और अशतरूत की सेवा किई परंतु अब हमारे बैरियों के हाथ से हमें छुड़ा
११ और हम तेरी सेवा करेंगे। फिर परमेश्वर ने यरबआल और बादान और यफ़ता और समुईल को भेजा और तुम्हें तुम्हारे चारों ओर के बैरियों के हाथ से बचाया और तुम ने
१२ चैन पाया। और जब तुम ने देखा कि अमून के संतान का राजा नहाश तुम पर चढ़आया तब तुम ने मुझे कहा कि नहीं परंतु राजा हम पर राज्य करे जब कि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर
१३ तुम्हारा राजा था। अब देखो तुम्हारा राजा जिसे तुम ने चुन लिया और जिसे तुम ने मांगा और देखो परमेश्वर ने तुम पर
१४ एक राजा ठहराया। यदि तुम परमेश्वर से डरते रहोगे और उसकी सेवा करोगे और उसका शब्द मानोगे और परमेश्वर के सन्मुख से फिर न जाओगे तो तुम, और तुम्हारा राजा भी, जो तुम पर राज्य करता है, परमेश्वर अपने ईश्वर के पीछे पीछे
१५ चलोगे। पर यदि तुम परमेश्वर का शब्द न मानोगे और परमेश्वर की आज्ञाओं से फिर जाओगे तो परमेश्वर का हाथ
१६ तुम्हारे बिरुद्ध होगा जैसा कि तुम्हारे पितरों पर था। सो

अब ठहर जाओ और देखो वुह बड़ा काम जो परमेश्वर
१७ तुम्हारी आंखों के साम्ने करेगा। क्या आज गोहूं की लवनी
नहीं? मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हों और वुह गर्ज्जन
और मेंह भेजेगा जिसतें तुम बूझो और देखो कि राजा के
मांगने से तुम्हारी दुष्टता बड़ी है जो तुम ने परमेश्वर की
१८ दृष्टि में किई। सो समूईल ने परमेश्वर से प्रार्थना किई और
परमेश्वर ने उसी दिन गर्ज्जन और मेंह भेजा तब सारे लोग
१९ परमेश्वर से और समूईल से निपट डर गये। और सारे लोगों
ने समूईल से कहा कि अपने दासों के लिये परमेश्वर अपने
ईश्वर की प्रार्थना कीजिये कि हम न मरें क्योंकि हम ने
अपने सारे पापों से यह बुराई अधिक किई कि अपने लिये
२० एक राजा मांगा। तब समूईल ने लोगों को कहा कि
मत डरो यह सब दुष्टता तुमने किई है तिसपरभी परमेश्वर
के पीछे पीछे जाने से अलग न होओ परंतु अपने सारे
२१ अंतःकरण से परमेश्वर की सेवा करो। और वृथा का पीछा
करने को अलग मत होओ जिनमें लाभ और मुक्ति नहीं
२२ क्योंकि वे व्यर्थ हैं। क्योंकि परमेश्वर अपने महत् नाम के लिये
अपने लोग को छोड़ न देगा इसकारण परमेश्वर की इच्छा
२३ हुई कि तुम्हें अपना लोग बनावे। और ईश्वर न करे कि
मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करने में थम जाओं और परमेश्वर के
विरुद्ध पापी होओं परंतु मैं वुह मार्ग जो अच्छा और
२४ सीधा है तुम्हें सिखाओंगा। केवल परमेश्वर से डरो और
अपने सारे मन से और सचाई से उसकी सेवा करो और
२५ सोचो कि उसने तुम्हारे लिये कैसा बड़ा काम किया है। परंतु
यदि तुम अबभी दुष्टता करोगे तो तुम और तुम्हारा राजा
नाश हो जाओगे।

१३ तेरहवां पर्व्व ।

साऊल का बेटा यूनासान फ़लस्तानियों के थाने को मारलेता है १—४ फ़लस्तानी अपनी सेना को इसराईल से लड़ने को एकट्ठी करते हैं ५—७ साऊल सात दिन लों समुईल की बाट जोहके आप बलि चढ़ाता है ८—१० समुईल उसपर दोष लगाता है ११—१६ फ़लस्तानी इसराईल को सताते हैं और उनमें कोई हथियार गढ़वैया नहीं १७—२३ ।

१ साऊल ने एक बरस राज्य किया और जब वुह इसराईल पर
२ दो बरस राज्य करचुका । तब साऊल ने तीन सहस्र इसराईलियों को अपने लिये चुना दो सहस्र उसके साथ मख़माश में और बैतईल पहाड़ में थे और एक सहस्र यूनासान के साथ बनियामीन के गबिया में थे और उबरेऊओं को उसने
३ बिदा किया कि अपने अपने डेरे को जावें । और यूनासान ने फ़लस्तानियों के थाने को जो गबिया में था मारा और फ़लस्तानियों ने सुना और साऊल ने सारे देश में यह
४ कहिके नरसिंगा फूंका कि इबरानी सुनें । और सारे इसराईलियों ने यह समाचार सुना कि साऊल ने फ़लस्तानियों के थाने को मारा और इसराईल भी फ़लस्तानियों से घिनित ऊए और लोग साऊल के पास जलजाल में एकट्ठे
५ बुलाये गये । और फ़लस्तानी इसराईल से लड़ने को एकट्ठे ऊए तीस सहस्र रथ और छः सहस्र घोड़चढ़े और लोग समुद्र की बालू की नाईं समूह चढ़ आये मख़माश में बैतअवन
६ कि पूर्व ओर डेरा किया । जब इसराईल के मनुष्यों ने देखा कि हम सकेती में हैं (क्योंकि लोग दुःखी थे) तब लोग आके खोहों में और झाड़ों में और पहाड़ों में और ऊंचे ऊंचे

७ स्थानों में और गड़हों में जा छिपे। और इबरानी अर्दन के पार जाद और गलियाद के देश को गये और साऊल तो अबलों जलजालही में था और समस्त लोग उसके पीछे पीछे थर्थराते
८ गये। और वहां समुईल के ठहराने के समान सात दिनलों ठहरा रहा परंतु समुईल जलजाल में न आया और
९ लोग बिथरे थे। तब साऊल ने कहा कि होम की भेंट और कुशल की भेंट मुझ पास लाओ और उसने होम की भेंट
१० चढ़ाई। और ऐसा हुआ कि ज्योंहीं वुह होम की भेंट चढ़ा चुका त्योंहीं समुईल आ पहुंचा और साऊल उसे मिलने को
११ बाहर निकला कि उसे धन्यबाद करे। और समुईल ने पूछा कि तू ने क्या किया साऊल बोला कि जब मैंने देखा कि लोग मुझसे बिथर गये और तू ठहराये हुए दिनों के भीतर न
१२ आ पहुँचा और फ़लस्तानी मखमाश में एकट्ठे हुए। तब मैंने कहा कि फ़लस्तानी जलजाल में मुझ पर आ पड़ेंगे और मैंने परमेश्वर की प्रार्थना किई इसलिये मैं ने सकेती से होम की
१३ भेंट चढ़ाई। तब समुईल ने साऊल को कहा कि तूने मूढ़ता किई है तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा को· जो उसने तुझे दिई, पालन न किया क्योंकि परमेश्वर अब तेरा राज्य
१४ इसराईल पर सदा स्थिर करता। परंतु अब तेरा राज्य बना न रहेगा क्योंकि परमेश्वर ने एक जन को अपने मन के समान खोजा है और परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई कि उसके लोगों का प्रधान होवे इसलिये कि तूने परमेश्वर की आज्ञा को
१५ पालन न किया। और समुईल उठा और जलजाल से बनियामीन के गबिया को चलागया तब साऊल ने उन लोगों
१६ को, जो उस पास थे, गिना और वे एक छः सौ जन थे। और साऊल और उसका बेटा यूनासान और उसके साथ के लोग बनियामीन के संतान के गबिया में ठहर गये परंतु फ़लस्तानियों
१७ ने मखमाश में छावनी किई। और लुटेरे फ़लस्तानियों की

छावनी से तीन जथा होके निकले एक तो शूआल के देश को
१८ अफ़रा की ओर। और दूसरी जथा बैतहोरान के मार्ग
आई और तीसरी जथा ने उस सिवाने का मार्ग लिया जो
१९ ज़बईम की तराई के बन के सन्मुख है। अब इसराईल के
सारे देश में कोई लोहार न मिलता था क्योंकि फ़लस्तानियों ने
२० कहा था कि न हो कि इबरानी खड्ग अथवा भाला बनावें। परंतु
सारे इसराईली हर एक जन अपना अपना फार और भाला
और कुल्हाड़ी और कुदारी चोखा करने के लिये फ़लस्तानियों
२१ कने उतरते थे। तब भी कुदारियों और फारों और त्रिशूलों
और कुल्हाड़ी के लिये और अरई को चोखा करने के लिये
२२ उनके पास एक रेती थी। ऐसा हुआ कि लड़ाई के दिन
साऊल और उसके बेटे यूनासान को छोड़ उन लोगों में से,
जो साऊल और यूनासान के साथ थे, किसी के हाथ में एक
२३ तलवार और एक भाला न था। तब फ़लस्तानियों का
थाना मक़माश की घाटी पर आ पड़ा।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

यूनासान अपने अस्त्रधारी को लेके फ़लस्तानी के
थाने में पैठके उन्हें मार लेता है १—१८ साऊल
और सेना पीछे से चढ़ के फ़लस्तानियों को बधन
करते हैं १९—२३ साऊल के स्राप के कारण लोग
बिन भोजन दुर्बल होते हैं और रुधिर सहित
मांस खाते हैं २४—३५ साऊल यूनासान को
बधन करने चाहता है पर लोग उसे छुड़ालेते हैं
३६—४६ साऊल बैरियों से लड़के उन्हें बश में
करता है ४७—५२।

१ और एक दिन ऐसा हुआ कि साऊल के बेटे यूनासान ने
अपने अस्त्रधारी युवा मनुष्य को कहा कि आ हम फ़लस्तानियों

के थाने पर, जो पल्ले ओर है, चलें परंतु उसने अपने पिता से
२ नहीं कहा। और साऊल गबिया के निकास पर एक अनार के
पेड़ तले, जो मगरून में था ठहर रहा और उसके संगी लोग
३ एक छः सौ जन थे। परमेश्वर का याजक शीलू में एली का
बेटा फ़निहास का बेटा ईख़ाबोद के भाई अख़ीतूब का बेटा
अख़िया अफ़ूद पहिने ऊपर था और लोगों ने न जाना कि
४ यूनासान चला गया। और उन घाटियों के बीच जिनसे
यूनासान चाहता था कि फ़लस्तानियों के थाने पर जा पड़े,
एक एक ओर चोखी चटान थी एक का नाम बोज़ीज़ और
५ दूसरी का सीनीह था। एक का साम्ना उत्तर दिशा मक़माश
के सन्मुख था और दूसरी का दक्षिण दिशा गबिया के सन्मुख।
६ तब यूनासान ने अपने अस्त्रधारी युवा से कहा कि आ हम उन
अख़तनों के थाने पर चढ़ जायें क्या जाने परमेश्वर हमारे लिये
कार्य करे क्योंकि परमेश्वर के आगे कुछ बड़ीबात नहीं चाहे
७ बहुतों से जय देय चाहे तो थोड़ों से। उसके अस्त्रधारी
उसे कहा कि सब जो आपके मन में है सो करिये, फिरिये
८ और देखिये आपके मन के समान मैं भी साथी हों। तब
यूनासान बोला कि देख हम इन लोगों पास पार जाते हैं
९ आ हम अपने तईं उनपर प्रगट करें। और यदि वे हमें
कहें कि ठहरो जबलों हम तुम्हारे पास आवें तब हम ठहरे
१० रहेंगे और उन पास चढ़ न जायेंगे। परंतु यदि वे यों कहें कि
हम पर चढ़ आओ तो हम चढ़ जायेंगे क्योंकि परमेश्वर ने
उन्हें हमारे हाथ में करदिया और यह हमारे लिये एक पता
११ होगा। तब उन दोनों ने आपको फ़लस्तानियों के थाने पर
प्रगट किया और फ़लस्तानी बोले कि देखो इबरानी उन छेदों
१२ में से जहां वे छिप रहे थे बाहर आते हैं। और उस थाने के
लोगों ने यूनासान और उसके अस्त्रधारी को कहा कि हम पर
चढ़ आओ और हम तुम्हें कुछ दिखलायेंगे सो यूनासान

ने अपने अस्त्रधारी से कहा कि अब मेरे पीछे चढ़ आ कि
१३ परमेश्वर ने उन्हें इसराईल के हाथ में कर दिया। और
यूनासान बकैंया चढ़ गया और उसके पीछे उसका अस्त्रधारी
और वे यूनासान के आगे मारे गये और उसके पीछे पीछे
१४ उसके अस्त्रधारी ने मारा। सो यह पहिला काट कूट जो यूनासान
और उसके अस्त्रधारी ने किया सारे मनुष्य बीस एक थे उतनी
१५ भूमि में जितनी में एक हल आधे दिन लों फिरे। तब सेना में
और खेत में और सारे लोगों में थर्थराहट ऊई और थाने के
लोग और लुटेरे भी थर्थराने लगे और भूमि कंपित ऊई यह
१६ थर्थराहट ईश्वर की ओर से थी। और बनियामीन के गबिया
में के साऊल के पहरुओं ने देखा तो क्या देखते हैं कि मंडली
१७ घट गई और वे मारते चले जाते थे। तब साऊल ने
अपने साथी लोगों से कहा कि गिनो और देखो हम में से कौन
निकल गया है जब उन्हों ने गिना तो क्या देखते हैं कि यूनासान
१८ और उसका अस्त्रधारी नहीं हैं। तब साऊल ने अहिया को
कहा कि ईश्वर की मंजूषा इहां ला (क्योंकि ईश्वर की मंजूषा उस
१९ समय में इसराईल के पास थी)। और ऐसा ऊआ कि
जब याजक से साऊल बात करता था तब फ़लस्तानियों की सेना
में धूम होता चला जाता था और साऊल ने याजक से कहा कि
२० अपना हाथ खींच ले। और साऊल और उसके सारे लोग
एकट्ठे बुलाये गये और संग्राम को आये और देखो कि हर एक
पुरुष का खड्ग उसके संगी पर पड़ा और बड़ा जूझ ऊआ।
२१ और वे इबरानी भी जो आगे फ़लस्तानियों के साथ थे और जो
चारों ओर से उनके पास छावनी में गये थे वे भी फिर के उन
इसराईलियों में जो साऊल और यूनासान के साथ थे मिल
२२ गये। और इसराईल के सारे लोग भी, जिन्हों ने अफ़राईम
पहाड़ में आप को छिपाया था यह सुना कि फ़लस्तानी भागे
२३ वे भी संग्राम में उन्हें खदेड़ते गये। और परमेश्वर ने उस

दिन इसराईलियों को बचाया और लड़ाई पार बैतअवन
२४ लों पहुंची । और इसराईली लोग उस दिन दुःखी
हुए क्योंकि साऊल ने लोगों को किरिया देके कहा कि जो
कोई सांझ लों खाना खावे उस पर धिक्कार जिसतें मैं अपने
बैरियों से पलटा लेऊं यहां लों कि किसी ने कुछ न चखा ।
२५ और समस्त देश बन में पहुंचे और वहां भूमि पर मधु था ।
२६ और ज्यों हीं लोग बन में पहुंचे तो क्या देखते हैं कि
मधु टपकता है पर किसी ने अपने मुंह लों हाथ न उठाया
२७ क्योंकि लोग किरिया से डरे । परंतु यूनासान ने न सुना
था कि उसके पिता ने लोगों को किरिया दई सो उसने
अपने हाथ की छड़ी की नोक से मधु के छत्ते में बोरा और
हाथ में लेके मुंह में डाला और उसकी आंखों में ज्योति
२८ आई । तब उन लोगों में से एकने उसे कहा कि तेरे पिता
ने दृढ़ किरिया देके कहा था कि जो जन आज कुछ खाय
२९ उस पर धिक्कार और उस समय लोग थके हुए थे । तब
यूनासान बोला कि मेरे पिता ने देश को दुःख दिया देखो
मैं ने तनिकसा मधु चखा और मेरी आंखों में ज्योति आई ।
३० क्या अधिक न होता यदि सारे लोग बैरियों की लूट से, जो
उन्हों ने पाई मनमंता खाते? क्या फ़लस्तानी अधिक मारे न जाते? ।
३१ और उन्हों ने उस दिन मख़माश से लेके अजलून लों फ़लस्तानियों
३२ को मारा और लोग निपट थक गये । और लूट पर गिरे
और भेड़ और बैल और बछड़े पकड़े और उन्हें मार मार
३३ लोहू समेत खा गये । तब वे साऊल से कहिके बोले कि
देख लोहू समेत खाके लोग परमेश्वर के अपराधी होते हैं
वुह बोला कि तुमने पाप किया सो एक बड़ा पत्थर आज मेरे
३४ सामे ढुलका ओ । फिर साऊल ने कहा कि लोगों में फैल
जाओ और उनसे कहो कि हर एक जन अपना अपना
बैल और अपनी अपनी भेड़ मुझ पास लावें और यहां

मारके खाय और लोहू समेत खाके परमेश्वर के अपराधी न
बनें सो उस रात हरएक जन अपना अपना बैल अपने हाथ में
३५ लाया और वहीं मारा। और साऊल ने परमेश्वर के लिये
एक बेदी बनाई यह पहिली बेदी है जो उसने परमेश्वर के
३६ लिये बनाई। फिर साऊल ने कहा कि आओ रात को
फ़लस्तानियों के पीछे उतरें और भिनसार लों उन्हें लूटें और
उनमें से एक जन को न छोड़ें वे बोले कि जो कुछ आपको अच्छा
जानपड़े सो करिये तब याजक बोला कि आओ यहां ईश्वर
३७ से मंच लेवें। तब साऊल ने ईश्वर से मंच पूछा कि मैं
फ़लस्तानियों का पीछा करने को उतरों? तू उन्हें इसराईल के
हाथ में सौंप देगा? परंतु उसने उस दिन उसे कुछ उत्तर न
३८ दिया। तब साऊल ने कहा कि लोगों के समस्त प्रधान
यहां आवें और जानें आर देखें कि आज कौन सा पाप
३९ ऊआ है। क्योंकि परमेश्वर के जीवन सों जिसने इसराईल को
बचाया यद्यपि मेरा बेटा यूनासान भी होवे तो वुह निश्चय
मारा जायगा परंतु समस्त लोगों में से किसी ने उत्तर न
४० दिया। तब उसने सारे इसराईल से कहा कि तुम लोग एक
ओर होओ और मैं और मेरा बेटा यूनासान दूसरी ओर
तब लोग साऊल से बोले कि जो आप भला जानें सो कीजिये।
४१ इसलिये साऊल ने परमेश्वर इसराईल के ईश्वर से कहा
कि ठीक चिट्ठी लगा और साऊल और यूनासान पकड़े
४२ गये परंतु लोग निकलगये। फेर साऊल ने कहा कि मेरे और
मेरे बेटे यूनासान के नाम चिट्ठी डालो तब यूनासान पकड़ा
४३ गया। तब साऊल ने यूनासान से कहा कि मुझे बता कि तूने
क्या किया है यूनासान ने उसे बताया और कहा मैंने तो केवल
तनिक मधु अपनी छड़ी की नोक से चखा था सो अब देख मुझे
४४ मरना है। सामल ने कहा कि ईश्वर ऐसाही और उसे अधिक
४५ करे कि यूनासान तू निश्चय मारा जायगा। तब लोगों ने

साऊल को कहा कि क्या यूनासान मारा जाय? जिसने इसराईल के लिये ऐसा बड़ा बचाव किया? ईश्वर न करे परमेश्वर कीसें उसके सिर का एक बाल लों भूमि पर न गिराया जायगा क्योंकि उसने आज ईश्वर के साथ कार्य किया सो लोगों ने यूनासान को छुड़ा लिया जिसतें वुह मारा
४६ न जाय। तब साऊल फ़िलस्तानियों का पीछा करने से थम गया
४७ और फ़िलस्तानी अपने स्थान को गये। और साऊल ने इसराईल का राज्य लिया और अपने समस्त बैरियों से हरएक ओर मवाब के, और अम्मन के संतान के, और अदूम के, और सूबा के राजाओं के और फ़िलस्तानियों के साथ लड़ा और वुह
४८ जहां कहीं जाता था उन्हें छेड़ता था। फिर उसने बल के साथ कार्य किया और अमालक़ियों को मारा और इसराईलियों को
४९ लुटेरों के हाथ से छुड़ाया। अब साऊल के बेटों के नाम ये हैं यूनासान और यशुई और मलकीशूअ और उसकी दोनों बेटियों के नाम ये हैं पहिलौंठी मीराब और लहुरी मीकाल।
५० और साऊल की पत्नी का नाम अहिनुआम जो अहिमास की बेटी थी और उसके सेनापति का नाम अबनर था जो
५१ साऊल के चचा नर का बेटा था। और क़ीश साऊल का
५२ पिता और नर अबनर का पिता अबील का बेटा था। और साऊल के जीवन भर फ़िलस्तानियों से कठिन संग्राम रहा और जब कभी साऊल किसी बलवंत को, अथवा जोधा को, देखता था वुह उसे अपने पास रखता था।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब ।

परमेश्वर साऊल को भेजता है कि अमालक़ियों को सर्बथा नाश करे १—५ साऊल उन्हें मार के अच्छे से अच्छे जीवधारी को बचा रखता है ६—९ इस पाप के कारण परमेश्वर साऊल को राज्य से

त्याग करता है १०—२३ परमेश्वर का बचन अटल है २४—३१ समुईल अमालक़ियों के राजा को बधन करता है ३२—३३ समुईल अपने घर को जाता है ३४—३५ ।

१ और समुईल ने साऊल को यह भी कहा कि परमेश्वर ने मुझे भेजा कि तुझे अपने इसराईली लोगों पर राज्याभिषेक करों
२ सो अब परमेश्वर की बातों का शब्द सुन । सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मुझे चेत है जो कुछ कि अमालक ने इसराईल से किया वे मार्ग में उनके लिये ढूके में क्योंकर लगे जब वे मिसर
३ से चढ़आये । सो अब तू जा और अमालक को मार और सब कुछ जो उनका है सबथा नाश कर और उन्हें मत छोड़ परंतु क्या पुरुष और क्या स्त्री और क्या दूध पीवक और क्या बालक और क्या बैल और क्या भेड़ और क्या ऊंट और क्या गदहे लों सब को
४ मार डाल । और साऊल ने लोगों को एकट्ठा किया और तिलाईम में दो लाख पगइत गिना और यहूदा के दस सहस्र
५ जन थे । और साऊल अमालक के एक नगर को आया और
६ तराई में लड़ा । और साऊल ने क़ीनियों को कहा कि निकल जाओ और अमालक़ियों में से उतरो नहो कि मैं उनके साथ तुम्हें नाश करों क्योंकि तुमने इसराईल के समस्त संतान पर, जब वे मिसर से चढ़आये क्षपा किई सो क़ीनी अमालक़ियों में से
७ निकल गये । और साऊल ने अमालक़ियों को हवीला से लेके
८ शूर लों जो मिसर के साम्ने है मारा । और अमालक़ियों के राजा अगाग़ को जीता पकड़ा और सब लोगों को खड्ग की धार से सर्वथा
९ नाश किया । परंतु साऊल और लोग अगाग़ को और अच्छी से अच्छी भेड़ों को और बैलों को और मोटे मोटे जीव धारियों को और मेम्नों को और सब अच्छी बस्तों को जीता रक्खा और उन्हें सर्वथा नाश न किया परंतु उन्होंने हरएक बस्तु को जो
१० तुच्छ और बुरी थी सर्वथा नाश किया । तब परमेश्वर का

११ यह बचन समुईल को पहुंचा। मैं पछताता हों कि साऊल को राजा करके स्थापित किया क्योंकि वुह मेरे पीछे से फिर गया और मेरी आज्ञाओं को पूर्ण न किया और समुईल उदास हुआ और रात भर परमेश्वर के आगे चिल्लाता रहा।
१२ और बिहान को बड़े तड़के समुईल उठा कि साऊल से भेंट करे और समुईल से कहागया कि साऊल करमिल को आया और देखो कि उसने अपने लिये एक स्थान बनाया और फिरा और
१३ जलजाल को उतर गया। फिर समुईल साऊल पास गया और साऊल ने उसे कहा कि तू परमेश्वर का धन्य मैंने
१४ परमेश्वर की आज्ञाओं को पूर्ण किया। समुईल ने कहा परंतु यह भेड़ों का मिमियाना और बैलों का बमाना जो मैं सुनताहों
१५ सो कैसा है?। साऊल ने कहा कि वे अमालक़ियों से ले आये हैं क्योंकि लोगों ने अच्छी से अच्छी भेड़ और बैल को बचा रक्खा है कि तेरे ईश्वर परमेश्वर के लिये बलि चढ़ावें और बचेहुओं
१६ को तो हमने सर्वथा नाश किया है। तब समुईल ने साऊल को कहा कि ठहर जा और जो कुछ परमेश्वर ने आज रात मुझे कहा है मैं तुझे कहोंगा वुह उसे बोला कि कहिये।
१७ समुईल ने कहा कि जब तू अपनी दृष्टि में तुच्छ था तब क्या इसराईल की गोष्ठियों का प्रधान न हुआ और परमेश्वर ने
१८ तुझे इसराईल पर राज्याभिषेक न किया,। और परमेश्वर ने तुझे यह कहिके यात्रा को भेजा कि जा उन पापी अमालक़ियों को सर्वथा नाश कर और उनसे यहां लों लड़ाई कर कि वे
१९ मिट जायें। सो तूने किस लिये परमेश्वर का शब्द न माना परंतु लूट पर दौड़ा और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई?।
२० साऊल ने समुईल को कहा कि हां मैंने तो परमेश्वर के शब्द को माना है और जिस मार्ग में परमेश्वर ने मुझे भेजा चला हों और अमालक़ियों के राजा अग़ाग़ को ले आया हों और
२१ अमालक़ियों को सर्वथा नाश किया है। पर लोगों ने

२१ लूट में भेड़ और बैल और जो अच्छे से अच्छे चाहिये था कि
सर्बथा नाश किये जायें सो रख लिये जिसतें जलजाल में
२२ परमेश्वर तेरे ईश्वर के लिये भेंट चढ़ावें। समुईल बोला कि
क्या परमेश्वर होम की भेंटों और बलिदानों से ऐसा आनंद
है जैसे परमेश्वर के शब्द के मान्ने से? देखो मानना बलिदान से,
२३ और सुन्ना मेढ़े की चिकनाई से उत्तम है। क्योंकि फिर जाना
टोना के पाप के तुल्य है ढिठाई और बुराई मूर्त्ति पूजा के
समान सो जैसा तूने परमेश्वर के बचन को त्याग किया है
२४ उसने तुझे भी राज्य से त्याग किया है। साऊल ने
समुईल से कहा कि मैंने पाप किया है क्योंकि मैंने परमेश्वर की
आज्ञा को, और तेरी बातों को उलंघन किया इस कारण कि मैंने
२५ लोगों से डरके उनके शब्द को माना। सो मैं तेरी बिनती करता
हों कि मेरे पाप क्षमा कीजिये और मेरे साथ उलटा फिरिये
२६ जिसतें मैं परमेश्वर की सेवा करों। समुईल ने साऊल से
कहा कि मैं तेरे साथ न फिरोंगा क्योंकि तूनें परमेश्वर के
बचन को त्याग किया है और परमेश्वर ने इसराईल पर राजा
२७ होने से तुझे त्याग किया है। और जब समुईल फिरा कि
चलाजाय तो उसने उसके बस्त्र का खूंट पकड़ा और वुह
२८ फट गया। समुईल ने उसे कहा कि परमेश्वर ने आज
इसराईल के राज्य को तुझ्से फाड़ा है और तेरे एक परोसी को
२९ दिया है जो तुझ्से अच्छा है। और जो इसराईल का सनातन है
सो झूठ न बोलेगा और न पछतावेगा क्योंकि वुह मनुष्य नहीं
३० कि वुह पछतावे। तब उसने कहा कि मैंने तो पाप किया है
पर लोगों के प्राचीनों के, और इसराईल के आगे मेरी प्रतिष्ठा
कीजिये और मेरे साथ लौटिये जिसतें मैं परमेश्वर तेरे
३१ ईश्वर की सेवा करों। तब समुईल साऊल के पीछे फिरा और
३२ साऊल ने परमेश्वर की सेवा किई। तब समुईल ने
कहा कि अमालक़ियों के राजा अग़ाग को इधर मुझ पास

लाओ और अग़ाग सुकवारी से उस पास आया और अग़ाग
३३ ने कहा कि निश्चय मृत्यु की कडुवाइट जाती रही। और
समुईल ने कहा कि जैसा तेरी तलवार ने स्त्रियों को निर्वंश
किया वैसाही तेरी माता स्त्रियों में निर्वंश होगी और समुईल
ने अग़ाग को जलजाल में परमेश्वर के आगे टुकड़ा टुकड़ा
३४ किया। और समुईल रामा को गया और साऊल
३५ अपने घर गबिया को चढ़ गया। और समुईल अपने जीवन
भर साऊल को देखने न गया तिसपर भी समुईल साऊल के
कारण बिलाप करता रहा और परमेश्वर भी पछताया कि
उसने साऊल को इसराईल पर राजा किया।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

परमेश्वर समुईल को बैतुल्लहम में भेजता है कि यस्सी के बेटों में से एक को राजा करे १—५ समुईल ने परमेश्वर की आज्ञा से दाऊद को राजा किया ६—१३ परमात्मा साऊल को छोड़ देता है और कुआत्मा उसे खिझाता है उसके सेवक एक सुंदर बजनिया का संदेश देते हैं कि उसके बजाने से वुह कुआत्मा से चैन पावे १४—१८ साऊल भेज के यस्सी के पुत्र दाऊद को बुला लेता है उसके बजाने से कुआत्मा उतर जाता था १९—२३ ।

१ और परमेश्वर ने समुईल से कहा कि तू कबलों साऊल के
कारण बिलाप करता रहेगा मैंने तो उसे इसराईल पर राज्य
करने से त्याग किया अपने सींग में तेल भर और जा मैं तुझे
बैतुल्लहमी यस्सी पास भेजता हों क्योंकि मैंने उसके बेटों मेंसे
२ एक को राजा ठहराया है। समुईल बोला मैं क्योंकर जाओं
यदि साऊल सुने तो मुझे मारही डालेगा परमेश्वर ने कहा कि
एक बछिया अपने साथ लेजा और कह कि मैं परमेश्वर के

३ लिये बलिदान चढ़ाने आया हों। और बलिदान चढ़ाने में यस्सी को बुला और मैं तुझे बताओंगा कि तू क्या करेगा और जिसका नाम मैं तेरे आगे लेओं तू उसे मेरे लिये अभिषेक कर।
४ और जो परमेश्वर ने उसे कहा समुईल ने किया और बैतुल्लहम को आया तब नगर के प्राचीन उसके आने से कांप गये और
५ बोले कि तू कुशल से आता है?। वुह बोला कि कुशल से मैं परमेश्वर के लिये बलि करने आया हों तुम आप को पवित्र करो और मेरे साथ बलि करने के लिये आओ और उसने यस्सी को उसके बेटों सहित पवित्र किया और उन्हें बलि
६ करने को बुलाया। और ऐसा हुआ कि जब वे आये तो उसने इलियाब पर दृष्टि किई और बोला कि निश्चय
७ परमेश्वर का अभिषिक्त उसके आगे है। परंतु परमेश्वर ने समुईल से कहा कि उसके स्वरूप पर और उसके डील की ऊंचाई पर दृष्टि न कर इस कारण कि मैंने उसे नाह किया कि परमेश्वर मनुष्य के समान नहीं देखता क्योंकि मनुष्य बाहरी रूप देखता है परंतु परमेश्वर अंतःकरण पर दृष्टि करता है।
८ तब यस्सी ने अबीनादाब को बुलाया और उसे समुईल के
९ आगे चलाया वुह बोला परमेश्वर ने इसे भी न चुना। फिर यस्सी ने शम्मा को आगे चलाया और वुह बोला कि परमेश्वर ने
१० इसे भी न चुना। फेर यस्सी ने अपने सातों बेटों को समुईल के सान्ने किया सो समुईल ने यस्सी को कहा कि परमेश्वर ने इन्हें
११ भी नहीं चुना। और समुईल ने यस्सी से कहा कि तेरे सब बेटे येही हैं! वुह बोला कि सब से छोटा रहगया है और देख वुह भेड़ चराता है सो समुईल ने यस्सी को कहा कि उसे भेजके मंगवा
१२ क्योंकि जबलों वुह यहां न आवे हम न बैठेंगे। और वुह भेजके उसे भीतर लाया वुह लाल और सुरूप था और देखने में अच्छा था तब परमेश्वर ने कहा कि उठके उसे अभिषेक
१३ कर क्योंकि यही है। तब समुईल ने तेल का सींग लिया और

उसे उसके भाइयों के मध्य में अभिषेक किया और परमेश्वर का आत्मा उस दिन से आगे लों दाऊद पर उतरा और समूएल
१४ उठ के रामा को चला गया । परंतु परमेश्वर का आत्मा साऊल से जाता रहा और परमेश्वर की ओर से एक दुष्ट
१५ आत्मा उसे सताने लगा । तब साऊल के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये अब एक दुष्ट आत्मा ईश्वर की ओर से आपको सताता है ।
१६ सो अब हमारे प्रभु अपने सेवकों को, जो आप के आगे हैं, आज्ञा कीजिये कि एक जन ऐसा खोजें जो सारंगी बजाने में निपुण हो और यों होगा कि जब दुष्ट आत्मा ईश्वर से आप पर चढ़े तब वुह अपने हाथ से बजावेगा और आप अच्छे होंगे ।
१७ साऊल ने अपने सेवकों से कहा कि अब मेरे लिये अच्छा बजनिया
१८ ठहराओ और उसे मुझ पास लाओ । तब उसके दासों में से एक ने उत्तर देके कहा कि देख मैंने बैतुलहमी यस्सी का एक बेटा देखा जो बजाने में निपुण है और वुह जन सामर्थी वीर है और वुह लड़ाक और बचन में चतुर और देखने में सुंदर
१९ है और परमेश्वर उसके साथ है । तब साऊल ने यस्सी पास दूत भेजके कहा कि अपने बेटे दाऊद को, जो भेड़ों
२० के संग है मुझ पास भेज । यस्सी ने एक गदहा रोटी लिई और एक कुप्पा मदिरा और बकरी का मेम्ना लिया और अपने बेटे दाऊद को दिया कि साऊल के लिये लेजाय ।
२१ दाऊद साऊल पास आया और उसके आगे खड़ा हुआ और उसने उसे बहुत प्यार किया और वुह उसका अस्त्रधारी
२२ हुआ । और साऊल ने यस्सी को कहला भेजा कि कृपा करके दाऊद को मेरे आगे रहने दीजिये क्योंकि वुह मेरे मन में
२३ भाया है । और ऐसा हुआ कि जब ईश्वर से आत्मा साऊल पर चढ़ता था तब दाऊद सारंगी लेके हाथ से बजाता था और साऊल संतुष्ट होके अच्छा होता था और दुष्ट आत्मा उस पर से उतरजाता था ।

१७ सत्तरहवां पर्ब्ब ।

फ़लस्तानी और साऊल युद्ध के लिये अपनी अपनी सेना को एकट्ठी करते हैं १—३ फ़लस्तानी की छावनी से एक दानव सेना के आगे लड़ने को निकलता है साऊल का कटक उसे देख देख थर्थराता है ४—११ अपने पिता का भेजा ऊआ दाऊद भी सेना में आता है १२—१९ उस महावीर को देखतेही इसराईल डरके मारे भागते हैं दाऊद उसका साम्ना करने को हियाव करता है २०—२७ दाऊद का बड़ा भाई उसकी बात सुन के रिसियाता है और उसे कुबचन कहता है २८—२९ दाऊद का बचन राजा पास पऊंचता है ३०—३१ दाऊद परमेश्वर पर आशा रखके लड़ाई के लिये सिद्ध होता है और ढिलवांस से पत्थर मार के उस महाबीर को मारडालता है ३२—५४ दाऊद उस महाबीर का सिर लेके राजा पास पऊंचाया जाता है ५५—५८ ।

१ अब फ़लस्तानियों ने युद्ध के लिये अपनी सेनाओं को यहूदा के शोको में एकट्ठी किई और शोको और अज़ीका के मध्य दमिम
२ के सिवाने में डेरा किया। और साऊल और इसराईल के मनुष्यों ने एकट्ठे होके ईला की तराई में डेरा किया और
३ युद्ध के लिये फ़लस्तानियों के सन्मुख पांती बांधी। और फ़लस्तानी एक ओर पहाड़ पर खड़े ऊए और दूसरी ओर एक पहाड़ पर इसराईल और उन दोनों के मध्य में तराई
४ थी। और फ़लस्तानो की सेना से एक महा बीर, जो गात का गोलियात कहावता था जिसके डील की ऊंचाई साढ़े
५ छः हाथ थी। और उसके सिर पर पीतल का एक टोप था और वुह झिलम पहिने ऊए था जो तौल में मनदो एक पीतल

६ की थी। और उसकी दो पिंडुलियों पर पीतल के कवच थे और उसके दोनों कांधों के मध्य पीतल की एक फरी थी।
७ और उसके भाले की छड़ ऐसी थी जैसे जोलाहे का लट्ठा और उसके भाले का फल सेर नवएक का था और एक जन ढाल
८ लिये ऊए उसके आगे आगे चलता था। और उसने खड़ा होके इसराईल की सेनाओं को ललकार के कहा कि तुम क्यों संग्राम के लिये निकले हो क्या मैं फ़लस्तानी नहीं हों और तुम साऊल के सेवक, सो अपने में से एक जन को चुनो और वुह मेरा साम्ना
९ करे। यदि वुह मुझसे लड़ सके और मुझे मार डाले तो हम तुम्हारे सेवक होंगे पर यदि मैं उस पर प्रबल होके उसे मार डालों तो तुम हमारे सेवक होगे और हमारी सेवा करोगे।
१० और फ़लस्तानी बोला कि मैं आज के दिन इसराईल की सेनाओं को तुच्छ जानता हों कोई जन मुझे देओ कि युद्ध
११ करे। जब साऊल और समस्त इसराईल ने उस फ़लस्तानी
१२ की बातें सुनीं तब वे बिस्मित होके डर गये। अब दाऊद बैतुल्लहम यहूदा के अफ़रातानी का पुत्र था जिसका नाम यस्सी था और उसके आठ बेटे थे और वुह जन साऊल के
१३ दिनों में लोगों में पुरनिया गिना जाता था। और यस्सी के तीन बड़े बेटे थे जो लड़ाई में साऊल के पीछे ऊए और जो संग्राम में गये थे उन तीनों के ये नाम थे पहिलौठा अलीयाब
१४ और मंझिला अबीनादाब और लऊरा शम्मा। और दाऊद सब से छोटा था और उसके तीनों बड़े बेटे साऊल के
१५ साथ साथ गये। परंतु दाऊद साऊल से फिर के अपने पिता
१६ की भेड़ें बैतुल्लहम में चराने गया था। और वुह फ़लस्तानी
१७ चालीस दिन लों सांझ बिहान आया करता था। और यस्सी ने अपने बेटे दाऊद से कहा कि अब एक ईफ़ा भर भूना और ये दस रोटी लेके छावनी को, अपने भाइयों पास
१८ दौड़ जा। और दूध के इन दस खोओं को सहस्रों के प्रधानों

पास लेजा और देख तेरे भाई कैसे हैं और उनका कुछ
१९ चिन्ह ला। और उस समय साऊल और वे और सारे
इसराईल के लोग ईला की तराई में फ़लस्तानियों से लड़
२० रहे थे। और दाऊद भोर को तड़के उठा और भेड़ों
को एक रखवाल को सौंपके जैसा यस्सी ने उसे कहा था लेके
चला और मुरचे पर पहुंचा और उसी समय सेना लड़ाई के
२१ लिये ललकारती थी। क्योंकि इसराईलियों और फ़लस्तानियों
२२ ने अपनी अपनी सेना के आम्ने साम्ने परे बांधे थे। और दाऊद
अपने पात्रों को रखवाल को सौंपके सेना को दौड़ गया और
२३ अपने भाइयों से कुशल पूछा। और वुह उनसे बातें करताही
था कि देखो वुह महावीर गात का फ़लस्तानी जिसका नाम
गोलियात था फ़लस्तानियों की सेनों में से निकल आया और
२४ उन्हीं बातों के समान बोला और दाऊद ने सुना। और
इसराईल के सारे लोग उसे देख के उसके सन्मुख से भागे
२५ और निपट डर गये। तब इसराईल के लोगों ने कहा कि
तुम उस जन को देखते हो जो निकला है कि यह निश्चय
इसराईल को तुच्छ करने को निकल आता है और यों होगा
कि जो जन उसे मारेगा राजा उसे बहुत धन से धनमान
करेगा और अपनी बेटी उसे देगा और उसके पिता के घराने
२६ को इसराईल में निर्बंध करेगा। तब दाऊद ने अपने आस
पास के लोगों से पूछा कि जो जन उस फ़लस्तानी को मारेगा
और इसराईल से कलंक को दूर करेगा उसे क्या मिलेगा?
क्योंकि यह अख़तनः फ़लस्तानी कौन है जो जीवते ईश्वर की
२७ सेना को तुच्छ समुझे?। लोगों ने इस रीति से उत्तर देके उसे
२८ कहा जो इसे मारेगा उसे यह मिलेगा। तब उसके
बड़े भाई इलियाब ने उसकी बातें सुनी जो वुह लोगों से करता
था और इलियाब का क्रोध दाऊद पर भड़का और वुह
बोला कि तू इधर क्यों आया है और बन में उन थोड़ी सी

भेड़ें को किस पास छोड़ा मैं तेरे घमंड और तेरे मन की न ुटी को जानता हों क्योंकि तू संग्राम देखने को उतर
२९ आया है। तब दाऊद बोला कि मैंने क्या किया क्या कारण
३० नहीं?। और वुह वहां से दूसरी ओर गया और फिर वही बात कही तब लोगों ने उसे आगे के समान फेर उत्तर
३१ दिया। और जब उन बातों की, जो दाऊद ने कही थीं चर्चा ऊई तब साऊल लों संदेश पऊंचा और उसने उसे लिया।
३२ दाऊद ने साऊल से कहा कि उसके कारण किसी का मन न घटे तेरा दास जाके उस फ़लस्तानी से
३३ लड़ेगा। तब साऊल ने दाऊद से कहा कि तुझ में यह सामर्थ्य नहीं कि उस फ़लस्तानी से लड़े क्योंकि तू लड़का है और वुह
३४ लड़कपन से योद्धा है। तब दाऊद ने साऊल से कहा कि तेरा सेवक अपने पिता की भेड़ों की रखवाली करता था और एक सिंह और एक भालु निकला और झुंड में से एक मेम्ना ले
३५ गया। और मैंने उसके पीछे निकल के उसे मारा और उसे उसके मुंह से छुड़ाया और जब वुह मुझ पर झपटा तब मैंने
३६ उसकी दाढ़ पकड़ के उसे मारा और नाश किया। तेरे सेवक ने उस सिंह और भालु दोनों को मार डाला फेर यह अख़तनः फ़लस्तानी उनमें से एक के समान होगा कि उसने जीवते
३७ ईश्वर की सेना को तुच्छ जाना। और दाऊद ने यह भी कहा कि जिस परमेश्वर ने मुझे सिंह के और भालू के पंजे से बचाया वही मुझे उस फ़लस्तानी के हाथ से बचावेगा तब साऊल ने दाऊद से कहा कि जा और परमेश्वर तेरे साथ
३८ होवे। और साऊल ने अपना वस्त्र दाऊद को पहिनाया और पीतल का एक टोप उसके सिर पर रक्खा और उसे झिलम
३९ भी पहिनाई। और दाऊद ने अपनी तलवार झिलम पर लटकाई और जाने का मन किया क्योंकि उसने उसे न जांचा था तब दाऊद ने साऊल से कहा कि इनसे मैं नहीं जा सक्ता

क्योंकि मैं ने इन्हें नहीं परखा तब दाऊद ने उन्हें उतार दिया ।
४० और उसने अपना लट्ठ हाथ में लिया और नाले मसे पांच चिकने पत्थर चुन लिये और उन्हें अपने गड़रिया के पात्र में अर्थात झोले में रक्खा और अपना ढिलवांस अपने हाथ में
४१ लिया और उस फ़लस्तानी की ओर बढ़ा। और फ़लस्तानी चला और दाऊद के निकट आनेलगा और जो जन उसकी
४२ ढाल उठाता था सो उसके आगे आगे गया। और जब उस फ़लस्तानी ने इधर उधर ताका तब दाऊद को देखा और उसे तुच्छ जाना क्योंकि वुह तरुण लाल और सुंदर रूप था।
४३ और फ़लस्तानी ने दाऊद से कहा कि क्या मैं कूकर हों जो तू लट्ठ लेके मुझ पास आता है और फ़लस्तानी ने अपने देवों
४४ के नाम से उसे धिक्कारा। और फ़लस्तानी ने दाऊद से कहा कि मुझ पास आ और मैं तेरा मांस आकाश के पक्षियों
४५ को और बनैले पशुओं को देओंगा। तब दाऊद ने उस फ़लस्तानी को कहा कि तू तलवार और बरछा और ढाल लेके मुझ पर आता है परंतु मैं सेनाओं के परमेश्वर के नाम से, जो इसराईल के सेनाओं का ईश्वर है, जिसकी तूने निंदा
४६ किई है, तुझ पास आता हों। आजही परमेश्वर तुझे मेरे हाथ में सौंप देगा और मैं तुझे मार लोंगा और तेरा सिर तुझसे अलग करोंगा और मैं आज फ़लस्तानियों की सेना की लोथों को आकाश के पक्षियों को और बनैले पशुओं को देओंगा जिसतें समस्त पृथिवी जाने कि इसराईल
४७ में एक ईश्वर है। और यह समस्त मंडली जानेगी कि परमेश्वर तलवार और भाले से नहीं बचाता क्योंकि संग्राम परमेश्वर का है और वही तुम्हें हमारे हाथों में सौंप देगा।
४८ और ऐसा हुआ कि जब फ़लस्तानी उठा और दाऊद पास पहुंचने को आगे बढ़ा तब दाऊद ने चालाकी किई और सेना
४९ की ओर फ़लस्तानी पर पहुंचने दौड़ा। और दाऊद ने

अपने थैले में हाथ डाला और उसमें से एक पत्थर लिया और ढेलवांस से उस फ़लस्तानी के माथे पर मारा और वुह पत्थर उसके माथे में गड़ गया और वुह भूमि पर मुंह के बल
५० गिरा । सो दाऊद ने एक पत्थर और ढेलवांस से उस फ़लस्तानी को जीता और उसे मारा और घात किया परंतु
५१ दाऊद के हाथ में तलवार न थी । इस लिये दाऊद लपक के फ़लस्तानी पर चढ़बैठा और उसकी तलवार लेके काठी से खींची और उसे नाश किया और उसी से उसका सिर उतारा और जब फ़लस्तानियों ने देखा कि हमारा सूरमा मारा गया तब
५२ वे भाग निकले । और इसराईल के और यहूदा के लोग उठे और ललकारे और अकरून के फाटक लों और तराई लों फ़लस्तानियों को रगेदा और मारा और फ़लस्तानियों के घायल
५३ शारईम अर्थात् गात और अकरून लों जूझ गये । तब इसराईल के संतान फ़लस्तानियों के खेदने से फिर आये और
५४ उनके तंबुओं को लूट लिया । और दाऊद उस फ़लस्तानी का सिर लेके यिरोशलीम में आया परंतु अपने हथियारों को
५५ तंबू में रक्खा । और जब साऊल ने दाऊद को फ़लस्तानी के साम्ने होते देखा तब उसने सेना के प्रधान अबनर से पूछा कि हे अबनर यह गभरू किसका बेटा है? अबनर बोला कि हे राजा आपके जीवन सों मैं नहीं जानता ।
५६ राजा ने कहा कि बूझ यह गभरू किसका लड़का है ।
५७ और जब दाऊद उस फ़लस्तानी को मार के फिरा तब अबनर उसे राजा पास लेगया और फ़लस्तानी का सिर उसके हाथ
५८ में था । तब साऊल ने उसे पूछा कि तू किसका लड़का? दाऊद ने उत्तर दिया कि मैं तेरे सेवक बैतुलहमी यसी का लड़का हों ।

१८ अठारहवां पर्ब्ब ।

साऊल दाऊद को अपने पास रख लेता है और यूनासान उसे मित्रता करता है १—४ स्त्रियां गाती हैं कि साऊल ने सहस्रों को मारा परंतु दाऊद ने दस सहस्र को साऊल उसे डाह रखता है ५—९ साऊल दाऊद को बधन करने चाहता है परंतु दाऊद बच जाता है १०—११ दाऊद चौकसी करता है और सब लोग दाऊद से प्रीति रखते हैं १२—१६ साऊल अपनी कन्या को दाऊद को बियाह देने चाहता है १७—२१ दाऊद उसके कारण दो सौ फ़लस्तानी को मारता है २२—२७ साऊल जानता है कि परमेश्वर दाऊद के संग है और दाऊद चौकसी करता है २८—३० ।

१ और ऐसा ऊआ कि जब दाऊद साऊल से बात कहि चुका तब यूनासान का मन दाऊद के मन से बंध गया और यूनासान ने २ उसे अपनेही प्राण के तुल्य प्रेम किया । और साऊल ने तब से उसे अपने साथ रक्खा और फिर उसके पिता के घर ३ जाने न दिया । तब यूनासान और दाऊद ने आपुस में बाचा बांधी क्योंकि वुह उसे अपने प्राण के तुल्य प्रेम करता था । ४ तब यूनासान ने अपना बागा और अपने वस्त्र उतारे और अपनी तलवार और धनुष और अपने पटुका लों ५ दाऊद को दिया । और जहां कहीं साऊल उसे भेजता था दाऊद जाया करता था और कार्य सिद्ध करता था और साऊल ने उसे जोधाओं का प्रधान किया और वुह सारे लोगों की दृष्टि में और साऊल के समस्त सेवकों की दृष्टि में भी ग्राह्य ६ ऊआ । और उनके आते ऊए ऐसा ऊआ कि जब दाऊद उस फ़लस्तानी को मार के फिर आया तब सारी इसराईली स्त्रियां नगरों से गातीं नाचतीं आनंद से तबले और चितारे

७ लेके साऊल राजा से भेंट करने को निकलीं। उनके बजाने से स्त्रियां उत्तर देके कहती थीं कि साऊल ने अपने सहस्रों को
८ मारा और दाऊद ने अपने दस सहस्रों को। और साऊल अति क्रोधित हुआ और वुह कहावत उसकी दृष्टि में बुरी लगी और वुह बोला कि उन्हों ने दाऊद के लिये दस सहस्रों को ठहराया और मेरे लिये सहस्रों को अब केवल राज्य
९ भर उसे पाना है। और साऊल ने उसी दिन से दाऊद को
१० तक रक्खा। और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि ईश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा साऊल पर उतरा और वुह अपने घर में भविष्य कहने लगा और दाऊद आगे की नाईं हाथ से
११ बजाने लगा और साऊल के हाथ में एक सांग थी। तब साऊल ने सांग फेंकी क्योंकि उसने कहा कि मैं दाऊद को भीतही में गोदेंगा पर दाऊद दो बार उसके आगे से बच निकला।
१२ और साऊल दाऊद से डरा करता था इस कारण कि परमेश्वर उसके साथ था और साऊल से जाता रहा।
१३ इस लिये साऊल ने उसे अपने पास से अलग किया और सहस्र का प्रधान किया और वुह लोगों के आगे आया जाया
१४ करता था। और दाऊद अपनी सारी बातों में कार्य सिद्ध
१५ पाता था और परमेश्वर उसके साथ था। इस लिये जब साऊल ने देखा कि वुह अति चौकसी करता है तब वुह डरता
१६ था। पर सारे इसराईल और यहूदा दाऊद को चाहते थे इस लिये कि वुह उनके आगे आया जाया करता था।
१७ तब साऊल ने दाऊद को कहा कि मेरी बड़ी बेटी मीराब को देख मैं उसे तुझे बियाह देऊंगा केवल तू मेरे लिये बलीपुत्र हो और परमेश्वर के संग्राम किया कर क्योंकि साऊल ने कहा कि मेरा हाथ उस पर न पड़े परंतु फ़लस्तियों का
१८ हाथ उस पर पड़े। तब दाऊद ने साऊल से कहा कि मैं कौन और मेरा प्राण क्या और इसराईल में मेरे पिता का घराना

१९ क्या जो मैं राजा का जवांई होां?। परंतु यों ऊआ कि जब साऊल की बेटी मीराब को दाऊद के देने का समय आया
२० तब वुह मुहलाती अद्रईल से बियाही गई। और साऊल की बेटी मीकाल दाऊद से प्रीति रखती थी और उन्हों ने साऊल
२१ से कहा और वुह उसकी दृष्टि में अच्छी लगी। तब साऊल ने कहा कि मैं उसे उसको देओंगा जिसतें वुह उसके लिये फंदा होवे और जिसतें फ़लस्तानियों का हाथ उस पर पड़े इस लिये साऊल ने दाऊद से कहा कि तू आज इन दोनों में
२२ से मेरा जवांई होगा। और साऊल ने अपने सेवकों को आज्ञा किई कि दाऊद से गुप्त में बात चीत करो और कहो कि देख राजा तुझसे प्रसन्न है और उसके सारे सेवक
२३ तुझे चाहते हैं और अब तू राजा का जवांई हो। सो साऊल के सेवकों ने ये बातें दाऊद से कह सुनाईं दाऊद बोला कि तुम राजा का जवांई होना छोटा समझते हो मैं तो कंगाल
२४ होके तुच्छ गिना जाता होां। और साऊल के सेवकों ने इन
२५ बातों के समान उसे कहा। तब साऊल ने कहा कि तुम दाऊद से यों कहियो कि राजा कुछ दायज नहीं चाहता परंतु केवल एक सौ फ़लस्तानियों की खलड़ियां जिसतें राजा के बैरियों से पलटा लिया जाय परंतु साऊल ने चाहा कि
२६ दाऊद को फ़लस्तानियों से मरवा डाले। और जब उसके सेवकों ने इन बातों को दाऊद से कहा तब राजा का जवांई होना दाऊद को अच्छा लगा और दिन बीत न गये थे।
२७ इसलिये दाऊद उठा और अपने लोगों को लेके गया और दो सौ फ़लस्तानी को मारा और दाऊद उनकी खलड़ियों को लाया और उन्हों ने उन्हें राजा के आगे पूरा गिनके धरदिया जिसतें वुह राजा का जवांई होवे और साऊल ने अपनी बेटी मीकाल
२८ उसे बियाह दिई। और जब साऊल ने देखा और जाना कि परमेश्वर दाऊद के साथ है और साऊल की बेटी मीकाल

२९ उसे प्रीति रखती है। तब साऊल दाऊद से अधिक डरगया
३० और साऊल सदा दाऊद का बैरी रहा। तब फ़लस्तानियों के प्रधान निकले और उनके निकलने के पीछे यों ऊआ कि दाऊद साऊल के सारे सेवकों से अधिक चैकसी करता था यहांलों कि उसका बड़ा नाम ऊआ।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

साऊल दाऊद के बैर में लगरहा है यूनासान अपने पिता के बैर को दाऊद पर प्रगट करता है १—३ यूनासान अपने पिता को मिला देता है ४—७ दाऊद फ़लस्तानियों को मारता है और साऊल दाऊद को बधन करने चाहता है ८—११ दाऊद की पत्नी उसे खिड़की में से उतार देती है और उसको संती एक मूर्त्ति बिछौने में रखदेती है १२—१७ दाऊद भाग के समुईल पास जाता है और साऊल को संदेश पऊंचता है और वुह दतों को भेजता है पर दूत और आप भविष्य कहता है १८—२४।

१ तब साऊल ने अपने बेटे यूनासान से और अपने समस्त
२ सेवकों से कहा कि दाऊद को मारलेओ। परंतु साऊल का बेटा यूनासान दाऊद से अति प्रसन्न था और यूनासान दाऊद से कहिके बोला कि मेरा पिता तुझे बधन करने चाहता है सो अब बिहान लों अपनी चैाकसी करियो और
३ गुप्त स्थान में छिप रहियो। और मैं जाके चैागान में, जहां तू होगा, अपने पिता के पास खड़ा होंगा और अपने पिता से तेरी चर्चा करोंगा और जो मैं देखोंगा सो तुझे कहि देओंगा।
४ और यूनासान ने दाऊद के विषय में अपने पिता साऊल से अच्छी कही कि राजा अपने दास दाऊद से बुराई न कीजिये

इस कारण कि उसने आप का कुछ अपराध नहीं किया और
५ इस कारण कि उसके कर्म्म आप के लिये अति उत्तम हैं । क्योंकि
उसने अपना प्राण हथेली पर रक्खा और उस फ़लस्तानी को घात
किया और परमेश्वर ने इसराईल के लिये बड़ी मुक्ति दिई और
आप ने देखा और आनंद ऊए सो आप किस लिये निर्दोष से
बुराई किया चाहते हैं और अकारण दाऊद को मारा
६ चाहते हैं? । और साऊल ने यूनासान की बात सुनी और
साऊल ने किरिया खाई कि ईश्वर के जीवन सों दाऊद मारा
७ न जायगा । और यूनासान ने दाऊद को बुलाया और सारी
बातें उसे बताईं और यूनासान दाऊद को साऊल पास
लाया और कल परसों के समान फेर उसके पास रहने
८ लगा । और फिर लड़ाई ऊई और दाऊद निकला
और फ़लस्तानियों से लड़ा और बड़ी मार से उन्हें मारा
९ और व उसके आगे से भागे । और ज्यों साऊल अपने घर
में एक सांग हाथ में लिये ऊए बैठा था परमेश्वर की ओर से
दुष्ट आत्मा उस पर उतरा और दाऊद हाथ से बजा रहा
१० था । और साऊल ने चाहा कि दाऊद को भीत में सांग से
गोद देवे परंतु दाऊद साऊल के आगे से अलग हो गया
और सांग भीत में जा लगी और दाऊद भाग के उस रात
११ बच गया । साऊल ने दाऊद के घर पर दूतों को भेजा कि
उसे अगोरें और बिहान को उसे मार डालें तब दाऊद की
पत्नी मीकाल यह कहिके उसे बोली कि यदि आज रात तू
अपना प्राण न बचावे तो बिहान को मारा जायगा ।
१२ तब मीकाल ने खिड़की में से दाऊद को उतार दिया और
१३ वुह भाग के बच गया । और मीकाल ने एक पुतला लेके बिछौने
पर रक्खा और बकरियों के रोम की तकिया उसके सिर तले
१४ रक्खी और कपड़ा से ढांप दिया । और जब साऊल न दाऊद
को पकड़ने को दूत भेजे तब वुह बोली कि वुह रोगी है

१५ और साऊल ने यह कहिके दूतों को दाऊद को देखने भेजा कि उसे खाट सहित मुझ पास लाओ जिसतें मैं उसे मार डालों ।
१६ और जब दूत भीतर आये तब क्या देखते हैं कि बिछौने पर एक पुतला पड़ा है और उसके सिर तले बकरियों के रोम की
१७ तकिया है । तब साऊल ने मीकाल से कहा कि तू ने मुझ से क्यों ऐसा छल किया और मेरे बैरी को निकाल दिया और वुह बच गया सो मीकाल ने साऊल को उत्तर दिया कि उसने मुझे कहा कि मुझे जाने दे नहीं तो मैं तुझे मारडालोंगा ।
१८ और दाऊद भागा और बच रहा और रामः में समुईल पास गया और जो कुछ कि साऊल ने उस्से किया था सब उसे कहा तब वुह और समुईल दोनों नायूस में जा रहे ।
१९ और साऊल को यह कहा गया कि देख दाऊद रामः में
२० नायूस में है । और साऊल ने दूतों को भेजा कि दाऊद को पकड़ें और जब उन्हों ने देखा कि आगमज्ञानियों की जथा भविष्य कहती है और समुईल ठहराये ऊए के समान उनमें खड़ा है तब ईश्वर का आत्मा साऊल के दूतों पर उतरा और
२१ वे भी भविष्य कहने लगे । और जब साऊल को कहा गया उसने और दूत भेजे और वे भी भविष्य कहने लगे तब साऊल ने तीसरे बार और दूत भेजे और वे भी भविष्य कहने लगे ।
२२ तब वुह आप रामः को गया और उस बड़े कूए पर जो सीख़ू में है पऊंचा और उसने पूछा कि समुईल और दाऊद कहां
२३ हैं एक ने कहा कि देख वे नायूस में हैं । तब वुह रामः नायूस की ओर चला और ईश्वर का आत्मा उस पर भी पड़ा और वुह बढ़ा गया और रामः के नायूस लों भविष्य
२४ कहता गया । और उसने भी अपने कपड़े उतार फेंके और समुईल के आगे उसके समान भविष्य कहा और उस रात दिन भर नंगा पड़ा रहा इसी लिये यह कहावत ऊई कि क्या साऊल भी आगमज्ञानियों में है ? ।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

दाऊद और यूनासान का संबाद १—१० दाऊद और यूनासान बाचा बांधते हैं ११—२३ दाऊद आपको छिपाता है और साऊल उसकी खोज करता है और न पाके यूनासान पर क्रोध करता है २४—३४ यूनासान दाऊद को अपने पिता के क्रोध का पता देताहै और उसे भेंट करके भगाता है ३५—४२ ।

१ तब दाऊद नायूस रामः से भाग के यूनासान पास आया और उसे कहा कि मैं ने क्या किया? मेरा क्या अपराध है? मैं ने तेरे पिता का कौनसा पाप किया है? जो वुह मेरे प्राण २ का गांहक है?। वुह बोला कि ऐसा नहोवे तू मारा न जायगा देख मेरा पिता बिना मुझ पर प्रगट किये कोई छोटी बड़ी बात न करेगा और यह बात किस कारण से मेरा पिता ३ मुझ्से छिपावे? यह नहीं। तब दाऊद ने फिर किरिया खाके कहा कि तेरा पिता निश्चय जानता है कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और वुह कहताहै कि यूनासान यह न जाने नहो कि वुह शोकित हो परंतु परमेश्वर सों और तेरे ४ जीवन सों मुझ में और मृत्यु में केवल डग भर है। तब यूनासान ने दाऊद से कहा कि जो कुछ तेरा जी चाहे मैं तेरे ५ लिये करोंगा। दाऊद ने यूनासान से कहा कि देख कल अमावास्या है और मुझे उचित है कि राजा के साथ भोजन करों सो मुझे जाने दीजिये कि मैं तीसरी सांझ लों खेत में ६ जा छिपों। यदि तेरा पिता मेरी खोज करे तो कहियो कि दाऊद यत्न से मुझे पूछ के अपने नगर बैतुल्लहम को दौड़ गया ७ क्योंकि समस्त घराने के लिये बरसयन का बलिदान है। यदि वुह यों बोले कि अच्छा तो तेरे सेवक के लिये कुशल है परंतु यदि वुह अति क्रोध करे तो निश्चय जानियो कि उसके मन में

८ बुराई है। इस कारण अपने सेवक पर दया से व्यवहार कीजियो क्योंकि तू अपने दास को अपने साथ परमेश्वर की बाचा में लाया है तथापि यदि मुझ में अपराध होवे तो तू मुझे बधन कर किस कारण मुझे अपने पिता पास
९ लेजायगा? । तब यूनासान ने कहा कि तुझ से दूर होवे क्योंकि यदि मैं निश्चय जानता कि मेरे पिता ने ठाना है कि तेरी
१० बुराई करे तो क्या मैं तुझे न बताता? । फिर दाऊद ने यूनासान से कहा कि कौन मुझे कहेगा अथवा क्या जाने तेरा पिता
११ तुझे दुरक के कहे? । तब यूनासान ने दाऊद से कहा कि
१२ आ खेत में चलें सो वे दोनों खेत को गये । और यूनासान ने दाऊद से कहा कि जब मैं कल अथवा परसों अपने पिता को बूझ लेओं और देखों कि दाऊद के विषय में भला है और
१३ भेज के तुझे न बताओं हे परमेश्वर इसराईल के ईश्वर । तो परमेश्वर ऐसा हो और इसे अधिक यूनासान से करे और यदि तेरी बुराई करने को मेरे पिता की इच्छा होवे तो मैं तुझे बताओंगा और तुझे बिदा करोंगा कि तू कुशल से चला जाय और जैसा परमेश्वर मेरे पिता के साथ ऊआ है वैसा
१४ तेरे साथ होवे। और तू केवल मेरे जीवन लों परमेश्वर की
१५ कृपा मुझे न दिखाइयो जिसतें मैं न मरों । परंतु जब परमेश्वर दाऊद के हर एक शत्रु को पृथिवी पर से नाश करे मेरे
१६ घरानों पर से भी अनुग्रह उठा न लीजियो । सो यूनासान ने दाऊद के घराने से बाचा बांधी और कहा कि परमेश्वर
१७ दाऊद के शत्रुन के हाथ से पलटा लेवे । और यूनासान ने दाऊद से फिर किरिया खिलाई इसलिये कि वुह उसे अपने
१८ प्राणही के तुल्य प्रेम रखता था । तब यूनासान ने दाऊद से कहा कि कल अमावास्या और तेरी खोज होगी इस कारण
१९ कि तेरा आसन सूना रहेगा । और जब तू तीन दिन अलग रहे तब तू शीघ्र उतर के उसी स्थान में जाइयो जहां तूने

आपको कार्य के दिन छिपाया था और उस पत्थर के पास
२० रहियो जहां से मार्ग दिखाई देता है। और मैं उस अलंग
२१ तीन बाण मारोंगा जैसा कि चिन्ह मारता हों। और देख मैं
यह कहिके एक छोकरे को भेजोंगा कि जा बाणों को खोज
यदि मैं निश्चय छोकरे को कहों कि देख बाण तेरे इस अलंग हैं
उन्हें ले तब निकल आइयो क्योंकि परमेश्वर के जीवन सों तेरे
२२ लिये कुशल है कुछ नहीं है। पर यदि मैं उस तरुण से कहों
कि देख बाण तेरे आगे हैं तब तू मार्ग लीजियो क्योंकि
२३ परमेश्वर ने तुझे बिदा किया है। रही वुह बात जो आपुस
में ठहराई है सो देख परमेश्वर सदा मेरे और तेरे मध्य में
२४ है। सो दाऊद खेत में जा छिपा और जब अमावास्या
२५ हुई तब राजा भोजन पर बैठा। और राजा अपने व्यवहार
के समान भीत के लग अपने आसन पर बैठा और यूनासान
उठा और अबनर साऊल की एक अलंग में बैठा था और
२६ दाऊद का स्थान सूना था। तथापि उस दिन साऊल ने कुछ
न कहा क्योंकि उसने समुझा था कि उस पर कुछ बीता है वुह
२७ अपवित्र होगा निश्चय वुह अपावन होगा। और बिहान को
मास की दूसरी तिथि को ऐसा हुआ कि दाऊद का स्थान
सूना रहा तब साऊल ने अपने बेटे यूनासान से कहा कि
किस कारण यसी का बेटा कल और आज भोजन को नहीं आया
२८ है। तब यूनासान ने साऊल को उत्तर दिया कि दाऊद मुझ से
२९ पूछ के बैतुलहम को गया। और उसने कहा कि मुझे जाने
दे कि नगर में हमारे घराने में बलि है और मेरे भाई
ने मुझे बुलाया है यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है
तो मुझे जाने दे कि अपने भाइयों को देखों इस लिये
३० वुह राजा के भोजन पर नहीं आता। तब साऊल का कोप
यूनासान पर भड़का और उसने उसे कहा कि हे ढीठ और
दंगइत के पुत्र क्या मैं नहीं जानता कि तूने अपनी घबराहट के

लिये और अपनी माता की नंगापन की घबराहट के लिये
३१ यस्सी के बेटे को चुना है। क्योंकि जबलों यस्सी का बेटा भूमि
पर जीता है तब लों तू और तेरा राज्य स्थिर न होगा सो
अब भेज के उसे मुझ पास ला क्योंकि वुह निश्चय मारा
३२ जायगा। तब यूनासान ने अपने पिता को उत्तर देके कहा
कि वुह किस कारण मारा जायगा? उसने क्या किया है?।
३३ तब साऊल ने मारने को उसकी ओर सांग फेंकी उसे
यूनासान को निश्चय हुआ कि उसके पिता ने दाऊद के मारने
३४ को ठाना है। सो यूनासान बहुत रिसिया के मंच से उठ गया
और मास की दूसरी तिथि में भोजन न किया क्योंकि वुह
दाऊद के लिये निपट उदास हुआ क्योंकि उसके पिता ने
३५ उसे लज्जित किया।　　　और बिहान को यूनासान उसी
समय जो दाऊद से ठहराया था खेत को गया और एक
३६ छोकरा उसके साथ था। और उसने उसे आज्ञा किई कि
दौड़ और जो बाण मैं चलाता हों उन्हें ढूंढ़ और ज्योंहीं वुह
३७ दौड़ा त्योंहीं एक बाण उसके परे मारा। और जब वुह
छोकरा उस स्थान में पहुंचा जहां यूनासान ने बाण मारा
था तब यूनासान ने छोकरे को पुकार के कहा कि क्या वुह बाण
३८ तुझ से परे नहीं?। और यूनासान ने छोकरे को पुकारा कि चटक
कर और ठहर मत सो यूनासान के छोकरे ने बाणों को
३९ एकट्ठा किया और अपने स्वामी पास आया। परंतु उस
छोकरे ने कुछ न जाना केवल दाऊद और यूनासान उसका
४० भेद जानते थे। फिर यूनासान ने अपने हथियार उस छोकरे
४१ को दिये और कहा कि नगर को ले जा।　　　छोकरे के जाने
के पीछे दाऊद दक्खिन की ओर से निकला और भूमि पर
औंधे मुंह गिरा और तीन बार दंडवत किई और उन्हों ने
आपुस में एक दूसरे को चूमा और परस्पर यहां लों बिलाप
४२ किये कि दाऊद ने जीता। और यूनासान ने दाऊद को कहा

कि कुशल से चला जा और उस बाचा पर जो हमने किरिया खाके आपुस में किई है मेरे तेरे मध्य में और हमारे बंश के मध्य में सदा लों परमेश्वर साक्षी होवे सो वुह उठ के चला गया और यूनासान नगर में आया ।

२१ एकीसवां पर्ब्ब ।

दाऊद अहीमलक याजक पास आके भेंट की रोटी उसे पाता है १—७ दाऊद गोलियात दानव का खङ्ग लेताहै ८—९ साऊल के डरके मारे वुह गात के राजा पास भाग जाता है १०—१५ ।

१ तब दाऊद नाब को अहीमलक याजक पास आया और अहीमलक दाऊद की भेंट करने से डरा और बोला कि तू क्यों २ अकेला है और तेरे साथ कोई नहीं ? । दाऊद ने अहीमलक याजक से कहा कि राजा ने मुझे एक काम को भेजाहै और कहा है कि यह काम जो मैं ने तुझे कहा है किसी को मत जनाइयो और मैं ने सेवकों को अमुक स्थान को भेज दिया है । ३ सो अब तेरे हाथ तले क्या है ? मुझे पांच रोटी अथवा जो कुछ ४ धरा हो सो मेरे हाथ में दीजिये । याजक ने दाऊद को कहा कि मेरे हाथ तले सामान्य रोटी नहीं परंतु पवित्र रोटी है ५ यदि तरुण लोग स्त्रियों से अलग रहे हों । तब दाऊद ने उत्तर देके याजक को कहा कि निश्चय तीन दिन ऊए होंगे जबसे मैं निकला हों स्त्री हम से अलग हैं और तरुणों के पात्र पवित्र हैं और यद्यपि रोटी आज पात्र में पवित्र किई गई हो तथापि ६ सामान्य के तुल्य है । सो याजक ने पवित्र किई गई उसे दिई क्योंकि भेंट की रोटी को छोड़ वहां कोई रोटी न थी जो परमेश्वर के आगे से उठाई गई थी जिसतें उसकी संती वहां ७ ताती रोटी रक्खी जावे । अब उस दिन साऊल के सेवकों में से एक जन अदूमी परमेश्वर के आगे रोका गया था जिसका नाम

८ दायेग था वुह साऊल के अहिरों का प्रधान था । फिर दाऊद ने अहीमलक से पूछा कि यहां तेरे हाथ तले कोई भाला अथवा खड्ग तो नहीं? क्योंकि मैं अपनी तलवार अथवा हथियार साथ नहीं लायाहों इस कारण कि राजा के
९ काम की शीघ्रता थी। तब याजक ने कहा कि फ़लस्तानी गोलियात का खड्ग, जिसे तू ने ईला की तराई में मारा एक कपड़े में लपेटा हुआ अफूद के पीछे धरा है यदि तू उसे लिया चाहे तो ले क्योंकि उसे छोड़ यहां दूसरा नहीं तब दाऊद बोला कि उसके तुल्य दूसरा नहीं वही मुझे दे ।
१० और दाऊद उठा और साऊल के भय से उसी दिन भागा
११ चला गया और गात के राजा आकीश पास आया। तब आकिश के सेवकों ने उसे कहा कि क्या यह दाऊद उस देश का राजा नहीं? और क्या यह वही नहीं जिसके विषय में वे आपुस में गा गा के और नाच नाच के कहतीं थीं कि साऊल ने अपने सहस्रों को मारा और दाऊद ने अपने दस सहस्रों
१२ को?। और दाऊद ने ये बातें अपने मन में जुगा रक्खीं और
१३ गात के राजा आकिश से अति डरा। तब उसने उनके आगे अपनी चाल पलट डाली और उन में आप को बौड़हा बनाया और फाटक के द्वारों पर लकीरें खींचने लगा और अपनी लार
१४ को दाढ़ी में बहने दिया। तब आकिश ने अपने सेवकों से कहा कि लेओ यह जन तो सिड़ी है तुम उसे मुझ पास क्यों
१५ लाये?। क्या मुझे सिड़ी का प्रयोजन है कि तुम इसे मुझ पास लाये कि सिड़ीपन करे क्या यह मेरे घर में आवेगा?।

२२ बाईसवां पर्ब्ब ।

जथाकी जथा दाऊद पास एक कंदला में बटुरती हैं १—२ वुह अपनी माता पिता को मवाब के राजा पास सौंपता है ३—४ उसका संदेश पाके साऊल

अपने सेवकों पर दोष लगाता है ५—८ अदूमी दोयेग याजक पर दोष लगाता है ९—१६ याजकों को साऊल बधन करता है १७—१८ याजक का एक बेटा भाग के दाऊद को संदेश दता है १९—२१ ।

१ इस लिये दाऊद वहां से निकल के भागा और अदुल्लम की कंदला में गया और उसके भाई और उसके पिता का सारा
२ घराना यह सुन के उस पास वहां गये। और हर एक दुःखी और ऋणी और उदासी उसके पास एकट्ठे ऊए और वुह उनका प्रधान ऊआ और उसके साथ चार सौ मनुष्य के
३ लगभग हो गये। और वहां से दाऊद मवाब के मसफ़ा को गया और मवाब के राजा से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हों कि मेरी माता पिता निकल के आप के पास रहें
४ जबलों मैं जानों कि ईश्वर मेरे लिये क्या करता है। और वुह उन्हें मवाब के राजा के आगे लाया और जबलों दाऊद ने अपने तईं दृढ़ स्थानों में छिपाया था वे उसी के साथ रहे।
५ तब जाद आगमज्ञानी ने दाऊद को कहा कि दृढ़ स्थानों में मत रह यहूदा के देश को जा तब दाऊद चला और हरीस के बन
६ में पऊंचा। और जब साऊल ने सुना कि दाऊद दिखाई दिया और लोग उसके साथ हैं (अब साऊल उस समय रामः के गबिया में एक कुंज के नीचे अपने हाथ में भाला लिये था
७ और उसके सारे दास उसके आस पास खड़े थे)। तब साऊल ने अपने आसपास के सेवकों से कहा कि सुनो हे बनियामीनो क्या यस्सी का बेटा तुम्में से हर एक को खेत और दाख की बारी देगा और तुम सब को सहस्रों और सैकड़ों
८ का प्रधान करेगा। जो तुम सब ने मेरे बिरुद्ध परामर्श किया है और किसी ने मुझे नहीं सुनाया कि मेरे बेटे ने यस्सी के बेटे से बाचा बांधी है और तुम्में कोई नहीं जो मेरे लिये शोक करे

अथवा मुझे संदेश देवे कि मेरे बेटे न मेरे सेवक को उभाड़ा है
९ कि ढूके में रहे जैसा आज के दिन है ?। तब अदूमी
दोयेग ने, जो साऊल के सेवकों का प्रधान था, यों कहा कि मैंने
यस्सी के बेटे को नाव में अहीतूब के बेटे अहीमलक पास देखा
१० है। और उसने उसके लिये परमेश्वर से बूझा और उसे
भोजन दिया और फ़लस्तानी गोलियात का खड्ग उसे दिया।
११ तब राजा ने अहीतूब के बेटे अहीमलक याजक को और उसके
पिता के सारे घराने और याजकों को जो नाब में थे बुला भेजा
१२ और वे सब के सब राजा पास आये। और साऊल ने कहा
१३ कि हे अहीतूब के बेटे सुन वुह बोला मेरे प्रभु मैं हों। और
साऊल ने उसे कहा कि तू ने मेरे विरुद्ध पर यस्सी के बेटे के
साथ क्यों एक मता किई और तू ने उसे रोटी और खड्ग दिया
और उसके लिये परमेश्वर से बूझा जिसतें वुह मेरे बिरोध
१४ में उठे और घात में लगे जैसा कि आज के दिन है ?। तब
अहीमलक ने राजा को उत्तर देके कहा कि आपके सारे सेवकों में
दाऊद सा विश्वस्त कौन है जो राजा का जवांई और आज्ञापालक
१५ है और आप के घर में प्रतिष्ठित है ?। और क्या मैं ने उसके लिये
परमेश्वर से बूझा ? यह मुझ से परे होवे राजा अपने सेवक पर
और उसके पिता के सारे घराने पर यह दोष न लगावे क्योंकि
१६ आप का सेवक इन बातों में से घट बढ़ नहीं जानता। तब राजा
बोला अहीमलक तू और तेरे पिता का सारा घराना निश्चय
१७ माराजायगा। फिर राजा ने उन पगइतों को, जो
पास खड़े थे, आज्ञा किई कि फिरो और परमेश्वर के याजकों
को मारडालो इस कारण कि इन के हाथ भी दाऊद से मिलेहुए
हैं और उन्हों ने जाना कि वुह भागा है और मुझे संदेश न
दिया परंतु राजा के सेवकों ने परमेश्वर के याजकों पर हाथ
१८ न बढ़ाया। तब राजा ने दोयेग को कहा कि तू फिर और
उन याजकों को घात कर सो अदूमी दोयेग फिरा और याजकों

घर लपका उस दिन उसने पचासी मनुष्यों को, जो सूती अफूद
१९ पहिनते थे, घात किया। और उसने याजकों के नगर नाब
के पुरुषों और स्त्रियों और लड़कों और दूधपीवकों को और
बैलों और गदहों और भेड़ों को तलवार की धार से घात
२० किया। अहीतूब के बेटे अहीमलक के बेटों में से एक जन,
जिसका नाम अबियासार था, बच निकला और दाऊद
२१ के पीछे भागा। अबियासार ने दाऊद को संदेश दिया
२२ कि साऊल ने परमेश्वर के याजकों को मारडाला। और
दाऊद ने अबियासार को कहा कि जिस दिन अदूमी दोयेग
वहां था मैं ने उसी दिन जाना था कि वुह निश्चय साऊल को
कहेगा मैं तेरे पिता के सारे घराने के मारे जाने का कारण
२३ ऊआ। सो तू मेरे साथ रह और मत डर क्योंकि जो तेरे
प्राण का गांहक है सो मेरे प्राण का गांहक है परंतु मेरे
पास बचा रह।

२३ तेईसवां पर्ब्ब ।

फ़लस्तानियों से दाऊद क़अले को बचाता है १—६ साऊल का आना और कैलियोंका छल दाऊद पर परमेश्वर प्रगट करता है ७—१३ क़अले से निकल के बन में जा रहता है उस पास आके उसे शांति देता है १४—१८ साऊल संदेश पाता है कि दाऊद पहाड़ में है वुह उसके मारने की जुगत करता है १९—२६ फ़लस्तानी का संदेश पाके दाऊद को छोड़ के साऊल उनके पीछे जाता है २७—२८।

१ तब उन्हों ने यह कहिके दाऊद को संदेश दिया कि देख
फ़लस्तानी क़अले से लड़ते हैं और खलिहानों को लूटते हैं।
२ इस लिये दाऊद ने परमेश्वर से यह कहिके बूझा कि मैं जाओं

और उन फ़लस्तानियों को मारों? परमेश्वर ने दाऊद से कहा
३ कि जा फ़लस्तानियों को मार और क़यले को बचा। और
दाऊद के मनुष्यों ने उसे कहा कि देख हम तो यहूदा में होते ऊए
डरते हैं? तो कितना अधिक क़यले में जाके फ़लस्तानियों
४ की सेनाओं का साम्ना करें?। तब दाऊद ने परमेश्वर से फिर
बूझा और परमेश्वर ने उत्तर देके कहा कि उठ क़यले को
उतर जा क्योंकि मैं फ़लस्तानियों को तेरे हाथ में सौंपोंगा।
५ सो दाऊद और उसके लोग क़यले को गये और फ़लस्तानियों
से लड़े और उनके ढोर ले आये और उन्हें बड़ी मार से मारा
६ यों दाऊद क़यले के वासियों को बचाया। और ऐसा ऊआ कि
जब अहीमलक का बेटा अबियासार भाग के क़यले में दाऊद
७ पास गया तब उसके हाथ में एक अफ़ूद था। और
साऊल को संदेश पऊंचा कि दाऊद क़यले में आया और
साऊल बोला कि ईश्वर ने उसे मेरे हाथ में सौंप दिया क्योंकि
वुह ऐसे नगर में, जिसमें फाटक और अड़ंगे हैं पऊंच के बंद
८ हो गया। और साऊल ने समस्त लोगों को युद्ध के लिये
एकट्ठा किया कि क़यले में उतर के दाऊद को और उसके
९ लोगों को घेर लेवें। और दाऊद ने जाना कि साऊल चाहता
है कि चुपके से मेरी बुराई करे तब उसने अबियासार याजक
१० से कहा कि अफ़ूद मुझ पास ला। तब दाऊद ने कहा कि
हे परमेश्वर इसराईल के ईश्वर तेरे सेवक ने निश्चय सुना है
कि साऊल का बिचार है कि क़यले में आके मेरे कारण
११ नगर को नष्ट करे। क्या क़यले के लोग मुझे उसके हाथ
में सौंप देंगे! क्या जैसा तेरे दास ने सुना है साऊल उतर
आवेगा? हे परमेश्वर इसराईल के ईश्वर मैं तेरी बिनती करता
हों कि अपने सेवक को बता? परमेश्वर ने कहा कि वुह उतर
१२ आवेगा। तब दाऊद ने कहा क्या क़यले के लोग मुझे और
मेरे लोगों को साऊल की बंधुआई में सौंप देंगे? परमेश्वर ने कहा

१२ कि वे सैांप देंगे । तब दाऊद अपने लोग सहित जो, मनुष्य छः सौ एक थे, उठा और क़ऐला से निकल गया और जिधर जासका गया और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद
१४ क़एले से बच निकला तब वुह जाने से रहि गया । और दाऊद ने अरण्य में दृढ़स्थानों में बास किया और ज़ीफ़ के बन में एक पहाड़ के बीच रहा और साऊल प्रति दिन उसकी खोज में लगाऊआ था परंतु ईश्वर ने उसे उसके हाथ में सौंप
१५ न दिया । और दाऊद ने देखा कि साऊल उसके मारने के कारण निकला उस समय दाऊद ज़ीफ़ के अरण्य के बीच एक
१६ बन में था । और साऊल का बेटा यूनासान उठा और बन में दाऊद पास गया और ईश्वर पर उसे दृढ़
१७ किया । और उसे कहा कि मत डर क्योंकि तू मेरे पिता साऊल के हाथ में न पड़ेगा और तू इसराईल का राजा होगा और तेरे पीछे मैं होंगा और मेरा पिता साऊल
१८ भी यह जानता है । और उन दोनों ने परमेश्वर के आगे बाचा बांधी और दाऊद बन में ठहर रहा और यूनासान अपने
१९ घर गया । तब ज़ीफ़ के लोग गबिया में साऊल पास चढ़ आके बोले कि दाऊद दृढ़स्थानों में हमारे मध्य एक बन में हकीला पहाड़ पर, जो जसीमून की दक्षिण दिशा में है, नहीं
२० रहता? । सो हे राजा अब तू चल और अपने मन के समान उतर आ और हमें उचित है कि उसे राजा के हाथ में सौंप
२१ देवें । तब साऊल बोला कि परमेश्वर तुम्हें आशीष देवे क्योंकि
२२ तुम ने मुझ पर दया किई । सो अब जाओ और और भी जुगत करो और देखो कि उसके लुकने का स्थान कहां है और किसने उसे वहां देखा है क्योंकि मुझे कहा गया कि वुह
२३ बड़ी चौकसी करता है । सो देखो और उन लुकने के सारे स्थानों को, जहां वुह छिपता है, जानो और ठीक संदेश लेके मुझ पास फिर आओ और मैं तुम्हारे साथ जाओंगा और

यों होगा कि यदि वुह देश में होवे मैं उसे यहूदा के सारे
२४ सहस्रों में से ढूंढ लेउंगा । तब वे उठे और साऊल से आगे
ज़ीफ़ को गये परंतु दाऊद अपने लोगों सहित माऊन के बन
२५ में जशिमून के दक्षिण दिशा को एक चौगान में था । साऊल
और उसके लोग भी उसकी खोज को निकले और दाऊद को
समाचार पहुंचा इसलिये वुह पहाड़ी से उतर के मऊन के
बन में जा रहा और साऊल ने यह सुनके मऊन के बन में
२६ दाऊद का पीछा किया । और साऊल पर्ब्बत की इस अलंग
चला गया और दाऊद और उसके लोग पर्ब्बत की उस अलंग
और दाऊद ने साऊल के डर से हाली किया कि निकल जाय
क्योंकि साऊल और उसके लोगों ने दाऊद को और उसके
२७ लोगों को पकड़ने को चारों ओर से घेर लिया । उस
समय एक दूत ने साऊल पास आके कहा कि हाली आ कि
२८ फ़लस्तानी देश में फैल गये । सो इसलिये साऊल दाऊद के
खेदने से फिरा और फ़लस्तानियों के सन्मुख हुआ इस कारण
उन्हों ने उस स्थान का नाम बिभाग का चटान धरा ।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब ।

साऊल राजा दाऊद की खोज को तीन सहस्र जन
लेके निकलता है और दाऊद उसके बस्त्र के खूंट
को काट के आप को प्रगट करता है १—९ साऊल
देखता है कि दाऊद के मन में बैर नहीं है
१०—१६ साऊल सुन के अपना पाप मान लेता
है और दाऊद को निर्दोष ठहराता है और उसे
किरिया लेता है कि मेरे बंश को नाश न करियो
१७—२२ ।

१ और दाऊद वहां से चल के अनगदी के दृढ़ स्थानों में जा
रहा और यों हुआ कि जब साऊल फ़लस्तानियों के पीछे से

फिरा तब उसे कहा गया कि देख दाऊद अनगदी के अरण्य
२ में है। तब साऊल समस्त इसराईली में से तीन सहस्र चुने
ऊए पुरुष लेके दाऊद की और उसके लोगों की खोज को बनैली
३ बकरियों के पहाड़ों पर गया। तब वुह मार्ग की भेड़शाला में आया
जहां एक खोह थी और साऊल उस खोह में आवश्यक के लिये
गया और दाऊद और उसके लोग खोह की अलंगों में रहे।
४ और दाऊद के लोगों ने उसे कहा कि देखिये यह वुह दिन है
जिसके विषय में परमेश्वर ने आप को कहा था कि देख मैं तेरे शत्रु
को तेरे हाथ में सौंपोंगा जिसतें तू अपनी बांछा के समान उससे
करे तब दाऊद उठा और चुपके से साऊल के वस्त्र का खूंट काट
५ लिया। और उसके पीछे यों ऊआ कि दाऊद के मन में खटका
६ ऊआ इस कारण कि उसने साऊल का खूंट काटा। और
उसने अपने लोगों से कहा कि परमेश्वर न करे कि मैं अपने
स्वामी पर, जो परमेश्वर का अभिषिक्त है, ऐसा करों कि अपना
हाथ उसपर बढ़ाओं क्योंकि वुह परमेश्वर का अभिषिक्त है।
७ सो दाऊद ने इन बातों से अपने लोगों को रोक रक्खा और
उन्हें साऊल पर हाथ चलाने न दिया परंतु साऊल ने खोह
८ से निकल के अपना मार्ग लिया। और उसके पीछे दाऊद
भी उठा और उस खोह से बाहर आया और साऊल से यह
कहिके पुकारा कि हे मेरे स्वामी राजा और जब साऊल ने
पीछे फिर के देखा तब दाऊद ने भूमि पर झुक के दंडवत
९ किई। और दाऊद ने साऊल से कहा कि लोगों की ये
बातें आप क्यों सुनते हैं कि देखिये दाऊद आप की बुराई
१० चाहता है?। देख आजही के दिन आप ने अपनी आंखों से
देखा है कि परमेश्वर ने आज आप को खोह में मेरे हाथ में सौंप
दिया और कितनों ने आप को मार ने कहा परंतु मैंने आप
को छोड़ा और अपने मन में बिचारा कि अपने स्वामी पर
अपना हाथ न बढ़ाओंगा क्योंकि वुह परमेश्वर का अभिषिक्त है।

११ इसे अधिक हे मेरे पिता देखिये हां अपने वस्त्र के खूंट को मेरे हाथ में देखिये क्योंकि मैं ने जो आप के वस्त्र का खूंट काट लिया और आप को न मारा इसे जानिये और देखिये कि मेरे मन में बुराई और किसी प्रकार का अपराध नहीं है और मैं ने आप के बिरुद्ध पाप न किया तथापि आप मेरे प्राण का अहेर
१२ करने को निकले हैं । परमेश्वर मेरे और आप के मध्य में न्याय करे और परमेश्वर आप से मेरा पलटा लेवे परंतु मेरा हाथ
१३ आप पर न पड़ेगा । और जैसा प्राचीनों की कहावत में कहा गया है कि दुष्ट से दुष्टता निकलती है परंतु मेरा हाथ आप पर
१४ न उठेगा । इसराईल का राजा किसके पीछे निकला है? और आप किसके पीछे पड़े हैं? क्या मरे ऊए कूकर के? अथवा एक
१५ पिसू के? । सो परमेश्वर बिचार करे और मेरे और आप के मध्य में न्याय करे और देखे और मेरे पद का पक्ष करे और आप के
१६ हाथ से मुझे बचावे । और जब दाऊद ये बातें साऊल से कह चुका तब साऊल ने कहा कि मेरे बेटे दाऊद क्या यह
१७ तेरा शब्द है? और साऊल ने बड़े शब्द से बिलाप किया । और दाऊद से कहा कि तू मुझसे अधिक धर्मी है क्योंकि तू ने बुराई
१८ की संती मेरी भलाई किई । और तू ने आज के दिन दिखाया है कि तू ने मुझसे भलाई किई है यद्यपि परमेश्वर ने मुझे तेरे हाथ
१९ में सौंप दिया और तू ने मुझे मार न डाला । क्योंकि यदि कोई अपने बैरी को पावे तो क्या वुह उसे कुशल से छोड़ देगा? इसलिये जो तू ने आज मुझसे किया है परमेश्वर इस का प्रतिफल देवे ।
२० और अब मैं ठीक जानता हों कि तू निश्चय राजा होगा और
२१ इसराईल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर होगा । इसलिये तू मुझसे परमेश्वर की किरिया खा कि तेरे पीछे मैं तेरे बंश को काट न डालेगा और तेरे पिता के घराने में से तेरे नाम को मिटा न
२२ डालेगा । तब दाऊद ने साऊल से किरिया खाई और साऊल घर को चला गया परंतु दाऊद और उसके लोग दृढ़ स्थान में गये ।

२५ पचीसवां पर्ब्ब।

समुईल का मरना और नाबाल के घराने का समाचार १—३ दाऊद नाबाल पास लोगों को भेजता है ४—९ नाबाल दाऊद को दुर्बचन कहला भेजता है १०—१३ एक जन नाबाल की पत्नी को संदेश देता है १४—१७ नाबाल की पत्नी दाऊद के कोप को धीमा करने को युक्ति बांधती है १८—३१ उसके आने से दाऊद परमेश्वर का धन्य मानता है ३२—३५ अबिगाल अपने पति नाबाल को दाऊद के कोप का संदेश देती है यहां लों कि वुह मरगया ३६—३८ दाऊद भेज के अबिगाल से बियाह करता है ३९—४५।

१ और समुईल मरगया और समस्त इसराईलियों ने एकट्ठे होके उस पर बिलाप किया और रामः में उसके घर में उसे गाड़ा और दाऊद उठ के पारान के अरण्य में उतर गया। २ और वहां माऊन में एक पुरुष था जिसकी संपत्ति करमिल में थी वुह महा जन था और उसके तीन सहस्र भेड़ और एक सहस्र बकरी थीं और वुह अपनी भेड़ों का रोम करमिल में कतरता था। ३ और उसका नाम नाबाल और उसकी स्त्री का नाम अबिगाल था वुह स्त्री बुद्धिमती और सुंदर थी परंतु वुह पुरुष कठोर और कुकर्म्मी था और कालिब के बंश के घराने में से था। ४ और दाऊद ने अरण्य में सुना कि नाबाल भेड़ों के रोम कतरता है। ५ तब दाऊद ने दस तरुण भेजे और उन्हें कहा कि नाबाल पास करमिल को चढ़ जाओ और मेरे नाम से उसका कुशल पूछो। ६ और उस भरेपूरे जन से कहियो कि तुझ पर कुशल और तेरे घर पर कुशल और तेरी समस्त बस्तु पर कुशल होवे। ७ मैं ने अब सुना है कि तुझ पास रोम कतरवैये हैं और तेरे गड़रिये हमारे संग थे और

हमने उन्हें दुःख न दिया और जब लों वे करमिल में हमारे
८ साथ थे उनका कुछ जाता न रहा। तू अपने तरुणों से पूछ
और वे तुझे कहेंगे इस लिये तरुण लोग तेरी दृष्टि में अनुग्रह
पावें, क्योंकि हम अच्छे दिन में आये हैं सो मैं तेरी बिनती
करता हों कि जो तेरे हाथ आवे सो तेरे सेवकों और अपने
९ बेटे दाऊद को दीजिये। और जब दाऊद के तरुण आके उन
बचनों के समान दाऊद के नाम से नाबाल को कहा और
१० थम गये। तब नाबाल ने दाऊद के सेवकों को उत्तर देके
कहा कि दाऊद कौन? और यस्सी का बेटा कौन? इन दिनों में
११ बहुत सेवक हैं जो अपने स्वामियों से भाग निकलते हैं। क्या
अपनी रोटी और पानी और मांस, जो मैं ने अपने कतरवैयों
के लिये मारा है, लेके उन मनुष्यों को देओं जिन्हें मैं नहीं
१२ जानता कि कहां से हैं,। सो दाऊद के तरुणों ने अपना मार्ग
१३ लिया और आके उन सब बातों को उसे कहा। तब दाऊद ने
अपने लोगों से कहा कि हर एक तुममें से अपना अपना खड्ग
बांधे सो उन्हों ने अपना अपना खड्ग बांधा और दाऊद ने भी
अपना खड्ग बांधा और दाऊद के पीछे पीछे चार सहस्र जन
१४ गये और दो सहस्र सामग्री के साथ रहे। परंतु तरुणों में से
एक ने नाबाल की पत्नी अबीगाल से कहा कि देख दाऊद ने
अरण्य में से हमारे स्वामीपास दूतों को भेजा कि नमस्कार करें
१५ पर वुह उन पर झपटा। परंतु उन्हों ने हम से भलाई किई कि
हमें कुछ दःख न हुआ और जबलों हम चौगान में थे और
१६ उनसे परिचय रखते थे तबलों हम ने कुछ न खोया। जबलों
हम उनके साथ भेड़ की रखवाली करते रहे रात दिन वे
१७ हमारे लिये एक आड़ थे। सो अब जान रख और सोच कि
तू क्या करेगी क्योंकि हमारे स्वामी पर और उसके सब घराने
पर बुराई ठहराई गई क्योंकि वुह बलिआल का ऐसा बेटा है कि
१८ कोई उसे बात नहीं कर सक्ता। तब अबिगाल हाली से

दो सौ रोटियां और दो कुप्पे दाखरस और पांच भेड़ें बनी बनाईं और मन सताईस एक भूना और एक सौ गुच्छा अंगूर और दो सौ गूलर की लिट्टी लिईं और उन्हें गदहों पर
१९ लादा। और अपने सेवकों को कहा कि मेरे आगे आगे बढ़ो देखो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हों परंतु उसने अपने
२० पति नाबाल से न कहा। और ज्योंहीं वुह गदहे पर चढ़के पहाड़ के आड़ से उतरी तो क्या देखती है कि दाऊद अपने लोगों समेत उतर के उसके सन्मुख आया और उस्से भेंट
२१ ऊई। अब दाऊद ने कहा था कि निश्चय मैं ने इस जन की समस्त बस्तुन की, जो अरण्य में थीं, वृथा रखवाली किई यहां लों कि उसके सब में से कुछ नष्ट न ऊआ और भलाई की
२२ संती मुझ्से बुराई किई। सो यदि बिहान लों उसके समस्त पुरुषों में से मैं एक को छोड़ों तो ईश्वर उस्से और उस्से भी
२३ अधिक दाऊद के शत्रुन से करे। और ज्योंहीं अबिगाल ने दाऊद को देखा त्योंहीं वुह गदहे से उतरी और दाऊद के
२४ आगे औंधी गिरी और भूमि पर दंडवत किई। और उसके चरणों पर गिर के कहा कि हे मेरे प्रभु मुझी पर अपराध रखिये मैं तेरी बिनती करती हों कि अपनी दासी को कान में
२५ बात करने दीजिये और अपनी दासी की बातें सुनिये। मैं आप से बिनती करती हों कि मेरे प्रभु इस बलिआली पुरुष की अर्थात नाबाल की चिंता न करिये क्योंकि जैसा उसका नाम वैसाही वुह, उसका नाम नाबाल और मूर्खता उसके साथ परंतु मैं जो तेरी दासी हों अपने प्रभु के तरुणों को जिन्हें आपने
२६ भेजा था न देखा। सो अब हे मेरे प्रभु परमेश्वर के जीवन सों और आप के प्राण के जीवन सों जैसा कि परमेश्वर ने आप को लोहू बहाने से और अपने ही हाथ से प्रतिफल लेने से रोका है वैसाही अब आप के शत्रु और वे जो मेरे प्रभु की
२७ बुराई चाहते हैं नाबाल के समान होवें। अब यह भेंट

आप की दासी अपने प्रभु के आगे लाई है सो उन तरुणों को
२८ दिया जाय जो मेरे प्रभु के पश्चात गामी हैं। और अब मैं
आप की बिनती करती हों कि अपनी दासी का पाप क्षमा
कीजिये क्योंकि निश्चय परमेश्वर मेरे प्रभु के लिये दृढ़ घर
बनावेगा इस कारण कि मेरा प्रभु परमेश्वर की लड़ाइयां लड़ता
२९ है और आप के दिनों में आप में बुराई न पाई गई। तथापि
एक जन उठा है कि आप का पीछा करे और आपके प्राण का
गांहक होवे परंतु मेरे प्रभु का प्राण आप के ईश्वर परमेश्वर के
संग जीवन की ढेर में बांधा जायगा और तेरे शत्रुन के प्राण
३० ढेलवांस में से फेंके जायेंगे। और ऐसा होगा कि जब परमेश्वर
अपने वचन के समान सब भलाई मेरे प्रभु से कर चुके और
३१ आप को इसराईल पर आज्ञाकारी करे। तब आप के लिये यह
कुछ डगमगाने का अथवा मेरे प्रभु के मन की ठोकर का कारण न
होगा कि आप ने अकारथ लोहू बहाया अथवा कि मेरे प्रभु ने
अपना पलटा लिया परंतु जब परमेश्वर मेरे प्रभु से भलाई करे
३२ तब अपनी दासी को स्मरण कीजियो। और दाऊद ने
अबिगाल से कहा कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर धन्य है
३३ जिसने तुझे मेरी भेंट के लिये आज के दिन भेजा है। और
तेरा मंत्र धन्य और तू धन्य है जिसने मुझे आज के दिन लोहू
३४ से और अपने हाथ से पलटा लेने से रोक रक्खा है। क्योंकि
परमेश्वर इसराईल के ईश्वर के जीवन सों जिसने तुझे दुःख देने
से मुझे अलग रक्खा और यदि तू शीघ्र न करती और
मुझ पास चली न आती तो निःसंदेह बिहान लों नाबाल
३५ का एक भी पुरुष जीता न छूटता। और जो कुछ कि वुह
उसके निमित्त लाई थी दाऊद ने उसके हाथ से लिया और
उसे कहा कि अपने घर कुशल से जा देख मैंने तेरा वचन माना
३६ है और तुझे ग्रहण किया है। तब अबिगाल नाबाल
पास आई और देखो कि उसने अपने घर में राजा का सा एक

जेवनार किया और नाबाल का मन मगन हो रहा था क्योंकि वुह बड़ा मतवाला था सो इस कारण उसने उसे बिहान लों
३७ कुछ घटबढ़ न कहा । परंतु ऐसा ऊआ कि बिहान को जब नाबाल का मद उतरा और उसको स्त्री ने सब समाचार उसे कहा तब उसका मन मृतक हो गया और वुह पत्थर होगया ।
३८ और ऐसा ऊआ कि दस दिन के पीछे परमेश्वर ने नाबाल
३९ को मारा और वुह मरगया । और जब दाऊद ने सुना कि नाबाल मरगया तब उसने कहा कि परमेश्वर धन्य है जिसने नाबाल के हाथ से मेरे कलंक का पलटा लिया और अपने दास को बुराई से अलग रक्खा है क्योंकि परमेश्वर ने नाबाल की दुष्टता को उसी के सिर पर डाला और दाऊद ने भेजा
४० और अबिगाल से बात चित करवाई कि अपनी पत्नी करे। और जब दाऊद के सेवक करमल को अबिगाल पास आये वे यह कहिके उसे बोले कि दाऊद ने हमें तुझ पास भेजा है कि तुझे
४१ अपनी पत्नी करे । तब वुह उठी और भूमि पर झुक के बोली कि देख तेरी दासी अपने स्वामी के सेवकों के चरण धोने के लिये
४२ दासी होवे । और अबिगाल शीघ्रता करके उठी और गदहे पर चढ़ी और अपनी पांच दासियां साथ लिईं और दाऊद के दूतों के साथ चली और उसकी पत्नी ऊई और दाऊद ने
४३ इज़रईल में से अहीनुआम को भी लिया । और वे दोनो उसकी
४४ पत्नीयां ऊईं । परंतु साऊल ने अपनी बेटी मीकाल को, जो दाऊद की पत्नी थी, लाईश के बेटे फ़ालती को दिया जो गलीम का था ।

२६ छबीसवां पर्ब्ब ।

साऊल दाऊद का पीछा फिर करता है १ ४ दाऊद उस पास जाता है और उसकी सांग और झारी उठाले जाता है ५--१२ दाऊद साऊल से

संवाद करता है १३—२० साऊल अपने पाप को मान लेता है और दाऊद उसकी सांग और झारी फेर देता है २१—२५ ।

१ अब ज़ीफ़ी गबिया में साऊल पास आ बोले क्या दाऊद हकीला
२ पहाड़ में यशिमून के आगे छिपा ऊआ नहीं। तब साऊल उठके तीन सहस्र चुनेऊए इसराईली लेके ज़ीफ़ के अरण्य
३ में उतरा कि दाऊद को ज़ीफ़ के अरण्य में ढूंढ़े। और हकीला के पहाड़ में, जो यशिमून के आगे है, मार्ग की ओर डेरा किया परंतु दाऊद अरण्य में रहा और उसने देखा कि साऊल उसका
४ पीछा किये ऊए अरण्य में आया। इस लिये दाऊद ने भेदिये
५ भेजे और बूझ लिया कि साऊल सच मुच आया है। तब दाऊद उठ के साऊल के डेरा को चला और दाऊद ने उस स्थान को देख रक्खा जहां साऊल पड़ा था और नर का बेटा अबनर उसकी सेना का प्रधान था और साऊल खाईं में सोता था
६ और उसके लोग उसके चारों ओर डेरा किये थे। तब दाऊद ने हत्ती अहीमलक और सोरिया के बेटे अबीशाई को जो, यूआब का भाई था, कहा कि कौन मेरे साथ छावनी में साऊल पास
७ चलेगा? अबीशाई बोला कि मैं आपके साथ उतरोंगा। सो दाऊद और अबीशाई रात को सेना में घुसे और क्या देखते हैं कि साऊल खाईं के भीतर सोता है और उसका भाला उसके सिरहाने भूमि में गड़ा था परंतु अबनर और उसके लोग चारों
८ ओर सोते थे। उसी समय अबीशाई ने दाऊद से कहा कि ईश्वर ने आज आप के शत्रु को आप के हाथ में कर दिया अब इस लिये मुझे भाले से एकही बार मार के भूमि में उसे गोदने
९ दीजिये और दूसरे बार न मारोंगा। तब दाऊद ने अबीशाई से कहा कि उसे नाश न कर क्योंकि कौन परमेश्वर के अभिषिक्त पर
१० हाथ बढ़ा के निर्दोष ठहर सके। और दाऊद ने यह भी कहा कि परमेश्वर के जीवन सों परमेश्वर उसे मारेगा अथवा

उसका दिन आवेगा और वुह मर जायगा अथवा युद्ध पर
११ उतरेगा और मारा जायगा। परंतु परमेश्वर न करे कि
मैं परमेश्वर के अभिषिक्त पर हाथ बढ़ाओं पर तू उसके
सिरहाने के भाले को और पानी की झारी को ले लेना और
१२ हम चल निकलें। सो दाऊद ने भाला और पानी की झारी
साऊल के सिरहाने से ले लिई और चल निकले और
किसी ने न देखा और न जाना और कोई न जागा क्योंकि
सब के सब सोते थे इस कारण कि परमेश्वर की ओर से भारी
१३ निद्रा उन पर पड़ी थी। तब दाऊद दूसरी ओर गया
और एक पहाड़ की चोटी पर दूर जा खड़ा हुआ और उनमें
१४ बड़ा बीच था। और दाऊद ने लोगों को और नर के बेटे
अबनर को पुकार के कहा कि हे अबनर तू उत्तर नहीं देता
तब अबनर ने उत्तर देके कहा कि तू कौन है जो राजा को
१५ पुकारता है?। तब दाऊद ने अबनर से कहा कि क्या तू बलवंत
नहीं? और इसराईल में तेरे समान कौन? सो किस लिये तू ने
अपने प्रभु राजा की रक्षा न किई? क्योंकि लोगों में से एक जन
१६ तेरे प्रभु राजा के मारने को निकला था। सो तू ने यह काम
कुछ अच्छा न किया परमेश्वर के जीवन सों तुम मारडाल
ने के योग्य हो इस कारण कि तुमने अपने स्वामी की, जो
परमेश्वर का अभिषिक्त है, रक्षा न किई और अब देख कि राजा
का भाला और पानी की झारी जो उसके सिरहाने थी कहां
१७ है। तब साऊल ने दाऊद का शब्द पहिचाना और कहा कि
हे मेरे बेटे दाऊद यह तेरा शब्द है? दाऊद बोला कि हे मेरे
१८ प्रभु हे राजा यह मेराही शब्द। और उसने कहा कि मेरे प्रभु
क्यों इस रीति से अपने दास के पीछे पड़े हैं क्योंकि मैंने क्या किया
१९ और मेरे हाथ से क्या पाप हुआ?। सो अब मैं आपकी बिनती
करताहों हे मेरे प्रभु राजा अपने सेवक की बातों पर कान
धरिये यदि परमेश्वर ने मुझ पर आपको उभाड़ा है तो वुह भेंट

ग्रहण करे परंतु यदि यह मनुष्य के वंश से है तो परमेश्वर का स्राप उनपर पड़े क्योंकि उन्हों ने आज मुझे परमेश्वर के अधिकार से यह कहिके हांक दिया है कि जा उपरी देवतों की

२० सेवा कर। इस लिये अब परमेश्वर के आगे मेरा लोहू भूमि पर न बहे क्योंकि इसराईल का राजा एक पिसू की खोज को निकला है जैसा कोई तीतर के अहेर को पहाड़ों पर

२१ निकलता है। तब साऊल ने कहा कि मैंने पाप किया हे मेरे बेटे दाऊद फिर आ क्योंकि फेर तुझे न सताओंगा इस लिये कि मेरा प्राण आज के दिन तेरी दृष्टि में बक्त मूल्य ऊआ

२२ देख मैंने मूढता किई और अति चूक किई। तब दाऊद ने उत्तर देके कहा कि देख यह राजा का भाला है सो तरुणों में

२३ से एक आके इसे लेजावे। परमेश्वर हरजन को उसके धर्म्म का और सच्चाई का प्रतिफल देवे क्योंकि परमेश्वर ने आज आपको मेरे हाथ में सौंप दिया पर मैंने न चाहा कि परमेश्वर के

२४ अभिषिक्त पर हाथ बढ़ाओं। और देख जिस रीति से आप का प्राण मेरी आंखों में आज के दिन प्रिय ऊआ वैसाही मेरा प्राण ईश्वर की दृष्टि में प्रिय होवे और वुह मुझे सब कष्टों से बचावे।

२५ तब साऊल ने दाऊद से कहा कि तू धन्य है हे मेरे बेटे दाऊद तू महा कार्य्य करेगा और तदभी तू भाग्यवान होगा सो दाऊद ने अपना मार्ग लिया और साऊल अपने स्थान को फिरा।

२७ सत्ताईसवां पर्ब्ब।

दाऊद डरके मारे फ़लस्तानियों के देश में जा रहता है १—४ अकिश राजा जिकलाग नगर को दाऊद को देता है ५—७ दाऊद कई लोगों पर चढ़के उन्हें मारलेता है ८—१२।

१ दाऊद ने अपने मन में कहा कि अब मैं किसी दिन साऊल के हाथ से मारा जाओंगा सो मेरे लिये इस्से अच्छा कुछ नहीं कि

मैं शीघ्रता से भाग के फ़लस्तानियों के देश में जा रहों और साऊल इसराईल के सिवानों में मुझे खोजने से निरास हो
२ जायगा यों मैं उसके हाथ से बच जाओंगा। तब दाऊद अपने साथ के छः सै तरुणों को लेके गाथ के राजा माऊक
३ के बेटे अकिश की ओर गया। और दाऊद अपने लोगों के साथ जिनमें से हरएक अपने घराने समेत था अपनी दोनों स्त्री अहीनुआम को, जो इज़रईली थी और करमिली अबीग़ाल को जो नाबाल की पत्नी थी लेके गाथ में अकिश के
४ साथ रहा। और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद गाथ
५ को भाग गया तब उसने फिर उसका पीछा न किया। और दाऊद ने अकिश से कहा कि यदि मैंने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो वे इस देश में मुझे किसी बस्ती में स्थान देवें जहां मैं बसों क्योंकि आप का दास किस लिये आपके राजनगर
६ में रहे। तब अकिश ने उस दिन ज़िकलाग उसे दिया इस लिये ज़िकलाग आज के दिन लों यहूदा के राजाओं के बश में
७ है। और दाऊद फ़लस्तानियों के देश में एक बरस चारमास
८ लों रहा। और दाऊद ने अपने लोगों को लेके गशूरी और गजरी और अमालक़ियों को घेर लिया क्योंकि वे आगे से उस देश के बासी थे जैसा तू शूर को जाता है अर्थात मिस्र
९ के देश को। और दाऊद ने देश को नष्ट किया और न पुरुष को न स्त्री को जीता छोड़ा और उनके भेड़ और ढोर और गदहे और ऊंट और कपड़े लिये और अकिश पास फिर आये।
१० और अकिश ने पूछा कि आज तुम ने मार्ग किधर खोला? दाऊद ने कहा कि यहूदा के दक्षिण और जरामीली के दक्षिण और
११ कीनी के दक्षिण दिशा पर। और दाऊद ने उनमें से कोई स्त्री पुरुष को जीता न छोड़ा जो गाथ को संदेश ले जाय यह कहिके कि न होवे कि हमारे बिरुद्ध संदेश पहुंचावें कि दाऊद ने ऐसा वैसा किया और जबसे वुह फ़लस्तानियों के

१२ राज्य में आ रहा तब से उसका व्यवहार ऐसाही था। और यह कहिके अकिश ने दाऊद को सच्चा जाना कि उसने आप को अपने इसराईली लोगों से अत्यंत निंदा करवाई इस लिये वुह मेरा दास सदा होगा।

२८ अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

फ़लस्तानी अपनी सेना को एकट्ठी करके इसराईल पर चढ़जाते हैं १—२ युद्ध के विषय में साऊल परमेश्वर से बूझता है ३—६ साऊल एक टोनहिन से परामर्ष करता है ७—१४ साऊल के युद्ध में मारे जाने का संदेश पऊंचता है १५—२५।

१ और उन्हीं दिनों में ऐसा ऊआ कि फ़लस्तानियों ने इसराईल से लड़ने को अपनी सेनाओं को एकट्ठी किई तब अकिश ने दाऊद से कहा कि तू निश्चय जान कि तुझे और तेरे लोगों को २ मेरे साथ लड़ाई पर चढ़ने होगा। तब दाऊद ने अकिश से कहा निश्चय आप जानियेगा जो कुछ आपके दास से बन पड़ेगा और अकिश ने दाऊद से कहा कि मैं अपने सिर का रक्षक ३ तुझे करोंगा। और समुईल मरगया और समस्त इसराईल उस पर रोते थे और उसे उसी के नगर रामः में गाड़ा था और साऊल ने उन्हें, जो भुतहे और टोनहे ४ थे, देश से निकाल दियाथा। और फ़लस्तानी एकट्ठे होके आये और शूनीम में डेरा किया और साऊल ने भी सारे इसराईल को एकट्ठा किया और गलबुआ में डेरा किया। ५ और जब साऊल ने फ़लस्तानियों की सेना को देखा तब डरा ६ और उसका मन अत्यंत कंपित ऊआ। और जब साऊल ने परमेश्वर से बूझा परमेश्वर ने उसे कुछ उत्तर न दिया नतो दर्शन से न उरीम से न आगमज्ञानियों के द्वारा से। ७ तब साऊल ने अपने सेवकों से कहा कि स्त्री को खोजो

जो भुतही होवे जिसतें मैं उस पास जाओं और उसे बूझों तब उसके सेवकों ने उसे कहा कि देखिये अंदूर में एक भुतही स्त्री
८ है। तब साऊल ने अपना भेष बदल के दूसरा बस्त्र पहिना और गया और दो जन उसके साथ ऊए और रात को उस स्त्री पास पऊंचा और उसे कहा कि कृपा करके मेरे लिये अपने भूत से बिचार पूछ और जिसे मैं कहों उसे मेरे लिये उठा।
९ उस स्त्री ने उसे कहा कि देख तू जानता है कि साऊल ने क्या किया कि उसने उन्हें जो भुतहे थे और टोनहों को किस रीति से देश से काट डाला सो मुझे मरवा डालने के लिये तू
१० क्यों मेरे प्राण के लिये जाल डालता है। तब साऊल ने परमेश्वर की किरिया खाके कहा कि परमेश्वर के जीवन सों इस बात के
११ लिये तुझ पर कोई दंड न पड़ेगा। वुह स्त्री बोली मैं किसे
१२ तेरे लिये उठाओं वुह बोला कि समुईल को मेरे लिये उठा। और जब उस स्त्री ने समुईल को देखा वुह बड़े शब्द से चिल्लाई और साऊल से कहा कि आप ने मुझे क्यों छल किया? आप तो साऊल
१३ हैं। तब राजा ने उसे कहा कि मत डर तू ने क्या देखा? उस स्त्री ने साऊल से कहा कि मैंने देवों को पृथिवी से उठते
१४ देखा। तब उसने उसे कहा कि उसका डौल क्या? वुह बोली कि एक वृद्ध पुरुष ऊपर आता है और दोहर ओढ़े है. तब साऊल ने जाना कि वुह समुईल है और वुह मुंह के बल
१५ निऊड़ के भूमि पर झुका। तब समुईल ने साऊल से कहा कि तू ने क्यों मुझे उठाके बेचैन किया साऊल ने कहा कि मैं अति दुःखी हों क्योंकि फलस्तानी मुझसे लड़ते हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया है और कुछ उत्तर नहीं देता न तो आगमज्ञानियों के द्वारा से न दर्शन से इस लिये मैंने तुझे बुलाया जिसतें तू मुझे बतलावे कि मैं क्या करों।
१६ समुईल ने कहा कि जब परमेश्वर ने तुझे छोड़ दिया और
१७ तेरा बैरी बना तब मुझे किस लिये पूछता है। और जैसा

परमेश्वर ने मेरे द्वारा से कहा उसने उसके लिये वैसाही किया है क्योंकि परमेश्वर ने तेरे राज्य को फाड़ा है और तेरे परोसी दाऊद
१८ को दिया है। इस लिये कि तू ने परमेश्वर के शब्द को नहीं माना और अमालकियों पर उसके अति कोप को पूरा न किया इसी कारण से परमेश्वर ने आज के दिन तुझसे यह व्यवहार किया है।
१९ इससे अधिक परमेश्वर इसराईल को तेरे संग फलस्तानियों के हाथ में सौंपेगा और तू और तेरे बेटे कल मेरे साथ होंगे और परमेश्वर इसराईली सेना को भी फलस्तानियों के हाथ में
२० सौंपेगा। तब साऊल तुरंत भूमि पर गिरा और समुईल की बातों से बऊत डर गया और उसमें कुछ सामर्थ्य न रही क्योंकि उसने दिन भर और रात भर रोटी न खाई थी।
२१ तब वुह स्त्री साऊल पास आई और देखा कि वुह अति व्याकुल है तब उसने उसे कहा कि देख आप की दासी ने आप का शब्द सुना और मैं ने अपना प्राण अपनी हथेली पर रक्खा
२२ और जो कुछ आप ने मुझे कहा मैं ने उसे माना। सो अब आप भी कृपा करके अपनी दासी की बात सुनिये और मुझे अपने आगे एक ग्रास रोटी धरने दीजिये और खाइये जिसतें आप को
२३ इतनी सामर्थ्य हो कि अपने मार्ग जाइये। पर उसने न माना और कहा कि मैं न खाऊंगा परंतु उसके दासों ने उस स्त्री सहित उसे बरबस खिलाया और उसने उनका कहा माना
२४ और भूमि पर से उठा और खाट पर बैठा। और उस स्त्री के घर में एक मोटा बकड़ा था सो उसने चटक किया और उसे मारा और पिसान लेके गूंधा और उससे अख़मीरी रोटियां पकाईं।
२५ और साऊल और उसके सेवकों के आगे लाई और उन्हों ने खाया और उठे और उसी रात वहां से चले गये।

२९ उंतीसवां पर्ब्ब ।

फलस्तानी संग्राम के लिये निकलते हैं १—५
दाऊद को अपनी सेना से फेर देते हैं ६—७
दाऊद फिर आता है ८—११ ।

१ सो फलस्तानी की सब सेना आफिक में एकट्ठी ऊई और इसराईली जज़रईल के सोते के पास डेरा किये ऊए थे। २ और फलस्तानियों के अध्यक्ष सैकड़ों सैकड़ों और सहस्र सहस्र आगे बढ़ते गये परंतु दाऊद और उसके लोग अकिश के पीके पीके गये। ३ तब फलस्तानियों के अध्यक्षों ने कहा कि इन इबरानियों का क्या काम? अकिश ने फलस्तानी अध्यक्षों को कहा कि यह इसराईल के राजा साऊल का सेवक दाऊद नहीं? जो इतने दिनों और इतने बरसों से मेरे साथ है और जब से वुह मुझ पास आया है आज लों उसमें कुक दोष नहीं पाया। ४ तब फ़लस्तानियों के अध्यक्ष उसे क्रुद्ध ऊए और उन्हों ने उसे कहा कि इस जन को यहां से फेर दे जिसतें वुह अपने स्थान को, जो तू ने उसे दिया है, फिर जाय और हमारे साथ युद्ध में न उतरे क्या जाने युद्ध में वुह हमारा बैरी होवे क्योंकि वुह अपने स्वामी से किस बात से मेल करेगा? क्या इन लोगों के सिरों से नहीं?। ५ यह वही दाऊद नहीं जिसके विषय में वे नाचतीऊईं गाती थीं कि साऊल ने तो अपने सहस्रों को मारा और दाऊद ने अपने दस सहस्रों को?। ६ तब अकिश ने दाऊद को बुलाया और उसे कहा कि निश्चय परमेश्वर के जीवन सों तू खरा है तेरा आना जाना सेना में मेरे साथ मेरी दृष्टि में अच्छा है क्योंकि जिस दिन से तू मुझ पास आया मैं ने आज लों तुझ में कुक बुराई नहीं पाई तथापि अध्यक्षों की दृष्टि में तू अच्छा नहीं। ७ सो अब फिर और कुशल से चलाजा और फलस्तानियों के अध्यक्षों की दृष्टि में बुराई न कर। ८ परंतु दाऊद ने अकिश से कहा कि मैंने क्या किया है? और जब से मैं आप के

साथ रहा और आज लों आप ने अपने सेवक में क्या पाया? कि
९ मैं अपने प्रभु राजा के बैरियों से लड़ाई न करों। तब अकिश
ने दाऊद को उत्तर दिया कि मैं जानता हों और तू मेरी
दृष्टि में ईश्वर के दूत के समान है परंतु फलस्तानी के अध्यक्षों ने
१० कहा है कि वुह हमारे साथ युद्ध में न जाय। सो अब बिहान
को तड़के अपने स्वामी के दासों समेत, जो तेरे साथ यहां
११ आये हैं, उठके शीघ्र तड़के चलेजाइये। तब दाऊद अपने लोगों
सहित तड़के उठा कि प्रातःकाल को वहां से चल के फलस्तानियों
के देश को फिर जाय और फलस्तानी जज़रईल को चढ़ गये।

३० तीसवां पर्ब्ब।

अमालक़ियों ने ज़िकलाग को लूट लिया और स्त्रियों
को बंधुआई में ले गये १—२ दाऊद और उसके
लोग अपनी पत्नियों के लिये बड़ा बिलाप करते हैं
और परमेश्वर से हियाव पाके उनका पीछा करते
हैं ३—१० दाऊद एक मिसरी को खेत में पाता है
जिस्से वुह बैरियों का समाचार पाता है ११—१५
दाऊद उन्हें मारके सब बंधुओं को छुड़ाता है
१६—२० लूटमें से दाऊद उनस बांट देताहै जो
थक के रहि गये थे २१—२५ लूटमें से दाऊद यहूदा
के प्राचीनों के और कितनों के पास भेंट भेजता
है २६—३१।

१ और ऐसा हुआ कि जब दाऊद और उसके लोग तीसरे दिन
ज़िक़लाग में पहुंचे क्योंकि अमालक़ी दक्षिण दिशा से ज़िक़लाग
पर चढ़ आये थे और उन्हों ने ज़िक़लाग को मारा और उसे
२ आग से फूंक दिया। और उसमें की स्त्रियों को पकड़ लिया
पर उन्हों ने छोटी बड़ी को न मारा परंतु उन्हें लेके अपने मार्ग
३ चले गये। जब दाऊद और उसके लोग नगर में

पहुंचे तो क्या देखते हैं कि नगर जला पड़ा है और उनकी पत्नियां और उनके बेटे बेटियां बंधुआई में पकड़ी गई हैं।
४ तब दाऊद और उसके साथ लोग चिल्लाये और विलाप
५ किया यहां लों कि उनमें रोने की सामर्थ्य न रही। और दाऊद की दोनों पत्नियां यज़रईली अहीनुआम और करमिली
६ नाबाल की पत्नी अबिगाल बंधुआई में पकड़ी गईं। और दाऊद अति दुःखी हुआ क्योंकि लोग उस पर पत्थरवाह करने की बात चीत करते थे इस लिये कि उनमें से हर एक अपने बेटों और बेटियों के लिये निपट उदास था पर दाऊद ने परमेश्वर
७ अपने ईश्वर से हियाव पाया। और दाऊद ने अहीमलक के बेटे अबियासार याजक से कहा कि कृपा करके अफूद मुझ पास ला सो अबियासार अफूद दाऊद पास ले
८ आया। और दाऊद ने यह कहिके परमेश्वर से बूझा कि मैं इस जथा का पीछा करों? क्या मैं उन्हें जा ही लूंगा? उसने उत्तर दिया कि पीछा कर क्योंकि तू निश्चय उन्हें जा ही लेगा और
९ निःसंदेह उन्हें छुड़ावेगा। सो दाऊद अपने साथ के छः सौ तरुणों को लेके चला और बसूर के नाले लों आया और जो
१० पीछे छोड़े गये वहां पर रहि गये। पर दाऊद चार सौ तरुणों से उनका पीछा किये चला गया क्योंकि दो सौ पीछे रहिगये थे
११ जो ऐसे थक गये थे कि बसूर के नाले पार जा न सके। और उन्हों ने खेत में एक मिसरी को पाया और उसे दाऊद पास ले आये और उसे रोटी खाने को दिई और उसने खाई और
१२ उन्हों ने उसे पानी भी पिलाया। और उन्हों ने गूलर की लिट्टी और दो गुच्छे अंगूर उसे दिये और जब वुह खा चुका तब उसके जी में जी आया क्योंकि उसने तीन रात दिन न रोटी खाई
१३ न पानी पीया था। तब दाऊद ने उसे पूछा कि तू कौन? और कहां का है? वुह बोला कि मैं एक मिसरी तरुण और एक अमालकी का सेवक हों मेरा स्वामी मुझे छोड़ गया क्योंकि

१४ तीन दिन ऊए कि मैं रोगी ऊआ। हम कीरती के दक्षिण ओर चढ़ गये और यहूदा के सिवाने पर और कालिब को दक्षिण ओर चढ़ गये थे और हमने ज़िकलाग को आग से फूंक दिया।
१५ और दाऊद ने उसे कहा कि तू मुझे इस जथा लों ले जा सक्ता है? वुह बोला कि मुझे ईश्वर की किरिया खाइये कि मैं तुझे प्राण से न मारोंगा और तुझे तेरे स्वामी के हाथ न सौंपोंगा तो मैं आप
१६ को इस जथा लों ले जाओंगा। जब वुह उसे वहां ले गया तो क्या देखते हैं कि वे समस्त पृथिवी पर फैलेऊए हैं और खाते पीते और नाचते थे क्योंकि फ़लस्तानियों के और यहूदा के देश
१७ से बऊत लूट लाये थे। और दाऊद ने उन्हें गोधूली से दूसरे दिन की सांझ लों मारा और उनमें से एक भी न बचा केवल
१८ चार सौ तरुण ऊंटों पर चढ़ के भाग निकले। और जो कुछ कि अमालकी ले गये थे दाऊद ने फेर पाया और अपनी दोनों
१९ पत्नियों को भी दाऊद ने छुड़ाया। और उनके छोटे बड़े और बेटा बेटी और धन संपत्ति जो लूटी गई थी दाऊद ने सब फेर
२० पाया। और दाऊद ने सारी झुंड और ढोर ले लिये जिन्हें उन्हों ने ढोरों के आगे हांक लिया और बोले कि यह दाऊद
२१ की लूट। और दो सौ तरुण ऐसे थके थे जो दाऊद के साथ न जा सके थे और बसूर के नाले पर रहिगये थे दाऊद उन पास फिर आया और वे दाऊद को और उसके लोगों को आगे से लेने को निकले और जब दाऊद उन लोगों के पास पऊंचा
२२ तब उसने उनका कुशल पूछा। उस समय दुष्टों ने और बिलालियों ने, जो दाऊद के साथ गये थे, यह कहा कि ये लोग हमारे साथ न गये हम इन्हें इस लूट में से, जो हमने पाया है, भाग न देंगे केवल हर एक अपनी पत्नी और बेटा बेटी को
२३ लेके बिदा होवे। तब दाऊद बोला कि हे मेरे भाइयो जो कुछ कि परमेश्वर ने हमें दिया है और उसने हमें बचाया और जथा को, जो हम पर चढ़ आये थे, हमारे हाथ में करदिया

२४ सो तुम उसमें से ऐसा न करो। क्योंकि इस विषय में कौन तुम्हारी सुनेगा? परंतु जैसा जिसका भाग है जो युद्ध में चढ़ जाता है वैसा उसका भाग होगा जो संपत्ति पास रहता है
२५ दोनों एक सां भाग पावेंगे। और ऐसा हुआ कि उस दिन से आगे यही बिधि और व्यवस्था इसराईल के लिये आजके
२६ दिन लों हुई। और जब दाऊद ज़िकलाग में आया उसने लूट में से यहूदा के प्राचीन और अपने मित्रों के लिये भाग भेजा और कहा कि देखो परमेश्वर के शत्रुन की लूट में से
२७ यह तुम्हारी भेंट है। और जो बैतएल में और जो दक्षिण रमूस
२८ में और जो जतीर में। और जो अरोईर में और जो सीफ़मूस
२९ में और जो इस्तिमूस में। और जो राकाल में और जो जरामली
३० के नगरों में और जो कीनी के नगरों में। और जो हुरमा
३१ में और जो खुरशान में और जो आथाक में। और जो हबरून में और उन सब स्थानों में जहां जहां दाऊद और उसके लोग फिरे करते थे भेजे।

३१ एकतीसवां पर्ब्ब।

फलस्तानियों के और इसराईल के युद्ध में साऊल और उसके बेटे मारे जाते हैं १—६ इसराईली लोग भाग के छिपते हैं फलस्तानी साऊल के सिर को काट डालते हैं और उसके हथियार को अपने देवतों के मंदिर में रखते हैं ७—१० यावश जलियाद के लोग छियाव करके साऊल की और उसके बेटे की हड्डियों को गाड़ते हैं ११—१३।

१ अब फलस्तानी इसराईल से लड़े और इसराईल फलस्तानी के
२ आगे से भागे और गलबूआ पहाड़ पर जूझ गये। और फलस्तानी साऊल के और उसके बेटों के पीछे पीछे पिलचे गये और फलस्तानियों ने उसके बेटे यूनासान को और

३ अबीनादाब और मलकीशूअ को मार लिया। और साऊल से बड़ी लड़ाई ऊई और धनुषधारियों ने उसे लगाया ऐसा
४ कि वुह धनुषधारियों के हाथ से अत्यंत घायल ऊआ। तब साऊल ने अपने अस्त्रधारी से कहा कि अपनी तलवार खींच और मुझे गोद दे जिसतें ये अख़तनः आके मुझे गोद न लेवें और मेरी दुर्दशा न करें पर उसके अस्त्रधारी ने न माना इस लिये कि वुह अत्यंत डरा तब साऊल ने तलवार लिई और
५ उस पर गिरा। और जब उसके अस्त्रधारी ने देखा कि साऊल मरगया तब वुह भी अपनी तलवार पर गिरा और उसके
६ साथ मर गया। सो साऊल और उसके तीनों बेटे और उसका अस्त्रधारी और उसके सारे लोग उसी दिन एक साथ मर गये।
७ जब इसराईल के लोगों ने, जो तराई के उस अलंग थे, और जो अर्दन के पार थे देखा कि इसराईल के लोग भागे और साऊल और उसके बेटे मारे गये बस्तियां छोड़ छोड़ भाग
८ निकले और फलस्तानी आये और उनमें बसे। और बिहान को ऐसा ऊआ कि जब फलस्तानी आये कि जूझेऊओं को लूटें तब उन्हों ने साऊल को और उसके तीन बेटों को गलबूआ पहाड़
९ पर पड़ा पाया। तब उन्हों ने उसका सिर काटलिया और उसके हथियार लेके फलस्तानियों के देश में चारों ओर भेज दिये कि उनको मूरतों के मंदिर में और लोगों में प्रचार होवे।
१० और उन्हों ने उसके हथियार को अश्तरूत के मंदिर में रक्खा और उसकी लोथ को बैतशान की भीत पर लटकाया।
११ और जब याबशजलियाद के वासियों ने सुना कि फलस्तानियों
१२ ने साऊल से यों किया। तब उनमें के सारे महाबीर उठे और रात भर चले गये और बैतशान की भीत पर से साऊल की और उसके बेटों की लोथों को लेके याबश में फिर आये
१३ और वहां उन्हें जला दिया। और उनकी हड्डियों को लेके याबश के पेड़ तले गाड़ दिया और सात दिन लों ब्रत किया।

समुईल की दूसरी पुस्तक जो राजाओं की दूसरी पुस्तक कहावती है।

१ पहिला पर्ब्ब।

एक अमालकी साऊल का मुकुट और खड़वे का दाऊद पास लाके संग्राम का समाचार और साऊल के बधन करने का संदेश देता है १—१० दाऊद अपने कपड़े फाड़के बिलाप करता है और दूत को घात के कारण मरवाडालता है ११—१६ साऊल और यूनासान के लिये दाऊद का बिलाप १७—२७।

१ साऊल के मरने के पीछे जब दाऊद अमालकियों को मार के २ फिर आया और दो दिन सिकलाग में रहा। और तीसरे दिन ऐसा ऊआ कि देखो एक जन साऊल की छावनी से अपने वस्त्र फाड़े ऊए और सिर पर धूल डाले ऊए आया और दाऊद के पास पऊंच के भूमि पर गिरा और दंडवत किई। ३ तब दाऊद ने उसे कहा कि तू कहां से आता है वुह उसे ४ बोला कि इसराईल की छावनी से मैं बच निकला हों। तब दाऊद ने उसे पूछा कि क्या ऊआ मुझे कह उसने उत्तर दिया कि लोग संग्राम से भागे हैं और बऊतसे जूझ गये हैं और साऊल और उसका बेटा यूनासान भी मर गये हैं।

५ तब उस तरुण से जिसने उसे कहा था दाऊद ने पूछा कि तू क्योंकर जानता है कि साऊल और उसका बेटा यूनासान
६ मर गये हैं?। उस तरुण ने उसे कहा कि मैं संजोग से गलबूआ पहाड़ पर था तो क्या देखता हों कि साऊल अपने भाले पर ओठंगा था और देखो कि रथ और घोड़चढ़े उसके पीछे
७ धाये गये। और जब उसने पीछे फिर के मुझे देखा तब
८ उसने मुझे बुलाया मैं ने उत्तर दिया कि यहीं हों। तब उसने मुझे कहा कि तू कौन? मैं ने उसे कहा कि मैं एक
९ अमालकी। फिर उसने मुझे कहा कि मैं तेरी बिनती करता हों उठके मुझे बधन कर क्योंकि मेरा भिलम मुझे रोकता है
१० और मेरा प्राण अबलों मुझ में पूर्ण है। सो मैं उस पर लपका और उसे मारडाला इस कारण कि मुझे निश्चय ऊआ कि गिरने के पीछे वुह जी न सक्ताथा और मैं ने उसके सिर का मुकुट और बिजायठ, जो उसकी भुजा पर था, लिया और उन्हें
११ अपने स्वामी पास इधर लाया हों। तब दाऊद ने अपने कपड़े को पकड़ा और उन्हें फाड़ डाला और उसके साथ के
१२ समस्त मनुष्यों ने भी ऐसाही किया। और साऊल के और उसके बेटे यूनासान के और परमेश्वर के लोगों के लिये और इसराईल के घराने के लिये इस कारण कि वे तलवार से मारे पड़े थे उन्हों ने रोपीट के बिलाप किया और सांझ लों ब्रत
१३ किया। फिर दाऊद ने उस तरुण से, जिसने उसे कहा, यह बोला कि तू कहां का? उसने उत्तर दिया कि मैं परदेशी का
१४ लड़का एक अमालकी हों। तब दाऊद ने उसे कहा कि क्या परमेश्वर के अभिषिक्त पर, नाश करने को हाथ उठाते ऊए
१५ न डरा?। फिर दाऊद ने तरुणों में से एक को बुलाया और कहा कि उस पास जाके उस पर लपक सो उसने उसे ऐसा
१६ मारा कि वुह मर गया। और दाऊद ने उसे कहा कि तेरा लोहू तेरेही सिर पर क्योंकि तेरेही मुंह ने तुझ पर यह

कहिके साक्षी दिई कि मैं ने परमेश्वर के अभिषिक्त को घात
१७ किया। और दाऊद ने साऊल और उसके बेटे
१८ यूनासान पर इस बिलाप से बिलाप किया। (और उसने
यह भी उन्हें आज्ञा किई कि यहूदा के संतान को धनुष बिद्या
१९ सिखावें देख अशीर की पुस्तक में लिखा है।) कि इसराईल
की सुंदरता तेरे ऊंचे स्थानों पर जूझ गई बलवंत कैसे मारे
२० पड़े हैं। गाथ में मत कहो और अस्कलून की सड़कों में मत
प्रचारो न हो कि फ़िलस्तानियों की बेटियां आनंद करें न हो कि
२१ अख़तनों की लड़कियां जय जय करें। हे गलबूअ के पहाड़ो
ओस और मेह तुम पर न पड़ें और न भेटों का खेत होवे
क्योंकि वहां बलवंत की ढाल तुच्छता से फेंकी गई साऊल की
२२ ढाल जैसे कि वुह अभिषिक्त न हुआ। जूझे हुए के लोहू से
बलवंत की चिकनाई से यूनासान का धनुष्य उलटा न फिरा
२३ और साऊल की तलवार छूछी न फिरी। साऊल और
यूनासान अपने जीवन में प्रिय और शोभित थे और अपनी
मृत्यु में वे अलग न किये गये वे गिद्ध से अधिक फुरतीले थे वे
२४ सिंहों से बलवंत थे। हे इसराईल की बेटियो साऊल पर
रोओ जिसने तुम्हें बैजनी आनंदितों के साथ पहिनाया जिसने
२५ सोने के आभूषण तुम्हारे वस्त्र पर संवारा। संग्राम के मध्य
बलवंत कैसे गिर गये हे यूनासान तू अपने ऊंचे स्थानों में
२६ मारा गया। हे मेरे भाई यूनासान तेरे लिये मैं दुःखित हों
तू मेरे लिये अति शोभित था तेरी प्रीति मुझ पर अचंभित थी
२७ स्त्रियों की प्रीति से अधिक। बलवंत कैसे गिर गये और संग्राम
के हथियार नष्ट हुए।

२ दूसरा पर्ब्ब।

दाऊद हबरून में जाके यहूदा का राजा होता है
१—४ वुह याबशजलियादियों को साऊल पर

दया करने के लिये सराहता है ५—७ अबनर इश्बोशीश को इसराईल पर राजा करता है ८—११ अबनर के और यूआब के बारह बारह जन लड़ मरते हैं और बड़ा संग्राम होता है और इसराईल हार जाते हैं १२—३२ ।

१ इसके पीछे ऐसा ऊआ कि दाऊद ने यह कहिके परमेश्वर से बूझा कि मैं यहूदा के किसी नगरों में चढ़ जाओं? परमेश्वर ने उसे कहा कि चढ़ जा तब दाऊद ने कहा कि किधर चढ़

२ जाओं? उसने कहा कि हबरून को। सो दाऊद उधर चढ़ गया और उसकी दोनों पत्नी भी इज़रीली अहीनुआम और

३ नाबाल की पत्नी करमली अबीगाल। और उसके लोग जो उसके साथ थे, दाऊद ने हर एक जन को उसके घराने समेत

४ ऊपर लाया और वे हबरून के नगरों में आ बसे। तब यहूदा के लोग आये और उन्हों ने वहां दाऊद को यहूदा के घराने पर राज्याभिषेक किया और लोगों ने दाऊद से कहा कि

५ याबशजलियाद के मनुष्यों ने साऊल को गाड़ा। तब दाऊद ने याबशजलियाद के लोगों को दूत से कहला भेजा कि परमेश्वर का धन्य, क्योंकि तुम ने अपने प्रभु साऊल पर यह

६ अनुग्रह किया और उसे गाड़ा। अब परमेश्वर तुम पर अनुग्रह और सच्चाई करे और मैं भी इस अनुग्रह का पलटा

७ तुम्हें देउंगा इस कारण कि तुम ने यह काम किया है। सो अब तुम्हारी भुजा बली होवें और शूरता के बेटे होओ क्योंकि तुम्हारा प्रभु साऊल मर गया और यहूदा के घराने ने भी मुझे

८ अपने पर राज्याभिषेक किया। परंतु नर के बेटे अबनर ने जा साऊल का सेना पति था साऊल के बेटे अश्बोशीश को

९ लिया और उसे महानाईम में पऊंचाया। और उसे जलियाद पर और अशूरी पर और ईज़रईल पर और अफ़राईम और बनियामीन पर और समस्त इसराईल पर राजा किया।

१० और साऊल के बेटे अश्बोशीश की वय चालीस बरस की थी जब वुह इसराईल पर राज्य करने लगा और उसने दो बरस राज्य किया परंतु यहूदा के घराने ने दाऊद का पीछा
११ किया। और जिन दिनों में दाऊद यहूदा के घरानें पर हबरून
१२ में राजा था सो साढ़े सात बरस था। फिर नर के बेटे अबनर और साऊल के बेटे अश्बोशीश के सेवक महानाईम
१३ से निकल के गबियून को गये। और सूरिया का बेटा यूआब दाऊद के सेवकों को लेके निकला और गबियून के कुंड पर दोनो मिल गये और बैठ गये एक कुंड की इस अलंग दूसरा
१४ कुंड की उस अलंग। तब अबनर ने यूआब से कहा कि तरुणों को उठने और हमारे आगे लीला करने दीजिये यूआब
१५ बोला कि उठें। तब गिनती में बनियामीन के बारह जन जो साऊल के बेटे अश्बोशीश की ओर से थे उठे और दाऊद के
१६ सेवकों में से बारह जन निकले। सो उनमें से हर एक जन ने अपने अपने संगी का सिर पकड़ा और अपने संगी के पंजर में तलवार गोद दिई सो वे एकट्ठे गिर पड़े इस लिये उस
१७ स्थान का नाम हीरक्षेत्र हुआ जो गबियून में है। और उस दिन बड़ा संग्राम हुआ और अबनर और इसराईल के लोग
१८ दाऊद के सेवकों के आगे हार गये। और सूरिया के तीन बेटे यूआब और अबीशाई और असाहिल वहां थे और असाहिल
१९ बनैली हरिणी की नाईं दौड़ता था। और असाहिल ने अबनर का पीछा किया और वुह अबनर के पीछे से दहिने बायें न
२० मुड़ा। तब अबनर ने पीछे देख के कहा कि तू असाहिल है?
२१ वुह बोला हां। और अबनर ने उसे कहा कि दहिनी अथवा बाईं ओर फिर और तरुणों में से एक को पकड़ और उसे लूट ले परंतु उसका पीछा करने से असाहिल न फिरा।
२२ और अबनर ने असाहिल को फिर कहा कि मेरा पीछा करने से मुड़ किस कारण मैं तुझे भूमि पर मार के डालदेओं? फेर

२३ क्योंकर मैं तेरे भाई यूआब को अपना मुंह दिखाओं?। तथापि उसने मुड़ने को न माना तब अबनर ने उलटे भाले से पांचवीं पसुली के नीचे मारा और भाला उसके पीछे से निकल पड़ा और वहां गिर के उसी स्थान में वुह मर गया और ऐसा हुआ कि जितने उस स्थान में आते थे जहां असाहिल गिर के मर गया
२४ था खड़े रहते थे। तब यूआब और अबीशाई भी अबनर के पीछे पड़े और जब वे अम्मः के टीले को, जो गबियून के बन के
२५ मार्ग में गीयह के आगे है पहुंचे तब सूर्य्य अस्त हुआ। और बनियामीन के संतानों ने एकट्ठे होके अबनर की सहाय किई और सब के सब मिल के एक जथा बन के एक पहाड़ की चोटी
२६ पर खड़े हुए। तब अबनर ने यूआब को पुकार के कहा कि क्या तलवार सदा लों नाश करेगी? क्या तू नहीं जानता है कि अंत में कड़ुवाहट होगी? कबलों तू लोगों को अपने
२७ भाइयों का पीछा करने से न रोकेगा?। तब यूआब ने कहा कि जीवते ईश्वर की किरिया यदि तू न कहता तो निश्चय लोगों में से हर एक अपने भाई का पीछा छोड़ के भोरही को फिर
२८ जाता। फिर यूआब ने नरसिंगा फूंका और सब लोग ठहर गये और इसराईल का पीछा न किया और लड़ाई भी थम
२९ गई। और अबनर अपने लोगों समेत चौगान से होके रात भर चला गया और अर्दन पार उतरा और समस्त बैतरून
३० से चल के महानाईम में पहुंचा। और यूआब अबनर का पीछा करने से उलटा फिरा और उसने सारे लोगों को एकट्ठा किया तब दाऊद के सेवकों में से असाहिल को छोड़
३१ उन्नीस जन घटे थे। परंतु दाऊद के सेवकों ने बनियामीनियों में से और अबनर के लोगों में से तीन सौ साठ जन मारे।
३२ और उन्हों ने असाहिल को उठाया और उसके पिता की समाधि में, जो बैतुलहम में है, गाड़ा और यूआब अपने लोगों समेत रात भर चला गया और पौ फटते हुए हबरून में पहुंचा।

दाऊद बलवंत होता जाता है और अश्बोशीश दुर्बल, दाऊद का वंश हबरून में बढ़ता है १—५ अबनर अश्बोशीश से उदास होके दाऊद पास जाता है ६—१६ अबनर इसराईलियों से बातचीत करके दाऊद पास जाता है दाऊद उसका शिष्टाचार करके कुशल से फेर भेजता है १७—२१ यूआब दाऊद से क्रुद्ध होके अबनर को घात करता है २२—२७ दाऊद उसे स्राप देता है और अबनर के लिये बिलाप करता है २८—२९।

१ सो साऊल के और दाऊद के घरानों में बहुत दिन लों लड़ाई होती रही परंतु दाऊद बलवंत होता गया और साऊल का
२ घराना दुर्बल होता गया। और हबरून में दाऊद के बेटे उत्पन्न हुए उसका पहिलौंठा अमनून जो यज़रईली अहिनुआम
३ से था। और दूसरा किलियाब जो करमिली नाबाल की पत्नी अबीग़ाल से हुआ और तीसरा अबसालूम जो जशूर के
४ राजा तलमाई की बेटी मआका से था। और चौथा हगीस का बेटा अदूनिजा और पांचवां अबीताल का बेटा शफ़ातिया।
५ और छटवां अयरियम जो दाऊद की पत्नी अगला से था ये सब
६ दाऊद के लिये हबरून में उत्पन्न हुए। और जबलों साऊल और दाऊद के घरानों में युद्ध होता रहा ऐसा हुआ कि अबनर ने आप को साऊल के घराने के लिये बली
७ किया। और साऊल की एक दासी थी जिसका नाम रजपा था आया की बेटी और अश्बोशीश ने अबनर से कहा कि तू
८ क्यों मेरे पिता की दासी के पास गया है?। तब अबनर अश्बोशीश की बातों से अति कोपित होके कहा कि क्या मैं कूकर का सिर हों कि मैं यहूदा का साम्ना करके आज के दिन लों तेरे पिता साऊल के घराने पर और उसके भाइयों और

उसके मित्रों पर दया करता हों और तुझे दाऊद के हाथ में नहीं सौंपाहै कि तू मुझे इस स्त्री के विषय में दोष लगाता है?।
९ सो अब जैसा परमेश्वर ने दाऊद से बाचा बांधी है वैसाही यदि मैं न करों तो परमेश्वर अबनर से ऐसाही और उसे
१० अधिक करे। कि साऊल के घराने से राज्य पलट डालों और दाऊद के सिंहासन को इसराईल पर और यहूदा पर दान
११ से लेके बीरश्बा लों स्थिर करों। तब वुह अबनर को एक
१२ बात का उत्तर न देसका क्योंकि वुह उसे डरता था। और अबनर ने अपने विषय में दाऊद पास दूत भेजके कहलाया कि देश किसका? मुझे मेल करिये और देखिये मेरा हाथ आप के
१३ साथ होगा कि सारे इसराईलियों को तेरी ओर फेरों। वुह बोला अच्छा मैं तुझे मेल करोंगा परंतु तुझे एक बात चाहताहों जो यह है कि तू मेरा मुंह न देखेगा जबलों पहिले साऊल की बेटी मैकाल को अपने साथ लावे जब तू मेरा मुंह देखने
१४ को आवे। और दाऊद ने साऊल के बेटे अश्बोशीश के पास यह कहिके दूतों को भेजा कि मेरी पत्नी मैकाल को जिसे मैं ने फलस्तानियों की सौ खलड़ियों के लिये देके बियाहा है
१५ सौंप दे। तब अश्बोशीश ने भेजके उसके पति लाईश के बेटे
१६ फलतिअल से उसे मंगवाया। और उसका पति उसके पीछे पीछे बहोरीम लों रोता चला गया तब अबनर ने उसे कहा
१७ कि चल फिर जा तब वह फिर गया। और अबनर ने इसराईल के प्राचीनों से संबाद करके कहा कि तुम तो कल परसों दाऊद को अपना राजा होने के लिये ढूंढ़ते थे।
१८ सो अब करो क्योंकि परमेश्वर ने दाऊद के विषय में कहा है कि मैं अपने दास दाऊद की ओर से अपने इसराईली लोगों को फलस्तानियों के और उनके सब बैरियों के हाथ से बचाओंगा।
१९ और अबनर ने बनियामीनों के कानों में भी कहा और फिर अबनर हबरून को चला कि दाऊद के कानों में भी कहे

कि इसराईलियों को और बनियामीनियों के सारे घराने को
२० अच्छा लगा। सो अबनर हबरून में दाऊद पास आया और
बीस जन उसके साथ थे और दाऊद ने अबनर का और उन
२१ लोगों का, जो उसके साथ थे, नेउंता किया। और अबनर ने
दाऊद से कहा कि अब मैं उठ के जाओंगा और सारे इसराईल
को अपने प्रभु राजा के लिये एकट्ठा करोंगा जिसतें वे आपसे
मेल करें और आप अपने सारे मन के समान उन
पर राज्य करें तब दाऊद ने अबनर को बिदा किया और
२२ वुह कुशल से चला गया। और देखो कि उस समय
दाऊद के सेवक और यूआब एक जथा से आके बहुतसी लूट
अपने साथ लाये परंतु अबनर हबरून में दाऊद पास न था
क्योंकि उसने उसे बिदा किया था और वुह कुशल से चला
२३ गया था। जब यूआब और उसके संगकी समस्त सेना,
पहुंचीं तब उन्हों ने यह कहिके यूआब से कहा कि नर का बेटा
अबनर राजा पास आया और उसने उसे फेर दिया और
२४ वुह कुशल से चला गया। तब यूआब राजा पास गया और
बोला कि आप ने क्या किया? देखिये अबनर आप के पास
आया और आपने उसे क्यों छोड़ दिया कि वुह चल निकला? ।
२५ आप नर के बेटे अबनर को जानते हैं कि वुह आप को छल
देने और आप के बाहर भीतर आने जाने से और सब जो
२६ आप करते हैं जान्ने को आया था। तब यूआब ने दाऊद पास
से निकल के अबनर के पीछे दूत भेजे जो उसे सीरा के कूये से
२७ फेर लाये परंतु दाऊद ने न जाना। और जब अबनर हबरून
को फिर आया यूआब ने उसे फाटक की एक अलंग कुशल से
बात करने को लेगया और वहां उसे पांचवीं पसुली के तले
यहां लों गोदा कि वुह मर गया क्योंकि उसने उसके भाई
२८ असाहिल को मारा। और उसके पीछे जब दाऊद ने सुना
वुह बोला कि मैं और मेरा राज्य परमेश्वर के आगे नर के बेटे

२९ अबनर के लोह्न से सदा निर्दोष। वुह यूआब के सिर पर और उसके पिता के समस्त घराने पर होवे और यूआब के घराने में एक भी ऐसा नहो जो प्रमेही अथवा कोढ़ी और जो लाठी पर टेकता है अथवा जो तलवार पर गिरता है अथवा जो
३० रोटी के अधीन बिना कट जाय। सो यूआब और उसके भाई अबिशाई ने अबनर को घात किया क्योंकि उसने उनके भाई
३१ असाहिल को गबियून के बीच रण में मारा था। और दाऊद ने यूआब को और उसके सारे साथियों को कहा कि अपने कपड़े फाड़ो और टाट ओढ़ो और अबनर के आगे आगे बिलाप करो और दाऊद राजा आप रथी के पीछे पीछे गया।
३२ और उन्हों ने अबनर को हबरून में गाड़ा और राजा अपना शब्द उठा के अबनर की समाधि पर रोया और सब लोग
३३ रोये। और राजा ने अबनर पर यों बिलाप करके कहा कि
३४ अबनर मूढ़ की नाईं मूआ। तेरे हाथ बंधे नथे तेरे पाओं में पैकडियां पडीं न थीं तू यों गिरा जैसा कोई दुष्टों के संतान के हाथ में पड़के गिरता है तब उस पर सब के सब
३५ दोहरा के रोये। और जब सब लोग आये और चाहा कि दाऊद को दिन रहते कुछ खिलावें दाऊद ने किरिया खाके कहा कि यदि मैं सूर्य्य अस्त होने से आगे रोटी खाओं अथवा कुछ चीखों तो ईश्वर मुझ से ऐसा और इसे अधिक करे।
३६ और सभों ने सोचा और उनकी दृष्टि में अच्छा लगा क्योंकि
३७ जो कुछ राजा करता था सो सब को अच्छा लगता था। क्योंकि सब लोगों ने, और सारे इसराईलियों ने, उस दिन, बूझा कि
३८ नर के बेटे अबनर को मारना राजा की ओर से नथा। और राजा ने अपने सेवकों से कहा कि क्या तुम नहीं जानते हो कि आज के दिन एक कुंअर और एक महाजन इसराईल में
३९ से गिर गया?। और मैं आज के दिन दुर्बल हों यद्यपि राज्याभिषिक्त हों और ये लोग अर्थात् सूरिया के बेटे मुझ से

अति बली हैं परमेश्वर दुष्ट को उसकी दुष्टता के समान फल देगा ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

अबनर के मरने से अश्बोशीश और इसराईल व्याकुल होते हैं यूनासान का बेटा लंगड़ा हो जाता है १—४ दो जन अश्बोशीश को घात करके उसका सिर दाऊद पास लाते हैं ५—८ दाऊद उन्हें बधन करवाता है ९—१२ ।

१ और जब साऊल के बेटे ने सुना कि अबनर हबरून में मर गया तब उसके हाथ दुर्बल हुए और सारे इसराईल व्याकुल हुए । २ और साऊल के बेटे के दो जन थे जो जथा के प्रधान थे एक का नाम बआना और दूसरे का रिकाब दोनों बनियामीन के संतान में बरोती रमून के बेटे थे क्योंकि बरूत भी बनियामीन में गिना जाता था । ३ तब बरूती गितार्इम को भाग गये और आज के दिन लों वे वहीं रहते हैं । ४ और साऊल के बेटे यूनासान का एक बेटा था जो पांव का लंगड़ा था जब यज़रईल से साऊल और यूनासान का संदेश आया तब वुह पांच बरस का था और उसकी दाई उसे लेके भाग गई और उसने भागने में शीघ्रता किई तब ऐसा हुआ कि वुह गिर पड़ा और लंगड़ा हो गया और उसका नाम मफ़ीबोशीश था । ५ और रमून के बेटे बरूती राख़ाब और बआना आये और दिन के घाम के समय में अश्बोशीश के घर में पहुंचे, जो दो पहर को बिछौने पर लेटा था । ६ और वे घर के मध्य में ऐसा आये जैसा कि गोहूं लेने जाते हैं और उन्हों ने उसे पांचवीं पसुली के नीचे मारा और राख़ाब और उसके भाई बआना बच निकले । ७ क्योंकि जब वे घर में पैठे वुह अपने शयन स्थान में बिछौने पर पड़ा था सो उन्हों ने उसे

मारा और घात किया और उसका सिर काटा और सिर
८ लेलिया और रात भर चौगान के मार्ग भागे चले गये। और
अश्बोशीश का सिर हबरून में दाऊद पास लाये और राजा
को कहा कि यह साऊल के बेटे आप के बैरी अश्बोशीश का
सिर है जो आप के प्राण का गांहक था सो परमेश्वर ने आज के
दिन मेरे प्रभु राजा का पलटा साऊल और उसके वंश से
९ लिया। तब दाऊद ने राख़ाब और उसके भाई बआना
को, जो बरूती रमून के बेटे थे, उत्तर दिया और कहा कि
परमेश्वर के जीवन सों जिसने मेरे आत्मा को समस्त बिपत्ति
१० से छुड़ाया। जब किसी ने मुझे कहा कि देख साऊल मर
गया (और समझा कि सुसंदेश पऊंचाता है) तब
मैं ने उसे पकड़ा और सिक्लाग में घात किया यह मैं ने उसे
११ उसके संदेश लाने का पलटा दिया। कितना अधिक अब
दुष्टों ने एक धर्म्मी जन को उसके घर में घुस के उसके बिछौने
पर मारा तो क्या मैं अब उसका पलटा तुम से न लूंगा
१२ और तुम्हें पृथिवी पर से उठा न डालोंगा?। तब दाऊद ने
अपने तरुणों को आज्ञा किई कि उन्हें मार डालें और उनके
हाथ और पांव काट डालें और उन्हें हबरून के कुंड पर
लटका देवें परंतु अश्बोशीश के सिर को उन्हों ने लेके हबरून
के बीच अबनर की समाधि में गाड़ दिया।

५ पांचवां पर्ब्ब।

प्राचीन लोग दाऊद को राजा बनाते हैं दाऊद का
राज्य और उसका जीवन १—५ वुह सैहून को लेता है
और वुह उसका नगर कहलाता है ६—१० दाऊद
घर बनाता है और पत्नियों को बढ़ाता है उसके
ग्यारह बेटे उत्पन्न होते हैं ११—१३ ईश्वर के मंत्र से
वुह फलस्तानियों को दो बार जीत्ता है १७—२५

१ तब इसराईल की समस्त गोष्ठी हबरून में दाऊद पास आई और उसे कहा कि देख हम आप की हड्डी और आप के मांस हैं ।
२ और अगिले समय में भी जब साऊल हमारा राजा था तब आप इसराईल को बाहर भीतर लेजाया करता था और परमेश्वर ने आप को कहा है कि तू मेरे इसराईली लोगों को
३ चरावेगा और तू इसराईल का प्रधान होगा। सो इसराईल के सारे प्राचीन हबरून में राजा पास आये और दाऊद राजा ने हबरून में उनके साथ परमेश्वर के आगे बाचा बांधी और उन्हों ने दाऊद को इसराईल पर राज्याभिषेक किया ।
४ और जब दाऊद राज्य करने लगा तब तीस बरस का था
५ और उसने चालीस बरस राज्य किया। उसने हबरून में सात बरस छः मास यहूदा पर राज्य किया और यिरोशलीम
६ में सारे इसराईल और यहूदा पर तेंतीस बरस। तब राजा और उसके लोग उस देश के बासी यबूसियों कने गये उन्हों ने दाऊद को कहा कि जब लों तू अंधों और लंगड़ों को दूर न करे यहां आने न पावेगा यह समुझ के कि दाऊद यहां
७ न आ सकेगा। तिसपर भी दाऊद ने सैहून का गढ़ लेलिया
८ और वही दाऊद का नगर। और दाऊद ने उस दिन कहा कि जो कोई पनाले लों पहुंचे और यबूसियों और लंगड़ों और अंधों को, जो दाऊद को घिन है, मारे सोई सेना का प्रधान होगा इस लिये यह कहावत कहते हैं कि अंधे और
९ लंगड़े घर में पैठने न पावेंगे। और दाऊद गढ़ में रहा और उसने उसका नाम दाऊद का नगर रक्खा और दाऊद ने
१० मिल्लू की चारों ओर और उसके भीतर बनाये। और दाऊद बढ़ता गया और परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर उसके साथ था।
११ तब सूर के राजा हैराम ने आरज वृक्ष और बढ़ई और पत्थर के गढ़वैये दूतों के साथ दाऊद पास भेजे और
१२ उन्हों ने दाऊद के लिये भवन बनाया। और दाऊद को

सूझ पड़ा कि परमेश्वर ने मुझे इसराईल पर राजा स्थिर किया और मेरे राज्य को उसके लोग इसराईल के लिये
१३ स्थिर किया। और दाऊद ने हबरून से आके यिरोशलीम में और सहेलियां कियां और दाऊद के और भी बेटा बेटी
१४ उत्पन्न ऊए। और उसके उन बेटों के नाम, जो यिरोशलीम में उत्पन्न ऊए थे थे शमूआ और शोबाब और नासान और
१५ सुलेमान। और इभार और अलीशूअ और नफ़ीग और
१६ ज़फ़ीअ। और अलीशमा और इलियादा और इलीफ़लत।
१७ परंतु जब फ़लस्तानियों ने सुना कि उन्हों ने दाऊद को अभिषेक करके इसराईल का राजा किया तब सारे फ़लस्तानी दाऊद की खोज को चढ़ आये और दाऊद सुन के
१८ गढ़ को उतरा। और फ़लस्तानी आये और रफ़ाईम की
१९ तराई में फैल गये। तब दाऊद ने परमेश्वर से यह कहिके बूझा कि मैं फ़लस्तानियों पर चढ़ जाओं? तू उन्हें मेरे बश में करदेगा? परमेश्वर ने दाऊद से कहा कि चढ़ जा क्योंकि मैं
२० निःसंदेह फ़लस्तानियों को तेरे हाथ में सौंपोंगा। तब दाऊद बालपिरासीम में आया और वहां उन्हें मार के कहा कि परमेश्वर मेरे आगे मेरे बैरियों पर ऐसा टूट पड़ा जैसा पानियों का दरार इस लिये उसने उस स्थान का नाम दरारों
२१ का चौगान रक्खा। और उन्हों ने अपनी मूर्त्तिन को वहीं छोड़ा
२२ और दाऊद और उसके लोगों ने उन्हें जला दिया। और फ़लस्तानी फिर चढ़ आये और रफ़ाईम की तराई में फैल
२३ गये। और जब दाऊद ने परमेश्वर से बूझा उसने कहा कि तू मत चढ़ जा परंतु उनके पीछे से घूम और तूत के पेड़ों के
२४ साम्ने होके उन पर जा पड़। और यों होवे कि जब तू तूत के पेड़ों के ऊपर ऊपर जाने का शब्द सुने तो आप को चौकस कर क्योंकि तब परमेश्वर तेरे आगे आगे निकलेगा कि फ़लस्तानियों
२५ की सेना को मारे। और जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा

किई थी दाऊद ने वैसाही किया और फ़लिस्तानियों को गबा से लेके गजर लों मारा ।

६ छठवां पर्ब्ब ।

दाऊद मंजूषा को करियास यारीम से लेजाता है १—५ उसे छूने से अज़्ज़ा माराजाता है और दाऊद मंजूषा को ओबेदअदूम के पास छोड़ जाता है और उसके कारण उसका घराना आशीष पाता है ६—११ दाऊद मंजूषा को बड़े धूमधाम से सैहून में लाता है १२—१६ वुह उसे आनंद से तंबू में रखता है १७—१९ दाऊद पर दोष लगाने से उसकी पत्नी मीकाल निर्बंश रहती है २०—२३ ।

१ फिर दाऊद ने इसराईल में से तीस सहस्र चुने हुओं को २ एकट्ठा किया। और दाऊद सारे लोगों को लेके यहूदा के बआली से चला कि वहां से ईश्वर की मंजूषा को लावे जिसका नाम सेनाओं का परमेश्वर कहावता है जो करोबियों में ३ रहता है। और उन्हों ने ईश्वर की मंजूषा को नई गाड़ी पर धराया और उसे अबीनादाब के घर से, जो गबिया में था, निकाल लाये और उस नई गाड़ी को अबीनादाब के बेटों ने, ४ जो अज़्ज़ा और अहीयू थे, हांका। और वे अबीनादाब के घर से, जो गबिया में था, उसे निकाल लाये और ईश्वर की मंजूषा के साथ साथ गये और अहीयू मंजूषा के आगे आगे ५ चला। और दाऊद और इसराईल के सारे घराने देवदारु की लकड़ी के सब भांति के बाजे जैसे कि बीणा और सारंगियां और तबले और तंबूरे और झांझ लेके परमेश्वर के आगे आगे ६ बजाते चले।   और जब वे नाख़ून के खलिहान पर पहुंचे तब अज़्ज़ा ने हाथ बढ़ा के ईश्वर की मंजूषा को थाम लिया

७ क्योंकि बैलों ने उसे हिलाया था। तब परमेश्वर का क्रोध अज़्ज़ा पर भड़का और ईश्वर ने उसे उसकी ढिठाई के कारण
८ मारा और वुह ईश्वर की मंजूषा के लग मर गया। और इस कारण कि परमेश्वर ने अज़्ज़ा पर दरार किया दाऊद उदास ऊआ और उसने उस स्थान का नाम आज लों अज़्ज़ा का दरार
९ रक्खा। और दाऊद उस दिन परमेश्वर से डरा और बोला
१० कि परमेश्वर की मंजूषा मुझ पास क्योंकर आवेगी। और दाऊद ने न चाहा कि परमेश्वर की मंजूषा को अपने नगर में लेजाके अपने पास रक्खे परंतु दाऊद उसे एक अलंग
११ ओबेदअदूम गित्ती के घर लेगया। और परमेश्वर की मंजूषा ओबेदअदूम गित्ती के घर में तीन मास लों रही और परमेश्वर ने ओबेदअदूम को और उसके सारे घराने को आशीष
१२ दिया। और यह दाऊद राजा से कहागया कि परमेश्वर ने ओबेदअदूम को और उसकी हर एक वस्तु को अपनी मंजूषा के लिये आशीष दिया तब दाऊद गया और ईश्वर की मंजूषा को ओबेदअदूम के घर से अपने नगर में आनंद से चढ़ा
१३ लाया। और यों ऊआ कि जब परमेश्वर की मंजूषा के उठवैये छः डग चलते थे तब दाऊद बैल और पलेऊओं को बलि
१४ करता था। और दाऊद परमेश्वर के आगे सूती अफूद कटि
१५ में बांधे ऊए अपनी शक्ति भर नाचते नाचते चला। और दाऊद और इसराईल के सारे घराने परमेश्वर की मंजूषा
१६ को ललकारते और नरसिंगे के शब्द के साथ लेआये। और ज्यों परमेश्वर की मंजूषा दाऊद के नगर में पऊंची साऊल की बेटी मीकाल ने खिड़की में से दृष्टि किई और दाऊद राजा को परमेश्वर के आगे उछलते और नाचते देखा और उसने
१७ अपने मन में उसकी निंदा किई। और वे परमेश्वर की मंजूषा को भीतर लाये और उसे उसके स्थान पर उस तंबू के मध्य, जो दाऊद ने उसके लिये खड़ा किया था रख दिया

और दाऊद ने होम की भेंटें और कुशल की भेंटें परमेश्वर के
१८ आगे चढ़ाईं। और जब दाऊद होम की भेंटें और कुशल
की भेंटें चढ़ा चुका तब उसने लोगों को सेनाओं के परमेश्वर
१९ के नाम से आशीष दिया। और उसने सारे लोगों को अर्थात्,
इसराईल की सारी मंडली को, क्या स्त्री क्या पुरुष, हर एक
को एक एक रोटी और एक एक अच्छा टुकड़ा मांस और
एक एक कटोरा दाख रस दिया और समस्त लोग अपने अपने
२० घर को चले गये। तब दाऊद अपने घराने को आशीष
देने को फिरा उस समय साऊल की बेटी मीकाल दाऊद की
भेंट को निकली और बोली कि इसराईल का राजा आज क्याही
ऐश्वर्यमान था जिसने आज अपने सेवकों की दासियों की
आंखों में आप को ऐसा उघारा जैसाकि तुच्छ जन आप को
२१ निर्लज्जा से उघारता है। तब दाऊद ने मीकाल से कहा कि
यह परमेश्वर के आगे था जिसने मुझे तेरे पिता के और उसके
सारे घराने के आगे चुना और अपने इसराईल लोग पर
मुझे आज्ञाकारी किया इस लिये मैं परमेश्वर के आगे लीला
२२ करोंगा। और मैं इसे भी अधिक तुच्छ होंगा और अपनी
दृष्टि में नीचा होंगा और जिन दासियों के विषय में तू ने
२३ कहा है मैं उनसे प्रतिष्ठा पाओंगा। इस लिये साऊल की
बेटी मीकाल अपने जीवन भर निर्बंश रही।

७ सातवां पर्ब्ब ।

नासान दाऊद के मंदिर बनाने की वांछा से प्रसन्न होता है १—४ फेर परमेश्वर की आज्ञा से उसे बरजता है ५—११ उसके बंश को आशीष देने की बाचा देता है १२—१७ दाऊद की प्रर्थना और धन्य मान्ना १८—२९ ।

१ और ऐसा हुआ कि जब राजा घर में बैठा था और परमेश्वर ने

२ उसे उसके सारे बैरियों से चारों ओर चैन दिया। तब राजा ने नासान आगमज्ञानी को कहा कि देख मैं अरजवृक्ष के घर में रहता हों परंतु ईश्वर की मंजूषा ओझलों में रहती
३ है। नासान ने राजा से कहा कि जा जो कुछ तेरे मन में है
४ उसे कर क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ है। और उसी रात ऐसा हुआ कि परमेश्वर का बचन यह कहिके नासान
५ को पहुंचा। कि जा और मेरे सेवक दाऊद से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या मेरे निवास के लिये तू एक
६ घर बनावेगा?। जब से इसराईल के संतान को मिसर से निकाल लाया मैं ने तो आज के दिन लों घर में बास न किया
७ परंतु तंबू में और डेरे में फिरा किया। जहां जहां मैं सारे इसराईल के संतान के साथ फिरता रहा क्या मैं ने इसराईल की किसी गोष्ठियों से कहा जिसे मैं ने आज्ञा किई कि मेरे इसराईल लोगों को चरावे कि तुम मेरे लिये अरज काष्ठ का घर
८ क्यों नहीं बनाते। अब इस लिये तू मेरे सेवक दाऊद से कह कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे भेड़शाले में से भेड़ का पीछा करने से लेके अपने इसराईली लोगों पर
९ अध्यक्ष किया। और जहां जहां तू गया मैं तेरे साथ साथ रहा और तेरे सारे बैरियों को तेरे साम्ने से मारा है और मैं ने जगत के महान लोगों के नाम के समान तेरा नाम बढ़ाया
१० है। इस्से अधिक मैं अपने इसराईली लोगों के लिये एक स्थान ठहराओंगा और उन्हें लगाओंगा जिसतें वे अपनेही स्थान में बसें और फिर अस्थिर न होवें और दुष्टता के वंश
११ आगे की नाईं उन्हें न सतावें। और उस समय की नाईं जब से मैं ने न्यायियों को अपने इसराईली लोगों पर ठहराया और तुझे तेरे सारे बैरियों से चैन दिया परमेश्वर तुझे यह
१२ भी कहता है कि मैं तेरे लिये घर बनाओंगा। और जब तेरे दिन पूरे होंगे और तू अपने पितरों के साथ शयन

करेगा तब मैं तेरे पीछे तेरे बंश को उभाड़ोंगा जो तेरेही
१३ उदर से होगा और उसके राज्य को स्थिर करोंगा। मेरे
नाम के लिये वही घर बनावेगा और मैं उसके राज्य के
१४ सिंहासन को सदा लों स्थिर करोंगा। मैं उसका पिता होंगा
और वुह मेरा बेटा होगा यदि वुह अपराध करे तो मैं उसे
मनुष्यों की छड़ी से और मनुष्यों के संतान की मार से ताड़ना
१५ करोंगा। परंतु मेरी दया उसे अलग न होगी जिस रीति
से कि मैं ने साऊल से उठालिई जिसे मैं ने तेरे आगे से अलग
१६ किया। परंतु तेरा घर और तेरा राज्य तेरे आगे सनातन
लों स्थिर रहेगा और तेरा सिंहासन नित्य स्थिर रहेगा।
१७ सो नासान ने इस समस्त दर्शन के समान और समस्त बचन
१८ के तुल्य दाऊद से कहा। तब दाऊद राजा भीतर
गया और परमेश्वर के आगे बैठ के कहा कि हे ईश्वर परमेश्वर
मैं कौन? और मेरा घर क्या कि तू ने मुझे यहां लों पडंचाया?।
१९ और तेरी दृष्टि में हे ईश्वर परमेश्वर यह भी छोटी बात थी
परंतु तू ने अपने सेवक के घर के बिषय में आगे को बङत
दिन के लिये कहा और हे ईश्वर परमेश्वर क्या मनुष्य का यह
२० व्यवहार है?। और दाऊद तुझे क्या कहि सक्ता है क्योंकि हे
२१ ईश्वर परमेश्वर तू अपने सेवक को जानता है। क्योंकि अपने
मन के और अपने बचन के कारण तू ने ये सारे महत्कार्य्य किये
२२ कि अपने सेवक को जनावे। इस कारण हे ईश्वर परमेश्वर
तू महान है क्योंकि तेरे समान कोई नहीं और तुझे छोड़ कोई
ईश्वर नहीं उन सभों के समान जो हमने अपने कानों से सुना
२३ है। और जगत में तेरे इसराईल लोग के समान पृथिवी में
कौनसी जाति है जिसे अपनाही लोग बनाने के लिये ईश्वर
छुड़ाने गया कि अपना नाम करे और जिसतें तुम्हारे लिये
बड़े बड़े और भयंकर कार्य्य अपने देश के लिये अपने लोगों
के आगे करे जिन्हें तू ने मिसर से जातिगणों से और उनके

२४ देशतों से छुड़ाया। क्योंकि तू ने अपने लिये अपने इसराईल लोग को दृढ़ किया कि अपने लिये सनातन के लोग होवें और
२५ हे परमेश्वर तू उनका ईश्वर ऊआ। और अब हे ईश्वर परमेश्वर उस बात को, जो तू ने अपने सेवक के विषय में, और उसके घराने के विषय में, कहा है सदा लों स्थिर रख और
२६ अपने कहने के समान कर। और यह कहिके तेरा नाम सनातन लों बढ़ जाय कि सेनाओं का परमेश्वर इसराईल का ईश्वर और तेरे सेवक दाऊद का घर तेरे आगे स्थिर होवे।
२७ क्योंकि हे सेनाओं के परमेश्वर इसराईल के ईश्वर तू ने अपने सेवक के कान यह कहिके खोला है कि मैं तेरे लिये घर बनाओंगा सो तेरे सेवक ने अपने मन में पाया कि तेरे आगे
२८ यह प्रर्थना करे। और अब हे ईश्वर परमेश्वर तू वही ईश्वर है और तेरी बातें सच्ची हैं और तू ने अपने सेवक से इस
२९ भलाई की बाचा दिई है। सो इस लिये अनुग्रह करके अपने सेवक के घराने पर आशीष दे जिसतें वुह सनातन लों तेरे आगे बना रहे क्योंकि हे ईश्वर परमेश्वर तू ने कहा है सो तेरे आशीष से तेरे सेवक का घर सनातन लों आशीष पावे।

८ आठवां पर्ब्ब ।

फ़लस्तानियों को और मवाबियों को दाऊद बश में करता है १—२ वुह हदादिज़र को और सुरयानियों को मारता है ३—८ तोई यूराम को भेटों के साथ उसके पास भेजता है दाऊद उन्हीं भेटों को लूट के संग परमेश्वर को समर्पण करता है ९—१३ अदूम में चौकी बैठाता है और उसके प्रधानों का नाम १४—१८ ।

१ इस के पीछे दाऊद ने फ़लस्तानियों को मारा और उन्हें बश में किया और दाऊद ने मिथेग अम्माः फ़लस्तानियों के हाथ से

२ लिया । और उसने मवाब को मारा और उन्हें भूमि पर गिरा के रस्सी से नापा अर्थात् दो रस्सियों से बंधन करने को और एक पूरी रस्सी से जिलाने को और मवाबी दाऊद के
३ सेवक ऊए और भेंट लाये । और दाऊद ने ज़ूबा के राजा रिहोब के बेटे हदादिज़र को भी, जब कि वुह अपना सिवाना
४ छुड़ाने को फ़रात नदी को गया, मार लिया । और दाऊद ने उसके एक सहस्र रथ और सात सौ घोड़चढ़े और बीस सहस्र पैदल लिये और समस्त रथों के घोड़ों की गोड़नसें काट डालीं
५ परंतु उन में से सौ रथों के लिये रख छोड़ा । और जब कि दमिश्क के सुरियानी हदादिज़र सोबा के राजा की सहाय को आये तब दाऊद ने सुरयानियों में से बाईस सहस्र लोग मार
६ डाले । तब दाऊद ने दमिश्क के सुरिया में चौकियां बैठलाईं और सुरियानी दाऊद के सेवक ऊए और भेंटें लाये और जहां कहीं दाऊद गया परमेश्वर ने उसकी रक्षा किई ।
७ और दाऊद ने हदादिज़र के सेवकों की सोने की ढालें लेके
८ यिरोशलीम में पऊंचाईं । और बीता से और बरोताई से जो हदादिज़र के नगर हैं दाऊद राजा बऊतसा पीतल लाया ।
९ और जब कि हामास के राजा ताई ने सुना कि दाऊद ने
१० हदादिज़र की सारी सेना मारी । तब ताई ने अपने बेटे यूराम को दाऊद राजा पास भेजा और उसका कुशल पूछा और बधाई दिई इस कारण कि उसने संग्राम करके हदादिज़र को मार डाला क्योंकि हदादिज़र ताई से लड़ा करता था और अपने हाथ में चांदी के और सोने के और
११ तांबे के पात्र लाये । दाऊद राजा ने उन्हें उस चांदी और सोने सहित जो उसने सब जातिगणों से, जिन्हें उसने वश में
१२ किया । अर्थात् सुरिया से और मवाब से और अमून के संतान से और फ़िलस्तानियों से और अमालेक से और सूबा के राजा रिहोब के बेटे हदादिज़र से लूट में ले लिया था

१३ परमेश्वर को समर्पण किया। और जब दाऊद अठारह सहस्र सुरियानियों को नोन की तराई में मार के फिर आया तब १४ उसकी कीर्त्ति फैली। और उसने अदूम में चौकियां बैठाईं और सारे अदूम में चौकियां और सारे अदूमी भी दाऊद के सेवक ऊए और जहां कहीं दाऊद गया परमेश्वर ने उसकी १५ रक्षा किई। और दाऊद सारे इसराईल पर राज्य करतारहा और दाऊद अपनी समस्त प्रजा के लिये बिचार और न्याय १६ करता था। और सरोया का बेटा यूआब सेना पर था और १७ अहीलूद का बेटा यहूशाफ़ात स्मारक था। अहीतूब का बेटा सादूक़ और अबियासार का बेटा अहीमलक याजक थे १८ और सारया लेखक था। और यहायदा का बेटा बनाया करीती और पलीती पर था और दाऊद के बेटे प्रधान आज्ञाकारी थे।

९ नवां पर्ब्ब ।

दाऊद मफ़ीबोशीश को बुलवा भेजता है १—६ और यूनासान के लिये उसे अपने साथ खिलाता है और साऊल की संपत्ति उसी को देता है ७—८ सीबा को उसका कार्य्य कारी करता है ९—१३ ।

१ फिर दाऊद ने कहा कि अब भी साऊल के घराने में से कोई २ बचा है कि मैं उस पर यूनासान के लिये कृपा करों? । और साऊल के घराने का एक सेवक सीबा नाम था और जब उन्हों ने उसे दाऊद पास बुलाया राजा ने उसे कहा कि तू ३ सीबा है? वुह बोला मैं आप का सेवक हों। तब राजा ने पूछा कि साऊल के घराने में से कोई भी है जिसतें मैं उस पर ईश्वरीय कृपा दिखाओं? सीबा ने राजा से कहा कि अब लों यूनासान ४ का एक लंगड़ा बेटा है। तब राजा ने उसे पूछा वुह कहां है?

सीबा ने राजा से कहा कि देखिये अम्मील के बेटे माकर के घर
५ लोदीबार में है। तब दाऊद राजा ने भेज के अम्मील
के बेटे माकर के घर से, जो लोदीबार में है, उसे मंगवा लिया।
६ और जब साऊल के बेटे यूनासान का बेटा मफ़ीबोशीश
दाऊद पास पङंचा तब उसने औंधा गिर के दंडवत किई
तब दाऊद ने कहा कि मफ़ीबोशीश उसने उत्तर दिया देखिये
७ आप सेवक है। और दाऊद ने उसे कहा कि मत डर
क्योंकि निश्चय तेरे पिता यूनासान के लिये तुझ पर अनुग्रह
करेंगा और तेरे पिता साऊल की सारी भूमि तुझे फेर
८ देओंगा और तू मेरे मंच पर नित भोजन किया कर। तब
उसने दंडवत किई और कहा कि आप का सेवक क्या कि आप
९ मुझसे मरे ऊए कुत्ते पर दृष्टि करें?। तब राजा ने
साऊल के सेवक सीबा को बुलाया और उसे कहा कि मैं ने
सब जो कुछ कि साऊल का और उसके घराने का था तेरे
१० स्वामी के बेटे को दे दिया है। सो तू अपने बेटों और सेवकों
समेत उसके लिये भूमि जोत और लेआ जिसतें तेरे स्वामी
के खाने को रहे परंतु मफ़ीबोशीश जो तेरे स्वामी का बेटा है
नित मेरे मंच पर भोजन किया करेगा और सीबा के पंदरह
११ बेटे और बीस सेवक थे। तब सीबा ने राजा से कहा कि सब
जो मेरे प्रभु राजा ने अपने सेवक को कहा सो आप का
सेवक करेगा परंतु मफ़ीबोशीश जो है सो मेरे मंच पर
१२ राजपुत्रों में से एक के समान खायगा। और मफ़ीबोशीश का
एक छोटा बेटा था जिसका नाम मीका था और सब जितने
१३ कि सीबा के घर में रहते थे मफ़ीबोशीश के सेवक थे। सो
मफ़ीबोशीश यिरोशलीम में रहा क्योंकि वुह राजा के मंच
पर सदा भोजन करता था और दोनों पाओं से लंगड़ा था।

१० दसवां पर्ब्ब ।

दाऊद नहाश के पुत्र हानून पास दूतों को भेजता है जिनकी दुर्दशा होती है १—५ अमूनी सुरियानियों से सहाय पाके यूआब और अबीशाई के बश में होते हैं ६—१४ शोबाक फेर सुरियानियों को बटोरता है और दाऊद से मारा जाता है १—१९

१ उसके पीछे ऐसा हुआ कि अमून के संतान का राजा मरगया
२ और उसका बेटा हानून उसके राज्य पर बैठा। तब दाऊद ने कहा कि मैं नाहाश के बेटे हानून पर अनुग्रह करोंगा जैसा उसके पिता ने मुझ पर अनुग्रह किया सो दाऊद ने अपने सेवक को भेजा कि उसके पिता के लिये उसे शांति देवे
३ और दाऊद के सेवक अमून के संतान के देश में पहुंचे। और अमून के संतान के अध्यक्षों ने अपने प्रभु हानून को कहा कि आप की दृष्टि में क्या दाऊद आप के पिता की प्रतिष्ठा करता है कि उसने शांतिदायकों को आप के पास भेजा है? क्या दाऊद ने अपने सेवकों को आप के पास इस लिये नहीं भेजा है कि नगर को देख लेवें और उसका भेद लेवें और उसे नाश
४ करें? । तब हानून ने दाऊद के सेवकों को पकड़ा और हर एक की आधी दाढ़ी मुंड़वाई और उनके वस्त्रों को बीच से अर्थात्
५ पुट्ठे लों काटा और उन्हें फेर भेजा। सो दाऊद को संदेश पहुंचा और उसने उन्हें आगे से लेने के लिये लोग भेजे इस कारण कि वे अत्यंत लज्जित थे सो राजा ने कहा कि जब लों तुम्हारी दाढ़ियां बढ़ें अरीहा में रहो उसके पीछे चले
६ आओ। और अमून के संतान ने ज्यों देखा कि हम दाऊद के आगे दुर्गंध हैं तो अमून के संतान ने भेज के बैतरहूब के सुरियानियों के और सूबा के सुरियानियों क बीस सहस्र पैदल और मआका के राजा से सहस्र जन और
७ तूब के बारह सहस्र जन भाड़े पर लिये। दाऊद ने यह सुन के

८ यूआब और सूरों की सारी सेना को भेजा। तब अमून के संतान निकले और नगर के फाटक की पैठ में युद्ध के लिये पांती बांधी और सूबा के और रहूब के सुरियानी और इस्तूब और मआका आपीआप चैागान में थे।
९ जब यूआब ने अपने आगे पीछे लड़ाई का साम्ना देखा तब उसने इसराईल के चुने ऊए में से चुन लिये और
१० सुरियानियों के साम्ने पांती बांधी। और उबरे ऊए लोगों को अपने भाई अबिशाई को सैांपा कि अमून के संतान के
११ आगे पांती बांधे। और कहा कि यदि सुरियानी मुझ पर प्रबल होवें तो तू मेरी सहाय कीजियो परंतु यदि अमून के संतान तुझ पर प्रबल होवें तो मैं आके तेरी सहाय करोंगा।
१२ सो ढाढ़स कर और अपने लोगों के लिये और अपने ईश्वर के नगरों के लिये पुरुषार्थ कर और परमेश्वर जो भला जाने
१३ सो करे। तब यूआब और उसके साथ के लोग सुरियानियों
१४ के सन्मुख बढ़े और वे उसके आगे से भागे। और अमून के संतान भी यह देख के कि सुरियानी भागे वे भी अबिशाई के आगे से भागे और नगर में घुसे सो यूआब अमून के संतान
१५ के पीछे से फिर के यिरोशलीम को आया। और जब सुरियानियों ने देखा कि हम इसराईल के आगे मारे गये वे
१६ एकट्ठे बटुर गये। और हदारज़र भेज के नदी पार से सुरियानियों को ले आया और वे हीलम में आये और शोबाख़
१७ जो हदारज़र की सेना का प्रधान था उनके आगे आगे। और जब दाऊद को कहागया वुह सारे इसराईलियों को एकट्ठा करके अर्दन पार उतरा और हीलम को आया और सुरियानी ने दाऊद के सन्मुख पांती बांधी और उससे
१८ लड़े। और सुरियानी इसराईल के साम्ने से भागे और दाऊद ने सात सैा रथों के सुरियानी और चालीस सहस्र घोड़चढ़े मारे और उनकी सेना के प्रधान शोबाख़ को मार

१९ लिया और वुह वहीं मरगया। और जब उन राजाओं न जो हदारज़र के सेवक थे देखा कि वे इसराईल के आगे मारेगये तब उन्हों ने इसराईलियों से मिलाप किया और उनकी सेवा किई सो सुरियानी फेर अमून के संतन की सहाय करने को डरे।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

यूआब का रब्बः को घेरते ऊए दाऊद व्यभिचार में पड़ता है १—५ औरिया को बुलवा भेजता है जिसतें अपने पाप छिपावे परंतु वुह घर नहीं जाता ६—१३ औरिया अपने मारे जानेकी पत्री यूआब पास लेजाता है १४—१७ यूआब उसका संदेश दाऊद पास भेजता है १८—२५ दाऊद बैतशबा को पत्नी करता है २६—२७।

१ और जब बरस बीत गया जब कि राजा लड़ाई पर चढ़ते हैं यों ऊआ कि दाऊद ने अपने सेवकों को और समस्त इसराईल को यूआब के साथ भेजा और उन्हों ने अमून के संतान को नाश किया और रब्बा को घेर लिया परंतु दाऊद

२ यिरोशलीम में रहि गया। और एक संध्या काल को यों ऊआ कि दाऊद अपने बिछौने पर से उठा और राज भवन की छत पर टहलने लगा और वहां से उसने एक स्त्री को

३ स्नान करते देखा और वुह देखने में अत्यंत सुंदरी थी। और दाऊद ने भेजके उस स्त्री का खोज किया किसी ने कहा कि वुह एलीआम की बेटी बैतशबा औरिया हत्ती की पत्नी नहीं

४ है?। और दाऊद ने दूत भेज के उसे लिया और वुह दाऊद पास आई और वुह उसे अकर्म्म किया क्योंकि वुह अपनी अपवित्रता से पवित्र ऊई थी फिर वुह अपने घर को चली गई।

५ और वुह स्त्री गर्भिणी ऊई और दाऊद को कहला भेजा कि मैं

६ गर्भिणी हों। और दाऊद ने यूआब को कहला भेजा कि हट्टी ओरिया को मुझ पास भेज दे सो यूआब ने ओरिया
७ को दाऊद पास भेज दिया। और जब ओरिया उस पास आया तब दाऊद यूआब का अरु और लोगों का कुशल क्षेम
८ और लड़ाई का समाचार पूछा। फिर दाऊद ने ओरिया को कहा कि अपने घर जा और अपने पांव धो ओरिया राजा के घर से निकला और उसके पीछे पीछे राजा के घर से भोजन
९ गया। पर ओरिया राजा के घर की देवढ़ी पर अपने प्रभु के सेवकों के साथ सो रहा और अपने घर को उतर न गया।
१० और जब दाऊद को कहागया कि ओरिया अपन घर नहीं उतर गया तब दाऊद ने ओरिया से कहा कि क्या तू यात्रा से
११ नहीं आया? फेर तू अपने घर क्यों न गया?। ओरिया ने दाऊद से कहा कि मंजूषा और इसराईल और यहूदा तंबूओं में रहते हैं और मेरा प्रभु यूआब और मेरे प्रभु के सेवक खुले चौगान में पड़े ऊए हैं और मैं क्योंकर अपने घर जाओं और खाओं और पीओं और अपनी स्त्री के साथ सो रहों? तेरे जीवन सैां और तेरे प्राण के जीवन सैां मैं ऐसा न करोंगा।
१२ फिर दाऊद ने ओरिया को कहा कि आज के दिन भी यहीं रहजा और कल मैं तुझे भेजोंगा सो ओरिया उस दिन भी प्रातःकाल
१३ लों यिरोशलीम में रहि गया। तब दाऊद ने उसे बुला के अपने साम्ने खिलाया पिलाया और उसे उन्मत्त किया सांझ को वुह बाहर जाके अपने प्रभु के सेवकों के साथ अपने बिछौने
१४ पर सो रहा परंतु अपने घर न गया। और प्रातःकाल को यों ऊआ कि दाऊद ने यूआब को चिट्ठी लिख के ओरिया
१५ के हाथ भेजी। और उसने चिट्ठी में यह लिखा कि ओरिया को भारी लड़ाई के आगे करो और उसके पीछे से हटजाओ
१६ जिसतें वुह मारा जाये। और ऐसा ऊआ कि जब यूआब ने उस नगर को बूझ लिया तो उसने ओरिया को ऐसे स्थान में

१७ ठहराया जहां वुह जानता था कि सूरमा हैं। और उस नगर के लोग निकले और यूआब से लड़े और दाऊद के सेवकों में से गिरे और हट्टी औरिया भी मारा गया।
१८ तब यूआब ने युद्ध का समस्त समाचार दाऊद को
१९ कहला भेजा। और दूत को आज्ञा किई कि जब तू राजा से
२० युद्ध का समाचार कह चुके। तो यदि ऐसा हो कि राजा का क्रोध भड़के और वुह तुझे कहे कि जब तुम लड़ाई पर चढ़े तो नगर के निकट क्यों आये? क्या तुम न जानते थे कि वे भीत
२१ पर से मारेंगे?। ज़रब्ब्आल के बेटे अबिमलक को किसने मारा? एक स्त्री ने चक्की का पाट भीत पर से उस पर नहीं देमारा? कि वुह थबीज़ में मरा तुम भीत के नीचे क्योंगये थे? तब कहियो कि तेरा सेवक हट्टी औरिया भी मारा गया।
२२ सो दूत बिदा हुआ और आया और जो कुछ कि यूआब ने
२३ कहला भेजा था सो दाऊद को सुनाया। और दूत ने दाऊद से कहा कि लोग हम पर प्रबल हुए और वे चौगान में हम पर निकले और हम उन्हें रगेदे हुए फाटक की पैठ लों चले
२४ गये। तब धनुषधारियों ने भीत पर से तेरे सेवकों को बाण से मारा और राजा के कितने ही सेवक मारे गये और आप का
२५ सेवक हट्टी औरिया भी मारा गया। तब दाऊद ने दूत से कहा कि यूआब को जाके उभाड़ और कह कि यह बात तेरी दृष्टि में बुरी न लगे क्योंकि खड्ग जैसा एक को वैसा दूसरे को काटता है तू नगर के साम्ने संग्राम को दृढ़ कर और उसे
२६ ढ़ादे। और औरिया की स्त्री अपने पति औरिया का
२७ मरना सुन के बिलाप करने लगी। और जब शोक के दिन बीत गये तब दाऊद भेज के उसे अपने घर में लाया और वुह उसकी पत्नी हुई और वुह उसके लिये बेटा जनी परंतु जो कुछ कि दाऊद ने किया परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था।

नासान दृष्टांत लाता है और दाऊद को अपना
ही न्यायी बनाता है १—६ नासान से दपटा जाके
दाऊद अपने पाप को मानलेता है और क्षमा पाता
है ७—१४ बालक के जीवन भर दाऊद विलाप
करके उसके लिये प्रार्थना करता है १५—२३
सुलेमान उत्पन्न होता है २४—२५ रब्बा को लेके
उसके लोगों को कष्ट देता है २६—३१ ।

१ और परमेश्वर ने नासान को दाऊद पास भेजा उसने उस
पास आके कहा कि नगर में दो जन थे एक तो धनी दूसरा
२।३ कंगाल। उस धनी के पास बज्जत से झुंड और ढोर थे। परंतु
उस कंगाल के पास भेड़ की एक पठिया को छोड़ कुछ नथा
उसे उसने मोल लिया और पाला था और वुह उसके
और उसके बालबच्चों के साथ बढ़ी और उसीही का कौर खाती
और उसीही के कटोरे से पीती थी और उसकी गोद में सोती
४ थी और उसके लिये कन्या के समान थी। और उस धनमान
के पास एक पथिक आया तब उसने उसके लिये सिद्ध करने
को अपनेही झुंड और अपनेही ढोर को बचा रक्खा परंतु उस
कंगाल की पठिया लिई और उस पुरुष के लिये, जो उस पास
५ आया था, पकवाया। तब दाऊद का क्रोध उस पुरुष पर
बज्जत भड़का और उसने नासान से कहा कि परमेश्वर के
जीवन सों जिस पुरुष ने यह काम किया सो निश्चय मारडालने के
६ योग्य है। और वुह पठिया चौगुनी उसे फेर देय इस कारण
७ कि उसने ऐसा काम किया और कुछ मया न किई। तब
नासान ने दाऊद से कहा कि वुह पुरुष तूही है परमेश्वर
इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे इसराईल
पर राज्याभिषेक किया है और मैं ने तुझे साऊल के हाथ
८ से छुड़ाया। और मैं ने तेरे स्वामी का घर तुझे दिया और
तेरे स्वामी की स्त्री को तेरी गोद में दिया और इसराईल

और यहूदा का घराना तुझे दिया और यदि यह थोड़ा था
९ तो मैं तुझे ऐसो वैसी वस्तु भी देता। सो तू ने क्यों परमेश्वर की
आज्ञा की निंदा किई कि उसकी दृष्टि में बुराई करे? तू ने हट्टी
औरिया को खड्ग से मरवाया और उसकी पत्नी को लेके अपनी
पत्नी किई और उसे अमून के संतान के खड्ग से मरवाडाला।
१० इस लिये अब तेरे घर से खड्ग कधी जाता न रहेगा इस
कारण कि तू ने मुझे तुच्छ किया और हट्टी औरियाह की पत्नी
११ को लेके अपनी पत्नी किई। परमेश्वर यों कहता है कि देख
मैं तेरेही घर से तुझ पर बुराई उभाड़ेंगा और मैं तेरी
आंखों के आगे तेरी पत्नियों को लेके तेरे परोसी को देओंगा
और वुह इस सूर्य के साम्ने तेरी पत्नियों के साथ अकर्म्म
१२ करेगा। क्योंकि तू ने छिप के किया पर मैं यह सारे इसराईल के
१३ साम्ने और सूर्य के साम्ने करोंगा। तब दाऊद ने नासान
से कहा कि मैं ने परमेश्वर का अपराध किया और नासान
ने दाऊद से कहा कि परमेश्वर ने भी तेरे अपराध को दूर
१४ किया तू न मरेगा। तथापि इस काम के कारण से तू ने
परमेश्वर के बैरियों को उसकी अपनिंदा करने का कारण
दिया लड़का भी जो तेरे लिये उत्पन्न है निश्चय मरजायगा।
१५ नासान घर को गया और परमेश्वर ने उस लड़के
को जो औरिया की पत्नी दाऊद के लिये जनी थी मारा कि वुह
१६ बड़ा रोगी ऊआ। इस लिये दाऊद ने उस लड़के के लिये
ईश्वर से बिनती किई और ब्रत रक्खा और भीतर जाके सारी
१७ रात भूमि पर पड़ा रहा। और उसके घर के प्राचीन उसे
भूमि पर से उठाने को आये परंतु उसने न चाहा और न
१८ उनके साथ भोजन किया। और सातवें दिन वुह लड़का
मरगया और दाऊद के सेवक उसे कहने से डरे कि लड़का
मरगया क्योंकि उन्हों ने कहा कि देखो जब लड़का जीताही
था तब हमने उसे कहा और उसने हमारी बात न मानी

और यदि हम उसे कहें कि लड़का मर गया फेर वुह आप
१९ को कैसा कष्ट देगा? । पर जब दाऊद ने देखा कि उसके सेवक
फुसफुसा रहे हैं उसने बूझा कि लड़का मर गया इस लिये
दाऊद ने सेवकों को कहा कि क्या लड़का मर गया? वे बोले कि
२० मर गया । तब दाऊद भूमि पर से उठा और नहाया और
सुगंध लगाया और वस्त्र बदला और परमेश्वर के घर में
आया और दंडवत किई तब वुह अपने घर गया और जब
उसने चाहा तब उसके आगे रोटी धरी गई और उसने
२१ खाई । तब उसके सेवकों ने उसे कहा कि आप ने यह कैसा
किया है? जब लों लड़का जीता था आप न ब्रत करके बिलाप किया
२२ परंतु जब लड़का मर गया तब उठके रोटी खाई । उसने कहा
कि जब लों लड़का जीताही था तब लों मैं ने ब्रत करके बिलाप
किया क्योंकि मैं ने कहा कि कौन जानता है कि ईश्वर मुझ पर
२३ अनुग्रह करेगा जिसतें लड़का जीये? । पर अब तो वुह मर गया
सो मैं किस लिये ब्रत करों? क्या मैं उसे फेर लासक्ताहों? मैं
उस पास जाओंगा पर वुह मुझ पास फिर न आवेगा ।
२४ और दाऊद ने अपनी पत्नी बैतसबा को शांति दिई
और उस पास गया और वुह बेटा जनी और उसने उसका
नाम सुलेमान रक्खा और परमेश्वर उस्से प्रीति रखता था ।
२५ और उसने नासान आगमज्ञानी के द्वारा से कहला भेज
के उसका नाम परमेश्वर के कारण परमेश्वर का प्रिय
२६ रक्खा । और यूआब अमून के संतान के रब्बःसे लड़ा
२७ और राज नगर ले लिया । फिर यूआब ने दूतों को भेज के
दाऊद को कहला भेजा कि मैं रब्बःसे लड़ा और मैं ने
२८ पानियों के नगर को ले लिया । अब आप उभड़े ऊए लोगों
को एकट्ठा करिये और इस नगर के आगे छावनी करके
उसे लीजिये नहो कि मैं उस नगर को लेओं और मेरा
२९ नाम उस पर होवे । तब दाऊद ने सारे लोग एकट्ठे किये

३० और रब्बःपर चढ़ा और लड़के उसे लेलिया। और उसने वहां के राजा का मुकुट उसके सिर पर से लिया उसका तौल रत्न सहित एक तोड़ा सोनेका था और वुह दाऊद के सिर पर था और उसने उस नगर से बड़ुत सी लूट निकाली।
३१ और उसने उसमें के लोगों को बाहर निकाल के आरों और लोहे के हेंगों से और कुल्हाड़ों के नीचे किया और उन्हें ईंटों के पैजावे में से चलाया और उसने अमून के संतान के सारे नगरों से ऐसाही किया और दाऊद सेना समेत यिरोशलीम को फिरा।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

अमनून तामार को प्यार करता है और बल से उसे अपना करता है १—१४ उसे बैर करके बाहर खदेड़ता है १५—१८ अबसालूम उसे घर में रखता है और मन का भेद छिपाता है १९—२२ राज पुत्रों के जेवनार में वुह अमनून को घात करता है २३—२९ शोकित होके दाऊद यूनादाब से शांति पाता है ३०—३६ अबसालूम गीशुर के राजा पास भाग जाता है ३७—३९ ।

१ और इसके पीछे ऐसा ड़ुआ कि दाऊद के बेटे अबसालूम की एक सुंदर बहिन थी जिसका नाम तामर और दाऊद
२ के बेटे अमनून ने उस पर मन लगाया था। और अमनून ऐसा बिकल ड़ुआ कि अपनी बहिन तामर के लिये रोगी ड़ुआ
३ क्योंकि वुह कुंआरी थी पर कुछ बन न पड़ता था। परंतु अमनून का एक मित्र था जिसका नाम यूनादाब जो दाऊद के भाई शमिया का बेटा था और यूनादाब एक अति चतुर
४ जन था। सो उसने उसे कहा कि राजा का बेटा होके तू क्यों प्रति दिन दुर्बल होता जाताहै? क्या तू मुझे न कहेगा? तब अमनून ने उसे कहा कि मेरा जीव अपने भाई अबसालूम

५ की बहिन तामर पर लगा है। तब यूनादाब ने उसे कहा कि तू अपने बिछौने पर पड़ा रह और आप को रोगी ठहरा और जब तेरा पिता तुझे देखने आवे तो उसे कहियो कि मैं आपकी बिनती करता हों कि मेरी बहिन तामर को आने दीजिये कि मुझे कुछ खिलावे और मेरे आगे भोजन पकावे
६ जिसतें मैं देखों और उसके हाथ से खाओं। सो अमनून पड़ा रहा और आप को रोगी ठहराया और जब राजा उसे देखने को आया तो अमनून ने राजा से कहा कि मैं आप की बिनती करता हों कि मेरी बहिन तामर को आने दीजिये कि मेरे आगे दो फुलके पकावे जिसतें मैं उसके हाथ से
७ खाओं। तब दाऊद ने तामर के घर कहला भेजा कि अभी अपने भाई अमनून के घर जा और उसके लिये भोजन बना।
८ सो तामर अपने भाई अमनून के घर गई और वुह पड़ा ज़ुआ था और उसने पिसान लेके गूंधा और उसके आगे
९ फुलके बनाये और उन्हें पकाये। और उसने एक पात्र लिया और उन्हें उसके आगे उंड़ेला पर उसने खाने को नाह किया तब अमनून ने कहा कि सब जन मुझ पास से बाहर निकल
१० जाओ सो हर एक उस पास से बाहर गया। और अमनून ने तामर को कहा कि भोजन कोठरी के भीतर ला कि मैं तेरे हाथ से खाओं सो तामर फुलके, जो उसने बनाये थे,
११ उठाके कोठरी में अपने भाई अमनून पास लाई। और जब वुह खिलाने के लिये उसके आगे लाई उसने उसे पकड़ा और उसे कहा कि आ बहिन मेरे संग लेट जा।
१२ वुह बोली नहीं भाई मुझे निंदित मत कर क्योंकि इसराईलियों
१३ में यह बात उचित नहीं सो ऐसी मूर्खता मत कर। और मैं किधर अपना कलंक छुड़ाओं? और तू जो है सो इसराईलियों में एक मूढ़ की नाईं होगा सो मैं तेरी बिनती करती हों
१४ कि राजा से कहिये वुह मुझे तुझ से न रोकेगा। तथापि उसने

उसकी बात न मानी परंतु उसे प्रबल होके बरबस किया
१५ और उसे अकर्म्म किया । तब अमनून ने उसे अति
घिन से घिन किया यहां लों कि जिस घिन से घिन किया उस
प्रीति से जो वुह उसे रखता था अधिक ऊआ और अमनून ने
१६ उसे कहा कि उठ दूर हो । उसने उसे कहा कि कारण नहीं
मेरे निकाल ने की बुराई, जो तू ने मुझे किई, अधिक बुरी पर
१७ उसने न माना । तब अमनून ने अपने सेवा करवैये एक
दास को बुलाके कहा कि अब इसे मुझ पास से निकाल दे
१८ और उसके पीछे द्वार में अगरी लगा । और उस पर
बऊरंग वस्त्र था क्योंकि राजा की कुंआरी बेटियां ऐसाही
वस्त्र पहिनती थीं तब उसके सेवकों ने उसे बाहर कर दिया
१९ और उसके पीछे द्वार पर अगरी लगाई । और तामर
ने सिर पर धूल डाली और अपना बऊरंगी वस्त्र फाड़ा
२० और सिर पर हाथ धरके रोती चली गई । और उसके
भाई अबसालूम ने उसे कहा कि क्या तेरा भाई अमनून
तेरे संग ऊआ? परंतु हे बहिन अब चुपकी हो रह वुह तेरा
भाई है उस बात पर अपना मन मत लगा तब तामर अपने
२१ भाई अबसालूम के घर में सत्यानाश पड़ी रही । परंतु दाऊद
२२ राजा इन सब बातों को सुनके अति क्रुद्ध ऊआ । और
अबसालूम ने अपने भाई अमनून को कुछ भला बुरा न कहा
इस लिये कि अबसालूम अमनून से घिन करता था क्योंकि
२३ उसने उसकी बहिन तामर पर बरबस किया था । और पूरे
दो बरस के पीछे ऐसा ऊआ कि बअलहसूर में, जो अफ़राईम
के लग है, अबसालूम की भेड़ों के ऊन छेदक थे तब अबसालूम
२४ ने राजा के सब बेटों को नेउंता दिया । और अबसालूम
राजा पास आया और कहा कि देखिये अब आपके सेवक की
भेड़ों के ऊन छेदक हैं सो अब मैं आप की बिनती करता हों
कि राजा और उसके सेवक भी आपके दास के साथ चलें ।

२५ तब राजा ने अबसालूम से कहा कि नहीं बेटे हम सब के सब न जायें जिसतें नहो कि तुझ पर भार होवें और उसने उसे बड़त मनाया परंतु तद भी वुह न गया पर उसे
२६ आशीष दिया। तब अबसालूम ने कहा कि यदि नहीं तो मैं आपकी बिनती करता हों कि मेरे भाई अमनून को हमारे साथ जाने दीजिये तब राजा ने उसे कहा कि वुह किस लिये
२७ तेरे साथ जाय?। परंतु अबसालूम ने उसे बड़त मनाया कि उसने अमनून को और सारे राज पुत्रों को उसके साथ जाने
२८ दिया। और अबसालूम ने अपने सेवकों को कहि रक्खा था कि चीन्ह रक्खो कि जब अमनून का मन मदिरा से मगन होवे और मैं तुम्हें कहों कि अमनून को मारो तब उसे घात कीजियो डरियो मत क्या मैं ने तुम्हें आज्ञा नहीं किई?
२९ सो ढाड़स और सूरता कीजियो। और जैसा कि अबसालूम ने उन्हें आज्ञा किई थी वैसाही उसके सेवकों ने अमनून से किया तब समस्त राजपुत्र उठे और हर एक जन अपने अपने खच्चर
३० पर चढ़ भागा। और ऐसा ऊआ कि उनके मार्ग में होते ही दाऊद पास यह समाचार पऊंचा कि अबसालूम ने सारे राज पुत्रों को मार डाला और उन में से एक भी न बचा।
३१ तब राजा उठा और अपने कपड़े फाड़े और भूमि पर लोट गया और उसके सारे सेवक भी कपड़े फाड़के उसके आगे खड़े ऊए।
३२ तब दाऊद के भाई शमिया का बेटा यूनादाब उत्तर देके बोला कि मेरे प्रभु ऐसा न समुझें कि समस्त तरुण अर्थात राज पुत्र मारे गये क्योंकि अमनून अकेला मारा गया इस लिये कि जिस दिन स अमनून ने अबसालूम की बहिन तामर पर बरबस किया, उसने
३३ यह बात ठान रक्खी थी। सो इस लिये मेरा प्रभु राजा इस बात को न समुझे कि समस्त राज पुत्र मारे गये क्योंकि केवल अमनून
३४ मारा गया। परंतु अबसालूम भागा और उस तरुण ने, जो पहरे पर था, आंखें उठाईं और दृष्टि किई और क्या देखता है

कि बज़तसे लोग मार्ग में पहाड़ की ओर से उसके पीछे आते
३५ हैं । यूनादाब ने राजा से कहा कि देखिये आपके दास के कहे
३६ के समान राजपुत्र आये । और ऐसा ऊआ कि जब वुह
कहि चुका तब राजपुत्र आ पऊंचे और चिल्ला चिल्ला बिलाप
किये राजा और उसके समस्त सेवकों ने बज़त बिलाप किया ।
३७ पर अबसालूम गीशूर के राजा अम्मिहूद के बेटे
तलमाई पास गया और दाऊद प्रतिदिन अपने पुत्र के लिये
३८ रोता था । और अबसालूम भागके गीशूर में गया और तीन
३९ बरस लों वहां रहा । और दाऊद राजा का मन अबसालूम
पास जाने को बज़त था क्योंकि अमनून के मरने के विषय में
उसका मन शांत ऊआ ।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

यूआब एक बिधवा को उभाड़ और दृष्टांत कहला
राजा के मन को झुकाता है और अबसालूम को
बुलवाता है १—२४ अबसालूम की सुंदरता
और बाल और संतान २५—२७ दो बरस पीछे
वुह राजा के आगे पऊंचाया जाता है २८—३३

१ अब सुरिया के बेटे यूआब ने देखा कि राजा का मन अबसालूम
२ की ओर है । तब यूआब ने टिकुआ में भेजके वहां से एक
बुद्धिमती स्त्री बुलवाई और उसे कहा कि मैं तेरी बिनती
करता हों कि उदासी का भेष बना और उदासी वस्त्र
पहिन और अपने पर तेल मत लगा परंतु ऐसा हो जैसे कोई
स्त्री जिसने बज़त दिन से मृतक के लिये बिलाप किया है ।
३ और राजा पास आ और इस रीति से उसे कह सो यूआब ने
४ उसके मुंह में बातें डालीं । और जब टिकुआ की स्त्री
राजा से बोली वुह भूमि पर औंधे मुंह गिरी और दंडवत
५ करके बोली कि हे राजा कुड़ाइये । तब राजा ने उसे कहा कि

तुझे क्या हुआ? वुह बोली मैं निश्चय विधवा स्त्री हों और मेरा
६ पति मर गया है। और आपकी दासी के दो बेटे थे उन दोनों
ने खेत में झगड़ा किया और उनमें कोई न था कि छुड़ावे और
७ एक ने दूसरे को मारा और बध किया। और देखिये कि सारे
घराने आपकी दासी पर उठे हैं और वे कहते हैं कि जिसने अपने
भाई को मार डाला उसे हमें सौंप दे जिसतें हम उसके भाई
के प्राण की संती, जिसे उसने घात किया, उसे मार डालें और
हम अधिकारी को भी नाश करेंगे और यों वे मेरी बचीऊई
चिनगारी को भी बुझा डालेंगे और मेरे पति के नाम और
८ बचेऊए को भूमि पर न छोड़ेंगे। तब राजा ने उस स्त्री
से कहा कि अपने घर जा और मैं तेरे विषय में आज्ञा
९ करोंगा। तब टिकुआ की उस स्त्री ने राजा से कहा कि मेरे
प्रभु राजा सारी बुराई मुझ पर और मेरे पिता के घराने
पर होवे और राजा और उसका सिंहासन निर्दोष रहे।
१० तब राजा ने कहा कि जो कोई तुझे कुछ कहे उसे मुझ पास
११ ला और वुह फिर तुझे न छूयेगा। तब वुह बोली मैं
बिनती करती हों कि राजा अपने ईश्वर परमेश्वर को स्मरण
करे कि रुधिर का पलटा दायक मेरे बेटे को घात करने को
न बढ़े तब वुह बोला परमेश्वर के जीवन सों तेरे बेटे का एक
१२ बाल भी भूमि पर न गिरेगा। तब उस स्त्री ने कहा कि मैं
आपकी बिनती करती हों कि अपनी दासी को एक बात अपने
१३ प्रभु राजा से कहने दीजिये वुह बोला कहे जा। तब उस स्त्री
ने कहा कि आप ने किस लिये ईश्वर के लोगों के बिरुद्ध ऐसी
चिंता किई? क्योंकि राजा ऐसी बात कहते हैं जैसा कोई इस बात
में दोषी है कि राजा भेजके अपने निकाले ऊए को घर में फेर
१४ नहीं लाते। क्योंकि हमें मरने पड़ेगा और पानी के समान
हैं जो भूमि पर गिराया जाके बटोरा नहीं जा सक्ता और
ईश्वर भी मनुष्यत्व पर दृष्टि नहीं करता तथापि वुह युक्ति

करता है कि उसका निकाला ऊआ उसे अलग न रहे ।
१५ सो अब जो मैं अपने प्रभु राजा पास इस बात के विषय में
कहने आई हों इस कारण कि लोगों ने मुझे डराया और आपकी
दासी ने कहा कि मैं आप राजा से कहोंगी कदाचित राजा
१६ अपनी दासी की विनती सुनें। क्योंकि राजा अपनी दासी
को उस पुरुष के हाथ से छुड़ाने को सुनेंगे जो मुझे और
मेरे बेटे को ईश्वर के अधिकार से निकाल के मार डाला
१७ चाहता है । तब आप की दासी बोली कि मेरे प्रभु राजा की
बात कुशल की होगी क्योंकि मेरे प्रभु राजा भला बुरा सुन्ने
में ईश्वर के दूत के समान हैं इस कारण परमेश्वर आप का
१८ ईश्वर आप के साथ होगा। तब राजा ने उस स्त्री को कहा
कि जो कुछ मैं तुझे पूछों तू मुझ से मत छिपा स्त्री बोली कि
१९ मेरे प्रभु राजा कहिये। तब राजा ने कहा कि क्या इन
सब बातों में यूआब भी तेरे साथ नहीं? उस स्त्री ने उत्तर दिया
कि आप के प्राण की किरिया हे मेरे प्रभु राजा कोई इन बातों
में से, जो प्रभु राजा ने कहीं हैं, दहिने अथवा बायें जा नहीं
सक्ता क्योंकि आपके सेवक यूआबही ने मुझे यह कहा है
और उसी ने यह सब बातें आप की दासी के मुंह में डालीं ।
२० आपके सेवक यूआब ने यह बात इस लिये किई जिसतें इस
कहने का डौल बनावे और पृथिवी के समस्त ज्ञान में मेरा
२१ प्रभु ईश्वर के दूत के समान बुद्धिमान है । तब राजा ने
यूआब को कहा कि देख मैं ने यह बात किई है सो जा और
२२ उस तरुण अबसालूम को फेर ला। सो यूआब भूमि पर
औंधा गिरा और दंडवत किई और राजा का धन्य माना
और यूआब बोला कि आज आप के सेवक को निश्चय ऊआ
कि मैं ने आपकी दृष्टि में अनुग्रह पाया कि हे मेरे प्रभु राजा
२३ आप ने अपने सेवक की विनती मानी। फिर यूआब उठके
जासूर को गया और अबसालूम को यिरोशलीम में लाया।

२४ तब राजा ने कहा कि उसे कह कि अपने घर जाय और मेरा मुंह न देखे सो अबसालूम अपने घर गया और राजा का मुंह न देखा । २५ परंतु समस्त इसराईल में कोई जन अबसालूम के तुल्य सुंदर और प्रसंसा के योग्य न था क्योंकि तलवे से लेके चांदी लों उसमें कोई पय न थो । २६ और जब वुह अपने सिर के बाल मुंडाता था (क्योंकि हर बरस के अंत में उसका यह बंधेज था इस लिये कि उसके बाल बक्कत घने थे) तोल में दो सौ मिश्काल राजा के बटखरे से होते थे । २७ और अबसालूम के तीन बेटे उत्पन्न ऊए और एक बेटी जिसका नाम तामर था वुह बक्कत सुंदर थी । २८ सो अबसालूम पूरे दो बरस यिरोशलीम में रहा और राजा का मुंह न देखा । २९ इस लिये अबसालूम ने यूआब को बुलवाया कि उसे राजा पास भेजे परंतु वुह न चाहता था कि उस पास आवे फिर उसने दुहरा के बुलवाया तब भी वुह न आया । ३० तब उसने अपने सेवकों से कहा कि देखो यूआब का खेत मेरे खेत से लगा है और वहां उसका जव है सो जाओ और उसमें आग लगाओ तब अबसालूम के सेवकों ने खेत में आग लगाई । ३१ तब यूआब उठा और अबसालूम के घर आया और उसे कहा कि तेरे सेवकों ने मेरे खेत में क्यों आग लगाई? । ३२ अबसालूम ने यूआब को उत्तर दिया कि देख मैं ने तुझे कहला भेजा कि यहां आ कि मैं तुझे राजा पास भेजके कहों कि मैं जसूर से क्यों यहां आया? मेरे लिये तो वहीं रहना अच्छा था सो अब तू मुझे राजा का मुंह दिखा और यदि मुझ में अपराध होवे तो वुह मुझे मार डाले । ३३ तब यूआब ने राजा पास जाके यह कहा और उसने अबसालूम को बुलाया सो वुह राजा पास आया और राजा के आगे औंधा गिरा और राजा ने अबसालूम को चूमा ।

१५ पंदरहवां पर्ब्ब ।

अबसालूम मीठी मीठी बोली से और नम्रता से लोगों के मन को चुरालेता है १—६ मनौती के कपट से हबरून को जाने की छुट्टी लेता है ७—९ वुह वहां बड़ा गुष्ट बांधता है १०—१२ इसका समाचार पाके दाऊद यिरोशलीम से भागता है और अपने यहां के दो जन को मंजूषा के साथ फेर भेजता है १३—२९ दाऊद बिलाप करता चला जाता है और अहीतुफेल के मंत्र पर स्राप देता है ३०—३९ ।

१ इन बातों के पीछे ऐसा ऊआ कि अबसालूम ने अपने लिये रथ और घोड़े और पचास मनुष्य अपने आगे दौड़ने को २ सिद्ध किया। और अबसालूम तड़के उठा और फाटक की अलंग खड़ा ऊआ और यों होता था कि जब कोई झगड़ा रख के राजा के न्याय के लिये आता था तब अबसालूम उसे बुलाके पूछता था कि तू किस नगर का है? उसने कहा कि तेरा सेवक ३ इसराईल की एक गोष्ठी में का है। और अबसालूम ने उसे कहा कि देख तेरा पद भला और ठीक है परंतु राजा की ओर ४ से कोई श्रोता नहीं है। और अबसालूम ने कहा हाय कि मैं देश में न्यायी होता कि जिस किसी का पद अथवा कारण ५ होता मुझ पास आता और मैं उसका न्याय करता। और जब कोई उस पास आता था कि उसे नमस्कार करे तो वुह हाथ ६ बढ़ाके उसे पकड़ लेता था और उसका चूमा लेता था। और इस रीति से अबसालूम सारे इसराईल से करता था जो राजा पास बिचार के लिये आते थे सो अबसालूम ने इसराईल के ७ मनुष्यों के मन चुराये। और चालीस बरस के पीछे ऐसा ऊआ कि अबसालूम ने राजा से कहा कि मैं आप की बिनती करता हों कि मुझे जाने दीजिये कि अपनी मनौती को

जो मैं ने परमेश्वर के लिये मानी है हबरून में पूरी करों ।
८ क्योंकि आप के दास ने, जब सुरिया जशूर में था, यह मनौती
मानी थी कि यदि परमेश्वर मुझे यिरोशलीम में निश्चय फेर
९ ले जायगा तो मैं परमेश्वर की सेवा करोंगा । तब राजा ने उसे
कहा कि कुशल से जा सो वुह उठके हबरून को गया ।
१० परंतु अबसालूम ने इसराईल के संतान की सारी गोष्ठियों
में भेदियों के द्वारा से कहला भेजा कि जब तुम नरसिंगे का शब्द
सुनो तब बोल उठो कि अबसालूम हबरून में राज्य करता है ।
११ और अबसालूम के साथ यिरोशलीम से दो सौ मनुष्य निकल
आये और वे भोलाई से गये थे वे कुछ न जानते थे ।
१२ और अबसालूम ने गिलियूनी अहीतोफेल दाऊद के मंत्री
को, उसके नगर गीलूह से, बुलाया जब वुह बलि चढ़ाता था
और गुष्ट दृढ़ होरहा था क्योंकि अबसालूम पास लोग बढ़ते
१३ जाते थे । तब एक दूत ने आके दाऊद को कहा कि
१४ इसराईल के लोगों के मन अबसालूम के पीछे लगे हैं । तब
दाऊद ने अपने समस्त सेवकों को, जो यिरोशलीम में उसके
साथ थे, कहा कि उठो भागें क्योंकि अबसालूम से हम न
बचेंगे शीघ्र चलो नहो कि वुह अचानक हम पर आपड़े और
हम पर बुराई लावे और तलवार की धार से नगर को नाश
१५ करे । तब राजा के सेवकों ने राजा से कहा कि देखिये आपके
१६ सेवक जो कुछ कि प्रभु राजा की इच्छा होय । तब राजा
निकला और उसका सारा घराना उसके पीछे ऊआ और
राजा ने दस स्त्रियां, जो उसकी दासियां थीं, घर देखने को
१७ छोड़ीं । और राजा अपने सब लोगों समेत बाहर निकल
१८ के दूर स्थान में जा ठहरा । और उसके सारे सेवक उसके
साथ साथ निकल गये और सारे करीती और पलीती और
गिट्टी छः सौ जन, जो गाथ से उसके पीछे आये थे, राजा के
१९ आगे आगे गये । तब राजा ने गिट्टी अट्टी से कहा कि तू भी

हमारे साथ क्यों आता है? अपने स्थान को फिर जा और
राजा के साथ रह क्योंकि तू परदेशी और निकाला हुआ है।
२० कलही तू आया है और आज मैं तुझे भ्रमा के चलाओं और
मेरे जानेका कहीं ठिकाना नहीं सो तू फिर जा और अपने
२१ भाइयों को लेजा और दया और सत्य तेरे साथ होवे। तब
अट्टी ने राजा को उत्तर देके कहा कि परमेश्वर के और मेरे
प्रभु राजा के जीवन सों निश्चय जिस स्थान में मेरा प्रभु राजा
होवेगा चाहे मृत्यु में चाहे जीवन में वहीं आप का सेवक भी
२२ होगा। और दाऊद ने अट्टी को कहा कि पार उतर जा तब
अट्टी गिट्टी पार उतर गया और उसके सारे मनुष्य और
२३ उसके साथ सब गदेले चले। और सारे देश ने चिल्ला चिल्ला
के बिलाप किया और सारे लोग उतर गये और राजा भी
क़द्रून के नाले पार उतर गया और समस्त लोगों ने पार
२४ उतर के बन का मार्ग लिया। और देखो कि सादूक़
भी और समस्त लावी ईश्वर की साक्षी की मंजूषा लिये हुए
उसके साथ थे सो उन्हों ने ईश्वर की मंजूषा को रख दिया और
अबियासार चढ़ गया जब लों कि सारे लोग नगर से निकल
२५ आये। तब राजा ने सादूक़ से कहा कि ईश्वर की मंजूषा नगर
को फेर लेजा यदि परमेश्वर के अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर
होगी तो वुह मुझे फेर लावेगा और उसे और अपने निवास
२६ को मुझे दिखावेगा। पर यदि वुह यों कहे कि अब तुझ से
२७ प्रसन्न नहीं देख, मैं, जो वुह भला जाने सो मुझ से करे। और
राजा ने सादूक़ याजक को फिर कहा क्या तू दर्शी नहीं? नगर
को कुशल से फिर और तेरे संग तेरे दो बेटे अख़ीमआज़
२८ और यूनासान अबियासार का बेटा। देख मैं उस बन के
चौगान में ठहरोंगा जब लों कि तुम्हारे पास से कुछ संदेश
२९ आवे। सो सादूक़ और अबियासार ईश्वर की मंजूषा को
३० यिरोशलीम में फेर लाये और वहीं रहे। और दाऊद

जलपाई के पहाड़ की चढ़ाई पर चढ़तागया और चढ़ते चढ़ते बिलाप करता गया उसका सिर ढंपाऊआ और नंगे पांव था और उसके साथ के सारे लोग अपने सिर ढांपे ऊए बिलाप करते
३१ चढ़ते चले जाते थे। एक ने दाऊद से कहा कि अहीतोफेल भी अबसालूम के गुष्टकारियों में है तब दाऊद ने कहा कि हे परमेश्वर तेरी बिनती करता हों कि अहीतोफेल के मंत्र को
३२ मूढ़ता की संती पलट दे। और ऐसा ऊआ कि जब दाऊद चोटी पर पऊंचा, जहां उसने ईश्वर की पूजा किई, तो होशाई अरकी अपना बस्त्र फाड़े ऊए और अपने सिर पर धूल डाले
३३ ऊए उस्से भेंट करने को आया। दाऊद ने उसे कहा कि यदि
३४ तू मेरे साथ पार उतरेगा तो मुझ पर भार होगा। परंतु यदि तू नगर में फिर जाय और अबसालूम से कहे कि हे राजा मैं तेरा सेवक होंगा मैं अबलों तेरे पिता का सेवक था उसी रीति तेरा भी सेवक होंगा तब तू मेरे कारण से
३५ अहीतोफेल के मंत्र को भंग कर सक्ता है। और क्या तेरे साथ सादूक़ और अबियासार याजक नहीं हैं? सो ऐसा होवे कि जो कुछ तू राजा के घर में सुने सो सादूक़ और अबियासार
३६ याजकों से कहि दे। देख उनके साथ उनके दो बेटे अहीमआज़ सादूक़ के और यहूनातान अबियासार के बेटे हैं और जो कुछ तुम सुनसको सो उनके द्वारा से मुझे कहला भेजो।
३७ सो दाऊद का मित्र होशाई नगर को आया और अबसालूम भी यिरोशलीम में पऊंचा।

१६ सोलहवां पर्ब्ब।

भेंट लाने से और बात बनाने से सीबा अपने स्वामी का अधिकार पाता है १—४ शमीय दाऊद को स्राप देता है ५—८ दाऊद संतोष करता है और उसे बचाता है ९—१४ होशाई अबसालूम

के मंत्रियों में बैठता है १५—१९ अहीतोफेल का मंत्र २०—२३।

१ और जब दाऊद चोटी पर से तनिक पार गया तब देखो कि मफीबोशीस का सेवक सीबा दो गदहे, काठी कसे ऊए जिन पर दो सौ रोटी और दाख के एक सौ गुच्छे और ग्रीष्म के फल के सौ गुच्छे और एक कुप्पा मदिरा का लदा ऊआ
२ था उसे मिला। और राजा ने सीबा को कहा कि इन वस्तुन से तुम्हारा क्या अभिप्राय है? सीबा बोला कि ये गदहे राजा के घराने के चढ़ने के लिये और रोटियां और ग्रीष्म फल तरुणों के भोजन के लिये और यह मदिरा उनके लिये जो
३ अरण्य में थके ऊए हों। तब राजा ने कहा कि तेरे स्वामी का बेटा कहां है? सीबा ने राजा से कहा कि देखिये वुह यिरोशलीम में ठहरा है क्योंकि उसने कहा है कि आज इसराईल के
४ घराने मेरे पिता का राज्य मुझे फेर देंगे। तब राजा ने सीबा से कहा कि देख मफीबोशीस का सब कुछ तेरा है तब सीबा ने कहा कि मैं आप को दंडवत करता हों कि मैं अपने प्रभु
५ राजा की दृष्टि में अनुग्रह पाओं। और जब दाऊद राजा बहुरिम में पऊंचा वहां से साऊल के घराने में से एक जन निकला जिसका नाम शमीय गेरा का पुत्र धिक्कारते
६ ऊए चला आता था। और वुह दाऊद पर और दाऊद राजा के सारे सेवकों पर पत्थर फेंकने लगा और समस्त लोग
७ और समस्त बीर उसके दहिने बायें थे। और धिक्कारते ऊए शमीय यों कहता था कि निकल आ निकल आ हे
८ हत्यारे मनुष्य हे बलिआली जन। परमेश्वर ने साऊल के घर की सारी हत्या को तुझ पर फेरा जिसकी संती तू ने राज्य किया है और परमेश्वर ने राज्य को तेरे बेटे अबसालूम के हाथ में सौंप दिया और देखो आप को अपनी बुराई में इस
९ कारण कि तू हत्यारा है। सरूया के बेटे अबिशाई ने

राजा से कहा कि यह मरा हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को किस लिये धिक्कारे? मैं आप की बिनती करता हों कि मुझे
१० पार जाने दीजिये कि उसका सिर उतार डालों। तब राजा ने कहा कि हे सरूया के बेटे मुझे तुम से क्या काम? उसे धिक्कार ने देओ इस कारण कि परमेश्वर ने उसे कहा है कि दाऊद को
११ धिक्कार फेर उसे कौन कहेगा कि तू ने ऐसा क्यों किया है?। और दाऊद ने अबिशाई और अपने सारे सेवकों से कहा कि देख मेरा बेटा, जो मेरी कोख से निकला, मेरे प्राण का गांहक है तो कितना अधिक यह बनियामीनी? उसे छोड़ देओ धिक्कार
१२ ने देउ क्योंकि परमेश्वर ने उसे कहा है। क्या जाने परमेश्वर मेरे दुःख पर दृष्टि करे और परमेश्वर आज उसके धिक्कार
१३ की संती मेरी भलाई करे। और ज्यों दाऊद अपने लोग लेके मार्ग से चला जाता था शमीय पहाड़ के अलंग उसके सन्मुख चला और धिक्कारते हुए जाता था
१४ और उसे पत्थर मारता था और धूल फेंकता था। और राजा और उसके सारे लोग थके हुए आये और वहीं
१५ उन्हों ने अपने को संतुष्ट किया। अबसालूम और उसके सारे लोग इसराईल समेत यिरोशलीम में आये और
१६ अहीतोफेल उसके साथ। और यों हुआ कि जब दाऊद का मित्र होशाई अरकी अबसालूम पास पहुंचा तो होशाई ने अबसालूम से कहा कि राजा जीता रहे राजा जीता रहे।
१७ और अबसालूम ने होशाई से कहा कि क्या अपने मित्र पर
१८ यही अनुग्रह? तू अपने मित्र के साथ क्यों न गया?। होशाई ने अबसालूम से कहा कि नहीं परंतु जिसे परमेश्वर और ये लोग और सारे इसराईल चुने मैं उसीका हों और उसके साथ
१९ रहोंगा। और फिर किसकी सेवा करों? यदि उसके बेटे की नहीं तो जैसे मैं ने आप के पिता के सन्मुख सेवा किई है वैसाही
२० आपके सन्मुख होंगा। तब अबसालूम ने अहीतोफेल से कहा

२१ कि मंत्र देउ कि हम क्या करें। तब अहीतोफेल ने अबसालूम से कहा कि अपने पिता की दासियों के पास जाइये जिन्हें वुह घर की रक्षा को छोड़ गया है और सारे इसराईल सुनेंगे कि आप अपने पिता से घिनित हैं तब आप के सारे साथियों के हाथ दृढ़
२२ होंगे। सो उन्हों ने कोठे की छत पर अबसालूम के लिये तंबू फैलाया और अबसालूम सारे इसराईल की दृष्टि में अपने
२३ पिता की दासियों के पास गया। और अहीतोफेल का मंत्र जो उन दिनों में वुह देता था ऐसा था जैसा कि कोई ईश्वर के बचन से बूझता था अहीतोफेल का समस्त मंत्र दाऊद और अबसालूम के विषय में ऐसाही था।

१७ सतरहवां पर्ब्ब ।

अहीतोफेल का मंत्र हाशाई के मंत्र से खंडन होता है १—१४ गुप्त संदेश दाऊद को भेजता है १५—२२ अहीतोफेल आप को फांसी देता है २३—२४ अमासा सेनापति होता है २५—२६ दाऊद को अन्न पङंचता है २७—२९ ।

१ अहीतोफेल ने अबसालूम से यह भी कहा कि मुझे बारह सहस्र पुरुष चुन लेने दीजिये और मैं उठके इसी रात दाऊद का पीछा
२ करोंगा। और थका और दुर्बल होते ऊए मैं उस पर जा पड़ोंगा और उसे डराओंगा और उसके साथ के सारे लोग भाग जायेंगे
३ और केवल राजाही को मार लेओंगा। और मैं सब लोगों को आप की ओर फेर लाओंगा और जिसे आप खोजते हैं ऐसा जैसा
४ कि सब फिर आये और सब के सब कुशल से रहेंगे। और वुह कहना अबसालूम और इसराईल के समस्त प्राचीन की दृष्टि
५ में अच्छा लगा। तब अबसालूम ने कहा कि होशाई अरकी
६ को भी बुला और उसके मुंह में जो है सो भी सुनें। और जब होशाई अबसालूम पास पङंचा अबसालूम यह कहिके

उसे बोला कि अहीतोफेल ने यों कहा है उसके वचन के समान
७ हम करें अथवा नहीं? तू क्या कहता है। तब होशाई ने
अबसालूम से कहा कि यह मंत्र जो अहीतोफेल ने दिया है
८ इस समय भला नहीं। क्योंकि आप अपने पिता को और
उसके साथियों को जानते हैं कि वे शूर हैं और वे अपने मन
में ऐसे उदास हैं जैसे जंगली भालु जिसका बच्चा चुराया
जाये और आप का पिता योद्धा पुरुष है और लोगों के साथ
९ न रहेगा। और देखिये वुह किसी गड़हे में अथवा किसी स्थान
में छिपा है और यों होगा कि जब प्रथम में उन में से कितने
मारे पड़ेंगे जो कोई सुनेगा सो कहेगा कि अबसालूम के
१० साथी जूझ गये हैं। और वुह भी जो शूर है, जिसका मन सिंह
के मन की नाईं है सर्बथा पिघल जायगा क्योंकि सारे इसराईली
जानते हैं कि आप का पिता बलवंत है और उसके साथ के
११ लोग शूर हैं। इस लिये मैं यह मंत्र देता हों कि सारे
इसराईल दान से लेके बीरशबा लों बालू के समान जो समुद्र
के तीर पर हो जिसका लखा नहीं आप के साथ बटोरे जावें और
१२ कि आप लड़ाई पर चढ़िये। यों जहां वुह होगा हम उस पर जा
पहुंचेंगे और ओस की नाईं, जो भूमि पर गिरती है, उस पर
उतरेंगे तब वुह आप और उन लोगों में से जो उसके साथ हैं एक
१३ भी न बचेगा। इस्से अधिक यदि वुह किसी नगर में पैठा होगा
तब सारे इसराईल उस नगर पर रस्सी लावेंगे और उसे
नदी में खींच ले जायेंगे यहां लों कि एक रोड़ा पाया न
१४ जाय। तब अबसालूम और इसराईल के सारे लोग बोले
कि होशाई अरकी का मंत्र अहीतोफेल के मंत्र से भला है
क्योंकि परमेश्वर ने ठहराया था कि अहीतोफेल का भला मंत्र
खंडित होवे जिसतें परमेश्वर अबसालूम पर बुराई लावे।
१५ तब होशाई ने सादूक और अबियासार याजक से
कहा कि अहीतोफेल और इसराईल के प्राचीनों ने अबसालूम

१६ को ऐसा ऐसा मंत्र दिया और मैं ने ऐसा ऐसा। इस लिये अब चटक से भेजके दाऊद से कहो कि आज की रात बन के चौगान में मत टिकिये परंतु बेग से पार उतर जाइये नहो
१७ कि राजा और उसके साथ के समस्त लोग निगले जावें। अब यूनासान और अहीमआज़ अनरोगील के लग ठहरे थे (क्योंकि उन्हें नगर में दिखाई देना न था) और एक स्त्री ने जाके उन्हें
१८ कहा सो वे निकल के दाऊद राजा से बोले। तथापि एक छोकरे ने उन्हें देख के अबसालूम से कहा परंतु वे दोनों के दोनों चटक से चले गये और बहूरीम में पऊंच के एक पुरुष के घर में घुसे जिसके चौक में एक कूआं था उस में वे उतर
१९ पड़े। और स्त्री ने उस कूए के मुंह पर एक ओढ़ना बिछाया और उस पर पीसा ऊआ अन्न बिछाया और वुह बात प्रगट
२० न ऊई। और जब अबसालूम के सेवक उस स्त्री के घर आये और पूछा कि अहीमआज़ और यूनासान कहां हैं? उस स्त्री ने उन्हें कहा कि वे नाला पार उतर गये और जब उन्हों ने उन्हें ढूंढ़ा और न पाया तो यिरोश्लीम को फिर आये।
२१ और यों ऊआ कि जब वे चले गये तो वे कूए से निकल के चले और दाऊद राजा से कहा कि उठिये और शीघ्र जल से पार उतर जाइये क्योंकि अहीतोफेल ने आपके बिरोध में
२२ यों यों मंत्र दिया है। तब दाऊद और उसके सारे लोग उठे और अर्दन के पार उतर गये और बिहान की ज्योति लों एक
२३ भी न रहा जो अर्दन के पार न उतरा था। और जब अहीतोफेल ने देखा कि उसका मंत्र न चला तो उसने अपने गदहे पर काठी बांधी और चढ़ के अपने नगर और अपने घर गया और अपने घर के बिषय में आज्ञा किई और आप को फांसी दे
२४ के मर गया और अपने पिता की समाधि में गाड़ा गया। तब दाऊद महानाईम को गया और अबसालूम और उसके साथ
२५ इसराईल के सारे मनुष्य अर्दन के पार उतरे। और

अबसालूम ने यूआब की संती अमासा को सेना का प्रधान बनाया वुह अमासा एक जन का बेटा था जिसका नाम इथरा इस्माईली था जो नाहाश की बेटी यूआब की मौसी अबीग़ाल
२६ के पास गया। सो इसराईल और अबसालूम ने जलियाद
२७ के देश में डेरा किया। और यों ऊआ कि जब दाऊद महानाईम में पऊंचा तो अमून के संतान के रब्बः नाहाश का बेटा शोबी और लोदीबार अमीअल का बेटा माख़िर और
२८ रोगिलिम का जलियादी बारज़िलाई। खाट और बासन और माटी के पात्र और गोहूं और जव और पिसान और
२९ भूना और फलियां और मसूर और भूने चने। और मधु और माखन और भेड़ और ढोर का खोआ दाऊद के और उसके लोगों के खाने के लिये लाये क्योंकि उन्हों ने कहा कि लोग अरण्य में भूखे और थके और प्यासे हैं।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

दाऊद सेनाओं को अबसालूम के लिये आज्ञा करता है १—५ इसराईली मारे जाते हैं और अबसालूम पेड़ पर टंग जाके मारा जाता है ६—१७ संदेश पाके दाऊद अबसालूम के लिये बिलाप करता है १८—३३।

१ और दाऊद ने अपने संगके लोगों को गिना और सहस्रों
२ पर और सैकड़ों पर प्रधान ठहराया। और दाऊद ने लोगों के तिहाई भाग को यूआब के अधीन और तिहाई यूआब के भाई सुरिया के बेटे अबीशाई के अधीन और तिहाई को गिट्टी इट्टी के अधीन किया और उन्हें भेजा और राजा ने लोगों से कहा कि मैं भी निश्चय तुम्हारे साथ जाओंगा।
३ परंतु लोगों ने उत्तर दिया कि आप न जाइये क्योंकि यदि हम भाग निकलें तो उन्हें कुछ हमारी चिंता न होगी

और यदि हम्में से आधे मारे जायें तो उन्हें कुछ चिंता न होगी परंतु आप हम्में से दस सहस्र के तुल्य हैं सो अच्छा यह है
४ कि आप नगर में रहि के हमारी सहाय कीजिये। तब राजा ने उन्हें कहा कि जो तुम्हें सब से अच्छा लगे सो मैं करोंगा और राजा फाटक की अलंग खड़ा हुआ और समस्त लोग
५ सैकड़ों सैकड़ों और सहस्र सहस्र होके बाहर निकले। और राजा ने यूआब और अबीशाई और इट्टी को कहा कि मेरे कारण उस युवा जन अर्थात् अबसालूम से कोमलता कीजियो और जो कुछ राजा ने समस्त प्रधानों से अबसालूम
६ के बिषय में कहा सो सब लोगों ने सुना। तब लोग निकल के चौगान में इसराईल के साम्ने हुए और संग्राम अफराईम के
७ बन में हुआ। जहां इसराईल के लोग दाऊद के सेवकों के आगे मारे गये और उस दिन वहां बड़ा जूझ अर्थात् बीस
८ सहस्र का हुआ। क्योंकि संग्राम समस्त देश में फैल गया था और उस दिन बन ने खड्ग से अधिक लोगों को नाश किया।
९ और अबसालूम दाऊद के सेवकों से मिला और अबसालूम खच्चर पर चढ़ा था और खच्चर उसे लेके सीतावृक्ष की घनी डारों के तले घुसा और उसका सिर पेड़ में फंसा और वुह अधर में टंग गया और खच्चर उसके नीचे से चला गया।
१० और कोई देख के यूआब से कहिके बोला कि मैं ने अबसालूम
११ को एक सीतावृक्ष पर टंगा देखा। तब यूआब उस कहवैये से बोला कि देख तू ने देखा और फेर उसे भूमि लों क्यों घात न किया और मैं तुझे दस टुकड़े चांदी
१२ और एक पटुका देता। उस जन ने यूआब को उत्तर दिया कि यदि तू सहस्र टुकड़े चांदी मुझे तौल देता तो भी मैं राजा के बेटे पर हाथ न उठाता क्योंकि राजा ने हमें सुना के तुझे और अबीशाई और इट्टी को आज्ञा करके चिताया कि
१३ चौकस हो कोई उस तरुण अबसालूम को न छूवे। नहीं तो

मैं अपने प्राणही के बिरोध में झूठा होता क्योंकि कोई बस्तु राजा से छिपी नहीं और तू भी मेरे बिरोध पर खड़ा होता ।
१४ तब यूआब ने कहा कि मैं तेरे आगे न ठहरोंगा और अब लों अबसालूम जीता ऊआ सीताबृक्ष के मध्य में लटका था तब यूआब ने तीन बाण हाथ में लेके अबसालूम के अंतःकरण
१५ में गोदा। और यूआब के अस्त्रधारी दस तरुणों ने घेर आ
१६ घेरा और अबसालूम को मारके बधन किया। तब यूआब ने नरसिंगा फूंका और लोग इसराईल का पीछा करने से फिरे
१७ क्योंकि यूआब ने लोगों को रोक रक्खा। और उन्हों ने अबसालूम को लेके उसी के बड़े गड़हे में डाल दिया और उस पर पत्थरों का एक बड़ा ढेर किया और सारे इसराईल
१८ भाग के अपने अपने तंबू को गये। अब अबसालूम ने जीते जी अपने लिये राजा की तराई में एक खंभा बनाया क्योंकि उसने कहा था कि मेरे बेटा नहीं जिस्से मेरा नाम चले और उसने अपनाही नाम खंभे पर रक्खा और आज के दिन लों
१९ वुह अबसालूम का स्थान कहलाता है। तब सादूक़ के बेटे अहीमआज़ ने कहा कि मैं दौड़ के राजा को संदेश पऊंचाओं कि परमेश्वर ने किस रीति से उसके बैरियों के हाथ
२० से उसका प्रतिफल लिया। यूआब ने उसे कहा कि आज तू संदेशी मत होना परंतु दूसरे दिन संदेश पऊंचाइयो परंतु आज तू संदेश मत लेजा इस कारण कि राजा का पुत्र मर गया
२१ है। फिर यूआब ने कूशी को कहा कि जा और जो कुछ तू ने देखा है सो राजा से कह तब कूशी यूआब को प्रणाम करके
२२ दौड़ा। फिर सादूक़ के बेटे अहीमआज़ ने दूसरी बार यूआब से कहा कि जो कुछ हो परंतु मुझे भी कूशी के पीछे दौड़ने दीजिये यूआब बोला कि हे पुत्र तू किस लिये
२३ दौड़ेगा तू देखता है कि कोई संदेश धरा नहीं। परंतु जो होय मैं दौड़ों तब उसने कहा कि दौड़ तब अहीमआज़ ने

२४ चौगान का मार्ग लिया और कूशी से आगे बढ़ गया। दाऊद दो फाटकों के बीच बैठा था और पहरू नगर की भीत की छत पर फाटक के ऊपर चढ़गया था और आंख उठाके देखा और
२५ क्या देखता है कि एक जन अकेला दौड़ता है। और पहरू ने पुकार के राजा को कहा सो राजा ने कहा यदि अकेला तो उसके मुंह में संदेश हैं और वुह बढ़ते बढ़ते पास आया।
२६ तब पहरू ने दूसरे जन को दौड़ते देखा और पहरू ने द्वारपालक को पुकार के कहा कि देख पुरुष अकेला दौड़ा आता है और
२७ राजा बोला कि वुह संदेश लाता है। तब पहरू ने कहा कि मैं देखता हों कि अगले की दौड़ सादूक के बेटे अखीमआ़ज़ की दौड़ की नाईं है तब राजा बोला कि वुह भला मनुष्य है
२८ और मंगल संदेश लाता है। और अखीमआ़ज़ पहुंचा और राजा से कहा कि सब कुशल और राजा के आगे औंधे मुंह गिरा और बोला कि परमेश्वर आप का ईश्वर धन्य है जिसने उन लोगों को जिन्हों ने मेरे प्रभु राजा के विरोध में हाथ
२९ उठाये सौंप दिया। तब राजा बोला कि अबसालूम कुशल से है? अखीमआ़ज़ ने कहा कि जब राजा के सेवक यूआब ने टहलू को भेजा उस समय मैं ने एक बड़ी भीड़ देखी पर मैं ने
३० न जाना वुह क्या है। तब राजा ने कहा कि अलग होके
३१ यहां खड़ा हो और वुह अलग जाके खड़ा हो रहा। और वहीं कूशी आया और कूशी ने कहा कि मेरे प्रभु राजा संदेश है क्योंकि परमेश्वर ने आज के दिन आप को उन सभों से जो
३२ आप के बैर में उठे थे पलटा लिया। तब राजा ने कूशी से पूछा कि अबसालूम तरुण कुशल से है? कूशी ने उत्तर दिया कि मेरे प्रभु राजा के बैरी और सब जो आप को दुःख देने में उठते
३३ हैं आप उस तरुण की नाईं हो जायें। तब राजा अति व्याकुल हुआ और उस कोठरी पर चढ़गया जो फाटक के ऊपर थी और बिलाप किया जाते जाते यों कहा कि हाय मेरे बेटे

अबसालूम हाय मेरे बेटे हाय मेरे बेटे अबसालूम भला होता जो तेरी संती मैं ही मरता हाय अबसालूम हाय मेरे बेटे हाय मेरे बेटे।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

राजा को बिलाप करने से यूआब थामता है १—८ राजा को फेर लाने को इसराईल यत्न करते हैं ९—१० यहूदा को भी दाऊद कहला भेजता है ११—१७ शमई का पाप क्षमा होता है १८—२३ मफीबोशेथ ग्रहण किया जाता है २४—३१ बारज़िलाई बिदा किया जाता है और उसका बेटा राजा के घराने में लिया जाता है ३२—४० इसराईली यहूदा से बिबाद करते हैं ४१—४३

१ और यूआब से कहा गया कि देख राजा अबसालूम के लिये २ रोता और बिलाप करता है। और उस दिन का बचाव सभों के लिये बिलाप का दिन हुआ क्योंकि लोगों ने उस दिन ३ सुना कि राजा अपने बेटे के लिये खेद में है। और लोग उस दिन लज्जितों के समान जो लड़ाई से भाग निकलते हैं चोरी ४ से नगर में चले गये। परंतु राजा ने अपना मुंह ढांपा और चिल्ला चिल्ला रोया कि हाय अबसालूम मेरे बेटे हाय ५ अबसालूम मेरे बेटे मेरे बेटे। तब यूआब घर में राजा पास आया और कहा कि तू ने आज के दिन अपने सब सेवकों के मुंह को लज्जित किया जिन्हों ने आज तेरे प्राण और तेरे बेटे बेटियों के प्राण और तेरी पत्नियों के प्राण और तेरी दासियों के प्राण ६ बचाये। क्योंकि तू अपने शत्रुन को प्यार करके अपने मित्रों से बैर करता है क्योंकि तू ने आज दिखाया है कि तुझे न प्रधानों की न सेवकों की चिंता है क्योंकि आज मैं देखता हों कि यदि अबसालूम जीता होता और हम सब आज मर जाते तो तुझे अति

७ प्रसन्न होता। सो अब उठ बाहर निकल और अपने सेवकों का बोध कर क्योंकि मैं परमेश्वर की किरिया खाता हों कि यदि तू बाहर न जायेगा तो रात लों एक भी तेरे साथ न रहेगा और यह तेरे लिये उन सब बिपतों से जो युवावस्था से अब
८ लों ऊई अधिक होगी। तब राजा उठा और फाटक में बैठा और सब लोगों को कहा गया कि देखो राजा फाटक में बैठा है तब सब लोग राजा के आगे आये क्योंकि सारे इसराईल
९ अपने अपने तंबू को भाग गये थे। और इसराईल की सारी गोष्ठियों में सारे लोग झगड़ के कहने लगे कि राजा ने हमें हमारे शत्रुन के हाथ से और फलस्तानियों के हाथ से बचाया और अब
१० वुह अबसालूम के कारण देश से भाग निकला है। और अबसालूम, जिसे हम ने अपने ऊपर अभिषिक्त किया था रण में मारा
११ गया सो अब राजा के फेर लाने में चुपके क्यों हो। तब दाऊद राजा ने सादूक़ और अबियासार याजक को कहला भेजा कि यहूदा के प्राचीनों को कहो कि राजा को उसके घर में फेर लाने में क्यों सब से पीछे हो? देखते हो कि समस्त इसराईल की
१२ बोली राजा के हां उसके घर के पास पऊंची। तुम मेरे भाई हो और मेरी हड्डी और मेरा मांस सो राजा को फेर
१३ लाने में क्यों सब से पीछे हो?। और आमासा से कहो क्या तू मेरी हड्डी और मेरा मांस नहीं? सो यदि मैं तुझे यूआब की संती सदा के लिये सेना का प्रधान न करों तो ईश्वर मुझे
१४ ऐसा और उस्से अधिक करे। उसने सारे यहूदा के समस्त लोगों का मन ऐसा झुकाया जैसा कि एक का मन होता है यहां लों कि उन्हों ने राजा कने भेजा कि आप अपने सारे सेवकों समेत फिर
१५ आइये। तब राजा फिरा और अर्दन को आया और यहूदा जलजाल में राजा की भेंट को आये कि उसे अर्दन पार लावें।
१६ और जरा के बेटे शमीय बनीआमीनी बाहूरीम से शीघ्र चले और यहूदा के मनुष्यों के साथ मिल के दाऊद राजा से

१७ भेंट करने आये। और उसके साथ बनियामीनी एक सहस्र जन थे और साऊल के घराने का सेवक सीबा अपने पंदरह बेटे और बीस टहलुओं समेत आया और वे राजा के आगे
१८ अर्दन के पार उतर गये। और राजा के घराने को पार उतारने और उसकी इच्छा के समान करने के लिये गुदारे की एक नाव पार गई और जरा का बेटा शमीय अर्दन पार
१९ आतेही राजा के आगे औंधे मुंह गिरा। और राजा से कहा कि मेरे प्रभु मुझ पर पाप मत मानिये और उस बात को स्मरण करके मन में मत लाइये जो आप के सेवक ने, जिस दिन कि मेरा प्रभु राजा यिरोशलीम से निकल आया था, बैर में
२० कहा था। क्योंकि आपका सेवक जानता है कि मैं ने पाप किया इस लिये देखिये आज के दिन मैं यूसफ के समस्त घराने में से पहिले आया हों कि उतर के अपने प्रभु राजा से भेंट
२१ करों। परंतु सुरिया के बेटे अबीशाई ने उत्तर में कहा क्या शमीय इस कारण मारा न जायगा कि उसने परमेश्वर के
२२ अभिषिक्त को धिक्कारा?। तब दाऊद ने कहा कि हे सुरिया के बेटे मुझे तुम से क्या कि तुम आज के दिन मेरे बैरी ऊआ चाहते हो? क्या इसराईल में आज कोई मारा जायगा? क्या मैं नहीं जानता कि आज मैं इसराईल का राजा हों?।
२३ तब राजा ने शमीय से कहा कि तू मारा न जायगा और राजा
२४ ने उसके लिये किरिया खाई। फिर साऊल का बेटा मफीबोशीश राजा को आगे से मिलने को उतरा जब से राजा निकला था उस दिन लों कि वुह कुशल से फिर न आया अपने पांव न धोये थे न अपनी दाढ़ी सुधारी थी और न
२५ अपने कपड़े धोलवाये थे। और ऐसा ऊआ कि जब वुह यिरोशलीम में राजा से मिलने आया तो राजा ने उसे कहा कि हे मफीबोशीश किस लिये तू हमारे साथ न गया?।
२६ उसने उत्तर दिया कि हे प्रभु राजा मेरे सेवक ने मुझ छला

क्योंकि आप के सेवक ने कहा था कि मैं अपने लिये गदहे पर काठी बांधोंगा जिसतें उस पर चढ़ के राजा के पास जाओं
२७ क्योंकि आप का सेवक लंगड़ा है। और उसने तेरे सेवक को मेरे स्वामी राजा के आगे अपबाद लगाया परंतु मेरा प्रभु राजा ईश्वर के दूत के समान है सो आप की दृष्टि में जो अच्छा
२८ लगे सो कीजिये। क्योंकि मेरे पिता के घराने मेरे प्रभु राजा के आगे म्रतक थे तथापि आप ने अपने सेवक के उनमें बैठलाया जो आपही के मंच पर भोजन करते थे इस लिये मेरा क्या पद
२९ है कि अब भी मैं राजा के आगे पुकारों। तब राजा ने कहा कि तू अपना समाचार क्यों अधिक बर्णन करता है? मैं कहि
३० चुका कि तू और सीबा भूमि को बांटले। मफीबोशीश ने राजा से कहा कि हां सब वही लेवे जैसा कि मेरा प्रभु राजा
३१ अपने ही घर में फिर कुशल से पज़ंचा। और रज़लीम से जलियादी बरज़ली उतर के राजा के साथ अर्दन पार गया
३२ कि अर्दन पार पज़ंचावे। और यह बरज़ली अस्सी बरस का अति बृद्ध था और जब कि राजा महानाईम में पड़ा था
३३ वुह जीविका पज़ंचाता था क्योंकि वुह अति महत जन था। सो राजा ने बरज़ली से कहा कि तू मेरे साथ पार उतर और
३४ मैं यिरोशलीम में अपने साथ तेरा पालन करोंगा। और बरज़ली ने राजा को उत्तर दिया कि अब मेरे जीवन के बरस कितने दिन के हैं कि राजा के साथ साथ यिरोशलीम को
३५ चढ़ जाओं। आज मैं अस्सी बरस का ज़आ और क्या मैं भलाई बुराई का अंतर जान सक्ता हों और क्या आप का सेवक जो कुछ खाता पीता है उसका स्वाद जान सक्ता है और क्या मैं गायकों और गायिकाओं का शब्द सुन सक्ता हों? फेर
३६ आप का सेवक अपने प्रभु राजा पर क्यों बोझ होवे। आप का सेवक राजा के संग थोड़ी दूर अर्दन के पार चलेगा और
३७ किस कारण राजा ऐसे फल से प्रतिफल देवे?। अपने सेवक को

बिदा कीजिये कि फिर जाये जिसतें मैं अपनेही नगर में अपनी माता पिता की समाधि पास मरों परंतु देखिये आप का सेवक किमहाम मेरे प्रभु राजा के साथ पार जाय जो
३८ कुछ आप भला जानें सो उस्से कीजिये। तब राजा ने उत्तर दिया कि किमहाम मेरे साथ पार चले और जो कुछ मुझे अच्छा लगे सोई उसके लिये करोंगा और जो कुछ तेरी
३९ इच्छा होय सोई तेरे लिये करोंगा। और समस्त लोग अर्दन पार गये और जब राजा पार आया तो राजा ने बरज़ली को चूमा और उसे आशीष दिया और वुह अपनेही स्थान को
४० फिर गया। तब राजा जलजाल को चला और किमहाम उसके साथ साथ गया और सारे यहूदा के लोगों ने, और
४१ इसराईल के आधे लोगों ने भी, राजा को पहुंचाया। और देखो कि सारे इसराईल राजा के पास आये और राजा से कहा कि हमारे भाई यहूदा के लोगों ने आप को हम से क्यों चुराया है और राजा को और उसके घराने को और दाऊद के
४२ समस्त लोग सहित अर्द्दन पार लाये हैं?। और समस्त यहूदा के मनुष्यों ने इसराईल के मनुष्यों को उत्तर दिया इस कारण कि राजा हमारे कुटुम्ब हैं सो इस बात में तुम क्यों क्रुद्ध होते हो! क्या हम ने राजा का कुछ खाया है? अथवा क्या
४३ उसने हमें कुछ दान दिया है?। फिर इसराईल के मनुष्यों ने यहूदा के मनुष्यों को उत्तर दिया और कहा कि राजा में हम दस भाग रखते हैं और दाऊद पर हमारा पद तुम से अधिक है सो तुम ने क्यों हमें हलुक समझा कि राजा के फेर लाने में पहिले हम से क्यों नहीं पूछा? और यहूदा के मनुष्यों की बातें इसराईल के मनुष्यों की बातों से प्रबल हुईं।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

शीबा लोगों में बिभाग करता है १—२ दाऊद की दस दासी बंधायमान होती हैं ३— अमासा अध्यक्ष होके यूआब से मारा जाता है ४—१३ यूआब हाबील ताईं शीबा का पीछा करता है जहां शीबा मारा जाता है १४—२२ दाऊद के प्रधान २३—२६ ।

१ और संजोग से वहां एक बलिआली पुरुष था जिसका नाम शीबा जो बनियामीनी बिकरी का बेटा था उसने नरसिंगा फूंक के कहा कि हम दाऊद में कुछ भाग नहीं रखते और हम यस्सी के बेटे में कुछ अधिकार नहीं रखते हैं हे इसराईल
२ हर एक जन अपने अपने तंबू को। सो इसराईल का हर एक जन दाऊद के पीछे से चला गया और बिकरी के बेटे शीबा के पीछे हो लिया परंतु यहूदा के मनुष्य अर्दन से लेके यिरोशलीम
३ लों अपने राजा के साथ बने रहे। और दाऊद यिरोशलीम में अपने घर को पहुंचा और राजा ने अपनी दस दासियों को, जिन्हें वुह घर की रखवाली के लिये छोड़ गया था, लेके दृष्टिबंध किया और उन्हें भोजन दिया परंतु उनके पास न
४ गया सो वे जीवन भर जीवन के रंडापे में बंद रहीं। तब राजा ने अमासा को कहा कि तीन दिन के भीतर यहूदा के मनुष्यों
५ को मुझ पास यहां एकट्ठा कर और तू भी यहां हो। सो अमासा यहूदा को एकट्ठा करने गया परंतु ठहराये हुए
६ समय से उसे अबेर हुआ। तब दाऊद ने अबिशाई से कहा कि अब बिकरी का बेटा शीबा अबसालूम से हमारी अधिक बुराई करेगा सो तू अपने प्रभु के सेवकों को ले और उसका पीछा कर न हो कि वुह बाड़े के नगरों में पैठे और
७ हमारी दृष्टि से बच निकले। सो उसके साथ यूआब के मनुष्य और करीती और पलीती और समस्त बीर निकले और

यिरोशलीम से बाहर गये कि बिकरी के बेटे शीबा का पीछा
८ करें। और जब वे गबियून में बड़े पत्थल के पास पहुंचे
तो अमासा उनके आगे आगे जाताथा और यूआब का वस्त्र,
जो वुह पहिने था सो, उस पर लपेटा हुआ था और उसके
ऊपर एक कटिबंध और एक खड्ग काठी समेत उसकी कटि पर
९ कसा हुआ था और उसके जाते जाते निकल पड़ा। सो यूआब
ने अमासा को कहा कि भाई तू कुशल से है? और यूआब ने
अमासा को चूमने को अपने दहिने हाथ से उसकी दाढ़ी पकड़ी।
१० परंतु यूआब के हाथ के खड्ग को अमासा ने सुर्त न किया सो
उसने उसे उसके पांजर में मारा कि उसकी अंतडियां भूमि पर
निकल पड़ीं और दुहरा के न मारा सो वुह मर गया फिर
यूआब और उसका भाई अबिशाई बिकरी के बेटे शीबा का
११ पीछा किया। और यूआब के जनों में से एक जो उस पास खड़ा
था यों बोला कि जिसको यूआब भला लगे और जो दाऊद
१२ की ओर है सो यूआब के पीछे जाय। और अमासा मार्ग के
मध्य में लोहू से बोरा हुआ था और जब उस पुरुष ने देखा
कि सब लोग खड़े होते हैं तो वुह अमासा को राजमार्ग से
खेत में खींच ले गया और जब उसने देखा कि जो कोई पास
आता है सो खड़ा होता है उसने उस पर कपड़ा डाल
१३ दिया। और जब वुह मार्ग में से अलग किया गया तो सब
लोग यूआब के पीछे पीछे गये कि बिकरी के बेटे शीबा को
१४ खेदें। और वुह इसराईल की सारी गोष्ठियों में से
होके हाबिल और बैतमाका और सारे बरीती लों गया और
१५ वे भी एकट्ठे होके उसके पीछे पीछे गये। और उन्हों ने आके
उसे बैतमाका के हाबिल में घेरा और नगर पर एक मेंड़
बांधा जो बाहर की भीत के सन्मुख था और सब लोग जो
यूआब के साथ थे खोद खाद करते थे कि भीत को गिरावें।
१६ तब एक बुद्धिमती स्त्री ने नगर में से पुकारा कि सुनो सुनो

अनुग्रह करके यूआब से कहो कि इधर पास आवे कि मैं उसे
१७ कुछ कहों। और जब वुह उस पास आया तो उस स्त्री ने
उसे कहा कि आप यूआब? उसने उत्तर दिया कि हां तब
उसने उसे कहा कि अपनी दासी की बात सुनिये वुह बोला मैं
१८ सुनता हों। तब वुह कहिके बोली कि आरंभ में यों कहा
करते थे कि वे निश्चय हाबिल से पूछेंगे और यों समाप्त करतेथे।
१९ मैं इसराईलियों में शांति कारिणी और बिश्वस्त हों सो आप
एक नगर और इसराईल में एक माता को नाश किया चाहते
हैं क्या आप परमेश्वर के अधिकार को निंगला चाहते हैं।
२० यूआब ने उत्तर देके कहा कि यह परे होवे यह मुझ से परे
२१ होवे कि निंगलों अथवा नाश करों। यह बात ऐसी नहीं
परंतु अफराईम पर्ब्बत के एक जन ने बिकरी का बेटा शीबा
नाम का राजा पर अर्थात् दाऊद पर बिरोध का हाथ उठाया
है सो केवल उसी को सौंप दे और मैं नगर से जाता रहोंगा
उस स्त्री ने यूआब को कहा कि देखिये उसका मस्तक भीत पर
२२ फेंक दिया जायगा। तब वुह स्त्री अपनी चतुराई से सब लोगों
के पास गई और उन्हों ने बिकरी के बेटे शीबा का मस्तक काट
के बाहर यूआब की ओर फेंक दिया तब उसने नरसिंगा फूंका
और लोग नगर में से छंट के अपने अपने तंबू को गये और
२३ यूआब फिर के यिरोशलीम में राजा पास आया। और
यूआब इसराईल की समस्त सेना का प्रधान था और जहोईदा
२४ का बेटा बनाया करीती और फलीती का प्रधान था। और
अदूराम कर पर था और अहीलूद का बेटा यहूशाफात स्मारक
२५ था। और शीबा लेखक और सादूक और अबियासार
२६ याजक। और जारीती ऐरा भी दाऊद के आस पास का
एक श्रेष्ठ था।

साऊल के सात बेटे के मारे जाने से तीन बरस का अकाल मिट जाता है १—९ रिसफा मृतकों के लिये बिलाप करती है १०—११ साऊल और यूनासान की हड्डियों को दाऊद उसके पिता की समाधि में गाड़ता है १२—१४ चार संग्राम में फलस्तानियों के चार वीर मारे जाते हैं १५—२२

१ फिर दाऊद के दिनों में तीन बरस लगातार अकाल पड़ा और दाऊद परमेश्वर के रुख ऊआ से परमेश्वर ने कहा कि यह साऊल के और उसके हत्यारे घराने के कारण है क्योंकि २ उसने गबियूनियों को बधन किया। तब राजा ने गबियूनियों को बुला के उन्हें कहा (अब गबियूनी इसराईल के संतानों में के न थे परंतु अमूरानियों के उबरे ऊए थे और इसराईल के संतान ने उनसे किरिया खाई थी और साऊल ने चाहा कि इसराईल के संतान और यहूदा के ज्वलन के लिये उन्हें नाश ३ करे)। इस लिये दाऊद ने गबियूनियों से कहा कि मैं तुम्हारे लिये क्या करों? और किस्से मैं प्रायश्चित करों जिसतें तुम ४ परमेश्वर के अधिकार को आशीष देओ?। तब गबियूनियों ने उसे कहा कि हम साऊल से और उसके घराने से सोना चांदी नहीं चाहते हैं और न हमारे लिये इसराईल में किसी जन को बधन कीजिये फिर वुह बोला जो कहोगे सो मैं ५ तुम्हारे लिये करोंगा। तब उन्हों ने राजा को उत्तर दिया कि जिस जन ने हमें नाश किया और इसराईल के सिवानों में से ६ हमें नाश करने की युक्ति किई थी। उसके सात बेटे हमें सौंपे जायें और हम उन्हें परमेश्वर के लिये साऊल के गबिया में, जो परमेश्वर का चुना ऊआ है, फांसी देंगे तब राजा बोला ७ मैं देओंगा। परंतु राजा ने साऊल के बेटे यूनासान के बेटे मफीबोशीस को, उस किरिया के कारण जो साऊल के बेटे ८ यूनासान के और दाऊद के मध्य में थो, बचा रक्खा। परंतु

राजा ने आइया की बेटी रिज़पा के दो बेटों को, जिन्हें वुह साऊल के लिये जनी थी अर्थात् अरमूनी और मफीबोशीस को और साऊल की बेटी मीखाल के पांच बेटे को जिन्हें वुह
९ मुहलाती बाज़ेलाई के बेटे अदरईल के लिये जनी थी। और उसने उन्हें गबियनियों के हाथ सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें पहाड़ पर परमेश्वर के आगे फांसी दिई और वे सातो कटनी के दिनों में एक साथ मारे गये यह जब कटनी के आरंभ
१० में था। तब आइया की बेटी रिज़पा ने टाट बस्त्र लिया और कटनी के आरंभ से लेके आकाश में से उन पर पानी टपकने लों अपने लिये पहाड़ पर बिछा दिया और दिन को आकाश के पंछी और रात को बनैले पशु को उन पर ठहरने
११ न देती थी। और दाऊद को कहा गया कि साऊल की दासी
१२ आइया की बेटी रिज़पा ने यों किया। सो दाऊद ने जाके साऊल की हड्डियों और उसके बेटे यूनासान की हड्डियों को, याबश जलियाद के मनुष्यों से फेर लिया जिन्हों ने उन्हें बैतशान की सड़क से, जहां फलस्तानियों ने उन्हें टांगा था, जब फलस्तानियों ने साऊल को गलबूआ में मारा था,
१३ चुरा लिया। और वुह वहां से साऊल की हड्डियों को और उसके बेटे यूनासान की हड्डियों को ले आया और जो टांगे
१४ गये थे उनकी हड्डियों को एकट्ठा करवाया। और उन्हों ने साऊल और यूनासान की हड्डियों को सीला के बनियामीन के देश में, उसके पिता कीश की समाधि में, गाड़ा और सब जो राजा ने उन्हें आज्ञा किई थी उन्हों ने किया और उसके पीछे
१५ देश के कारण ईश्वर ने बिनय को मान लिया। और फलस्तानी इसराईल से फिर लड़े और दाऊद अपने सेवकों के साथ उतर के फलस्तानियों से लड़ा और दाऊद दुर्बल
१६ ज़आ। अब यशबीबनूब ने, जो उस दानव के बेटों में से था जिस की बरछी का फल पीतल का सवा दस सेर एक का था वुह

१७ नया खड्ग बांधे ऊए चाहा था कि दाऊद को मार डाले। पर सरूयाह के बेटे अबिशाय ने सहाय किई और उस फलस्तानी को मार के बधन किया तब दाऊद के लोग उसे किरिया खाके बोले कि आप फिर कभी हमारे साथ लड़ाई पर मत
१८ जाइये जिसतें आप इसराईल का दीआ न बुझावें। और उसके पीछे ऐसा ऊआ कि गोब में फलस्तानियों से फेर संग्राम ऊआ तब हूशाती सिबिकाई ने साफ को जो दानव के बेटों में का था
१९ मार डाला। और गोब में फिर फलस्तानियों से संग्राम ऊआ तब यायरी अरजीम के बेटे इलहान ने बैतुल्लहमी ने गिट्टी गोलियात के भाई को, जिसके भाले की छड़ जोलाहे के लट्ठे
२० सी थी, मारा। फिर गाथ में एक और संग्राम ऊआ जहां बड़े डील का एक जन था उसके एक एक हाथ में छः छः अंगुलियां और एक एक पांव में छः छः अंगूठे थे गिनती में
२१ चौबीस और वुह भी दानव से उत्पन्न ऊआ। और जब उसने इसराईल को तुच्छ जाना तब दाऊद के भाई शमीय के बेटे
२२ यूनासान ने उसे घात किया। ये चार गाथ में दानव से उत्पन्न ऊए और दाऊद और उसके सेवकों के हाथ से मारे गये।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

ईश्वर के नाना आशीष के लिये और बचन के लिये स्तुति।

१ और दाऊद ने उस दिन परमेश्वर से इस भजन की बातें कहीं जब कि परमेश्वर ने उसे उसके सारे बैरियों के और साऊल
२ के हाथ से छुड़ाया। और बोला कि परमेश्वर मेरा पहाड़
३ और मेरा गढ़ और मेरा बचवैया। मेरे चटान का ईश्वर उस पर मैं भरोसा रक्खोंगा मेरी ढाल और मेरी मुक्ति का सींग मेरा ऊंचा गर्गज और मेरा शरण और मेरा त्राण कर्त्ता है
४ तू मुझे अंधेर से बचाता है। मैं परमेश्वर की दुहाई देउंगा

जो स्तुति के योग्य है यों मैं अपने बैरियों से बचायाजाओंगा।
५ जब कि मृत्यु की लहरों ने मुझे घेरा और अधर्म्मियों के बाढ़ों
६ ने मुझे डराया। नरक की पीड़ा ने मुझे घेरा मृत्यु के फंदों ने
७ मुझे रोका। अपने दुःख में मैं ने परमेश्वर को पुकारा अपने
ईश्वर के आगे चिल्लाया और उसने अपने मंदिर में से मेरा
८ शब्द सुना और मेरा चिल्लाना उसके कान में पज़ंचा। तब
उसके क्रोध के कारण पृथिवी हिलगई और थर्थरा उठी स्वर्ग
९ की नेवें हिल गईं। उसके नथुनों से एक धूंआ उठा और उसके
१० मुंह में की आग खागई उस्से कोइले धधक उठे। उसने स्वर्गों
को भी झुकाया और उतर आया और उसके पांव तले
११ अंधियारा था। वुह एक करोबी पर चढ़ा था और उड़ा और
१२ पवन के डैनों पर दिखाई दिया। और उसने जलों के बंधन
से और आकाश के गाढ़े मेघों से अपनी चारों ओर अंधकार
१३ का तंबू किया। उसके आगे की चमक से कोइले सुलग गये।
१४ परमेश्वर स्वर्ग से गर्जा और अतिमहान ने अपना शब्द उच्चारा।
१५ उसने बाण चलाये और उन्हें बिथरा दिया बिजुली ने उन्हें
१६ हरा दिया। परमेश्वर के दपट से और उसके नथुनों के स्वास
के झोंके से समुद्र की थाह दिखाई दिई जगत की नेवें उघर
१७ गईं। उसने ऊपर से भेजा और मुझे उठा लिया उसने मुझे
१८ बज़त पानियों में से खींच लिया। उसने मुझे मेरे बलवंत
बैरी से और उनसे जो मुझ्से घिन करते थे छुड़ाया क्योंकि वे
१९ मुझ्से प्रबल थे। उन्हों ने मुझे मेरे बिपत के दिन में रोका
२० परंतु परमेश्वर मेरा आसा था। वुह मुझे बड़े स्थान में भी
निकाल लाया उसने मुझे छुड़ाया इस लिये कि वुह मुझ्से
२१ प्रसन्न था। परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के समान मुझे प्रतिफल
दिया और मेरे हाथ की पवित्रताई के समान मुझे पलटा
२२ दिया। क्योंकि मैं ने परमेश्वर के मार्गों का पालन किया और
२३ अपने ईश्वर से दुष्टता से फिर न गया। क्योंकि उसके सारे

बिचार मेरे आगे और उसकी बिधिन से मैं फिर न गया।
२४ मैं उसके लिये खरा था और मैं ने आप को अपनी बुराई से बचा
२५ रक्खा है। इस लिये परमेश्वर ने मेरे धर्म के समान और उसकी
२६ दृष्टि में मेरी पबित्रता के समान मुझे प्रतिफल दिया। दयाल पर
तू आप को दयाल दिखावेगा खरे को खरा दिखावेगा।
२७ निर्मल के लिये आप को निर्मल दिखावेगा और क्रूरों को तू
२८ आप को बिपरीत दिखावेगा। कष्टितों को तू बचावेगा परन्तु
२९ ध्वस्त करने के लिये तेरी आंखें घमंडियों पर हैं। क्योंकि हे
परमेश्वर तू मेरा दीपक और परमेश्वर मेरे अंधियारे को
३० उंजियाला करेगा। क्योंकि तुझी से मैं ने एक जथा को तोड़
३१ दिया मैं अपने ईश्वर से भीत फांद गया। ईश्वर का मार्ग
सिद्ध परमेश्वर का बचन जंचा ऊआ जिन सभों का भरोसा
३२ उस पर है वुह उनके लिये ढाल है। क्योंकि परमेश्वर को
छोड़ ईश्वर कौन और हमारे ईश्वर को छोड़ चटान कौन? ।
३३ ईश्वर मेरा बूता और पराक्रम वही मेरी चाल सिद्ध करता है।
३४ वुह हरिणी के से मेरे पांव बनाता है वुह मुझे मेरे ऊंचे स्थानों
३५ पर बैठाता है। वुह मेरे हाथों को युद्ध के लिये सिखाता है
३६ ऐसा कि पोलाद का धनुष मेरी भुजाओं से टूटता है। तूही
ने अपने बचाव की ढाल भी मुझे दिई है और तेरी कोमलता
३७ ने मुझे बढ़ाया है। तू ने मेरे डग को मेरे तले बढ़ाया है यहांलों
३८ कि मेरी घुट्ठीयां फिसल न गईं। मैं ने अपने बैरियों का पीछा
किया और उन्हें नाश किया और उलटा न फिरा जबलों
३९ मैं ने उन्हें संहार न किया। मैं ने उन्हें नाश किया और उन्हें
घायल किया ऐसा कि वे उठ न सके हां वे मेरे पांव तले पड़े हैं।
४० क्योंकि तू ने संग्राम के लिये बल से मेरी कटि बांधी जो मुझ
४१ पर चढ़आये थे तू ने उन्हें मेरे नीचे झुकाया। तूही ने मेरे
बैरियों के गले भी मुझे दिये हैं जिसतें मैं अपने बैरियों को
४२ नाश करों। उन्हों ने ताका पर कोई बचवैया न था परमेश्वर की

४३ और परंतु उसने उन्हें उत्तर न दिया। तब मैं ने उन्हें पृथिवी की धूल की नाईं बुकनी किया मैं ने उन्हें मार्ग के चहले की नाईं
४४ रौंदा और उन्हें बिछा दिया। तू ने मुझे मेरे लोगों के झगड़े से भी छुड़ाया है तू ने मुझे अन्यदेशियों का प्रधान किया है एक
४५ लोग जिसे मैं ने नहीं जाना, मेरी सेवा करेंगे। परदेशियों के पुत्र कपट से मुझे मानेंगे सुनतेही वे मेरे अधीन हो
४६ जायेंगे। परदेशी कुम्हला जायेंगे और वे अपने सकेत स्थानों में
४७ से डर निकलेंगे। परमेश्वर जीता है और मेरा चटान धन्य
४८ मेरी मुक्ति का चटान ईश्वर महान होवे। ईश्वर मेरे लिये प्रतिफल
४९ देता है और लोगों को मेरे नीचे उतारता है। और मुझे मेरे बैरियों में से निकाल लाता है तू ने मुझे उनसे ऊपर उभाड़ लिया है जो मुझ पर चढ़ आये थे तू ने मुझे अंधेरी मनुष्य से
५० छुड़ाया है। हे परमेश्वर मैं अन्यदेशियों में तेरा धन्य मानोंगा
५१ और तेरे नाम की स्तुति गाओंगा। वुह अपने राजा की मुक्ति का गर्गज है और अपने अभिषिक्त दाऊद पर और उसके बंश पर सदा लों दया करता है।

२३ तेईसवां पर्ब्ब ।

दाऊद अपने अंत के वचन में ईश्वर की बाचा पर अपना बिश्वास बर्णन करता है १—५ दुष्टों की गति ६—७ दाऊद के बीर के नाम ८—३९ ।

१ ये दाऊद के अंत की बातें, यस्सी के बेटे दाऊद ने कहा और उस पुरुष ने जो उभाड़ा गया याकूब के ईश्वर के अभिषिक्त ने जो
२ इसराईल में मधुर गायक है कहा। ईश्वर का आत्मा मेरी
३ ओर से बोला और उसका वचन मेरी जीभ पर था। इसराईल के ईश्वर ने कहा इसराईल के चटान ने मुझे कहा मनुष्यों पर
४ राज्य कर तू धर्म्मी होके ईश्वर के डर से प्रभुता करता है। और प्रातःकाल की ज्योति की नाईं बिना मेघों के बिहान सूर्य्य उदय

होता है और मेंह के पीछे पृथिवी में से कोमल घास उगने की
५ नाईं। यद्यपि मेरा घर ईश्वर के आगे ऐसा न हो तथापि उसने
मेरे साथ समस्त विषय में सनातन की एक सत्य बाचा बांधी
मेरी सारी मुक्ति और सारी बांछा के लिये यद्यपि वुह उसे
६ न उगावे। परन्तु बलियाली सब के सब कांटों के समान दूर
७ किये जायेंगे क्योंकि वे हाथों से पकड़े नहीं जासके। परन्तु जो
जन उन्हें छूवे उसे अवश्य है कि लोहे और बरछी के छड़ से
पूर्ण होवे और वे उसी स्थान में सर्बथा जलाये जायेंगे।
८ दाऊद के बीरों के नाम ये हैं तख़मूनी जो प्रधानों में श्रेष्ठ
आसन पर बैठता था वही अज़्नी अदिनू था उसीने आठ सौ के
९ सन्मुख होके उन्हें एक साथ घात किया। उसके पीछे अहोती
दूदू का बेटा इलियाज़र जो उन तीन बीरों में से जो दाऊद क
संग थे उन्हों ने उन फलस्तानियों को तुच्छ समझा जो इसराईली
१० लोगों से लड़ने के लिये एकट्ठे थे। उसने उठ के फलस्तानियों को
मारा यहां लों कि उसका हाथ थक गया और मूठ हाथ में
चिपक गया और परमेश्वर ने उस दिन बड़ा जय दिया और लोग
११ केवल लूट के लिये उसके पीछे फिर गये। उसके पीछे हरारीअगी
का बेटा शम्मा फलस्तानी मसूर के खेत में कहीं लेने को
१२ एकट्ठे ऊए और लोग फलस्तानियों के आगे से भाग गये। परन्तु
वुह खेत के मध्य में खड़ा रहा और उसे बचाया और
फलस्तानियों को मार डाला और परमेश्वर ने बड़ा जय दिया।
१३ और तीस में से तीन प्रधान निकले और कटनी के समय में
दाऊद पास अदुल्लम की कंदला में गये और फलस्तानियों
१४ की जथा ने रफ़ाईम की तराई में डेरा किया था। और दाऊद उस
समय गढ़ में था और फलस्तानियों की चौकी बैतुल्लहम में।
१५ और दाऊद ने लालसा करके कहा हाय कि कोई मुझे उस कूए का
१६ एक घोंट पानी पिलावे जो बैतुल्लहम के फाटक पास है। उन तीन
शूरों ने फलस्तानियों की सेना को आरंपार तोड़ के बैतुल्लहम के

कूए से, जो फाटक के पास था, पानी निकाल लाके दाऊद को दिया तथापि वुह उसे पीने न चाहा परन्तु परमेश्वर के आगे
१७ उसे उंडेल दिया। और उसने कहा कि हे परमेश्वर मुझे परे होवे कि मैं ऐसा करों क्या यह उन लोगों का लोहू नहीं जो अपने प्राण को जोखिम में लाये हैं? इस लिये उसने पीने
१८ न चाहा इन तीन शूरों ने ऐसे ऐसे काम किये। और सुरिया के बेटे यूआब का भाई अबीशाय भी तीन में प्रधान था उसने तीन सौ पर भाला चलाया और उन्हें मार डाला
१९ और तीन में नामी हुआ। क्या वुह तीनों में सब से प्रतिष्ठित न था? इस लिये वुह उनका प्रधान हुआ तथापि वुह पहिले
२० तीन लों न पहुंचा। कब्ज़ईल का एक बलवन्त पुरुष जिसने बड़े बड़े कार्य किये उसका बेटा युहायदा जिसके बेटे बनाया ने मवाब के दो जन को, जो सिंह के तुल्य थे, मारा और जाके पाला के समय में गड़हे क बीच एक सिंह को मारा।
२१ और उसने एक सुंदर मिसरी को मार डाला उस मिसरी के हाथ में एक भाला था परन्तु वुह लट्ठ लेके उस पर उतरा और मिसरी के हाथ से भाला छीन लिया और उसीके भाले
२२ से उसे मार डाला। युहायदा के बेटे बनाया ने यह यह
२३ किये और तीन शूरों में नामी था। वुह उन तीसों से अधिक प्रतिष्ठित था पर वुह उन तीन लों न पहुंचा और
२४ दाऊद ने उसे अपने मंत्रियों का प्रधान किया। और यूआब का भाई असाहिल उन तीस में एक और इलहानन बैतुल्लहमी
२५।२६ डोडो का बेटा। शम्मा हरूदी ईली का हरूदी। पलती
२७ हलीस टकु अक्कीश का बेटा ऐरा। अनातूसी अबईज़र हूशाती
२८।२९ मबनाई। अहोही सलमून नीटोफाती महारई। नीटोफाती बआना का बेटा हिलब बनियामीन के संतान के गबिया में
३० से रिबई का बेटा इटई। पिराथूनी बनाया गाश की तरी का
३१।३२ हिदई। अर्बतनी अबिअल्बून बरहूमी अस्मावत। शअलबूनी

३३ इलिअहवा जो यूनासानी जाशीन के बेटों में से था। हरारी
३४ शम्मा और हरारी शरार का बेटा अहयाम। मझाकाती का बेटा
अहशबई का बेटा इलीफलत गलूनी अहीतोफेल का बेटा
३५।३६ इलियम। करमली हसराई अरबी पाराई। सूबा के
३७ नासान का बेटा ऐगाल गादी बानी। अमूनी सिलक्क बीरूती
३८ नहराई सरूया के बेटे यूआब का अस्त्र धारी था। इथरी ऐरा
३९ इथरी गारीब। हट्टी औरिया सब समेत सैंतीस।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब ।

शैतान के बहकाने से दाऊद लोगों को गिनवाता है १—४ नव मास बीस दिन में गिनती का सन्देश पऊंचता है ५—९ तीन मरियों में दाऊद तीन दिन की मरी चुनता है १०—१४ सत्तर सहस्र जन के मारे जाने से दाऊद पश्चात्ताप करके यिरोशलीम का नाश होने से रोकता है १५—१७ दाऊद के बलि चढ़ाने से मरी थम जाती है १८—२५।

१ और फेर परमेश्वर का क्रोध इसराईल पर भड़का और उसने दाऊद को उन पर उभाड़ा कि इसराईल को और
२ यहूदा को गिनावे। क्योंकि राजा ने सेना के प्रधान यूआब को, जो उसके साथ था, आज्ञा किई कि इसराईल की सारी गोष्ठियों में से, दान से बीरशबा लों, जा और लोगों को गिन जिसतें मैं
३ लोगों की गिनती को जानों। तब यूआब ने राजा से कहा कि परमेश्वर आप का ईश्वर उन लोगों को, जितने वे होवें, सौ गुना अधिक करे जिसतें मेरे प्रभु राजा की आंख देखें परन्तु किस कारण मेरे प्रभु राजा यह काम किया चाहते हैं?।
४ तथापि राजा की बात यूआब के और सेना के प्रधानों की बात पर प्रबल ऊई और यूआब और सेना के प्रधान राजा के पास

५ से इसराईल के लोगों को गिन्ने को निकल गये। और अर्दन पार उतरे और अरूईर में नगर की दहिनी ओर, जो जाद
६ की तराई के मध्य में जाईर की ओर है डेरा किया। वहां से जलियाद और नये बसे ऊए नीचे के देश में आये और
७ दानजान को और घूम के सैदून को आये। और सूर के गढ़ को आये और हवियों के सारे नगरों को और किनानियों के
८ और वे यहूदा के दक्षिण को बीरश्बा लों निकल गये। सो जब वे सारे देश में से होके गये नव मास बीस दिन के पीछे
९ यिरोशलीम को आये। और यूआब ने लोगों की गिनती का पत्र राजा को दिया सो इसराईल में आठ लाख खड्गधारी
१० बीर थे और यहूदा के लोग पांच लाख। और लोगों के गिनाने के पीछे दाऊद के मन में खटका ऊआ और दाऊद ने परमेश्वर से कहा कि मैं ने इस काम में बड़ा पाप किया है और अब हे परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता हों कि अपनी कृपा से अपने दास का पाप क्षमा कर क्योंकि मैं ने अति मूढ़ता किई है।
११ इसलिये कि जब दाऊद बिहान को उठा तो परमेश्वर का बचन
१२ दाऊद के दर्शी जाद भविष्यद्वक्ता पर यह कहिके पऊंचा। कि जा और दाऊद से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं तेरे आगे तीन बात धरता हों तू उन में से एक को चुन कि मैं
१३ तुझ पर भेजों। सो जाद दाऊद पास आया और उसे कहिके बोला कि तेरे देश में तुझ पर सात बरस का अकाल पड़े अथवा तू तीन मास लों अपने शत्रुन के आगे भागा फिरे और वे तुझे रगेदें अथवा तेरे देश में तीन दिन की मरी पड़े अब सोच और देख कि मैं उसे जिसने मुझे भेजा क्या उत्तर
१४ देओं। दाऊद ने जाद से कहा कि मैं बड़े सकेत में हों हम परमेश्वर के हाथ में पड़ें क्योंकि उसकी दया बऊत है और
१५ मनुष्यों के हाथ में मैं न पड़ों। सो परमेश्वर ने इसराईल पर बिहान से ठहराये ऊए समय लों मरी भेजी और दान

१६ से लेके बीरशबा लों लोगों में से सत्तर सहस्र जन मर गये। और जब दूत ने नाश करने के लिये यिरोशलीम पर अपना हाथ बढ़ाया तब परमेश्वर बुराई से फिर गया और उस दूत से कहा जिसने लोगों को नाश किया कि बस है अब अपना हाथ रोकले और परमेश्वर का दूत यबूसी अराना के खलिहान के लग था।
१७ और जब दाऊद ने उस दूत को देखा जिसने लोगों को मारा तो परमेश्वर से कहा कि देख पाप तो मैं ने किया है और दुष्टता मैं ने किई है परन्तु इन भेड़ों ने क्या किया है? सो
१८ मुझ पर और मेरे बाप के घराने पर तेरा हाथ पड़े। और उस दिन जाद ने दाऊद पास आके उसे कहा कि चढ़जा और यबूसी अराना के खलिहान में परमेश्वर के लिये एक बेदी
१९ बना। और जाद के कहने पर दाऊद परमेश्वर की आज्ञा के
२० समान चढ़ गया। और अराना ने ताका और राजा को और उसके सेवकों को अपनी ओर आते देखा सो अराना निकला और राजा के आगे झुक के भूमि पर प्रणाम किया।
२१ और कहा कि मेरे प्रभु राजा अपने सेवक के पास किस लिये आये हैं? दाऊद ने कहा कि तुझ से खलिहान मोल लेके परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाओं जिसतें लोगों में से मरी थम जाय।
२२ अराना ने दाऊद से कहा कि मेरे प्रभु राजा लेवें और जो अच्छा जानें सो भेंट करें और देखिये कि होम के बलिदान के लिये बैल और पीटने की सामग्री बैलों की सामग्री समेत
२३ इंधन के लिये हैं। सो जैसा राजा राजा को देता है अराना ने सब कुछ किया और अराना ने राजा से कहा कि परमेश्वर
२४ आप का ईश्वर आप को ग्रहण करे। तब राजा ने अराना से कहा कि यों नहीं परन्तु मैं निश्चय दाम देके उसे मोल लेओंगा और मैं अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये ऐसी होम की भेंट न चढ़ाओंगा जो सेंत की हो सो दाऊद ने वुह खलिहान और
२५ बैल पचास शेकल चांदी देके मोल लिये। और दाऊद ने

वहां परमेश्वर के लिये बेदी बनाई और होम की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ाईं और परमेश्वर देश के लिये मनाया गया और मरी इसराईल में से थम गई ।

राजाओं की पहिली पुस्तक जो राजाओं की तीसरी पुस्तक कहावती है।

१ पहिला पर्ब्ब।

दाऊद के बुढ़ापे में अबीशाग उसकी सेवा करती है १—४ अदुनीजा राज्य लेता है ५—१० नासान के मंत्र से सुलेमान की माता दाऊद से कहिके सुलेमान को राज्य दिलाती है ११—४० यह सुनके अदुनीजा बेदी का शरण लेता है ४१—४९ सुलेमान उसे क्षमा करता है ५०—५३।

१ अब दाऊद राजा दिनी और पुरनिया हुआ और उन्हों ने
२ उसे कपड़े से ढापा परंतु वुह न गरमाता था। इस लिये उसके सेवकों ने उसे कहा कि मेरे प्रभु राजा के लिये एक कन्या ढूंढ़ी जाय जिसतें वुह राजा के आगे खड़ी रहे और उसके लिय सेविका होवे और वुह आप की गोद में पड़ी रहे जिसतें
३ मेरा प्रभु राजा गरमा जाय। सो उन्हों ने इसराईल के समस्त सिवानों में एक सुंदरी कन्या ढूंढ़ी और शुनामी अबीशाग़ को
४ पाया और उसे राजा पास लाये। और वुह कन्या अति रूपवती थी और राजा की सेवा और उसकी टहल करती थी
५ परंतु राजा उस्से अज्ञान रहा। तब हज्जीस के बेटे अदुनीजा ने यह कहिके आप को बढ़ाया कि मैं राज्य करोंगा और अपने लिये रथ और घोड़चढ़े और पचास मनुष्य अपने
६ आगे आगे दौड़ने को सिद्ध किये। और उसके बाप ने उसे यह कहिके कभी उदास न किया कि तू ने ऐसा क्यों किया? और

वुह भी बहुत सुंदर था और उसे अबसालूम के पीछे जनी
७ थी। और वुह सूरिया के बेटे यूआब और अबियासार याजक
से बातचीत करता था और ये दोनों अदुनीजा के पीछे सहाय
८ करते थे। परंतु सादूक याजक और युहायदा का बेटा बनाया
और नासान आगमज्ञानी और शमीय और रियी और
९ दाऊद के महावीर अदुनीजा के साथ न थे। और अदुनीजा ने
भेड़ और बैल और पलेहुए ढोर सुहिलीस के पत्थल पर, जो
ऐनजल के कूए के लग है, बधन किये और अपने सारे भाई अर्थात
राजा के बेटों का और यहूदा के सारे लोगों का अर्थात् राजा के
१० सेवकों का नेउंता किया। परंतु नासान आगमज्ञानी और बनाया
और महावीरों को और अपने भाई सुलेमान को न बुलाया।
११ इस लिये नासान सुलेमान की माता बैतशबा को यह कहिके
बोला कि क्या तू ने नहीं सुना कि हजीस का बेटा अदुनीजा राज्य
१२ करता है और हमारा प्रभु दाऊद नहीं जानता?। अब इस
लिये आइये मैं आप को मंत्र देउं जिसतें आपही का प्राण और
१३ आपके बेटे सुलेमान का प्राण बचे। आप दाऊद राजा पास
जाइये और उसे कहिये कि मेरे प्रभु राजा क्या आप ने अपनी
दासी से किरिया खाके नहीं कहा कि निश्चय तेरा बेटा सुलेमान
मेरे पीछे राज्य करेगा? और वही मेरे सिंहासन पर बैठेगा
१४ फेर अदुनीजा क्यों राज्य करता है?। देख आप क राजा से
बातें करतेही मैं भी आप के पीछे आ पहुंचोंगा और आप की
१५ बातों को दृढ़ करोंगा। सो बैतशबा भीतर कोठरी में
राजा पास गई और राजा तो बहुत वृद्ध था और शूनामी
१६ अबीशाग़ राजा की सेवा करती थी। और बैतशबा झुकी
और राजा के आगे दंडवत किई तब राजा ने कहा कि क्या
१७ है?। उसने उसे कहा कि हे मेरे प्रभु आप ने परमेश्वर अपने
ईश्वर की किरिया खाके अपनी दासी से कहा कि निश्चय मेरे
पीछे तेरा बेटा सुलेमान राज्य करेगा और वुह मेरे सिंहासन

१८ पर बैठेगा। अब देखिये अदुनीजा राज्य करता है और
१९ अबलों मेरा प्रभु राजा नहीं जानता। और उसने बहुतसे
बैल और पलेहुए ढोर और भेड़ें बधन किये और राजा के सब
बेटों और अबियासार याजक और सेना के प्रधान यूआब का
नेउंता किया है परंतु उसने आप के दास सुलेमान को नहीं
२० बुलाया। और अब हे मेरे प्रभु राजा समस्त इसराईल की
दृष्टि आप पर है जिसतें आप उन्हें कहें कि मेरे प्रभु राजा के
२१ सिंहासन पर आप के पीछे कौन बैठेगा?। नहीं तो यह होगा
कि जब मेरा प्रभु राजा अपने पितरों के साथ शयन करेगा तब
मैं और मेरा बेटा सुलेमान दोनों दोषी गिने जायेंगे।

२२ और देखो कि वुह राजा से बातें कर रही थी कि नासान
२३ आगमज्ञानी भी आ पहुंचा। और उन्हों ने यह कहिके
राजा को जनाया कि नासान आगमज्ञानी आया है और
जब वुह राजा के आगे आया तो उस ने राजा के आगे भूमि
२४ लों प्रणाम किया। और बोला हे मेरे प्रभु राजा क्या आप ने
कहा है कि मेरे पीछे अदुनीजा राज्य करके मेरे सिंहासन
२५ पर बैठेगा?। क्योंकि वुह आज उतरा और बहुत से बैल
और पलेहुए ढोर और भेड़ें बहुताई से मारीं और समस्त
राजकुमारों का और सेना के प्रधानों का और अबियासार याजक
का नेउंता किया और देखिये वे उसके साथ खाते पीते हैं और
२६ कहते हैं कि अदुनीजा राजा जीये। परंतु आप के दास मुझे
और सादूक़ याजक और यहायदा के बेटे बनाया को और
२७ आप के दास सुलेमान को न बुलाया। क्या यह मेरे प्रभु
राजा की ओर से है और आप ने अपने दास को न जनाया
कि मेरे प्रभु राजा के पीछे उसके सिंहासन पर कौन बैठेगा?।

२८ तब दाऊद राजा ने उत्तर देके कहा कि बैतशबा को मुझ
पास बुलाओ और वुह राजा के आगे आई और राजा के
२९ सन्मुख खड़ी हुई। राजा ने किरिया खाके कहा कि उस परमेश्वर

के जीवन सों जिस ने मेरे प्राण को समस्त दुःख से छुड़ाया।
३० जैसा मैं ने परमेश्वर इसराईल के ईश्वर की किरिया खाके तुझे कहा था कि निश्चय तेरा बेटा सुलेमान मेरे पीछे राज्य करेगा और मेरी संती मेरे सिंहासन पर वही बैठेगा वैसाही
३१ मैं आज निश्चय करोंगा। तब बैतशबा ने भूमिलों झुकके प्रणाम किया और बोली कि मेरा प्रभु राजा दाऊद सर्वदा जीता
३२ रहे। दाऊद राजा ने आज्ञा किई कि सादूक़ याजक और नासान आगमज्ञानी और युहायदा के बेटे बनाया को मुझ
३३ पास बुलाओ और वे राजा के आगे आये। राजा ने उन्हें भी कहा कि अपने प्रभु के सेवकों को अपने साथ लेओ और मेरे बेटे सुलेमान को मेरेही खच्चर पर चढ़ाओ और उसे जीहून को
३४ उतार ले जाओ। और सादूक़ याजक और नासान आगमज्ञानी उसे वहां इसराईल पर राज्याभिषेक करें और तुरही फूंक के बोलो कि ईश्वर सुलेमान राजा को जीता
३५ रक्खे। तब उसके पीछे पीछे चले आओ जिसतें वुह आवे और मेरे सिंहासन पर बैठे क्योंकि मेरी संती वही राजा होगा और मैं ने ठहराया है कि इसराईल पर और यहूदा पर
३६ वही प्रभुता करे। तब युहायदा के बेटे बनाया ने राजा को उत्तर देके कहा कि आमीन मेरे प्रभु राजा का ईश्वर परमेश्वर
३७ भी ऐसाही कहे। जिस रीति से परमेश्वर मेरे प्रभु राजा के संग था उसी रीति से सुलेमान के संग होवे और उसके सिंहासन को मेरे प्रभु दाऊद राजा के सिंहासन से श्रेष्ठ
३८ करे। सो सादूक़ याजक और नासान आगमज्ञानी और युहायदा का बेटा बनाया और करीती और पलीती उतरे और सुलेमान को दाऊद राजा के खच्चर पर चढ़ाया और
३९ उसे जीहून को लाये। और वहां सादूक़ याजक ने तंबू से एक सींग में तेल लिया और सुलेमान को अभिषेक किया तब उन्हों ने तुरही फूंकी और सब के सब बोले कि सुलेमान राजा

४० को ईश्वर जीता रक्खे। और समस्त लोग उसके पीछे पीछे चढ़आये और लोग बांसली बजाते बजाते बड़े आनंद से आनंद करने लगे ऐसा कि भूमि उनके शब्द से फट गई।
४१ और अदुनीजा ने और उसके साथ के समस्त नेउंतहरी नें सुना और ज्यों वे खाचुके थे और जब यूआब ने तुरही का शब्द सुना तो बोला कि नगर में यह क्या कोलाहल और
४२ हारा है?। वुह यह कहि रहा था तो क्या देखता है कि अबियासार याजक का बेटा यूनासान आया और अदुनीजा ने उसे कहा कि आ क्योंकि तू बीर है और सुसंदेश लाता है।
४३ तब यूनासान ने अदुनीजा से कहा कि निश्चय हमारे प्रभु राजा
४४ दाऊद ने सुलेमान को राजा किया है। और राजा ने सादूक़ याजक को और नासान आगमज्ञानी को और युहायदा के बेटे बनाया को और करीती और पलीती को उसके साथ भेजा और
४५ उन्हों ने राजा के खच्चर पर उसे चढ़ाया। और सादूक़ याजक और नासान आगमज्ञानी ने जीहून में उसे राज्याभिषेक किया और वे वहां से ऐसा आनंद करतेऊए फिरे हैं कि नगर
४६ भांभना गया तुम ने वही शब्द सुना है। और सुलेमान
४७ राज्य के सिंहासन पर भी बैठा है। और इस्से अधिक राजा के सेवक हमारे प्रभु राजा दाऊद को यह कहिके बधाई दे रहे हैं कि ईश्वर सुलेमान को आप के नाम से अधिक बढ़ावे और उसके सिंहासन को आप के सिंहासन से अधिक श्रेष्ठ
४८ करे और राजा ने बिछौने पर दंडवत किई। और राजा ने भी कहा है कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर धन्य है जिसने आज के दिन मेरे सिंहासन का बैठवैया दिया और मेरी
४९ आंखों ने देखा। तब सारे नेउंतहरी जो अदुनीजा के साथ थे
५० डरके उठे और हरएक अपने अपने मार्ग चला गया। और अदुनीजा सुलेमान के डरके मारे उठा और जाके बेदी के
५१ सींगों को पकड़ा। और सुलेमान को संदेश पऊंचा कि देखिये

अदनीजा सुलेमान राजा से डरता है क्योंकि वुह बेदी के सींगों को पकड़ेऊए कहता है कि सुलेमान राजा आज मुझे किरिया खाके कहे कि मैं अपने सेवक को खड्ग से घात न
५२ करोंगा। तब सुलेमान बोला यदि वुह आप को योग्य पुरुष दिखावेगा तो उसका एक बाल भूमि पर न गिरेगा परंतु यदि
५३ उसमें दुष्टता पाई जाय तो वुह मारा जायगा। सो सुलेमान राजा, लोग भेजके उसे बेदी पर से उतार लाया उसने आके सुलेमान राजा के आगे दंडवत किई सुलेमान ने उसे कहा कि अपने घर जा।

२ दूसरा पर्ब्ब।

दाऊद सुलेमान को उपदेश करके मर जाता है १—११ सुलेमान राज्य पर स्थिर होता है और अदूनीजा मारा जाता है १२--२५ अबियासार याजकता के पद से अलग किया जाता है २६—२७ यूआब बेदी के शरण में मारा जाता है २८—३४ आज्ञा टालने से शमिय मारा जाता है ३५—४६।

१ जब दाऊद के मरने के दिन आ पऊंचे तब उसने अपने बेटे
२ सुलेमान को यह कहिके उपदेश किया। कि मैं समस्त पृथिवी की रीति पर जाता हों इस लिये तू दृढ़ हो और आप को
३ मनुष्य दिखा। और परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा को पालन करके उसके मार्गों में चल और उसकी व्यवस्थों और आज्ञाओं और विधिन और उसकी साक्षी की रक्षा कर जैसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है जिसतें तू अपने कार्यों में
४ और जिधर तू फिरे भाग्यवान होवे। जिसतें परमेश्वर अपने बचन पर बना रहे जो उसने मेरे विषय में कहा कि यदि तेरे बंश अपने मार्ग में चौकस रहिके अपने सारे मनसे और सारे प्राण से मेरे आगे सच्चाई से चलेंगे तो इसराईल के

५ संतान का सिंहासन तुझे अलग न होगा। और जो कुछ कि सुरिया के बेटे यूआब ने मुझे और इसराईली सेना के दो प्रधानों अर्थात नर के बेटे अबनर और यसर के बेटे अमासा से किया तू जानता है उसने उन्हें मारडाला और मिलाप में संग्राम का लोहू बहाया और संग्राम के लोहू को अपनी कटि के पटुके पर और अपने पांओं की जूतियों पर छिड़का।
६ सो तू अपनी बुद्धि के समान कर और उसका पक्का बाल
७ कुशल से समाधि में उतरने न दे। परंतु जलादी बारजलाई के बेटों पर दया कर और वे उन में होवें जो तेरे मंच पर भोजन करते हैं इस लिये कि जब मैं तेरे भाई अबसालूम से भागा था
८ वे मुझ पास आये। और देख बहुरोमी बनियामीनी जारा का बेटा शमिय तेरे साथ है जिसने मुझे भारी स्राप से स्राप दिया जिस दिन मैं महानाईम में गया परंतु वुह अर्दन पर मुझे भेंट करने को आया और मैं ने यह कहिके उसे परमेश्वर की किरिया खाई कि मैं तुझे तलवार से घात न करोंगा।
९ पर उसे निर्दोष मत जानियो क्योंकि तू बुद्धिमान है और जानता है जो कुछ उसे किया चाहे परंतु उसका पक्का बाल
१० लोहू के साथ समाधि में उतारियो। उसके पीछे दाऊद ने अपने पितरों में शयन किया और दाऊद के नगर
११ में गाड़ा गया। और दाऊद ने इसराईल पर चालीस बरस राज्य किया सात बरस हबरून में और तीस बरस
१२ यिरोशलीम में उस ने राज्य किया। तब सुलेमान अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठा और उसका राज्य बहुत
१३ स्थिर हुआ। तब हजीस का बेटा अदुनीजा सुलेमान की माता बैतशबा पास आया उसने पूछा कि तू कुशल से आता है?
१४ वुह बोला कि कुशल से। फिर उसने कहा कि मैं तुझे कुछ कहा
१५ चाहता हों वुह बोली कहे जा। उस ने कहा कि तू जानती है कि राज्य मेरा था और समस्त इसराईल ने मुझ पर रुख किया

था कि मैं राज्य करों परंतु राज्य पलट गया और मेरे भाई का
१६ ऊआ क्योंकि परमेश्वर की ओर से उसी का था। सो मेरी
एक बिनती आप से है मेरा मुंह न फेरिये वुह बोली कि
१७ कहेजा। उसने कहा कि अनुग्रह करके सुलेमान राजा से कहिये
(क्योंकि वुह आप को नाह न करेगा) कि शुनामी अबीशाग को
१८ मुझे ब्याह देवे। सो बैतशबा बोली कि अच्छा मैं तेरे लिये राजा
१९ से कहोंगी। इस लिये बैतशबा सुलेमान राजा पास अदुनीजा
के लिये कहने गई राजा उसे देखके उठा और उसे प्रणाम
किया फिर अपने सिंहासन पर बैठ गया और राजा ने अपनी
माता के लिये एक आसन मंगवाया और वुह उसकी दहिनी
२० ओर बैठी। तब वुह बोली कि मैं एक छोटी बात चाहती हों मुझे
नाह न कीजियो राजा ने उसे कहा कि हे माता मांगिये क्योंकि
२१ मैं आप को नाह न कहोंगा। वुह बोली कि शुनामी अबीशाग
२२ तेरे भाई अदुनीजा से ब्याही जाय। तब सुलेमान राजा ने
अपनी माता को उत्तर देके कहा कि आप केवल शुनामी अबीशाग
को अदुनीजा के लिये क्यों मागती है? उसके लिये राज्य भी मांग
क्योंकि वुह मेरा बड़ा भाई है हां उसके लिये और अबियासार
२३ याजक के और सुरिया के बेटे यूआब के लिये भी। तब सुलेमान
राजा ने परमेश्वर की किरिया खाके कहा कि यदि अदुनीजा ने
यह बात अपने प्राण पर खेलने का नहीं कही तो ईश्वर मुझ से
२४ ऐसाही और उसे अधिक करे। सो अब परमेश्वर के जीवन सों
जिस ने मुझे मेरे पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठाया और
स्थिर किया और जिसने अपनी वाचा के समान मेरे लिये
२५ घर बनाया आजही अदुनीजा मारा जायगा। और सुलेमान
राजा ने युहायदा के बेटे बनाया को भेजा उसने उस पर
२६ लपक के उसे मारडाला। फिर राजा ने अबियासार
याजक को कहा कि अनातूत को अपने खेतों में जा क्योंकि तू
मृत्यु के योग्य है परंतु इस जुन में तुझे मार नडालोंगा इस कारण

कि तू मेरे पिता दाऊद के आगे परमेश्वर ईश्वर की मंजूषा उठाता था और इस लिये कि तू उन सब दुःखों में, जो मेरे पिता
२७ पर पड़े, संगी था। सो सुलेमान ने अबियासार को परमेश्वर का याजक होने से दूर किया जिसतें वुह परमेश्वर के बचन को संपूर्ण करे जो उसने शैलू में ईली के घराने के विषय में कहा था।
२८ तब यूआब को संदेश पहुंचा क्योंकि यूआब अदुनीजा के पीछे हुआ था यद्यपि वुह अबसालूम की ओर न फिरा था सो उसने परमेश्वर के तंबू में भागके बेदी के सींगों को
२९ धरा। और सुलेमान को संदेश पहुंचा कि यूआब भागके परमेश्वर के तंबू में गया और देखो कि वुह बेदी के लग है तब सुलेमान ने युहायदा के बेटे बनाया को कहला भेजा कि उसे
३० मारडाले। सो बनाया परमेश्वर के तंबू में गया और उसे कहा कि राजा की आज्ञा है कि तू बाहर निकल वुह बोला कि नहीं मैं यहीं मरोंगा तब बनाया फिर गया और राजा से कहा कि यूआब यों कहता है और उसने मुझे यों उत्तर दिया।
३१ राजा ने उसे आज्ञा किई कि जैसा उसने कहा है वैसाही कर और उस पर लपक और उसे गाड़ जिसतें तू उस निष्पाप लोहू को, जो यूआब ने बहाया, मुझ से और मेरे पिता के घराने
३२ से मिटा देवे। और परमेश्वर उसका लोहू उसी के सिर पर धरेगा जिसने दो मनुष्यों पर, जो उस्से अधिक धर्म्मी और भले थे, लपक के उन्हें तलवार से घात किया और मेरा पिता न जानता था अर्थात इसराईली सेना के प्रधान नर के बेटे अबनर को और यहूदा की सेना के प्रधान यासर के बेटे
३३ अमासा को। सो उनका लोहू यूआब के सिर पर और उसके वंश के सिर पर सनातन लों पलटे परंतु दाऊद पर और उसके वंश पर और उसके घराने पर और उसके सिंहासन
३४ पर परमेश्वर की ओर से सदा कुशल होगा। सो युहायदा के बेटे बनाया ने ऊपर जाके उस पर लपक के उसे मारडाला

३५ और वुह अरण्य में अपने ही घर में गाड़ागया। फिर राजा ने युहायदा के बेटे बनाया को उसकी संती सेना का प्रधान किया और सादूक़ याजक को राजा ने अबियासार के स्थान
३६ पर रक्खा। फिर राजा ने शमीय को बुला भेजा और उसे कहा कि यिरोशलीम में अपने लिये घर बना और वहीं
३७ रह और वहां से कहीं बाहर मत निकल। क्योंकि जिस दिन तू बाहर निकलेगा और कदरून की नाली के पार जायगा निश्चय जानियो कि अवश्य मारा जायगा तेरा लोहू तेरेही सिर
३८ पर होगा। और शमीय ने राजा से कहा कि आज्ञा उत्तम है जैसा मेरे प्रभु राजा ने कहा है वैसाही आप का सेवक करेगा
३९ सो शमीय बड़त दिन लों यिरोशलीम में रहा। और तीसरे बरस के अंत में ऐसा ऊआ कि शमीय के दो सेवक गाथ के राजा माका के बेटे अकिश कने भाग गये और शमीय
४० से कहा गया कि देख तेरे सेवक गाथ में हैं। तब शमीय ने उठ के अपने गदहे पर काठी बांधी और अपने सेवकों के ढूंढने को गाथ में अकिश पास गया और गाथ से अपने सेवकों
४१ को ले आया। यह संदेश सुलेमान को पऊंचा कि शमीय
४२ यिरोशलीम से गाथ को गया था और फिर आया। तब राजा ने शमीय को बुला भेजा और उसे कहा कि क्या मैं ने तुझे परमेश्वर की किरिया न दिलाई थी और तुझसे बाचा लेके न कहा था कि तू निश्चय जानियो कि जिस दिन तू बाहर जायगा और कहीं फिरेगा तू अवश्य मारा जायगा? और तू ने मुझे
४३ कहा था कि यह बचन जो मैं ने सुना उत्तम है। सो तू ने परमेश्वर की किरिया को और उस आज्ञा को, जो मैं ने तुझे
४४ किई, क्यों नहीं माना?। फिर राजा ने शमीय से कहा कि तू उन सब दुष्टता को जानता है जो तू ने मेरे पिता दाऊद से किईं जिन से तेरा मन जानकार है सो परमेश्वर तेरी
४५ दुष्टता को तेरेही सिर पर पलटेगा। और सुलेमान राजा

भाग्यवान होगा और दाऊद का सिंहासन परमेश्वर के आगे
४६ सर्बदा स्थिर रहेगा। सो राजा ने यहायदा के बेटे बनाया को
आज्ञा किई और उसने बाहर जाके उस पर लपक के उसे
मारडाला तब राज्य सुलेमान के हाथ में स्थिर ऊआ।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

सुलेमान फरऊन की बेटी से ब्याह करता है और
गबियून में बलि चढ़ाता है १—४ बुद्धि के चाहने
से ईश्वर सुलेमान को बुद्धि और धन और प्रतिष्ठा
देता है ५—१५ सुलेमान दो गणिकों में न्याय
करता है १६—२८।

१ और सुलेमान ने मिसर के राजा फरऊन से नाता किया और
फरऊन की कन्या को ब्याहा और अपनेही भवन और परमेश्वर
के मंदिर और यिरोशलीम की भीत चारों ओर बनाके समाप्त
२ करने लों उसे दाऊद के नगर में लाया। केवल उस समय
लों लोग ऊंचे स्थानों में बलिदान चढ़ाते थे इस कारण कि उस
दिन लों कोई मंदिर परमेश्वर के नाम के लिये बनाया न गया
३ था। और सुलेमान परमेश्वर से प्रेम करके अपने पिता के
बिधिन पर चलता था केवल ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाता
४ था और धूप जलाता था। और बलिदान चढ़ाने को राजा
गबियून को गया क्योंकि महा ऊंचा स्थान वही था और उस
५ बेदी पर सुलेमान ने होम के सहस्र बलिदान चढ़ाये। गबियून
में परमेश्वर रात को सुलेमान को स्वप्न में दर्शन दिया और
६ ईश्वर ने कहा कि मांग मैं तुझे क्या देऊं। सुलेमान ने बिनती किई
कि तू ने मेरे पिता अपने सेवक दाऊद को, जैसा वुह तेरे आगे
सच्चाई से, और धर्म से, और मन की खराई से चला था, बड़ा
दान दिया और तू ने उसके लिये यह बड़ा अनुग्रह रक्खा है
कि तू ने उसके सिंहासन पर बैठने के लिये एक बेटा दिया है

७ जैसा आज के दिन है। सो अब हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू ने मेरे पिता दाऊद की संती अपने सेवक के। राजा किया और ८ मैं बालक हों बाहर भीतर आने जाने को नहीं जानता। और तेरा सेवक तेरे लोगों के मध्य में है जिन्हें तू ने चुना है बड़े लोग जो अगण्य और मंडली के मारे गिने नहीं जासक्ते हैं। ९ सो अपने लोगों के न्याय करने के लिये अपने सेवक को सुन्ने का मन दे जिसतें मैं भले और बुरे में बूझों क्योंकि तेरे ऐसे बड़े १० लोगों का न्याय कौन कर सक्ता है?। और यह बात परमेश्वर ११ को अच्छी लगी कि सुलेमान ने ऐसी बस्तु मांगी। और ईश्वर ने उसे कहा इस कारण कि तू ने यह बस्तु मांगी है और अपने दिन की बढ़ती न चाही और न अपने लिये धन मांगा है और न अपने बैरियों का प्राण चाहा है परंतु अपने लिये न्याय १२ करने को बुद्धि चाही। देख मैं ने तेरी बातों के समान किया है मैं ने एक बुद्धिमान और ज्ञानवान मन तुझे दिया है ऐसा कि तेरे आगे तेरे तुल्य कोई न था और तेरे पीछे तेरे तुल्य १३ कोई न होगा। और मैं ने तुझे वुह भी, जो तू ने नहीं मांगा अर्थात् धन और प्रतिष्ठा यहां लों, दिया है कि राजाओं के १४ बीच तेरे जीवन भर तेरे तुल्य नहीं हुआ है। और यदि तू मेरे मार्गों पर चलके मेरी बिधिन और आज्ञाओं को पालन करेगा जिस रीति से तेरा पिता दाऊद चलता था तो मैं तेरा बय १५ बढ़ाओंगा। तब सुलेमान जागा और देखा कि स्वप्न है फिर वुह यिरोशलीम को आया और परमेश्वर के नियम की मंजूषा के आगे खड़ा हुआ और होम के बलिदान और कुशल की भेंटें चढ़ाईं और अपने समस्त सेवकों के लिये जेवनार किया।

१६ उस समय में दो गणिका राजा पास आईं और उसके १७ आगे खड़ी हुईं। और एक बोली कि हे मेरे प्रभु मैं और यह स्त्री एक घर में रहती हैं और मैं उसके साथ घर में १८ रहते हुए एक बालक जनी। और मेरे जन्ने के तीसरे दिन

पीछे यों ऊआ कि यह स्त्री भी जनी और हम एक साथ थीं और
१८ घर में हम दोनों को छोड़ कोई उपरी हमारे संग न था। और
इस स्त्री का बालक रात को मर गया इस लिये कि वुह इसके
२० नीचे दब गया। तब वुह आधी रात को उठी और जब कि
आप की लौंडी सोती थी मेरे पास से मेरे पुत्र को ले गई और
अपनी गोद में रक्खा और अपने मरेऊए बालक को मेरी गोद
२१ में धर दिया। बिहान को जब मैं उठी कि अपने बालक को
दूध पिलाओं तो क्या देखती हों कि वुह मरा पड़ा है पर
बिहान को जब मैं ने सोचा तो देखा कि यह मेरा जनाऊआ
२२ लड़का नहीं। फिर वुह दूसरी स्त्री बोली नहीं परंतु जीता
पुत्र मेरा है और मराऊआ तेरा है और यह बोली कि नहीं
मराऊआ तेरा पुत्र और जीता मेरा पुत्र यों वे राजा के आगे
२३ बातें कीं। तब राजा बोला कि एक कहती है जीता पुत्र
मेरा है और म्तक तेरा पुत्र और दूसरी कहती है कि
२४ नहीं परंतु म्तक तेरा पुत्र और जीता मेरा पुत्र। तब राजा
ने कहा कि मुझ पास एक खड्ग लाओ तब वे राजा के आगे खड्ग
२५ लाये। फिर राजा ने कहा कि इस जीते बालक को दो
भाग करो और आधा एक को देओ और आधा दूसरी
२६ को। तब जिस स्त्री का जीता बालक था उसने राजा से कहा
(क्योंकि उसका ओझ अपने पुत्र के लिये तपित ऊआ) हे मेरे
प्रभु जीता बालक उसी को दीजिये और किसी भांति से
न मारिये परंतु दूसरी बोली कि यह न मेरा हो न तेरा परंतु
२७ भाग किया जाय। तब राजा ने कहिके आज्ञा किई कि जीता
बालक इसी को देओ और उसे किसी भांति से मत मारो
२८ उसकी माता यही है। और समस्त इसराईल ने यह न्याय सुना
जो राजा ने किया और राजा से डरे क्योंकि उन्हों ने देखा कि
ईश्वर की बुद्धि न्याय करने के लिये उसके मन में है।

४ चौथा पर्ब्ब।

सुलेमान के अध्यक्ष १—६ उसके भोजन पहुंचाने के बारह प्रधान ७—१९ उसके राज्य की बढ़ती और कुशलता और प्रति दिन का भोजन २०—२८ सुलेमान की बुद्धि २९—३४।

१ सो सुलेमान राजा सारे इसराईल का राजा हुआ।
२ और उसके अध्यक्ष ये थे सादूक याजक का बेटा अज़रिया।
३ अलीहरेफ और अहिया शीशा लेखक के बेटे थे और अहीलूद
४ का बेटा यहूशाफात स्मारक। और युहायदा का बेटा बनाया
५ सेना का प्रधान और सादूक और अबियासार याजक। और नासान का बेटा अज़रिया प्रधानों पर और नासान का बेटा
६ ज़बूद श्रेष्ठ प्रधान और राजा का मित्र। और अहीशार घर का प्रधान और अबदा का बेटा अदूनीराम कर का प्रधान।
७ और सारे इसराईल पर सुलेमान के बारह प्रधान थे जो राजा के और उसके घराने के भोजन सिद्ध करते थे उनमें से हरएक जन बरस भर में एक मास भोजन सिद्ध
८ करता था। उनके नाम ये हैं हूर का बेटा अफ़राईम पहाड़
९ में। और दक्कार का बेटा मक्काज़ में और शअलबिम में और
१० बैतशमश और ईलून बैतहनान में। और हसद का बेटा अरूबूस में साखूह और हाफार का समस्त देश उस्से प्रयोजन
११ था। और अबीनादाब का बेटा दोर के समस्त देश में और
१२ सुलेमान की बेटी ताफात उसकी पत्नी थी। और अहीलूद का बेटा बाना तानाक और मगिद्दू और समस्त बैतशियान जो सरताना के लग यज़रईल के नीचे बैतशियान से लेके आबील महूला लों यकनियम के पार लों उस्से प्रयोजन था।
१३ और गबर का बेटा रामूस जलियाद में मनस्सा के बेटे यायर के नगर जो जलियाद में हैं अरगूब के देश समेत जो बाशान

में है अर्थात् भीत के और पीतल के अड़ंगे के साठ नगर
१४ उसे प्रयोजन रखते थे। और इडू का बेटा अहीनादाब
१५ महानाईम रखता था। और अहीमआज़ नफ़ताली में वुह भी
१६ सुलेमान की बेटी बासमात को पत्नी किये था। और हूशाई
१७ का बेटा बाना अशोर और अलूत में। और पहूआ का बेटा
१८ यहूशाफ़ात यसाख़ार में। और आला का बेटा शमयी
१९ बनियामीन में। और अरी का बेटा गबर जलियाद के देश
में था जो असूरी के राजा सैहून का राज्य और बाशान के
राजा ऊज का राज्य था और उस देश का केवल वही प्रधान था।
२० और यहूदा और इसराईल बहुताई में समुद्र की बालू की नाईं
२१ खाते पीते और आनंद करते थे। और सुलेमान समस्त राज्यों
पर राज्य करता था नदी से फ़लस्तानियों के देश लों और
मिसर के सिवाने लों वे उस पास भेंट लाते थे और उसके
२२ जीवन भर उसकी सेवा करते थे। और सुलेमान के
दिन भर का भोजन यह था मन सौ डेढ़ एक चोखा पिसान
२३ और मन तीन सौ एक आटा। और दस मोटे बैल और
चराई के बीस बैल एक सौ भेड़े और उसे अधिक खरहे और
हरिण और काले हरिण और मोटे मोटे पंछी को छोड़ के।
२४ क्योंकि वुह नदी के इस पार तफ़सह से लेके आज़ा लों उन
सारे राजाओं पर, जो समुद्र की उसी ओर थे, राज्य करता था
२५ और चौ दिसा से मेल रखता था। और यहूदा और इसराईल
हरएक पुरुष अपने अपने दाख और अपने गूलर के पेड़ तले दान
से लेके बीरशबा लों सुलेमान के जीवन भर कुशल से रहता था।
२६ और सुलेमान के रथों के लिये चालीस सहस घोड़ शाला थीं
२७ और बारह सहस घोड़चढ़े। और उन बारह प्रधानों में से
हरएक जन अपने अपने मास में सुलेमान राजा के लिये और
उन सब के लिये जो सुलेमान राजा के भोजन में आते थे भोजन
२८ सिद्ध करता था उनकी किसी बात की घटती न थी। और घोड़ों

और चालाक पशुन के लिये जव और पुआल भी हरएक जन
२८ आज्ञा के समान उसी स्थान में लाता था। और ईश्वर
ने सुलेमान को अत्यंत बुद्धि और ज्ञान और मन का फैलावा
३० समुद्र के तीर की बालू की नाईं दिया था। और सुलेमान
की बुद्धि सारे पूर्बियों की बुद्धि से और मिसरियों की सारी
३१ बुद्धि से श्रेष्ठ थी। क्योंकि वुह अज़राही आथान से और
हामान से और ख़लकुल से और दरदा से, जो मह्लल के बेटे थे
और समस्त मनुष्य से अधिक बुद्धिमान था, और उसकी कीर्त्ति
३२ चारों ओर के समस्त जाति गणों में फैल गई थी। और
उसने तीन सहस्र दृष्टांत कहा और उसके गीत एक सहस्र
३३ और पांच थे। और उस अरज वृक्ष से लेके जो लबनान में
है उस ज़ूफ़ा लों जो भीतों पर ऊगती है उसने सब वृक्षों का
वर्णन किया और पशुन और पक्षियों और रेंगवैयों और
३४ मछलियों के विषय में कहा। और सारे लोगों में से और
पृथिवी के समस्त राजाओं से, जिन्हों ने उसकी बुद्धि का संदेश
पाया था, सुलेमान की बुद्धि सुन्ने को आते थे।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

सूर का राजा सुलेमान पास भेज के बधाई देता
है और मंदिर बनाने का समाचार सुनता है
१—१२ सुलेमान के बनिहारों की गिनती
१३—१८।

१ और सूर के राजा हैराम ने सुलेमान के पास अपने सेवकों को
भेजा क्योंकि उसने सुना था कि उन्हों ने उसके पिता की संती
उसे राज्याभिषेक किया क्योंकि हैराम दाऊद से सदा प्रीति
२ रखता था। और सुलेमान ने हैराम को कहला भेजा।
३ कि तू जानता है कि उन लड़ाइयों के कारण, जो उसके आस पास
चौदिशा थीं मेरा पिता दाऊद परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम के

लिये एक मंदिर न बना सका जबलों कि परमेश्वर ने उन सभों को
४ उसके पांओं तले न कर दिया। परंतु अब परमेश्वर मेरे ईश्वर
ने मुझे चारों ओर से चैन दिया यहां लों कि अब न बैरी न
५ उपद्रवी है। सो देख मैंने ठाना है कि परमेश्वर अपने ईश्वर के
नाम से एक मंदिर बनाओं जैसा कि परमेश्वर ने मेरे पिता
दाऊद से कहा कि तेरा बेटा जिसे मैं तेरे सिंहासन पर बैठाओंगा
६ वही मेरे नाम का मंदिर बनावेगा। सो तू आज्ञा कर कि मेरे
लिये लबनान से आरज वृक्ष काटें और मेरे सेवक तेरे सेवकों
के साथ होंगे और तेरे कहने के समान तेरे सेवकों की बनी
देउंगा क्योंकि तू जानता है कि हमों यह गुण नहीं कि सैदानियों
७ के समान लट्ठा काटें। और ऐसा हुआ कि जब हैराम नें
सुलेमान की बातों को सुना तब उस ने अत्यंत मगन होके
कहा कि आज परमेश्वर का धन्यबाद होवे जिसने अपने
८ महत् लोग पर दाऊद को एक बुद्धिमान बेटा दिया। तब
हैराम ने सुलेमान को कहला भेजा कि जो जो बात के लिये
आप ने मुझे कहलाया है मैंने समझा और मैं आरज के लट्ठे
और देवदारु के लट्ठे के बिषय में आप की समस्त इच्छा करोंगा।
९ मेरे सेवक उन्हें लबनान से समुद्र पर लावेंगे और उन्हें बेड़ों
में समुद्र पर से उस स्थान लों, जहां आप कहेंगे, पहुंचाओंगा
और वहां डलवा देओंगा और आप पावेंगे और आप मेरी
१० इच्छा के समान मेरे घराने के लिये भोजन दीजिये। सो हैराम
ने सुलेमान को आरज वृक्ष और देवदारु वृक्ष अपनी समस्त
११ बांछा के समान दिये। और सुलेमान ने हैराम को उसके घरानें
के भोजन के लिये बरस बरस डेढ़ लाख मन गोहूं और पंद्रह
१२ सहस्र मन निराला तेल देता था। और परमेश्वर ने सुलेमान
को अपनी बाचा के समान बुद्धि दिई और हैराम और
सुलेमान में मिलाप हुआ और उन दोनों ने आपुस में मेल
१३ किया। और सुलेमान राजा ने सब इसराईल के संतान

से मनुष्यों का कर लिया और तीस सहस्र मनुष्य हुए।
१४ और उसने उन्हें लबनान को हर मास पारी पारी दस सहस्र भेजा किया मास भर लबनान में रहते थे और दो मास
१५ अपने घर में और अदूनीराम उनका प्रधान था। और सुलेमान के सत्तर सहस्र बोझिये थे और अस्सी सहस्र पेड़
१६ कटवैये पर्ब्बतों में थे। और सुलेमान के श्रेष्ठ प्रधानों से अधिक, जो कार्य्य पर थे तीन सहस्र तीन सौ थे, जो कार्य्य करवैयों से
१७ काम लेते थे। और राजा ने आज्ञा किई और वे बड़े बड़े पत्थर और बहुमूल्य पत्थर और ढायेहुए पत्थर लाये जिसतें घर को
१८ नेउं डालें। और सुलेमान के थवई और हैराम के थवई और पत्थर के सुधरवैये उन्हें काटते थे सो घर बनाने के लिये उन्हों ने लट्ठे और पत्थर सुधारे।

६ छठवां पर्ब्ब।

मंदिर का बनाना १—४ और उसकी कोठरियां ५—१० मंदिर के विषय में ईश्वर की वाचा ११—१३ उसकी अनेक शोभा १४—२२ ईश्वरीय वाचा और करोबीम २३—३० उसके द्वार और ओसारा ३१—३६ कितने दिनों में समाप्त हुए ३७—३८।

१ और मिसर के देश से इसराईल के संतान के निकलने से चार सौ अस्सी बरस पीछे इसराईल पर सुलेमान के राज्य के चौथे बरस ज़ीफ के मास में, जो दूसरा मास है, ऐसा हुआ कि उसने
२ ईश्वर का मंदिर बनाना आरंभ किया। और वुह घर जो सुलेमान राजा ने परमेश्वर के लिये बनाया उसकी लंबाई साठ हाथ और चौड़ाई बीस हाथ और ऊंचाई तीस हाथ थी।
३ और उस घर के मंदिर के ओसारे की लंबाई बीस हाथ घर की चौड़ाई के समान थी और उसकी चौड़ाई घर के आगे

४ दस हाथ थी। और घर के लिये उसने झरोखे बनाये
५ बाहर की ओर से सकेत और भीतर चौड़ा। और घर की
भीत से मिलीऊई कोठरियां चारों ओर बनाईं अर्थात् घर
की भीतों के चारों ओर क्या मंदिर का क्या ईश्वरीय वाणी
६ का और उसने चारों ओर कोठरियां बनाईं। और नीचे की
कोठरी पांच हाथ चौड़ी और बीच की छः हाथ चौड़ी और
तीसरी सात हाथ चौड़ी थी क्योंकि घर के बाहर बाहर उसने
चारों ओर सकेत सकेत स्थान बनाये जिसतें लट्ठे घर की भीतों
७ में जमाये न जावें। और जब घर बनरहा था वहां लाने
से आगे पत्थर सुधारा ऊआ था यहां लों कि न हथौरा
और न कुल्हाड़ी और न लोहे का कोई हथियार घर बनाने
८ में सुना गया। बीच की कोठरी का द्वार घर की दहिनी
अलंग रक्खा और वे घूमती सीढ़ी से बीच में और
९ उसे तीसरी अटारी में चढ़ते थे। सो उसने उस घर को
बनाया और समाप्त किया उसकी छत आरज के लट्ठे की
१० पटरियों से पाटी। और उसने समस्त घर के आड़ में पांच
पांच हाथ की ऊंची कोठरियां बनाईं और वे आरज के लट्ठों
११ से घर पर थंभी ऊई थीं। तब परमेश्वर का बचन यह
१२ कहिके सुलेमान पर आया। कि यदि तू मेरी बिधिन पर
चलेगा और मेरे विचारों को पूर्ण करेगा और मेरी समस्त
आज्ञाओं को पालन करके उन पर चलेगा तो इस घर के
बिषय में, जो तू बनाता है, मैं अपने बचन को, जो तेरे बाप
१३ दाऊद से कहा था तेरे साथ पूरा करोंगा। और मैं इसराईल
के संतानों में बास करोंगा और अपने इसराईली लोगों को
१४ त्याग न करोंगा। सो सुलेमान ने घर बनाके समाप्त
१५ किया। और उसने घर की गच से लेके भीत से छत लों आरज
काष्ठ के पटरे लगाये और उसने भीतर को अलंग काष्ठ से ढांप
दिया और घर की गच को देवदारु की पटरियों से ढांपा।

१६ और उसने घर की गच और भीतें आरज के पटरों से घर को अलंगों में बीस बीस हाथ की बनाईं उसने उसके भीतर के लिये अर्थात् ईश्वरीय वाणी के लिये अर्थात् अत्यंत पवित्र स्थान के
१७ लिये बनाये। और घर अर्थात् आगे का मंदिर चालीस हाथ
१८ था। और घर के भीतर आरज की खोदी ऊई कली और खिलेऊए फूल थे सब के सब आरज के थे कोई पत्थर दिखाई
१९ न देता था। और घर के भीतर परमेश्वर के नियम की मंजूषा
२० रखने के लिये ईश्वरीय वाणी का स्थान सिद्ध किया। और ईश्वरीय वाणी के आगे की ओर लंबाई में बीस हाथ और चौड़ाई में बीस हाथ और ऊंचाई में बीस हाथ और उसे निर्मल सोने से मढ़ा और आरज की बेदी को भी मढ़ा।
२१ और सुलेमान ने घर के भीतर भीतर निर्मल सोने से मढ़ा और उसमें ईश्वरीय वाणी के आगे सोने की सीकरों के लग
२२ एक आड़ बनाया और उस पर सोना मढ़ा। और सारे घर को सोने से मढ़ा यहां लों कि समस्त घर बन गया और समस्त बेदी को जो, ईश्वरीय वाणी के लग थी, सोने से मढ़ा।
२३ और ईश्वरीय वाणी के भीतर तैल वृक्ष के दस दस हाथ ऊंचे
२४ दो करोबी बनाये। और करोबी का एक पंख पांच हाथ का और दूसरा पंख पांच हाथ का एक के पंख के एक खूंट से लेके
२५ दूसरे पंख के खूंट लों दस हाथ थे। और दूसरा करोबी दस हाथ का दोनों करोबियों को एकही नाप और एकही डील का बनाया।
२६ एक करोबी की ऊंचाई दस हाथ और वैसही दूसरे करोबी
२७ की। और उसने दोनों करोबियों को भीतर के घर में रक्खा और करोबी अपने डैने फैलायेऊए थे यहां लों कि एक का डैना एक भीत को छूता था और दूसरे करोबी का डैना दूसरी भीत को छूता था और उनके डैने एक दूसरे को घर के बीच
२८ में छूता था। और उसने करोबियों को सोने से मढ़ा।
२९ और घर की सारी भीतों को चारों ओर खोदेऊए करोबियों की

सूरतों से और खजूर पेड़ों से और खिलेऊए फूलों से बाहर
३० भीतर खोदा। और घर की गच को बाहर भीतर सोने से मढ़ा।
३१ और ईश्वरीय बाणी में पैठने के लिये उसने जलपाई पेड़ के
केवाड़े बनाये और सोत और साह भीत के पांचवें भाग थे।
३२ और केवाड़े के पाट जलपाई काष्ठ के थे उसने उन पर करोबियों
को और खजूर पेड़ों को और खिलेऊए फूलों को खोदा और
३३ करोबियों और खजूर पेड़ों पर सोना मढ़ा। वैसा उसने
मंदिर के द्वार के लिये जिसकी चौकठ जलपाई काष्ठ की थी
३४ भीत को चौथा भाग बनाया। और उसके दो केवाड़े देवदारु
काष्ठ से बनाये और उन दोनों केवाड़ों के दो दो पाट दोहराए
३५ जाते थे। और उन पर करोबियों और खजूर पेड़ और
खिलेऊए फूल खोदे और उन खोदेऊए कार्यों को सोने से मढ़ा।
३६ और उसने भीतर के आंगन की तीन पांती खोदेऊए पत्थर
३७ की बनाईं और एक पांती आरज के काष्ठ की। चौथे बरस
३८ ज़िफ़ के मास में परमेश्वर के मंदिर की नेंव डाली गई। और
ग्यारहवें बरस बुल के मास में, जो आठवां मास है, घर
उसकी समस्त सामग्री समेत और उसके सारे डौल के समान
बनगया और उसके बनाने में सात बरस लगे।

७ सातवां पर्ब्ब ।

सुलेमान का और लबनान का भवन बनाना १—५
खंभों का ओसारा और बिचार का ओसारा ६—७
फरऊन की कन्या का भवन ८—१२ हैराम के दो
खंभे बनाना १३—२२ ढलाऊआ समुद्र २३—२६
दस आधार २७—३७ दस स्नान पात्र ३८—३९
और समस्त पात्र ४०—४१ ।

१ परंतु सुलेमान को अपनाही घर बनाने में तेरह बरस लगा
२ और वुह अपना सारा घर बना चुका। उसने लबनान के बन

का भी आरज काष्ठ के खंभों की चार पांती पर बनाया और खंभों पर आरज काष्ठ के लट्ठे थे उस घर की लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ और ऊंचाई तीस हाथ।
३ पंदरह पंदरह एक एक पांती में, पैंतालीस खंभे थे उनपर की
४ कांड़ियों के ऊपर आरज काष्ठ से छपे थे। और खिड़कियों की
५ तीन पांती थीं तीनों पांती आम्ने साम्ने थीं। और समस्त अंतर और खंभे देखने में चौकोर थे और तीन पांतियों में
६ ज्योति के सन्मुख ज्योति थी। और उसने खंभों का एक ओसारा बनाया जिसकी लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई तीस हाथ और ओसारा उसके समान था और खंभे और मोटा लट्ठा
७ उनके समान। तब उसने सिंहासन के लिये एक ओसारा बनाया अर्थात् न्याय का ओसारा और उसको एक अलंग
८ दूसरी लों आरज काष्ठ से पाटा। और उसके रहने के घर के ओसारे में वैसाही कार्य का एक दूसरा आंगन था और सलेमान ने फ़रऊन की बेटी के लिये, जिसे उसने ब्याहा था, इस
९ ओसारे की नाईं एक घर बनाया। इन सभों की नेंउ से ऊपर लों और वैसेही बाहर बड़े ओसारे लों और गढ़ेहुए पत्थरों के समान बहुमूल्य पत्थरों से आरे से चीरेहुए थे।
१० और नेउं बहुमूल्य बड़े बड़े पत्थरों की थी दस दस और आठ
११ आठ हाथ के पत्थर। और गढ़ेहुए पत्थरों के समान ऊपर
१२ भी बहुमूल्य पत्थरों का और आरज काष्ठ का था। और चारों ओर के बड़े आंगन तीन पांती गढ़ेहुए पत्थर की और एक पांती आरज लट्ठे की परमेश्वर के घर के भीतर के आंगन
१३ के लिये और घर के ओसारे के लिये। और सुलेमान
१४ राजा ने सूर से हैराम को बुला भेजा। और वुह नफताली की गोष्ठी की एक विधवा स्त्री का बेटा था और उसका बाप सूर का एक ठठेरा और पीतल के समस्त कार्य में बिद्या और ज्ञान से निपुण और परिपूर्ण था और वुह सुलेमान पास आया

१५ और उसका समस्त कार्य किया। क्योंकि उसने पीतल के दो खंभे अठारह अठारह हाथ के ढाले और बारह हाथ की डोरी
१६ उनकी चारों ओर का नाप था। और उसने खंभों के ऊपर धरने के लिये ढलेऊए पीतल के दो झाड़ बनाये हरएक की
१७ ऊंचाई पांच हाथ की। और झाड़ों के लिये जो खंभों के ऊपर थे, चौघरे कार्य के और गुथी ऊई सीकरें, हरएक झाड़ के लिये
१८ सात सात बनाये। और उसने खंभे और उनके मथाल के झाड़ों को अनारों से ढांपने के लिये जाल कार्य के चारों ओर दो पांतियां
१९ बनाईं वैसाही दूसरे झाड़ के लिये बनाया। और खंभे के झाड़ों
२० के ऊपर ओसारे में चार हाथ के सौसन फूल के कार्य। और वैसाही दोनों खंभों के झाड़ों के ऊपर जो जाल कार्य के लग थे बीच के आम्ने साम्ने और दूसरे झाड़ पर चारों ओर पांती
२१ पांती दो सौ अनार थे। और उसने मंदिर के ओसारे में खंभे खड़े किये और उसने दहिना खंभा खड़ा किया और उसका नाम रक्खा, वुह स्थिर करेगा और दूसरा खंभा बाईं
२२ ओर उसका नाम रक्खा कि इस में दृढता है। और खंभों के ऊपर सौसन फूल का कार्य, सो खंभों का कार्य बन गया।

२३ फिर उसने ढला ऊआ एक समुद्र बनाया जिसका एक कोर दूसरे कोर से दस हाथ का था, वुह चारों ओर गोल था और उसकी ऊंचाई पांच हाथ और तीस हाथ की डोरी
२४ उसकी चारों ओर जाती थी। और उसके कोर की चारों ओर के नीचे हाथ भर में दस कलियां घेरीं जो समुद्र की चारों ओर घेरती थीं दो दो पांती में कलियां ढाली गईं।
२५ वुह बारह बैलों पर धरा गया था तीन की रुख उत्तर की ओर और तीन की पच्छिम की ओर और तीन की दक्खिन की ओर और तीन की पूरब की ओर और समुद्र उन सभों के ऊपर और
२६ उनके पुट्ठे भीतर की अलंग थे। और उसकी मोटाई चार अंगुल की और उसका कोर कटोरे के कोर की नाईं सौसन के फूलों से

बनाऊआ था और उसमें दो सहस्र पचास मन की समाई
२७ थी। और उसने पीतल के दस आधार बनाये एक एक आधार
चार हाथ का लम्बा चार हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊंचा।
२८ और उन आधारों का कार्य ऐसा था उनके छोर थे और
२९ छोर कोरों के मध्य में थे। और कोरों के मध्य में छोर के ऊपर
सिंह और बैल और करौबी थे और कोरों के ऊपर एक आधार
था और सिंहों और बैलों के नीचे कई एक अच्छे चोखे
३० कार्य बनाये। और हरएक आधार के लिये पीतल की चार
चार पहिया और पीतल के पत्र थे और उनके चार कोनों के
लिये नीचे के आधार थे और स्नान पात्र के नीचे हरएक साज की
३१ अलंग ढलेऊए नीचे के आधार थे। और उसका मुंह झाड़ के
भीतर और ऊपर हाथ भर का परंतु उसका मुंह गोल उसके
आधार के कार्य की नाईं डेढ़ हाथ का था और उसके मुंह
३२ पर चित्रकारी और चौकोर गोंट थे गोल नहीं। और गोंट
के नीचे चार पहिया थीं और पहियों की धुरी आधार में थीं
३३ और हरएक पहियों की ऊंचाई डेढ़ हाथ की थी। और पहियों
का काम रथ के पहियों के कार्य के समान, उनकी धुरी और
३४ मांझा और पुट्ठी और आरा सब ढले ऊए थे। और हर एक
आधार के चारों कोनों के नीचे के चार आधार थे और नीचे के
३५ आधार उसी आधार ही से थे। और आधार के सिरे पर चारों
ओर आधा हाथ ऊंचा और आधार के सिरे पर उसके कोर
३६ और उसके गोंट एकही के थे। क्योंकि उसके कोरों का पत्तर
और उनके गोंटों पर करौबी और सिंह और खजूर पेड़ हरएक
के डौल और चारों ओर के साज के समान उसने खोदा।
३७ इस डौल से उसने दस आधार को बनाया और उन सब का
३८ नाप जोख और ढाल एकही था। तब उसने पीतल के दस
स्नान पात्र बनाये हरएक स्नान पात्र में मन चालीस एक की
समाई थी और हरएक स्नान पात्र चार हाथ का था उन दसों

३९ आधारों में हरएक पर एक स्नान पात्र । और उसने पांच आधार दहिनी अलंग और पांच बाईं अलंग रक्खे और उसने समुद्र को पूर्ब ओर घर की दहिनी अलंग दक्खिन के
४० सन्मुख रक्खा । और हैराम ने स्नान पात्र और फावड़ियां और बासन बनाये और हैराम ने परमेश्वर के मंदिर के लिये
४१ सुलेमान के लिये समस्त कार्य समाप्त किया । दो खंभे और झाड़ के कटोरे जो दोनों खंभों के मथाले पर थे और दोनों जालकार्य झाड़ों के कटोरों के ढांपने के लिये दोनों खंभों के
४२ मथाले पर थे । और दोनों जाल कार्य के लिये चार सौ अनार अनारों की दो पांतियां एक एक जाल कार्य के लिये, जिसतें
४३ खंभों के ऊपर के झाड़ों के दोनों टोंक ढांपे जायें । और दस
४४ आधार और आधारों पर दस स्नान पात्र । और एक समुद्र
४५ और बारह बैल समुद्र के नीचे । और हांड़ियां और फावड़ियां और बासन और ये समस्त पात्र जो हैराम ने सुलेमान राजा के लिये परमेश्वर के मंदिर के निमित्त बनाये ओपेझए पीतल के
४६ थे । राजा ने उन्हें अर्दन के चौगान में साक़ूस और जारथान
४७ के मध्य भूमि की गहिराई में ढाला । और सुलेमान ने उन सब पात्रों को उनकी बहुताई के मारे बेतौल छोड़ा और उस
४८ पीतल की तौल कधी जांची न गई । और सुलेमान ने परमेश्वर के मंदिर के लिये सब पात्र बनाये अर्थात् सोने की बेदी और सोने का मंच जिस पर भेंट की रोटी रक्खी जाती
४९ थी । और चोखे सोने की दीअटें पांच दहिनी और पांच बाईं अलंग और उसके फूल और दीये और चिमटे सोने के ईश्वरीय
५० बाणी के आगे । और कटोरे और कतरनियां और बासन और चमचे और राख पात्र निर्मल सोने के और भीतर के अत्यंत पवित्र स्थान के द्वारों के लिये और घर के अर्थात् मंदिर
५१ के द्वारों के लिये सोने की चूलें बनाईं । सो सब कार्य, जो सुलेमान राजा ने परमेश्वर के मंदिर के लिये किये बनगये

तब सुलेमान अपने पिता दाऊद की समर्पण किई ऊई वस्तें भीतर लाया अर्थात् चांदी, सोना और पात्र परमेश्वर के घर के भंडारों में रक्खा ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

मंदिर के स्थापने का जेवनार १—११ सुलेमान का आशीष १२—२१ सुलेमान की प्रार्थना २२—६१ उसके कुशल की भेंटें ६२—६६ ।

१ तब सुलेमान ने इसराईल के प्राचीनों को, और गोष्ठियों के सारे प्रधानों को, और इसराईल के पितरों के अध्यक्षों को, अपने पास यिरोशलीम में एकट्ठा किया जिसतें वे परमेश्वर की बाचा २ की मंजूषा को दाऊद के नगर सैह्रन से लावें। इसराईल के सारे लोग सुलेमान राजा के पास जेवनार में इथानिम मास ३ में, जो सातवां मास है, एकट्ठे ऊए। और इसराईल के सारे ४ प्राचीन आये और याजकों ने मंजूषा उठाई। और परमेश्वर की मंजूषा को, और मंडली के तंबू को, और तंबू में के समस्त ५ पवित्र पात्रों को, याजक और लावी उठा लाये। और सुलेमान राजा ने, और इसराईल की सारी मंडली ने, जो उस पास एकट्ठी ऊई, और उसके साथ मंजूषा के आगे थे, भेड़ और बैल इतने बलि किये जो बऊताई के मारे गिने न जासके। और ६ याजकों ने परमेश्वर की बाचा की मंजूषा को ला के उसके स्थान में, ईश्वर की बाचा के मंदिर के मध्य, अत्यंत पवित्र में, करोबियों के ७ डैनों के नीचे, रक्खा। क्योंकि करोबी अपने डैने मंजूषा पर फैलाये थे और करोबियों ने मंजूषा को, और उसके बहंगरों को ढांप ८ लिया। और बहंगरों के सिरे पवित्र स्थान ईश्वरीय बाणी के आगे दिखाये जाने के लिये उन्हों ने बहंगरों को निकाला इस लिये वे ९ बाहर देखे न जाते थे और वे आज लों वहां हैं। पत्थर की उन दो पटियों को छोड़, जिन्हें मूसा ने उस में होरेब में रक्खा था,

जहां परमेश्वर ने इसराईल के संतान से, जब वे मिसर के देश
से निकल आये थे, वाचा बांधी थी, मंजूषा में कुछ न था।
१० और यों हुआ कि जब याजक पवित्र स्थान से बाहर आये
११ तब परमेश्वर का मंदिर मेघ से भरगया। यहां लों कि मेघ के
कारण याजक सेवा के लिये ठहर न सके क्योंकि परमेश्वर के
१२ विभव से परमेश्वर का मंदिर भर गया था। तब सुलेमान ने
कहा कि परमेश्वर ने कहा था कि मैं गाढ़े अंधकार में वास
१३ करोंगा। मैं ने निश्चय तेरे निवास के लिये घर बनाया है एक
१४ सनातन के रहने के लिये एक स्थिर स्थान। तब राजा ने अपना
मुंह फेर के इसराईल की सारी मंडली को आशीष दिया और
१५ इसराईल की सारी मंडली खड़ी हुई। फेर उसने कहा कि
परमेश्वर इसराईल का ईश्वर धन्य जिसने मेरे पिता दाऊद से
अपने मुंह से कहा और यह कहिके अपने हाथ से पूरा किया
१६ है। जब से मैं अपने इसराईल लोगों को मिसर से निकाल
लाया मैं ने सारे इसराईल की गोष्ठियों में से किसी नगर को
नहीं चुना कि घर बनावे जिसतें मेरा नाम उसमें होवे परंतु मैं ने
१७ दाऊद को चुना कि मेरे इसराईल लोगों पर होवे। और
मेरे पिता दाऊद के मन में था कि परमेश्वर इसराईल के
१८ ईश्वर के लिये एक घर बनावे। और परमेश्वर ने मेरे पिता
दाऊद से कहा जैसा कि मेरे नाम के लिये एक घर बनाना
१९ तेरे मन में था सो तूने अच्छा किया कि तेरे मन में था। तिस
परभी तू मेरे लिये घर न बनाना परंतु तेरा बेटा, जो तेरी
२० कटि से निकलेगा, सो मेरे नाम के लिये घर बनावेगा। और
परमेश्वर ने अपने कहेहुए बचन को पूरा किया और मैं अपने
पिता दाऊद के स्थान में उठा हों और परमेश्वर की वाचा के
समान इसराईल के सिंहासन पर बैठा हों और इसराईल के
२१ ईश्वर परमेश्वर के नाम का एक घर बनाया है। और मैं ने
उसमें मंजूषा के लिये एक स्थान बनाया जिस में परमेश्वर की

बाचा है जो उसने हमारे पितरों से किई जब वुह उन्हें मिसर
२२ के देश से निकाल लाया। और सुलेमान ने इसराईल की
सारी मंडली के आगे, और परमेश्वर की बेदी के आगे खड़े होके
२३ अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाये। और कहा कि हे परमेश्वर
इसराईल के ईश्वर तेरे समान कोई ईश्वर ऊपर स्वर्ग में अथवा
नीचे पृथिवी में नहीं जो अपने सेवकों के साथ, जो तेरे आगे
अपने सारे मन से चलते हैं, बाचा और दया को रखता है।
२४ जिसने अपने सेवक मेरे पिता दाऊद से अपने कहे के समान
रक्खी तूने अपने मुंह से भी कहा है और अपने हाथ से आज
२५ के दिन पूरा किया है। इस लिये अब हे परमेश्वर इसराईल
के ईश्वर अपने सेवक मेरे पिता दाऊद के साथ जो तूने यह
कहिके प्रण किया कि केवल यदि तेरे संतान अपनी चाल में
चौकस होके तेरे समान मेरे आगे चलें तो तेरे लिये इसराईल
के सिंहासन पर बैठने को मेरी दृष्टि में पुरुष कट न जायगा उसे
२६ पालन कर। और अब हे इसराईल के ईश्वर मैं तेरी बिनती
करता हों अपने उस बचन को, जो तूने मेरे पिता अपने सेवक
२७ दाऊद से कहा पूरा कर। परंतु क्या सचमुच ईश्वर पृथिवी पर
बास करेगा? देख स्वर्ग और स्वर्गों के स्वर्ग तुझे समा नहीं सक्ते
२८ कितना अधिक यह घर जो मैं ने बनाया है। हे परमेश्वर
मेरे ईश्वर अपने सेवक की प्रार्थना और बिनती पर सुरत लगा
और अपने दास का गिड़गिड़ाना और प्रार्थना सुन जो तेरे
२९ सेवक ने आज के दिन तेरे आगे किई है। जिसतें रात दिन
तेरी आंखें इस स्थान की ओर खुली रहें उस स्थान की ओर
जिसके बिषय में तूने कहा है कि मेरा नाम वहां होगा जिसतें
तू उस प्रार्थना को सुने जो तेरा सेवक इस स्थान में करेगा।
३० अपने सेवक की बिनती सुन और जब तेरे इसराईल लोग
इस स्थान में प्रार्थना करें तो अपने निवास स्थान स्वर्ग में से
३१ सुन और सुनके क्षमा कर। यदि कोई पुरुष

अपने परोसी का अपराध करे और वुह उसे किरिया लेने चाहे और इस घर में तेरी बेदी के आगे किरिया लाई जावे।
३२ तो तू स्वर्ग पर से सुन और अपने सेवकों का बिचार कर और दुष्ट को दोषी ठहरा के उसका पाप उसी के सिर पर ला और धर्मियों को निर्दोष ठहराके उस धर्म्म के समान उसे प्रतिफल
३३ दे। और जब तेरे इसराईल लोग तेरे बिरोध पाप करने के कारण अपने बैरियों के आगे मारे जायें और फिर तेरी ओर फिरें और तेरे नाम को मान लेवें और प्रार्थना
३४ करें और इस घर की ओर तेरी बिनती करें। तो तू स्वर्ग में सुन और अपने इसराईल लोग के पाप को क्षमा कर और उन्हें उस देश में, जो तूने उनके पितरों को दिया था, फेर ला।
३५ जब तेरे बिरोध पाप करने के कारण से स्वर्ग बंद होजावें और मेंह नबरसे यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करें और तेरे नाम को मान लेवें और अपने पाप से फिरें इस लिये कि
३६ तूने उन्हें दुःख दिया। तो तू स्वर्ग में सुन और अपने सेवक और अपने इसराईल लोग के पाप को क्षमा कर जिसतें उन्हें सच्चे मार्ग में, जिन में उन्हें चलना उचित है, सिखावे और अपने देश पर, जो तूने अपने लोगों को अधिकार के लिये दिया
३७ है, मेंह बरसा। यदि देश में अकाल पड़े और यदि मरी होय और खेती झुलस जाय और लेंढ़ा लगे अथवा टिड्डी अथवा यदि कीड़े लगें यदि उनके बैरी उनके देश में उनके किसी
३८ नगरों में उन्हें घेरें और जो कुछ मरी अथवा रोग होय। कोई मनुष्य से अथवा तेरे समस्त इसराईल लोग से जो जन अपनेही मन की बुराई को जाने और प्रार्थना और बिनती करे और अपने
३९ हाथ इस घर की ओर फैलावे। तब तू स्वर्ग पर से और अपने निवास स्थान से सुन और क्षमा कर और संपूर्ण कर और हरएक जन को, जिसके मन को तू जानता है, उसकी चालों के तुल्य प्रतिफल दे (क्योंकि केवल तूही समस्त मनुष्यों के संतान

बाचा है जो उसने हमारे पितरों से किई जब वुह उन्हें मिसर
२२ के देश से निकाल लाया। और सुलेमान ने इसराईल की
सारी मंडली के आगे, और परमेश्वर की बेदी के आगे खड़े होके
२३ अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाये। और कहा कि हे परमेश्वर
इसराईल के ईश्वर तेरे समान कोई ईश्वर ऊपर स्वर्ग में अथवा
नीचे पृथिवी में नहीं जो अपने सेवकों के साथ, जो तेरे आगे
अपने सारे मन से चलते हैं, बाचा और दया को रखता है।
२४ जिसने अपने सेवक मेरे पिता दाऊद से अपने कहे के समान
रक्खी तूने अपने मुंह से भी कहा है और अपने हाथ से आज
२५ के दिन पूरा किया है। इस लिये अब हे परमेश्वर इसराईल
के ईश्वर अपने सेवक मेरे पिता दाऊद के साथ जो तूने यह
कहिके प्रण किया कि केवल यदि तेरे संतान अपनी चाल में
चौकस होके तेरे समान मेरे आगे चलें तो तेरे लिये इसराईल
के सिंहासन पर बैठने को मेरी दृष्टि में पुरुष कट न जायगा उसे
२६ पालन कर। और अब हे इसराईल के ईश्वर मैं तेरी बिनती
करता हों अपने उस बचन को, जो तूने मेरे पिता अपने सेवक
२७ दाऊद से कहा पूरा कर। परंतु क्या सचमुच ईश्वर पृथिवी पर
बास करेगा? देख स्वर्ग और स्वर्गों के स्वर्ग तुझे समा नहीं सक्ते
२८ कितना अधिक यह घर जो मैं ने बनाया है। हे परमेश्वर
मेरे ईश्वर अपने सेवक की प्रार्थना और बिनती पर सुरत लगा
और अपने दास का गिड़गिड़ाना और प्रार्थना सुन जो तेरे
२९ सेवक ने आज के दिन तेरे आगे किई है। जिसतें रात दिन
तेरी आंखें इस स्थान की ओर खुली रहें उस स्थान की ओर
जिसके बिषय में तूने कहा है कि मेरा नाम वहां होगा जिसतें
तू उस प्रार्थना को सुने जो तेरा सेवक इस स्थान में करेगा।
३० अपने सेवक की बिनती सुन और जब तेरे इसराईल लोग
इस स्थान में प्रार्थना करें तो अपने निवास स्थान स्वर्ग में से
३१ सुन और सुनके क्षमा कर। यदि कोई पुरुष

अपने परोसी का अपराध करे और वुह उसे किरिया लेने चाहे और इस घर में तेरी बेदी के आगे किरिया लाई जावे।
३२ तो तू स्वर्ग पर से सुन और अपने सेवकों का बिचार कर और दुष्ट को दोषी ठहरा के उसका पाप उसी के सिर पर ला और धर्मियों को निर्दोष ठहराके उस धर्म के समान उसे प्रतिफल
३३ दे। और जब तेरे इसराईल लोग तेरे बिरोध पाप करने के कारण अपने बैरियों के आगे मारे जायें और फिर तेरी ओर फिरें और तेरे नाम को मान लेवें और प्रार्थना
३४ करें और इस घर की ओर तेरी बिनती करें। तो तू स्वर्ग में सुन और अपने इसराईल लोग के पाप को क्षमा कर और उन्हें उस देश में, जो तूने उनके पितरों को दिया था, फेर ला।
३५ जब तेरे बिरोध पाप करने के कारण से स्वर्ग बंद होजावें और मेंह नबरसे यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना करें और तेरे नाम को मान लेवें और अपने पाप से फिरें इस लिये कि
३६ तूने उन्हें दुःख दिया। तो तू स्वर्ग में सुन और अपने सेवक और अपने इसराईल लोग के पाप को क्षमा कर जिसतें उन्हें सच्चे मार्ग में, जिन में उन्हें चलना उचित है, सिखावे और अपने देश पर, जो तूने अपने लोगों को अधिकार के लिये दिया
३७ है, मेंह बरसा। यदि देश में अकाल पड़े और यदि मरी होय और खेती झुलस जाय और लेंढ़ा लगे अथवा टिड्डी अथवा यदि कीड़े लगें यदि उनके बैरी उनके देश में उनके किसी
३८ नगरों में उन्हें घेरें और जो कुछ मरी अथवा रोग होय। कोई मनुष्य से अथवा तेरे समस्त इसराईल लोग से जो जन अपनेही मन की बुराई को जाने और प्रार्थना और बिनती करे और अपने
३९ हाथ इस घर की ओर फैलावे। तब तू स्वर्ग पर से और अपने निवास स्थान से सुन और क्षमा कर और संपूर्ण कर और हरएक जन को, जिसके मन को तू जानता है, उसकी चालों के तुल्य प्रतिफल दे (क्योंकि केवल तूही समस्त मनुष्यों के संतान

४० के अंतःकरण को जानता है)। जिसतें वे जीवन भर उस देश में जो तूने उनके पितरों को दिया है तुझ्से डरते रहें।
४१ और उस परदेशी के विषय में, जो तेरे इसराईल लोग में से
४२ नहीं है परंतु तेरे नाम के कारण परदेश से आवे। (क्योंकि वे तेरा बड़ा नाम और बलवंत भुजा और फैलाई बांह को सुनेंगे) जब वुह आवे और इस घर की ओर प्रार्थना करे।
४३ त स्वर्ग पर से और अपने निवास स्थान से सुन और परदेशी की समस्त यांचना के समान उसे पूरा कर जिसतें पृथिवी के समस्त लोग तेरे नाम को जानें और तेरे इसराईल लोग की नाईं तुझे डरें और जिसतें वे जानें कि तेरा नाम इस घर पर,
४४ जिसे मैं ने बनाया है, पुकारा जाता है। और यदि तेरे लोग अपने बैरी पर संग्राम के लिये निकलें जहां कहीं तू उन्हें भेजे और परमेश्वर की प्रार्थना इस नगर की ओर करें जिसे तूने चुना है और इस घर की ओर, जिसे मैं ने तेरे नाम
४५ के लिये बनाया है। तब तू स्वर्ग पर से उनकी प्रार्थना और
४६ बिनती सुन और उनका पद स्थिर कर। यदि वे तेरे विरुद्ध पाप करें (क्योंकि कोई निष्पापी नहीं) और तू उनसे क्रुद्ध होके बैरी को सोंप देवे यहां लों कि वे उन्हें अपने देश
४७ में दूर अथवा निअर ले जायें। जिस देश में वे बंधुआई में पहुंचाये गये यदि वे फिर के सोचें और पश्चात्ताप करें और उनके देश में जो उन्हें बंधुआई में ले गये यह कहिके बिनती करें कि हम ने पाप किया है हम ने हठ किया है हम ने दुष्टता
४८ किई है। और अपने सारे मन से और सारे प्राण से अपने बैरी के देश में, जो उन्हें बंधुआई में लेगये थे तेरी ओर फिरें और अपने देश की ओर, जो तूने उनके पितरों को दिया और उस नगर की ओर जो मैं ने तेरे नाम के लिये बनाया
४९ तेरी प्रार्थना करें। तो तू अपने निवास स्थान स्वर्ग में से उनकी
५० प्रार्थना और बिनती सुन और उनका पद स्थिर कर। और

अपने लोगों को, जिन्हों ने तेरे बिरुद्ध पाप किया है, क्षमा कर और सारे अपराधों को, जो उन्हों ने तेरे बिरुद्ध अपराध किया है, क्षमा कर और जो उन्हें बंधुआई में लेगये हैं वे उन
५१ पर दया करें और उनपर दयाल होवें। इस लिये कि जिन्हें तू मिसर से अर्थात् लोहे की भट्ठी के मध्य में से निकाल
५२ लाया वे तेरे लोग और अधिकार हैं। जिसतें तेरे सेवक की प्रार्थना पर तेरी आखें खुली रहें और तेरे इसराईल लोगों की बिनती पर हर बात के लिये, जो वे तुझे पुकारते हैं
५३ तू सुने। क्योंकि हे परमेश्वर ईश्वर जब तू हमारे पितरों को मिसर से निकाल लाया जैसा तू ने अपने सेवक मूसा के द्वारा से कहा था वैसा तू ने उन्हें समस्त पृथिवी के लोगों से अपने
५४ अधिकार के लिये अलग किया। फिर ऐसा ऊआ कि जब सुलेमान परमेश्वर के आगे बिनती और समस्त प्रार्थना करचुका तो वुह परमेश्वर की बेदी के आगे से अपने हाथ
५५ स्वर्ग की ओर फैलाने के साथ घुठना टेकने से उठा। फिर खड़ा होके यह कहिके बड़े शब्द से इसराईल की सारी मंडली
५६ को आशीष दिया। कि परमेश्वर धन्य जिसने अपने बचन के समान अपने इसराईल लोगों को बिश्राम दिया और उसने जो अपने सेवक मूसा के द्वारा से प्रतिज्ञा किई थी उनमें से एक
५७ बात भी न घटी। और परमेश्वर हमारा ईश्वर जिस रीति से हमारे पितरों के साथ था हमारे साथ होवे वुह हमें न छोड़े
५८ और त्याग न करे। जिसतें वुह अपने समस्त मार्गों में चलाने को और अपनी आज्ञाओं को और बिधिन को और उसके बिचारों को, जो उसने हमारे पितरों से आज्ञा किई थी पालन
५९ करने को हमारे मन अपनी ओर झुकावे। और मेरे ये बचन जिसे मैं ने परमेश्वर के आगे बिनती किई है सो रात दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर के पास होवे कि जैसा प्रयोजन होय वैसा वुह अपने सेवक के पद को और अपने इसराईल लोगों

६० के पद को प्रतिदिन स्थिर करे। जिसतें पृथिवी के समस्त लोग
६१ जानें कि परमेश्वर को छोड़ और कोई ईश्वर नहीं है। इस लिये हमारे ईश्वर परमेश्वर की विधि पर चलने को और आज के दिन की नाईं उसकी आज्ञा पालन करने को हमारा
६२ अंतःकरण उसके आगे सिद्ध होवे। और राजा और उसके साथ सारे इसराईल ने परमेश्वर के आगे बलिदान
६३ चढ़ाये। और सुलेमान ने परमेश्वर के लिये बाईस सहस्र बैल और एक लाख बीस सहस्र भेड़ बकरी से कुशल का बलि किया और राजा ने और सारे इसराईल के समस्त संतानों ने इस
६४ रीति से परमेश्वर के मंदिर की स्थापना किई। उस दिन राजा ने परमेश्वर के मंदिर के आगे मध्य के आंगन को पवित्र किया क्योंकि वहां उसने होम की भेंटें और मांस की भेंटें और कुशल की भेंटों की चिकनाई चढ़ाई क्योंकि परमेश्वर के सन्मुख जो पीतल की वेदी है सो होम की भेंटों के और मांस की भेंटों के और कुशल की भेंटों की चिकनाई के लिये छोटी
६५ ऊई। तब सुलेमान ने और उसके साथ इसराईल के समस्त लोगों ने हामात के पैठ से मिस्र की नदी लों बड़ी मंडली ने सात दिन और सात दिन अर्थात् चौदह दिन पर्ब्ब किया।
६६ आठवें दिन उसने उन लोगों को बिदा किया और उन्हों ने राजा का धन्य माना और परमेश्वर ने, जो अपने दास दाऊद के कारण, और अपने इसराईल लोगों के कारण समस्त भलाई किई थी, उस्से आनंदित और मगन होके अपने अपने डेरे गये।

९ नवां पर्ब्ब।

सुलेमान के साम्ने परमेश्वर की बाचा १—९ सुलेमान का और हैराम का आपुस में भेंट देना १०—१४ सुलेमान के कार्य्य में अन्यदेशी उसके

बनिहार होते हैं और इसराईल उनके प्रधान १५—२३ फरऊन की कन्या अपने भवन में जाती है और सुलेमान के बरस बरस के बलिदान और ओफीर से सोना मंगाना २४—२८

१ और यों ऊआ कि जब सुलेमान ने परमेश्वर के मंदिर और राजा के भवन और सुलेमान ने जो समस्त इच्छा किई सो
२ बना के समाप्त किया। परमेश्वर ने, जैसा गबियून में सुलेमान को दर्शन दिया था वैसा दोहरा के उसे दर्शन दिया।
३ और परमेश्वर ने उसे कहा कि जो तूने मेरे आगे प्रार्थना और बिनती किई है सो मैंने सुनी है और जिस घर को तूने मेरे नाम को नित्य स्थापन करने के लिये बनाया है मैंने उसे पवित्र किया है और मेरी आंखें और मेरा अंतःकरण उस
४ में नित्य रहेंगे। और यदि तू अपने पिता दाऊद के समान मेरे आगे मन की खराई से और सचाई से चलेगा जिसतें मेरी समस्त आज्ञा के समान करे और मेरी बिधि और
५ बिचार को पालन करेगा। तब मैं तेरे राज्य के सिंहासन को इसराईल पर सदा के लिये स्थिर करोंगा जैसा मैंने तेरे पिता दाऊद से यह कहिके बाचा बांधी और कहा कि तेरे बंश से
६ राज्य कधी न जायगा। परंतु यदि तुम मेरा पीछा करने से किसी रीति से हटोगे अथवा तुम अथवा तुम्हारे बंश मेरी आज्ञाओं और बिधिन को, जो मैंने तुम्हारे आगे रक्खीं पालन न करोगे
७ परंतु जाके उपरी देवों की सेवा और दंडवत करोगे। तब मैं इसराईल को इस देश से, जो मैंने उन्हें दिया है, उखाड़ डालोंगा और इस घर को, जिसे मैंने अपने नाम के लिये पवित्र किया है, अपनी दृष्टि से दूर करोंगा और इसराईल एक कहावत
८ और कहानी सारे लोगों में होगा। और हर एक पथिक इस महत मंदिर से बिस्मित होके फुफकारी मार के कहेगा कि परमेश्वर ने किस कारण इस देश से और इस घर से ऐसा

९ किया है?। तब वे उत्तर देंगे इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर अपने ईश्वर को छोड़ दिया जो उनके पितरों को मिसर से निकाल लाया और उपरी देवों को ग्रहण किया और उनकी दंडवत और सेवा किई है इस लिये परमेश्वर ने उन पर ये सब
१० बुराइयां लाईं। और यों ऊआ कि बीस बरस के अंत में जब सुलेमान दोनों घरों को, अर्थात् परमेश्वर का
११ घर और राजा का भवन बना चुका। (सूर के राजा हैराम ने सुलेमान की समस्त इच्छा के समान उसे आरज वृक्ष और देवदारु वृक्ष और सोना पऊंचाया था) तब सुलेमान
१२ राजा ने हैराम को जलील के देश में बीस नगर दिये। और हैराम सूर से उन नगरों को, जो सुलेमान ने उसे दिये थे, देखने को आया और वे नगर उसकी दृष्टि में ठीक नथे।
१३ और उसने उसे कहा कि हे भाई कौन नगर हैं जो आपने मुझे
१४ दिये हैं? और उसने उनका नाम कबूल देश रक्खा। और
१५ हैराम ने छः कोरी तोड़े सोने राजा कने भेजे। और सुलेमान राजा के कर ठहराने का यह कारण था कि परमेश्वर के घर और अपने भवन और मिल्लू और यिरोशलीम की भीत
१६ और हासूर और मगद्दू और गज़र बनावे। क्योंकि मिसर का राजा फ़रऊन चढ़ गया था और गज़र को लेके आग से फूंक दिया और उस नगर के बासी किनानियों को घात किया और अपनी बेटी को सुलेमान की पत्नी होने के लिये उसे दिया।
१७ इसलिये सुलेमान ने गज़र और नीचे के बैतहूरून को बनाया।
१८।१९ और देश के बन से बालात और तदमूर को। और सुलेमान के समस्त भंडार के नगर और उसके रथों के नगर और घोड़चढ़ों के नगर के लिये और सुलेमान की वांछा, जो उसने वांछा किई थी, यिरोशलीम में और लबनान में और
२० अपने राज्य के सारे देश में बनाये। और सारे लोग जो, अमूरियों और हित्तियों और फरज़ियों और हवियों और

२१ यबूसियों से, बच रहे थे जो इसराईल के संतान न थे। उनके संतान जो देश में उनके पीछे बचे रहे जिन्हें इसराईलके संतान सर्बथा मिटा न सके उन्हों से सुलेमान ने आज के दिन लों
२२ दासत्व की सेवा का कर लिया। परंतु इसराईल के संतानों में से किसी को सुलेमान ने दास न बनाया परंतु वे उसके योद्धा और सेवक और अध्यक्ष और सेनापति और
२३ सारथी और घोड़चढ़े थे। और सुलेमान के कार्य्यों पर पांच सौ पचास श्रेष्ठ प्रधान थे जो बनिहारों पर आज्ञाकारी
२४ थे। परंतु फरऊन की कन्या दाऊद के नगर से निकल के अपने घर में आई जो सुलेमान ने उसके लिये बनाया तब उसने
२५ मिल्लू को बनाया। और जो यज्ञबेदी सुलेमान ने परमेश्वर के कारण बनाई थी उस पर बरस में तीन बार होम की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ाईं थीं और उसने उस पर परमेश्वर के आगे सुगंध जलाया सो वुह उस घर को बना चुका।
२६ फिर सुलेमान राजा ने अदूम के देश में लाल समुद्र के तीर पर अज़ीयून गबर में, जो ईलूत के पास है, जहाज़ों की
२७ बहीर बनाईं। और हैराम ने सुलेमान के सेवकों के साथ उसी बहीर में अपने सेवक मल्लाहों को, जो समुद्र के जानकार
२८ थे, भेजे। और वे ओफीर को गये और वहां से चार सौ बीस तोड़े सोने ले आये।

१० दसवां पर्ब्ब ।

शीबा की रानी सुलेमान की बुद्धि का व्याख्यान करती है १—१३ सुलेमान का सोना और हाल और हाथी दांत का सिंहासन १४—२० उसके पात्र और दान २१—२५ उसके रथ और घोड़ चढ़े और कर २६—२९।

१ और जब शीबा की रानी ने परमेश्वर के नाम के विषय में

सुलेमान का यश सुना तो वुह गूढ़ प्रश्नों से उसकी परीक्षा
२ लेने आई। वुह बज़त से लोगों के और सुगंध द्रव्य लदे ऊए
ऊंट और बज़त सोना और मणि के साथ बड़ी भीड़ से
यिरोशलीम में आई और उसने सुलेमान पास आके सब जो
३ उसके मन में था उसे पूछा। और सुलेमान ने उसके समस्त
प्रश्नों का उत्तर दिया और राजा से कोई वस्तु छिपी नथी जो
४ उसने उसे न बताया। और जब शीबा की रानी ने सुलेमान
की समस्त बुद्धि को और उस घर को जो उसने बनाया था।
५ और उसके मंच के भोजन को और उसके सेवकों का बैठना
और उनके कार्य्यकारियों का आना जाना और उनका
पहिरावा और उसके कटोरे के देवैयों और उसकी चढ़ाई
जिस्से वुह परमेश्वर के मंदिर को जाता था, देखा तब वुह
६ मूर्छित होगई। और उसने राजा से कहा कि आप की कहावत
और बुद्धि जो मैं ने अपनेही देश में सुना था सो सत्य समाचार
७ था। तिसपरभी जब लों मैं ने अपनी आंखों से न देखा तब
लों उन बातों की प्रतीत न किई और देखिये कि आधा मुझे न
कहा गया था क्योंकि आप ने बुद्धि और भलाई उस यश से अधिक
८ बढ़ाई। धन्य आप के जन और धन्य सेवक जो आप के आगे
९ खड़े होके आप का ज्ञान सुनते हैं। परमेश्वर आप का ईश्वर
धन्य जिसने आप से प्रसन्न होके इसराईल के सिंहासन पर आप
को बैठाया इस कारण कि परमेश्वर ने इसराईल से प्रीति रक्खी
इस लिये उसने आप को न्याय और धर्म्म के लिये राजा किया।
१० और उसने एक सौ बीस तोड़े सोने और
अति बज़त सुगंध द्रव्य और मणि राजा को दिये और इनके
समान जो शीबा की रानी ने सुगंध द्रव्य सुलेमान राजा को
११ बज़ताई से दिया ऐसा कभी न आया। और हैराम की बहोर
भी जो ओफ़ीर से सोना लाये थे और ओफ़ीर से चंदन के बज़त
१२ वृक्ष और मणि लाये। और राजा ने परमेश्वर के मंदिर के

लिये और अपने भवन के लिये चंदनवृक्ष के खंभे बनवाये
और गायकों के लिये बीणा और खंजड़ी बनवाईं और चंदन के
१३ ऐसे वृक्ष न कभी आये न आज लों देखे गये । और सुलेमान
राजा ने शीबा की रानी को उसकी समस्त बांछा, जो उसने
मांगी, दिई और सुलेमान ने राजकीय दान उसे दिया और
वुह अपने सेवकों समेत अपनेही देश को फिर गई ।
१४।१५ बैपारी और सुगंध द्रव्य के बैपारी और अरब के
समस्त राजा और देश के अध्यक्ष जो सोना लाते थे उसे
अधिक एक बरस में छः सौ छासठ तोड़े सोने सुलेमान पास
१६ पहुंचाये गये । और सुलेमान राजा ने
गढ़ेहुए सोने की दो सौ ढालें बनवाईं हरएक ढाल में सवा
१७ पांच सौ मोहर के लगभग लगा । और गढ़ेहुए सोने की तीन
सौ ढालें बनवाईं एक एक ढाल डेढ़ डेढ़ सेर सोने की थी
और राजा ने उन्हें लबनान के बन में के घर में रक्खा ।
१८ और राजा ने हाथी दांत का एक बड़ा सिंहासन बनवा के उसे
१९ अत्युत्तम सोने से मढ़वाया । उस सिंहासन की छः सीढ़ी और
सिंहासन के ऊपर पीछे की ओर गोल था और आसन की
दूनों ओर टेक था और उन हाथों की अलंग दो सिंह खड़े
२० थे । और उन छः सीढ़ियों के ऊपर दोनों अलंग सिंह
२१ खड़े थे किसी राज्य में ऐसा न बना था । और सुलेमान के
समस्त पीने के पात्र सोने के थे लबनान के बन में जो घर था
उसके भी समस्त पात्र निर्मल सोने के थे एक भी रुपे का न था
२२ सुलेमान के समय में उसकी कुछ गिनती नथी । क्योंकि हैराम
के बहीरों के साथ राजा के तरशीशी बहीर समुद्र में थे और
तरशीश के बहीर तीन तीन बरस में एक बार सोना और
२३ रुपा और हाथी दांत और बंदर और मोर लाते थे । सो
सुलेमान राजा धन और बुद्धि में पृथिवी के सारे राजाओं
२४ से अधिक था । और ईश्वर ने सुलेमान के अंतःकरण

में जो ज्ञान दिया था उसे सुन्ने के लिये सारी पृथिवी उसके
२५ दर्शन की वांछा करती थी। और हरएक जन बरस बरस
अपनी अपनी ठहराईहुई भेंट लाया अर्थात् सोने और रूपे के
पात्र और पहिरावा और हथिआर और सुगंध द्रव्य और घोड़े
२६ और खच्चर। और सुलेमान ने रथ और घोड़चढ़े
एकट्ठे किये और उसके पास चैादह सौ रथ और बारह सहस्र
घोड़चढ़े थे जिन्हें उसने रथों के नगरों में और राजा के संग
२७ यिरोशलीम में रक्खा। और राजा ने यिरोशली में चांदी
को पत्थरों के तुल्य और आरजबृक्ष बहुताई में चैागान
२८ के गूलरपेड़ों के समान किया। और सुलेमान के पास
घोड़े और सूत मिसर से लायेगये थे और राजा के बैपारी भाव
२९ से लाते थे। और एक रथ छः सौ टुकड़े चांदी के मिसर से
निकलते और ऊपर आते थे और एक घोड़ा डेढ़ सौ को
और हट्टी के सारे राजाओं के लिये और सुरिया के राजाओं
के लिये उनके द्वारा से ऐसाही लाते थे।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब ।

सुलेमान की पत्नियां उसको बुढ़ापे में उसे मूरत
पुजाती हैं १—८ ईश्वर उसके राज्य को भाग करता
है ९—१३ सुलेमान का बैरी हादाद मिसर को
भाग जाता है १४—२२ सुलेमान का दूसरा बैरी
रीजून २३—२५ उसका तीसरा बैरी यूर्बआम
जिसे अहीजा आगम कहता है २६—४० सुलेमान
के कार्य्य और राज्य और मृत्यु रहबोआम उसके
सिंहासन पर बैठता है ४१—४३ ।

१ परंतु सुलेमान राजा ने फ़रऊन की बेटी को छोड़ बहुत उपरी
स्त्रियों से प्रीति किई अर्थात् मवाबी से और अमूनी से और अदूमी
२ से और सैदूनी और हट्टी की स्त्रियों से। उन जातिगणों की, जिनके

विषय में परमेश्वर ने इसराईल के संतान को आज्ञा किई थी कि तुम उनके पास मत जाओ और न वे तुम्हारे पास आवें निश्चय वे तुम्हारे मन को, अपने देवों की ओर फिरावेंगी पर
३ सुलेमान प्रीति से उन्हीं से मिलचा रहा। और उसकी सात सौ राजकुमारी पत्नियां और तीन सौ सहेलियां थीं और
४ उसकी पत्नियों ने उसके मन को फेर दिया। और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान वृद्ध हुआ तब उसकी पत्नियों ने उसके मन को भिन्न देवों की ओर फेर दिया और उसका मन अपने ईश्वर परमेश्वर की ओर अपने पिता दाऊद के मन के समान सिद्ध
५ न था। क्योंकि सुलेमान ने सैदानियों की देवता असतरुस का
६ और अमूनी के घिनित मलकूम का पीछा किया। और सुलेमान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और उसने परिपूर्णता से अपने पिता दाऊद के समान परमेश्वर का पीछा न किया।
७ तब सुलेमान ने यिरोशलीम के सम्मुख की पहाड़ी पर मवाबियों की घिनित किमूश के लिये और अमून के संतानों की घिनित
८ मोलिक के लिये ऊंचा स्थान बनाया। इसी रीति से अपनी सारी उपरी पत्नियों के लिये, जो अपनी देवतों के लिये धूप
९ जलाती और बलि करती थीं, उसने बनाया। और परमेश्वर सुलेमान पर इस कारण क्रुद्ध हुआ कि इसराईल के ईश्वर परमेश्वर से, जिसने उसे दो बार दर्शन दिया था, उसका
१० मन फिर गया। और उसे इस विषय में आज्ञा किई थी कि वुह आन देवों का पीछा न करे परंतु उसने परमेश्वर की आज्ञा
११ को पालन न किया। इस कारण परमेश्वर ने सुलेमान से कहा जैसा कि तुझ से यह हुआ है और तू ने मेरे नियम और विधिन और जो मैं ने तुझे आज्ञा किई पालन नहीं किया है निश्चय
१२ मैं राज्य तुझ से फाड़ेंगा और तेरे सेवक को देऊंगा। तथापि तेरे जीते जी ऐसा न करोंगा परंतु तेरे बेटे के हाथ से उसे
१३ फाड़ेंगा। तथापि मैं सारा राज्य न फाड़ लेऊंगा परंतु अपन

सेवक दाऊद के कारण और अपने चुने ऊए यिरोशलीम
१४ के लिये तेरे बेटे को एक गोष्ठी देऊंगा। तब
परमेश्वर ने सुलेमान के एक बैरी को उभाड़ा अर्थात् अदूमी
१५ हदाद को वुह अदूम में राजाओं के वंश से था। क्योंकि
जब दाऊद अदूम में था और सेनापति यूआब अदूम के समस्त
१६ पुरुष को घात करके उन्हें गाड़ने गया। (क्योंकि यूआब छः
मास लों समस्त इसराईलियों के संग वहीं रहा यहां लों कि
१७ उसने अदूम में एक पुरुष को जीता न छोड़ा)। तब हदाद
अपने पिता के सेवक कितने एक अदूमियों के साथ मिसर को
१८ भाग गया और तब वुह छोटा बालक था। फिर वे मदियान से
निकल के फारान में आये और फारान से लोगों को साथ
लेके मिसर में मिसर के राजा फरऊन पास पऊंचे जिसने उसे
घर दिया और उसके लिये भोजन ठहराया और उसे भूमि
१९ दिई। और हदाद ने फरऊन की दृष्टि में बड़ा अनुग्रह पाया
यहां लों कि उसने अपनीही पत्नी तहफीनीस रानी की बहिन
२० उसी को बियाह दिई। और तहफीनीस की बहिन उसके
लिये गनुबास बेटा जनी जिसका दूध तहफीनीस ने फरऊन के
घर में छुड़ाया और गनुबास फरऊन के बेटों के साथ फरऊन
२१ के घराने में रहता था। और जब हदाद ने मिसर में सुना
कि दाऊद अपने पितरों में शयन किया और सेनापति
यूआब मर गया तब उसने फरऊन से कहा कि मुझे बिदा
२२ कीजिये कि मैं अपनेही देश को जाओं। तब फरऊन ने उसे
कहा कि तुझे मेरे पास कौनसी घटती है कि तू अपनेही
देश को जाने चाहता है? उसने उत्तर दिया नहीं तथापि मुझे
२३ किसी रीति से जाने दीजिये। फिर ईश्वर ने उसके
लिये बैरी खड़ा किया अर्थात् इलियादा के बेटे रिजान को जो
सूबा के राजा अपने स्वामी हदादिज़र पास से भागा था।
२४ और जब दाऊद ने उन्हें घात किया उसने अपने पास लोगों

का एकट्ठा किया और एक जथा पर प्रधान हुआ और दमिश्क में जाके बास किया और दमिश्क में राज्य किया। और
२५ हदाद की बुराई से अधिक सुलेमान के जीवन भर वुह इसराईल का बैरी था और वुह इसराईल से घिन रखता
२६ था और सुरिया पर राज्य करता था। और सरीदः के एक अफ़राती नाबात के बेटे यूर्बआम सुलेमान का सेवक जिस की माता का नाम सरूअः बिधवा थी उसी ने राजा
२७ के बिरोध हाथ उठाया। और राजा के बिरोध हाथ उठाने का यह कारण कि सुलेमान ने मिल्लू को बनाया और
२८ अपने बाप दाऊद के नगर के दरारों को बंद किया। और यूर्बाम अति बलवान बीर था और उस तरुण को चालाक देख के सुलेमान ने उसे यूसफ के घराने के बोझ पर प्रधान
२९ किया। और उस समय में ऐसा हुआ कि जब यूर्बआम यिरोशलीम से बाहर गया तब शैलूनी अहीजा भविष्यद्वक्ता ने उसे मार्ग में पाया और वुह एक नया बस्त्र पहिने था और केवल
३० वे दोनो चौगान में थे। तब अहीजा ने उस पर के नये बस्त्र
३१ को पकड़ा और फाड़के बारह टुकड़े किये। और उसने यूर्बआम को कहा कि दस टुकड़े तू ले क्योंकि इसराईल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं सुलेमान के हाथ से राज्य
३२ फाड़ोंगा और दस गोष्ठियां तुझे देऊंगा। (परंतु मेरे सेवक दाऊद के कारण और यिरोशलीम नगर के कारण जिसे मैं ने इसराईल की समस्त गोष्ठियों में से चुन लिया वुह एक गोष्ठी
३३ पावेगा)। इस कारण कि उन्हों ने मुझे त्याग के सैदानियों की देवता अश्तरूत को और मवाबियों के देव कमूश को और अमून के संतान के देव मलकूम की पूजा किई है और अपने पिता दाऊद की नाईं मेरी दृष्टि में जो भला है मेरे मार्गों में नहीं चला और मेरी बिधि और बिचारों को पालन नहीं
३४ किया। तथापि मैं समस्त राज्य को उसके हाथ से निकाल न

लेऊंगा परंतु मैं अपने सेवक दाऊद के कारण जिसे मैं ने इस कारण चुना कि उसने मेरी आज्ञा और विधिन को पालन
३५ किया उसके जीवन भर मैं उसको राजा कर रक्खोंगा। परंतु उसके बेटे के हाथ से मैं राज्य लेऊंगा और दस गोष्ठी तुझे
३६ देऊंगा। और मैं उसके बेटे को एक गोष्ठी देऊंगा जिसतें यिरोशलीम नगर में जिसे मैं ने अपने नाम के लिये चुना है
३७ मेरा दास दाऊद एक दीपक रक्खा करे। और मैं तुझे लेऊंगा और तू अपने मन की समस्त इच्छा के समान राज्य
३८ करेगा और इसराईल का राजा होगा। और ऐसा होगा कि यदि तू मेरी समस्त आज्ञाओं को सुनेगा और मेरे मार्गों पर चलेगा और जिस रीति से मेरा दास दाऊद करता था वैसा मेरी विधि और आज्ञा पालने के लिये मेरी दृष्टि में भलाई करेगा तो मैं तेरे साथ होऊंगा और तेरे लिये एक दृढ़ घर बनाओंगा जैसा मैं ने दाऊद के लिये बनाया और इसराईल
३९ को तुझे देऊंगा। और इस लिये मैं दाऊद के वंश को दुःख
४० देऊंगा परंतु सदा लों नहीं। इस लिये सुलेमान ने यूर्बआम को बधन करने चाहा तब यूर्बआम उठा और भागके मिसर के राजा शिशाक के पास मिसर में गया और सुलेमान के
४१ मरने लों वहीं रहा। और सुलेमान का रहा हुआ कार्य्य और सब जो उसने किया और उसकी बुद्धि क्या सुलेमान
४२ की क्रिया की पुस्तक में नहीं लिखा है?। और यिरोशलीम में सारे इसराईलियों पर सुलेमान के राज्य के दिन चालीस
४३ बरस थे। और सुलेमान अपने पितरों में सो गया और अपने बाप दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उसके बेटे रहबुआम ने उसकी संती राज्य किया।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

रहबुआम राज्य पाता है और इसराईली उसे बिनती करते हैं १—५ वुह पुरनियों के मंत्र को त्याग करके अपने हमजोड़ियों की बात को मानता है और लोगों को कठोर उत्तर देता है ६—१५ दस गोष्ठी उसे रिसियाके फिर जाती हैं और यूर्बआम को अपना राजा बनाती हैं १६—२० रहबुआम उनसे युद्ध करने चाहता है परंतु परमेश्वर उसे रोकता है २१—२४ अपना राज्य स्थिर करने को यूर्बआम अपने राज्य में मूर्त्तिपूजा फैलाता है २५—३३ ।

१ और रहबुआम शकीम को गया क्योंकि समस्त इसराईल शकीम
२ में आये कि उसे राजा बनावें । और ऐसा ऊआ कि जब नबात के बेटे यूर्बआम ने, जो अबलों मिसर में था, यह सुना (क्योंकि वुह सुलेमान राजा के आगे से भागा था और मिसर
३ में जा रहा) । उन्हों ने भेजके उसे बुलवाया तब यूर्बआम और इसराईल की सारी मंडली आये और यह कहिके
४ रहबुआम से बोले । कि आप के पिता ने हमारे जूए को कठिन किया इस लिये अब आप अपने पिता की कठिन सेवा को और उसके भारी जूए को, जो उसने हम पर रक्खा, हलुक कीजिये
५ और हम आप की सेवा करेंगे । उसने उन्हें कहा तीन दिन लों चले जाओ तब मुझ पास फिर आओ और लोग चले
६ गये । तब रहबुआम राजा ने पुरनियों से जो उसके पिता सुलेमान के जीते जी उसके आगे होते थे परामर्श किया और कहा कि तुम्हारा क्या मंत्र है मैं इन लोगों को क्या उत्तर
७ देओं? । वे उसे कहिके बोले कि यदि आज के दिन आप इन लोगों का सेवक होके उनकी सेवा करेंगे और उत्तर देके

८ उन्हें अच्छी बात कहेंगे वे सर्वदा आप के सेवक होरहेंगे। परंतु उसने प्राचीनों के मंत्र को त्याग के उन युवा पुरुषों के संग, जो उसके साथ साथ बढ़े थे और उसके आगे खड़े होते थे, परामर्श
९ किया। और उसने उन्हें कहा इन लोगों ने मुझे बोल के यह कहा है कि आप के पिता ने जो जूआ हम पर रक्खा है उसे कुछ हलुक कीजिये तुम क्या मंत्र देते हो मैं इन्हें क्या उत्तर
१० देओं?। तबउन युवा पुरुषों ने जो उसके साथ साथ बढ़ेथे उसे बोलके कहा कि जिन लोगों ने आप से यह कहा है कि आप के पिता ने हमारे जूए को भारी किया है परंतु आप हमारे लिये उसे हलुक कीजिये आप उन्हें यों कहिये कि मेरी कनगुरिया मेरे
११ पिता की कटि से अधिक मोटी होगी। और जैसा कि मेरे पिता ने तुम पर भारी जूआ रक्खा था मैं तुम्हारे जूए को बढ़ाओंगा मेरे पिता ने कोड़े से तुम्हें ताड़ना किई परंतु मैं तुम्हें बिच्छुओं
१२ से ताड़ना करोंगा। सो जैसा राजा ने ठहरा के कहा था कि तीसरे दिन फेर मेरे पास आना वैसाही यूर्बआम और सारे
१३ लोग तीसरे दिन रहबुआम के पास आये। तब राजा ने उन लोगों को कठोरता से उत्तर दिया और जो मंत्र प्राचीनों ने
१४ दिया था उसे त्याग किया। और युवा पुरुषों के मंत्र के समान उन्हें कहा कि मेरे पिता ने तुम पर भारी जूआ रक्खा था परंतु मैं उस जूए को और भारी करोंगा मेरे पिता ने तुम्हें कोड़ों से
१५ दंड दिया था परंतु मैं तुम्हें बिच्छुओं से ताड़ना करोंगा। सो राजा ने उन लोगों की बात न सुनी क्योंकि यह ईश्वर की ओर से था जिसतें वुह अपने बचन को, जो परमेश्वर ने शैलूनी अहीज़ा की ओर से निबाट के बेटे यूर्बआम से कहा पूरा करे।
१६ सो जब सारे इसराईलियों ने देखा कि राजा ने उन लोगों की न सुनी तब लोगों ने यह कहिके राजा को उत्तर दिया कि दाऊद में हमारा क्या भाग है? और यस्सी के बेटे के साथ हमारा कुछ अधिकार नहीं है हे इसराईल अपने अपने तंबू को

आओ हे दाऊद अपने घर को देख सो इसराईल अपने
१७ तंबूओं को चले गये। परंतु इसराईल के संतान जो, यहूदा के
१८ नगरों में बसे थे, रहबुआम ने उन पर राज्य किया। तब
रहबुआम राजा ने अदोराम को जो कर का स्वामी था भेजा
और समस्त इसराईलियों ने यहां लों उसे पत्थरों से पथरवाह
किया कि वुह मर गया इस लिये रहबुआम राजा आप को
१९ दृढ़ करके यिरोशलीम को भागने के लिये रथ पर चढ़ा। सो
इसराईल आज के दिन लों दाऊद के घराने से फिर गये।
२० और ऐसा ऊआ कि जब सारे इसराईलियों ने सुना कि
यूर्बआम फिर आया तो उन्हों ने भेज के उसे मंडली में बुलवाया
और उन्हों ने उसे सारे इसराईलियों पर राजा किया केवल
यहूदा की गोष्ठी को छोड़ कोई दाऊद के घराने की ओर न
२१ ऊआ। और जब रहबुआम यिरोशलीम में पऊंचा
तो उसने यहूदा के सारे घराने को बनियामीन की गोष्ठी
समेत, जो सब एक लाख अस्सी सहस्र चुनेऊए जन लड़ाक थे
एकट्ठा किया कि इसराईल के घराने से लड़के राज्य को सुलेमान
२२ के बेटे रहबुआम की ओर लावें। परंतु ईश्वर के जन शमाया
२३ के पास ईश्वर का बचन यह कहिके पऊंचा। कि यहूदा के
राजा सुलेमान के बेटे रहबुआम को और सारे यहूदा और
बनियामीन के घराने को और उबरे ऊए लोगों को कहिके
२४ बोल। कि परमेश्वर यों कहता है कि चढ़ाई न करो और
अपने भाई इसराईल के संतान से लड़ाई न करो परंतु हरएक
तुम्में से अपने अपने घर को फिरे क्योंकि यह बात मेरी ओर से
है सो उन्हों ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और परमेश्वर के
२५ बचन के समान उलटे फिरे। तब यूर्बआम अफराईम
पहाड़ में शकीम को बनाके उस में बसा उसके पीछे वहां से
२६ निकल के पनुईल को बनाया। तब यूर्बआम ने अपने मन में
२७ कहा कि अब राज्य दाऊद के घराने को फिर जायगा। यदि

ये लोग बलि चढ़ाने के लिये परमेश्वर के मंदिर में यिरोशलीम को चढ़ेंगे तब उन लोगों का मन अपने प्रभु यहूदा के राजा रहबुआम की ओर फिरेगा और वे मुझे मार लेंगे और

२८ यहूदा के राजा रहबुआम की ओर फिर जायेंगे। इस लिये राजा ने परामर्श करके सोने की दो बछिया बनवाईं और उन्हें कहा कि तुम्हारे लिये अति है कि तुम यिरोशलीम को चढ़जाओ हे इसराईल अपने देवों को देख जो तुझे मिसर की

२९ भूमि से ऊपर निकाल लाये। और उसने एक को बैतईल में

३० और दूसरे को दान में स्थापित किया। और यह बात एक पाप ऊआ क्योंकि लोग दान में जाके एक की पूजा करते थे।

३१ और उसने ऊंचे स्थानों में एक घर बनाया और नीच लोगों

३२ में से पुरोहित बनाये जो लावी के बेटों में से न थे। और यूर्बआम ने यहूदा के एक पर्ब्ब की नाईं आठवें मास की पंदरहवीं तिथि में पर्ब्ब ठहराया और बेदी पर चढ़ाया और ऐसाही उसने किया उन बछियों के आगे जो उसने बनाई थीं बैतईल में चढ़ाया और उसने उन ऊंचे स्थानों के पुरोहितों को

३३ जिन्हें उसने बनाया था रक्खा। सो आठवें मास की पंदरहवीं तिथि को अर्थात् उस मास में जो उसने अपने मन में रोपा था बैतईल में अपनी बनाईऊई बेदी पर बलिदान चढ़ाया और इसराईल के संतानों के लिये एक पर्ब्ब ठहराया और उसने उस बेदी पर चढ़ाया और धूप जलाया।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

एक भविष्यद्वक्ता के द्वारा से परमेश्वर संदेश देता है कि पूजेरी आप बेदी पर चढ़ाये जायेंगे भेडे और मनुष्यों के हाड़ उस पर जलाये जायेंगे १—३ राजा उस भविष्यद्वक्ता को पकड़ने की आज्ञा करता है और उसका हाथ झुराजाता है और भविष्यद्वक्ता

की प्रार्थना से फेर चंगा होता है ४—६ और राजा प्रतिफल देने कहता है वुह नहीं लेता है ७—१० वुह भविष्यद्वक्ता छल पाता है और एक सिंह उसे घात करता है ११—२५ वुह बैतईल में गाड़ा जाता है २६—३२ यूर्बआम अपना पाप नहीं छोड़ता है ३३—३४

१ और देखो कि परमेश्वर के बचन से ईश्वर का एक जन यहूदाह से बैतईल में आया और यूर्बआम बेदी के पास धूप जलाने के
२ लिये खड़ा था। और उसने परमेश्वर के बचन से बेदी के बिरुद्ध में पुकारके कहा कि हे बेदी हे बेदी परमेश्वर यों कहता है कि देख जुसैया नाम एक बालक दाऊद के घराने में उत्पन्न होगा और वुह ऊंचे स्थानों के पुजेरियों को, जो तुझ पर धूप जलाते हैं, तुझी पर चढ़ावेगा और मनुष्यों के हाड़ तुझ पर
३ जलाये जायेंगे। और उसने उसी दिन यह कहिके एक पता दिई कि परमेश्वर ने यह कहिके यह पता दिई है कि देख बेदी फट जायगी और उस पर की राख उंडेली जायगी।

४ और ऐसा ऊआ कि जब यूर्बआम राजा ने ईश्वर के जन का कहना सुना जिसने बैतईल की बेदी के बिरुद्ध पुकारा था कि उसने बेदी पर से अपना हाथ बढ़ाके कहा कि उसे पकड़ लेओ और उसका हाथ जो उसने उसपर बढ़ाया था झुरा गया ऐसा
५ कि वुह उसे फिर सिकोड़ न सका। और उस लक्षण के समान जो ईश्वर के उस जन ने परमेश्वर के बचन से दिया था बेदी
६ फट गई और राख बेदी पर से उंड़ेली गई। तब राजा ने ईश्वर के उस जन को कहा कि अब अपने ईश्वर परमेश्वर की बिनती करिये और मेरे लिये प्रार्थना करिये कि मेरा हाथ चंगा किया जाय तब ईश्वर के जन ने परमेश्वर की रुख बिनती किई और राजा का हाथ चंगा किया गया और आगे की
७ नाईं हो गया। तब राजा ने ईश्वर के उस जन से

कहा कि मेरे साथ घर में चलके सुस्ताइये मैं आप को प्रतिफल
८ देउंगा। परंतु ईश्वर के जन ने राजा से कहा कि यदि तू
अपना आधा घर मुझे देवे तथापि मैं तेरे साथ भीतर न
जाऊंगा और इस स्थान में न रोटी खाऊंगा न जल पान
९ करोंगा। क्योंकि परमेश्वर के बचन से मुझे यों कहा गया कि न
रोटी खाइयो न जल पान करियो और जिस मार्ग से होके तू
१० जाता है उसी से फेर मत आना। सो वुह जिस मार्ग में होके
बैतईल में आया था उस मार्ग से न गया वुह दूसरे मार्ग स
११ चला गया। उस समय में बैतईल में एक वृद्ध
भविष्यद्वक्ता रहता था और उसके बेटे उस पास आये और
उन कार्यों को जो ईश्वर के जन ने उस दिन बैतईल में किये
उसे कहि सुनाया और उसकी उन बातों को, जो उसने
१२ राजा से कही थीं अपने पिता के आगे वर्णन किया। और
उनके पिता ने उनसे पूछा कि वुह किस मार्ग से गया? क्योंकि
उसके बेटों ने देखा था कि ईश्वर का वुह जन जो यहूदा से
१३ आया किस मार्ग से फिर गया। फिर उसने अपने बेटों से
कहा कि मेरे लिये गदहे पर काठी बांधो सो उन्हों ने उसके
१४ लिये गदहे पर काठी बांधी और वुह उस पर चढ़ा। और
ईश्वर के उस जन के पीछे चला और उसे माजू वृक्ष तले बैठे
पाया तब उसने उसे कहा कि तू ईश्वर का वुह जन है जो
१५ यहूदा से आया? वुह बोला हां। तब उसने उसे कहा कि
१६ मेरे घर चल और रोटी खा। वुह बोला मैं तेरे साथ नहीं
फिर सक्ता और न तेरे साथ जा सक्ता और न मैं तेरे साथ
१७ इस स्थान में रोटी खाऊंगा न जल पीयोंगा। क्योंकि परमेश्वर
के बचन से मुझे यों कहा गया कि तू वहां न रोटी खाना न
जल पीना और जिस मार्ग से तू जाता है उस मार्ग से होके
१८ न फिरना। तब उसने उसे कहा कि मैं भी तेरी नाईं एक
भविष्यद्वक्ता हों और परमेश्वर के बचन के द्वारा से एक दूत

ने मुझे कहा कि उसे अपने साथ अपने घर में फिरा ला जिसतें वुह रोटी खाय और पानी पीये उसने उसे झूठ कहा।
१९ सो वुह उसके साथ फिर गया और उसके घर में रोटी खाई
२० और जल पीया। और यों हुआ कि ज्यों वे मंच पर बैठे थे तब परमेश्वर का बचन उस भविष्यद्वक्ता पर, जो
२१ उसे फिरा लाया था, उतरा। और उसने ईश्वर के उस जन से, जो यहूदा से आया था, चिल्लाके कहा कि परमेश्वर यह कहता है कि जैसा तूने परमेश्वर के बचन को उलंघन किया है और जो तेरे ईश्वर परमेश्वर ने तुझे आज्ञा किई है तूने उसे
२२ पालन न किया। परन्तु फिर आया और उसने जिस स्थान के बिषय में तुझे कहा कि कुछ रोटी न खाना न जल पीना उसी स्थान में तूने रोटी खाई और जल पीया सो तेरी लोथ
२३ तेरे पितरों की समाधि में न पहुंचेगी। और ऐसा हुआ कि जब वुह खा पी चुका तब उसने उसके लिये, अर्थात उस भविष्यद्वक्ता के लिये जिसे वुह फेर लाया था, गदहे पर काठी
२४ बान्धी। जब वुह वहां से गया तो मार्ग में उसे एक सिंह मिला जिसने उसे मारडाला और उसकी लोथ मार्ग में पड़ी थी और गदहा उस पास खड़ा रहा और सिंह भी उस लोथ के पास खड़ा
२५ था। और देखो कि लोगों ने उधर से जाते जाते लोथ को मार्ग में पड़ी देखा और सिंह भी लोथ पास खड़ा है उन्हों ने नगर में
२६ आके, जहां वुह बृद्ध भविष्यद्वक्ता रहता था, कहा। और जब उस भविष्यद्वक्ता ने, जो उसे मार्ग में से फिरा लाया था, सुना तो कहा कि यह ईश्वर का वुह जन है जिसने परमेश्वर का बचन न माना इस लिये परमेश्वर ने उसे सिंह को सौंप दिया जिसने उसे परमेश्वर के बचन के समान, जो उसने कहा था, फाड़ा और
२७ मारडाला है। फिर वुह अपने बेटों से यह कहिके बोला कि
२८ मेरे लिये गदहे पर काठी बांधो और उन्हों ने बांधी। तब उसने जाके उसकी लोथ मार्ग में पड़ी पाई और गदहा और

सिंह लोथ पास खड़े थे सिंह ने लोथ को न खाया था न गदहे
२९ को फाड़ा था। तब उस भविष्यद्वक्ता ने ईश्वर के जन की लोथ को
उठाके उस गदहे पर लादा और फेर लाया और उसके
लिये शोक करतेहुए वृद्ध भविष्यद्वक्ता नगर में पहुंचा कि उसे
३० गाड़े। फिर उसने उसकी लोथ को अपनीही समाधि में
रक्खा और यह कहिके उसके लिये उन्हों ने विलाप किया कि
३१ हाय मेरे भाई। और उसके गाड़ने के पीछे यों हुआ कि वुह
यह कहिके अपने बेटों से बोला कि जब मैं मरों तो मुझे
ईश्वर के इस जन की समाधि में गाड़ियो और मेरी हड्डियां
३२ उसकी हड्डियों के पास रखियो। क्योंकि बैतईल की बेदी और
सामरः के नगरों के ऊंचे स्थानों के समस्त घरों के विरोध में,
जो परमेश्वर के वचन के द्वारा से कहा गया, सो अवश्य पूरा
३३ होगा।　　　इस के पीछे यूर्बआम अपनी बुराई से न फिरा
परन्तु फिर नीच लोगों को ऊंचे स्थानों का पुरोहित बनाया
जो जो चाहा उसने उसे स्थापित किया और वुह ऊचे स्थानों
३४ का एक पुरोहित हुआ। और यही वस्तु यूर्बआम के घराने के
लिये यहां लों पाप हुआ कि उसे उखाड़े और पृथिवी पर
से नष्ट करे।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

यूर्बआम अपने बेटे के रोग के विषय में रानी को
भविष्यद्वक्ता के पास पूछने भेजता है परमेश्वर
उसे उस पर प्रगट करता है और राजा के घराने
के नाश का सन्देश देता हैं १—१६ राज पुत्र और
राजा मर जाते हैं १७—२० रहबुआम और
उसकी प्रजा अपने राज्य में मूर्त्ति पूजा फैलाती हैं
२१—२४ मिसर का राजा देश को मारके लूटलेता
है २५—२८ रहबुआम मरजाता है २९—३१ ।

१।१ उस समय में यूर्बआम का बेटा अबीजा रोगी ऊआ। और यूर्बआम ने अपनी पत्नी से कहा कि उठके अपना भेष बदल जिसतें न जाना जाय कि तू यूर्बआम की पत्नी है और शैलू को जा और देख वहां अहीजा भविष्यद्वक्ता है जिसने मुझे
३ कहा था कि तू इन लोगों का राजा होगा। और अपने हाथ में दस रोटियां और लड्डु और एक पात्र मधु लेके उस पास जा और वुह तुझे बतावेगा कि इस लड़के को क्या होगा।
४ तब यूर्बआम की पत्नी ने वैसाही किया और उठके शैलू को गई और अहीजा के घर में पऊंची परन्तु अहीजा देख न सक्ता था क्योंकि बूढ़ापे के कारण उसकी आंखें बैठ गई थीं।
५ तब परमेश्वर ने अहीजा से कहा कि देख यूर्बआम की पत्नी अपने बेटे के विषय में तुझसे कुछ पूछने को आती है क्योंकि वुह रोगी है तू उसे यों यों कहियो क्योंकि यों होगा कि जब वुह
६ भीतर आवेगी वुह अपना भेष बदल डालेगी। और यों ऊआ कि जब वुह द्वार पर पऊंची और अहीजा ने उसके पांओं का शब्द सुना तो उसने उसे कहा कि हे यूर्बआम की पत्नी भीतर आ तू अपना भेष क्यों बदलती है? क्योंकि मैं कठिन समाचार के
७ लिये तुझ पास भेजा गया हों। सो जा यूर्बआम से कह कि इसराईल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि जैसा मैं ने लोगों में से तुझे बढ़ाया और अपने इसराईल लोग पर
८ अध्यक्ष किया। और दाऊद के घराने से राज्य फाड़के तुझे दिया तथापि तू मेरे सेवक दाऊद के समान न ऊआ जिसने मेरी आज्ञाओं को पालन किया और जिसने अपने सारे मन
९ से केवल वही किया जो मेरी दृष्टि में अच्छा था। परन्तु सभों से, जो तेरे आगे थे, अधिक बुराई किई है क्योंकि मुझे क्रुद्ध करने, को तू ने जाके, अपने लिये और देवों को और ढ़ाली ऊई मूर्त्तिन को बनाया और मुझे अपने पीछे टाल दिया है।
१० सो देख मैं यूर्बआम के घराने पर बुराई लाओंगा और यूर्बआम

के हरएक पुरुष को, जो इसराईलियों में बन्द हैं और बचे हैं, नष्ट करोंगा और उनको जो, यूर्बआम के घर में बचरहेंगे, यों मिटा डालोंगा जैसा कोई जन कूड़े को यहां लों लेजाता है
११ कि सब जाता रहे। यूर्बआम का जो कोई नगर में मरेगा उसे कुत्ते खायेंगे और जो चौगान में मरेगा उसे आकाश के
१२ पक्षी खायेंगे क्योंकि परमेश्वर ने यों कहा है। सो तू उठ के अपनेही घर जा और नगर में तेरे पांव पड़ंचतेही लड़का
१३ मर जायगा। और उसके लिये सारे इसराईल बिलाप करेंगे और उसे गाड़ेंगे क्योंकि यूर्बआम के केवल वही समाधि में पड़ंचेगा इस कारण कि इसराईल के ईश्वर परमेश्वर की ओर,
१४ यूर्बआम के घराने में से उस में भलाई पाई गई। और परमेश्वर इसराईल पर एक राजा खड़ा करेगा जो उसी दिन यूर्बआम के घराने को नष्ट करेगा परन्तु क्या? अर्थात् अभी।
१५ और जिस रीति से जल में नल हिलता है वैसाही परमेश्वर इसराईल को थपरावेगा और इस देश में से, जो उसने उनके पितरों को दिया है इसराईल को उखाड़ डालेगा और उन्हें नदी के पार लों बिथरायेगा इस कारण कि उन्हों ने अपना
१६ अपना कुंज बनाके परमेश्वर को खिजाके रिसाया। और वुह यूर्बआम के पाप के कारण इसराईल को दूर करेगा क्योंकि उसने पाप किया और इसराईल से पाप करवाया। तब
१७ यूर्बआम की पत्नी उठ चली और तरसा में आई और ज्योंहीं
१८ वुह देहली पर पड़ंची त्योंहीं लड़का मर गया। और जैसा परमेश्वर ने अपने सेवक अहीजा भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा था उन्हों ने उसे गाड़ा और सारे इसराईलियों ने
१९ उसके लिये बिलाप किया। और यूर्बआम की रहीऊई क्रिया जिस रीति से उसने युद्ध किया और किस रीति से उसने राज्य किया सो देखो इसराईल के राजाओं के समाचार की
२० पुस्तक में लिखा है। और यूर्बआम ने बाईस बरस राज्य

किया तब अपने पितरों में सोगया और उसका बेटा नादाब
२१ उसकी सन्ती राज्य पर बैठा। और सुलेमान के बेटे
रहबुआम ने यहूदा पर राज्य किया उसने एकतालीस बरस की
अवस्था में राज्य करना आरंभ किया और यिरोशलीम में अर्थात
उस नगर में जिसे परमेश्वर ने अपना नाम रखने के लिये
इसराईल की समस्त गोष्ठियों मेंसे चुन लिया था सत्रह बरस
राज्य किया और उसकी माता का नाम नआमा जो अमूनियः
२२ थी। और यहूदा ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और
उन्हों ने अपने पितरों के पाप से अधिक पाप करके परमेश्वर को
२३ खिजाके झल दिलाया। क्योंकि उन्हों ने भी अपने लिये हरएक
ऊंचे पहाड़ पर औरएक एक हरे पेड़ तले ऊंचा स्थान और मूर्त्ति
२४ और कुंज बनाये। और देश में सदूमी भी थे और उन्हों ने
अन्यदेशियों के समस्त घिनित कार्यों के समान किया जिन्हें
२५ परमेश्वर ने इसराईल के सन्तानों के आगे से दूर किया। और
रहबुआम राजा के पांचवें बरस ऐसा ऊआ कि मिसर का राजा
२६ शीशाक यिरोशलीम के बिरोध में चढ़ आया। और वुह परमेश्वर
के मन्दिर का धन और राजा के घर का धन लेके चला गया
और वुह सब कुछ लेगया जो सोने की ढालें सुलेमान ने बनाईं
२७ थीं वुह सब लेगया। और रहबुआम राजा ने उनकी सन्ती
पीतल की ढालें बनाईं और प्रधान दैाड़हों को, जो राजा के
२८ भवन के द्वार की रक्षा करते थे दियां। और ऐसा ऊआ कि जब
राजा परमेश्वर के मंदिर में जाता था तब पहरू उन्हें उठा लेते
२९ थे फिर उन्हें लाके पहरू की कोठरी में रखछोड़ते थे। अब
रहबुआम की रही ऊई क्रिया और सबकुछ जो उसने किया सो
क्या यहूदा के राजावली के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा?।
३० और रहबुआम में और यूर्बआम में जीवन भर सर्बदा युद्ध रहा।
३१ और रहबुआम ने अपने पितरों में शयन किया और दाऊद
के नगर में अपने पितरों के साथ गाड़ा गया और उसकी

माता का नाम नआमा जो अमूनियः थी और उसके बेटे अबीजाम ने उसकी संतो राज्य किया।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब।

अबीजाम का बुरा राज्य १—७ आसा का अच्छा राज्य ८—१५ बआशा बिगाड़ करवा के दो नगर बनाता है १६—२२ यहूशाफात का राज्य २३—२४ नादाब का बुरा राज्य इसराईल पर २५—२६ उसे मारके बआशा राज्य लेता है यूर्बआम के घराने का नाश २७—३२ बआशा का बुरा राज्य ३३—३४।

१ और नबात के बेटे यूर्बआम के राज्य के अठारहवें बरस
२ अबिजाम ने यहूदा पर राज्य किया। उसने यिरोशलीम में तीन बरस राज्य किया और उसकी माता का नाम मआका
३ था जो अबीशालूम की बेटी थी। और जैसा उसके पिता ने उसे पहिले पाप किया वैसे उसने भी किये और उसका मन परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर सिद्ध न था जैसा कि उसके
४ पिता दाऊद का था। तथापि दाऊद के कारण उसके ईश्वर परमेश्वर ने उसे यिरोशलीम में एक दीपक दिया कि उसके बेटे को उसकी सन्ती बैठावे और जिसतें यिरोशलीम को स्थिर
५ करे। इस कारण कि दाऊद ने वही कार्य किया जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक था अपने जीवन भर केवल ओरिया हत्ती के
६ विषय को और किसी आज्ञा से न मुड़ा। और रहबुआम और
७ यूर्बआम के मध्य में जीवन भर युद्ध रहा। अब अबीजाम की रही ऊई क्रिया और सब जो उसने किया था सो क्या यहूदा के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा
८ है?। और अबीजाम और यूर्बआम में लड़ाई थी तब अबीजाम ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे

दाऊद के नगर में गाड़ा और उसका बेटा आसा उसकी
९ सन्ती राज्य पर बैठा ।   और इसराईल के राजा यूर्बआम
के राज्य के बीसवें बरस आसा यहूदा पर राज्य करने लगा ।
१० उसने यिरोशलीम में एकतालीश बरस राज्य किया और
११ उसकी माता का नाम मआका अबीशालूम की बेटी थी । और
आसा ने अपने पिता दाऊद की नाईं परमेश्वर की दृष्टि में
१२ ठीक किया । और उसने सदूमियों को देश से दूर किया और
उन मूर्त्तिन को, जिन्हें उसके पितरों ने बनाया था, निकाल फेंका ।
१३ और उसने अपनी माता मआका को भी रानी होने के पद से
अलग किया क्योंकि उसने कुंज में एक मूर्त्ति बनाई थी और
आसा ने उसकी मूर्त्ति को ढा दिया और क़दरून के नाले के तीर
१४ जला दिया । परन्तु ऊंचे स्थान अलग न किये गये तथापि
१५ उसका मन जीवन भर परमेश्वर के आगे सिद्ध था । और जो
जो बस्तु उसके पिता ने समर्प्पण किई थी और जो जो बस्तु
उसने आप समर्पण किई थी अर्थात् रुपा और सोना और
१६ पात्र उसने उन्हें परमेश्वर के मन्दिर में पहुंचाया ।   और
आसा में और इसराईल के राजा बआशा में उनके जीवन भर
१७ युद्ध रहा । और इसराईल का राजा बआशा यहूदा के बिरोध
में चढ़गया और रामा को बनाया जिसतें यहूदा के राजा
१८ आसा पास किसी को जाने न देवे । तब आसा ने परमेश्वर के
मन्दिर के भंडार का बचा हुआ रुपा और सोना और राजा के
घर का धन लेके अपने सेवकों के हाथ में सौंपा और आसा
राजा ने उन्हें सुरिया हज़ियून के बेटे तब्रिमून के बेटे बिनहदाद
१९ पास, जो दमिश्क में रहता था, यह कहिके भेजा । कि मेरे और
आप के मध्य में और मेरे बाप के और आप के बाप के बीच मेल
है देख मैं ने आप के लिये रुपा और सोना भेंट भेजी सो आइये
और इसराईल के राजा बआशा से मेल तोड़िये जिसतें वुह
२० मेरी और से चढ़ जाय । तब बिनहदाद ने आसा राजा की

बात मानके अपने सेना पतिन को इसराईल के नगरों के बिरोध में भेजा और अजून और दान को और हाबिल बैतमआका को
२१ और समस्त कनीरुस को नफताली के समस्त देश सहित मारा। और ऐसा ऊआ कि जब बआशा ने सुना तब रामा का
२२ बनाना छोड़के तरजा में जा रहा। तब आसा राजा ने सारे यहूदा में प्रचारा और कोई न रहा सो वे रामा के पत्थरों को और उसके लट्ठों को, जिन्हें बआशा ने बनाया था, उठा ले गये और आसा राजा ने बनियामीन के गबा को, और
२३ मसफा को उनसे बनाया। और आसा की समस्त उबरीऊई क्रिया और उसके समस्त पराक्रम और सब जो उसने किया था और उसने जो जो नगर बनाये सो क्या यहूदा के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है? तथापि
२४ उसकी बुढ़ापे में उसके पांव में रोग था। तब आसा ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पितरों में दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उसका बेटा यहूशाफात उसकी सन्ती
२५ राजा ऊआ। और यहूदा के राजा आसा के राज्य के दूसरे बरस यूर्बआम का बेटा नादाब इसराईल के सन्तान का राजा ऊआ और उसने इसराईल पर दो बरस
२६ राज्य किया। और उसने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और अपने पिता के मार्ग में, और उसके पाप में, जिस्से उसने
२७ इसराईल से पाप करवाया, चला। तब यसाखार के घराने में से अहीजा के बेटे बआशा ने उसके बिरोध में गुष्ठ बान्धी और फलस्तानियों के गब्बिथून में उसे घात किया (क्योंकि नादाब
२८ और सारे इसराईल ने गब्बिथून को घेरा था)। अर्थात् यहूदा के राजा आसा के तीसरे बरस बआशा ने उसे घात करके
२९ उसकी सन्ती राज्य किया। और ऐसा ऊआ कि उसने राज्य पर स्थिर होके यूर्बआम के सारे घराने को नाश किया उसने यूर्बआम के लिये एक श्वासधारी को न छोड़ा जब लों उसे

न डाला जैसा कि परमेश्वर ने अपने सेवक अहीजा शैलूनी के
३० द्वारा से कहा था। यूर्बआम के पाप के कारण जो उसने
किया था जिस्से उसने इसराईल से पाप करवाया था और
अपने खिजाव से जिस्से उसने परमेश्वर इसराईल के ईश्वर को
३१ रिसिया के खिजाया था। और नादाब की रही हुई क्रिया
और सब जो उसने किया था सो इसराईल के राजाओं
३२ के समय के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है? । और
आसा और इसराईल के राजा बआशा में उनके जीवन भर
३३ लड़ाई रही। और यहूदा के राजा आसा के राज्य
के तीसरे बरस अहीजा का बेटा बआशा तरसा में समस्त
इसराईल पर राज्य करने लगा उसने चौबीस बरस राज्य
३४ किया। उसने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और यूर्बआम
के मार्ग में और उसके पाप में जिस्से उसने इसराईल से पाप
करवाया चलता था।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

भविष्यद्वक्ता याहू बआशा राजा के मरने का
आगम कहता है और उसकी मृत्यु १—७ ज़मरी,
ईला को बधन करके राज्य पर बैठता है और
आगम का बचन पूरा करता है ८—१४ उमरी
राज्य लेके स्थिर होता है १५—२२ उमरी का
बुरा राज्य और मृत्यु और अहाब राज्य पर बैठता
है २३—२८ अहाब और यज़ाबील की दुष्टता
और देव पूजा २९—३४ ।

१ तब बआशा के विरोध में हनानी के बेटे याहू पर परमेश्वर का
२ बचन उतरा। जैसा कि मैं ने तुझे धूल में से उठाया और
अपने लोग इसराईलियों पर अध्यक्ष किया परन्तु तू
यूर्बआम के पथ पर चला और तू ने मेरे इसराईली लोगों से

३ पाप करवाया। देख मैं बआशा के वंश को और उसके घराने के वंश को दूर करोंगा और मैं तेरे घराने को निबात के बेटे
४ यूर्बआम के घराने के समान करोंगा। बआशा का जो नगर में मरेगा उसे कुत्ते खायेंगे और उसका जो चैागान में मर
५ जायगा उसे आकाश के पंछी खायेंगे। अब बआशा की रही ऊई क्रिया और जो कुछ उसने किया और उसकी सामर्थ्य इसराईल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में
६ लिखा नहीं?। सो बआशा अपने पितरों में सोगया और तरसा में गाड़ा गया और उसके बेटे ईला ने उसकी सन्ती
७ राज्य किया। और हनानी के बेटे यह्न भविष्यद्वक्ता के द्वारा से परमेश्वर का बचन बआशा के बिरोध में और उसके घराने के बिरोध में आया अर्थात् समस्त बुराइयों के कारण जो उसने परमेश्वर की दृष्टि में कर के अपने हाथ के कार्यों से, जो यूर्बआम के घराने की नाईं था और इस कारण कि उसे मार डाला था
८ उसे रिस दिलाया। और यहूदा के राजा आसा के राज्य के छब्बीसवें बरस बआशा के बेटे ईला ने तरसा में
९ इसराईल पर दो बरस राज्य किया। और जब वुह तरसा में अपने घर के प्रधान अरज़ा के घर में पीके मतवाला रहा था तब उसके आधे रथों के प्रधान उसके सेवक ज़मरी ने उसके
१० बिरोध में गुष्ठ किई। ज़मरी ने भीतर पैठके उसे मारा और यहूदा के राजा आसा के सताईसवें बरस उसे मारडाला
११ और उसकी सन्ती राज्य किया। और यों ऊआ कि जब वुह राज्य करने लगा और सिंहासन पर बैठतेही उसने बआशा के सारे घराने को घात किया उसने उसके लिये न तो एक
१२ पुरुष को न उसके कुटुम्ब को न मित्र को छोड़ा। यों ज़मरी ने परमेश्वर की बाचा के समान, जो उसने बआशा के विषय में याह्न भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा, बआशा के समस्त घराने
१३ को नष्ट किया। बआशा के सारे पापों के कारण और उसके

बेटे ईला के पापों के कारण जो उन्हों ने किये और जिनसे उन्हों ने इसराईल से पाप करवाये यों अपनी मूढ़ता से परमेश्वर
१४ इसराईल के ईश्वर को रिस दिलाया। अब ईला की रही ऊई क्रिया और सब कुछ जो उसने किया था सो इसराईल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा? ।
१५ और यहूदा के राजा आसा के सत्ताईसवें बरस ज़मरी ने तरसा में सात दिन राज्य किया और लोगों ने फलस्तानियों
१६ के गब्बियून के बिरोध में छावनी किई। और जब छावनी के लोगों ने सुना कि ज़मरी ने गुष्ट करके राजा को भी बधन किया है इस लिये समस्त इसराईल ने सेना पति उमरी को छावनी
१७ में उसी दिन इसराईल पर राजा किया। और उमरी ने सारे
१८ इसराईल समेत गब्बियून से चढ़के तरसा को घेरा। और यों ऊआ कि जब ज़मरी ने देखा कि नगर लिया गया तो वुह राजा के भवन में गया और अपने ऊपर राजा के भवन में
१९ आग लगा के जल मरा। उसके पापों के कारण जो उसने यूर्बआम के मार्ग पर चलने में और अपने पाप में जो उसने
२० इसराईल से पाप करवाके किया था बुराई किई। और ज़मरी की रही ऊई क्रिया और उसका छल जो उसने किया इसराईल के राजाओं के समय के समाचार की पुस्तक में
२१ नहीं लिखा? । उसके पीछे इसराईल लोग दो भाग ऊए आधे लोग जनास के बेटे तबनी को राजा करने के उसकी
२२ ओर और आधे लोग उमरी के पीछे ऊए। परन्तु जो लोग उमरी के पीछे ऊए थे उन लोगों ने जनास के बेटे तबनी की ओर के लोगों को जीता और तबनी मारा गया और उमरी
२३ ने राज्य किया। और यहूदा के राजा आसा के राज्य के एकतीसवें बरस उमरी इसराईल पर राज्य करने लगा उसने बारह बरस राज्य किया तरसा में छः बरस
२४ राज्य किया। फेर उसने दो तोड़ा चान्दी पर सामरः का

पहाड़ शमर से मोल लेके उस पहाड़ पर एक नगर बसाया
और उस नगर का नाम, जो उसने बनाया था, सामरः रक्खा
२५ जो शामर के पहाड़ का स्वामी था। परन्तु उमरी ने परमेश्वर
की दृष्टि में बुराई किई और उन सब से जो उसे आगे थे
२६ अधिक बुराई किई। क्योंकि वुह नवात के बेटे यूर्बआम के
सारे मार्ग में और उसके पाप में चलता था जिसे उसने
इसराईल से पाप करवा के परमेश्वर इसराईल के ईश्वर को
२७ अपनी मूढ़ता से रिस दिलाया। अब उमरी की रही ऊई
क्रिया और उसका पराक्रम जो उसने दिखाया सो इसराईल
के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा?।
२८ उसके पीछे उमरी अपने पितरों में सोगया और सामरः में
गाड़ा गया और उसके बेटे अहाब ने उसकी सन्ती राज्य किया।
२९ और यहूदा के राजा आसा के राज्य के अठतीसवें बरस
उमरी का बेटा अहाब इसराईल पर राज्य करने लगा और
उमरी के बेटे अहाब ने बाईस बरस सामरः में इसराईल पर
३० राज्य किया। और उमरी के बेटे अहाब ने उन सब से जो
३१ उसे आगे थे परमेश्वर की दृष्टि में अधिक बुराई किई। और
यों ऊआ जैसा कि कुछ हलुक बात थी कि वुह नवात के बेटे
यूर्बआम के पापों पर चले वुह सैदानियों के राजा असबआल
की बेटी यज़ाबील को ब्याह लाया और जाके बआल की सेवा किई
३२ और उसके आगे दंडवत किई। और बआल के मन्दिर में, जो
उसने सामरः में बनाया था, बआल के लिये एक बेदी बनाई।
३३ और अहाब ने कुंज बनाया और परमेश्वर इसराईल के ईश्वर
का, उन सब इसराईली राजाओं से जो उसे आगे थे, अधिक
३४ रिस उभाड़ा। उसके दिनों में हईल बैतईली ने अरीहा को
बनाया उसने उसकी नेंउ अपने पहिलौंठे अबीराम में डाली
और उसके फाटक अपने लऊरे सजूब पर खड़े किये जैसा कि
परमेश्वर ने नून के बेटे यशूअ के द्वारा से बचन दिया था।

१७ सत्तरहवां पर्ब्ब।

काल का आगम वचन कहिके इलियास कौव्वों से पाला जाता है १—७ वुह एक बिधवा से पाला जाता है और आश्चर्य दिखाता है ८—१६ वुह उसके मृतक बालक को जिलाता है १७—२४।

१ तब गिलियाद के बासियों में से इलियास ने अहाब से कहा कि परमेश्वर इसराईल के ईश्वर के जीवन सों जिसके आगे मैं खड़ा हों कई एक बरस लों न ओस पड़ेगी न मेंह बरसेगा परन्तु २ केवल मेरे बचन के समान। और यह कहते हुए परमेश्वर ३ का बचन उस पर उतरा। कि यहां से चलके पूर्ब की ओर जा और करीथ की नाली के पास जो अर्दन के आगे है आप को ४ छिपा। और ऐसा होगा कि तू उस नाली से पीजियो और मैं ने जंगली कौव्वों को आज्ञा किई है कि वे तुझे वहां खिलावें। ५ सो उसने जाके परमेश्वर के बचन के समान किया क्योंकि अर्दन ६ के आगे करीथ नाली के पास जारहा। और सांझ बिहान जंगली कौव्वे उस पास रोटी और मांस लाया करते थे और ७ वुह उस नाली से पीता था। और कुछ दिन के पीछे ऐसा हुआ कि देश में मेंह नबरसने के कारण से नाली का जल सूख ८ गया। तब परमेश्वर का बचन यह कहिके उस पर ९ उतरा। कि उठ के सैदानियों के सरीफाथ को चला जा और वहां रह देख मैं ने तेरे प्रतिपाल के लिये एक रांड़ को आज्ञा १० किई है। सो वुह उठ के सरीफाथ को गया और जब वुह नगर के फाटक पर पहुंचा तो क्या देखता है कि वुह बिधवा वहां लकड़ियां बटोर रही थी और उसने उसे पुकार के कहा कि कृपा करके मुझे एक घोंट पानी किसी पात्र में लाईयो कि पीओं ११ और जब वुह लाने चली तो इतने में वुह उसे पुकार के बोला कि मैं बिनती करता हों कि अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी

१२ मेरे लिये लेते आइयो। उसने उसे कहा कि परमेश्वर आप के ईश्वर के जीवन सों मेरे पास एक फुलका नहीं परन्तु केवल मुट्ठी भर पिसान एक मटके में है और एक पात्र में थोड़ा तेल और देखिये कि मैं दो लकड़ियां बटोर रही हों जिसतें घर जाके अपने और अपने बेटे के लिये पोओं और सिद्ध करों कि हम खायं
१३ और मरजायं। तब इलियास ने उसे कहा कि मत डर जा और अपने कहने के समान कर परन्तु पहिले मेरे लिये उस्से एक लिट्टी बना और मुझ पास ला और पीछे अपने और अपने
१४ बेटे के लिये। क्योंकि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि परमेश्वर पृथिवी पर जबलों मेंह न बरसावे मटके में
१५ का पिसान न घटेगा और पात्र में का तेल न चुकेगा। और उसने जाके इलियास के कहने के समान किया और आप और
१६ वुह और उसका घराना बक्तत दिन लों खाते रहे। और परमेश्वर के बचन के समान, जो उसने इलियास के द्वारा से कहा था, मटके का पिसान और पात्र का तेल न घटा।

१७ और इसके पीछे ऐसा ऊआ कि घर की स्वामिनी का बेटा रोगी ऊआ और उसका रोग ऐसा बढ़ा कि उस में प्राण न
१८ रहा। तब उस स्त्री ने इलियास से कहा कि हे ईश्वर के जन आपको मुझे क्या? आप मेरे पाप स्मरण कराने को और मेरे बेटे
१९ को नाश करने को आये हैं?। उसने उस्से कहा कि अपना बेटा मुझे दे और वुह उसकी गोद से लेके उसे कोठे पर, जहां वुह रहता था, चढ़ा लेगया और उसे अपने बिछौने पर
२० लेटाया। और उसने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा, कि हे मेरे ईश्वर परमेश्वर क्या तू ने इस रांड़ पर भी बिपत्ति भेजी जिसके यहां मैं उतरा हों कि उसके बेटे को नाश करे?।
२१ तब उसने आप को तीन बार उस बालक पर फैलाया और परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा कि हे मेरे ईश्वर परमेश्वर मैं बिनती करता हों कि इस बालक का प्राण इस में फिर आवे।

२२ तब परमेश्वर ने इलियास की प्रार्थना सुनी और बालक का
२३ प्राण उस में फिर आया और वुह जीउठा। तब इलियास
उस बालक को उठा के कोठरी में से घर के भीतर लेगया और
उसे उसकी माता को सौंप दिया और इलियास ने कहा कि
२४ देख तेरा बेटा जीता है। तब उस स्त्री ने इलियास से कहा कि
अब इस्से मैं जानती हों कि आप ईश्वर के जन हैं और आप के
मुंह से परमेश्वर का वचन सत्य है।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

इलियास आहाब राजा पास भेजा जाता है और
ओबदिया से भेंट होती है १—१६ इलियास के
कहनेपर अहाब इसराईलियों को और बआलके
भविष्यद्वक्तों को एकट्ठे करता है १७—२० बिचार
में परमेश्वर सच्चा ठहरता है और देवगण झूठे
इस कारण उनके पुजेरी मारेजाते हैं २१—४०
इलियास मेंह का सन्देश देता है और प्रार्थना
करता है ४१—८६

१ और बहुत दिन के पीछे ऐसा हुआ कि तीसरे बरस परमेश्वर का
वचन इलियास पर उतरा कि आप को अहाब पर प्रगट कर
२ और मैं देश में मेंह बरसाओंगा। और जब इलियास अपनी तईं
अहाब को दिखाने गया तब सामरः में बड़ा अकाल था।
३ तब अहाब ने अपने घरके अध्यक्ष ओबदिया को बुलाया अब
४ ओबदिया ईश्वर से बहुत डरता था। क्योंकि यों हुआ कि जब
यज़ाबील ने ईश्वर के भविष्यद्वक्तों को मारडाला तो ओबदिया ने
सौ भविष्यद्वक्तों को लेके पचास पचास करके एक खोह में
५ छिपाया और उन्हें अन्न जल से पाला। और अहाब ने
ओबदिया से कहा कि देश में फिर और समस्त जलके सोताओं
और नालों में जा क्या जाने कि घोड़े और खच्चर के जिलाने के

६ लिये घास मिल जाये नहो कि पशु हम्में से नष्ट होवे। सो उन्हों ने आपुस में देश का विभाग किया कि आरंपार जायें और अहाब आप एक ओर गया और ओबदिया आप दूसरी
७ ओर। और ज्यों ओबदिया मार्ग में था इलियास उसे मिला और उसने उसे पहिचाना और औंधा गिरा और बोला
८ कि आप मेरे प्रभु इलियास हैं?। उसने उसे उत्तर दिया कि
९ मैंहीं हों जा अपने प्रभु से कह कि इलियास है। वुह बोला कि मैं ने क्या अपराध किया है जो आप मुझे बध करने के लिये
१० अपने दास को अहाब के हाथ सौंपा चाहते हैं?। परमेश्वर आप के ईश्वर के जीवन सों कोई जाति अथवा राज्य नहीं है जहां प्रभु ने आप की खोज के लिये न भेजा हो और जब उन्हों ने कहा कि वुह नहीं है तब उसने जाति को और राज्य को
११ किरिया लिई कि हमने उसे नहीं पाया। और अब आप कहते हैं कि जाके अपने प्रभु से कह कि देख इलियास है।
१२ और जब मैं आप के पास से चला जाओंगा तब ऐसा होगा कि परमेश्वर का आत्मा आप को क्या जाने कहां लेजायेगा और जब मैं जाके अहाब से कहोंगा और वुह आप को न पासके तब मुझे बधन करे परन्तु मैं आप का सेवक लड़काई से परमेश्वर
१३ से डरता हों। मेरे प्रभु से नहीं कहा गया कि जब यज़ाबील ने परमेश्वर के भविष्यद्वक्तों को मारडाला तब मैं ने क्या किया कि परमेश्वर के सौ भविष्यद्वक्तों को लेके पचास पचास करके
१४ एक खोह में छिपाया और उन्हें अन्न जल से पाला?। और अब आप कहते हैं कि जाके अपने प्रभु को जनाव कि देख इलियास है
१५ और वुह मुझे बधन करेगा। तब इलियास ने कहा कि सेनाओं के परमेश्वर के जीवन सों जिसके आगे मैं खड़ा रहता हों मैं
१६ अवश्य आज उस पर आप को दिखाओंगा। सो ओबदिया अहाब से भेंट करने को गया और उसे कहा और अहाब इलियास को
१७ भेंट को गया। और ऐसा हुआ कि जब अहाब ने

इलियास को देखा तो उसे कहा कि क्या तू वही जो
१८ इसराईलियों को सताता है?। उसने उत्तर दिया कि मैं ने
नहीं, परन्तु तू ने और तेरे पिता के घराने ने इस बात में
इसराईलियों को सताया है कि तुम ने परमेश्वर की आज्ञाओं
१९ को छोड़ के बआलिम का पीछा किया है। इसलिये अब भेज
और सारे इसराईल को करमिल पहाड़ पर मेरे लिये
एकट्ठा कर और बआल के साढ़े चार सौ भविष्यद्वक्तों को
और कुंजों के चार सौ भविष्यद्वक्तों को जो यज़ाबील के मंच पर
२० भोजन करते हैं। सो अहाब ने इसराईल के समस्त सन्तान
के पास भेजा और भविष्यद्वक्तों को करमिल पहाड़ पर एकट्ठा
२१ किया। तब इलियास ने सारे लोगों के पास जाके
कहा कि कबलों अधर में पड़े रहोगे? यदि परमेश्वर
ईश्वर है तो उसे गहो परन्तु यदि बआल तो उसे गहो
२२ पर लोगों ने उसे तनिक उत्तर न दिया। तब इलियास
ने लोगों से कहा कि परमेश्वर के भविष्यद्वक्तों में से मैं ही अकेला
२३ बचा हों परन्तु बआल के भविष्यद्वक्ता साढ़े चार सौ जन। सो
वे अब हमें दो बैल देवें और अपने लिये एक बैल चुनें
और उसे टुकड़ा टुकड़ा करें और लकड़ी पर धरें परन्तु आग
न लगावें और दूसरा बैल मैं सिद्ध करोंगा और उसे लकड़ी
२४ पर धरोंगा परन्तु आग न लगाओंगा। और तुम अपने
देवों के नाम से प्रार्थना करो और मैं परमेश्वर के नाम से
प्रार्थना करोंगा जो ईश्वर आग के द्वारा से उत्तर देगा वही ईश्वर
२५ होवे तब सब लोगों ने उत्तर देके कहा कि यह अच्छी बात। और
इलियास ने बआल के भविष्यद्वक्तों से कहा कि तुम अपने लिये
एक बैल चुनके पहिले उसे सिद्ध करो क्योंकि तुम बहुत हो
और अपने देवों के नाम से प्रार्थना करो परन्तु उस में आग
२६ मत लगाओ। तब उन्हों ने एक बैल को, जो उन्हें दियागया,
लिया और उसे सिद्ध किया और बिहान से दोपहर लों

यह कहिके बआल के नाम से प्रार्थना किई कि हे बआल उत्तर दे परन्तु न कुछ शब्द ज़ुआ न किसी ने सुना और वे उस
२७ बनाई ज़ुई बेदी पर कूद पड़े। और ऐसा ज़ुआ कि दोपहर को इलियास ने उन्हें चिड़ा के कहा और बोला कि चिल्ला के पुकारो क्योंकि वुह देव है वुह किसी से बातें कर रहा है अथवा किसी को खेदता है अथवा किसी यात्रा में है और क्या जाने वुह सोता है और उसे जगाना अवश्य है।
२८ तब वे बड़े शब्द से चिल्लाये और अपने व्यवहार के समान आप को छूरियों और गोदनियों से यहां लों गोदा कि उनपर
२९ लोहू बहने लगा। और ऐसा ज़ुआ कि दोपहर ढल गया और बलिदान चढ़ाने के समय लों भविष्य कहते रहे परन्तु
३० न कुछ शब्द ज़ुआ न कोई उत्तर देवैया न बुझवैया। तब इलियास ने सारे लोगों से कहा कि मेरे पास आओ और सारे लोग उसके पास गये तब उसने परमेश्वर की ढाई ज़ुई बेदी को
३१ सुधारा। और याक़ूब के सन्तान की गोष्ठियों के समान जिन के पास यह कहिके परमेश्वर का बचन आया था कि तेरा नाम
३२ इसराईल होगा इलियास ने बारह पत्थर लिये। और उन पत्थरों से उसने परमेश्वर के नाम के लिये एक बेदी बनाई और बेदी के आस पास उसने ऐसी बड़ी खांई खोदी जिसमें दो नपुए बीज
३३ समावें। और लकड़ियों को चुना और बैल को काट के टुकड़ा टुकड़ा किया और लकड़ियों पर धरा और कहा कि चार पीपा पानी से भर देओ और उस होम के बलिदान पर और
३४ लकड़ियों पर उंडेलो। उसने कहा कि दूसरी बार उंडेलो उन्हों ने दूसरी बार उंडेला फिर उसने कहा कि तीसरी बार
३५ उंडेलो और उन्हों ने तीसरी बार उंडेला। और पानी बेदी
३६ की चारों ओर बहा और खांई भी पानी से भर दिया। और बलिदान के चढ़ाने के समय में ऐसा ज़ुआ कि इलियास भविष्यद्वक्ता ने पास आके कहा कि हे परमेश्वर इबराहीम और

इसहाक़ और इसराईल के ईश्वर आज जाना जाय कि इसराईल में तू ईश्वर है और कि मैं तेरा सेवक हों और मैं
३७ ने तेरे बचन से यह सब किया। हे परमेश्वर मेरी सुन मेरी सुन जिसतें ये लोग जानें कि तूही परमेश्वर ईश्वर है और
३८ उनके अंतःकरण को फेर दिया है। तब परमेश्वर की आग उतरी और होम के बलिदान को और लकड़ी को और पत्थरों को और धूल को भस्म किया और खांई के जल को चाट लिया।
३९ और जब सारे लोग ने यह देखा तब वे औंधे मुंह गिरे और
४० बोले कि परमेश्वर वही ईश्वर परमेश्वर वही ईश्वर। तब इलियास ने उन्हें कहा कि बआल के भविष्यद्वक्तों को पकड़ो उनमें से एक भी न बचे सो उन्हों ने उन्हें पकड़ा और इलियास उन्हें कैशून की नाली पर उतार लाया और वहां उन्हें बध
४१ किया। फिर इलियास ने अहाब को कहा कि
४२ चढ़ जा खा और पी क्योंकि मेंह का बड़ा शब्द है। सो अहाब खाने पीने को उठ गया और इलियास करमिल की चोटी पर चढ़ गया और आप को भूमि पर झुकाया और अपना मुंह
४३ दोनों घुठनों के बीच में किया। और उस ने अपने सेवक को कहा कि अब चढ़ जा और समुद्र की ओर देख और उस ने जाके देखा और कहा कि कुछ नहीं उस ने कहा कि फेर सात
४४ बार जा। और सातवें बार ऐसा हुआ कि वुह बोला कि देख मनुष्य के हाथ की नाईं मेघ का एक छोटा सा टुकड़ा समुद्र में से उठता है तब उस ने कहा कि चढ़ जा और अहाब को कह
४५ कि सिद्ध हो और उतर जा नहीं कि मेंह तुझे रोके। और इतने में ऐसा हुआ कि आकाश मेघों से और पवन से अंधियारा हो गया और अति वृष्टि होने लगी और अहाब
४६ चढ़के यज़रईल को गया। और परमेश्वर का हाथ इलियास पर था और वुह अपनी कटि कसके अहाब के आगे आगे यज़रईल लों दौड़ गया।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब।

यज़ाबील के डर के मारे इलियास बन को भाग के होरेब पहाड़ को जाता है १—८ परमेश्वर उसपर प्रगट होता है और उसे आज्ञा करता है ९—१७ इलियास को सन्देश पहुंचता है कि इसराईल में सात सहस्र जनोंने देवपूजा नहीं किई अलीशा इलियास के पीछे होलेता है १८—२१।

१ तब जो कुछ कि इलियास ने किया था अहाब ने यज़ाबील से कहा और कि किस रीति से उस ने समस्त भविष्यदक्तों को तलवार से २ वध किया था। तब यज़ाबील ने दूत की ओर से इलियास को कहला भेजा कि यदि मैं तेरे प्राण को उनमें से एक की नाई कल इस जून लों न करों तो देवगण मुझे वैसा ही और ३ उसे अधिक भी करें। और जब उस ने देखा तो वुह उठा और अपने प्राण के लिये गया और यहूदा के बीरशबा में ४ आया और वहां अपने सेवक को छोड़ा। परन्तु आप दिन भर के मार्ग बन में पैठ गया और एक रतम वृक्ष तले बैठा और अपने प्राण के लिये मृत्यु मांगी और कहा अब हे परमेश्वर हो चुका है अब मेरा प्राण उठा ले क्योंकि मैं अपने ५ पितरों से भला नहीं। और ज्यों वुह रतम वृक्ष के तले लेटा और सो गया तो देखो कि एक दूत ने आके उसे छूआ और कहा कि ६ उठ खा। उसने दृष्टि किई तो देखो कि उसके सिरहाने एक फुलका कोइलों पर का पका हुआ है और एक पात्र जल धरा ७ है तब वुह खा पीके फेर लेट गया। फेर परमेश्वर का दूत दोहरा के आया और उसे छूके कहा कि उठ खा क्योंकि तेरी ८ यात्रा तेरे बल से अति है। सो उस ने उठ के खाया और पीया और उसी भोजन के बल से चालीस दिन रात चल के ईश्वर के ९ पहाड़ होरेब को गया। और वहां एक खोह में टिका और देखो कि परमेश्वर का वचन उस पास आया और उस ने

१० उसे कहा कि हे इलियास तू यहां क्या करता है?। वुह बोला कि मैं सेनाओं के ईश्वर परमेश्वर के लिये अति ज्वलित हुआ हों क्योंकि इसराईल के सन्तानों ने तेरी बाचा को त्यागा और तेरी बेदियों को ढा के तेरे भविष्यद्वक्तों को तलवार से घात किया है और मैंही केवल मैंही बचा और वे मेरे प्राण के गांहक हैं।
११ उस ने कहा कि बाहर निकल और पहाड़ पर परमेश्वर के आगे खड़ा हो और देख वहां परमेश्वर जा निकलता है और परमेश्वर के आगे एक बड़ा और प्रचंड पवन पर्वतों को तड़काता है और चटानों को टुकड़ा टुकड़ा करता है परन्तु परमेश्वर पवन में नहीं और पवन के पीछे भुइंडोल आया और परमेश्वर
१२ भुइंडोल में नहीं। और भुइंडोल के पीछे एक आग परन्तु परमेश्वर आग में नहीं और आग के पीछे एक किंचित शब्द।
१३ और ऐसा हुआ कि इलियास ने सुना तो उस ने अपना मुंह अपने ओढ़ने से ढांप लिया और बाहर निकल के कन्दला की पैठ पर खड़ा हुआ और देखो कि यह कहिके उस पास एक
१४ शब्द आया कि इलियास तू यहां क्या करता है?। वुह बोला कि मुझे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर के लिये बड़ा ज्वलन हुआ है इस कारण कि इसराईल के सन्तानों ने तेरी बाचा को त्यागा और तेरी बेदियां ढाईं और तेरे भविष्यद्वक्तों को तलवार से घात किया और एक मैंहीं अकेला जीता बचा सो वे मेरे भी प्राण के
१५ गांहक हैं। परमेश्वर ने उसे कहा कि दमिश्क के अरण्य की ओर फिर जा और पहुंच तेही सुरिया पर हज़ाईल को राज्याभिषेक
१६ कर। और नमशी के बेटे याहू को इसराईल पर राज्याभिषेक कर और अबिलमिहूलाई शाफत के बेटे अलीशा को अभिषेक कर
१७ कि तेरी सन्ती भविष्यद्वक्ता होवे। और ऐसा होगा कि जो हज़ाईल की तलवार से बच निकलेगा उसे याहू मारडालेगा और जो याहू की तलवार से बच रहेगा उसे अलीशा घात
१८ करेगा। तथापि इसराईल में मेरे सात सहस्र जन बचरहे

हैं जिन के घुठने बअाल के आगे नहीं झुके और हर एक मुंह
१९ जिसने उसे नहीं चूमा। सो उस ने वहां से चल के
शाफात के बेटे अलीशा को पाया जो अपने आगे बारह हल से
जोत्ता था और बारहवें के संग आप था और इलियास ने
उस के पास से जाते जाते अपना ओढ़ना उस पर डाल दिया।
२० तब उस ने बैलों को छोड़ के इलियास के पीछे दौड़ के कहा कि
मैं आप की बिनती करता हों मुझे छुट्टी दीजिये कि अपनी
माता पिता को चूमों और आप के पीछे होलेउंगा उस ने कहा
२१ कि फिर जा क्योंकि मैं ने तुझे क्या किया है?। तब वुह उस
पास से फिर गया और उस ने एक जोडे बैल लेके उन्हें बधन
किया और हल की लकड़ियों से उन के मांस को उसिना और
लोगों को दिया और उन्हों ने खाया तब वुह उठा और
इलियास के पीछे हो लिया और उसकी सेवा किई।

२० बीसवां पर्व्व।

बिनहदाद अहाब से लड़ता है १—१२ भविष्यद्वक्ता
के बताने से अहाब उन्हें जीत्ता है १३—२१
सुरियानी फेर संग्राम के लिये आते हैं २२—२७
वे परमेश्वर की ओर से मारेजाते हैं २८—३०
अहाब उसे मिलजाता है और ईश्वर का स्राप
उसपर पड़ता है ३१—४३।

१ तब सुरिया के राजा बिनहदाद ने अपनी समस्त सेना को
एकट्ठे किया और उसके साथ बत्तीस राजा और घोड़े और
रथ थे और उस ने जा के सामरः को घेर लिया और उसे लड़ाई
२ किई। और उस ने इसराईल के राजा अहाब के पास नगर
३ में दूतों को भेज के कहा कि बिनहदाद यों कहता है। कि तेरा
रूपा और तेरा सोना मेरा, तेरी सुंदर सुंदर पत्नियां और
४ तेरे बालक भी मेरे हैं। तब इसराईल के राजा ने उत्तर देके

कहा कि मेरे प्रभु राजा आप के बचन के समान मैं और मेरा
५ सब कुछ आप का है । और दूतों ने फिर आके कहा कि
बिनहदाद यों कहता है कि यद्यपि मैं ने यह कहिके तेरे पास
भेजा है कि अपना रूपा और सोना और अपनी पत्नियां
६ और बाल बच्चे मुझे सौंपना । तथापि मैं कल इस जून
अपने सेवकों को तुझ पास भेजोंगा और वे तेरे घर और तेरे
सेवकों के घर को खोजेंगे और ऐसा होगा कि जो कुछ तेरी
दृष्टि में मनभावनी होगी वे अपने हाथ में करके ले आवेंगे ।
७ तब इसराईल के राजा ने देश के समस्त प्राचीनों को बुलाके
कहा कि चौन्ह रक्खो और देखो कि वुह कैसा बिरोध ढूंढ़ता
है क्योंकि उस ने मेरी पत्नियों और बालकों के और मेरे रूपा
और सोना के लिये लोगों को भेजा और मैं ने उसे न
८ रोका । तब सारे प्राचीन और सारे लोगों ने उसे कहा कि
९ मत सुनियो और मत मानियो । इसलिये उस ने बिनहदाद
के दूतों से कहा कि मेरे प्रभु राजा से कहो कि जो आप ने अपने
सेवक को कहिला भेजा सो सब मैं करोंगा परन्तु यह कार्य्य मैं
१० न करसकोंगा तब दूतों ने जाके सन्देश दिया । तब बिनहदाद
ने यह कहिके उस पास फेजा कि देवगण मुझसे ऐसाही करें
और उस्से अधिक यदि सामरः की धूल सारे लोगों के लिये जो
११ मेरे चरण पर हैं मुट्ठी भर भर होवे । फिर इसराईल के
राजा ने उत्तर देके कहा कि तुम कहो कि जो जन कटि कसता
१२ है सो उसके समान जो कटि खोलता है गर्व न करे । और यों
हुआ कि जब वुह राजाओं के साथ तंबूओं में पी रहा था उस ने
यह बचन सुना तो अपने सेवकों को कहा कि नगर के बिरुद्ध
लैस होरहो और वे नगर के बिरुद्ध लैस होरहे ।
१३ और देखो कि इसराईल के राजा अहाब पास एक भविष्यद्वक्ता ने
आके कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या तू ने इस बड़ी
मंडली को देखा है? सो देख मैं आज सभों को तेरे हाथ में

१४ सैांपोंगा और तू जानेगा कि मैं हीं परमेश्वर हों। तब अहाब ने पूछा कि किनके द्वारा से? वुह बाेला कि परमेश्वर यों कहता है कि देश देश के अध्यक्षों के द्वारा से फिर उस ने पूछा कि संग्राम
१५ में कैान पांती बांधावे? उस ने उत्तर दिया कि तू। तब उस ने देशों के अध्यक्षों के तरुणों काे गिना और वे दाे सैा बत्तीस जन हुए फिर उस ने इसराईल के समस्त सन्तान काे भी गिना और
१६ वे सहस्र जन हुए। और वे सब दाेपहर काे निकले परन्तु बिनहदाद और बत्तीस राजा जाे उसके सहायक थे तंबूआें
१७ में पी पी के मतवाले हाेते थे। तब देशों के अध्यक्षों के तरुण पहिले निकले और बिनहदाद ने भेजा और वे कहिके उसे
१८ बाेले कि सामरः से लाेग निकल आये हैं। वुह बाेला कि यदि वे मिलाप के लिये निकले हैं ताे उन्हें जीता पकड़ाे अथवा
१९ यदि युद्ध के लिये निकले हैं ताे उन्हें जीता पकड़ाे। तब देशों के अध्यक्षों के तरुण लाेग नगर से निकले और सेना उनके
२० पीछे पीछे। और उनमें से हर एक ने एक एक काे घात किया और सुरियानी भागे और इसराईलियों ने उन्हें देखा और सुरिया का राजा बिनहदाद घाेड़े पर घाेड़चढ़ों के साथ भागके
२१ बचा। और इसराईल के राजा ने निकल के घाेड़ों और रथों काे मार लिया और सुरियानियों काे बड़ी जूझ से जुझाया।
२२ तब उस भविष्यद्वक्ता ने इसराईल के राजा पास आके उसे कहा कि तू फिर जा और आप काे दृढ़ कर और चीन्ह रख जाे किया चाहता है साे देख क्याेंकि सुरिया का राजा पीछे तेरे
२३ बिराेध में चढ़ आवेगा। तब सुरिया के राजा के सेवकों ने उसे कहा कि उनके देव पहाड़ों के देव हैं इसलिये वे हम से बलवान हुए परन्तु आओ हम चैागान में उनसे युद्ध करें ताे
२४ निश्चय हम उनपर प्रबल हाेंगे। और तू एक काम कर कि हरएक राजा काे उस के स्थान से अलग कर और उनकी सन्ती
२५ सेना पतिन काे खड़ा कर। और अपनी जूझी हुई सेना काे

नाईं एक सेना गिनले घोड़े की सन्ती घोड़ा और रथ की सन्ती रथ, और हम चौगान में उनसे संग्राम करेंगे और निश्चय उनपर प्रबल होंगे सो उस ने उनका कहा माना और वैसाही
२६ किया। और ज्योंहीं बरस बीता त्योंहीं बिनहदाद ने सुरियानियों को गिना और इसराईलियों से युद्ध करने को आफेक को
२७ चढ़ा। और इसराईल के सन्तान गिनेहुए और सब एकट्ठे थे सो उनका सामना किया और इसराईल के सन्तान उनके आगे ऐसा डेरा किया जैसा मेम्ना का दो झुंड परन्तु सुरियानियों से देश भर गया।
२८ उस समय ईश्वर का एक जन इसराईल के राजा पास आया और उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि सुरियानियों ने कहा है कि परमेश्वर पहाड़ों का ईश्वर परन्तु तराई का ईश्वर नहीं इसलिये मैं इस बड़ी मंडली को तेरे हाथ
२९ में सोंपोंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हों। सो उन्हों ने एक दूसरे के सन्मुख छावनी किई और सातवें दिन ऐसा हुआ कि संग्राम हुआ और इसराईल के सन्तान ने दिन भर में
३० सुरियानियों के एक लाख पगइत मारे। परन्तु उबरेहुए आफेक के नगर में पैठे और वहां एक भीत सताइस सहस्र बचेहुए पर गिर पड़ी और बिनहदाद भाग के नगर में आया
३१ और भीतर की कोठरी में घुसा। और उस के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये हम ने सुना है कि इसराईल के घरानों के राजा बड़े दयाल राजा हैं सो हमें आज्ञा दीजिये कि अपनी कटि पर टाट लपेटें और अपने सिरों पर रस्सियां धरें और इसराईल के राजा पास जायें कदाचित् वुह आप का प्राण बचावे।
३२ सो उन्हों ने कटि पर टाट और सिर पर रस्सियां बांधीं और इसराईल के राजा पास आके बोले कि आपका सेवक बिनहदाद यों कहता है कि मैं आप की बिनती करता हों कि मुझे जीते छोड़िये वुह बोला कि वुह अबलों जीता है? वुह मेरा भाई है।

३३ और वे चौकसी से सोच रहे थे कि वुह क्या कहता है और झट उसे पकड़ लेते थे तब उन्हों ने कहा कि आप का भाई बिनहदाद तब उस ने कहा कि जाओ उसे ले आओ तब बिनहदाद उस पास निकल आया और उस ने उसे रथ पर
३४ उठा लिया। और उस ने उसे कहा कि जो जो नगर मेरे पिता ने आप के पिता से ले लिया मैं फेर देओंगा और जिस रीति से मेरे पिता ने सामरः में सड़कें बनाईं आप दमिश्क में बनाइये तब अहाब बोला कि मैं तुझे इसी बाचा से बिदा करोंगा
३५ सो उस ने उस्से बाचा बांधी और बिदा किया। उस समय में भविष्यद्वक्तों के सन्तानों में से एक जन ने परमेश्वर के बचन से अपने परोसी को कहा कि मैं तेरी बिनती करता हों कि मुझे मार डाल परन्तु उस जन ने उसे मारने से नाह किया।
३६ तब उस ने उसे कहा इस कारण कि तू ने परमेश्वर की आज्ञा न मानी देख ज्योंहीं तू मुझ पास से बिदा होगा त्योंहीं एक सिंह तुझे मार लेगा और ज्योंहीं वुह उसके पास से बिदा हुआ
३७ त्योंहीं उसे एक सिंह ने पाया और उसे फाड़ डाला। तब उस ने एक दूसरे को बुला के कहा कि मैं तेरी बिनती करता हों मुझे मार डाल उस ने उसे मारा और मारते में घायल किया।
३८ तब वुह भविष्यद्वक्ता चला गया और मार्ग में राजा की बाट जोहने लगा और अपने मुंह पर राख मल के अपना भेष
३९ बदला। और राजा के उधर जाते जाते उसने राजा को पुकारा और कहा कि आप का सेवक संग्राम के मध्य में गया था और देखिये एक जन फिरा और मुझ पास एक जन यह कहिके लाया कि इसकी चौकसी कर यदि किसी रीति से यह पाया न जायगा तो इसके प्राण की सन्ती तेरा प्राण जायगा और नहीं तो तू
४० एक तोड़ा चांदी देगा। और जिस समय आप का सेवक इधर उधर और काम में लिप्त था वुह जाता रहा तब इसराईल के राजा ने उसे कहा कि तेरा यही बिचार है तू ही ने चुकाया है।

४१ फिर उसने फुरती करके अपने मुंह की राख पोंछी तब इसराईल
४२ के राजा ने उसे पहिचाना कि वुह भविष्यद्वक्तों में से है। तब
उस ने कहा कि परमेश्वर यों कहता है इस लिये कि तूने उस
जन को अपने हाथ से जाने दिया जिसे मैं ने सर्बथा नाश के
लिये ठहराया था इस कारण उस के प्राण की सन्ती तेरा प्राण
४३ और उसके लोगों की सन्ती तेरे लोग। तब इसराईल का
राजा उदास और भारी मन होके अपने घर को गया और
सामरःमें आया।

२१ इक्कीसवां पर्ब्ब।

अहाब नाबूस की दाख की बारी का लोभ करता
है और उसे न पाके उदास होता है १—४
यज़ाबील नाबूस को मरवाडाल के अहाब को उसकी
बारी दिलाती है ५—१६ इलियास ईश्वर का कोप
उसके घराने पर प्रगट करता है १७—२४ अहाब
की दुष्टता और ईश्वर के आगे दीन होना २५—२९

१ फेर ऐसा हुआ कि नाबूस यज़रईली की एक दाख की बारी
सामरःके राजा अहाब के भवन से लगी हुई यज़रईल में थी।
२ और अहाब ने नाबूस से कहा कि अपनी दाख की बारी मुझे
दे जिसतें मेरी तरकारी की बारी होवे क्योंकि वुह मेरे भवन
के लग है और मैं उसकी सन्ती तुझे उस्से अच्छी दाख की
बारी देऊंगा यदि तेरी दृष्टि में अच्छा लगे तो मैं तुझे उसका
३ मोल रोकड़ देऊंगा। और नाबूस ने अहाब से कहा कि
परमेश्वर ऐसा न करे कि मैं अपने पितरों का अधिकार आप को
४ देऊं। तब यज़रईली नाबूस की बात से अहाब उदास
और भारी मन होके अपने घर में आया क्योंकि उसने कहा
था कि मैं अपने पितरों का अधिकार आप को न देऊंगा
और उसने आप को बिछौने पर डाल दिया और अपना मुंह

५ फेर लिया और रोटी न खाई। परन्तु उसकी पत्नी यज़ाबील ने उस पास आके कहा कि आप ऐसा उदास क्यों हैं कि रोटी
६ नहीं खाते?। उसने उसे कहा इस कारण कि मैं ने यज़रईली नाबूस से कहा था कि अपनी दाख की बारी मेरे हाथ बेंच और नहीं तो यदि तेरा मन होवे तो मैं तुझे उसकी सन्ती दाख की बारी देओंगा उसने उत्तर दिया कि मैं तुझे अपनी दाख की बारी
७ न देओंगा। तब उसकी पत्नी यज़ाबील ने उसे कहा कि क्या आप इसराईलियों पर राज्य करते हैं? उठिये रोटी खाइये और मन को मगन करिये मैं आप को अजरईली नाबूस की दाख की
८ बारी देओंगी। तब उसने अहाब के नाम से पत्रियां लिखीं और उसके छाप से छाप करके नाबूस के नगर के बासियों के
९ अध्यक्षों और प्राचीनों के पास पत्रियां भेजीं। और उसने पत्रियों में यह कहिके लिखा कि ब्रत को प्रचारो और लोगों पर
१० नाबूस को बैठाओ। और बिलिआल के पुत्रों में से दो जन ठहराओ कि यह कहिके उसपर साक्षी देवें कि तू ने ईश्वर की और राजा की अपनिन्दा किई तब उसे बाहर लेजा के पथरवाह
११ करो कि मर जाय। और उसके नगर के लोगों ने अर्थात् प्राचीन और अध्यक्षों ने, जो नगर के बासी थे, यज़ाबील के कहने के समान, जैसा पत्रियों में, जो उस ने उन पास भेजी थी, लिखा
१२ था किया। उन्हों ने ब्रत को प्रचारा और लोगों पर नाबूस को
१३ बैठाया। तब बिलिआल के पुत्रों में से दो जन भीतर आये और उसके आगे बैठे और बिलिआल के मनुष्यों ने नाबूस के बिरोध में यह कहिके लोगों के सोंहीं साक्षी दिई कि नाबूस ने ईश्वर की और राजा की अपनिन्दा किई है तब वे उसे नगर से बाहर लेगये और उसपर ऐसा पथरवाह किया कि वुह
१४ मरगया। तब उन्हों ने यज़ाबील को कहलाभेजा कि नाबूस
१५ पथरवाह किया गया और मरगया। और ऐसा हुआ कि जब यज़ाबील ने सुना कि नाबूस पथरवाह किया गया और

मरगया तो यज़ाबील ने अहाब को कहा कि उठिये और यज़रईली नाबूस की बारी को बश में करिये जिसे उसने रोकड़ की सन्ती आप को देने को नाह किया क्योंकि नाबूस जीता नहीं है
१६ परन्तु मरगया। और यों ज़ुआ कि जब अहाब ने सुना कि नाबूस मरगया तो अहाब उठा कि यज़रईली नाबूस की दाख की बारी में उतरे जिसतें उसे बश में करे।
१७ तब परमेश्वर का बचन तश्बी इलियास पास यह
१८ कहिके आया। कि उठ और जाके इसराईल के राजा अहाब से जो सामरःमें है भेंट कर देख कि वुह नाबूस की दाख की
१९ बारी में है जिधर वुह उसे बश में करने को उतरा है। और तू उसे यह कहना कि परमेश्वर यों कहता है कि तूने घात किया है और बश में भी किया है? तू उसे कह कि परमेश्वर आज्ञा करता है कि जिस स्थान में कुत्तों ने नाबूस का लोहू
२० चाटा उसी स्थान में तेराही लोहू कुत्ते चाटेंगे। और अहाब ने इलियास को कहा कि हे मेरे बैरी तूने मुझे पाया है? उसने उत्तर दिया कि मैं ने पाया है क्योंकि तूने परमेश्वर की
२१ दृष्टि में बुराई करने के लिये आप को बेंच डाला। अब देख मैं तुझ पर बुराई लाओंगा और तेरे बंश को दूर करोंगा और अहाब में से हर एक पुरुष को और जो जन इसराईल में
२२ से बंधुआ और बचा ज़ुआ है उसे भी मैं मिटा डालोंगा। उस खिजाव के कारण जिस्से तूने मुझे खिजाया है और इसराईल से पाप करवाया है इस कारण कि मैं तेरे घराने को नाबात के बेटे यूर्बआम के घराने की नाईं और अहीजा के बेटे बआशा के घराने
२३ की नाईं करोंगा। और परमेश्वर यज़ाबील के बिषय में भी यह कहिके बोला कि यज़रईल के खाईं के पास यज़ाबील को कुत्ते
२४ खायंगे। अहाब का जो जन नगर में मरेगा उसे कुत्ते खायंगे
२५ और जो चौगान में मरेगा उसे आकाश के पक्षी खायेंगे। परन्तु अहाब के समान कोई न था जिसने परमेश्वर की दृष्टि में दुष्टता

के लिये आप को बेंचा और उसकी पत्नी यज़ाबील ने उसे
२६ उभाड़ा। और उसने अमूरानियों के समान, जिन्हें परमेश्वर ने
इसराईलियों के आगे से दूर किया था, मूर्त्तिन का पीछा कर
२७ कर के अति घिनित किया। और ऐसा ज़आ कि जब अहाब ने ये
बातें सुनीं तो अपने कपड़े फाड़े और अपने शरीर पर टाट
रक्खा और व्रत किया और टाट पहिनेऊए हौले हौले चलने
२८ लगा। तब परमेश्वर का वचन तशबी इलियास पर यह कहिक
२९ उतरा। तू देखता है कि अहाब मेरे आगे आप को कैसा दीन
करता है? इस कारण कि वुह आप को मेरे आगे दीन करता
है मैं यह बुराई उसके दिनों में न लाऊंगा परन्तु उसके बेटों के
समय में उसके घराने पर बुराई लाओंगा।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

अहाब यहूशाफात को युद्ध के लिये लेजाता है १—४
झूठे भविष्यद्वक्ता अहाब का बोध करते हैं ५—७
यहूशाफात के कहने से मीकाया बुलाया जाके सच
सच कहता है ८—२३ उसकी दुर्दशा होती है
और दोनों राजा युद्ध को जाते हैं २४—३०
यहूशाफात बच जाता है और अहाब मारा जाता
है और कुत्ते उसका लोहू चाटते हैं ३१—३८
अहाज़िया राज्य पाता है ३९—४० यहूशाफात का
अच्छा राज्य और क्रिया और मृत्यु ४१—५०
अहाज़िया का बुरा राज्य ५१—५३

१ और तीन बरस लों सुरियानियों और इसराईलियों में लड़ाई
२ नऊई। और तीसरे बरस ऐसा ज़आ कि यहूदा का राजा
३ यहूशाफात इसराईल के राजा पास गया। तब इसराईल के
राजा ने अपने सेवकों से कहा कि तुम जानते हो कि जलिआद
के रामूस हमारे हैं और हम उसे लेने में चुपके हो रहे हैं

४ और सूरिया के राजा के हाथ से उसे नहीं लेते हैं?। फिर उसने यहूशाफात से कहा कि मेरे साथ लड़ने को आप रामूस जलियाद पर संग्राम के लिये चढ़ियेगा? यहूशाफात ने इसराईल के राजा को उत्तर दिया कि आप की नाईं मैं हों और आप के लोग मेरे लोगों की नाईं और आप के घोड़े मेरे घोड़ों की नाईं।
५ और यहूशाफात ने इसराईल के राजा से कहा कि मैं आप की
६ बिनती करता हों कि आज परमेश्वर के वचन से बूझिये। तब इसराईल के राजा ने भविष्यद्वक्तों को एकट्ठा किया जो चार सौ जन के लगभग थे और उन्हें कहा कि मैं रामूस जलियाद पर लड़ने चढ़ों अथवा अलग रहों? वे बोले कि चढ़ जाइये क्योंकि परमेश्वर
७ उसे राजा के हाथ में सौंपेगा। तब यहूशाफात ने कहा कि यहां कोई परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता नहीं है कि हम उस्से बूझें?।
८ इसराईल के राजा ने यहूशाफात से कहा कि अब भी एक जन है इमलाह का बेटा मेकाइया जिस के द्वारा से हम परमेश्वर से बूझ सकते हैं परन्तु मैं उस्से बैर रखता हों क्योंकि वुह मेरे बिषय में अच्छी बात नहीं कहता परन्तु बुरी, तब यहूशाफात
९ बोला कि राजा ऐसा न कहें। तब इसराईल के राजा ने एक प्रधान को बुला के कहा कि इमलाह के बेटे मीकाया को शीघ्र
१० करो। तब इसराईल का राजा और यहूदा का राजा यहूशाफात राजबस्त्र पहिनेऊए सामरः के फाटक की पैठ में अपने अपने सिंहासन पर जा बैठे और समस्त भविष्यद्वक्ता उनके आगे
११ भविष्य कहने लगे। और किनाना के बेटे सिदक़िया ने अपने लिये लोहे के सींग बनाये और बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि आप इनसे सुरियानियों को यहांलों गोदेंगे कि उन्हें नाश
१२ करेंगे। तब सारे भविष्यद्वक्तों ने यह कहिके भविष्य कहा कि रामूस जलियाद पर चढ़जाइये और भाग्यमान हूजिये क्योंकि
१३ उसे परमेश्वर राजा के हाथ में सौंपेगा। और जो दूत मिकाया को बुलाने गया था उसने उस्से यह कहा कि देख भविष्यद्वक्तों का

बचन एकसां राजा के लिये भला है इसलिये मैं बिनती करता हों आप का बचन उनमें से एक के बचन की नाईं होवे और
१४ भला कहियो। मिकाया बोला कि परमेश्वर के जीवन सों
१५ परमेश्वर जो मुझे कहेगा वही मैं करोंगा। सो वुह राजा पास आया तब राजा ने उसे कहा कि हे मिकाया हम लड़ने को रामूस जलियाद पर चढ़ें अथवा रहिजायें? उसने उसे उत्तर दिया कि चढ़जाइये और भाग्यवान हो क्योंकि
१६ परमेश्वर उसे राजा के हाथ में कर देगा। फिर राजा ने उसे कहा कि मैं कै बार तुझे किरिया खिलाया करों कि तू परमेश्वर
१७ के नाम से सच्ची बात से अधिक कुछ न कह। तब उसने कहा कि मैं ने सारे इसराईल को बिन चरवाहे की भेड़ों के समान पहाड़ों पर बिथरे ऊए देखा और परमेश्वर ने कहा कि कोई उनका स्वामी नहीं सो उनमें से हर एक जन अपने अपने घर
१८ कुशल से चला जाय। तब इसराईल के राजा ने यहूशाफ़ात से कहा मैं नें आप से नहीं कहा कि वुह मेरे बिषय में भला
१९ भविष्य न कहेगा परन्तु बुरा?। फिर मिकाया ने कहा कि परमेश्वर के बचन को सुनो मैं ने परमेश्वर को अपने सिंहासन पर बैठे और स्वर्ग की सारी सेना को उसके दहिने बायें
२० खड़ी देखा। तब परमेश्वर ने कहा कि अहाब को कौन छलेगा जिसतें वुह रामूस जलियाद पर चढ़के जूझ जाय? तब उनमें
२१ से एक ने कुछ कहा दूसरे ने कुछ। उस समय में एक आत्मा निकलके परमेश्वर के आगे आ खड़ा ऊआ और बोला कि मैं
२२ उसका बोध करोंगा। फिर परमेश्वर ने कहा कि किस्से? वुह बोला मैं जाओंगा और उसके सारे भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्या आत्मा होंगा तब उसने कहा कि तू उसका बोध करेगा और प्रबल भी
२३ होगा बाहर जा और ऐसा कर। सो देख परमेश्वर ने तेरे उन सब भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्या आत्मा डाला है और
२४ परमेश्वर ही ने तेरे बिषय में बुरा कहा है। परन्तु किनाना का

बेटा सिदक़िया पास आया और मिकाया के गाल पर थपेड़ा मारके बाेला कि परमेश्वर का आत्मा मुझे निकलके किधर से
२५ तुझे कहने गया ?। मिकाया बाेला कि देख तू उस दिन देखेगा
२६ जब तू आप काे छिपाने काे काेठरी में घुसेगा। तब इसराईल के राजा ने कहा कि मिकाया काे लआे आैर नगर के अध्यक्ष
२७ अमून आैर राजपुच यूआश के पास फेर लेजाआे। आैर कहाे कि राजा की आज्ञा है कि इसे बंधन में रक्खाे आैर जबलाें मैं कुशल से न आआें तबलाें उसे कष्ट की राेटी आैर कष्ट का जल
२८ दिया कराे। तब मिकाया बाेला यदि तू किसी रीति से कुशल से फिर आवे ताे परमेश्वर ने मेरे द्वारा से नहीं कहा फिर वुह बाेला हे लाेगाे तुम में से हर एक जन सुन रक्खे।
२९ उस के पीछे इसराईल का राजा आैर यहूदा का राजा
३० यहूशाफ़ात रामूस गिलियाद पर चढ़ गये। आैर इसराईल के राजा ने यहूशाफ़ात से कहा कि मैं संग्राम में अपना भेष पलट के प्रवेश करांगा परन्तु आप अपना राजवस्त्र पहिनियाे साे इसराईल के राजा ने अपना भेष पलट के युद्ध में प्रवेश किया।
३१ परन्तु सुरियानी के राजा ने अपने रथाें के बत्तीस प्रधानाें काे कहिके आज्ञा किई कि छाेटे बड़े किसी से मत लड़ियाे परन्तु
३२ केवल इसराईल के राजा के संग। आैर ऐसा ऊआ कि रथाें के प्रधानाें ने यहूशाफ़ात काे देख के याें कहा कि निश्चय इसराईल का राजा यही है आैर उन्हाें ने एक आेर हाेके चाहा कि उसे
३३ युद्ध करें तब यहूशाफ़ात चिल्लाया। आैर जब रथ के प्रधानाें ने जाना कि यह इसराईल का राजा नहीं ताे वे उसके खेद ने
३४ से हट आये। आैर आकस्मात् एक जन ने बाण लगाया आैर वुह संजाेग से इसराईल के राजा काे झिलम के जाेड़ में मारा तब उसने अपने सारथी से कहा कि हाथ फेर
३५ आैर सेना में से मुझे निकाल लेजा क्याेंकि मैं राेगी हाें। परन्तु उस दिन संग्राम बढ़ गया आैर राजा सुरियानियाें के सन्मुख

रथ पर ठहरा रहा और सांझ होते होते मर गया और लहू
३६ उसके घाव से रथ में बहि निकला। और सूर्य अस्त होतेऊए
समस्त सेना में प्रचार ऊआ कि हर एक जन अपने अपने नगर
३७ और अपने अपने देश को जाय। सो राजा मर गया और
उसे सामरःमें लेगये और सामरःमें राजा को गाड़ दिया।
३८ और रथ को और उसके अस्त्र को सामरःके कुंड में धोया और
जैसा कि परमेश्वर ने कहा था वैसा कुत्तों ने उसका लोहू चाट
३९ लिया। और अहाब की रहीऊई क्रिया और सब जो
उस ने किया था और हाथीदांत का भवन जो उस ने बनाया
और जो जो नगर उसने बनाये सो क्या इसराईल के राजाओं
४० के समयों के समाचारों की पुस्तक में नहीं लिखा है?। और
अहाब ने अपने पितरों में शयन किया और उसका बेटा
४१ अहाज़िया उसकी सन्ती राज्य पर बैठा। और
इसराईल के राजा अहाब के चौथे बरस आसा का बेटा यहूशाफ़ात
४२ यहूदा पर राज्य करने लगा। और यहूशाफ़ात पैंतीस बरस का
होके राज्य करने लगा और उसने यिरोशलीम में पचीस बरस
राज्य किया उसकी माता का नाम अजूबा था वुह शील्ही की बेटी
४३ थी। वुह अपने बाप आसा के सारे मार्गों में चलता था वुह उसे
परमेश्वर की दृष्टि में भलाई करने से न मुड़ा तथापि ऊंचे स्थान
अलग न किये गये और उन ऊंचे स्थानों पर लोक भेंट चढ़ाते और
४४ धूप जलाते रहे। और यहूशाफ़ात ने इसराईल के राजा से
४५ मिलाप किया। अब यहूशाफ़ात की रहीऊई क्रिया और उसके
पराक्रम जो उसने दिखाया और किस रीति से युद्ध किया सो
क्या यहूदा के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं
४६ लिखा?। और उस ने सदूमियों को, जो उसके बाप आसा के
४७ समय में रहिगये थे, देश में से दूर किया। उस समय में
अदूम में कोई राजा न था परन्तु एक उपराज राज्य करता था।
४८ यहूशाफ़ात ने तरशीश के जहाज़ बनवाये जिसतें ओफ़ीर से

सोना मंगवावे परन्तु वे वहां लों नगये क्योंकि अज़ियून गबर में
४९ जहाज़ मारे गये । तब अहाब के बेटे अहाज़िया ने यहूशाफ़ात
से कहा कि जहाज़ों पर अपने सेवकों के साथ मेरे सेवकों को
५० भी जानेदीजिये परन्तु यहूशाफ़ात ने न माना । तब
यहूशाफ़ात ने अपने पितरों के साथ शयन किया और अपने
पितर दाऊद के नगर में अपने पितरों के मध्य में गाड़ा गया
और उसका बेटा यहूराम उसकी सन्ती राज्य पर बैठा ।
५१ और अहाब का बेटा अहाज़िया यहूदा के राजा यहूशाफ़ात के
राज्य के सतरहवें बरस सामरः में इसराईल पर राज्य करने
५२ लगा और उसने दो बरस इसराईल पर राज्य किया । और
उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और अपने पिता
और माता के और नाबात के बेटे यूर्बआम के मार्ग पर, जिस ने
५३ इसराईल से पाप करवाया, चलता था । क्योंकि अपने पिता के
सारे कार्य के समान उस ने बआल की सेवा किई और उसको
दंडवत किई और परमेश्वर इसराईल के ईश्वर को रिस दिलाया ।

राजावली की दूसरी पुस्तक जो राजाओं की चौथी पुस्तक कहावती है ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

मवाब इसराईल से फिरजाता है अहाज़िया राजा का रोग और उसके मरने का सन्देश १—४ अहाज़िया इलियास को पकड़ने को भेजता है स्वर्ग से आग दो बार उन्हें भस्म करती है ५—१२ तीसरा प्रधान बिनती करता है और इलियास उसके साथ राजा पास जाता है और उसके मरने का सन्देश देता है १३—१६ अहाज़िया मरता है और यहूराम उसकी सन्ती राज्य पर बैठता है १७—१८ ।

१ अहाब के मरने के पीछे मवाबी इसराईलियों से फिर गये ।
२ और अहाज़िया अपने ऊपर की कोठरी के झरोखे से, जो सामरः में थी, गिरपड़ा और रोगी हुआ और उसने दूतों से कहला भेजा कि जाओ और अक़रून के देव बअालज़बूब से पूछो कि मैं इस रोग से चंगा होंगा कि नहीं ।
३ परन्तु परमेश्वर के दूत ने तशबी इलियास को कहा कि उठ और सामरः के राजा के दूतों से भेंट कर और उन्हें कह

कि यह इस लिये नहीं कि इसराईल में कोई ईश्वर नहीं जो
४ तुम अक्रून के देव बअालज़बूब से पूछने जाते हो? । इस कारण
परमेश्वर यों कहता है कि जिस बिछौने पर तू चढ़ा है उस्से
न उतरेगा परन्तु निश्चय मर जायगा तब इलियास चला गया ।
५ और जब दूत उस पास फिर आये तब उसने उनसे पूछा कि
६ तुम किस लिये फिर आये हो? । उन्हों ने उसे कहा कि
एक जन हमें मिला और हमें कहा कि राजा पास जिस
ने तुम्हें भेजा है फिर जाओ और उसे कहो कि परमेश्वर यों
कहता है इस लिये नहीं कि इसराईल में कोई ईश्वर नहीं
जो तू अक्रून के देव बअालज़बूब से पूछने भेजता है? इस लिये
तू उस बिछौने पर से जिस पर तू चढ़ा है उतरने न पावेगा
७ परन्तु निश्चय मर जायगा । उसने उनसे पूछा कि उस जन
की रीति जो तुम्हें मिला और जिस ने तुम्हें ये बातें कहीं कैसी
८ थीं? । उन्हों ने उत्तर दिया कि वुह रोआंर जन था और चमड़े
के पटुके से उसकी कटिहांव कसी ऊई थी तब उसने कहा कि
९ वुह तशबी इलियास है । तब राजा ने पचास के प्रधान
को उसके पचास समेत उस पास भेजा और वुह उस पास
चढ़ गया और देखो कि वुह एक पहाड़ की चोटी पर बैठा था
उसने उसे कहा कि हे ईश्वर के जन राजा ने कहा है कि
१० उतर आ । तब इलियास ने उस पचास के प्रधान को उत्तर
देके कहा कि यदि मैं ईश्वर का जन हों तो स्वर्ग से आग उतरे
और तुझे और तेरे पचास को भस्म करे तब आग स्वर्ग
से उतरी और उसे और उसके पचास को भस्म किया ।
११ फिर उसने दूसरी बार और एक पचास के प्रधान को उसके
पचास समेत भेजा उसने भी जाके कहा कि हे ईश्वर के जन
१२ राजा ने कहा है कि शीघ्र उतर आ । इलियास ने उन्हें
उत्तर देके कहा कि यदि मैं ईश्वर का जन तो स्वर्ग से आग
उतरे और तुझे और तेरे पचास को भस्म करे और ईश्वर की

आग स्वर्ग से उतरी और उसे और उसके पचास को भस्म
१३ किया। फिर उसने तीसरी बार और एक पचास के प्रधान
को उसके पचास समेत भेजा और तीसरा पचास का प्रधान
चढ़ गया और आके इलियास के आगे घुठनों पर झुका और
उसकी बिनती करके बोला कि हे ईश्वर के जन मैं आप की
बिनती करता हों कि मेरा प्राण और आप के इन पचास
१४ दासों के प्राण आप की दृष्टि में बहुमूल्य होवें। देखिये कि
स्वर्गीय अग्नि ने दो पचास के प्रधानों को उनके पचास पचास
समेत भस्म किया इस कारण मेरा प्राण आप की दृष्टि में
१५ बहुमूल्य होवे। तब परमेश्वर के दूत ने इलियास को कहा
कि उसके साथ उतर जा उस्से मत डर तब वुह उठा
१६ और उतर के उसके साथ राजा पास गया। और उसने
उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है जैसा कि तू ने दूतों को
भेजा है कि अक़रून के देव बअलज़बूब से जाके पूछें यह इस
कारण नहीं कि इसराईल में कोई ईश्वर नहीं कि उसके
बचन से बूझता? इसलिये जिस बिछौने पर तू चढ़ा है उस्से न
१७ उतरेगा परन्तु निश्चय मर जायगा। सो परमेश्वर के बचन
के समान, जो इलियास ने कहा था, वुह मरगया और
यहूदा के राजा यहूशाफात के बेटे यहूराम के दूसरे बरस में
यहूराम उसकी सन्ती राज्य पर बैठा इस कारण कि उसका
१८ कोई बेटा न था। और अहाज़िया की रही हुई क्रिया जो
उसने किई क्या इसराईली राजाओं के समयों के समाचार की
पुस्तक में लिखा नहीं?।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

इलियास और अलीशा भविष्यद्वक्ता की बातचीत
और इलियास का स्वर्ग पर उठाया जाना १—१०
अलीशा उसके ओढ़ने को उठाके एक आश्चर्य

दिखाता है ११—१८ भविष्यद्वक्ता को चिढ़ाने के कारण से बयालीस लड़के जंगली भालुओं से फाड़े जाते हैं १९—२५ ।

१ और यों हुआ कि जब परमेश्वर ने चाहा कि इलियास को बौंडर में स्वर्ग पर लेजावे तब इलियास अलीशा के साथ
२ जलजाल से चला। और इलियास ने अलीशा को कहा कि यहां ठहर जा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे बैतईल को भेजा है तब अलीशा ने कहा कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण के जीवन सों मैं आप को न छोड़ोंगा सो वे बैतईल को उतर
३ गये। और बैतईल के भविष्यद्वक्तों के पुत्रों ने निकल आके अलीशा से कहा कि तुझे कुछ चेत है कि परमेश्वर आज तेरे सिर पर से तेरे स्वामी को उठालेगा? वुह बोला कि हां मैं
४ जानताहूं तुम चुप रहो। तब इलियास ने अलीशा को कहा कि यहीं ठहरजा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे अरीहा को भेजा है उसने कहा कि परमेश्वर के जीवन और आप के प्राण के जीवन सों मैं आप को न छोड़ोंगा सो वे दोनों अरीहा को
५ आये। और भविष्यद्वक्तों के संतान जो अरीहा में थे, अलीशा पास आये और उसे कहा कि तुझे कुछ चेत है कि परमेश्वर आज तेरे स्वामी को तेरे सिर पर से उठालेगा? उसने उत्तर
६ दिया कि हां मैं जानता हों तुम चुप रहो। और इलियास ने अलीशा को कहा कि यहां ठहरजा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे अर्दन को भेजा है वुह बोला कि परमेश्वर के जीवन और आपके प्राण के जीवन सों मैं आप को न छोड़ोंगा सो
७ वे दोनों बढ़गये। और पचास मनुष्य भविष्यद्वक्तों के पुत्रों में से चले और दूर खड़े होके देखने लगे और वे दोनों
८ अर्दन के तीर खड़े हुए। और इलियास ने अपना ओढ़ना लिया और लपेट के पानियों को मारा और वे इधर उधर विभाग होगये यहां लों कि वे दोनों सूखे सूखे उतर गये।

९ और जब पार हुए तो इलियास ने अलीशा से कहा कि तुझ से अलग कियेजाने से आगे मांग कि मैं तेरे लिये क्या करों तब अलीशा बोला कि मैं आप की बिनती करता हों कि आप
१० के आत्मा से दूना भाग मुझ पर पड़े। उसने कहा कि तू ने मांगने में कठिन किया यदि तू मुझे आप से अलग कियेजाने से देखेगा तो ऐसाही तुझ पर होगा और यदि नहीं तो
११ न होगा। और ऐसा हुआ कि ज्योंहीं वे दोनों टहलतेहुए बातें करते चलेजाते थे तो देखो कि एक आग को रथ और आग के घोड़े आये और उन दोनों को अलग किया और
१२ इलियास बौंडर में होके स्वर्ग पर जातारहा। और अलीशा देखके चिल्लाया कि हे मेरे पिता हे मेरे पिता इसराईल के रथ और उसके घोड़चढ़े और उसने उसे फिर नदेखा और
१३ उसने अपनेही कपड़ों को लेके उन्हें दो टुकड़ा किया। और उसने इलियास के ओढ़ने को भी, जो उस पर से गिर पड़ा था, उठा लिया और उलटा फिरा और अर्दन के तीर पर
१४ खड़ा हुआ। और उसने इलियास के ओढ़ने को, जो उसे गिर पड़ा था, लेके पानियों को मारा और कहा कि परमेश्वर इलियास का ईश्वर कहां? और उसने भी पानियों को मारा तो पानी इधर उधर होगया और अलीशा पार गया।
१५ और जब अरीहा के भविष्यद्वक्ता के संतानों ने, जो देखने को निकले थे उसे देखा तो बोले कि इलियास का आत्मा अलीशा पर ठहरता है और वे उसकी भेंट के लिये आये और उसके
१६ आगे भूमि पर झुके। और कहा कि देखिये अब आप के सेवकों के साथ पचास वीर पुत्र हैं हम आप की बिन्ती करते हैं कि उन्हें जाने दीजिये कि आप के स्वामी को ढूंढ़ें क्या जाने परमेश्वर के आत्मा ने उसे उठाके किसी पर्वत पर अथवा तराई में फेंक दिया हो वुह बोला कि किसी को मत भेजो।
१७ और जब उन्हों ने यहां लों उसे उभाड़ा कि वुह लज्जित हुआ

पचास जन को उसने कहा कि भेजो तब उन्हों ने भेजा और उन्हों ने
१८ तीन दिन लों उसे ढूंढ़ा पर नपाया। और जब वे उस पास फिर
आये (क्योंकि वुह अरीहा में ठहरा था) तब उसने उन्हें कहा
१९ कि मैं ने न कहा था कि मत जाओ?। तब उस नगर के
लोगों ने अलीशा से कहा कि मैं आप की बिनती करता हों देखिये
कि इस नगर का स्थान मनभावना है जैसा मेरे प्रभु देखते हैं परन्तु
२० पानी निकम्मा और भूमि फलहीन है। उसने कहा कि नया
पात्र लाओ और उसमें नोन डालो और वे उस पास लाये।
२१ तब वुह पानियों के सोतों पर गया और नोन वहां डालके
बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने इन पानियों को अच्छा
२२ किया है फेर यहां से मृत्यु अथवा ऊसर नहोगा। और
अलीशा के कहेहुए वचन के समान आज लों जल अच्छे हुए।
२३ फेर वुह वहां से बैतईल को चढ़ा और ज्यों वुह मार्ग
में ऊपर जाता था त्यों देखो कि नगर के छोटे छोटे लड़के
निकले और उसे चिढ़ा चिढ़ा कहने लगे कि चढ़जा सिर
२४ मुंडे चढ़जा सिरमुंडे। तब उसने पीछे फिर के उन्हें देखा और
परमेश्वर का नाम लेके उन्हें स्राप दिया वहीं बन में से दो
भालु निकलीं और उनमें से बयालीस लड़कों को मारडाला।
२५ फिर वुह वहां से करमिल पहाड़ को गया और वहां से सामरः
को फिर आया।

३ तीसरा पर्ब्ब।

यहूराम का बुरा राज्य १—३ मवाब का राजा उससे
फिरजाता है और तीन राजा उससे संग्राम करने
के लिये चढ़जाते हैं ४—१४ मवाबी मारेजाते हैं
१५—२४ उसका देश नष्ट होता है और तीनों
राजा फिर आते हैं २५—२७।

१ अब यहूदा के राजा यहूशाफात के अठारहवें बरस अहाब का

बेटा यहूराम सामरः में इसराईल पर राज्य करने लगा और
२ उसने बारह बरस राज्य किया। और उसने परमेश्वर की
दृष्टि में बुराई किई परन्तु अपनी माता पिता के तुल्य नहीं
इसलिये कि उसने बत्र्राल की मूर्त्ति को, जो उसके पिता ने
३ बनाई थी, दूर किया। तथापि वुह नबात के बेटे यूर्बआम
के समान पापों में, जिसने इसराईल से पाप करवाया, पिलचा
४ रहा उनसे अलग न हुआ। और मवाब का राजा, जो
भेड़ों का स्वामी था, और इसराईल के राजा को एक लाख
५ मेम्ने और एक लाख मेढ़े ऊन समेत भेंट भेजता था। परन्तु
यों हुआ कि जब अहाब मरगया तब मवाब का राजा इसराईल
६ के राजा से फिर गया। और यहूराम राजा सामरः से
७ निकला और उसी समय सारे इसराईलियों को गिना। और
उसने जाके यहूदा के राजा यहूशाफ़ात को कहला भेजा कि
मवाब का राजा मुझसे फिरगया क्या आप मवाब से लड़ने
को मेरे साथ न जायेंगे? उसने कहा कि मैं चढ़जाऊंगा
जैसा मैं वैसा आप जैसे मेरे लोग वैसे आप के लोग जैसे मेरे
८ घोड़े वैसे आप के घोड़े। तब उसने पूछा कि हम किस मार्ग
से चढ़जायें? उसने उत्तर दिया कि अदूम के बन के मार्ग में से।
९ सो इसराईल के राजा और यहूदा के राजा और अदूम के राजा
निकले और उन्हों ने सात दिन के मार्ग का चक्कर खाये और सेना
१० के लिये और उनके ढोरों के लिये जल न था। तब इसराईल
का राजा बोला हाय परमेश्वर ने इन तीन राजाओं को एकट्ठा
११ किया कि उन्हें मवाब के हाथ में सौंपे। परन्तु यहूशाफात
बोला कि परमेश्वर के भविष्यद्वक्तों में से कोई यहां नहीं जिसतें
हम उसके द्वारा से परमेश्वर से बूझें? तब इसराईल के राजा
के सेवकों में से एक बोल उठा कि शाफ़ात का बेटा अलीशा
१२ यहां है जो इलियास के हाथों पर जल डालता था। फिर
यहूशाफ़ात बोला कि परमेश्वर का बचन उस पास है इसलिये

इसराईल का राजा और यहूशाफ़ात और अदूम का राजा
१३ उस पास उतर गये। तब अलीशा ने इसराईल के राजा से कहा कि मुझे तुझ से क्या काम? तू अपने पिता के भविष्यद्वक्तों पास और अपनी माता के भविष्यद्वक्तों पास जा और इसराईल का राजा उसे बोला नहीं क्योंकि परमेश्वर ने इन तीन राजाओं
१४ को एकट्ठा किया कि उन्हें मवाब के हाथ में सौंपे। फिर अलीशा ने कहा कि सेनाओं के परमेश्वर की सों जिसके आगे मैं खड़ा हों यदि यहूदा के राजा यहूशाफ़ात के साक्षात को न मानता
१५ तो निश्चय मैं तेरी ओर न ताकता और न तुझे देखता। परन्तु अब मुझ पास एक बीणा बजनिया लाओ और जब उसने बीणा बजाई तो ऐसा हुआ कि परमेश्वर का हाथ उस पर आया।
१६ और वुह बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि इस तराई को
१७ गड़हों से भर देउ। क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि तुम न बयार न मेंह देखोगे तथापि यह तराई पानी से भर जायगी जिसतें तुम और तुम्हारे ढोर और तुम्हारे पशु पीयें।
१८ और यह परमेश्वर की दृष्टि में छोटी बात है वुह मवाबियों
१९ को भी तुम्हारे हाथों में सौंपेगा। और तुम हर एक बाड़ित नगर और हर एक चुनी हुई बस्ती मारोगे और हर एक अच्छे पेड़ को गिराओगे और पानी के सारे कूओं को भाठोगे और
२० हर एक अच्छी भूमि को पत्थरों से बिगाड़ोगे। और बिहान को यों हुआ कि जब मांस की भेंट चढ़ाई गई तो देखो कि अदूम के मार्ग
२१ से पानी आया और देश पानी से भरगया। और मवाबियों ने यह सुनके कि राजा हम से लड़ने चढ़आये हैं उन्हों ने ललकार के सभों को, जो करिहांब बांध सक्ते थे, एकट्ठा किया और अपने
२२ सिवाने पर खड़े हुए। और बड़े तड़के उठे और सूर्य पानी पर चमकने लगा और मवाबियों ने उस पार से पानी को
२३ लोहू सा लाल देखा। तब वे बोल उठे कि वुह लोहू है निश्चय राजा नष्ट हुए और एक ने दूसरे को बधन किया है हे मवाबियो

२४ अब लूटो। और जब वे इसराईल की छावनी में आये तो इसराईली उठे और मवाबियों को यहां लों मारा कि वे उनके आगे से भागनिकले परन्तु वे मवाबियों को मारतेहुए बढ़तेगये
२५ अर्थात् देश में। और उन्हों ने उनके नगरों को ढा दिया और हर एक जन ने हर एक अच्छे स्थान पर अपना पत्थर डाला और उसे भरदिया और पानी के सारे कूये भाठ दिये और सब अच्छे पेड़ गिरा दिये यहां लों कि किरहरासीस के पत्थरों से अधिक कुछ बचा नरहा तथापि ढेलवासियों ने उसे जा घेरा
२६ और मार लिया। और जब मवाब के राजा ने देखा कि संग्राम मेरे लिये अति हुआ तो उसने अपने संग सात सौ जन खड्गधारी लिये जिसतें अदूम के राजा लों पैठे परन्तु नसके।
२७ तब उसने अपने जेठे बेटे को लिया, जि उसकी सन्ती राज्य पर बैठना था और उसे भीत पर होम के बलिदान के लिये चढ़ाया और इसराईलियों के विरुद्ध बड़ा जलजलाहट हुआ और वे उसे हट गये और देश में फिर आये।

४ चौथा पर्ब्ब।

अलीशा का आश्चर्य कर्म १—७ एक स्त्री भविष्यद्वक्ता की सेवा करती है और एक पुत्र प्रतिफल पाती है ८—१७ वुह बालक मरजाता है और अलीशा की प्रार्थना से जिलायाजाता है १८—३७ अलीशा लपसी के बिख को दूर करता है ३८—४१ जव की बीस रोटी से वुह सौ मनुष्य को भोजन करावता है ४२—४४।

१ अब भविष्यद्वक्तों के पुत्रों की पत्नियों में से एक स्त्री अलीशा के आगे चिल्लाके बोली कि आप का सेवक मेरा पति मरगया है और आप जानते हैं कि आप का सेवक परमेश्वर से डरता था और अब धनिक आया है कि मेरे दोनों बेटों को लेके दास

२ बनावे । तब अलीशा ने उसे कहा कि मैं तेरे लिये क्या करों? मुझे बतला तुझ पास घर में क्या है? वुह बोली कि आप की
३ दासी के घर में एक हांडी तेल से अधिक कुछ नहीं । तब उसने कहा कि बाहर जाके अपने सब परोसियों से छूछे पात्र मंगनी
४ ला और वे थोड़े न होवें । और अपने घर में जाके अपने और अपने बेटों पर द्वार बन्द कर और उन सब पात्रों में
५ उंडेल और जो जो भर जाय उसे अलग रख । सो वुह उसके पास से गई और अपने पर और अपने बेटों पर द्वार मूंद लिया वे उसके पास लाते जाते थे और वुह उंडेलती थी ।
६ और ऐसा ऊआ कि जब वे पात्र भरगये तो उसने अपने बेटे से कहा कि एक और पात्र ला वुह बोला और पात्र तो
७ नहीं तब तेल थम गया । और उसने आके ईश्वर के जन से कहा तब वुह बोला जा तेल बेंच और धनिक को दे और
८ बचेऊए से तू और तेरे सन्तान जीवें । और एक दिन ऐसा संयोग ऊआ कि अलीशा शूनीम को गया वहां एक धनवान् स्त्री थी उसने उसे पकड़ा कि रोटी खाय सो ऐसा ऊआ कि जब उसका जाना उधर होता था तब वुह वहां जाके
९ रोटी खाता था । फिर उसने अपने पति से कहा कि देख मैं देखती हों कि यह ईश्वर का पवित्र जन है जो नित हमारे
१० पास से जाता है । सो हम उसके लिये एक छोटीसी कोठरी भीत पर बनावें और वहां उसके लिये बिछौना बिछावें और एक मंच लगावें और एक पीढ़ी रक्खें और एक दीअट
११ और जब वुह हम पास आयाकरे तब वहीं टिके । सो एक दिन ऐसा ऊआ कि वुह वहां गया और उस कोठरी में टिका
१२ और सोया । तब उसने अपने सेवक जाहज़ी को कहा कि इस शूनामी को बुला उसने उसे बुलाया तो वुह उसके आगे
१३ आ खड़ी ऊई । फिर उसने अपने सेवक से कहा कि तू उसे कह कि तू ने जो हमारे लिये यह सब चिन्ता किई तो तेरे लिये

क्या किया जाय? तू चाहती है कि राजा अथवा सेना के प्रधान से तेरे विषय में कहाजाय? वुह बोली कि मैं अपनेही
१४ लोगों में रहतीहूं। फिर उसने कहा कि इसके लिये क्या किया जाय? तब जहाज़ी बोला कि निश्चय यह निर्बंश है और
१५ उसका पति वृद्ध। तब वुह बोला कि उसे बुला और उसने
१६ उसे बुलाया तब वुह द्वार पर खड़ी हुई। वुह बोला इसी समय से पूरे दिन पर तू एक बेटा गोद में लेगी वुह बोली कि नहीं हे मेरे प्रभु ईश्वर के जन अपनी दासी से झूठ न कहिये।
१७ और वुह स्त्री गर्भिणी हुई और उसी समय, जो अलीशा ने
१८ उसे कहा था जीवन के समान, एक बेटा जनी। और वुह बालक बड़ा हुआ और एक दिन यों हुआ कि वुह अपने
१९ पिता पास लवैयों कने गया। और अपने पिता से कहा कि मेरा सिर मेरा सिर उसने एक तरुण से कहा कि उसे
२० उसकी माता पास लेजा। तब उसने उसे लेके उसकी माता के पास पहुंचाया और वुह उसके घुठनों पर पड़े पड़े
२१ मध्यान्ह को मर गया। तब उसने उसे लेजाके उस ईश्वर के जन के बिछौने पर डाल दिया और द्वार मूंदके निकल गई।
२२ और अपने पति पास गई और कहा कि शीघ्र एक तरुण और एक गदहा मेरे लिये भेजिये जिसतें मैं ईश्वर के जन पास
२३ दौड़ जाऊं और फिर आऊं। उसने पूछा कि आज तू उस पास क्यों जाया चाहती है? आज न अमावाश्या न बिश्राम
२४ वुह बोली कि कुशल होगा। तब उसने एक गदहे पर काठी बांधी और तरुण से कहा कि हांक और बढ़ और मेरे चढ़ने
२५ के लिये मत रोक जबलों मैं तुझे न कहों। सो वुह चल निकली और करमिल पहाड़ पर ईश्वर के जन पास आई और ऐसा हुआ कि जब ईश्वर के जन ने दूर से उसे देखा तो अपने
२६ सेवक जहाज़ी से कहा कि देख वुह शूनामी। उसे आगे से मिलने को दौड़ और उसे पूछ कि तू कुशल से है?

तेरा पति कुशल से है? तेरा बालक कुशल से है? उसने उत्तर
२७ दिया कि कुशल से। और उसने उस पहाड़ पर आके ईश्वर
के जन के चरण को पकड़ा परन्तु जहाज़ी ने पास आके चाहा
कि उसे अलग करे परन्तु ईश्वर के जन ने कहा कि उसे छोड़
दे क्योंकि इसका प्राण दुःखी है और परमेश्वर ने मुझसे छिपाया
२८ और मुझे नहीं कहा। तब वुह बोली कि कब मैं ने अपने प्रभु
२९ से पुत्र मांगा? मैं ने नहीं कहा कि मुझे मत भुला?। तब
उसने जहाज़ी को कहा कि अपनी करिहांव कस और मेरा
दंड हाथ में ले और चला जा यदि कोई तुझे मार्ग में मिले
तो उसे नमस्कार मतकर और यदि कोई तुझे नमस्कार करे तो
उसे उत्तर मत दे और मेरा दंड बालक के मुंह पर रख।
३० उसकी माता बोली परमेश्वर के जीवन सों और आप के प्राण
के जीवन सों मैं आप को न छोड़ोंगी तब वुह उठा और उसके
३१ पीछे पीछे चला। जहाज़ी उनसे आगे आगे गया और
दंड लड़के के मुंह पर धरा परन्तु कुछ शब्द अथवा सुरत न
ऊई इसलिये वुह उससे भेंट करने को फिरा और उसे कहा
३२ कि लड़का नहीं जागा। और जब अलीशा घर में पऊंचा
३३ तब वुह बालक उसके बिछौने पर मरा पड़ा था। तब वुह
भीतर गया और दोनों पर द्वार मूंदके परमेश्वर से प्रार्थना
३४ किई। और जाके बालक से लिपटा और उसके मुंह पर
अपना मुंह रक्खा और उसकी आंखों पर अपनी आंखें और
उसके हाथों पर अपने हाथ और बालक पर फैल गया तब
३५ उस बालक का देह गरमाया। फिर वुह उठा और उस घर
में इधर उधर टहलने लगा और फिर जाके उस पर फैला
और बालक ने सात बार छींका और अपनी आंखें खोलीं।
३६ तब उसने जहाज़ी को बुलाके कहा कि उस शूनामी को बुला
सो उसने उसे बुलाया और जब वुह भीतर उस पास आई
३७ तो उसने उससे कहा कि अपना बेटा उठाले। तब वुह भीतर

गई और उसके पांओं पर गिरी और भूमि लों दंडवत किई
३८ और अपने बेटे को उठाके बाहर गई। और अलीशा
जलजाल को फिर आया और उस देश में अकाल पड़ा था
और वहां भविष्यद्वक्तों के पुत्र उसके साम्ने बैठेहुए थे और
उसने अपने सेवक से कहा कि बड़ा हंडा चढ़ा और भविष्यद्वक्तों
३९ के पुत्रों के लिये लपसी पका। और एक जन चौगान में
गया कि कुछ तरकारी चुन लावे और उसने बनैले दाख पाये
और उस्से गोद भरके जंगली तुंबियां बटोरीं और आके
४० लपसी के हांड़ी में डाल दिईं क्योंकि वे न जानते थे। सो उन्हों
ने लोगों के खाने के लिये उंडेला और यों हुआ कि जब वे
वुह लपसी खानेलगे तो चिल्ला उठे कि हे ईश्वर के जन खाने
४१ में मृत्यु है और खा नसके। तब उसने पिसान मंगवाया और
उस हांड़े में डाल दिया और कहा कि लोगों के खाने के लिये
४२ उंडेल तब हांडे में कुछ अवगुण न हुआ। उसी समय
बआलशलीशा से एक पुरुष ईश्वर के जन पास पहिले अन्न की
रोटी लाया जव के बीस फुलके और भरेहुए अन्न की बालें
४३ अपने अंचल में और बोला कि लोगों को खानेको दे। उस
समय उसका सेवक बोला कि क्या मैं इसे सौ मनुष्यों के आगे
रक्खों? उसने फिर कहा कि लोगों को खाने को दे क्योंकि
४४ परमेश्वर यों कहता है कि वे खायेंगे और बच रहेगा। तब
उसने उनके आगे रक्खा और उन्हों ने खाया और परमेश्वर
के बचन के समान बच रहा।

५ पांचवां पर्ब्ब।

सुरिया का सेनापति नामान कोढ़ी इसराईल के
राजा पास चंगा होने को आता है १—७ अलीशा
भविष्यद्वक्ता उसे चंगा होने की जुगत बताता है
८—१४ वुह सच्चे ईश्वर को मानता है और

केवल उसी की सेवा को ठानता है १५—१९ झूठ बोलके और नामान से दान लेके जहाज़ी कोढ़ी होता है २०—२७ ।

१ अब नामान, जो सुरिया के राजा की सेना का प्रधान और अपने प्रभु के आगे महान पुरुष और प्रतिष्ठित था क्योंकि परमेश्वर ने उसके द्वारा से सुरिया को जय दिया था, २ महावीर और बली था परन्तु कोढ़ी । और सुरियानी जथा जथा होके निकल गये थे और इसराईल के देश में से एक छोटी कन्या को बंधुआई में लाये थे और वुह नामान की पत्नी ३ के पास रहती थी । उसने अपने स्वामिनी से कहा हाय कि मेरा स्वामी उस भविष्यद्वक्ता के आगे जाता जो सामरः में है ४ क्योंकि वुह उसे उसके कोढ़ से चंगा करता । और एक जाके अपने प्रभु से कहिके बोला इसराईल के देश की कन्या यों यों ५ कहती है । सो सुरिया के राजा ने कहा कि चल निकल मैं इसराईल के राजा को पत्र लिख भेजोंगा सो वुह चला और एक लाख चौंसठ सहस्र के लगभग रुपये और दस जोड़े वस्त्र ६ अपने साथ लेचला । और वुह उस पत्री को यह कहिके इसराईल के राजा पास लाया कि यह पत्री जब तेरे पास पऊंचे तब देख मैं ने अपने सेवक नामान को तुझ पास भेजा ७ है जिसतें तू उसे कोढ़ से चंगा करे । और यों ऊआ कि जब इसराईल के राजा ने उस पत्री को पढ़ा तो अपने कपड़े फाड़े और बोला कि क्या मैं ईश्वर हों जो मारों और जिलाओं कि यह जन मुझ पास भेजता है कि एक जन को उसके कोढ़ से चंगा करों? सो तुम्हीं बिचारो और देखो कि वुह मुझसे झगड़ा ८ ढूंढ़ता है । और जब ईश्वर के जन अलीशा ने सुना कि इसराईल के राजा ने अपने कपड़े फाड़े तो राजा को कहला भेजा कि तू ने अपने कपड़े क्यों फाड़े? अब वुह मुझ पास आवे और उसे जान पड़ेगा कि इसराईल में एक

९ भविष्यद्वक्ता है। सो नामान अपने घोड़े और अपने रथ समेत आया और अलीशा के घर के द्वार पर खड़ा हुआ।
१० तब अलीशा ने उस पास दूत भेजके कहा कि जा और अर्दन में सात बार नहा और तेरा शरीर पवित्र फेर के मिलेगा।
११ परन्तु नामान यह कहिके क्रुद्ध होके चला गया देख मैं ने कहा था कि वुह निश्चय मुझ पास निकल आवेगा और खड़ा होक अपने ईश्वर परमेश्वर का नाम लेगा और उस स्थान पर
१२ हाथ फेरेगा और कोढ़ को चंगा करेगा। क्या अबाना और फ़ारपार दमिश्क की नदियां इसराईल के सारे पानियों से कितनी अच्छी नहीं? मैं उनमें नहाके शुद्ध नहीं होसक्ता?
१३ वुह फिरा और कोपित चला गया। तब उसके सेवक उस पास आये और यह कहिके बोले कि हे पिता यदि भविष्यद्वक्ता आप को कुछ भारी बात बताता तो आप उसे न मानते! फेर कितना अधिक जब वुह आप से कहता है कि नहा और
१४ शुद्ध हो!। तब वुह उतरा और जैसा कि ईश्वर के जन ने कहा था अर्दन में सात बार डुबकी मारी और उसका शरीर बालक के शरीर के समान फेर होगया और वुह पवित्र
१५ हुआ। तब वुह अपनी सारी जथा समेत ईश्वर के जन के पास फिर आया और उसके आगे खड़ा हुआ और यों कहा कि देखिये अब मैं जानताहों कि समस्त पृथिवी में इसराईल में छोड़ कोई ईश्वर नहीं है इसलिये अब अनुग्रह करके
१६ अपने सेवक की भेंट लीजिये। परन्तु उसने कहा कि उस परमेश्वर के जीवन सों जिसके आगे मैं खड़ा हों मैं कुछ न लेओंगा और उसने लेने को उसे बहुत सकेत किया परन्तु
१७ उसने न माना। और नामान ने कहा कि मैं आप की बिनती करता हों आप के सेवक को खच्चर लदीहुई मिट्टी न दिई जायगी? क्योंकि आप का सेवक आगे को परमेश्वर को छोड़ किसी देवों के लिये न बलिदान न होम की भेंट चढ़ावेगा।

१८ परन्तु इस बात में परमेश्वर आप के सेवक को क्षमा करे कि जब जब मेरा स्वामी पूजा के लिये रामून के मन्दिर में जाय और वुह मेरे हाथों पर ओठंगे हैं और मैं रामून के मन्दिर में झुकों सो जब मैं रामून के मन्दिर में झुकों तब परमेश्वर इस
१९ बात में आप के सेवक को क्षमा करे। उसने उसे कहा कि
२० कुशल से जा सो वुह उस्से थोड़ी दूर गया। परन्तु ईश्वर के जन अलीशा के सेवक जहाज़ी ने कहा कि देख मेरे स्वामी ने इस सुरियानी नामान को छोड़ दिया और जो कुछ वुह लाया था उसके हाथ से ग्रहण न किया परन्तु परमेश्वर के जीवन सों मैं तो उसके पीछे दौड़ जाओंगा और उस्से कुछ लेओंगा।
२१ सो जहाज़ी नामान के पीछे गया और नामान ने जो देखा कि वुह पीछे दौड़ा आता है तो वुह उसकी भेंट के लिये रथ पर
२२ से उतरा और बोला कि सब कुशल?। उसने कहा कि सब कुशल मेरे स्वामी ने यह कहिके मुझे भेजा है कि देख भविष्यद्वक्ता के सन्तान में से दो तरुण पुरुष अफ़राईम पहाड़ से आये हैं सो अनुग्रह करके उन्हें एक तोड़ा चांदी और दो जोड़े वस्त्र
२३ दीजिये। नामान ने कहा कि मान लेके दो तोड़े ले और उसने उसे सकेत करके दो तोड़े चांदी दो थैलियों में दो जोड़े वस्त्र सहित बांधे और अपने दो सेवकों पर धरा और वे
२४ उठा के उसके आगे आगे गये। और उसने एकान्त में आके उनके हाथ से उन्हें ले लिया और घर में रख के उन पुरुषों को
२५ बिदा किया सो वे चले गये। परन्तु वुह जाके अपने स्वामी के सान्ने खड़ा हुआ तब अलीशा ने उसे कहा कि जहाज़ी कहां से? वुह बोला कि आप का सेवक तो इधर उधर नहीं गया
२६ था। फिर उसने उसे कहा कि मेरा मन नगया था जब वुह जन अपने रथ पर से उतर के तेरी भेंट को फिरा? क्या यह रोकड़ और वस्त्र और जलपाई की और दाख की बारी और भेड़ें और बैल और दास और दासियां लेने का समय है?।

२७ इस लिये नामान का कोढ़ तुझे और तेरे बंश को सदा लगा रहेगा तब वुह उसके आगे से पाला की नाईं कोढ़ी निकल गया ।

६ छठवां पर्ब्ब ।

अलीशा लोहे को उतराता है १—७ सुरिया के राजा के मंत्र को प्रगट करता है ८—१४ सुरिया का राजा अलीशा को पकड़ने भेजता है परन्तु सब के सब अन्धे किये जाके सामरः में पहुंचाये जाते हैं १५—२३ बिनहदाद सामरः को घेरता है और बड़े अकाल के मारे राजा अलीशा को बधन करने चाहता है २४—३३ ।

१ और भविष्यद्वक्तों के पुत्रों ने अलीशा से कहा कि अब देखिये यह स्थान जहां हम आप के संग बसते हैं हमारे लिये अति
२ सकेत है । अब अनुग्रह करके अर्दन को चलिये और वहां से हर एक जन एक एक बल्ला लावे और वहां एक
३ बसगित बनावें वुह बोला कि जाओ । तब एक ने कहा कि मान लीजिये और अपने सेवकों के साथ चलिये उसने उत्तर
४ दिया कि मैं जाओंगा । सो वुह उनके साथ साथ गया और
५ उन्हों ने अर्दन पर आके लकड़ियां काटीं । परन्तु ज्यों एक जन बल्ला काटता था लोहा पानी में गिर पड़ा उसने चिल्ला
६ के कहा कि हे स्वामी यह तो मंगनी का था । ईश्वर का जन बोला कि कहां गिरा? उसने उसे वुह स्थान बताया तब उसने टहनी
७ काट के उधर डाल दिया और लोहा उतरा उठा । तब उसने कहा कि उठा ले और उसने हाथ बढ़ा के उठा लिया ।

८ उस समय सुरिया का राजा इसराईल से लड़ता था और उसने अपने सेवकों से परामर्ष करके कहा कि मैं
९ उस उस स्थान में डेरा करोंगा । तब ईश्वर के जन ने

इसराईल के राजा को कहला भेजा कि चैाकस हो और अमुक स्थान से मत जाइयो क्योंकि वहां सुरियानी उतर आये हैं ।
१० और इसराईल के राजा ने उस स्थान में भेजा जिस के विषय में ईश्वर के जन ने उसे कहिके चैाकस किया था और आप को
११ वारंवार वचा रक्खा । इस लिये इस बात के कारण सुरिया के राजा का मन अति व्याकुल हुआ और उसने अपने सेवकों को बुला के कहा मुझे न बताओगे कि हम्में
१२ इसराईल के राजा का और कौन है? । तब उसके एक सेवक ने कहा कि हे मेरे प्रभु राजा नहीं परन्तु अलीशा भविष्यदक्ता जो इसराईल में है आपकी हर एक बात जो आप अपने शयन स्थान में करते हैं इसराईल के राजा को कहता है ।
१३ उसने कहा कि जा और भेद ले कि वुह कहां जिसतें मैं भेज के उसे लेआओं उसे यह कहिके बोला गया कि देखिये वुह
१४ दासान में है । इस लिये उसने उधर घोड़े और रथ और भारी सेना भेजी और उन्हों ने रात को आकर उस नगर को
१५ घेर लिया । और जब ईश्वर के जन का सेवक तड़के उठा और बाहर निकला तो क्या देखता है कि सेना और घोड़चढ़े और रथ नगर को घेरे हुए हैं तब उसके सेवक ने उसे कहा
१६ कि हाय हे मेरे स्वामी हम क्या करें । उसने उत्तर दिया कि मत डर क्योंकि जो हमारे साथ हैं सो उनके साथियों से
१७ अधिक हैं । तब अलीशा ने प्रार्थना किई और कहा कि हे परमेश्वर कृपा करके इस की आंखें खोल जिसतें यह देखे सो परमेश्वर ने उस तरुण की आंखें खोलीं और उसने जो दृष्टि किई तो देखा कि अलीशा की चारों ओर पहाड़ आग के
१८ घोड़ों और गाड़ियों से भरा हुआ है । और जब वे उस पर उतर आये तो अलीशा ने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा कि इन लोगों को अन्धा करडाल और अलीशा के वचन
१९ के समान उसने उन्हें अन्धा कर डाला । फिर अलीशा ने उन्हें

कहा कि यह मार्ग नहीं यह नगर नहीं तुम मेरे पीछे पीछे चले आओ और मैं तुम्हें उस जन पास पहुंचाओंगा जिसे
२० तुम ढूंढ़ते हो परन्तु वुह उन्हें सामरः में लेगया। और जब वे सामरः में पहुंचे तो यों हुआ कि अलीशा ने कहा कि हे परमेश्वर उनकी आंखें खोल जिसतें वे देखें तब परमेश्वर ने उनकी आंखें खोलीं और वे देखने लगे और क्या देखते हैं कि
२१ हम सामरः के मध्यमें हैं। और इसराईल के राजा ने उन्हें देख के अलीशा से कहा कि हे पिता मैं बधन करों? मैं बधन
२२ करों?। उसने उत्तर दिया कि बधन मत कर क्या जिन्हें तू ने अपनी तलवार और धनुष से बन्धुआ किया तू उन्हें बधन करता? उनके आगे खाना पीना धर दे जिसतें वे खा पीके
२३ अपने स्वामी पास जायें। सो उसने उनके लिये बहुतसा भोजन सिद्ध करवाया और जब वे खा पी चुके तो उसने उन्हें बिदा किया और वे अपने स्वामी पास चले गये और फिर कभी
२४ सुरिया की जथा इसराईल के देश में न आई। इस के पीछे ऐसा हुआ कि सुरिया के राजा बिनहदाद ने अपनी समस्त
२५ सेना एकट्ठी किई और चढ़ के सामरः को घेरा। तब सामरः में बड़ा अकाल पड़ा और वे उसे घेरे रहे यहां लों कि गदहे का सिर नव्वे रुपये के ऊपर बिकता था और कपोत की बीट पाव भर से कुछ ऊपर पांचरुपए से अधिक को बिकती थी।
२६ एक दिन ज्यों इसराईल का राजा भीत पर जाता था एक स्त्री उसके आगे चिल्ला के बोली कि हे मेरे प्रभु राजा सहाय
२७ कीजिये। तब वुह बोला कि यदि परमेश्वरही तेरा सहाय न करे तो मैं तेरा सहाय क्यों कर करों? क्या खत्ते से अथवा
२८ अंगूर के कोल्हू से?। फिर राजा ने कहा कि तुझे क्या हुआ? उसने उत्तर दिया कि इस स्त्री ने मुझे कहा कि आओ तेरे
२९ बेटे को आज खायें और अपने बेटे को कल खायेंगे। सो हम ने अपने बेटे को उसिन के खाया और मैं ने दूसरे दिन

उसे कहा कि अपना बेटा ला जिसतें हम उसे खावें परन्तु
३० उसने अपना बेटा छिपा रक्खा है। राजा ने उस स्त्री की
बातें सुन के अपने कपड़े फाड़े और भीत पर चला जाता
था और लोगों ने जो दृष्टि किई तो देखो अपने शरीर पर
३१ भीतर उदासी वस्त्र पहिने था। तब उसने कहा कि ईश्वर
मुझे वैसा और उसे भी अधिक करे यदि आज शाफ़ात के बेटे
३२ अलीशा का सिर उस पर ठहरे। परन्तु अलीशा अपने घर
में बैठा था और प्राचीन उसके साथ बैठे थे और राजा ने
अपने साथ का एक जन अपने आगे भेजा परन्तु दूत नहीं
पहुंचतेही अलीशा ने प्राचीनों से कहा कि देखो इस बधिक के
बेटे ने कैसा भेजा है कि मेरा सिर काटे? सो देखो जब दूत
आवे तो द्वार बन्द करो और उसे दृढ़ता से द्वार पर पकड़े
रहो क्या उसके पीछे पीछे उसके स्वामी के पांव का शब्द नहीं?।
३३ और वुह उनसे यह कही रहा था तो क्या देखता है कि दूत
उस पास आ पहुंचा और उसने कहा कि देखो यह विपत्ति
परमेश्वर की ओर से है अब आगे मैं परमेश्वर की बाट क्यों
जोहों?।

७ सातवां पर्ब्ब ।

अलीशा सस्ती का सन्देश देता है १—२ चार
कोढ़ी बैरी की छावनी में जाके उनके भागने का
सन्देश लाते हैं ३—११ राजा भेज के सन्देश को
सच पाता है १२—१५ सुरियानी की छावनी लूटी
जाती है अनाज सस्ता होता है और फाटक का
प्रधान लताड़ाजाता है १६—२० ।

१ तब अलीशा ने कहा कि परमेश्वर का वचन सुनो परमेश्वर यों
कहता है कि कल इसी जून सामरः के फाटक पर चोखा पिसान
पांच सूकी का तीन सेर और छः सेर जव पांच सूकी को।

२ तब राजा के एक प्रतिष्ठित ने, जिसके हाथों पर राजा उठंगता था, ईश्वर के जन को उत्तर दिया और कहा कि देख यदि परमेश्वर स्वर्ग में खिड़कियां बनावता तो क्या ऐसा हो सकता? तब उसने कहा कि देख तू उसे अपनी आंखों से देखेगा पर
३ उसे न खायगा। और नगर के फाटक की पैठ में चार कोढ़ी थे उन्हों ने आपुस में कहा कि मरने लों हम यहां क्यों
४ बैठें?। यदि हम कहें कि नगर में जायेंगे तो नगर में अकाल है और हम वहां मर जायेंगे और यदि यहीं बैठे रहें तो भी मरेंगे सो अब चलो हम सुरियानी सेना में जावें यदि वे हमें जीवते छोड़ेंगे तो हम बचेंगे और यदि वे हमे बधन कर
५ तो मरवही करेंगे। सो वे गोधूली में उठ के सुरियानियों की सेना को चल निकले और जब वे सुरियानियों की छावनी के
६ बाहरही बाहर पहुंचे तो देखो वहां कोई न था। क्योंकि परमेश्वर ने रथों का और घोड़ों का और एक बड़ी सेना का शब्द सुरियानियों की सेना को सुनाया तब उन्हों ने आपुस में कहा कि देखो इसराईल का राजा हित्तियों के राजाओं को और मिसरियों
७ के राजाओं को हमारे बिरुद्ध भाड़े में चढ़ा लाया। इस लिये वे उठ के गोधूली में भाग निकले और अपने डेरे और अपने घोड़े और अपने गदहे अर्थात् अपनी छावनी को जैसी की
८ तैसी छोड़ छोड़ अपने अपने प्राण ले भागे। और जब कि कोढ़ी छावनी के बाहरही बार पहुंचे तो वे एक तम्बू में घुसे और वहां खाया और पीया और वहां से रूपा और सोना और वस्त्र लिया और एक स्थान पर जाके छिपा रक्खा और फिर आके दूसरे तम्बू में घुसे और वहां से लेगये और छिपा रक्खा।
९ फिर उन्हों ने आपुस में कहा कि हम अच्छा नहीं करते आज मंगल समाचार का दिन है और हम चुप होरहे हैं यदि हम बिहान की ज्योति लों ठहरें तो दंड पावेंगे सो आओ हम
१० जाके राजा के घराने को सन्देश पहुंचावें। तब उन्हों ने आके

नगर के द्वारपाल को पुकारा और यह कहा कि हम सुरियानियों की छावनी में गये और देखो कि वहां न मनुष्य न मनुष्य का शब्द परन्तु घोड़े और गदहे बन्धे ऊए और तम्बू जैसे के तैसे।
११ और उसने द्वारपालकों को कहा और उन्हों ने राजा के भवन
१२ में भीतर सन्देश पऊंचाया। और राजा रातही को उठा और अपने सेवकों से कहा कि मैं तुम्हें बताताहूं कि सुरियानियों ने हम से क्या किया वे जानते हैं कि हम भूखे हैं इस लिये वे छावनी से निकल के चौगान में यह कहिके छिपे हैं कि जब वे नगर से निकलेंगे तब हम उन्हें जीता पकड़ लेंगे
१३ और नगर में घुसेंगे। और उसके सेवकों में से एक ने उत्तर देके कहा कि हम उन घोड़ों में से जो बचे हैं पांच घोड़े लेवें देख वे इसराईल की बची ऊई मंडली के समान (जो नष्ट
१४ ऊए हैं) आओ उन्हें भेजें और बूझें। सो उन्हों ने रथों के दो घोड़े लिये और राजा ने सुरियानियों की सेना के पीछे लोगों
१५ को यह कहिके भेजा कि जाओ और बूझो। वे उनके पीछे पीछे अर्दन लों चले गये और क्या देखते हैं कि सारे मार्ग में वस्त्र और पात्र जो सुरियानियों ने अपनी उतावली में फेंक
१६ गये थे भरपूर थे तब दूत फिर आके राजा से बोले। तब लोगों ने निकल के सुरियानियों के तम्बूओं को लूटा सो परमेश्वर के बचन के समान चोखा पिसान पांच सूकी का तीन
१७ सेर और जव पांच सूकी का छः सेर बिका। और राजा ने उस प्रतिष्ठित को, जिसके हाथ पर वुह ओंगता था फाटक की चौकसी दिई और लोगों ने फाटक में उसे लताड़ा और जैसा कि परमेश्वर के जन ने कहा था जिसने कहा कि जब
१८ राजा उस पास उतर आया था, वुह मर गया। और जैसा कि ईश्वर के जन ने यह कहिके राजा को बोला कि छः सेर जव पांच सूकी को और तीन सेर चोखा पिसान पांच सूकी को कल इसीजून सामरः के द्वार पर होगा सो पूरा ऊआ।

१९ और उस प्रतिष्ठित ने ईश्वर के जन को उत्तर देके कहा था अब देख यदि परमेश्वर स्वर्ग में खिड़कियां बनावे ऐसा होसक्ता तब उसने कहा कि तू उसे अपनी आंखों से देखेगा पर उस्से २० न खायगा। उस पर ऐसाही कुछ बीता क्योंकि लोगों ने फाटक पर उसे लताड़डाला और वुह मरगया।

८ आठवां पर्ब्ब ।

एक शूनामी स्त्री परदेश में जाके फिर आती है और राजा से अपनी भूमि फेर पाती है १—६ अलीशा दमिश्क को जाता है सुरिया के राजा बिनहदाद का रोग और मृत्यु का सन्देश ७—१३ हज़ाईल बिनहदाद को बधन करके उसकी सन्ती राज्य पर बैठता है १४—१५ यहूराम का बुरा राज्य १६—१९ अदूम और लिबना फिर जाते हैं २०—२२ यहूराम की सन्ती अहाज़िया दुष्टता से राज्य करता है २३—२७ वुह इसराईल के राजा की सहाय करके सुरिया से संग्राम करता है और उस्से यज़रईल में भेंट करता है २८—२९।

१ अलीशा ने उस स्त्री को कहा, जिसके बेटे को उसने जिलाया था, कि उठ और अपने घराने समेत जा और जहां कहीं बास करसके बास कर क्योंकि परमेश्वर एक अकाल लाता है २ सो देश में सात बरस लों अकाल रहेगा। तब वुह स्त्री उठी और उसने ईश्वर के जन के कहने के समान किया और अपने घराने समेत फलस्तानियों के देश में सात बरस लों बास ३ किया। और सातवें बरस के अन्त में ऐसा ऊआ कि वुह स्त्री फलस्तानियों के देश से फिर आई और राजा पास चली गई ४ जिसतें अपने घर और अपनी भूमि के लिये चिल्लावे। तब राजा ईश्वर के जन के सेवक जहाज़ी से यह कहिके बोला कि

सारे बड़े बड़े कार्य जो अलीशा ने दिखलाये हैं उन्हें मेरे आगे
५ वर्णन कर । और ज्यों वुह राजा से कहि रहा था कि उसने
एक मृतक को किस रीति से जिलाया, देखो कि वुह स्त्री, जिसके
बेटे को उसने जिलाया था, आके राजा के आगे अपने घर और
भूमि के लिये चिल्लाई तब जहाज़ी बोल उठा कि हे मेरे प्रभु
राजा वुह स्त्री और उसका बेटा जिसे अलीशा ने जिलाया
६ यही है । और जब राजा ने उस स्त्री से पूछा तो उसने बताया
तब राजा ने एक प्रधान को उसके संग करके कहा कि उसका
सब कुछ और उसके अन्न जिस दिन से उसने यह भूमि छोड़ी
७ है आज के दिन लों फेर दिलाओ । तब अलीशा दमिश्क
में आया और सुरिया का राजा बिनहदाद रोगी था और
८ उसे सन्देश पहुंचा कि ईश्वर का जन यहां आया है । और
राजा ने हज़ाईल को कहा कि कुछ दान हाथ में ले और ईश्वर
के जन से भेंट करके उसके द्वारा से परमेश्वर से बूझ और कह
९ क्या मैं इस रोग से चंगा होओंगा? । सो हज़ाईल उसे भेंट
करने चला और उसने दमिश्क की समस्त अच्छी वस्तु भेंट के
लिये हाथ में लिईं अर्थात् चालीस ऊंट लदेहुए और उसके
आगे खड़े होके कहा कि आप के बेटे बिनहदाद सुरिया के
राजा ने मुझे यह कहिके आप पास भेजा है और पूछा है कि
१० मैं इस रोग से चंगा होंगा? । अलीशा ने उसे कहा कि
जाके उसे कह कि तू निश्चय चंगा होय तथापि परमेश्वर ने
११ मुझे दिखाया है कि वुह निश्चय मर जायगा । और उसने
रूप स्थिर करके यहां लों रक्खा कि वुह लज्जित हुआ और
१२ ईश्वर के जन ने बिलाप किया । तब हज़ाईल ने कहा कि मेरा
प्रभु क्यों रोता है? उसने उत्तर दिया इस लिये कि मैं जानता
हों कि तू इसराईल के सन्तान से कैसी बुराई करेगा और
उनके दृढ़ गढ़ों को फूंक देगा और उनके तरुणों को तलवार से
घात करेगा और उनके बालकों को दे दे पटकेगा और उसकी

१३ गर्भिणियों को फाड़ेगा। तब हज़ाईल बोला क्या आप का सेवक कुत्ता है कि वुह ऐसी बुरी बात करे? तब अलीशा बोला परमेश्वर ने मुझे बताया है कि तू सुरिया का राजा होगा।
१४ फिर वुह अलीशा पास से अपने स्वामी के पास गया जिसने उसे पूछा कि अलीशा ने तुझे क्या कहा? उसने कहा कि उसने मुझे
१५ बताया कि तू अवश्य चंगा होगा। और बिहान को ऐसा हुआ कि उसने एक मोटा कपड़ा लिया और उसे पानी में चभोड़ के उसके मुंह पर यहां लों फैलाया कि वुह मर गया
१६ और हज़ाईल ने उसकी सन्ती राज्य किया। और अहाब के बेटे इसराईल के राजा यूराम के राज्य के पांचवें बरस जब यहूशाफ़ात यहूदा का राजा था तब यहूशाफ़ात का बेटा
१७ यहूराम यहूदा के राज्य पर बैठने लगा। जब कि वुह राज्य करने लगा उसकी बय बत्तीस बरस की थी उसने यिरोशलीम
१८ में आठ बरस राज्य किया। और वुह अहाब के घराने के समान इसराईली राजाओं की चाल पर चलता था क्योंकि अहाब की बेटी उसकी पत्नी थी और उसने परमेश्वर की दृष्टि
१९ में बुराई किई। तथापि परमेश्वर ने न चाहा कि यहूदा को नाश करे क्योंकि उसे अपने सेवक दाऊद का पक्ष था कि उसने उसे बाचा दिई थी कि मैं तुझे और तेरे बंश को सर्वदा के
२० लिये एक दीपक दूंगा। उसके समय में अदूम यहूदा के बश से फिर गये और उन्हों ने अपने लिये एक राजा बनाया।
२१ तब यूराम साईर में आया और सारे रथ उसके साथ थे और उसने रात को उठ के अदूमियों को, जो उसे घेरे हुए थे, और रथों के प्रधानों को, मारा और लोग अपने अपने तम्बूओं
२२ को भाग गये। परन्तु अदूम आज के दिन लों यहूदा के बश से
२३ फिर गये उसी समय में लबना भी फिर गये। और यूराम की उबरी हुई क्रिया और सब कुछ जो उसने किया था सो क्या यहूदा के राजाओं के समयों के समाचार की

२४ पुस्तक में लिखा नहीं है?। फिर यूराम ने अपने पितरों में शयन किया और दाऊद के नगर में अपने पितरों में गाड़ा गया और उसका बेटा अहाज़िया उसकी सन्ती राज्य पर बैठा।

२५ और इसराईल के राजा अहाब के बेटे यूराम के बारहवें बरस यहूदा का राजा यहूराम का बेटा अहाज़ीया राज्य पर

२६ बैठा। जब अहाज़िया राज्य पर बैठा तब वुह बाईस बरस का था और यिरोशलीम में एक बरस राज्य किया और उसको माता का नाम अथालिया जो इसराईल के राजा उमरी

२७ की बेटी थी। और वुह अहाब के घराने की चाल पर चलता था और उसने अहाब के घराने के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई क्योंकि वुह अहाब के घराने का जवांई था।

२८ और वुह अहाब के बेटे यूराम के साथ सुरिया के राजा हज़ाईल से लड़ने को रामूस जलियाद पर चढ़ा और सुरियानियों

२९ ने यूराम को घायल किया। सो राजा यूराम यज़रईल को फिर गया जिसतें उन घावों से चंगा होवे जो सुरियानियों ने, जब वुह सुरिया के राजा हज़ाईल से लड़ा था, उसे घायल किया और यहूराम का बेटा यहूदा का राजा अहज़िया यज़रईल को गया जिसतें अहाब के बेटे यूराम को देखे क्योंकि वुह घायल था।

९ नवां पर्ब्ब ।

अलीशा की आज्ञा से एक जन जाके याहू को अभिषेक करता है १—१० इसका सन्देश देके वुह राजा प्रचारा जाता है और यूराम के बिरोध में अज़रईल को जाता है ११—१६ यूराम दूतों को याहू पास भेजता है जो उन्हें रोक लेता है १७—२० यूराम मारा जाता है २१—२६ अहाज़िया मारा जाके यिरोशलीम में गाड़ा जाता है २७—२९ यज़ाबील मारी जाती है और कुत्ते उसे खाते हैं ३०—३७।

१ तब अलीशा भविष्यदक्ता ने भविष्यदक्ताओं के सन्तानों में से एक को बुलाया और कहा कि कटि बान्ध और तेल की यह कुप्पी
२ अपने हाथ में ले और रामूस गिलियाद को जा। और जब तू वहां पहुंचे तो निमशी के बेटे यहूशाफात के बेटे याहू को ढूंढ़ ले और भीतर जाके उसे अपने भाईयों में से उठाके
३ भीतर की कोठरी में लेजा। और कुप्पी का तेल लेके उसके सिर पर ढाल और कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे इसराईल पर राज्याभिषेक किया तब तू द्वार खोल के
४ भाग और ठहर मत। सो वुह तरुण अर्थात् वुह तरुण
५ भविष्यदक्ता रामूस गिलियाद को गया। और जब वुह आया तो क्या देखता है कि सेनापति बैठे हैं उसने कहा कि हे सेनापति आपके लिये मुझ पास सन्देश है याहू ने कहा कि हम सभों में से किस के लिये? उसने कहा कि आप के लिये हे सेनापति।
६ वुह उठ के घर में गया और उसने उसके सिर पर वुह तेल ढाल के उसे कहा कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे ईश्वर के लोगों पर अर्थात् इसराईल पर
७ राज्याभिषेक किया। और तू अपने स्वामी अहाब के घराने को मारेगा जिसतें मैं अपने सेवक भविष्यदक्ताओं के लहू का और परमेश्वर के सारे सेवकों के लहू का यज़ाबील के हाथ से
८ पलटा लेओं। क्योंकि अहाब का सारा घर नष्ट होगा और मैं अहाब से हर एक पुरुष को और जो बन्द है और जो इसराईल
९ में बचा हुआ है काट डालोंगा। और मैं अहाब के घर को नाबात के बेटे यूर्बआम के घर के समान और अहीज़ा के बेटे बआशा के घर
१० के समान करोंगा। और यज़ाबील को यज़रईल के भाग में कुत्ते खायेंगे वहां कोई गड़वैया न होगा और वुह द्वार खोल के
११ भागा। तब याहू निकल के अपने प्रभु के सेवकों के पास आया और एक ने उसे कहा कि सब कुशल है? यह बौड़हा तेरे पास किस लिये आया? उसने उन्हें कहा कि तुम उस

१२ पुरुषको और उसके सन्देश को जानते हो। वे बोले कि झूठ हमें अब बता तब उसने कहा कि उसने मुझे यों यों कहिके मुझसे बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे इसराईल
१३ पर राज्याभिषेक किया। उन्हों ने हाली करके हर एक ने अपना अपना वस्त्र लिया और अपने नीचे सीढ़ी पर रक्खा और यह कहिके नरसिंगा फूंका कि याहू राज्य करता है।
१४ सो नमशी के बेटे यहूशाफ़ात का बेटा याहू ने यराम के बिरोध में गुष्ठ बान्धी (अब सुरिया के राजा हज़ाईल के कारण यूराम और सारे इसराईल रामूस गिलियाद की रक्षा करते थे।
१५ परन्तु राजा यहूराम ने उन घाओं से, जो सुरियानियों ने उसे मारा था, जब वुह सुरिया के राजा हज़ाईल से लड़ा था चंगा होने फिर आया) तब याहू ने कहा कि यदि तुम्हारे मन होवें तो नगर से किसी को न निकलने न बचने देओ न होवे
१६ कि यज़रईल में हमारा समाचार पहुंचावे। सो याहू रथ पर चढ़के यज़रईल को गया क्योंकि यूराम वहीं था और यहूदा का राजा अहाज़िया यूराम को देखने को उतर आया
१७ था। और यज़रईल को बुर्ज पर एक पहरू था उसने ज्यों याहू की जथा को आते देखा त्यों कहा कि मैं एक जथा को देखता हों यूराम ने कहा कि एक घोड़चढ़े को लेके उनको भेंट के लिये
१८ भेज और पूछ कि कुशल है?। सो उसकी भेंट के लिये एक जन घोड़े पर चढ़के आगे बढ़ा और जाके उसने कहा कि राजा पूछता है कि कुशल है? याहू ने कहा कि तुझे कुशल से क्या! मेरे पीछे होले फिर पहरू यह कहिके बोला कि दूत उन
१९ पास पहुंचा परन्तु फिर नहीं आता। तब उसने दूसरे को घोड़े पर भेजा उसने भी उन पास पहुंचके कहा कि राजा पूछता है कि कुशल है! याहू ने उत्तर दिया कि तुझे कुशल से
२० क्या? मेरे पीछे होले। फिर पहरू यह कहिके बोला कि वुह भी उन पास पहुंचा और फिर नहीं आता और हांकना नमशी

के बेटे याहू के हांकने के समान है क्योंकि वुह बैाड़ाहपन से
२१ हांकता है। तब यूराम ने कहा कि जोतो सो उसका रथ
जोता गया तब इसराईल का राजा यूराम और यहूदा का
राजा अहज़िया अपने अपने रथ पर बाहर गये और वे याहू
के बिरोध में बाहर गये और उसे यज़रईली नाबूस के भाग में
२२ पाया। तब यूराम ने याहू को देख के कहा कि याहू कुशल
है? याहू बोला कैसा कुशल कि जब लों तेरी माता यज़ाबील का
२३ छिनाला और उसके टोने इतने हैं?। तब यूराम अपने हाथ
फेर के भागा और अहाज़िया से कहा कि हे अहाज़िया छल
२४ है। तब याहू ने अपना हाथ धनुष से भरा और यहूराम
की भुजाओं के मध्य में मारा और बाण उसके हृदय में पैठ
२५ गया और वुह अपने रथ में झुक गया। तब उसने अपने
प्रधान बिदकार से कहा कि उसे उठा के यज़रईली नाबूस के
खेत के भाग में डाल दे क्योंकि चेत कर कि जब में और तू
उसके बाप अहाब के पीछे चढ़े जाते थे परमेश्वर ने यह बोझ
२६ उस पर धरा था। परमेश्वर कहता है कि निश्चय मैं ने नाबूस
के लहू और उसके बेटों के लहू को कल देखा है और परमेश्वर
कहता है कि मैं तुझे इसी भाग में पलटा लओंगा सो परमेश्वर
२७ के बचन के समान उसे लेके उसी स्थान में डाल दे। परन्तु
जब यहूदा के राजा अहज़िया ने यह देखा तो वुह घर की
बारी के मार्ग से निकल भागा और याहू ने उसका पीछा किया
और कहा कि उसे भी रथ में मार लेओ सो उन्हों ने गूर के
मार्ग में जो इब्लियाम के लग है उसे मारा और वुह भाग के
२८ मगद्द में आया और वहां मर गया। और उसके सेवक उसे
रथ में डाल के यिरोशलीम को ले गये और उसे उसकी समाधि
२९ में दाऊद के नगर में उसके पितरों के साथ गाड़ा। और
अहाब के बेटे यूराम के ग्यारहवें बरस अहज़िया यहूदा पर
३० राज्य करने लगा। और जब याहू यज़रईल को आया

तो यज़ाबील ने सुना और अपनी आंखों में अंजन लगाया और अपना मस्तक सवांरा और एक झरोखे से झांकने लगी।
३१ और ज्योंहीं याहू ने फाटक में से प्रवेश किया और वुह बोली कि क्या ज़मरी को कुशल मिला जिसने अपने प्रभु को बधन किया?।
३२ तब याहू ने झरोखे की ओर मस्तक उठाया और कहा कि मेरी ओर कौन है? कौन! और उसकी ओर दो तीन शयन
३३ स्थान के प्रधानों ने देखा। तब उसने कहा कि उसे गिरा दो सो उन्हों ने उसे नीचे गिरा दिया और उसका लोहू भीत पर
३४ और घोड़ों पर पड़ा और उसने उसे लताड़ा। और भीतर आके खा पी के कहा कि जाओ और उस स्रापित को देखो और
३५ उसे गाड़ो क्योंकि वुह राज पुत्री है। और वे उसे गाड़ने गये परन्तु उन्हों ने उसकी खोंपड़ी और उसके पांओं और
३६ हथेलियों से अधिक कुछ न पाया। तब वे फिर आये और उसे सन्देश दिया वुह बोला कि यह वुह बात है जो परमेश्वर ने अपने सेवक इलियास तश्बी के द्वारा से कही थी कि यज़रईल
३७ के भाग में कुत्ते यज़ाबील का मांस खायेंगे। और यज़ाबील की लोथ यज़रईल के भाग में खेत पर खाद की नाईं पड़ी रहेगी और न कहेंगे कि यह यज़ाबील है।

१० दसवां पर्ब्ब ।

याहू की आज्ञा से अहाब राजा के सत्तर बेटे मारे जाते हैं १—७ अहाब का सारा कुल मारा जाता है ८—११ याहू अहाज़िया के बयालीस भाइयों को बधन करता है १२—१४ अहाब के बचे हुए कुल को बधन करता है १५—१७ याहू के सारे पुरोहितों को बधन करता है १८—२८ यूर्बआम के पाप में आप रहता है उसकी चौथी पीढ़ी लों राज्य रहता है २९—३१ हज़ाईल इसराईलियों

को मारता है याहू मरता है और यहूहाज़ उसकी सन्ती राज्य पर बैठता है ३२—३६ ।

१ और सामरः में अहाब के सत्तर बेटे थे सो याहू ने पत्र लिखे और यज़रईल के आज्ञाकारियों के और प्राचीनों के, और अहाब के सन्तानों के पालकों के पास सामरः को यह कहिके
२ भेजा । जैसा कि तुम्हारे प्रभु के बेटे और रथ और घोड़े और बाड़ित नगर और नगर भी और अस्त्र हैं, सो इस पत्र
३ के तुम्हारे पास पहुंचतेही । जो तुम्हारे स्वामी के बेटों में से सब से अच्छा और योग्य होवे देख के उसके पिता के सिंहासन पर उसे बैठाओ और अपने स्वामी के घर के लिये लड़ाई करो ।
४ परन्तु वे अत्यन्त डर गये और बोले कि देखो दो राजा तो
५ उसका साम्ना न करसके फेर हम क्योंकर ठहरेंगे ? । तब जो घर का प्रधान था और जो नगर का प्रधान था और प्राचीन और पालकों ने याहू को कहला भेजा कि हम आप के सेवक आप जो कुछ कहेंगे सो सब हम मानेंगे हम राजा न बनावेंगे
६ जो आप को अच्छा लगे सो कीजिये । तब उसने उनके पास यह कहिके दूसरी पत्री लिखी कि यदि तुम मेरी ओर हो और मेरा शब्द मानोगे तो अपने स्वामी के बेटों के मस्तकों को लेके कल इसी समय मुझ पास यज़रईल में चले आओ अब राजा के बेटे सत्तर जन होके नगर के महत लोगों के साथ थे जो
७ उनके पालक थे । और जब यह पत्री उनके पास पहुंची तो उन्हों ने सत्तर जन राजपुत्रों को मार डाला और उनके मस्तकों
८ को टोकरों में रख के उस पास यज़रईल में भेजा । तब एक दूत आया और यह कहिके उसे बोला कि वे राजपुत्रों के मस्तक लाये हैं वुह बोला कि नगर के फाटक की पैठ में बिहान
९ लों उनकी दो ढेर कर रक्खो । और यों हुआ कि प्रातःकाल को वुह बाहर जाके खड़ा हुआ और सब लोगों से कहा कि तुम धर्म्मी हो देखो मैं ने तो अपने स्वामी के बिरुद्ध गुष्ठ बांध के उसे बधन

१० किया पर इन सभों को किसने घात किया?। अब जानो कि परमेश्वर के वचन में से जो परमेश्वर ने अहाब के घर के बिषय में कहा था कोई बात भूमि पर न गिरेगी क्योंकि परमेश्वर ने, जो कुछ कि अपने सेवक इलियास के द्वारा से कहा था, उसे
११ पूरा किया। सो याहू ने उन सब को जो अहाब के घराने से यज़रईल में बच रहे थे और उसके समस्त महत जनों को और उसके कुटुम्बों को और उसके पुरोहितों को मार डाला यहां लों
१२ कि एक को भी न छोड़ा। फिर वुह उठा और चल के सामरः को आया और ज्यों वुह गड़रियों के घर के पास, जो
१३ भेड़ बांधते थे पहुंचा। याहू ने यहूदा के राजा अहज़िया के भाइयों को पाया और कहा कि तुम कौन? वे बोले कि हम अहज़िया के भाई राजा और रानी के पुत्रों के कुशल के लिये
१४ जाते हैं। तब उसने आज्ञा किई कि उन्हें जीते पकड़ लेओ सो उन्हों ने उन्हें जीते पकड़ लिया और उन्हें अर्थात् बयालीस को रोम कतरने के घर के गड़हे पर मार डाला उन में से एक को
१५ न छोड़ा। फिर वहां से चला और रिकाब के बेटे यहूनादाब को पाया जो भेंट करने को आता था तब उसने उसे आशीष देके पूछा कि जैसा मेरा मन तेरे मन के साथ है वैसा तेरा मन ठीक है? यहूनादाब ने उत्तर दिया कि है यदि होवे तो अपना हाथ मुझे दे सो उसने उसे अपना हाथ दिया और
१६ उसने उसे रथ पर अपने साथ बैठा लिया। और कहा कि मेरे साथ चल और परमेश्वर के लिये मेरा ज्वलन देख सो
१७ उसने उसके साथ रथ पर बैठ लिया। और जब वुह सामरः में पहुंचा तो उसने उन सभों को, जो अहाब के बचे हुए थे मार डाला यहां लों कि जैसा परमेश्वर ने इलियास के द्वारा
१८ से कहा था उसने उसे नष्ट कर दिया। फिर याहू ने सब लोगों को एकट्ठा किया और उन्हें कहा कि अहाब ने बअ़ाल
१९ की थोड़ी पूजा किई याहू उसकी बहुतसी पूजा करेगा। अब

बअाल के सारे भविष्यद्वक्तों को और उसके सारे सेवकों और उसके सारे पुजेरियों को मुझ पास बुलाओ उन में से एक भी न छूटे क्योंकि मैं बअाल के लिये बड़ा बलि चढ़ाओंगा और जो कोई घटेगा सो जीवता न बचेगा परन्तु याहू ने चतुराई
२० से किया जिसतें बअाल के पुजेरियों को नाश करे। और याहू ने कहा कि बअाल के लिये पर्व्व शुद्ध करो और उन्हों ने
२१ प्रचारा। और याहू ने समस्त इसराईलियों में भेजा और बअाल के सारे पुजेरी आये ऐसा कोई न था जो न आया हो और वे बअाल के मन्दिर में गये और बअाल का मन्दिर
२२ ऐसा भर गया कि वे मुंह से मुंह खड़े ऊए। फिर उसने वस्त्र के घर के प्रधान को कहा कि सारे बअाल पूजकों के लिये वस्त्र
२३ निकाल ला सो वुह उनके लिये वस्त्र निकाल लाया। तब याहू और राकाब का बेटा याहूनादाब बअाल के मन्दिर में गये और बअाल पूजकों से कहा कि खोजो और देखो कि यहां तुम्हारे मध्य में परमेश्वर के सेवकों में से कोई न हो
२४ परन्तु केवल बअाल पूजक। और जब वे भेंट और बलिदान चढ़ाने को भीतर गये याहू ने बाहर बाहर अस्सी जन ठहरा रक्खा और उन्हें कहा कि यदि कोई इन लोगों में से, जिन्हें मैं ने तुम्हारे हाथ में कर दिया है, बच निकले तो उसका प्राण
२५ उसके प्राण की सन्ती होगा। और ऐसा ऊआ कि ज्यों वुह होम की भेंट चढ़ा चुका तो याहू ने पहरू को और प्रधानों को आज्ञा किई कि घुसो और उन्हें मार डालो एक भी बाहर निकलने न पावे सो उन्हों ने उनको तलवार की धार से मार डाला और पहरू और प्रधान उनकी लोथों को बाहर फेंक के
२६ बअाल के मन्दिर के नगर में गये। और उन्हों ने बअाल के
२७ मन्दिर की मूरतों को निकाला और उन्हें जला दिया। और बअाल की मूरत को चकनाचूर किया और बअाल का मन्दिर ढा दिया और आज के दिन लों दिशा फिरने का घर बनाया।

२८ यों याहू ने बअाल को इसराईल में से नष्ट किया।
२९ परन्तु याहू ने उन पापों को, जो नाबात के बेटे यूर्बआम ने इसराईलियों से करवाया था छोड़ न दिया अर्थात् सोने के बछड़ों को जो बैतईल और दान में थे रहने दिया।
३० तब परमेश्वर ने याहू से कहा इस कारण कि जो मेरी दृष्टि में अच्छा था तू ने उसे किया है और जो कुछ कि मेरे मन में था तू ने अहाब के घराने पर किया है सो तेरे सन्तान चौथी पीढ़ी लों इसराईल के सिंहासन पर बैठेंगे।
३१ पर याहू इसराईल के ईश्वर परमेश्वर की व्यवस्था पर अपने सारे मन से न चला क्योंकि उसने यूर्बआम के पापों को न छोड़ा जिसने इसराईलियों से पाप करवाया।
३२ उन दिनों में परमेश्वर ने इसराईलियों को काट काट के घटाना आरंभ किया और हज़ाईल ने उन्हें इसराईल के सारे सिवानों में मारा।
३३ अर्दन से लेके उदय की ओर सारे जलियाद के देश और जादी और राऊबीनी और मनस्साई अरूईर से लेके, जो अरनून की नदी के लग है अर्थात् जलियाद और बासान लों।
३४ अब याहू की रही ऊई क्रिया और सब जो उसने किया और उसके सारे पराक्रम क्या इसराईली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा?।
३५ उसके पीछे याहू अपने पितरों में सो रहा और उन्हों ने उसे सामरः में गाड़ा और उसके बेटे यहूआज़ ने उसकी सन्ती राज्य किया।
३६ और जिन दिनों में याहू ने सामरः में इसराईल पर राज्य किया सो अट्ठाईस बरस थे।

११ ग्यारहवां पर्ब्ब।

अथालिया यहूदा के राज्य सन्तान को बधन करती है परन्तु यूआश मन्दिर में पाला जाता है १—३ प्रधान याजक उसे अभिषेक करता है ४—१२ अथालिया मारी जाती है १३—१६ प्रधान

याजक परमेश्वर में और राजा और लोगों में
बाचा बांधता है बआल की पूजा मिटाता है और
यूआश कुशल से राज्य करता है १७—२१ ।

१ तब अहाज़िया की माता अथालिया ने ज्यों देखा कि मेरा बेटा मूआ तो उठी और राजा के सारे बंश को मार डाला।
२ परन्तु अहाज़िया की बहिन यूराम राजा की बेटी यहोशीबा ने अहाज़िया के बेटे यूआश को लिया और उसे उन राजपुत्रों में से जो मारे गये थे चुरा के उसे और उसकी धाई को शयन स्थान में अथालिया से छिपाया यहां लों कि वुह मारा न गया।
३ और वुह उसके साथ परमेश्वर के मन्दिर में छः बरस लों छिपा रहा और अथालिया देश पर राज्य करती रही।
४ और सातवें बरस युहायदा ने सौ सौ के अध्यक्षों को और प्रधानों को पहरुओं समेत बुला भेजा और उन्हें परमेश्वर के मन्दिर में अपने पास बुला के उनसे बाचा बांधी और परमेश्वर के मन्दिर में उनसे किरिया लिई और राजा के बेटे को उन्हें दिखाया।
५ और उसने यह कहिके उन्हें आज्ञा किई कि तुम यह काम करो कि तुम्हारा तीसरा भाग जो बिश्राम में भीतर जाता है राजा के भवन का रक्षक होवे।
६ और तीसरा भाग सूर के फाटक पर रहे और तीसरे फाटक पर पहरुओं के पीछे इस रीति से भवन की रक्षा करोगे जिसतें ढाया न जाय।
७ और तुमसभों में से दो जथा जो बिश्राम में निकलतो हैं राजा के आस पास होके परमेश्वर के मन्दिर की रखवाली करें।
८ और राजा की चारों ओर रहो और हर एक जन शस्त्र हाथ में लिये रहे और जो बाड़े के भीतर आवे सो मारा जाय और बाहर भीतर आते जाते राजा के साथ रहो।
९ तब जैसा युहायदा याजक ने समस्त आज्ञा किई थी शतपतियों ने वैसाही किया और उन में से हर एक ने अपने अपने जनों को, जो बिश्राम में बाहर भीतर आने जाने

१० पर थे लिया युहायदा याजक पास आये। याजक ने राजा दाऊद की बरछियां और ढालें जो परमेश्वर के मन्दिर में
११ थीं शतपतियों को दिईं। और पहरू अपने अपने शस्त्र हाथ में लेके हर एक जन मन्दिर के दहिने कोने से लेके बायें कोने लों और बेदी की और मन्दिर की और राजा की चारों ओर
१२ खड़े हुए। फिर वुह राजपुत्र को निकाल लाया और उस पर मुकुट रख के उसे साक्षी दिई और उसे राजा बनाया और अभिषेक किया और उन्हों ने तालियां बजाईं और बोले कि
१३ राजा जीवे। और जब अथालिया ने पहरुओं और लोगों का शब्द सुना तो वुह लोगों में परमेश्वर के मन्दिर में पहुंची।
१४ और क्या देखती है कि व्यवहार के समान राजा खंभे से लगा हुआ खड़ा है और अध्यक्ष और नरसिंगे के बजवैये राजा के लग खड़े हैं और देश के सारे लोग आनन्द में हैं और नरसिंगे फूंकते हैं तब अथालिया ने अपने कपड़े फाड़े और चिल्ला के
१५ बोली कि छल छल। परन्तु युहायदा याजक ने शतपतियों को और सेना के अध्यक्षों को आज्ञा किई और कहा कि उसे बाड़ों से बाहर करो और जो उसका पीछा करे उसे तलवार से मार डालो क्योंकि याजक ने कहा था कि वुह परमेश्वर के
१६ मन्दिर में मारी न जाय। तब उन्हों ने उस पर हाथ चलाये और वुह उस मार्ग में, जिस मार्ग से घोड़े राजा के भवन में
१७ आते थे, जाती थी और वहां मारी गई। और युहायदा ने परमेश्वर के और राजा के और लोगों के मध्य में एक बाचा बांधी कि वे परमेश्वर के लोग होवें और राजा और लोगों
१८ के मध्य में बाचा बांधी। तब देश के सारे लोग बआल के मन्दिर में आये और उसे ढाया और उन्हों ने उसकी मूरतों और उसकी बेदियों को चकनाचूर किया और बआल के पुरोहित मत्तन को बेदियों के सन्मुख घात किया और याजक
१९ ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये पदों को ठहराया। फिर उसने

शतपतियों को और प्रधानों को और पहरुओं को और देश के सारे लोगों को लेके वे राजा को परमेश्वर के मन्दिर से उतार के पहरुओं के फाटक के मार्ग से राज भवन में लाये
२० और वुह राजाओं के सिंहासन पर बैठा। और देश के सारे लोग आनंदित ऊए और नगर में चैन ऊआ और उन्हों ने
२१ अथालिया को राज भवन के लग खड्ग से घात किया। और जब यहूआश राजा सिंहासन पर बैठा तब वुह सात बरस का था।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

प्रधान याजक के जीवन भर यहूआश अच्छा राज्य करता है १—३ मन्दिर के सुधारने की युक्ति बांधता है ४—१६ मन्दिर के धन हज़ाईल को देता है और अपने सेवकों से मारा जाता है और उसका बेटा उसकी सन्ती राज्य करता है १७—२१ ।

१ और याहू के सातवें बरस यहूआश राज्य करने लगा और उसने यिरोशलीम में चालीस बरस राज्य किया उसकी माता
२ का नाम बीरशबा की सिबिया था। जबलों युहायदा याजक यहूआश को उपदेश करता रहा उसके जीवन भर उसने परमेश्वर
३ की दृष्टि में भलाई किई। परन्तु ऊंचे स्थान दूर न किये गये थे और लोग अबलों ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते थे और
४ सुगंध जलाते थे। और यहूआश ने याजकों से कहा कि पवित्रता के सारे रोकड़ जो परमेश्वर के मन्दिर में पऊंचाये जाते हैं अर्थात् हर एक गिने ऊए का रोकड़ जो प्राण का मोल ठहरता है और समस्त रोकड़ जो हर एक अपनी इच्छा से
५ परमेश्वर के मन्दिर में लाता है। सो याजक हर एक अपने अपने जान पहिचान से लेवें और घर के दरारों को, जहां
६ कहीं दरार पाये जावें सुधारें। परन्तु ऐसा ऊआ कि यहूआश के राज्य के तेईसवें बरस लों याजकों ने मन्दिर के दरारों को न

७ सुधारा। तब यहूआश राजा ने युहायदा याजक को और और याजकों को बुला के उन्हें कहा कि घर के दरारों को क्यों नहीं सुधारते हो? सो अब अपने अपने जान पहिचानों से रोकड़ मत लेओ परन्तु उसे घर के दरारों के लिये सौंपो।
८ और याजकों ने लोगों से रोकड़ न लेने को मान लिया कि घर
९ के दरारों को न सुधारें। परन्तु युहायदा याजक ने एक मंजूषा लिई और उसके ढपने पर एक छेद किया और उसे बेदी के लग परमेश्वर के मन्दिर में जाने की दहिनी ओर रक्खा और याजक जो डेवढ़ी की रक्षा करता था सब रोकड़ को, जो परमेश्वर
१० के मन्दिर में लाये जाते थे उस में रखता था। और ऐसा था कि जब मंजूषा में बहुत रोकड़ होता था तो राजा का लेखक और प्रधान याजक आके रोकड को थैलियों में बांधते थे और उस रोकड़ को, जो परमेश्वर के मन्दिर में पाते थे, गिनते
११ थे। और वे उस गिने हुए रोकड़ को उनके हाथ में देते थे जो काम करते थे जो ईश्वर के मन्दिर पर करोड़े थे और वे बढ़इयों को और थवइयों को, जो परमेश्वर के मन्दिर का काम
१२ बनाते थे। और पत्थरियों को और पत्थर के गढ़वैयों को और लट्ठे और छांटे हुए पत्थर के लिये उठान करते थे जिसतें परमेश्वर के मन्दिर के दरारों को सुधारें और सब के लिये जो घर के
१३ सुधारने के लिये उठाये जाते थे। तथापि उस रोकड़ से, जो परमेश्वर के मन्दिर में आता था परमेश्वर के मन्दिर के लिये चांदी के कटोरे और कतरनियां और थालियां और तुरहियां कोई
१४ सोने का पात्र अथवा चांदी का पात्र नहीं बनाया गया। परन्तु बनिहारों को देते थे और उससे परमेश्वर के मन्दिर को सुधारते
१५ थे। और जिनके हाथ रोकड़ को बनिहारों के लिये सौंपते थे वे उनसे लेखा न लेते थे क्योंकि वे सच्चाई से उठाते थे।
१६ अपराध के रोकड़ और पाप के रोकड़ परमेश्वर के मन्दिर
१७ में न लाते थे परन्तु वे याजक के थे। और उसी समय

सुरिया का राजा हज़ाईल चढ़ गया और गातसे लड़के उसे लेलिया
१८ और फिर यिरोशलीम की ओर फिरा कि उसे भी लेवे। तब यहूदा के राजा यहूआश ने समस्त पवित्र किई गई बस्तें, जो उसके पितर यहूशाफ़ात और यूराम और अहाज़िया यहूदा के राजाओं ने भेंट चढ़ाई थीं और उसको अपनी पवित्र किई ऊई बस्तु उस सब सोने समेत जो परमेश्वर के मन्दिर के भंडारों और राजा के भवन में पाया गया लेके सुरिया के राजा हज़ाईल पास भेजी तब वुह यिरोशलीम से चला गया।
१९ और यूआश की रही ऊई क्रिया और सब कुछ जो उसने किया सो क्या यहूदा के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में
२० लिखा ऊआ नहीं है?। तब उसके सेवकों ने उठके युक्ति बांधी और यूआश को मिल्लू के घर में, जो सिल्ला को उतरता है घात
२१ किया। क्योंकि शमियात के बेटे यज़ाख़ार और शोमीर के बेटे यहाज़ाबाद उसके सेवकों ने उसे मारा और वुह मर गया और उन्हों ने उसके पितरों के संग दाऊद के नगर में उसे गाड़ा और उसका बेटा अमासिया उसकी सन्ती राज्य पर बैठा।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

यहूहाज़ का बुरा राज्य इसराईल का सताया जाना याहूहाज़ की मृत्यु और उसका बेटा यूआश उसकी सन्ती राज्य पर बैठता है १—९ उसका बुरा राज्य मृत्यु और यूर्बआम का राज्य पाना १०—१३ अलीशा का रोग और आगम बचन १४—१९ अलीशा की मृत्यु देश का घेरा जाना अलीशा की हड्डी के लगने से एक मृतक जी उठता है २०—२१ हज़ाईल की मृत्यु और यूआश तीन बार जय पाता है २२—२५ ।

१ यहूदा के राजा अहज़िया के बेटे यूआश के तेईसवें बरस याहू

के बेटे यहूहाज़ ने सामरः में इसराईल पर राज्य करना
२ आरंभ किया और सत्रह बरस राज्य किया। और उसने
परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और नाबात के बेटे यूर्बआम
के पापों का पीछा किया जिसने इसराईल से पाप करवाया वुह
३ उनसे अलग न ज़आ। तब परमेश्वर का क्रोध इसराईल पर
भड़का और उसने उन्हें सुरिया के राजा हज़ाईल को और
हज़ाईल के बेटे बिनहदाद को उनके जीवन भर सौंप दिया।
४ और यहूहाज़ ने परमेश्वर की बिनती किई और परमेश्वर ने
उसकी सुनी इस लिये कि उसने इसराईल का सतायजाना देखा
५ क्योंकि सुरिया का राजा उन्हें सताता था। (और परमेश्वर
ने इसराईल को एक उद्धारक दिया यहां लों कि वे सुरियानियों
के वश से निकल गये और इसराईल के सन्तान आगे की नाईं
६ अपने अपने डेरों में रहने लगे। तथापि उन्हों ने यूर्बआम के
घर के पापों को न छोड़ा उसने इसराईल से पाप करवाया
परन्तु उसी चाल पर चलता रहा और सामरः में भी कुंज
७ बना रहा)। और उसने लोगों में से किसी को यहूहाज़ के
साथ न छोड़ा परन्तु पचास घोड़ चढ़े और दस रथ और
दस सहस्र पगइत क्योंकि सुरिया के राजा ने उन्हें नाश किया
८ और उन्हें पीट पीट के धूल की नाईं बनाया। अब यहूहाज़
की रही ज़ई क्रिया और सब जो उसने किया और उसका
पराक्रम क्या इसराईल के राजाओं के समयों के समाचार
९ की पुस्तक में नहीं लिखा है?। और यहूहाज़ ने अपने पितरों
में बिश्राम किया और उन्हों ने उसे सामरः में गाड़ा तब
१० उसका बेटा यूआश उसकी सन्ती राजा ज़आ। और यहूदा
के राजा यूआश के सैंतीसवें बरस यहूहाज़ का बेटा यहूआश
सामरः में इसराईलियों पर राज्य करने लगा सोलह बरस
११ उसने राज्य किया। और उसने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई
किई और वुह नबात के बेटे यूर्बआम के पाप से अलग न

ऊआ जिसने इसराईलियों से पाप करवाया वुह उसमें
१२ चलता था। और यूआश की उवरी ऊई क्रिया और सब जो
उसने किया और उसका पराक्रम जिस्से यहूदा के राजा
अमासिया के बिरोध में लड़ता था से क्या इसराईल के
राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है?।
१३ और यूआश ने अपने पितरों में शयन किया और यर्बआम
उसके सिंहासन पर बैठा और यूआश सामरः में इसराईल
१४ के राजाओं में गाड़ा गया। अब अलीशा एक रोग से
रोगी पड़ा जिस्से वुह मर गया और इसराईल का राजा
यूआश उस पास उतर आया और उसके मुंह पर रो के कहा
कि हे मेरे पिता हे मेरे पिता हे इसराईल के रथ और
१५ उसके घोड़चढे। और अलीशा ने उसे कहा कि धनुष बाण
१६ अपने हाथ में ले और उसने धनुष बाण लिये। फिर उसने
इसराईल के राजा को कहा कि धनुष पर हाथ धर उसने धरा
और अलीशा ने राजा के हाथ पर अपना हाथ रक्खा।
१७ और उसे कहा कि पूर्ब की ओर की खिड़की खोल सो
उसने खोली तब अलीशा ने कहा कि मार और उसने मारा
तब उसने कहा कि यह परमेश्वर के बचाव का बाण और सुरिया
से बचाव का बाण क्योंकि तू सुरियानियों को अफेक में ऐसा
१८ मारेगा कि उन्हें मिटा डालेगा। फिर उसने उसे कहा कि
बाणों को ले और उसने लिया तब उसने इसराईल के राजा
से कहा कि भूमि पर बाण मार और वुह तीन बार मार के
१९ रहि गया। तब ईश्वर के जन ने उस्से क्रुद्ध हो के कहा उचित
था कि पांच अथवा छः बार मारता तब तू सुरिया को यहां
लों मारता कि उन्हें मिटा डालता परन्तु अब तो तू सुरियानियों
२० को तीन बार मारेगा। तब अलीशा मर गया
और उन्हों ने उसे गाड़ा और बरस के आरंभ में मवाबियों
२१ की जथों ने देश को घेर लिया। और ऐसा ऊआ कि जब वे

एक जन को गाड़ते थे तो क्या देखते हैं कि एक जथा तब उन्हों ने उस मृतक को अलीशा की समाधि में फेंका और वुह गिरा और अलीशा की लोथ पर पड़ा और वुह जी उठा और
२२ खड़ा हो गया। परन्तु सुरिया का राजा हज़ाईल यहूहाज़
२३ के जीवन भर इसराईलियों को सताता रहा। और परमेश्वर ने उन पर अनुग्रह किया और उन पर दयाल ऊआ और उसने इबराहीम और इसहाक़ और याकूब से अपनी वाचा के कारण सुधि लिई और उन्हें नाश करने न चाहा और अपने
२४ आगे से अबलों दूर न किया। सो सुरिया का राजा हज़ाईल मर गया और उसके बेटे बिनहदाद ने उसकी सन्ती राज्य
२५ किया। और यहूहाज़ के बेटे यहूआश ने हज़ाईल के बेटे बिनहदाद के हाथ से उन नगरों को फेर लिया जो उसने उसके पिता यहूहाज़ से लड़ाई में लिये थे और यहूआश ने उसे तीन बार मारा और इसराईलियों के नगर फेर लिये।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

अमासिया का अच्छा राज्य अपने पिता के बधिकों को घात करना और अदूमियों को जीतना १—७ इसराईल के राजा से लड़ना बंधुआ होना यिरोशलीम की भीत का तोड़ना और मन्दिर का लूटा जाना ८—१४ यूआश का मरना १५—१६ अमासिया का मारा जाना ईलास का बन्ना १७—२२ यूर्बआम का बुरा राज्य और मृत्यु २३—२९।

१ और इसराईल के राजा यहूहाज़ के बेटे यूआश के राज्य के दूसरे बरस यहूदा के राजा यूआश का बेटा अमासिया राजा
२ ऊआ। और जब वुह राज्य करने लगा तो पचीस बरस का था और उसने यिरोशलीम में उनतीस बरस राज्य किया
३ और उसकी माता का नाम यहूअद्दान यिरोशलीमी। उसने

परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई तथापि अपने पिता दाऊद के समान नहीं परन्तु उसने सब कुछ अपने पिता यूआश की
४ नाईं किया। तथापि ऊंचे स्थान दूर न किये गये अबलों लोग ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते थे और सुगन्ध जलाते थे।
५ और यों ऊआ कि ज्यों राज्य उसके हाथ में स्थिर ऊआ त्यों उसने अपने सेवकों को मार डाला जिन्हों ने उसके पिता राजा
६ को मार डाला था। परन्तु घातकों के सन्तानों को घात न किया जैसा कि मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है जिसमें परमेश्वर ने यह कहिके आज्ञा किई थी कि बालकों के कारण पिता मारे न जायें और न पितरों के कारण बालक परन्तु हर एक
७ जन अपनेही पाप के कारण मारा जायगा। और उसने नून की तराई में दस सहस्र अदूमी को घात किया और सिलह को लड़ाई में लेलिया और उसका नाम आजलों यकतील
८ रक्खा। तब अमासिया ने याहू राजा के बेटे यहूहाज़ के बेटे यहूआश पास यह कहिके दूत भेजा कि आ एक दूसरे
९ के परस्पर मुंह देखें। सो इसराईल के राजा यहूआश ने यहूदा के राजा अमासिया को कहला भेजा कि लबनान के भटकटैया ने लबनान के जित वृक्ष से कहला भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे से ब्याह दे पर लबनान के एक बनैले पशु ने
१० उधर से जाते जाते उस भटकटैया को लताड़ा। निश्चय तू ने अदूम को मारा है और तेरे मन ने तुझे उभाड़ा है बड़ाई कर और घर में रहि जा अपनी घटती के लिये क्यों छेड़े कि तू
११ अर्थात् यहूदा समेत ध्वस्त होवे?। परन्तु अमासिया ने उसकी न सुनी इस लिये इसराईल का राजा यहूआश चढ़ गया उसने और यहूदा के राजा अमासिया ने बैतशमश में, जो
१२ यहूदा का है, परस्पर मुंह देखा। सो यहूदा का राजा इसराईल के आगे ध्वस्त ऊआ और उनमें से हर एक अपने अपने तम्बू
१३ को भागा। और इसराईल के राजा यहूआश ने अहाज़िया के

बेटे यहूआश के बेटे यहूदा के राजा अमासिया को बैतशमश में पकड़ लिया और यिरोशलीम में आया और यिरोशलीम की भीत अफ़राईम के फाटक से लेके कोने के फाटक लों चार
१४ सो हाथ ढ़ादिई। और उसने सारा सोना और चांदी और सारे पात्र, जो परमेश्वर के मन्दिर में और राजा के भंडारों में पाये, लेलिये और ओलें लेके सामरः को फिर गये।
१५ अब यहूआश की रही ऊई क्रिया और उसका पराक्रम कि वुह यहूदा के राजा अमासिया से क्योंकर खड़ा सो क्या इसराईली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा ऊआ नहीं
१६ है?। और यहूआश ने अपने पितरों में शयन किया और इसराईली राजाओं के संग सामरः में गाड़ा गया और उसके
१७ बेटे यूर्बआम ने उसकी सन्ती राज्य किया। और यहूदा के राजा यूआश का बेटा अमासिया इसराईल क राजा यहूहाज़
१८ के बेटे यहूआश के मरने के पीछे पन्दरह बरस जीया। और अमासिया की रही ऊई क्रिया क्या यहूदा के राजाओं के समयों
१९ के समाचार की पुस्तक में लिखी ऊई नहीं है?। अब उन्हों ने यिरोशलीम में उसके विरोध में युक्ति बांधी तब वुह लकीश को भाग गया फिर उन्हों ने उसके पीछे लोग लकीश में भेजे
२० और वहां उसे मार डाला। और वे उसे घोडों पर लाये और दाऊद के नगर में यिरोशलीम में उसके पितरों के संग
२१ गाड़ा। तब यहूदा के सारे लोगों ने अज़ारिया को (जो सोलह बरस का था) लेके उसके पिता अमासिया की सन्ती राजा
२२ किया। उसने ईलात का नगर बनाया और यहूदा में मिला दिया उसके पीछे राजा अपने पितरों में शयन किया।
२३ और यहूदा के राजा यूआश के बेटे अमासिया के पन्दरहवें बरस इसराईल के राजा यहूआश का बेटा यूर्बआम सामरः में इसराईल के सन्तान पर राज्य करने लगा उसने
२४ एकतालीस बरस राज्य किया। और उसने परमेश्वर की

दृष्टि में बुराई किई और नाबात के बेटे यूर्बआम के पापों के कारण जिसने इसराईल से पाप करवाया छोड़ न दिया ।
२५ और उसने हमात की पैठ से लेके चौगान के समुद्र लों इसराईल के ईश्वर परमेश्वर के बचन के समान जो उसने अपने सेवक गाथहिफर के भविष्यद्वक्ता अमीटई के बेटे यूनस के द्वारा से
२६ कहा था उसने इसराईल के सिवाने को फेर दिया । क्योंकि परमेश्वर ने इसराईल के कष्ट को देखा कि अति है क्योंकि न कोई बन्धन में था न कोई छोड़ा गया और न कोई इसराईल का
२७ रक्षक था । और परमेश्वर ने यह न कहा था कि मैं स्वर्ग के नीचे से इसराईल का नाम मिटाओंगा परन्तु उसने उन्हें
२८ यहूआश के बेटे यूर्बआम के द्वारा से बचाया । और अब यूर्बआम की रही ऊई क्रिया और सब जो उसने किया और उसका पराक्रम कि क्योंकर लड़ा और दमिश्क को और यहूदा के हमात को इसराईल के लिये फेर दिया सो क्या इसराईली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा ऊआ नहीं
२९ है? । और यूर्बआम ने अपने पितरों में अर्थात इसराईली राजाओं के संग शयन किया और उसके बेटे ज़ख़रिया ने उसकी सन्ती राज्य किया ।

१५ पन्दरहवां पर्ब्ब ।

अज़ारिया का अच्छा राज्य उसका कोढ़ी होना १—७ ज़कारिया का राज्य ईश्वर का बचन पूरा होना ८—१२ इसराईलियों का बुरा राज्य और कर दायक होना १३—२२ पिकाहिया का बुरा राज्य और मारा जाना २३—२६ इसराईलियों का बन्धुआई में पऊंचाया जाना २७—३१ यूताम का अच्छा राज्य और उसकी मृत्यु ३२—३८ ।

१ इसराईल के राजा यूर्बआम के सताईसवें बरस यहूदा के राजा

२ अमासिया का बेटा अज़ारिया राज्य करने लगा। जब वह राज्य पर बैठा तो सोलह बरस का था उसने यिरोशलीम में बावन बरस राज्य किया उसकी माता का नाम यकुलिया यिरोशलीमी
३ थी। उसने अपने पिता अमासिया की सारी क्रिया के समान
४ परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई। परन्तु केवल यह कि ऊंचे स्थान दूर न किये गये और लोग अबलों ऊंचे स्थानों पर बलिदान
५ चढ़ाते और धूप जलाते थे। और परमेश्वर ने राजा को मारा कि वुह मरने के दिन लों कोढ़ी रहा और घर में अलग रहता था और उसका बेटा यूताम घर पर होके देश
६ के लोगों का न्याय किया करता था। और अज़ारिया की उबरी ऊई क्रिया और सब जो उसने किया सो क्या यहूदा के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा नहीं है?।
७ सो अज़ारिया ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने दाऊद के नगर में उसके पितरों के संग उसे गाड़ा और उसके
८ बेटे यूताम ने उसकी सन्ती राज्य किया। और यहूदा के राजा अज़ारिया के अठतीसवें बरस यूर्बआम के बेटे ज़करिया
९ ने इसराईल पर सामरः में छः मास राज्य किया। और उसने अपने पितरों के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और नाबात के बेटे यूर्बआम के पापों से, जिसने इसराईल
१० से पाप करवाया, अलग न ऊआ। और याबश के बेटे शालूम ने उसके विरोध में युक्तिबांध के लोगों के आगे मारा और उसे
११ घात किया और उसकी सन्ती राज्य किया। और ज़करिया की उबरी ऊई क्रिया क्या इसराईल के राजाओं के समयों के
१२ समाचार की पुस्तक में नहीं लिखी है?। और परमेश्वर का यह बचन है जो वुह याहू से कहिके बोला कि तेरे बेटे चौथी पीढ़ी लों इसराईल के सिंहासन पर बैठेंगे वैसही संपूर्ण ऊआ।
१३ यहूदा के राजा अज़्ज़िया के राज्य के उंतालीसवें बरस याबश के बेटे शालूम ने राज्य करना आरंभ किया और उसने

१४ सामरः में एक मास भर राज्य किया। क्योंकि गादी का बेटा मनाहीम तरसा से सामरः पर चढ़ आया और याबश के बेटे शालूम को सामरः में मारा और उसे घात करके उसकी सन्ती १५ राज्य किया। और शालूम की रही ऊई क्रिया और उसकी युक्ति जो उसने बांधी सो क्या इसराईली राजाओं के समयों १६ के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखी है?। तब मनाहीम ने तफ़सह को, उन सब समेत जो उसमें थे तरसा से लेके उसके सिवाने लों, मारा इस कारण कि उन्हों ने उसके लिये न खोला इस लिये उसने मारा और उसमें की सारी गर्भिणी स्त्रियों १७ का पेट फाड़ा। यहूदा के राजा अज़ारिया के उनतालीसवें बरस गादी के बेटे मनाहीम ने इसराईल पर राज्य करना १८ आरंभ किया उसने सामरः में दस बरस राज्य किया। और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और नाबात के बेटे यूर्बआम के पापों को जिसने इसराईल से पाप करवाया अपने जीवन १९ भर न छोड़ा। तब असूरियों का राजा फल देश के बिरोध में चढ़ आया और मनाहीम ने चालीस लाख रुपये के लग भग फल को दिया जिसतें उसका साथी होके उसका राज्य २० स्थिर करे। और मनाहीम ने यह रोकड़ इसराईल से काढ़ा अर्थात् हर एक धनी से पचास शेकल चांदी लिया और असूरियों के राजा को दिया सो असूरियों का राजा फिर २१ गया और देश में न ठहरा। और मनाहीम की रही ऊई क्रिया और सब जो उसने किया सो क्या इसराईली राजाओं २२ के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है?। और मनाहीम ने अपने पितरों में शयन किया और उसके बेटे २३ फिकाहिया ने उसकी सन्ती राज्य किया। और यहूदा का राजा अज़ारिया के पचासवें बरस मनाहीम का बेटा फिकाहिया सामरः में इसराईलियों पर रज्य करने लगा उसने दो बरस २४ राज्य किया। और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई उसने

नाबात के बेटे यूर्बआम के पापों को जिसने इसराईल से पाप
२५ करवाया छोड़ न दिया। परन्तु उसके सेनापति रूमलिया के
बेटे पीकाह ने उसके विरुद्ध युक्ति बांधी और उसे सामरः
में अरगूब और अरिया के और जलियादी पचास मनुष्यों
समेत राजा के भवन में मारा और उसे घात करके उसकी
२६ सन्ती राज्य किया। और पिकाहिया की रही ऊई क्रिया और
सब जो उसने किया सो क्या इसराईल के राजाओं के समयों
२७ के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है?। यहूदा के
राजा अज़ारिया के बावनवें बरस में रूमलिया का बेटा पीकाह
सामरः में इसराईल पर राज्य करने लगा और उसने बीस
२८ बरस राज्य किया। और उसने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई
किई और नाबात के बेटे यूर्बआम के पापों से जिसने
२९ इसराईल से पाप करवाया अलग न ऊआ। इसराईल के
राजा पीकाह के दिनों में असूर के राजा तिगलाथपलीसर ने
आके अजून को और अबिलबैतमाका को और जनूआ को और
क़ादिश को और हासूर को और जलियाद को और जलील
को और नफ़ताली के सारे देश को लेके उन्हें असूर को बंधुआई
३० में ले गया। और ईला के बेटे होशिया ने रूमलिया के बेटे
पीकाह के विरुद्ध में युक्ति बांध के उसे मारा और घात करके
यूज़िया के बेटे यूताम के बीसवें बरस उसकी सन्ती राज्य किया।
३१ और पीकाह की रही ऊई क्रिया और सब जो उसने किया
सो क्या इसराईल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक
३२ में नहीं लिखा है?। और इसराईल के राजा रूमलिया के
बेटे पीकाह के दूसरे बरस यहूदा के राजा अज़िया का बेटा
३३ यूथाम राज्य करने लगा। जब उसने राज्य करना आरंभ
किया तो वुह पचीस बरस का था उसने सोलह बरस यिरोशलीम
में राज्य किया उसकी माता का नाम यरूशा था जो सादूक़
३४ की बेटी थी। उसने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई और

जो कुछ किया सो अपने बाप उज़िया के समान किया।
३५ तथापि ऊंचे स्थान अलग न किये गये और अब लों लोग ऊंचे स्थानों पर बलि चढ़ाते और धूप जलाते थे और उसने
३६ परमेश्वर के मन्दिर का ऊंचा फाटक बनाया। अब यूताम की रही ऊई क्रिया और सब जो उसने किया सो क्या यहूदा के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है? ।
३७ उन्हीं दिनों में परमेश्वर ने सुरिया के राजा रासीन को और
३८ रमलिया के बेटे पीकाह को यहूदा पर भेजा। और यूताम ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पिता दाऊद के नगर में अपने पितरों में गाड़ा गया और उसका बेटा अहाज़ उसकी सन्ती राज्य करने लगा।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

अहाज़ का बुरा राज्य और उसका विपत्ति में पड़ना १—९ दमिश्क की मूर्त्ति के तुल्य मन्दिर में एक मूर्त्ति बनाना १०—१६ मन्दिर को लूटता है और मारा जाता है १७—२० ।

१ और रमलिया के बेटे पीकाह के राज्य के सत्रहवें बरस यहूदा
२ के राजा यूताम का बेटा अहाज़ राज्य करने लगा। जब अहाज़ राज्य करने लगा तब वुह बीस बरस का था और उसने सोलह बरस यिरोशलीम में राज्य किया और उसने परमेश्वर अपने ईश्वर की दृष्टि में अपने पिता दाऊद के समान
३ भलाई न किई। परन्तु वुह इसराईल के राजाओं की चाल पर चलता था और उसने अन्यदेशियों के घिनितों के समान, जिन्हें परमेश्वर ने इसराईल के सन्तान के आगे से दूर किया
४ था अपने बेटे को आग में से चलाया। और ऊंचे ऊंचे स्थानों और पहाड़ों पर और हर एक हरे पेड़ के नीचे बलि
५ चढ़ाये और धूप जलाये। तब सुरिया के राजा रासीन और

इसराईल के राजा रमलिया का बेटा फ़ीकाह यिरोशलीम पर लड़ने चढ़े और उन्हों ने अहाज़ को घेर लिया परन्तु जीत
६ न सके। उसी समय सुरिया के राजा रासीन ने सुरिया के लिये ईलाथ फेर लिया और यहूदियों को ईलाथ से खेद दिया और सुरियानी ईलाथ को आये और आज लों उसमें बसते हैं।
७ और अहाज़ ने असूर के राजा तिगलाथपलीसर पास दूत के द्वारा से कहला भेजा कि मैं आप का सेवक और आप का बेटा सो आइये और मुझे सुरिया के राजा के हाथों से और इसराईल के राजा के हाथ से, जो मुझ पर चढ़ आये हैं छुड़ाइये।
८ और अहाज़ ने सोना चान्दी जो परमेश्वर के मन्दिर में और राजा के घर के भंडारों में था लेके असूर के राजा के
९ लिये भेंट भेजी। और असूर के राजा ने उसका वचन माना क्योंकि असूर का राजा दमिश्क के विरोध में चढ़ गया और उसे ले लिया और वहां के लोगों को बंधुआ करके क़ीर में
१० लाया और रासीन को मार डाला। तब राजा अहाज़ असूर के राजा तिगलाथपलीसर से भेंट करने दमिश्क को गया और दमिश्क में एक बेदी देखी और अहाज़ राजा ने उसका डौल और दृष्टान्त उसके समस्त कार्य्य कारी के समान
११ युरीजा याजक के पास भेजा। सो युरीजा याजक ने उन सभों के समान, जो अहाज़ ने दमिश्क से भेजा था, एक बेदी बनाई और अहाज़ राजा के दमिश्क से आते आते युरीजा याजक ने
१२ बेदी को सिद्ध किया। और जब राजा दमिश्क से आया तो राजा ने बेदी को देखा और राजा बेदी पास गया और उस पर
१३ चढ़ाया। और उसने अपनी होम की भेंट और मांस की भेंट चढ़ाई और पीने की भेंट उस पर ढाली और अपने
१४ कुशल की भेंट का लोहू बेदी पर छिड़का। और उसने पीतल की उस बेदी को, जो परमेश्वर के आगे थी, घर के साम्ने से अर्थात् बेदी के और परमेश्वर के घर के मध्य से लाके बेदी के

१५ उत्तर अलंग रक्खा। और राजा अहाज़ ने युरीजा याजक को आज्ञा करके कहा कि बिहान के होम की भेंट और सांझ के मांस की भेंट और राजा के होम के बलिदान और उसके मांस की भेंट और देश के सारे लोगों के होम की भेंट समेत और उनके मांस की भेंट और उनके पीने की भेंटें जलाव और होम की भेंट के सारे लोह्र और बलिदान के सारे लोह्र उस पर छिड़क और पीतल की बेदी मेरे बूझने के लिये
१६ होगी। यों युरीजा याजक ने अहाज़ राजा की आज्ञा के
१७ समान सब कुछ किया। और राजा अहाज़ ने आधार के कोरों को काट डाला और उन पर के स्नान पात्र को अलग किया और समुद्र को पीतल के बैलों पर से उतार के बिछेहुए
१८ पत्थरों पर रक्खा। और बिश्राम के छत को, जो उन्हों ने घर में बनाई थी, और राजा के पैठ के बाहर बाहर असूर के राजा
१९ के लिये उसने परमेश्वर के मन्दिर से बाहर किया। अब अहाज़ की रही हुई क्रिया जो उसने किई सो क्या यहूदा के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी नहीं हैं?।
२० और अहाज़ ने अपने पितरों में शयन किया और अपने पितरों के संग दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उसका बेटा हिज़किया उसकी सन्ती राज्य पर बैठा।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब ।

होशिया असूर के राजा का करदायक होता है १—४ इसराईल को बंधुआई में ले जाता है ५—उनके पापों का बर्णन ६—२३ परदेशी को बसावना और परमेश्वर की और मूर्त्ति की पूजा करना २४—४१।

१ यहूदा के राजा अहाज़ के बारहवें बरस ईला का बेटा होशिया सामरः में इसराईल पर राज्य करने लगा उसने नव बरस

२ राज्य किया। और उसने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई परन्तु इसराईल के राजाओं के समान नहीं जो उसे आगे
३ थे। असूर का राजा शल्मनसर उसके विरोध में चढ़ आया
४ और होशिया उसका सेवक होके उसे कर देने लगा। और असूर के राजा ने होशिया में बैर की युक्ति पाई क्योंकि उसने मिसर के राजा पास दूतों को भेजा था और जैसा वुह बरस बरस करता था असूर के राजा के पास भेंट न भेजी इस लिये असूर के राजा ने उसे बन्धन में किया और बन्दीगृह में डाला।
५ तब असूर का राजा सारे देश पर चढ़ गया और सामरः
६ पर आके तीन बरस उसे घेरे रहा। और होशिया के नवें बरस में असूर के राजा ने सामरः को लेलिया और इसराईलियों को असूर में ले गया और उन्हें हला में और गूजान की नदी
७ के हाबूर में और माज़ी की बस्तियों में बसाया। क्योंकि इसराईल के सन्तान ने परमेश्वर अपने ईश्वर के विरोध में, जिसने उन्हें मिसर की भूमि में से निकाल के मिसर के राजा फरऊन के हाथ से मुक्ति दिई, पाप किया अरु और देवों को
८ डरता था। और अन्यदेशियों की बिधिन पर (जिन्हें परमेश्वर ने इसराईल के सन्तान के आगे स दूर किया था) और इसराईली
९ राजाओं के जो उन्हों ने किईं थी चलता था। और इसराईल के सन्तानों ने परमेश्वर अपने ईश्वर के विरुद्ध छिप छिप के ठीक न किया और उन्हों ने अपनी सारी बस्तियों में पहरु के गर्गज
१० से लेके बाड़े के नगर लों ऊंचे ऊंचे स्थान बनाये। और हर एक पहाड़ पर और हर एक हरे पेड़ के नीचे मूर्तें स्थापित
११ किईं। और कुंज लगाये और अन्यदेशियों के समान, जिन्हें परमेश्वर ने उनके आगे से दूर किया, सारे ऊंचे स्थान में धूप
१२ जलाये और दुष्टता करके परमेश्वर को रिस दिलाया। क्योंकि उन्हों ने मूर्त्ति पूजी जिन के विषय में परमेश्वर ने उन्हें कहा था
१३ कि तुम यह काम मत कीजियो। तदभी परमेश्वर ने सारे

भविष्यद्वक्ताओं और सारे दर्शियों के द्वारा से इसराईल के सन्तान पर और यहूदा के सन्तान पर यह कहिके साक्षी दिई कि अपने बुरे मार्गों से फिरो और मेरी आज्ञाओं और मेरी बिधिन को सारी व्यवस्था के समान, जो मैं ने तुम्हारे पितरों को आज्ञा किई, और जिन्हें मैं ने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों
१४ के द्वारा से तुम पास भेजा पालन करो। तथापि उन्हों ने न माना परन्तु अपने पितरों के गले के समान, जो परमेश्वर अपने ईश्वर पर बिश्वास न लाये थे अपने गले को कठोर किया।
१५ और उन्हों ने उसकी बिधिन को और उसकी बाचा को, जो उसने उनके पितरों से किई, और उसकी साक्षियों को, जो उसने उनके बिरोध में साक्षी दिई थी, त्याग किया और व्यर्थ का पीछा किया और व्यर्थ होके अपने चारों ओर के अन्यदेशियों का पीछा किया जिन्हें परमेश्वर ने उन्हें चिता रक्खा था कि तुम
१६ उनके समान मत कीजियो। और उन्हों ने परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को छोड़ दिया और अपने लिये ढाली हुईं मूरतें और दो बछियां बनाईं और एक कुंज लगाया और आकाश की सारी
१७ सेना की पूजा किई और बआल की सेवा करते थे। और उन्हों ने अपने बेटों को और अपनी बेटियों को आग में से चलाया और प्रश्न और टोना करने लगे परमेश्वर की दृष्टि में उसे रिसियाने
१८ के लिये और बुराई करने के लिये आप को बेंचा। इस लिये परमेश्वर इसराईल पर निपट रिसाया और उन्हें अपनी दृष्टि से अलग किया और केवल यहूदा की गोष्ठी को छोड़ कोई न
१९ छूटा। और यहूदा के सन्तान ने भी परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को पालन न किया परन्तु इसराईलियों की किई
२० हुई बिधिन पर चलते थे। तब परमेश्वर ने इसराईल के सारे वंश को त्याग किया और उन्हें कष्ट दिया और उन्हें लुटेरों के हाथ में सौंप दिया यहां लों कि उसने उन्हें अपनी दृष्टि
२१ से दूर किया। क्योंकि उसने इसराईल को दाऊद के घराने

से फाड़ दिया और उन्हों ने नाबात के बेटे यूर्बआम को राजा किया और यूर्बआम ने इसराईल को परमेश्वर का पीछा करने
२२ से दूर किया और उन से बड़ा पाप करवाया। क्योंकि इसराईल के सन्तान यूर्बआम के किये ऊए सारे पापों पर चलते थे और
२३ वे उन से अलग न ऊए। यहां लों कि परमेश्वर ने इसराईल को अपनी दृष्टि से दूर किया जैसा उसने अपने सारे दास भविष्यद्वक्तों के द्वारा से कहा था सो इसराईल अपने देश से
२४ निकाले जाके आज लों असूर में पऊंचाये गये। और असूर के राजा ने बाबुल से और कूथा से और आवा से और हमात से और सिफारवाईम से लोगों को लाके सामरः की बस्तियों में इसराईल के सन्तान की सन्ती बसाया और वे सामरः के
२५ अधिकारी ऊए और उसके नगरों में बसे। और जब वे आरंभ में वहां आ बसे तो परमेश्वर से न डरते थे इस लिये परमेश्वर
२६ ने उनमें सिंहों को भेजा जो उन्हें फाड़ने लगे। इस लिये यह कहिके वे असूर के राजा से बोले कि जिन जातिगणों को आप ने उठा लिया है और सामरः की बस्तियों में बसाया है इस देश के ईश्वर का व्यवहार नहीं जानते इस लिये उसने उनमें सिंह भेजे और देखो वे इस कारण उन्हें बधन करते हैं
२७ कि वे इस देश के ईश्वर का व्यवहार नहीं जानते हैं। तब असूर के राजा ने यह आज्ञा किई कि उन याजकों में से जिन्हें तुम वहां से यहां लेआये हो एक को वहां लेजाओ कि वुह जाके वहां रहा करे और उस देश के ईश्वर का व्यवहार उन्हें सिखलावे।
२८ तब उन याजकों में से, जिन्हें वे सामरः से लेगये थे, एक आया और बैतईल में रहा और उन्हें परमेश्वर की डर सिखाई।
२९ परन्तु हर एक जाति ने अपने अपने देव बनाये और उन्हें ऊंचे स्थानों के घरों में, जो सामरियों ने बनाये थे रक्खे हर एक
३० जाति अपने अपने रहने के नगरों में। और बाबुल के मनुष्यों ने सकूसबोनूस बनाया और कूथ के मनुष्यों ने नरगाल बनाया

३१ और हमात के मनुष्यों ने अशीमा बनाया। और अवियों ने नभाज़ और तरताक़ बनाये और सिफारवियों ने अपने बालकों को अद्रामलक और अनामलक सिफारवियों के देवों के लिये
३२ आग में जला दिया। सो वे परमेश्वर से डरे और उन्हों ने अपने लिये नीच से नीच को लेके ऊंचे स्थानों का याजक बनाया
३३ जो उनके लिये ऊंचे स्थानों के घरों में बलिदान चढ़ाते थे। और वे परमेश्वर से डरते थे और उन जातिगणों के समान, जिन्हें
३४ वे वहां से लेगये थे, अपनेही देवों की सेवा करते थे। आज के दिन लों वे अगली बिधि और व्यवहार पर चलते हैं क्योंकि वे परमेश्वर से नहीं डरते और उनकी बिधिन पर और व्यवस्था और आज्ञा पर, जो परमेश्वर ने याक़ूब के सन्तान के लिये आज्ञा
३५ किई, जिसका नाम उसने इसराईल रक्खा, नहीं चलते। जिसे परमेश्वर ने एक बाचा बांधी और यह कहिके उन्हें चिताया कि तुम और और देवों से मत डरो और उनके आगे प्रणाम मत करो और उनकी सेवा मत करो उनके लिये बलि मत चढ़ाओ।
३६ परन्तु तुम परमेश्वर से, जिस ने अपनी बड़ी सामर्थ्य से और अपनी बढ़ाई ऊई भुजा से तुम्हें मिसर के देश से ऊपर उठा लाया डरियो तुम उसी की सेवा कीजियो और उसके लिये बलि
३७ चढ़ाइयो। और उन व्यवहारों और बिधिन और व्यवस्थों और आज्ञा को, जो उसने तुम्हारे लिये लिखवाये तुम सदा लों मानियो
३८ और और देवों से मत डरियो। और उस बाचा को, जो मैं ने तुम से किई है, मत भूलियो और और देवों से मत
३९ डरियो। परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर से डरियो और वही
४० तुम्हारे सारे बैरियों के हाथ से तुम्हें छुड़ावेगा। तथापि उन्हों ने
४१ न सुना परन्तु अपने अगिले व्यवहारों पर चलते थे। सो इन जातिगणों ने परमेश्वर का भय रक्खा और अपनी खोदी ऊई मूर्त्तों की सेवा किई और उनके लड़के और उनके लड़कों के लड़के भी अपने पितरों के समान आज के दिन लों करते हैं।

१८ अठारहवां पर्ब्ब।

हिज़किया का अच्छा राज्य १—८ उसके दिनों में इसराईल बंधुआई में जाते हैं ९—१२ हिज़किया असूर के राजा को कर देता है १३—१६ रबशाकी का ईश्वरीय निन्दा बचन १७—३५ हिज़किया के सेवक बिलाप करते हैं ३६—३७।

१ होशिया के राज्य के तीसरे बरस यहूदा के राजा अहाज़ का
२ बेटा हिज़किया राज्य पर बैठा। और जब कि वुह सिंहासन पर बैठा तब पचीस बरस का था उसने उन्तीस बरस यिरोशलीम में राज्य किया उसकी माता का नाम, ज़ख़रिया की बेटी,
३ अबी था। उसने अपने पिता दाऊद के समान परमेश्वर की
४ दृष्टि में सब बात में भलाई किई। उसने ऊंचे स्थानों को ढादिया और मूर्तों को तोड़ा और कुंजों को काट डाला और उस पीतल के सांप को जो मूसा ने बनाया था, तोड़ के टुकड़ा टुकड़ा किया क्योंकि इसराईल के सन्तान उस समय लों उसके आगे धूप जलाते थे और उसने उसका नाम एक टुकड़ा पीतल
५ रक्खा। और परमेश्वर इसराईल के ईश्वर पर भरोसा रखता था यहां लों कि उसके पीछे यहूदा के सब राजाओं में ऐसा कभी
६ न ऊआ और न उसे आगे कोई ऊआ था। क्योंकि वुह परमेश्वर से लवलीन रहा और उसकी आज्ञा से अलग न ऊआ परन्तु उसने उन आज्ञाओं को जो परमेश्वर ने मूसा से किई थीं पालन
७ किया। और परमेश्वर उसके साथ था वुह जहां कहीं जाता था भाग्यमान होता था और असूर के राजा के बिरोध में
८ फिर गया और उसकी सेवा न किई। उसने फलस्तानियों को गज़े लों और उसके सिवानों के अन्त लों रखवालों के गर्गज से
९ लेके घेरित नगर लों मारा। और हिज़किया राजा के चौथे बरस, जो इसराईल के राजा आला के बेटे होशिआ के सातवें बरस, यों ऊआ कि असूर के राजा शलमनसर के बिरोध पर चढ़

१० आया और उसे घेर लिया। और तीसरे बरस के अन्त में उन्हों ने उसे लेलिया और हिज़किया के छठवें बरस, जो इसराईल के राजा होशिया का नवां बरस है सामरः
११ लिया गया। और असूर का राजा इसराईलियों को असूर को लेगया और उन्हें हला में और हाबूर में, जो गोज़ान
१२ की नदी के लग है और माज़ी के नगरों में रक्खा। यह इस लिये ज़ुआ कि उन्हों ने परमेश्वर अपने ईश्वर की बात न मानी परन्तु उसकी वाचा को, और उन सभों को, जो परमेश्वर के दास मूसा ने कहा था टाल दिया न उसकी सुनते
१३ थे न उसपर चलते थे। और हिज़किया राजा के राज्य के चौदहवें बरस असूर का राजा सख़ारीब यहूदा
१४ के सारे बाड़ित नगरों पर चढ़ आके उन्हें लेलिया। तब यहूदा के राजा हिज़किया ने असूर के राजा को, जो लख़ीश में था कहला भेजा कि मुझसे अपराध ज़ुआ अब मुझसे फिर जाइये और जो कुछ आप कहेंगे सो मैं मानेंगा और उसने यहूदा के राजा हिज़किया पर तीन सौ तोड़ा चांदी और तीस तोड़े
१५ सोने ठहराये। हिज़किया ने सारी चांदी, जो परमेश्वर के मन्दिर में, और राजा के घर के भंडारों में पाई गई उसे
१६ दिया। उस समय हिज़किया ने परमेश्वर के मन्दिर के द्वारों का और खंभों पर का सोना, जो यहूदा के राजा हिज़किया ने उन पर मढ़ा था, काट काटके असूर के राजा को दिया।
१७ तब असूर के राजा ने तारतान को और रबसारीस को और रबशाकी को लाकीश से भारी सेना सहित यिरोशलीम के विरोध में भेजा और वे चढ़े और यिरोशलीम को आये और आके ऊपर कुंड के पनाले के लग, जो धोबी के खेत के
१८ मार्ग में है खड़े ज़ुए। और जब उन्हों ने राजा को बुलाया तब हिलकिया का बेटा इलियाक़ीम, जो घराने पर था, और शबना लेखक और आसाफ़ का बेटा यूआह स्मारक उन पास आये।

१९ रबशाकी ने उन्हें कहा कि तुम हिज़किया से कहो कि महाराज असूर का राजा यों कहता है कि वृह क्या आशा है जिस
२० पर तू भरोसा करता है?। तू होंठों की बात कहता है कि मुझ में परामर्ष और युद्ध का पराक्रम है सो अब तू किस पर
२१ भरोसा रखता है कि मुझसे फिर जाता है!। अब देख तू उस मसले हुए सेंठे के दंड पर अर्थात् मिसर पर भरोसा रखता है यदि कोई उस पर ओठंगे तो वुह उसके हाथ में गड़ जायगा और उसे बेधेगा सो मिसर का राजा फरऊन उन सब के
२२ लिये, जो उस पर भरोसा रखते हैं ऐसाही है। परन्तु यदि तू मुझे कहे कि हमारा भरोसा परमेश्वर अपने ईश्वर पर है, क्या वही नहीं जिसके ऊंचे स्थानों को और जिसकी बेदियों को हिज़किया ने अलग किया और यहूदा और यिरोशलीम को कहा है कि तुम यिरोशलीम में इस बेदी के आगे सेवा
२३ करो। अब असूर के राजा मेरे प्रभु को ओल दीजिये और मैं तुझे दो सहस्र घोड़े देओंगा यदि तुझ में यह शक्ति हो
२४ कि तू चढ़ैयों को उन पर बैठावे। सो किस रीति से तू मेरे प्रभु के सेवकों में से सब से छोटे प्रधान का मुंह फेरेगा और मिसर पर रथों के और घोड़चढ़ों के लिये भरोसा रक्खे।
२५ और क्या मैं इस स्थान के नाश करने को बिना परमेश्वर के आया हों परमेश्वर ने मुझे कहा कि उस देश पर चढ़ जा और
२६ उसे नाश कर। तब हिलक़िया का बेटा इलियाकीम और शबना और यूआह ने रबशाकी से कहा कि मैं आपकी बिनती करता हों कि अपने दासों से सुरियानी भाषा में कहिये क्योंकि उसे हम समझते हैं और यहूदियों की भाषा में हमसे भीत
२७ पर के लोगों के कान में न कहिये। परन्तु रबशाकी ने उन्हें कहा कि मेरे प्रभु ने मुझे तेरे प्रभु के अथवा तुझ पास ये बातें कहने को भेजा है? क्या उसने मुझे उन लोगों पास जो भीति पर बैठे हैं नहीं भेजा जिसतें वे तुम्हारे साथ अपनाही मल

२८ मूत्र खायें पीयें। तब रबशाको खड़ा होके यहूदियों की भाषा में ललकार के बोला और कहा कि असूर के राजा
२९ महाराज का बचन सुनो। राजा यह कहता है कि हिज़कियाह तुम्हें छल न देवे क्योंकि वुह मेरे हाथ से तुम्हें छुड़ा नहीं सक्ता।
३० और हिज़किया तुम्हें यह कहिके परमेश्वर का भरोसा न दिलावे कि परमेश्वर निश्चय हमें छुड़ावेगा और यह नगर
३१ असूर के राजा के हाथ में सौंपा न जायगा। हिज़किया की मत सुनो क्योंकि असूर का राजा यों कहता है कि मुझे भेंट देके मुझ पास निकल आओ और तुम्में से हर एक अपने अपने दाख में से और अपने अपने गूलर पेड़ में से खावे और अपने
३२ अपने कुंड का पानी पिये। जबलों मैं आओं और तुम्हें यहां से एक देश में, जो तुम्हारे देश की नाईं है, लेजाओं वुह अन्न और दाखरस का देश, रोटी और दाख की बारी का देश, जलपाई के तेल और मधु का देश, जिसतें तुम जीओ और न मरो और हिज़किया की मत सुनो जब वुह यह कहिके तुम्हारा बोध करता है कि परमेश्वर हमें बचावेगा।
३३ भला जातिगणों के देवों में से किसीने भी अपने देश को
३४ असूर के राजा के हाथ से छुड़ाया है?। हामास और अरफाद के देव कहां हैं? और सफारवाईम हन्ना और ऐवा के देव कहां? क्या उन्हों ने सामरः को मेरे हाथ से छुड़ाया है?।
३५ देशों के सारे देवों में वुह कौन जिसने अपना देश मेरे हाथ से छुड़ाया जो परमेश्वर यिरोशलीम को मेरे हाथ से छुड़ावे? परन्तु लोग चुपके रहे और उसके उत्तर में एक बात न कही क्योंकि राजा की आज्ञा यों थी कि उसे उत्तर मत दीजियो तब हलकिया का बेटा इलियाकीम, जो घराने पर था और शबना लेखक और असाफ स्मारक का बेटा यूआह अपने कपड़े फाड़े हुए हिज़किया के पास आये और रबशाकी की बातें उसे कहीं।

१९ उन्नीसवां पर्ब्ब ।

बिपत्ति में हिज़कियाः राजा अशाया भविष्यदक्ता की प्रार्थना चाहता है और अच्छा उत्तर पाता है १—७ सखारीब ईश्वरीय निन्दा बचन हिज़किया पास पत्री में भेजता है ८—१३ हिज़किया की प्रार्थना १४—१९ सखारीब के नष्ट होने का अशाया का आगम बचन २०—३४ असूर की सेना का मारा जाना और सखारीब का घात होना ३५—३७ ।

१ और ऐसा हुआ कि हिज़किया राजा ने यह सुन के अपने कपड़े फाड़े और उदासी बस्त्र ओढ़के परमेश्वर के मन्दिर में
२ गया । उसने इलियाक़ीम को, जो घराने पर था और शबना लेखक और याजकों के प्राचीनों को उदासी बस्त्र ओढ़े हुए
३ अमूस के बेटे अशाया भविष्यदक्ता पास भेजा । और उन्हों ने उसे कहा कि हिज़किया यों कहता है कि आज दुःख और दपट और खिझाव का दिन है क्योंकि बालक उत्पन्न होने पर हैं
४ और जन्ने की सामर्थ्य नहीं । क्या जाने परमेश्वर तेरा ईश्वर रबशाकी की सब बातें सुनेगा जिसे उसके स्वामी असूर के राजा ने जीवते ईश्वर की निन्दा करने को भेजा है और जिन बातों को, परमेश्वर तेरे ईश्वर ने सुना है उनपर दोष देवे इस
५ लिये बचे हुओं के कारण प्रार्थना कर । सो हिज़किया के सेवक
६ अशाया पास आये । अशाया ने उन्हें कहा कि तुम अपने स्वामी से यों कहो कि परमेश्वर यह कहता है कि उन बातों से, जिन्हें असूर के राजा के सेवकों ने मेरे विषय में पाषंड कहा है मत डर ।
७ देख मैं उन पर एक झोंका भेजोंगा और वुह एक कोलाहल सुनके अपनेही देश को फिर जायगा और मैं उसे उसी के
८ देश में तलवार से मरवा डालोंगा । सो रबशाकी फिर गया और उसने असूर के राजा को लबना से लड़ते पाया

९ क्योंकि उसने सुना था कि वुह लाकीश से चला गया। अब उसने यह कहते सुना कि देखिये हबश के राजा तरहाक़ा ने तुझ पर चढ़ाई किई उसने दूतों के द्वारा से हिज़किया से फेर
१० कहला भेजा। यहूदा के राजा हिज़किया से यों कहियो कि तेरा ईश्वर जिस पर तू भरोसा रखता है यह कहिके तुझे छल न देवे कि यिरोशलीम असूर के राजा के हाथ में सौंपा न जायगा।
११ देख तू ने सुना है कि असूर के राजाओं ने सारे देशों से
१२ सर्वथा नाश करके क्या किया और क्या तू बच जायगा। क्या उन जातिगणों के देव, जिन्हें मेरे पितरों ने नाश किया है उन्हें छुड़ासके अर्थात् गोज़ान और हरान और रसफ़ और अदन
१३ के सन्तान जो तलासार में थे। हमात के राजा और अरपाद के राजा और सफरवाईम के नगर का राजा और हेना
१४ और अयवा के कहां हैं?। सो हिज़किया ने दूतों के हाथों से पत्री पाई और पढ़ के परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ गया और
१५ परमेश्वर के आगे फैलाई। और हिज़किया ने परमेश्वर के आगे प्रार्थना करके कहा कि हे परमेश्वर इसराईल के ईश्वर जिसका निवास करोबीम है केवल तूही सारी पृथिवी के राज्यों का
१६ ईश्वर है तूही ने स्वर्ग और पृथिवी को सिर्जा है। हे ईश्वर कान झुकाके सुन हे परमेश्वर अपनी आंखें खोल और देख और सनहेरीब की बातों को, जो उसने जीवते ईश्वर की निन्दा के
१७ लिये कहला भेजी है सुन। सच है हे परमेश्वर कि असूर के राजाओं ने जातिगणों को और उनके देशों को नाश किया।
१८ और उनके देवों को आग में डाला क्योंकि वे देव न थे परन्तु मनुष्यों के हाथों के कार्य, लकड़ी और पत्थर इसी लिये उन्हों
१९ ने उन्हें नाश किया। और अब हे परमेश्वर हमारे ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हों तू हमें उसके हाथ से बचाले जिसतें पृथिवी के सारे राज्य जानें कि परमेश्वर ईश्वर केवल तू है।
२० तब अमूस के बेटे यशाया ने हिज़किया को कहला भेज

कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि जो कुछ तू ने असूर के राजा सन्हारीब के बिरोध में प्रार्थना किई है मैं
२१ ने सुनी है। यह वुह बचन जो परमेश्वर ने उसके विषय में कहा है कि सैहून की कुंआरी बेटी ने तेरी निन्दा किई और तुझ पर
२२ हंसी और यिरोशलीम की बेटी ने तुझ पर सिर धुना। तू ने किसकी निन्दा किई? और पाषंड कहा है? और तू ने किस पर शब्द उठाया और आंखें चढ़ाके ऊपर किई? इसराईल के पवित्रमय
२३ के बिरोध में। तू ने अपने दूतों के द्वारा से परमेश्वर की निन्दा करके कहा है कि मैं अपने रथों की बहुताई से पहाड़ों की ऊंचाई पर और लबनान की अलंगों पर चढ़ा और वहां के ऊंचे ऊंचे आरज पेड़ को और चुने हुए देवदारु पेड़ को काट डालोंगा और मैं उसके सिवानों के निवासों में और
२४ उसके बन और फलवन्त खेतों में पैठोंगा। मैं ने खोदा है और उपरी पानी पीया है और मैं ने अपने पांव के तलवों से घेरित
२५ स्थानों की सारी नदियों को सुखा दिया है। क्या तू ने नहीं सुना कि मैं ने आगे से क्या किया है और अगिले समय से क्या क्या बनाया? अब मैं ने पूरा किया है कि तू घेरित नगरों को
२६ उजाड़े और ढेर ढेर करे। सो वहां के निवासी दुर्बल थे और बिस्मित होके घबरागये वे तो खेत की घास और हरियाली सागपात छतों पर की घास जो बढ़ने से आगे झौंस जाती है।
२७ परन्तु मैं तेरा निवास और बाहर भीतर आना जाना और
२८ मुझ पर तेरा झुंझलाना जानता हों। मुझ पर तेरा झुंझलाना और तेरा हुल्लड़ मेरे कान लों पहुंचा है इस लिये मैं अपना कांटा तेरी नाक में मारोंगा और अपनी छाठी तेरे मुंह में देओंगा और जिस मार्ग से तू आया है मैं तुझे उसही
२९ से फेरोंगा। अब तेरे लिये यही पता है कि तुम अबकी बरस वही वस्तें खाओगे जो आपसे आप उगती हैं और दूसरे बरस जो उसी से उगती हैं और तीसरे बरस बोओ

और लओ और दाख की बारी लगाओ और उनके फल
३० खाओ। और यहूदा के घराने से जो बच निकला है फिरके
३१ नीचे जड़ पकड़ेगा और ऊपर फल लावेगा। क्योंकि बचा हुआ
यिरोशलीम से और बचनिकले सैहून के पहाड़ से निकलेंगे
३२ परमेश्वर का ज्वलन ऐसा करेगा। इस लिये परमेश्वर असूर
के राजा के विषय में यह कहता है कि वुह इस नगर में न
आवेगा न यहां बाण चलावेगा और न ढाल पकड़ के उसके
३३ आगे आवेगा न इसके बिरोध में मुरचा बांधेगा। परमेश्वर
कहता है कि जिस मार्ग से वुह आया उसी से फिर
३४ जायगा और इस नगर में न आवेगा। क्योंकि मैं अपनेही
लिये और अपने सेवक दाऊद के लिये इस नगर का आड़
३५ कर के उसे बचाओंगा। और ऐसा हुआ कि परमेश्वर
के दूत ने जाके असूर की छावनी में उस रात एक लाख पचासी
सहस्र मनुष्य को घात किया और तड़के उठतेही क्या देखते हैं
३६ कि सब लोथ पड़ी हैं। सो असूर के राजा सनहारीब चला
३७ और फिर गया और नैनवी में जा रहा। और यों हुआ कि
ज्यों वुह अपने देव निसरूक के मन्दिर में पूजा करता था
उसके बेटे अद्रामलक और शरज़र ने उसे तलवार से मार
डाला और वे बचके आरारात के देश को गये और उसका
बेटा असारहदन उसकी सन्ती राज्य पर बैठा।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

हिज़किया की आयुर्दाय का पन्दरह बरस बढ़ना
१—७ छाया का हट जाना बाबुल का राजा भेजके
उसे बधाई देता है ८—१३ हिज़किया का दपटा
जाना और बाबुल की बंधुआई का भविष्य कहना
१४—१९ हिज़किया की मृत्यु और मनस्सा का
राज्य करना २०—२१ ।

१ उन्हीं दिनों में हिज़किया को मृत्यु का रोग हुआ तब आमूस का बेटा अशाया उस पास आया और उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि तू अपने घर का ठिकाना कर क्योंकि तू मर
२ जायगा और न जीयेगा। तब हिज़किया ने अपना मुंह
३ भीत की ओर फेरके परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा। कि हे परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता हों कि दया करके अब स्मरण करिये कि मैं क्योंकर सचाई और सिद्ध मन से तेरे आगे चला किया और तेरी दृष्टि में मैं ने भलाई किई और हिज़किया
४ बिलख बिलख के रोया। और यों हुआ कि अशाया के आंगन के मध्य पहुंचने से आगे यह कहिके परमेश्वर का वचन उस
५ पर पहुंचा। कि फिर जा और मेरे लोगों के प्रधान हिज़किया को कह कि परमेश्वर तेरे पिता दाऊद का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी है और तेरे आंसुओं को देखा है देख मैं तुझे तीसरे दिन चंगा करोंगा और तू परमेश्वर
६ के मन्दिर में चढ़जायगा। और तेरे दिनों में मैं पन्दरह बरस बढ़ाओंगा और तुझे और इस नगर को असूर के राजा के हाथ से छुड़ाओंगा और अपने लिये और अपने दास दाऊद के
७ लिये इस नगर का आड़ करोंगा। तब अशाया ने कहा कि गूलर की एक टिकिया ले सो उन्हों ने लिई और फोड़े पर रक्खी
८ और वुह चंगा होगया। तब हिज़किया ने अशाया से कहा कि उसका लक्षण क्या कि परमेश्वर मुझे चंगा करेगा और मैं तीसरे दिन परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ जाओंगा?।
९ अशाया बोला कि परमेश्वर से तू यह लक्षण पावेगा कि जो वुह परमेश्वर ने कहा है सो करेगा कि छाया दस क्रम आगे बढ़े
१० अथवा दस क्रम पीछे हटे। हिज़किया ने उत्तर दिया कि छाया का दस क्रम ढलना सहज है नहीं परन्तु छाया दस क्रम पीछे
११ हटे। तब अशाया भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर से प्रार्थना किई और उसने छाया को अहाज़ के आड़ में से जो ढलगई थी

१२ दस अंस पीछे हटाया। उस समय बलदान के बेटे बाबुल के राजा बरोदाक बुलदान ने भेंट और पत्री हिज़किया
१३ को भेजी क्योंकि उसने सुना था कि हिज़किया रोगी था। सो हिज़किया ने उनकी बातें सुनी और अपने घर की सारी बक़मूल्य बस्तें चांदी और सोना और सुगन्ध और सुगन्ध तेल और अपने शस्त्रस्थान और सब जो उसके भंडारों में पाये गये उन्हें दिखाये उसके घर में और उसके सारे राज्य में ऐसी कोई बस्तु नथी
१४ जो हिज़किया ने उन्हें न दिखलाई। तब अशाया भविष्यदक्ता हिज़किया राजा पास आया और उसे कहा कि इन लोगों ने क्या कहा? और ये कहां से तुझ पास आये? हिज़किया ने
१५ कहा कि ये बाबुल के दूर देश से आये हैं। फिर उसने पूछा कि उन्हों ने तेरे घर में क्या देखा है? हिज़किया बोला कि मेरे घर का सब कुछ उन्हों ने देखा है मेरे भंडार में ऐसी
१६ कोई बस्तु न रही जो मैं ने उन्हें न दिखलाई हैं। तब अशाया
१७ ने हिज़किया से कहा कि परमेश्वर का बचन सुन। देख वे दिन आते हैं कि सब कुछ, जो तेरे घर में है और जो कुछ कि तेरे पितरों ने आज लों बटोर रक्खा है बाबुल को पहुंचाये जायेंगे
१८ और परमेश्वर कहता है कि कुछ न छोड़ा जायगा। और तेरे बेटों में से, जो तुझ से उत्पन्न होंगे और तुझ से जन्मेंगे उन्हें वे ले जायेंगे और बाबुल के राजा के भवन में नपुंसक होंगे।
१९ तब हिज़किया ने अशाया से कहा कि परमेश्वर का बचन जो तू ने कहा है अच्छा है फिर उसने कहा कि कुशल और
२० सचाई मेरे दिनों में होगी?। हिज़किया की रही हुई क्रिया और उसका सारा पराक्रम और किस रीति से उसने एक कुंड और एक पनाला बनाये और नगर में पानी लाया सो क्या यहूदा के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में
२१ नहीं लिखा है?। तब हिज़किया ने अपने पितरों में शयन किया और उसका बेटा मनस्सा उसकी संती राज्य पर बैठा।

२१ एक्कीसवां पर्ब्ब।

मनस्सा का अति बुरा राज्य और मूर्त्ति पूजना १—९ भविष्यद्वक्तों के यहूदा पर दंड होने का भविष्य कहना १०—१६ उसकी मृत्यु और उसके बेटे का बुरा राज्य १७—२२ उसका मारा जाना और जसैया का राज्य पाना २३—२४ अमून की क्रिया और गाड़ा जाना २५—२६।

१ जब मनस्सा राज्य करने लगा तब वुह बारह बरस का था उसने पचपन बरस यिरोशलीम में राज्य किया और उसकी माता
२ का नाम हफ़सीबा था। और उसने अन्य देशियों के घिनितों के समान, जिन्हें परमेश्वर ने इसराईल के सन्तान के आगे से
३ दूर किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई। क्योंकि उसने उन स्थानों को, जिन्हें उसके पिता हिज़्क़िया ने ढाया था फिर बनाया और उसने बआल के लिये बेदियां स्थापित किईं और एक कुंज लगाया जैसा कि इसराईल के राजा अहाब ने किया था और स्वर्ग की सारी सेना की पूजा करके उनकी सेवा किई।
४ और उसने परमेश्वर के उस मन्दिर में, जिसके बिषय में परमेश्वर ने कहा था कि मैं यिरोशलीम में अपना नाम रक्खोंगा
५ बेदी बनाई। और उसने परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों में
६ स्वर्ग की सारी सेनाओं के लिये बेदियां बनाईं। और उसने अपने बेटे को आग में से चलाया और मुहूर्त्तों को मानता था और टोना करता था और भुतहों और ओझों से व्यवहार रखता था और परमेश्वर की दृष्टि में बहुतही दुष्टता करके
७ उसे रिस दिलाया। और उसने कुंज की एक खोदी हुई मूर्त्ति बनाके परमेश्वर के मन्दिर में स्थापित किई जिसके बिषय में परमेश्वर ने दाऊद को और उसके बेटे सुलेमान से कहा था कि इस मन्दिर में और यिरोशलीम में जिसे मैं ने इसराईल की सारी गोष्ठियों में से चुन लिया है मैं अपना नाम सदा लों

८ रक्खेंगा । और मैं इसराईल के पांव को इस भूमि से, जो मैं ने उनके पितरों को दिई है कधी न डोलाओंगा केवल यदि वे मेरी सारी आज्ञाओं के समान चलें और सारी व्यवस्था के
९ समान, जो मेरे सेवक मूसा ने उन्हें दिई, मानें। पर उन्हों ने न माना और मनस्सा ने उन्हें फुसलाके उन जातिगणों से, जिन्हें परमेश्वर ने इसराईल के सन्तान के आगे से नष्ट किया
१० अधिक बुराई करवाई । सो परमेश्वर अपने सेवक भविष्यद्वक्तों
११ के द्वारा से कहिके बोला। इस कारण कि यहूदा के राजा मनस्सा ने ये सारे घिनित काम किये और अमूरानियों से, जो उसे आगे थे अधिक बुराई किई और यहूदा से अपनी मूरतों
१२ के संग पाप करवाये। इस लिये परमेश्वर इसराईल के ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं यिरोशलीम पर और यहूदा पर ऐसी बिपत्ति लाता हों कि उसका समाचार जिसके कान लों
१३ पहुंचेगा उसके दोनों कान झंझना उठेंगे। और मैं यिरोशलीम पर सामरः की डोरी और अहाब के घराने की साऊल डालोंगा और मैं यिरोशलीम को ऐसा पोछोंगा जैसे कोई बासन को
१४ पोंछता है और औंधा देता है। और उनके अधिकार के बचेहुओं को अलग करोंगा और उन्हें उनके बैरियों के हाथ में सौंपोंगा और वे अपने सारे बैरियों के लिये अहेर और
१५ लूट होंगे। क्योंकि उन्हों ने मेरी दृष्टि में बुराई किई और जिस दिन से उनके पिता मिसर से निकले उन्हों ने आज लों
१६ मुझे रिस दिलाया। इसे अधिक मनस्सा ने बहुत निर्दोष लोहू बहाया यहां लों कि उसने यिरोशलीम को मुंहे मुंह भर दिया यह उस पाप से अधिक है जो परमेश्वर की दृष्टि
१७ में यहूदा से बुराई करवाई। अब मनस्सा की रहीं हुई क्रिया और सब कुछ जो उसने किया और यह कि उसने कैसे पाप किये सो यहूदा के राजाओं के समयों की पुस्तक में लिखा
१८ नहीं है? । और मनस्सा ने अपने पितरों में शयन किया और

अपने घर की बाटिका में अज़्ज़ा की बाटिका में गाड़ा गया और उसका बेटा अमून उसकी सन्ती राज्य पर बैठा।

१९ और जब अमून राज्य करने लगा तब बाईस बरस का था, उसने यिरोशलीम में दो बरस राज्य किया, उसकी माता का नाम मुशल्लिमेत था जो यतबा के हारूस की बेटी थी।
२० और उसने परमेश्वर की दृष्टि में अपने पिता मनस्सा के समान
२१ बुराई किई। और वुह अपने पिता की सारी चाल पर चला किया और अपने पिता की मूरतों की प्रार्थना करके उनकी
२२ पूजा किई। और उसने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर को
२३ त्यागा और परमेश्वर के मार्ग पर न चला। और अमन के सेवकों ने उसके बिरोध में युक्ति बांधके राजा को उसी के घर
२४ में घात किया। और देश के लोगों ने उन सब को घात किया जिन्हों ने अमून राजा के बिरुद्ध युक्ति बांधी और देश के लोगों ने उसके बेटे जोसैया को उसके स्थान पर राजा किया।
२५ और अमून की रही ऊई क्रिया और सब कुछ जो उसने किया सो क्या यहूदा के राजाओं के समयों के समाचार की
२६ पुस्तक में लिखा नहीं है? । और वुह अपनी समाधि में अज़्ज़ा की बाटिका में गाड़ा गया और उसका बेटा जुसैया उसकी सन्ती राज्य पर बैठा।

२२ बाईसवां पर्ब्ब।

जुसैया का अच्छा राज्य मन्दिर के सुधारने की युक्ति १—७ व्यवस्था की पुस्तक को सुन के घबराना और भविष्यद्वक्ता के द्वारा से परमेश्वर से बूझना ८—१४ यिरोशलीम के बिनाश के भविष्य बचन १५—२०।

१ जब जुसैया राज्य करने लगा तो आठ बरस का था उसने एकतीस बरस यिरोशलीम में राज्य किया, उसकी माता का
२ नाम यदीदा था बसकाथ के अदाइया की बेटी थी। उसने

परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई और अपने पिता दाऊद की सारी चालों पर चलता था और दहिनी अथवा बाईं ओर
३ न मुड़ा। यूसैया के अठारहवें बरस यों हुआ कि राजा ने मशुल्लम के बेटे असलिया के बेटे शाफान लेखक को परमेश्वर
४ के मन्दिर में कहला भेजा। कि तू प्रधान याजक हलकिया पास जा कि वुह परमेश्वर के मन्दिर के चांदी का लेखा करे जो
५ द्वारपालों ने लोगों से एकट्ठा किया। और वे उन्हें कार्य्यकारियों के हाथ में सौंपें जो परमेश्वर के मंदिर के करोड़े हैं और वे उन्हें परमेश्वर के मन्दिर के कार्य्यकारियों को
६ देवें कि वे मन्दिर क दरारों को सुधारें। और बढ़ैयों को और थवैयों को और पथरियों को और लट्ठों के और गढ़े हुए
७ पत्थर मोल लेने के लिये जिसतें घर सुधारें। तिस पर भी रोकड़ का लेखा, जो उनके हाथ में दिया गया था उन से न लिया जाता था इस लिये कि वे धर्म्म से व्यवहार करते थे।
८ और प्रधान याजक हलकिया ने शाफ़ान लेखक को कहा कि मैं ने परमेश्वर के मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है और हलकिया ने वुह पुस्तक शाफ़ान को दिई और उसने
९ पढ़ी। और शाफ़ान लेखक राजा पास आया और राजा के पास बचन लाके कहा कि आप के सेवकों ने वुह रोकड़ जो ईश्वर के मन्दिर में पाया गया पिघलाया है और कार्य्यकारियों
१० के हाथ सौंपा है जो परमेश्वर के घर के करोड़े हैं। अब शाफ़ान लेखक ने राजा से कहा कि हलकिया याजक ने मुझे एक पुस्तक दिई है और शाफ़ान ने उसे राजा के आगे पढ़ा।
११ और राजा ने ज्यों उस पुस्तक के अभिप्राय को सुना त्यों अपने
१२ कपड़े फाड़े। और हलकिया याजक और शाफ़ान के बेटे अहीकाम और मीका का बेटा अकबर और शाफ़ान लेखक
१३ और राजा के सेवक असाहिहा को कहा। तुम जाओ मेरे और लोगों के और सारे यहूदा के लिये परमेश्वर से इस

पुस्तक के बचन के बिषय में, जो पाया गया है पूछो क्योंकि परमेश्वर का कोप हम पर निपट भड़का है इस कारण कि उन सभों के समान, जो हमारे विषय में लिखा है हमारे पितरों ने इस पुस्तक के बचन को पालन करने को नहीं सुना

१४ है। और हलकिया याजक और अहीकाम और अकबर और शाफ़ान और असायिहा हलदा आचार्य्यिनी पास गये जो हरहास के बेटे टिकवा के बेटे शालूम बस्त्रों के रखवैये की पत्नी थी (अब वुह यिरोशलीम में एक दूसरे स्थान में

१५ रहती थी) और उन्हों ने उसे बात चीत किई। उसने उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि तुम

१६ उस पुरुष से, जिसने तुम्हें मुझ पास भेजा है कहो। कि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इस स्थान पर, और उसके निवासियों पर उस पुस्तक की सारी बातें, जो यहूदा के राजा ने पढ़ी हैं

१७ अर्थात बुराई लाओंगा। क्योंकि उन्हों ने मुझे त्यागा है अब और देवों के लिये धूप जलाया है जिसतें अपने हाथों के सारे कामों से मुझे रिस दिलावें इस लिये मेरा कोप इस स्थान के बिरोध

१८ भड़केगा और बुझाया न जायगा। परन्तु यहूदा के राजा को, जिसने तुम्हें परमेश्वर से बूझने को भेजा उसे यों कहियो कि परमेश्वर इसराईल का ईश्वर यों कहता है कि जिन बचन

१९ को तू ने सुना है। इस कारण कि तेरा मन कोमल था और परमेश्वर के आगे तू ने आप को नम्र किया है जब तू ने सुना जो मैं ने इस स्थान के और उसके निवासियों के बिरोध में कहा कि वे उजाड़ित और स्रापित होंगे और अपने कपड़े फाड़े हैं और मेरे आगे बिलाप किया परमेश्वर कहता है

२० कि मैं ने भी सुना है। इस लिये देख मैं तुझे तेरे पितरों के साथ बटोरोंगा और तू अपने समाधि में कुशल से समेटा जायगा और सारी बुराई को, जो मैं इस स्थान पर लाओंगा तेरी आंखें न देखेंगी तब वे राजा पास फेर सन्देश लाये।

युसैया मंडली में ब्यवस्था पढ़ता है ईश्वर से बाचा बांधता है और मूर्त्ति पूजा को उठादेता है १—१४ मनुष्यों का हाड़ बेदी पर जलाता है और भविष्य बाणी को पूरा करता है १५—२० पर्ब्ब रखता है टोनहों को दूर करता है और सभों से श्रेष्ठ होता है २१—२५ ईश्वर का कोप यहूदा पर धीमा नहीं होता है २६—२८ युसैया का जूझ जाना और यहूहाज़ का राज्य करना २९—३० उसका बुरा राज्य और बंधुआ होना ३१—३४ यूहायाकीम का राज्य और फरऊन का करदायक होना ३५—३७।

१ तब राजा ने भेज के यहूदा और यिरोशलीम के सारे प्राचीनों २ को अपने पास एकट्ठा किया। और राजा और यहूदा के सारे लोग और यिरोशलीम के सारे निवासी उसके संग और याजकों और भविष्यद्वक्तों और सारे लोग छोटे से बड़ेलों परमेश्वर के मन्दिर को चढ़ गये और बाचा की पुस्तक के बचन को, जो परमेश्वर के मन्दिर में पाया गया था उसने उन्हें पढ़ सुनाया। ३ परमेश्वर का पीछा करने को और उसकी आज्ञाओं को और उसकी साक्षियों को और उसकी बिधिन को और अपने सारे मन और सारे जीव से पालन करने को इस बाचा के बचन को, जो इस पुस्तक में लिखा है राजा ने खंभे के लग खड़ा होके परमेश्वर के आगे बाचा बांधी और सारे लोग इस ४ बाचा पर खड़े ऊए। फिर राजा ने प्रधान याजक हिलकिया को, और दूसरी पांती के याजकों को और द्वारपालों को आज्ञा किई कि परमेश्वर के मन्दिर में से सारे पात्र जो बआल के लिये और कुंज के और स्वर्गीय सारी सेनाओं के लिये बनाये गये थे बाहर निकलवाये और उसने यिरोशलीम के बाहर कदरून के खेतों में उन्हें जला दिया और उनकी राखों को

५ बैतईल में पहुंचा दिया। और उन देवपूजक याजकों को, जिन्हें यहूदा के राजाओं ने यहूदा के नगरों के ऊंचे स्थानों में, और यिरोशलीम के चारों ओर के स्थानों में धूप जलाने के लिये ठहराया था उन सब समेत जो बआल के और सूर्य्य के और चंद्रमा के और नक्षत्रों के और स्वर्गीय सारी सेनाओं

६ के लिये धूप जलाते थे रोक लिया। और उसने उस कुंज को परमेश्वर के मन्दिर से निकाल के यिरोशलीम के बाहर कदरून के नाले पर लाया और उसे कदरून के नाले पर जलादिया और उसे लताड़ के बुकनी किया और उस बुकनी

७ को लोगों के सन्तान के समाधि पर फेंक दिया। और उसने सदूमियों के घरों को, जो परमेश्वर के घर से मिले हुए थे,

८ जिनमें स्त्रियां कुंज के लिये घूंघट बुनतियां थीं ढा दिया। और उसने यहूदा के सारे नगरों के याजकों को एकट्ठे किया ऊंचे स्थानों को जहां पुरोहितों ने सुगन्ध जलाया था गबा से बीरशबा लों अशुद्ध किया और फाटकों के ऊंचे स्थानों को, जो नगर के अध्यक्ष यहूशू के फाटक की पैठ में थे, जो नगर के फाटक

९ की बाईं ओर हैं ढा दिया। तथापि ऊंचे स्थानों के पुरोहित यिरोशलीम में परमेश्वर की बेदी के पास चढ़ न आये परन्तु

१० उन्हों ने अख़मीरी रोटी अपने भाइयों के साथ खाई थी। और उसने टोफित को, जो हिन्नूम के सन्तान की तराई में है अशुद्ध किया जिसतें कोई अपने बेटा बेटी को आग में से मोलक को

११ न पहुंचावे। और उसने उन घोड़ों को, जो यहूदा के राजाओं ने सूर्य्य को चढ़ाये थे परमेश्वर के मन्दिर की पैठ में से, जो नाथानमलक प्रधान की कोठरी के लग जो आस पास में था दूर

१२ किया और सूर्य्य के रथ को भस्म किया। और उन बेदियों को जो अख़ाज़ की उपरौटी कोठरी पर थी, जिन्हें यहूदा के राजाओं ने बनाया था उन बेदियों को जिन्हें मनस्सा ने परमेश्वर के मन्दिर के दो आंगनों में बनाया था राजा ने उन्हें चूर करके दूर किया

१३ और उनकी राख को क़दरून नाले में फेंक दिया। और जो जो ऊंचे स्थान यिरोशलीम के आगे. जो सड़ाहट के पहाड़ की दहिनी ओर थे. जिन्हें इसराईल के राजा सुलेमान ने सैदानियों के घिनित अश्तरूस के, और मवाबियों के घिनित कामूश के, और अमून के सन्तान के घिनित मलकूम के लिये
१४ बनाया था राजा ने उन्हें अशुद्ध किया। और मूरतों को तोड़डाला और कुंजों को काटडाला और उनके स्थानों को
१५ मनुष्यों के हाड़ से भर दिया। बैतईल की बेदी को. और उस ऊंचे स्थान को, जिन्हें इसराईल के पाप करवैया नाबात के बेटे यर्बाम ने, बनाया था उस बेदी को और उस ऊंचे स्थान को जोसैया ने ढादिया और ऊंचे स्थान को जला के चूर
१६ के रौंदा और कुंज को जला दिया। और ज्यों जुसैया फिरा तो उसने पहाड़ पर की समाधिन को देखा और लोग भेजके उनमें की हड्डियां निकलवाईं और बेदी पर जलाईं और परमेश्वर के बचन के समान, जो ईश्वर के उस जनने प्रचारा था, जिसने इन बातों को प्रचारा, उसने अशुद्ध किया फिर उसने पूछा कि वुह पदवी क्या है जिसे मैं देखता हों? ।
१७ नगर के लोगों ने उसे कहा कि यह ईश्वर के उस जन की समाधि है जिसने यहूदा से आके इन बातों को. जो आप ने
१८ किया है बैतईल की बेदी के बिरोध में प्रचारा था। तब उसने कहा कि उसे रहने दे कोई उसकी हड्डियों को न हटावे सो उन्हों ने उसकी हड्डियां उस भविष्यद्वक्ता के साथ, जो सामरः से
१९ आया था रहने दिईं। और सारे ऊंचे स्थानों के घरों को भी, जो सामरः के नगरों में थे, जिन्हें इसराईल के राजाओं ने रिसिआने के लिये बनाये, जुसैया ने दूर किया और उनसे
२० वैसाही किया जैसा उसने बैतईल में किया था। और ऊंचे स्थानों के सारे पुरोहितों को, जो बेदियों पर थे, बधन किया और मनुष्यों का हाड़ उन पर जलाया और यिरोशलीम को
२१ फिरा। और राजा ने यह कहिके सारे लोगों को

आज्ञा किई कि परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पारजाने का
२२ पर्ब्ब रखो जैसा इस बाचा की पुस्तक में लिखा है। निश्चय
उन न्यायियों के समय से लेके, जो इसराईल का न्याय करते थे
इसराईल के राजाओं के और यहूदा के राजाओं के दिनों में
२३ ऐसा पारजाना पर्ब्ब किसी ने न रक्खा था। परन्तु जुसैया
राजा के अठारहवें बरस यिरोशलीम में परमेश्वर के लिये
२४ यही पारजाना पर्ब्ब रक्खा गया। और भूतों को और
ओझाओं को मूरतों को और पुतलों को और सारे
घिनितों को, जो यहूदा के देश में और यिरोशलीम में देखे
गये थे जुसैया ने दूर किया जिसतें व्यवस्था की वे बातें जो
उस पुस्तक में, जिसे हलकिया याजक ने परमेश्वर के मन्दिर
२५ में पाया था लिखी थीं, पूरी करे। और उसके समान अगिले
दिनों में ऐसा कोई राजा न हुआ जो अपने सारे मन से और
अपने सारे प्राण से और अपनी सारी सामर्थ्य से मूसा की
सारी व्यवस्था के समान परमेश्वर की ओर फिरा और उसके
२६ पीछे कोई उसके समान न उठा। तिसपर भी मनस्सा की
सारी रिसों से जो उसने परमेश्वर को रिस दिलाया था उसने
अपने महा क्रोध की जलजलाहट से, जिससे उसका क्रोध यहूदा
२७ के बिरोध भडका न फिरा। और परमेश्वर ने कहा कि जैसा
मैं ने इसराईल को अलग किया वैसा यहूदा को भी अपनी
दृष्टि में से अलग करोंगा और मैं इस यिरोशलीम नगर
को जिसे मैं ने चुना है और जिस घर के विषय में मैं ने
२८ कहा कि मेरा नाम वहां होगा दूर करोंगा। अब जुसैया
की रही हुई क्रिया और सब जो उसने किया सो
यहूदा के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं
२९ लिखा है?। उसके दिनों में मिसर का राजा फरऊन
निकूह आसूर के राजा के बिरोध में फुरात की नदी को चढ़ गया
और जुसैया राजा ने उसका साम्ना किया और उसने उसे
३० देखके मगद्दू में घात किया। और उसके सेवक उसे रथ

में डालके मगद्दू से यिरोशलीम में लेगये और उसे उसी की समाधि में गाड़ा और देश के लोगों ने युसैया के बेटे यह्वहाज को लेके अभिषेक किया और उसके पिता की सन्ती उसे राजा
३१ किया। और जब यह्वहाज राज्य करने लगा वुह तेईस बरस का था उसने यिरोशलीम में तीन मास राज्य किया उसकी माता का नाम हमूताल था जो लबना के अरमिया की
३२ बेटी थी। और उसने उन सब के समान जो उसके पितरों
३३ ने किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई। सो फ़रऊन नीकूह ने उसे हमास देश के रिबलः में, बन्धन में डाला जिसतें वुह यिरोशलीम में राज्य न करे और देश पर सौ तोड़े चांदी
३४ और एक तोड़ा सोना कर ठहराया। और फ़रऊन नीकूह ने युसैया के बेटे इलियाक़ीम को उसके पिता युसैया की सन्ती राजा किया और उसका नाम यूहायाक़ीम रक्खा और यह्वहाज़ को लेगया और वुह मिसर में जाके मर गया।
३५ और यूहायाक़ीम ने चांदी और सोना फ़रऊन को दिया परन्तु फ़रऊन की आज्ञा के समान रोकड़ देने को उसने देश पर कर लगाया और देश के लोगों के हर एक जन को उसके कर के समान चांदी सोना निचोरा जिसतें फ़रऊन नीकूह को
३६ देवे। और यूहायाक़ीम जब राज्य पर बैठा तब पचीस बरस का था उसने यिरोशलीम में ग्यारह बरस राज्य किया और उसकी माता का नाम ज़बूदा था जो रूमाई पिदाया की बेटी
३७ थी। उसने उन सब के समान जो उसके पितरों ने किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

यूहायाक़ीम का नबूकदनज़ार के बश में होना और यहूदा के विषय में ईश्वर की वाणी पूरी होनी १—४ यूहायाक़ीम की मृत्यु बाबुल के राजा का मिसर के राजा पर प्रबल होना ५—७ यूहायाक़ीम

का बुरा राज्य यिरोशलीम का लिया जाना और यहूदा का बन्धुआई में पहुंचाया जाना ८—१६ सिदकिया का बुरा राज्य और उसका बाबुल के राजा से फिर जाना १७—२० ।

१ उसके दिनों में बाबुल का राजा नबूकदनज़ार चढ़ आया और यूहायाक़ीम तीन बरस लों उसका सेवक रहा तब वुह २ उसके बिरोध में फिर बैठा । और परमेश्वर ने कलदानियों की और सरियानियों की और मवाबियों की और अमून के सन्तान की जथाओं को अपने बचन के समान, जैसा उसने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों के द्वारा से कहा था यहूदा के बिरोध ३ में उसे नाश करने को भेजा । निश्चय परमेश्वर की आज्ञा के समान, यह सब कुछ मनस्सा के पापों के कारण, जो उसने ४ किये यहूदा पर पड़ा कि उन्हें अपनी दृष्टि से दूर करे । और निर्दोष लोहू के कारण भी जो उसने बहाया क्योंकि उसने यिरोशलीम को निर्दोष लोहू से भर दिया जिसकी क्षमा ५ परमेश्वर ने न चाही । अब यूहायाक़ीम की रही ऊई क्रिया और सब जो उसने किया था सो यहूदा के राजाओं के समयों के ६ समाचार की पुस्तक में लिखा नहीं है? । सो यूहायाक़ीम ने अपने पितरों में शयन किया और उसका बेटा यूहायाक़ीन ७ उसकी सन्ती राज्य पर बैठा । और मिसर का राजा अपने देश से फेर बाहर न गया क्योंकि बाबुल के राजा ने मिसर की नदी से लेके फुरात की नदी लों मिसर के राजा का सब कुछ ८ ले लिया । यूहायाक़ीन जब राज्य करने लगा तब अठारह बरस का था और यिरोशलीम में उसने तीन मास राज्य किया उसकी माता का नाम नहुशता था जो यिरोशलीमी ९ अलनासान की बेटी थी । उन सब के समान जो उसके पिता १० ने किया था परमेश्वर की दृष्टि में उसने बुराई किई । उस समय में बाबुल के राजा नबूकदनज़ार के सेवक यिरोशलीम ११ पर चढ़ गये और नगर घेरा गया । और बाबुल का राजा

नबूकदनज़ार नगर के बिरोध में आया और उसके सेवकों ने
१२ उसे घेर लिया। तब यहूदा का राजा यहायाकीन और
उसकी माता और उसके सेवक और उसके कुंअर और उसके
प्रधान बाबुल के राजा के पास बाहर गये और बाबुल के राजा
१३ ने अपने राज्य के आठवें बरस उसे लिया। और परमेश्वर के
मन्दिर का सारा भंडार और वुह भंडार जो राजा के घर में थे
लेगया और सोने के सारे पात्रों को, जो इसराईल के राजा
सुलेमान ने परमेश्वर की आज्ञा के समान परमेश्वर के मन्दिर
१४ के लिये बनाये थे कटवाया। और सारे यिरोशलीम को और
सारे कुंअरों को और सारे महावीरों को अर्थात् दस सहस्र
बंधुओं को और सारे कार्य्यकारियों को और लोहारों को और
देश के लोगों के छोटों से छोटों को छोड़ कोई न छूटा।
१५ उसने यहायाकीन को और उसकी माता और राजा की
पत्नियों को और उसके नपुंसकों को और देश के पराक्रमियों
१६ को यिरोशलीम से बंधुआई में बाबुल को लेगया। और सारे
बीरों को अर्थात् सात सहस्र को और एक सहस्र कार्य्यकारियों
को और लोहारों को सब बलवन्त जो संग्राम के योग्य थे बाबुल
१७ का राजा उन्हें बंधुआई में बाबुल को लेगया। और
बाबुल के राजा ने उसके चचा मतानियह को उसकी सन्ती
राज्य दिया और उसका नाम पलटके सिदक़िया रक्खा।
१८ सिदक़िया जब राज्य पर बैठा तो एक्कीस बरस का था उसने
ग्यारह बरस यिरोशलीम में राज्य किया और उसकी माता
१९ का नाम हमूताल जो लबनाई इरमिया की बेटी थी। उसने
यहायाकीम के किये हुए के समान किया और परमेश्वर की दृष्टि
२० में बुराई किई। क्योंकि परमेश्वर के कोप के कारण यिरोशलीम
और यहूदा पर यों बीत गया यहां लों कि उसने उन्हें
अपने आगे से दूर किया और सिदक़िया बाबुल के राजा के
बिरोध में फिर गया।

२१ पकड़ के बाबुल के राजा पास रिबलः में लेगया। और बाबुल के राजा ने हमास देश रिबलः में उन्हें घात किया
२२ सो यहूदा अपने देश से लेवाये गये। और जो लोग यहूदा के देश में रहिगये थे, जिन्हें बाबुल के राजा नबूक़दनज़ार ने छोड़ा था उन्हीं को उसने आज्ञाकारी शाफ़ान के बेटे
२३ अहीक़ाम के बेटे गदालिया को उनका प्रधान किया। और जब सेनाओं के प्रधानों ने और उनके लोगों ने सुना कि बाबुल के राजा ने गदालिया को अध्यक्ष किया तो नतानिया का बेटा इस्माईल और कारिया का बेटा यूहानान नतूफाती तनहूमीस का बेटा सिराया और एक मकाती का बेटा याज़ानिया अपने
२४ लोगों समेत मसफ़ा में गदालिया पास आये। और गदालिया ने उनसे और उनके लोगों से किरिया खाके कहा कि कलदानियों के सेवक होने से मत डरो देश में बसो और बाबुल के राजा की सेवा करो और उसमें तुम्हारी भलाई
२५ होगी। परन्तु सातवें मास में ऐसा हुआ कि अलीशमा के बेटे नितानिया का बेटा इस्माईल, जो राजा के वंश से था, आया और उसके साथ दस जन और गदालिया को और उन यहूदियों को और कलदानियों को, जो उसके साथ मसफ़ा में थे प्राण से
२६ मारा। तब सब लोग क्या छोटे क्या बड़े और सेनाओं के प्रधान उठे और मिसर में आ रहे क्योंकि वे कलदानियों से डरते थे।
२७ और यहूदा का राजा यूहायाक़ीन की बंधुआई के सैंतीसवें बरस के बारहवें मास की सताईसवीं तिथि में ऐसा हुआ कि बाबुल का राजा अविलमरूदाख जिस बरस राज्य करनेलगा उसने यहूदा के राजा यूहायाक़ीन को बंधुआई से उभाड़ा।
२८ और उसे अच्छी अच्छी बातें कहीं और उसके सिंहासन को उन
२९ सब राजाओं से जो उसके साथ बाबुल में थे बढ़ाया। और उसकी बंधुआई के बस्त्र को पलट डाला और वुह अपने जीवनभर उसके
३० मंच पर उसके संग भोजन करता रहा। और उसके जीवन भर उसके प्रति दिन की वृत्ति नित राजा की ओर से दिई जाती थी।